1964

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

SHIKAR AUR JEEWAN

(Hindi Version of *The Yearling*)

by

Marjorie Kinnan Rawlings

Translated by

Prof. Satyakam Varma, M. A

Rs. [illegible]

प्रकाशक

रामलाल पुरी, संचालक

आत्माराम एण्ड संस

कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

शाखाएँ

हौज खास, नई दिल्ली

चौड़ा रास्ता, जयपुर

विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ़

महानगर, लखनऊ-6

रामकोट, हैदराबाद

मूल्य : [illegible]

प्रथम [illegible]स्करण, 196[illegible]

मुद्रक

हिन्दी प्रिंटि[illegible] प्रेस

दिल्ली

शिकार श्रौर जीवन
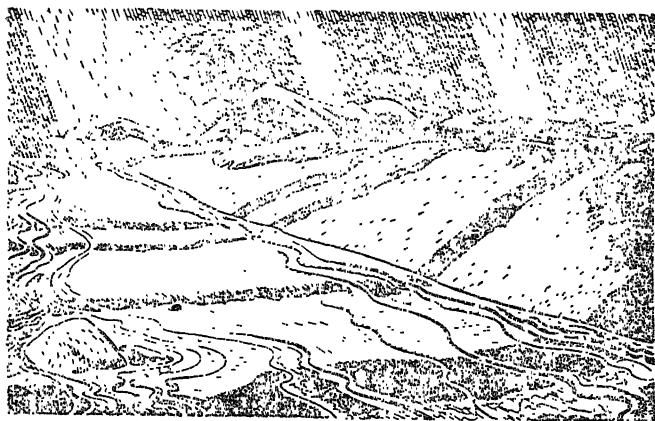
1

घर की चिमनी से धुएँ की एक पतली सीधी रेखा ऊपर उठ रही थी। चिमनी से निकलते समय उसका रंग नीला-सा था, किन्तु ऊपर उठकर वह स्याह होता जा रहा था। वैशाख का आकाश भी नीला और स्वच्छ था। यह सब देखकर जोडी किसी कल्पना में डूब गया। उधर अँगीठी की आग मंद पड़ती जा रही थी। दोपहर के भोजन के बाद उसकी माँ बर्तन-भांडे ठीक-ठिकाने रख रही थी। शुक्रवार का दिन था। फर्शों की सफ़ाई आवश्यक थी। 'माँ पहले बुहारी देंगी, फिर फर्श धोएँगी। इस बीच उन्हें मेरा ध्यान भी न आएगा। मैं चाहूँ तो तब तक मज़े में घाटी तक निकल जाऊँगा।' ऐसा सोचते निलाई की खुरपी कन्धे पर टिकाए वह कुछ क्षण वहीं खड़ा रहा।

अगर उसके सामने बिना निलाई किए अनाज की खेती न लहरा रही होती तो वे खेत भी कम सुहावने न थे। तभी उसका ध्यान बाहर के दरवाज़े पर गया। वहाँ मधुमक्खियों ने मधुर सुगन्धित फूलों वाले मरवे के पेड़ पर

धावा बोल दिया था। शहद के लोभ में वे उन फूलों पर कुछ इस तरह टूटीं जैसे वहाँ और कोई भी फूल न हो और जैसे उन्हें चैत और जेठ के लुभावने फूल भूल ही गए हों। उन सब फूलों से मरवे के फूल ही उन्हें अधिक लुभावने लगे। काले-पीले शरीर वाली उन मधुमक्खियों को देखते हुए उसे लगा कि इनका पीछा करके वह शहद के छत्ते वाले उस पेड़ की अवश्य ही खोज निकालेगा। शीत ऋतु की समाप्ति के साथ ही मुरब्बों और गन्नों की राब आदि समाप्त हो चुकी थी। अतः शहद की खोज लुभावनी लगनी स्वाभाविक ही थी। अनाज की कटाई का काम कुछ देर के लिए टाला भी जा सकता था।

वैशाख की ढलती दोपहरी का यह उन्मादक वातावरण उसके मन को वैसे ही घेरता गया जैसे उन मक्खियों ने उन मरवे के फूलों को घेर लिया था। उसे लगा कि सामने के खेत, चीड़ के मैदान और सड़क को पार करके दौड़ता-दौड़ता वह धारा तक कुछ ही क्षणों में पहुँच जाएगा। उस धारा के किनारे पर ही कहीं शहद के छत्ते वाला वह वृक्ष भी दिखाई दे जाएगा।

उसने अपनी खुरपी को बाड़ के जंगले पर टिकाया और अनाजभरे खेतों को पार कर वह आगे बढ़ गया। घर के नज़र से ओझल होते ही जंगले को पकड़कर वह उसके पार हो गया। सौभाग्य से बूढ़ी शिकारी कुतिया जूलिया उसके पिता के साथ ही ग्राहम्सविले गई हुई थी। किन्तु, विशालकाय रिप और दोगला कुत्ता पेर्क वहीं थे। उन्होंने ज्योंही किसी आकृति को जंगला लांघते देखा, तुरन्त भौंकना शुरू कर दिया। रिप की आवाज़ भारी थी और पर्क की तीखी। पास आने पर उसे पहचानते ही वे दोनों पूँछ हिलाने लगे, मानो क्षमा माँग रहे हों। उसने उन्हें वापस लौटने का इशारा किया। किन्तु वे उसकी ओर से उदासीन बने रहे। उसकी दृष्टि में उन दोनों का मूल्य दौड़ने, पीछा करने और शिकार करने तक ही सीमित था। उन दोनों के लिए उसका महत्त्व दोनों समय के भोजन के समय ही होता था। बूढ़ी जूलिया मनुष्यों के प्रति उन दोनों की अपेक्षा अधिक उदार थी, यद्यपि उसकी निरीह भक्ति जोडी के पिता पैनी बैक्स्टर तक ही सीमित थी। जोडी ने उससे दोस्ती बढ़ाने की काफी कोशिश की, किन्तु वह उदासीन ही बनी रही। तब उसके पिता ने उसे समझाया था, "दस साल पहले, जब तुम

दोनों अभी दो-एक साल के ही थे, तुमने इसे अनजाने में सताया था। तब से यह उस बात को भुला नहीं सकी। कुत्तों का स्वभाव ही प्रायः ऐसा होता है।"

अनाजघर और गोदामों का चक्कर काटता हुआ वह दक्षिण की ओर निकल गया। उसकी इच्छा हुई, काश! उसके पास भी दादी हुट्टो के कुत्ते जैसा कोई कुत्ता होता। दादी का कुत्ता सफेद रंग का, घुंघराले बालों वाला और तमाशे करने में चतुर था। हँसते-हँसते दादी जब भी आपे से बाहर हो जाती, उसका बूढ़ा शरीर हिलने लगता। उस समय यह कुत्ता उसकी गोद में जा चढ़ता, उसका मुँह चाटता और पूँछ हिलाने लगता; मानो वह बता रहा हो कि स्वयं भी हँस रहा है। किसी भी कुत्ते से जोडी को प्यार हो सकता था, बशर्ते कि वह उसका अपना हो, उसे चूम-चाट सके और पिता के सदा साथ रहने वाली जूलिया की भाँति सदा उसके पीछे-पीछे चल सके।

रेतीली पगडंडी पर पहुँचकर वह पूरब की ओर दौड़ने लगा। घाटी अब भी दो मील दूर थी। उसे अनुभव हुआ जैसे उस दिशा में सदा दौड़ते रहने पर भी वह थकेगा नहीं। अनाज काटते समय उसके पाँव दुखने लगते थे, पर अब उसे वैसा दुख नहीं लग रहा था। उसे वह रास्ता इतना प्यारा लगा कि उसने अपनी चाल जान-बूझकर धीमी कर दी। उसकी इच्छा हुई कि वह कुछ अधिक देर तक उसी राह पर चलता रहे।

चीड़-भरे मैदानों को पीछे छोड़ वह आगे बढ़ आया था। दोनों ओर के पेड़ों की कतारें पास से पास सिमटती-सी आ रही थीं। राह सँकरी होती जा रही थी। यहाँ देवदार के पतले-पतले वृक्ष अधिक थे। ये इतने पतले थे कि बिना चीरे भी इन्हें अँगीठी में जलाया जा सकता था। सड़क क्रमशः एक ऊँचाई तक उठती गई। ऊँचाई पर पहुँचकर वह क्षणभर के लिए रुक गया। वैशाख के स्वच्छ आकाश में लाल-पीली धूल और ऊँचे-ऊँचे चीड़ों के अतिरिक्त उसे चारों ओर नीलापन ही फैला हुआ दिखाई दिया। यह नीलापन उसे दादी हुट्टो के घर की नील से रंगे अपने घर बुने कपड़ों के नीलेपन के समान ही दिखाई दिया। आकाश में कहीं-कहीं बिखरे हुए छोटे-छोटे बादल उसे ऐसे लगे जैसे रुई के गोले हों। उसी समय क्षणभर को धूप छिपी और बादलों का रंग धूसर हो उठा। वह सोचने लगा, 'रात आने

से पहले हल्की-हल्की वर्षा ज़रूर होगी।'

तभी उसका ध्यान ढलान की ओर गया और उसके मन में उछलते-कूदते उसे पार करने की चाह जगी। घाटी की उस सड़क को पार कर वह रेतीले तट तक पहुँच गया। वहाँ छोटी-छोटी झाड़ियों और कुंजों में मधुर, सुन्दर और सुगन्धित फूल खिले हुए थे। उन झाड़ियों में उसे एक से एक विचित्र और एक से एक लुभावनी परिचित झाड़ी दिखाई दी। वह उनका आनन्द लेने के लिए धीमी चाल से चलने लगा। वह उस सुगन्धित मैग्नोलिया वृक्ष के पास पहुँचा, जिसके तने पर कभी उसने वन-बिलाव की तसवीर बनाई थी। चारों ओर की अपार वनस्पतियाँ उसे इस बात की गवाही जैसी लगीं कि पास ही कहीं पानी होना चाहिए। उसे अचरज हुआ कि सब जगह धरती और वर्षा एक-जैसी होने पर भी चीड़ के वृक्ष जंगलों में पैदा होते हैं, जबकि चम्पा आदि सुगन्धित वनस्पतियाँ जल के किनारे ही अधिक फूलती हैं। जगह-जगह की विशेषताएँ अलग-अलग होने पर भी कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा आदि सब जगह एक-जैसे पाए जाते हैं, पर जगह-जगह के अनुसार वनस्पतियाँ अलग-अलग किस्म की ही होती हैं। इसका समाधान उसके मन ने खुद ही कर दिया, "वनस्पतियाँ हिल-डुल जो नहीं सकतीं और उन्हें अपने भोजन के लिए अपने नीचे की थोड़ी-सी मिट्टी पर ही जो आधारित रहना पड़ता है!"

यहाँ आकर सड़क का पूरबी किनारा गहरे खड्ड में झुक गया था। लगभग बीस फुट नीचे पानी का सोता बह रहा था। इस किनारे पर मैग्नोलिया, शहतूत, नींबू और अन्य कई प्रकार के मधुर सुगन्धित वृक्ष भरे पड़े थे। इन वृक्षों की शीतल गहरी छाया में से होता हुआ वह उस सोते तक उतर गया। वहाँ पहुँचते ही उसका मन आनन्द से भर उठा। यह स्थान उसे एकान्त और मधुर लगा। इस सोते का जल कुएँ के जल की भाँति साफ़ था। यह पानी तले की रेत में से ही बुलबुलों के रूप में ऊपर आ रहा था। दोनों किनारे हरियाली से भरे थे, जैसे उन्होंने पानी से भरा एक प्याला अपने हाथों में थामा हो। सोते के मुहाने पर पानी में एक हल्की-सी भँवर पड़ रही थी। इसमें मचलते हुए रेत के कण ऐसे लगते थे जैसे वे उबल रहे हों। इससे कुछ ऊँचाई पर उठकर मुख्य धारा का सोता था, जिसका

पानी कुछ आगे चलकर चूने की शिलाओं को काटकर एक धारा के रूप में नीचे की ओर बह चला था। यह धारा आगे जाकर जार्ज झील में मिल गई थी। यह झील सेंट जॉन नदी का ही एक हिस्सा थी। यह नदी उत्तर की ओर बहती हुइ समुद्र में जा मिलती थी। इस नदी ने जोडी को समुद्र की याद दिला दी, जैसे उसने उसका आरम्भ देख लिया हो। इस प्रकार के न जाने कितने और मुहाने होंगे, किन्तु यह मुहाना जैसे उसकी अपनी निजी वस्तु बन गई हो। वह चाहने लगा, काश ! इस जगह स्वयं उसके तथा जंगली जानवरों और प्यासे पक्षियों के अतिरिक्त अन्य कोई कभी न पहुँचा हो।

इस सैर ने जैसे उसमें गर्मी भर दी। तभी उस छायाभरी घाटी ने उस पर अपने शीतल और सुहावने हाथ रख दिए। पाजामे के पाहुँचों को ऊपर चढ़ाकर वह उस सोते के ठण्डे पानी में मैले पैरों समेत घुस पड़ा। उसके पंजे रेत में धँस गए। पंजों से टखनों तक रेत छन-छनकर ऊपर आ रही थी। पानी अत्यधिक ठण्डा था। इस ठण्डक ने उसके पाँवों को निर्जीव-सा कर दिया। पर तब भी टाँगों के बीच में से गुज़रता हुआ वह पानी अपनी मंद-मधुर आवाज़ के कारण बहुत ही सुहावना लगने लगा। आनन्द-विभोर होकर वह उस धारा में ऊपर-नीचे चहलक़दमी करने लगा। चिकने और मुलायम पत्थरों के छूते ही अपने पंजे वह मज़े में उनमें गड़ाने लगता था।

तभी उसे पानी के बहाव में बहती हुई छोटी-छोटी मछलियों की एक पंक्ति दिखाई दी। उथले पानी में चलकर उसने उनका पीछा किया। पर एकदम ही वे ऐसी ओझल हुईं, जैसे कभी थीं ही नहीं। पास ही सनावर की एक नंगी लटकती जड़ के पास आकर वह रुक गया। यहाँ पानी कुछ गहरा हो गया था। उसे आशा थी कि वे यहीं फिर सामने आएँगी। पर वहाँ उसे दिखाई दिया एक मेंढक, जो कीचड़ में से निकलकर उसकी ओर ताक रहा था। वह भी उसे देखकर जैसे डर-सा गया और उसी जड़ के नीचे फिर से घुस गया। जोडी यह देखकर हँस पड़ा। अचानक वह बोल पड़ा, "अरे ! मैं तुम्हें पकड़ थोड़े ही रहा था ! मैं रैकून तो हूँ नहीं ?"

वायु का एक झोंका आया और उसने उसके ऊपर झुकी हुई दो मिली

हुई शाखों को अलग-अलग कर दिया। अब उनके बीच से धूप की किरणें चुपचाप उसके सिर और कंधों पर आकर टिक गईं। सिर पर पड़ने वाली यह गर्मी उसे अच्छी ही लगी, उसके पाँव जो ठण्डे पानी से जकड़े गए थे। वायु का वह झोंका हटते ही टहनियाँ फिर से मिल गईं और धूप फिर से गायब हो गई। तब वह धारा के उस पार चला गया। वहाँ पेड़ कुछ अलग-अलग थे। अचानक उससे ताड़ की एक शाखा छू गई। उसके पत्ते को देखकर उसे अपने जेब में पड़े चाकू का ध्यान आया और यह भी याद आया कि क्रिसमस के दिनों में उसने स्वयं ही पनचक्की की नक़ल बनाने की बात सोची थी।

ऐसी चक्की उसने स्वयं कभी न बनाई थी। दादी हुट्टो का पुत्र ओलिवर ही कभी-कभी उसे ऐसी चक्की बना दिया करता था। पर उसे घर लौटने का अवकाश कभी-कभी ही मिलता था। उसकी बनाई पनचक्की को ध्यान में रखकर उसने सबसे पहले चक्की की धुरी के घूमने के लिए दोनों ओर की गुलेल-जैसी दो लकड़ियाँ मधुर चैरी के पेड़ से काटकर तैयार की। इनके कोने और लम्बाई आदि समान थी। बीच की धुरी के सम्बन्ध में उसे याद था कि ओलिवर उसे गोल और चिकना बनाया करता था, ताकि वह ठीक से घूम सके। इसके लिए उसने ऊपर की ओर के एक विशाल चैरी के पेड़ पर चढ़कर क़लम जितनी मोटी एक टहनी काटी और उसे गोल और चिकना बनाया। तब उसने ताड़ के एक पत्ते को चुना और उसमें से एक इंच चौड़े और चार इंच लम्बे दो बराबर के टुकड़े काटे। फिर उन दोनों के बीच में एक हल्का चीरा दिया, ताकि उस गोल शाख में ये फँसाएँ जा सकें। तब उन दोनों के बीचों-बीच उस गोल शाख को फँसाकर उसने दोनों पत्तों को, पंखों के रूप में, विरोधी दिशाओं में जमाया। इस प्रकार चक्की का पंखों वाला चक्का तैयार हो गया। अब उसने इस पंखे की धुरी की लम्बाई नाप कर उन गुलेल-जैसी दोनों शाखों को एक-दूसरे के आमने-सामने उस सोते के बीच में, मुहाने से कुछ दूरी पर, रेत में गहरा गाड़ दिया।

पानी अधिक गहरा नहीं था, फिर भी धार तेज़ थी। गहराई को पूरा-पूरा आँकने के बाद किनारे की शाखों को ठीक से करके उसने दोनों के बीच उस धुरी को ठीक से रख दिया। पर चक्की चलनी शुरू नहीं हुई। तब उसने

धुरी को स्वयं ही एक बार घुमा दिया। नीचे की तेज़ धार का पानी पंखों को छूकर आगे धकेलनेलगा। वह चक्की चलने लगी। एक पंखे के हटते ही दूसरा और उसके बाद अगला पंखा सामने आने लगा। इस तरह गति का एक निरन्तर सिलसिला ज़ारी हुआ। पनचक्की चल निकली। उसकी लय और गति लिन की आटा पीसने वाली पनचक्की के ही समान थी।

जोडी ने सन्तोष की एक गहरी साँस ली और वहीं रेतीले तट पर गति के उस जादू से लुटा हुआ-सा निश्चिन्त होकर लेट गया। ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर—इस क्रम से वह चक्र चल रहा था—बिना रुके! धरती से फूटता हुआ यह सोता सदा ही बहता रहेगा और इसकी यह पतली धार भी निरन्तर चलती रहेगी। यह सोता समुद्र तक जानेवाले पानी का आरम्भ-मात्र था। इसलिए जब तक इस पंख के पत्ते ही गिर न जायँ, या गिलहरियों द्वारा काटी हुई टहनियाँ गिरकर इस चक्की की गति को ही न रोक दें, यह चलती ही रहेगी। उसे लगा कि अपने पिता की आयु में पहुँच जाने तक भी वह इस चक्की को इसी तरह चलता हुआ ही पाएगा। उसके रुकने का प्रश्न ही नहीं उठता।

उसने अपने नीचे के पत्थरों को ठीक से बिठाया और लेटने की जगह बना ली। अपनी बाँह को सिरहाना बना वह लेट गया। वृक्ष की टहनियों में से छनकर आने वाली गर्म और हलकी पड़ती धूप उस पर ऐसी बिछ गई थी, जैसे उसने रज़ाई ओढ़ी हो। रेत और धूप के बीच लेटा हुआ वह एकटक अपनी बनाई पनचक्की की ओर देख रहा था। उसकी गति उस पर जादू कर गई थी। उसके पंखों की चाल ने उसकी पलकों को गतिमय कर दिया था। उनसे टपकने वाली बूँदें उसे किसी पुच्छल तारे के पूँछ के समान चमकती हुई लगीं। बहते पानी की आवाज़ ऐसी लगती थी, जैसे बिल्लियाँ पानी पी रही हों। उसी समय एक बरसाती मेंढक जैसे कुछ गा उठा और फिर शान्त हो गया। क्षणभर के लिए जोडी को ऐसे अनुभव हुआ जैसे वह किसी बहुत मुलायम और मखमली कगार पर लटक रहा हो और उसके साथी हों वह टरटराता मेंढक और वे पंखों से टपकती हुई चमकती पानी की बूँदें। उसे लगा जैसे कगार से नीचे गिरने की जगह वह कोमलता के अम्बार में धँसता चला जा रहा हो। धीरे-धीरे उसे ऊपर का

नीला आकाश सिमटता आता-सा लगने लगा। अब वह सो चुका था।

जब वह जागा, उसे लगा कि वह उस धारा के किनारे न होकर कहीं और है। वह किसी और दुनिया में खोया हुआ था, इसीलिए जागने पर भी उसे सब कुछ सपना-सा ही लग रहा था। सूरज छिप चुका था और उसके साथ ही मिट चुका था धूप-छाँह का भेद भी! बढ़ते हुए अँधेरे ने सब कुछ एक रंग का कर दिया था। सनावर का कालापन, चम्पा की हरियाली और धूप-नहाये चैरी का पीलापन—सभी का भेद मिटाकर एक ही रंग चारों ओर छा चुका था। स्वयं उसके शरीर पर और आस-पास चारों ओर हल्का-हल्का कुहरा जम चुका था। ऐसा लगता था जैसे किसी जलप्रपात से बिखरकर कुछ जल-कण चारों ओर बिछ गए हों। इस कुहरे ने उसकी त्वचा को हल्का-हल्का गीला कर दिया। उसे लगा जैसे यह एक साथ ही उष्ण भी हो और शीतल भी। अब वह पीठ के बल लेट गया और उस गहरे आकाश में देखने लगा, जो शोक से व्याकुल कबूतर की धूसर रंग की छाती के समान कोमल-सा दिखाई दे रहा था।

हल्की-हल्की बारिश होने लगी। वह वहाँ ऐसे लेटा था जैसे कोई नन्हा पौधा हल्की-हल्की बारिश की बूँदों को अपने अन्दर समेट रहा हो। जब उसका चेहरा भीग गया और उसे अपनी कमीज़ गीली अनुभव हुई, वह उठ पड़ा। वह कुछ क्षण वैसे ही खड़ा रह गया। उसने देखा कि उसके सोते हुए कोई हिरन उस धारा तक आया था। उसके ताज़ा पाँव के निशान धारा के पूर्वी किनारे तक आकर पानी के बिलकुल पास रुक गए थे। वे निशान एकदम नुकीले और तीखे थे। स्पष्ट था कि वे किसी हिरनी के थे। वे रेत में काफी गहरे धँसे थे। इससे उसने अनुमान किया कि वह बूढ़ी और भारी शरीर की रही होगी। हो सकता है कि वह होनेवाले बच्चे के कारण भारी हो। वह यहाँ तक आई और उसने धारा से खूब डटकर पानी पिया। तब तक वह यह नहीं जान पाई थी कि वह यहाँ सो रहा है। तभी अचानक उसे उसकी उपस्थिति का अन्दाज़ हुआ। घबराकर वह भागी। उसकी घबराहट और डर की निशानी पाँवों के उन चिह्नों में अब तक साफ थी। ये निशान दूसरे किनारे तक कुछ इस तरह पहुँचे थे कि वे ठीक से पहचाने न जा सकते थे। हो सकता है कि उसे देखने से पहले वह पानी पी ही न सकी हो और

तुरन्त ही तेज़ चाल से रेत उछालती हुई भाग गई हो। उसने यही चाहा, काश ! कि वह अब तक भी प्यासी और सहमी हुई जंगल में ही न छिपी हो।

तब उसने और भी निशान खोजने शुरू किए। गिलहरियाँ उस धारा के किनारे ऊपर-नीचे की ओर बिना घबराए दौड़ती रही थीं। कोई रैकून जैसा जानवर भी उधर आया था, जिसके तेज़ नाखूनों वाले पंजों के निशान अब तक भी वहाँ मौजूद थे। परन्तु उसके आने का समय वह ठीक-ठीक नहीं जान पाया। यदि उसके स्थान पर उसका पिता होता तो वह निश्चित रूप से बता सकता कि कब कौन-सा जंगली जानवर वहाँ से गया था। जोडी को तो केवल उतना ही पता था कि हिरनी वहाँ आई और चली गई। तब उसका ध्यान पनचक्की की ओर गया। यह ऐसे चल रही थी जैसे सदा से ही चलती आ रही हो। यद्यपि ताड़ के पत्ते से बने हुए पंखे कमज़ोर-से थे, पर फिर भी उस उथले पानी के थपेड़ों को सहते हुए वे अपनी वीरता और शक्ति का परिचय दे रहे थे। बारिश की हल्की बूँदों के कारण वे चमकने लगे थे।

जोडी ने आकाश की ओर निगाह डाली, चारों ओर काले आकाश को देखकर वह समय का कुछ भी निश्चय न कर सका। न ही वह यह जान सका कि वह कितनी देर सोया। वह धारा के पश्चिमी तट पर चलने लगा। यहाँ बहुत-सी झड़बेरियाँ खुले में फैली थीं। अभी वह जाने या ठहरने के बारे में निश्चय भी न कर पाया था कि बारिश जिस तरह चुपचाप आई थी, उसी तरह समाप्त हो गई। दक्षिण-पश्चिम से शीतल बयार का एक हल्का-सा झोंका आया और धूप फिर निकल आई। बादलों के समूह ऐसे लग रहे थे जैसे सफेद पंखों का अम्बार लगा हो। उधर पूरब में एक सुन्दर इन्द्रधनुष निकल आया। जोडी को यह इतना प्यारा और अद्भुत लगा जैसे इसे देखते-देखते वह खुशी से फूट पड़ेगा। धरती पीली और हरी-सी थी। हवा फिर से बहने लगी थी, जैसे दिखाई न देकर भी वह जीवित हो। धूप जैसे वर्षा से नहाकर और भी सुनहरी हो उठी हो। चारों ओर के वृक्ष, वनस्पतियाँ और घास तक चमक उठे थे, जैसे वर्षा की बूँदों ने उन पर वार्निश फेर दी हो।

उसके मन में खुशी उसी प्रकार बरबस फूटने लगी, जैसे सामने की

धारा का सोता धरती में से फूट रहा था। उसने अपनी बाहें कंधों की सीध में फैलाईं और अपने पाँव पर खड़े-खड़े ही चारों ओर चक्कर काटने लगा। भँवर के समान ये चक्कर तेज़ से तेज़ होते गए। जब उसे अनुभव होने लगा कि वह अपने वश में नहीं रहा तब उसने अपनी आँखें बन्द कीं। उसे कुछ चक्कर-से आए और वह भूमि पर चित्त गिर पड़ा। उसे अब भी लग रहा था जैसे उसके नीचे की धरती घूम रही हो और वह खुद भी घूम रहा हो। उसने अपनी आँखें खोलीं। नीला आकाश और सफ़ेद बादल भी उसे घूमते हुए नज़र आए। उसे अनुभव हुआ, जैसे वह स्वयं धरती, पेड़ों और आकाश के साथ घूमते-घूमते एक हो गया हो। यह चक्कर जब समाप्त हुआ, तब उसका दिमाग़ साफ़ हो चुका था। अब वह अपने पाँव पर खड़ा हुआ। उसे अपना सिर कुछ हल्का अनुभव हुआ, पर साथ ही उड़ता हुआ-सा भी। इस पर भी उसे शान्ति अनुभव हो रही थी और अब यह दिन उसके लिए फिर से एक साधारण दिन-सा बन गया था।

वह मुड़ा और घर की ओर उछलता-कूदता चल पड़ा। उन चीड़ों का सुगन्ध से भीनी हवा में वह गहरी साँस लेने लगा। उसके पाँव के नीचे की ढीली धूल बारिश से कुछ जम-सी गई थी। यह लौटना उसे सुखद लग रहा था। जब तक उसे परिवार के खेतों के पास के चीड़ों के ऊँचे पेड़ दिखाई दिए, सूर्य अस्त होने ही वाला था। पश्चिम की लाल-पीली पृष्ठभूमि पर वे ऊँचे और काले पेड़ तने खड़े थे। उसे चूज़ों की चख-चख और आवाज साफ़ सुनाई दे रही थी। स्पष्ट था कि उन्हें अभी-अभी खाना दिया गया है। अब वह बाड़े में घुसा। उस वसन्ती प्रकाश में बाड़े के जंगले का सलेटी रंग चमक उठा था। सरकण्डों और मिट्टी से बनी चिमनी में से घना धुआँ उठ रहा था। स्पष्ट था कि साँझ का खाना तैयार हो गया था और बन्द चूल्हे में रोटी सिक रही थी। उसे आशा थी कि ग्राहम्सविले से उसके पिता अब तक न लौटे होंगे। यह ख़याल आते ही पहली बार अनुभव हुआ कि पिता की अनुपस्थिति में उसे घर नहीं छोड़ना चाहिए। अगर कहीं उसकी माता को ईंधन की ज़रूरत पड़ी, तो वह गुस्से होगी। उसका पिता भी क्रोध में सिर हिलाकर उसे चेताएगा। उसे दूर से ही बूढ़े सीज़र की तेज साँसें सुनाई पड़ीं और उसने जाना कि उसका पिता उससे कुछ ही आगे चल

रहा है।

उनके खेतों में एक बहुत ही मधुर-सी ध्वनि भर रही थी। घोड़ा दरवाज़े पर हिनहिना रहा था। बछड़े अपने बाँधने की जगह पर ही आवाज़ें दे रहे थे और उनकी दुधारू माँ रम्भाकर उत्तर दे रही थी। एक ओर चूज़े अपनी आवाज़ें तेज़ कर रहे थे, तो दूसरी ओर कुत्ते शाम का खाना आता देखकर भौंकने लगे थे। भूखा होना और समय पर खाना मिलना उनके लिए एक प्रिय बात थी और वे आशा और विश्वास के साथ खाने के लिए उत्सुक रहते थे। शीत समाप्त हुई, पर बहुत कुछ और भी समाप्त होने लगा था। अनाज, सूखी घास आदि बहुत कम रह गए थे। अब वसन्त आते ही चरागाहें फिर से हरी-भरी और रसीली हो उठी थीं। यहाँ तक कि चूज़े भी नई उगी घास के अंकुरों को चखने के लिए ललचा उठे थे। कुत्तों ने उसी शाम छोटे-छोटे खरगोशों का नया ही घर पता किया था। अतः इतना सब होने के बाद उनके लिए परिवार के भोजन से बचा-खुचा खाना महत्त्वहीन-सा हो गया था। जोडी ने देखा, जूलिया गाड़ी के नीचे जा लेटी थी। स्पष्ट था कि वह मीलों घूमने के बाद थक चुकी थी। उसने सामने के बाड़े के दरवाज़े को खोला और सीधा पिता की खोज में चल पड़ा।

पैनी लकड़ियों के ढेर के पास खड़ा था। उसने अब तक भी अपने विवाह वाले कोट को पहना हुआ था। इसे पहनकर चर्च या व्यापार आदि में जाने में वह अपनी शान और इज़्ज़त समझता था। इसकी बाँहें छोटी पड़ चुकी थीं, पर इसका मतलब यह नहीं कि पैनी बड़ा हो गया था, बल्कि यह गर्मियों की नमी में लटकते-लटकते और बार-बार लोहा करने से सिकुड़ गया था। जोडी ने अपने से भी बड़ी अपने पिता की बाँहों को लकड़ी के एक गट्ठे के चारों ओर लिपटा हुआ पाया। वह जोडी की जगह उसका काम कर रहा था। उसे अपने अच्छे कोट का भी ध्यान न था। जोडी उसकी ओर दौड़ता हुआ बोला, "पिताजी! लाइए, यह मैं कर लूँगा।" उसे आशा थी कि उसकी यह चाह, उसकी मटरगश्तियों को ढँक देगी।

उसके पिता ने कमर सीधी की और कहा, "बेटे! मैं तो तुम्हें भुला ही बैठा था।"

"मैं ज़रा घाटी तक गया था," अपराधी के स्वर में उसने उत्तर दिया।

पैनी बोला, "यह सचमुच बाहर भ्रमण के लिए बहुत प्यारा दिन था। ऐसे दिन कहीं भी जाया जा सकता है। पर तुम्हें इतनी दूर जाने की कैसे सूझी?"

जोडी के लिए यह याद करना कि वह क्यों गया था, बड़ा बोझिल हो उठा, जैसे यह वर्ष-भर पहले की बात हो। उसे फिर से वह क्षण याद करना पड़ा, जब उसने अपनी खुरपी को बाड़ पर टिकाया था।

वह बोला, "ओह! मेरा उद्देश्य था मधुमक्खियों का पीछा करना और उनके शहद के पेड़ को खोज निकालना।"

"वह मिल गया?"

जोडी की नज़रें जड़-सी हो गईं। उसने कठिनता से उत्तर दिया, "मैं निश्चय ही इसे खोज निकालता, पर मुझे यह बात वहाँ जाकर बिलकुल भूल ही गई।"

इस समय वह अपने-आपको ऐसा ही मूर्ख अनुभव कर रहा था, जैसे कोई शिकारी कुत्ता खेत के चूहे का पीछा करता हुआ पकड़ा गया हो। वह अपने पिता की ओर बड़ी करुण दृष्टि से देखने लगा। उसके पिता की सफ़ेद नीली आँखों में एक चमक-सी दौड़ गई। वह बोला, "जोडी! सच कहो, घबराने और शर्म करने की ज़रूरत नहीं। यह शहद के पेड़ का बहाना तो नहीं ढूंढा? तुम घूमने गए थे न!"

जोडी मन मसोसकर रह गया। उसने स्वीकार किया, "सच है, पर शहद के पेड़ को खोजने से पहले ही इस भ्रमण की चाह ने मुझे घेर-सा लिया।"

"यही मेरा अनुमान था। यह बात मुझे तब सूझी, जब मैं ग्राहम्सविले की ओर जा रहा था। मैंने अपने मन में कहा, 'अब यह जोडी है। इसे मक्की की निलाई में बहुत समय तो लगेगा नहीं। अगर इसकी जगह मैं होता तो आज के सुन्दर वसन्ती दिन, अपने लकड़कपन में, मैं क्या करता?' और तब मेरे मन ने ही उत्तर दिया, 'मैं घूमने निकल जाता—कहीं पर भी, इस धरती पर कितनी दूर भी निकल जाता।'"

उस बच्चे में जैसे एक अजीब-सी गर्मी भर गई। अब उसके लिए सूर्य जैसे नीचे झुका हुआ नहीं था। वह मस्त हो उठा। उसने कहा, "ठीक

इसी क्रम से मैंने भी सोचा था।"

पैनी ने अपना सिर घर की ओर उठाकर कहा, "पर अब अपनी माँ से यह घूमने की बात न कह बैठना। औरतें प्राय: जीवनभर नहीं समझ सकतीं कि आदमी को इस प्रकार का घूमना क्यों अच्छा लगता है? मैंने उसे नहीं पता चलने दिया कि तुम यहाँ नहीं थे। उसने पूछा था कि, 'जोडी कहाँ है?' मैंने उसे उत्तर दिया था, 'ओह! समझा, यहीं कहीं होगा?'"

उसने एक आँख झपकाई और जोडी ने भी उसी तरह पलक झपकाकर जवाब दिया।

"शान्ति बनाए रखने के नाम पर घर के आदमियों को मिलकर ही रहना चाहिए। जाओ, अब तुम अपनी माँ के लिए ईंधन का एक बड़ा गट्ठर उठा ले जाओ।"

जोडी ने गट्ठर बनाया और घर की ओर जल्दी-जल्दी ले चला। उसकी माँ अँगीठी पर झुकी हुई थी। पकती हुई चीज़ों में से मसालों की उठने वाली गंध ने नाक की राह उसके अन्दर घुसकर जैसे उसे भूख से कमज़ोर बना दिया। वह पूछ बैठा, "क्या यह आलुओं का मीठा हलुवा तो नहीं है, माँ?"

"हाँ, वही है। पर अब तुम दोनों ज़्यादा देर मत लगाओ। खाना तैयार है। जल्दी ही बैठ जाओ।"

उसने लकड़ियाँ पेटी में उलटाईं और जल्दी ही उन्हें ठीक-ठाक कर दिया। उधर उसका पिता ट्रिक्सी गाय को दुह रहा था। जोडी पास जाकर बोला, "माँ कहती है, काम समाप्त करके जल्दी आओ। क्या मैं सीज़र को भी दाना डाल आऊँ?"

'मैं उसे खिला चुका हूँ क्योंकि उस बेचारे को भूख लगी थी।" वह कमर सीधी करके उस तिपाये स्टूल पर से खड़ा हुआ और फिर बोला, "जाओ, यह दूध ले जाओ। और आज इसे गिराना या खिडाना नहीं, जैसे कल गिराते गए थे। धीरे-धीरे जाना।"

तब वह गाय से अलग होकर खूँटे तक गया, जहाँ बछड़ा बँधा हुआ था। वहीं से उसने गाय को पुकारा, "ट्रिक्सी! इधर-इधर!" गाय झुकी

और अपने बछड़े के पास आ गई।

"उधर रहो, ज़रा आराम से। तुम जोडी जैसे लोभी हो।" बछड़े को पुचकारते हुए उसने कहा। उसने दोनों को थपक दी और जोडी के पीछे-पीछे घर की ओर मुड़ पड़ा। गुसलखाने में जाकर दोनों ने बारी-बारी से मुँह-हाथ धोए और बाहर लटकते हुए तौलिए से उन्हें पोंछा। श्रीमती बैक्स्टर मेज़ पर उनकी इन्तज़ार कर रही थी। आते ही उन्हें तश्तरियाँ पकड़ाने लगी। मेज़ का एक पूरा कोना उसके भारी-भरकम शरीर ने घेरा हुआ था। जोडी और उसके पिता उसके दोनों ओर बैठ गए। उन दोनों के लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह सब जगह चौधरानी बने। उसने पूछा, "आज तुम्हें खूब भूख लगी होगी?"

जोडी बोल पड़ा, "मैं अकेला ही पीपा-भर मांस और सेरभर बिस्कुट खा जाऊँगा।"

"यह सब तुम्हारे कहने की बात है। तुम्हारी आँखें तुम्हारे पेट से भी बड़ी हैं।" पैनी बोल पड़ा, "अगर मैं अनुभवी न होता, तो मैं भी यही कुछ कहता। ग्राहम्सविले जाना मात्र ही मुझमें भूख लगा देने के लिए काफी है।"

"वहाँ तुम्हें सर्दी या धूप लग गई होगी। यही एक कारण हो सकता है।" श्रीमतीजी ने टिप्पणी की।

"नहीं, आज तो ऐसे ही मामूली-सा हुआ। जिम ने इलाज कर दिया।"

"तब निश्चय ही तुम्हें कोई विशेष नुक़सान नहीं हुआ।"

जोडी जैसे न कुछ सुन रहा था, न देख रहा था। उसे केवल अपने भोजन का ही ध्यान था। सारी सर्दियाँ और वसन्त तंगी में बिताने के बाद, और अब भी पशुओं और परिवार के लिए बहुत थोड़ा सामान शेष रह जाने पर, आज जब अचानक ही माँ ने किसी उपदेशक के लिए खूब बढ़िया-सा खाना पकाया, तो जोडी को अपनी ज़िन्दगी में पहली बार इतनी भूख लगनी स्वाभाविक ही थी। सूअर के माँस से बनाया खास तरह का पकवान, आलू और प्याज आदि भरकर बनाए हुए समोसे, जिनमें ताज़ा पकड़ी जलमुर्गी भुनी हुई थी, खट्टी नारंगी मिले बिस्कुट और आलू का मीठा हलुवा—ये सब चीज़ें ही उसका मन लुभा रही थीं। एक ओर अधिक

बिस्कुटों और समोसों के लिए उसकी इच्छा बढ़ रही थी और दूसरी ओर उसे अनुभव सिखा रहा था कि अगर वह इन्हें अधिक खाएगा तो उसके पेट में हलुवे के लिए जगह न रहेगी। चुनाव सीधा और साफ था। वह बोला, "माँ ! क्या मुझे हलुवा इसी समय मिल सकता है ?"

वह एक क्षण के लिए रुकी और उसके लिए उसने बहुत सारा हलुवा अलग कर दिया। जोडी मसालेदार और खुशबूदार हलुवे पर जैसे टूट पड़ा।

उसकी माँ ने शिकायत की, "तुम्हें क्या पता इसे बनाने में मुझे कितनी देर लगी ? और तुम इसे इस तरह इतनी जल्दी में खत्म कर रहे हो।"

जोडी ने स्वीकार किया, "मैं जल्दी-जल्दी ज़रूर खा रहा हूँ। पर इसका स्वाद मुझे बहुत दिनों तक याद रहेगा।"

भोजन समाप्त हुआ। अब जोडी तृप्त था। उसके पिता ने भी आज रोज़ की अपेक्षा कुछ अधिक ही खाना खाया।

"मेरा पेट भर गया है। परमात्मा का बार-बार धन्यवाद।" पैनी बोला। श्रीमतीजी ने एक लम्बी साँस ली और बोलीं, "अगर कोई मेरे लिए मोमबत्ती जला दे तो मैं बर्तनों की सफाई से जल्दी ही निबट जाऊँगी। हो सकता है, कुछ समय मुझे आराम के लिए भी मिल जाय।"

जोडी उठा और उसने एक मोमबत्ती जला दी। इधर मद्धिम-सी पीली रोशनी उठ रही थी, उधर उसका ध्यान पूरब की ओर की खिड़की में से बाहर की ओर गया। पूर्ण चन्द्रमा धीमे-धीमे उठ रहा था। पैनी उधर देख-कर बोल उठा, "इस समय यह बत्ती जलाना क्या व्यर्थ नहीं है ? पूरा चाँद जो चमक रहा है !" वह भी खिड़की तक चला आया, और दोनों बाप-बेटा मिलकर उसे निहारने लगे।

"बेटे ! इसे देखकर कुछ ख़याल आया ? तुम्हें याद है, मैंने क्या कहा था कि वैशाख की पूर्णमासी पर हम कुछ करेंगे ?"

"मुझे इस समय कुछ भी याद नहीं।"

कुछ भी हो, उसे अब तक ऋतुओं के विषय में अधिक ध्यान नहीं था। साल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पूर्णमासियों की बात याद रखना और

ऋतुओं का हिसाब-किताब रखना जैसे वह भी अपने पिता की उम्र तक पहुँचकर ही सीख सकेगा।

"नहीं, मैं कह सकता हूँ कि तुम नहीं भूले। क्यों, तुम्हें याद नहीं? मैंने बताया था कि वैशाख में पूर्णमासी के दिन भालू अपनी सर्दियों की मादों से निकलकर बाहर आते हैं?"

जोडी को जैसे कुछ याद आया। "ओह! उस पाँव-कटे भालू के बारे में? हाँ! आपने कहा था कि वह जब भी आएगा, हम उसे फँसाने की कोशिश करेंगे।"

"हाँ! अब ठीक है।"

"तो पिताजी, हम कब जा सकते हैं?"

पैनी ने उत्तर दिया, "जितनी जल्दी हम खेतों की निलाई कर लें। पर हाँ, हमें भालू की निशानी मिलनी आवश्यक है।"

"आखिर किस तरीके से हमें यह शिकार शुरू करना होगा?"

"हमें घाटी के सोतों के पास जाकर देखना होगा कि क्या उसने वहाँ आकर पानी पिया है?"

जोडी को याद आया, "पिताजी, जब मैं उस घाटी के सोते के किनारे सो रहा था तो एक बड़ी-बूढ़ी हिरनी वहाँ पानी पीने आई थी। मैंने वहाँ एक पनचक्की बनाई है और वह मज़े में घूम रही है।"

श्रीमती बैक्स्टर का ध्यान एकाएक उधर गया और उसके बर्तन-भांडों की आवाज़ अचानक रुक गई। वह बोली, "अरे, दुष्ट भगोड़े! अच्छा, मैंने अब जाना कि तुम यहाँ से आज गायब रहे थे। तुम वैसे ही खिसकने लगे हो जैसे बरसात में मिट्टी की सड़क।"

जोडी हँसता हुआ चिल्लाया, "आज तुम्हें खूब बनाया, माँ! अब कुछ कह लो। मैंने तो एक बार तुम्हें बनाना ही था।"

उसकी माँ जैसे ढीली पड़ गई। बनावटी गुस्से से बोली, "तुमने मुझे मूर्ख बनाया और मैं यहाँ खड़ी-खड़ी तुम्हारे लिए आलू का हलुवा बनाती रही।"

जोडी ने फिर छेड़ा, "अच्छा माँ, कल्पना करो अगर मैं कोई जन्तु होता और घास तथा जड़ों के अतिरिक्त कुछ न खाता!"

माँ ने उत्तर दिया, "तब कम-से-कम मुझे कोई गुस्सा दिलाने वाला तो न होता।"

उसी समय उसे माँ के चेहरे पर मुसकान फैलती नज़र आई, जिसे वह छिपाना चाहती थी, पर छिपा न सकी।

जोडी बोल पड़ा, "माँ हँस रही है! माँ हँस रही है! तुम हँसते हुए गुस्से कैसे हो सकती हो!"

वह उछलकर माँ के पीछे जा पहुँचा और उसने उसके अंगरखे को खोल डाला। अंगरखा फर्श पर गिर गया। वह अपने भारी-भरकम शरीर के साथ जल्दी में घूमी और उसने जोडी के कानों को मसल दिया। परन्तु उस मसलन में भी बहुत हल्कापन और आनन्द की भावना मिली-जुली थी। दोपहर की ही भाँति जोडी में आनन्द का जैसे एक दौरा फिर से आ गया। उसने फिर पाँवों पर चक्कर खाने शुरू कर दिए, जैसा कि उसने सोते के किनारे किया था।

माँ ने चेतावनी दी, "इस तरह तुम मेज़ पर से तश्तरियों आदि को गिराकर ही रहोगे। तब पता चलेगा कि गुस्सा कैसे आता है?"

जोडी मस्त था। बोला, "मैं अपने वश में नहीं हूँ। मुझे चक्कर-से आ रहे हैं।"

माँ बोली, "तुम बिलकुल बिगड़ गए हो।"

यह बात बिलकुल ठीक ही थी। उसे वैशाख ने सचमुच बिगाड़ दिया था। वसन्त आते ही जैसे उस पर चक्कर सवार हो गया। वह इस समय उतना ही मस्त था जितना लेम फौरेस्टर शनिवार की रात में शराब पीकर हो जाता था। उसका सिर जैसे धूप, हवा और हल्की-हल्की बारिश से नितारी हुई शराब में तैर रहा था। उसकी पनचक्की ने जैसे उसे शराब पिला दी थी। और उसे बढ़ावा दिया था। हिरनी के आने, पिता द्वारा उसकी अनुपस्थिति छिपाए जाने, माता द्वारा हलुवा बनाने और उसके साथ हँसने आदि ने! उसे चारों ओर छिटकी चाँदनी से घिरे घर में ऐसा आनन्द आ रहा था, जैसे उसे जलती हुई मोमबत्ती ने जला डाला हो। उसे उस बूढ़े रीछ का ख़याल आया, जो काला, विशाल, क़ानून तोड़ने वाला था और जिसके एक पंजे में से एक अंगुली ग़ायब थी। उसे लगा जैसे वह अपनी सर्दी

की माँद में से निकल रहा हो और इस कोमल वायु और चाँदनी को जोडी की ही भाँति सूँघ और चख रहा हो। वह इसी नशे में बिस्तर पर लेट तो गया पर उसे नींद न आई। उसे आज के दिन की खुशियों ने कुछ इस प्रकार भर दिया था, जैसे वह यह याद अपनी तमाम ज़िन्दगी-भर न भुला सकेगा। जब-जब भी वैशाख की हल्की हरियाली और बरसात की भीनी सुगन्ध उसके सामने आएगी, जैसे उसका कोई पुराना घाव हरा हो जाएगा और एक दौरा-सा उसे अनजाने ही घेर लिया करेगा। तभी जैसे उसे उस चाँदनी रात के पार से किसी ने बुलाया हो! वह चुपचाप ही गहरी नींद में सो गया।

2

आसमान में पूरनमासी का चाँद अपनी पूरी छटा पर था। पैनी बैक्स्टर बिस्तर पर लेटकर भी सो नहीं पाया। पूरे चाँद को देखकर वह कभी भी सो नहीं पाता था। वह जाग रहा था, पर बग़ल में ही सो रही थी उसकी भारी-भरकम पत्नी। वह प्रायः चकित-सा होता था कि इतनी उजली चाँदनी में भी लोग खेती या मज़दूरी के काम पर नहीं जाते। अगर उसका वश चले तो वह बिस्तर छोड़कर सनावर वृक्ष से ईंधन काटने या जोडी द्वारा अधूरी छोड़ी अनाज की निलाई को पूरा करने निकल जाय! उसे जोडी का ध्यान आया।

'मैं चाहूँ तो उसे घुटनों के बल चला सकता हूँ'—उसने सोचा। अगर कहीं अपने बचपन में उसने घर से भागने या शिथिलता दिखाने की ऐसी हरकत की होती तो उसके पिता ने उसे अच्छी तरह ठीक कर दिया होता। वह उसे बिना खाना खिलाए फिर से उसी सोते पर लौटा देता और पनचक्की तोड़ने को विवश करता।

'पर सचाई यह है कि किसी का लड़कपन सदा टिककर नहीं रहता'—उसने मन ही मन कहा। उसने जब अपने अतीत पर विचार करना शुरू किया, तो उसे लगा जैसे उसका अपना लड़कपन कभी सार्थक न रहा हो। उसका पिता उपदेशक था। उसकी सख्ती यहूदियों के ईश्वर से कम न थी। पर उसकी आजीविका का साधन यह उपदेश-वृत्ति नहीं थी। उसके लिए वौलूसिया के नजदीकी खेतों की उपज पर उन्हें निर्भर रहना होता था। वहीं पर उसने अपना परिवार बसाया और बढ़ाया था। उसने स्वयं ही बच्चों को पढ़ना और लिखना सिखाया तथा धर्मग्रन्थ समझाए। इस पर भी, जब से बच्चे खेतों तक अपने पिता का अनुसरण करने में समर्थ हुए, उन्हें अनाज के बीज ढोने तथा और तरह के श्रम करने पड़े। इस कड़ी मेहनत से उनकी हड्डियाँ तक दुखने लगती थीं और अंगुलियाँ अकड़ जाती थीं। फिर भी अनाज पूरा नहीं पड़ता था। प्रायः सभी बच्चों के पेट में कीड़े पल गए थे। परिणामतः सभी की शारीरिक बढ़ती बहुत कम हो पाई। स्वयं पैनी युवावस्था तक पहुँचने पर भी एक लड़का-सा ही लगता था। उसके पाँव छोटे, कंधे सिकुड़े हुए, कमर नदारद—जैसे पसलियाँ और कमर एक-दूसरे से उलझे हुए हों। शरीर का सारा साँचा ही जैसे गड़बड़ हो! फौरेस्टर लोगों के बीच खड़ा वह ऐसे लगता था, जैसे सनावर के विशाल पेड़ों के बीच जैतून परिवार का कोई छोटा-सा वृक्ष हो।

एक दिन लैम फौरेस्टर ने उसे देखकर कहा था, "अरे, बैक्स्टर! तुम कितने छोटे हो, जैसे पैनी का छोटा-सा सिक्का! उस सिक्के जैसा तुम्हारा आर्थिक महत्त्व तो हो सकता है, पर इतने छोटे आदमी का और कोई उपयोग नहीं। हाय, बेचारा पैनी बैक्स्टर!"

और तब से उसका नाम ही 'पैनी बैक्स्टर' पड़ गया। मतदान के समय उसने अपना असली नाम 'एज़रा एज़ेक्याल बैक्स्टर' लिखवाया था, किन्तु कर देते समय उसका नाम 'पैनी बैक्स्टर' ही लिखा गया। उसने इस नाम को चुपचाप स्वीकार कर लिया, पर वह एक अजीब धातु का बना था—ताँबे-सा ही मज़बूत और उस-जैसा ही मुलायम। ईमानदार वह इतना था कि प्रायः स्टोर-मालिक, मिल-मालिक और घोड़ों के व्यापारी उसकी ओर बरबस खिंच जाते थे। एक बार वौलूसिया के अत्यन्त ईमान-

दार स्टोर-मालिक बोयल्स ने उसे ग़लती से एक डालर अधिक लौटा दिया। लौटने पर पैनी को यह ग़लती मालूम हुई। उसका घोड़ा लंगड़ा था, पर तो भी वह पैदल ही मीलों चलकर डॉलर लौटाने आया।

"क्या अगली बार खरीद-फरोख़्त के लिए आने पर यह न लौट जाता?" बोयल्स ने पूछा।

"यह बात मैं भी जानता था, पर मैं यह भी जानता था कि यह मेरा नहीं है। मैं नहीं चाहता कि इस बोझ को छाती पर लेकर ही मर जाऊँ। जीवित रहकर भी और मरकर भी मैं उतने से ही सन्तुष्ट रहना चाहता हूँ, जो मेरा अपना है।" पैनी ने उत्तर दिया।

वह वौलूसिया छोड़कर समीप के जंगल में आ बसा था। लोग इससे चकित-से रह गए थे। यदि वे भी नदी के किनारे पर बसे मल्लाहों की इस बारे में टिप्पणी सुन लेते तो शायद उनका समाधान होता। ये मल्लाह परिवार उस नदी के किनारे छोटी नावों, पेड़ के खोलवाली चौरस शह-तीरों से बनी विविध प्रकार की छोटी-मोटी नावों या माल और यात्री ले जाने वाली नावों अथवा दोनों पासों पर पहियों वाली बहुत चौड़ी मशीनी नावों को उस गहरी और शान्त नदी में चलाकर अपनी जीविका कमाते थे। उनका कहना था कि पैनी बैक्स्टर या तो बहुत बहादुर है या एकदम ख़ब्ती; क्योंकि वह साधारण तरीके के जीवन को छोड़-कर अपनी पत्नी के साथ फ्लोरिडा के इस अन्दरूनी जंगल में आ बसा था। इस जंगल में रहते थे भालू, भेड़िए और चीते। ऐसा एकान्त फौरेस्टर परिवार के लिए तो उचित था, क्योंकि उनके सदस्यों की संख्या अधिक थी और वे झगड़ालू थे। उन्हें जितनी भी जगह मिलती, कम थी। उन्हें यहाँ किसी प्रकार की बाधा न रहती। किन्तु पैनी को गाँव में कैसी बाधा?

सच यह है कि उसके लिए प्रश्न बाधा का नहीं था। कस्बों और शहरों में या कृषक-समुदाय में पड़ोसी प्रायः पास-पास ही रहते हैं। इस दशा में कभी उनके मन, कभी उनके व्यवहार और कभी उनकी सम्पत्ति एक-दूसरे की सीमा लाँघ जाते हैं। मनुष्य की अपनी हस्ती पर दूसरों का हस्तक्षेप होता है। ऐसे समय प्रायः मित्रता और सहायता की भावना भी उत्पन्न

होती है, किन्तु बहुत बार संघर्ष, एक-दूसरे के प्रति सन्देह और सावधानी की बात भी पैदा हो जाती है। उसे पिता के कठोर अनुशासन में पलते हुए जिस संसार से पाला पड़ा था, उसमें कुटिलता, बेईमानी और कठोरता अधिक थी। इसीलिए उसे उसमें रहने में परेशानी अनुभव होती थी।

प्रायः ही उसे अनेक संघर्षों में कुचला गया था। इसीलिए उसे इस विस्तृत एकान्त जंगल की यह शान्ति अत्यधिक लाभ देने वाली लगती थी। उसके दिल का एक कोना बहुत मुलायम और नाज़ुक था। मानवी व्यवहार इसे घायल कर सकता था किन्तु जंगली वनस्पतियों का प्रभाव इसे फिर से हरा कर देता था। यहाँ जीविका कमाना अवश्य कठिन था। बाज़ार में सामान खरीदने और माल बेचने के लिए लम्बा और कठिन रास्ता पार करना पड़ता था। पर खेती उसकी निजी और सुरक्षित थी। जंगली जानवर उसे अपने परिचित आदमियों की अपेक्षा कम हिंसक लगते थे। भालू, भेड़िये, वनबिलाव और चीते आदि हिंसक पशुओं के पालतू पशुओं पर आक्रमणों का कारण वह समझता था, किन्तु आदमियों के अत्याचारों को वह इससे भी बुरा समझता था।

अभी उसने चालीस भी पार नहीं किए थे, जब उसने एक अत्यन्त स्वस्थ लड़की के साथ विवाह किया। डीलडौल में वह उससे दुगनी थी। उसी दिन उसने वौलूसिया से अपना सारा माल-मत्ता समेटा और गाड़ी में पत्नी और सामान के साथ इसी नए खेत में आ गया। यहाँ उसने अपने ही हाथों से यही छोटा-सा घर तैयार किया। बढ़ते हुए चीड़ों और देवदारों से भरे इस विस्तृत जंगल में उसने सबसे अधिक अच्छी ज़मीन चुनी। उसने फौरेस्टर परिवार से इस ज़मीन को खरीदा था। वे यहाँ से चार मील दूर रहते थे। उस जंगल में ऊँची और अच्छे किस्म की यह ज़मीन एक चीड़ों के टापू की भाँति थी। उस ऊसर जंगल में यह भाग ही ऐसा था, जिस पर लम्बे पत्ते वाले चीड़ आदि खड़े थे। सारे वन में यह भाग कुछ ऐसी ऊँचाई पर स्थित था, मानो सारे जंगल से अलग हो। उत्तर और पश्चिम में कुछ ऐसे ही दूसरे टापू भी बिखरे पड़े थे, जहाँ उपजाऊ मिट्टी और नमी के संयोग से काफी वनस्पतियाँ उग आई थीं। गद्दे की तरह फैलाव वाली घनी व हरियाली भी यहाँ बहुत अधिक थी। कहीं-कहीं सनावर के ऊँचे

वृक्ष भी थे। वहीं पर मैग्नोलिया, लाल फूलों वाला तेजपात, जंगली चैरी, अखरोट और सदाबहार जैसी लुभावनी वनस्पतियाँ भी थीं।

इस जगह पानी का कष्ट अवश्य था। पानी धरती में इतने गहरे पर था कि कुएँ अत्यन्त महँगे पड़ते थे। ईंटें और मसाला महँगा होने से बैक्स्टर के लिए कुआँ बनाना कठिन था। फिर पानी का प्रबन्ध आवश्यक था। उसकी सौ बीघे ज़मीन की पश्चिमी सीमा पर धरती से एक चौड़े गड्ढे में से पानी फूट रहा था। यही पानी उसके घरवालों के जीवन का आधार बना। इस प्रकार के सोतेनुमा छेद इस सारे इलाके में ही जगह-जगह पाए जाते थे। भूमि के नीचे बहने वाली नदियाँ चूने के पत्थरों से भरे इस इलाके में खूब बहती थीं। इनका पानी ही कहीं-कहीं सतह की पतली मिट्टी को फाड़कर बाहर एकाएक आ जाता था। उस मिट्टी के हटते ही जैसे एक नाली-सी बाहर निकल आती थी। धाराओं और झरनों के रूप में निकल चलने वाले सोते, इन्हीं भूमि के नीचे बहने वाली धाराओं के बाहरी रूप थे। दुर्भाग्य से, पैनी बैक्स्टर की ज़मीन में फूटने वाले इस स्रोत के साथ कोई धारा सम्बद्ध न थी। इससे निकलने वाला शुद्ध निर्मल जल रात-दिन ऊँचे कगारों से गिर-गिर पास ही एक जोहड़ के रूप में जमा हो गया था। फौरेस्टर परिवार ने पैनी को जंगल में ही ज़मीन बेचनी चाही थी। किन्तु, नक़दी पास होने से पैनी इस बीच की ज़मीन को खरीदने में समर्थ हो गया। उसने उन्हें उत्तर दिया, "जंगल तो शिकारगाह बनाने वालों के उपयुक्त है। उसमें लोमड़ी, हिरन, बनबिलाव, फणियर साँप आदि जंगली चीज़ें पाली जा सकती हैं। पर मैं ऐसी चीज़ों को उस जंगल में कैसे पालूँगा?"

यह सुनकर फौरेस्टर हँसी से लोट-पोट हो गए थे। लेम अपने ऊँचे स्वर में बोला, "अरे पैनी! एक पैनी में कितने पैनी भरे हैं? अच्छा होगा कि तुम एक लोमड़ी के बच्चे को ही बेटा समझकर पाल लो।"

आज इतने साल बाद भी पैनी के कानों में जैसे उसकी यह आवाज़ गूँज रही थी। उसने बड़ी सावधानी से करवट बदली, ताकि कहीं उसकी पत्नी की नींद न खुल जाय! उसे स्मरण था कि उसने पुत्रों और पुत्रियों के विषय में कितनी बड़ी योजनाएँ सोची थीं। उसने सोचा था कि अनेक सफल पुत्र-पुत्रियों के साथ वह इन्हीं चीड़ों के बीच घूमा करेगा। परिवार

बसा। उसकी पत्नी ओरा बैक्स्टर का तो गठन ही मानो बच्चे पैदा करने के लिए हुआ था। पर लगता था, जैसे उसके बीज में ही कुछ कमी थी। शायद वह भी उस जैसा ही कमज़ोर था, या फिर शायद लेम की ही नज़र उस पर लग गई थी।

उसके बच्चे अत्यधिक कमज़ोर होते थे। जितनी शीघ्रता से वे होते जाते थे, उतनी ही शीघ्रता से वे बीमार होकर मरते भी जाते थे। पैनी अपने घर के पीछे के सनावरों में ही एक साफ़ की हुई जगह पर उन्हें एक-एक करके गाड़ता जाता था। वहाँ मिट्टी कुछ ढीली थी, इसीलिए खोदने में आसानी रहती थी। धीरे-धीरे इस जगह का विस्तार होता गया। जब शिकारी बिलाव और सूअर वहाँ आकर गड़बड़ मचाने लगे, तब उसे उस स्थान के चारों ओर बाड़ लगानी पड़ी। उसने प्रत्येक क़ब्र पर लगाने के लिए लकड़ी की तख़्तियाँ तैयार कीं। उसकी आँखों के आगे अब भी वे सफ़ेद और सीधी तख़्तियाँ घूम रही थीं। उनमें से कुछ पर एज़रा (छोटा) छोटी ओरा, विलियम आदि नाम थे। कुछ पर केवल इतने ही संकेत थे—जैसे बेबी बैक्स्टर, आयु तीन मास छः दिन आदि। पैनी ने एक तख़्ती पर बड़ी मेहनत से चाकू से लिखा था, "इस बेचारी ने पूरी रात भी न बिताई।" उसका दिमाग बीते हुए बरसों की ओर घूमता हुआ सब बातों को ऐसे छूता गया, जैसे राह में पड़ने वाली बाड़ की झाड़ियों को राहगीर छूता चलता है।

सन्तानों का यह क्रम कुछ साल के लिए एकाएक रुक गया। तब बहुत वर्ष बाद, जब उन्हें उस घर का एकान्त खलने लगा और जब उसकी पत्नी सन्तान उत्पन्न करने की आयु पार कर चुकी थी, उनके घर जोडी का जन्म हुआ और वह पलने-बढ़ने लगा। अभी वह दो वर्ष का ही था कि पैनी को युद्ध में मोर्चे पर जाना पड़ा। जाते समय वह माँ-बेटे को अपनी एक मित्र—दादी हुट्टो—के पास नदी किनारे छोड़ गया। उसे ख़याल था कि वह कुछ ही मास में लौट आएगा। किन्तु, वह लौटा चार बरस बाद! इस लम्बे अरसे ने उस पर बुढ़ापे के चिह्न उभार दिए थे। लौटकर अपने बीवी-बच्चे को लेकर वह फिर से इसी जंगल में अपनी ज़मीन पर आ बसा। वह यहाँ की शान्ति और एकान्त को भुला न सका।

जोडी को उसकी माँ का स्नेह कभी न मिल सका। वह उसके प्रति उदास-सी रही, जैसे उसका सभी प्यार उससे पहले के सारे बच्चों में बँटकर समाप्त हो चुका था। पर पैनी का सारा प्यार जैसे उसी पर उमड़ आया हो। वह उसके लिए निरा पिता बनकर ही नहीं रह गया। उसने अनुभव किया कि स्वयं उसकी भाँति यह बालक भी पक्षियों और जन्तुओं, फूलों और वृक्षों, वायु और वर्षा एवं सूरज और चाँद के आकर्षण से खिचा-सा, मूढ़-सा खड़ा रह जाता है। और, आज जब वैशाख की इस दुपहरी में उसका यह बालक अपनी लड़कपन की हरक़तों में खिचा-सा घर से खिसक गया, उसे बचपन में अपने खिसकने का सारा रहस्य स्पष्ट हो गया। पर वह यह भी जानता है कि आखिर यह सब कितनी देर !

तभी उसका ध्यान टूटा। उसकी पत्नी हिली-डुली थी और नींद में ही उसने कुछ आवाज़ निकाली थी। उसे फिर जोडी की बात का ध्यान आया। ऐसे अवसर पर माँ की कठोरता से उसकी रक्षा वह स्वयं ही कर सकता था। मौका पाते ही वह बालक फिर जंगल में भाग निकलेगा और दूरी की मधुरता में डूबा वह नई-नई बात ले बैठेगा।

तब तक चाँदनी सामने की खिड़की से परे हट गई थी।

उसने सोचा, 'भाग ले जितना भी वह भाग सकता है ! बना ले जितनी भी पनचक्कियाँ वह बना सकता है। आखिर वह दिन भी आएगा, जब वह इन बातों से स्वयं उदासीन हो जाएगा।'

3
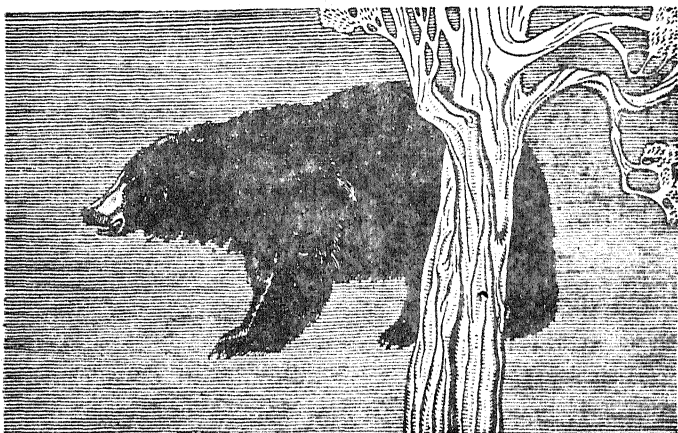
अनमने होकर जोडी ने अपनी आँखें खोलीं। उसने सोचा, यदि हो सका तो कभी वह वन में निकल जाएगा और वहीं शुक्रवार से सोमवार तक सोता ही रहेगा। उसके सोने के छोटे से कमरे की खिड़की में से धूप झाँकने लगी थी। वह नहीं जान पाया कि वह इस पीली धूप के कारण जागा है या आड़ू के कुंजों में चूज़ों की चुलबुलाहट से। वह इतना अवश्य अनुभव कर पाया कि चूज़े एक-एक करके शाखों पर डाले अपने डेरों से उड़ने शुरू हो गए थे। सूर्य की किरणें अभी नारंगी रंग की ही थीं। बेड़े के परे के चीड़ों पर अभी ये किरणें न पड़ी थीं। वैशाख के कारण सूर्य कुछ जल्दी निकलने लगा था। अभी कुछ अधिक समय नहीं हुआ था। अच्छा था कि माँ की पुकार सुनने से पहले ही वह उठ जाय। उसने आराम से करवट बदली। उसके गद्दे में भरे भूसे की मसलन की आवाज़ हुई। तभी मुर्गा बड़ी ऊँची बांग देने लगा।

"अब तुमने भी बांग देनी शुरू कर दी! देखता हूँ, तुम भी मुझे बिस्तर

से बाहर निकाल सकते हो या नहीं ?"—उसने मन-ही-मन मुर्गे को ललकारा। पूरब से छनकर आने वाली उजली किरणें अधिक गहरी और सघन होती गईं। एक सुनहरी आभा चीड़ों के शिखरों पर बिखर गई। उसने देखा, सूरज ऊपर उठ रहा था, मानो किसी चीज़ से ताँबे की एक परात पेड़ों की शाखों में से ऊपर उठाते हुए कहीं लटकाई जा रही हो। बयार का एक हल्का-सा झोंका बह पड़ा, मानो बढ़ते प्रकाश ने इसे अशान्त पूरब के किसी कोने से धकेल दिया हो। खिड़कियों के पर्दे कमरे की ओर उभरने लगे। वह शीतल झोंका उसके बिस्तर तक भी पहुँचा। उसे उसका स्पर्श ऐसा लगा जैसे कोई मुलायम मखमली चीज़ उसे छू गई हो। एक ओर सुहावना प्रातः था और दूसरी ओर बिस्तरे का सुख ! किसे पाए और किसे छोड़े ? इसी पसोपेश में वह पड़ा रहा। आखिर वह बिस्तरा छोड़कर उठ ही गया। उसके पैरों के नीचे हिरन की खाल का गलीचा बिछा था, इसलिए उसके चलने में आवाज़ होनी सम्भव नहीं थी। उसका पाजामा और कमीज़ पास ही लटक रहे थे। उसने चुपचाप उन्हें पहन लिया। सोना अब सम्भव नहीं था, दिन सामने अड़ा था और नाश्ते के लिए बनने वाले गर्म केकों की मधुर सुगन्ध रसोईघर से आ रही थी।

दरवाज़े पर से वह बोला, "मेरी बूढ़ी अम्मा ! मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ।"

खिझी हुई माँ ने उत्तर दिया, "तुम क्या, कुत्ते और घरेलू जानवर तक मुझे चाहते हैं। तुम्हारा प्यार खाली पेट के कारण होता है और इसलिए कि तुम्हारा भोजन मेरे हाथ में होता है।"

"इसी रूप में तुम सबसे अच्छी लगती हो, माँ !" जोडी ने कहा और खिलखिलाकर हँस पड़ा। वह पानी की टंकी तक गया और उसने बाल्टी भरकर पानी धोने के स्थान पर रख लिया। तब उसने घुले-साबुन को बिना प्रयोग किए हाथ और मुँह को मसल-मसलकर धोया, बालों को गीला कर छिटकाया और अंगुलियों से ही उन्हें कंघी किया। दीवार से शीशा उतार वह स्वयं को देखने लगा। उसके मुँह से अचानक ही निकल गया, "मैं अत्यन्त कुरूप हूँ, माँ !"

"अरे ! जब से बैक्स्टर वंश चला है, कोई सुन्दर व्यक्ति उसमें पैदा ही कब हुआ है ?" माँ का उत्तर तैयार था।

उसने अपनी नाक सिकोड़ी और शीशे में देखा कि उसके चेहरे के काले धब्बे समीप आकर जैसे आपस में मिल गए हों।

"काश, मैं भी फौरेस्टर लोगों जैसे गहरे रंग का ही होता !" वह खीझकर बोला।

"शुक्र है, तुम उन जैसे काले नहीं हो। उनके दिल काले होने से ही वे काले हैं। तुम बैक्स्टर परिवार के हो, और इस परिवार के सभी सदस्य गोरे रंग के ही होते हैं।" माँ के उत्तर में जैसे गर्व और व्यंग्य इकट्ठे मिल गए थे।

जोडी खीझ गया, "तुम तो ऐसे बात करती हो, जैसे मेरा तुमसे कोई वास्ता ही न हो !"

माँ का उत्तर साफ था, "मेरे परिवार के लोग भी उजले रंग के होते हैं; पर वे इतने छोटे नहीं होते ! तुम भी जब स्वयं खीझकर काम में लग जाओगे, अपने पिता जैसे ही निकलोगे।"

यह सुनते ही उसे दर्पण में अपना चेहरा बहुत छोटा दिखाई दिया। गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं ! चेहरा भूरे धब्बों से भरा और पीला पड़ा हुआ था, यद्यपि उजली रेत की भाँति स्वस्थ भी था। उसे अपने केशों से अवश्य चिढ़ थी, विशेषकर जब उसे चर्च, वौलूसिया या और कहीं बाहर जाना होता था। उनका रंग भूसे-सा था और वे खुरदरे थे। हालाँकि पूरनमासी के आसपास उसका पिता उन्हें बहुत सँवारकर काटता था, फिर भी वे पीठ की तरफ गुच्छों के रूप में बढ़ जाते थे। उसकी माता सदा ही उन्हें 'बत्तख की पूँछ' कहा करती थी। उसकी आँखें फैली हुई और नीली थीं। पढ़ाई में डूबा हुआ जब कभी वह भँवों को सिकोड़ता या किसी अद्‌भुत वस्तु को देखता, उसकी आँखें जैसे सिकुड़-सी जाती थीं। ऐसे समय उसकी माँ उसे अपना समझने में गौरव अनुभव करती थी। उसके मुख से निकल पड़ता था, "परमात्मा उसे राजी रखे।"

जोडी का ध्यान अपने कानों की ओर गया। उसने दर्पण उधर घुमाया। कान उसने सफाई के लिए न देखे, बल्कि इसलिए कि लेम फौरेस्टर ने एक हाथ से उसकी ठोड़ी और दूसरे से उसके कान पकड़कर खींचे थे। वह उन्हें देखना चाहता था। उसने कहा था, "जोडी ! तेरे कान इस सिर पर ऐसे लगते हैं, जैसे कंगारू के हों !"

जोडी का चेहरा उतर गया और उसने शीशा फिर से दीवार पर लटका दिया। माँ की ओर मुड़कर उसने पूछा, "क्या नाश्ते के लिए हमें पिताजी की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ?"

"क्यों नहीं ! यह सब मेज़ पर अपने सामने सँवार कर बैठो। उनके करने का काम वहाँ भी कुछ न वचा होगा। वह आते ही होंगे।"

वह पिछवाड़े के द्वार पर ही झिझकता-सा खड़ा रहा। माँ ताड़ गई; बोली, "देखो, कहीं खिसक मत जाना। वह यहीं अनाज भण्डार तक गए हैं।"

तभी उसे दक्षिण के वृक्ष-कुंज से भी परे से बूढ़ी जूलिया की गुर्राहट और भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। उसकी आवाज़ से स्पष्ट था कि वह अत्यन्त उत्तेजित थी। उसे लगा कि उसने पिता की आवाज़ भी सुनी है, जैसे वह जूलिया को कुछ आदेश दे रहे हों। चिटखनी खोलते ही वह भाग गया, ताकि माँ की आवाज़ सुनने से पहले ही वह दूर निकल जाय। उसकी माँ ने भी कुतिया की आवाज़ सुन ली थी। वह पीछे-पीछे दरवाज़े तक गई और उसे पुकारकर बोली, "जोडी ! तुम दोनों बाप-बेटे उस मूर्ख कुतिया का पीछा करते-करते कहीं बहुत दूर न निकल जाना ! मैं यह सहन नहीं कर सकती कि तुम दोनों जंगल में मटरगश्ती करते फिरो और मैं यहाँ नाश्ते के लिए प्रतीक्षा करती रहूँ !"

अब जोडी को जूलिया और पिता की आवाज़ सुनाई देनी बन्द हो गई थी। वह उस उत्तेजना के शान्त होते ही भय से अकुला गया। शायद चोर भाग निकला था और पिता व कुतिया उसके पीछे-पीछे ही चले गए थे। वह उस कुंज में से आवाज़ आने वाली दिशा में बेतहाशा भागा। उसे बहुत नज़दीक से पिता की आवाज़ सुनाई दी, "धीरे, बेटे ! जो कुछ हुआ है, वह तुम्हारे आने तक यूँ ही रहेगा।"

समीप आकर वह रुक गया। जूलिया काँप रही थी—भय से नहीं, आकुलता से ! उसका पिता सामने पड़ी काले रंग की बेट्सी नाम की सूअरी के शव पर झुका हुआ था। उसके पिता ने कहा, "शायद उसने मेरी ललकार सुन ली थी। पर बच्चे ! क्या तुम भी वह कुछ देख रहे हो, जो मैंने देखा है ?"

कुचली हुई सूअरी के उस दृश्य से उसका जी मचलाने लगा था। पर उसके पिता की निगाह उससे भी परे कुछ देख रही थी। बूढ़ी जूलिया की नाक भी उसी दिशा की ओर उठी हुई थी। कुछ क़दम चलकर जोडी ने रेत को ध्यान से देखा। दिन की भाँति स्पष्ट उन निशानों को देखकर उसे जोश आ गया। वे निशान किसी बड़े रीछ के पाँवों के थे। उसके सामने के विशाल दाएँ पंजे में से एक अंगुली गायब थी।

"वही बूढ़ा पाँवकटा!" जोडी बोल पड़ा।

पैनी ने स्वीकृति में सिर हिलाया और बोला, "मुझे गर्व है कि तुम्हें उसके निशान अब तक याद हैं।"

दोनों उन निशानों पर झुककर देखने लगे कि किस दिशा से ये निशान आए और किधर गए? पैनी कहने लगा, "इसे मैं शत्रु के दरवाज़े पर जाकर युद्ध करना कहा करता हूँ।"

जोडी की उत्सुकता ने ज़ोर मारा, "पिताजी! कुत्तों में से एक भी तो न भौंका। शायद मैं सोने के कारण न सुन पाया।"

"नहीं, कोई भी नहीं भौंका। हवा उसके अनुकूल थी। क्या तुम समझते हो कि उसने अपनी यह हरक़त जान-बूझकर नहीं की? सच यह है कि छाया के रूप में चुपचाप ही वह अन्दर तक खिसक आया और अपनी यह नीच हरक़त करके भोर होने से पहले ही खिसक भी गया।"

जोडी यह सुनकर सहम-सा गया। उसकी आँखों में एक चित्र घूम गया। एक विशाल काली छाया-सी आई, मानो कोई झोंपड़ी ही हिल रही है। धीरे-धीरे यह छाया उस पिछवाड़े के कुंज में घुसी और सोती हुई पालतू सूअरी को नुकीले पंजे की एक ही झपट में ले उड़ी। तब उसके सफ़ेद-सफ़ेद दाँत उसकी रीढ़ में धँस गए और उसे तोड़कर वे गर्म और धड़कते माँस तक पहुँच गए। इस बीच बेचारा सूअरी सहायता के लिए दीनता-भरी पुकार तक न कर सकी।

"लगता है उसका पेट पहले ही भरा हुआ था। उसने एक कौर भी इसमें से नहीं खाया।" पैनी ने ध्यान खींचा, "रीछ जब शीत की लम्बी नींद से उठता है, तब उसका पेट बहुत सिकुड़ा हुआ होता है। मुझे इसीलिए रीछ से नफ़रत है। हमारी तरह वह भी अपनी शक्ति के अनुसार बड़ी से

बड़ी चीज़ पर हाथ डालता है, पर उसे मारकर वह खाता उतना ही है जितना उसके पेट में समा सकता है। पर कोई और जानवर या मनुष्य जब किसी को हानि पहुँचाता है, तो···! पर, तुम भालू के चेहरे पर अपनी करतूत के लिए कभी पछतावा नहीं पाओगे।"

जोडी साफ़-साफ़ पूछ बैठा, "क्या आप बेट्सी को घर ले चलना चाहते हैं?"

पैनी ने उत्तर दिया, "इसका ऊपरी माँस अवश्य चिर गया है, किन्तु अन्दर का माँस और चर्बी अब भी सुरक्षित है।"

जोडी जानता था कि बेट्सी की कोई भी अशुभ सूचना उसे परेशान कर सकती थी। किन्तु इस क्षण उसे केवल एक उत्तेजना-भर ही अनुभव हुई। अपने परिवार की ज़मीनों में घुसकर की गई इस अनावश्यक हत्या ने उसमें रीछ के लिए निजी शत्रुता की भावना भर दी। यह रीछ अब तक भी सब पशु पालने वालों की निगाह बचाता आया था। शिकार की धुन ने उसे बावला कर दिया। पर उसे अन्दर ही अन्दर एक भय भी अनुभव हुआ। आखिर इस पाँवकटे ने उनके घर पर ही हमला बोल दिया था।

सूअरी का एक पिछला पाँव पैनी ने और दूसरा जोडी ने पकड़ा। वे उसे घर की ओर ले चले। जूलिया भी अनमनी-सी उनके पीछे हो ली। वह नहीं समझ पा रही थी कि वे लोग शिकार के पीछे उसी समय क्यों न निकल पड़े?

पैनी ने कहा, "मैं सोचता हूँ, तुम्हारी माँ को यह ख़बर देने का साहस मुझमें है।"

"निश्चय ही वह भी सह नहीं सकेगी।" जोडी ने स्वीकार किया।

पैनी बोल उठा, "बेट्सी थी ही ऐसी प्यारी। हाय, वह बहुत अच्छी थी।"

जोडी की माँ प्रतीक्षा में द्वार पर ही खड़ी थी। वह इन्हें देखते ही बोल उठी, "मैं तुम्हें आवाज़ पर आवाज़ देती रही। आखिर इतनी देर वहाँ घूमने-फिरने के बाद तुम्हें क्या मिला? ओफ़! यह क्या? यह किसने किया? हाय, मेरी सूअरी!"

उसकी बाहें उठीं और आकाश में फैल गईं। घर के पीछे की ओर से

पिता-पुत्र दरवाज़े के अन्दर घुस आए। उनके पीछे-पीछे वह भी रोती हुई चल पड़ी।

पैनी ने जोडी को समझाया, "हम इसका माँस ऐसी जगह लटका देंगे जहाँ कुत्ते न पहुँच सकें।"

जोडी की माँ बोल उठी, "पहले यह तो बताओ कि यह सब हुआ कैसे? किसने ठीक हमारी ही नाक के नीचे इस बेचारी को मारकर चिथड़े-चिथड़े कर दिया?"

"माँ! यह काम उसी पुराने पापी—पाँवकटे रीछ ने किया है! उसके पंजों के निशान बिलकुल स्पष्ट थे।" जोडी ने बात स्पष्ट की।

"और वे कुत्ते इसी बेड़े में सोते रहे?" माँ ने पूछ ही लिया।

तब तक तीनों कुत्ते वहाँ जमा हो गए थे। उनकी नाकें उस ताज़े खून की टोह में सधी हुई थीं। उसने उनकी दिशा में सोटी फटकारी।

"तुम, नाचीज़! हमारे भोजन पर नज़र गड़ाना तुम्हें खूब आता है, पर ऐसी बातों के लिए तुम उदासीन बने रहते हो!"

पैनी ने उत्तर दिया,"रीछ जैसा चुस्त कुत्ता आज तक नहीं पैदा हुआ।"

माँ का गुस्सा अब तक ठण्डा नहीं हुआ था, "ये भौंक तो सकते थे!"

उसने फिर एक सोटी उनकी ओर चटखाई और वे भाग निकले।

तब सभी लोग घर में घुसे। इस हबड़ा-धबड़ी में नाश्ते के लिए व्याकुल जोडी सीधा रसोई में घुस गया। माँ यह सब सह न सकी। चिल्लाई, "निकल आओ! अपने मैले हाथ धोकर यहीं आ जाओ।"

वह भी अपने पिता के साथ हाथ-मुँह धोने के लिए गुसलखाने तक गया। इधर नाश्ता मेज़ पर आ चुका था। माँ मेज़ पर बैठी रही। उसका शरीर अशान्त था। उसने खाना शुरू नहीं किया। जोडी ने अपनी तश्तरी खब भर ली। उबले जौ, माँस-रस, गर्म केक और दूध सभी कुछ सामने पड़ा था। वह बोल पड़ा, "ख़ैर, कुछ भी हो! अब कुछ दिन तक हमें माँस खाना तो मिलेगा!"

माँ गुस्से में बौखला पड़ी, "बस अब; फिर सारी सर्दियों-भर नहीं!"

पैनी ने स्थिति सँभाली, "नहीं, मैं फौरेस्टर लोगों से कोई सूअरी पूछ देखूंगा।"

उसकी पत्नी ने दुःखभरा व्यंग्य किया, "हुँ ! उन राक्षसों का एहसान लोगे ? याद रखो, मेरी मर्ज़ी उस मोटे भालू पर हाथ साफ करने की है।"

मुँह का कौर खतम होते ही पैनी बोला, "जब वह मिलेगा, मैं तुम्हारी इच्छा उसे बता दूँगा।"

जोडी हँसी से फूट पड़ा। माँ कतरा गई। बोली, "तुमने मुझे उल्लू समझ रखा है !"

उसकी लम्बी-चौड़ी बाँह को थपथपाते हुए जोडी बोला, "माँ, ज़रा इधर आओ ! सच बताना, माँ ! अगर तुम उस भालू से उलझ जाओ, तो तुम कैसी रहोगी ?"

"मैं शर्त लगाता हूँ, तुम्हारी माँ ही जीतेगी," पैनी बोल पड़ा।

माँ ने जैसे शिकायत की, "कोई भी नहीं ! पर मैं जीवन में इतना उलझती ही नहीं !"

4

पैनी ने अपनी तश्तरी किनारे की, और उठ खड़ा हुआ ।

"चलो, बेटे ! हमारा दिन-भर का काम तय ही है ।"

सुनते ही जोडी का दिल बैठ गया । उसने सोचा शायद अनाज निलाने की ओर इशारा है । इतने में पिता ने अपनी बात पूरी की, "आज हमें भालू को खोज निकालने का यह अच्छा मौक़ा हाथ से न जाने देना चाहिए ।"

जोडी के लिए फिर से प्रकाश हो गया । उसने सुना, "ज़रा मेरा शिकार का थैला पकड़ाओ । बारूद के डिब्बे भी ले लो ।" और, वह कूदकर उन्हें लेने बढ़ गया ।

"ज़रा उसे देखो ! जब खेत निलाने की बारी आती है तो जैसे सारी सुस्ती उसी में भर जाती हो और अब शिकार का नाम आते ही, उसकी चुस्ती देखते ही बनती है ।" उसकी माँ ने पैनी का ध्यान खींचा ।

वह रसोईघर की आलमारी तक गई और बचे-खुचे मर्त्तबानों में से मुरब्बे

का एक मर्तबान बाहर निकाल लाई। नाश्ते से बचे हुए गर्म केकों पर उसे फैलाया और कपड़े में लपेटकर उन्हें पैनी के ज़रूरी चीज़ों वाली थैले में रख दिया। उसने बचे-खुचे आलू के हलवे में से कुछ अपने लिए रखकर बाकी को कागज़ में लपेटकर उसी थैले में डाल दिया। उसने बचाये हुए हलवे पर एक निगाह फिर डाली, और तब इसे भी जल्दी से उसी थैले में शेष हलवे के साथ ही रख दिया।

"यह कोई अधिक भोजन नहीं है। हो सकता है तुम शीघ्र ही वापस आ जाओगे।" उसने पैनी की ओर मुड़कर कहा।

"हमारी प्रतीक्षा मत करना, जब तक हमें अपने सामने ही न पा लो। वैसे भी एक दिन में कोई भूखा नहीं मर जाता।" पैनी ने उत्तर दिया।

माँ हँस पड़ी, "जोडी को सुनाओ! नाश्ते को एक घंटा ऊपर होते ही उसे भूख मौत बनकर सताने लगती है।"

पैनी ने अपने थैले और बारूद के डिब्बे को कन्धे पर लटकाया और जोडी से बोला, "जोडी! ज़रा बड़ी छुरी लेकर जाओ और उधर सूखे माँस के भण्डार से भूने हुए मगरमच्छ की पूँछ से एक अच्छा-सा माँस का टुकड़ा काट लाओ।"

कुत्तों को खिलाने के लिए सुखाया हुआ माँस पीछे के धुआँघर में रखा था। जोडी भागता हुआ वहीं पहुँचा और उसने लकड़ी का भारी दरवाज़ा खोल डाला। यह कमरा अँधेरा और ठण्डा था। इसमें भेड़ और सूअर के माँस की गन्ध भरी थी। अखरोट की राख से यह मैला था। ऊपर के शहतीरों में माँस टाँगने की खूँटियाँ प्रायः नंगी हो चुकी थीं। भेड़ियों के कन्धों के दो-एक सूखे हुए माँस-खण्ड और सूअर की बगलों के दो माँस-खण्ड ही वहाँ लटक रहे थे। हिरन का धूप में सुखाया हुआ कमर का माँस भी मगर-मच्छ के पकाए हुए माँस के पास ही पड़ा था। आगामी शीत तक बेट्सी भी इतनी मोटी हो जाती कि उसका माँस इस कमरे में काफी जगह घेर लेता। पर बुरा हो इस रीछ का! इसने सब चौपट कर दिया। जोडी ने मगर-मच्छ में से माँस का एक टुकड़ा काटा। यह सूखा होने पर भी मुलायम था। उसने इसे जीभ पर लगाकर देखा। इसका नमकीन स्वाद बुरा न था। तब वह दौड़कर आँगन में खड़े पिता से आ मिला। छड़ी से बारूद भरने वाली

उस पुरानी शिकारी बन्दूक को देखते ही जूलिया खुशी से फूली न समाई। रिप भी उसका साथ देने को दौड़ा आया। देखा-देखी नासमझ पेर्क ने भी बिना जाने ही पूँछ हिलानी शुरू कर दी। पैनी ने बारी-बारी सभी कुत्तों को थपथपाया। वह उनसे बोला, "तुम्हारी यह खुशी उस समय तक न रहेगी जब हमारा काम समाप्त होगा।" तब उसने जोडी से कहा, "बेटा ! अच्छा हो तुम जूते पहन लो। हमें ऊबड़-खाबड़ जगहों पर से जाना होगा।"

जोडी को अब तनिक भी देर असह्य हो गई। वह अपने कमरे में दौड़ा गया और चारपाई के बीच से चमड़े के भारी जते पहनकर पिता के पीछे ऐसे दौड़ा जैसे उसके पहुँचने से पहले ही शिकार समाप्त हो जाएगा। बूढ़ी जूलिया पीछे-पीछे भाग रही थी। उसकी नाक रीछ की खोज में उठी हुई थी।

"पिताजी ! यह पीछा बहुत ठण्डा नहीं रहेगा। मेरी समझ में अभी वह बहुत दूर नहीं गया होगा और उसे हम पकड़ ही लेंगे।"

"निकल तो वह बहुत दूर गया होगा, पर फिर भी उसे पकड़ने का मौक़ा हमें बहुत है, बशर्ते कि हम उसे आराम से चलने का अवसर दें ताकि वह कहीं लेट जाय। यदि रीछ को पता चल जाए कि उसका पीछा हो रहा है तब वह बहुत तेज़ चाल से भागने लगता है; अन्यथा उसकी सादी चाल ऐसी होती है, जैसे वह इस सारे संसार को अपनी ही आरामगाह या भोजन-शाला समझता हो।" पिता ने जोडी को समझाया।

पिछले कुंजों में से होती हुई वह खोज दक्षिण की तरफ बढ़ी। पहली संध्या की वर्षा के कारण रेत पर पड़े हुए पाँव के निशान स्पष्ट थे। पैनी ने ध्यान से देखकर कहा, "उसका एक पाँव तो काफी लम्बा-चौड़ा है।"

कटहल का वह कुंज कुछ दूरी पर एकाएक समाप्त हो गया। ऐसे लगता था मानो किसी ने उनके बीज क्रम से बोए हों और यहाँ आकर बीजों का थैला खाली हो गया हो। अगली ज़मीन कुछ नीची थी और उस पर लम्बे पत्ते के चीड़ लगे थे।

"पिताजी ! आपका क्या अनुमान है, वह कितना बड़ा होगा?" जोडी ने पूछा।

"वह काफी बड़ा है। अभी उसका वज़न पूरा नहीं है। कारण, वह

अभी शीत की लम्बी नींद से उठा है और इस कारण उसका पेट सिकुड़ा हुआ है। किन्तु इन निशानों को देखो। ये उसकी विशालता को बता रहे हैं। यह ध्यान देना कि पिछले निशान गहरे हैं। हिरण के निशान भी इसी किस्म के होते हैं। हिरण या भालू यदि मोटे होंगे तो उनके पिछले पंजे ऐसे ही भारी होंगे। यदि हिरणी या बच्चा हो तो वह हलके निशान छोड़ेगा। प्रायः उसके पंजों के अगले खुरों का ही निशान मिलता है। पर, यह रीछ काफी विशाल है।"

"उसे देखने पर आप डर तो नहीं जाएँगे?" जोडी पूछ ही बैठा।

पैनी ने उत्साह में भरे उत्तर दिया, "नहीं, पर कभी-कभी बात बिगड़ भी जाती है। मुझे इन कुत्तों का सदा डर रहता है। ऐसे मौक़ों पर इनके साथ ही बुरी बीतती है।"

उसकी आँखें चमकीं।

"बेटे! मेरा खयाल नहीं कि तुम तनिक भी डरोगे?"

जोडी ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं डरूँगा। पर यदि मैं कहीं डर ही गया तो क्या पेड़ पर चढ़ना ठीक रहेगा?"

पैनी हँस पड़ा, "हाँ, बेटे! यदि तुम न भी डरो, तब भी पेड़ पर चढ़-कर यह तमाशा अच्छी तरह देखा जा सकता है।"

कुछ देर वे दोनों चुपचाप चलते रहे। बूढ़ी जूलिया निश्चय ही साथ-साथ बढ़ रही थी। रिप भी उसके कदमों का अनुसरण करता आ रहा था। वह उसके झिझकने के साथ ही रुक जाता और उसके छींकने पर छींक पड़ता। नाक में घास अड़ते ही वह फूँक से उसे उड़ा देती। पेर्क कभी इधर कभी उधर दौड़ता हुआ चल रहा था। एक जगह अपने ही पास से गुज़रते हुए खरगोश का बुरी तरह पीछा करके उसने उसे चीर डाला। जोडी ने उसे पीछे से पुकारा।

पैनी ने समझाया, "उसे जाने दो! जब उसे अकेलापन खलेगा, वह फिर हमसे मिल जाएगा।"

बूढ़ी जूलिया अचानक ज़ोर से चीखी और मुड़कर देखने लगी। पैनी समझ गया और बोला, "देखो, वह चतुर बूढ़ी कुतिया उसकी दिशा बदली हुई बता रही है। शायद वह कँटीली घास वाले किसी जोहड़ की ओर जा

रहा है। उसका यही ढंग है। हम कहीं इधर-उधर से बढ़कर उसे अचरज में डाल देंगे।"

जोडी को अब अपने पिता की शिकारी प्रतिभा का कुछ-कुछ रहस्य समझ आने लगा। उसने सोचा, यदि यहाँ फौरेस्टर होते तो वे मरा हुआ जानवर पाते ही उस भालू का पीछा करने लगते। वे चीखते और चिल्लाते! उनके उकसाने पर कुत्ते भौंकने लगते और यह जंगल उसकी प्रतिध्वनि से गूँज उठता। इस सबसे वह बूढ़ा खुर्राट उनके आने की सूचना पा लेता। पर उसका पिता उनके मुक़ाबले में दसगुनी अधिक सफलता पा लेता था। यह नाटा आदमी इसी बात के लिए मशहूर था।

जोडी ने उत्सुकता दिखाई, "आप निश्चय ही अनुमान कर सकते हो कि कब कौन प्राणी क्या करेगा।"

"यह काम तुम भी कर सकते हो! जंगली जानवर आदमी से अधिक चुस्त और अधिक बलशाली होता है। जंगली जानवर से अधिक मनुष्य के पास है—उसकी तीक्ष्ण सूझ! वह रीछ से अधिक तेज़ नहीं भाग सकता। किन्तु यदि वह उसकी हरक़तों का पूरा अनुमान भी न कर सके, तो वह एक अच्छा शिकारी नहीं कहला सकता।"

अब चीड़ तनिक बिखरे हुए आने लगे थे। अचानक ही हरियाली के हरे-भरे गदेलों से लदी भूमि दिखाई दी। यहाँ सनावर और छोटे ताड़ वृक्ष बहुत थे। नीचे की छोटी वनस्पतियाँ भी पर्याप्त घनी थीं। उनमें जंगली गुलाब की झाड़ियाँ भी मिली हुई थीं। तब दक्षिण-पश्चिम की तरफ चरागाह जैसा एक लम्बा-चौड़ा मैदान दिखाई दिया। पर यहाँ की घास कँटीली थी। यह घुटने-घुटने ऊँची पानी में उगी हुई थी। इसकी कठोर कँटीली धारें इतनी घनी थीं, जैसे बाक़ायदा कोई सब्ज़ी बोई गई हो। हवा का एक झोंका खुले मैदान पर से गुज़रा और घास लहरा उठी। घास के पत्तों के अलग होते ही छोटे-छोटे तालाब का पानी साफ दिखने लगा। पैनी का ध्यान शिकारी कुतिया की ओर लगा था। जोडी को यह पेड़ों-रहित विस्तार घने जंगल की बजाय अधिक आकर्षक लगा। उसे लगा कि किसी भी समय एक विशाल काली आकृति ऊँची उछलकर सामने आ सकती है। उसने धीरे से पूछा, "क्या हमें चक्कर काटकर बढ़ना चाहिए?"

पैनी ने स्वीकृति में सिर हिलाया। उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, "हवा उलटी बह रही है। मेरे विचार में वह इधर की ओर नहीं आ रहा।"

शिकारी कुतिया किनारे की सूखी ज़मीन पर टेढ़ी-मेढ़ी चल रही थी। ऐसा लगता कि रीछ की गन्ध जैसे बार-बार पानी की ओर मुड़ी हो। एक जगह उसने अपना सिर पानी में डुबोया। ऐसा उसने, प्यासी होने से नहीं, निशानों की गन्ध खोजने के लिए किया। तब वह बहुत विश्वासपूर्वक जोहड़ के मध्य की ओर बढ़ पड़ी। रिप और पेर्क अपने पाँव छोटे देखकर आधे से ही लौट आए और एक ऊँची जगह खड़े होकर अपने को झाड़ने और जूलिया को देखने लगे। पेर्क कुछ ही क्षण में भौंक पड़ी। पैनी ने उसे पीटकर शान्त किया। जोडी सावधान होकर अपने पिता के पीछे चलता रहा। एक नीला सारस उसके ऊपर से अचानक ही निकल गया और वह चौंक गया। जोहड़ का पानी उसके पाँवों के लिए असह्य रूप में ठण्डा था। उसका पाजामा अत्यन्त गीला और चिपचिपा हो उठा था। कीचड़ उसके जूतों में भर गया था। तब ऐसी जगह आई, जहाँ पानी कुछ आराम देने वाला था। उस ठण्डक में घूमना भी अच्छा लग रहा था। उनके पीछे उठती हुई रेत जैसे भँवर-सी बना रही थी।

पैनी फुसफुसाया, "शायद वह फायर प्लांट को खा रहा है!"

उसने बाणनुमा चपटे पत्तों की ओर इशारा किया। कुछ पत्तों के किनारों पर दाँतों के निशान नुकीले और टेढ़े-मेढ़े थे। कुछ पत्ते डण्डियों-समेत खाये गए थे।

"वसन्त में यही ताक़तवर भोजन है। सर्दियाँ बिताकर बाहर निकलने पर पहले-पहल रीछ इसे ही अपना भोजन बनाता है।"

पास झुककर उसने एक पत्ते को छुआ। इसका मसला हुआ किनारा भूरा-सा पड़ गया था। देखकर वह बोला, "वह दुष्ट एक रात पहले भी यहाँ आया था। यही कारण है कि उसे इससे बढ़कर बेट्सी की भूख भी जग पड़ी।"

यहाँ आकर कुतिया भी रुक गई। अब गन्ध ज़मीन में न रहकर सर-कण्डों और घास के ऊपर से होकर गुज़री थी। यह शायद उसके बालों की रगड़ की गन्ध थी। तब उसने अपनी नाक एक दलदली पौधे की ओर गाड़ी और फिर आकाश की ओर उठा दी। फिर, जैसे दिशा का निश्चय करके

वह दक्षिण की ओर तेज़ चाल से चल पड़ी। अब पैनी भी खुलकर बोलने लगा।

"इस जूलिया का कहना है कि वह भोजन से निश्चित होकर अब घर की ओर बढ़ रहा है।"

वह कुतिया पर निगाह रखता हुआ ज़रा कुछ ऊँची जगह से बढ़ने लगा। वह तेज़ी से चलता जाता था और बातें करता जाता था।

"बहुत बार मैंने रीछ को फायर प्लांट को चाँदनी में खाते देखा है। वह खाते-खाते ज़ोर की साँस लेता है, घास को इधर-उधर बिखेर देता है, कीचड़ उछालता है और गुर्राता है। वह पत्तों की डण्डियों को चीरता है और अपने मुँह को आदमी जैसे ही सिकोड़ता है। तब कुत्ते के समान इधर-उधर सूँघकर निश्चिन्तता से चबाने लगता है। रात के पक्षी उसके ऊपर चीखते हुए उड़ जाते हैं। मोटे-मोटे मेंढक ऐसे टर्राते हैं, जैसे कुत्ते भौंक रहे हों। उस चाँदनी में जंगली बत्तखों की आवाज़ ऐसे लगती है, जैसे वे 'साँप ! साँप !! साँप !!!' चिल्ला रहे हों और फायर प्लांट की पत्तियों पर पड़ी पानी की बूँदें ऐसे चमक रही होती हैं, मानो किसी बड़े चमगादड़ की आँखें हों !"

पैनी का यह वर्णन सजीव नज़ारे से कुछ कम न था। जोडी उत्साह से भर उठा, "पिताजी ! मैं भी फायर प्लांट को खाते हुए रीछ को अवश्य देखूंगा।"

"अवश्य ! तुम भी मेरी तरह बड़ी उम्र के बनो ! तब तक तुम न जाने और कितनी नई, विचित्र और कुतूहलपूर्ण चीज़ें देखोगे।"

"क्या आपने उन्हें भोजन करते-करते मार भी दिया ?" उसे नई उत्सुकता जगी।

"नहीं, बेटे ! ऐसे कई मौक़ों पर मुझे अपनी बन्दूक काबू में रखनी पड़ी है, जब कोई जानवर भोला और अनजान बनकर भोजन कर रहा हो। मैं उसे देखता अवश्य रहा हूँ। ऐसे अवसर पर या जोड़ा बाँधते समय किसी पशु को मारना मेरी आदत के विपरीत है। हाँ, कई ऐसे अवसरों पर स्वभाव के विरुद्ध मारना भी पड़ा है, विशेषकर जब परिवार भूखा रहने लगा हो और माँस खोजना आवश्यक हो गया हो। पर, तुम फौरेस्टर लोगों

जैसे कभी न करना कि बिना ज़रूरत भी, केवल मज़े के लिए ही, शिकार करते फिरो। वह उतना ही बुरा है, जितने ये भालू ! सुना तुमने ?"

"हाँ, जी !"

जूलिया एकाएक चिल्लाई। निशान अब एकदम दायीं ओर मुड़ गए थे। पैनी बोल उठा, "मुझे यही डर था, इन्हीं तेजपात की झाड़ियों में..."

लाल फूलों वाले तेजपात का यह झुण्ड पार करना असम्भव था। स्थान-स्थान पर बदली हुई-सी यह धरती शिकार के लिए अच्छी जगह थी। वह बूढ़ा रीछ खाना खाने के लिए ऐसी जगह पर माँद से अधिक दूर नहीं निकलता होगा। तेजपात की झाड़ियाँ बाड़ की झाड़ी की भाँति एक-दूसरे से सटी खड़ी थीं। जोडी शंका में पड़ गया कि रीछ अपने भारी-भरकम शरीर के साथ इनमें से कैसे गुज़रा होगा। पर कहीं-कहीं ये झाड़ियाँ छिदरी और छोटी भी थीं, जिनके बीच से वह एक पगडंडी-सी साफ देख सकता था। इस पर से अनेक प्राणी आते-जाते थे। हिरण के पीछे वनबिलाव, उससे पीछे बड़ी बिल्ली, और फिर छोटे रीछ, खरगोश, ऊदबिलाव आदि छोटे पशु आदि वहाँ से निकलते थे। सभी के पाँव के निशान दीख रहे थे। ये छोटे पशु भी वहीं पेट भरते थे। परन्तु उन्हें वहीं पर खाने आये हुए दूसरे भयानक पशुओं से सावधान रहना पड़ता था।

"मुझे लगता है, अपनी बन्दूक भर लेनी चाहिए।" पैनी ने कहा।

उसने जूलिया को इशारे से कुछ क्षण प्रतीक्षा करने को कहा। वह जान-बूझकर आराम के बहाने लेट गई और रिप और पेर्क भी उसके साथ लेट गए। बारूद का डिब्बा जोडी ने उठाया हुआ था। पैनी ने उसे खोलकर उसमें से कुछ बारूद निकालकर बन्दूक की नाली में भरा। अपने शिकार के थैले में से बालों के गुच्छे जैसी स्पेनी काई निकालकर भरी और उसे पेड़ से ठोककर ठीक कर दिया। तब कुछ हल्के ढले छर्रे उसने भरे और फिर वही काई भर दी। अन्त में इसके ऊपर टोपी लगाकर उसे हलके से छड़ से ठीक कर दिया। तैयार होकर उसने जूलिया से कहा, "शाबाश जूलिया! अब जरा ढूँढ निकालो उसे।"

अब तक यह खोज कुछ आरामदेह रही थी। इसे खोज न कहकर आनन्ददायक भ्रमणमात्र कहा जा सकता था। अब वे तेजपात की झाड़ियों

में चल रहे थे, छिपते-से। उन झाड़ियों से छोटी-छोटी चिड़ियाँ उड़ पड़ती थीं। उनके डैनों की फड़फड़ाहट चौंका देने वाली थी। ज़मीन मुलायम और काली थी, और झाड़ियों में दोनों ओर रगड़ की हलकी आवाज़ हो रही थी। निशानों पर कहीं-कहीं झाड़ियों के छिदरी होते ही धूप पड़ जाती थी। अनेक पशुओं के आने-जाने के वाद भी भालू के शरीर की गन्ध सबसे ऊँचाई तक छूने के कारण अब भी स्पष्ट अनुभव की जा सकती थी। दूर से जूलिया को जैसे कुछ दिखाई दिया। वह तेज़ी से दौड़ पड़ी। पैनी और जोडी को भी उसका पीछा भागते हुए करना पड़ा। पैनी ने बन्दूक को अपने दाएँ हाथ में ले लिया। उसने इसकी नली का रुख पलट दिया, ताकि अगर वह गिर पड़े और गलती से यह बन्दूक चल जाय, तब भी इसका शिकार सामने के कुत्ते न बनें। पीठ-पीछे की एक शाख टूटी और जोडी ने डरकर पिता की कमीज़ पकड़ ली। उसी समय एक गिलहरी जैसे हँसती हुई-सी उधर से निकल गई।

अब झाड़ियाँ छिदरी हो गई थीं। ज़मीन नीची और गीली हो गई थी। अब धूप काफी बड़ी मात्रा में छन-छनकर आने लगी थी। अब चीड़नुमा पत्ती वाली कुछ ऊँची किन्तु पतली झाड़ियाँ आने लगी थीं। जिस राह पर से भालू गुज़रा, वहीं कोई कुचली हुई शाख पड़ी होती थी। इसकी मसली हुई पत्तियों की मधुरता उष्ण वायु को भी मद्धिम बना रही थी। एक पतली-सी लता उल्टी होकर तन गई थी। पैनी ने इसकी ओर इशारा किया। जोडी समझ गया। वह रीछ यहाँ से अभी कुछ ही क्षण पहले निकला था। बूढ़ी जूलिया उत्साह से भर उठी थी। उसके लिए निशानों की खोज ही ख़ूराक का काम कर रही थी। उसने अपनी नाक उस गीली धरती में गड़ा दी। झाड़ी की एक चिड़िया ऊपर से चीखती हुई उड़ गई, मानो पूछ रही हो, "क्या चुनते हो ?"

दलदल समाप्त होते ही एक हलकी-सी धारा दिखाई दी, जो बहुत चौड़ी नहीं थी। उभारवाले पाँवों के निशान इस पर साफ बिखरे हुए थे। एक जल-हिरण ने जैसे उत्सुकता में सिर उठाया और वह भी बहाव की दिशा में भूरी गिलहरियों की ओर भाग गया। धारा के पार छोटे-छोटे ताड़नुमा वृक्ष लगे हुए थे। पार की दलदल के परे तक भी वे निशान उसी

तरह चले गए थे। जोडी ने देखा कि उसके पिता की कमीज पीठ पर गीली हो उठी थी। उसने अपनी कमीज़ की आस्तीन देखीं, वे भी गीली थी। अचानक ही जूलिया भौंकी और पैनी ने दौड़ना शुरू किया। पैनी चिल्लाया, "उधर; नदी की धार पर ! वह धार के पार जाने की कोशिश कर रहा है।"

उसकी आवाज़ उस दलदल में भर गई। शाखें टूटने लगीं। भालू एक काले तूफान के रूप में बाधाओं को कुचलता हुआ बढ़े जा रहा था। कुत्ते लगातार भौंक रहे थे। पर जोडी के कानों में केवल अपने दिल की धड़कन की ही आवाज आ रही थी। बाँस की एक शाख उसके रास्ते में अटकी। वह घुटनों के बल गिरकर फिर से खड़ा हो गया। वह देख रहा था, उसके पिता के पाँव साइकिल के पैडल की भाँति चल रहे थे। अगर कुत्ते उसे अपनी भौंक से रोक न पाए तो शायद रीछ वह धार पार कर ही जाएगा।

धारा के किनारे एक खुली जगह थी। जोडी ने खुले में वह आकार-हीन काली-सी कुछ बड़ी चीज़ देखी। पैनी ने रुककर बन्दूक तानी। उसी समय जैसे एक छोटा-सा उड़न-बम उस अस्पष्ट-सी आकृति पर आ गिरा हो। यह जूलिया थी। वह अपने शत्रु पर टूट पड़ी थी। वह कूदी और फिर पीछे हटी। हटते ही फिर कूदी। रिप भी उसकी बगल में कूदकर जा पहुँचा। रीछ घूमकर उस पर टूट पड़ा। तब जूलिया उसके दूसरी बग़ल पर टूट पड़ी। पैनी बन्दूक सँभाले खड़ा रहा। कुत्तों के कारण वह दाग़ न सकता था।

इतने में ही भालू धोखे से अपने को उदासीन दिखाने लगा, जैसे वह भौंचक-सा होकर सुस्त व अनिश्चय में खड़ा रह गया हो। कभी वह पीछे हटता था, कभी आगे बढ़ता था। बच्चे की-सी आवाज़ में वह रोने लगा। एक क्षण के लिए कुत्ते पीछे को हटें। गोली दाग़ने का यही सबसे अच्छा मौका था। पैनी ने बन्दूक कन्धे पर रखी। बायीं आँख की सीध में मक्खी ठीक से बिठाई और घोड़ा दबा दिया। एक हलका-सा धमाका हुआ। तब उसने फिर से मसाले को दबाकर घोड़ी दबाई। उसके माथे पर पसीना आ गया था। नली की हथौड़ी ने फिर ठीक काम न किया। पर तभी जैसे एक काली आँधी उठी और उन कुत्तों पर टूटी। रीछ की इस तेज़ी का अनुमान भी न किया जा सकता था। उसके चमकते हुए पंजे और सफेद दाँत बिजली के समान कौंध उठे। वह हर दिशा में गरजा, घूमा और दाँत गड़गड़ाता हुआ

टूटा। कुत्त भी तेज़ हो चुके थे। जूलिया पीछे से और रिप आगे से उस पर बारी-बारी से हमला करते थे।

जोडी को जैसे लकवा मार गया हो! उसने देखा कि उसके पिता ने नली के हथौड़े को फिर से ठीक किया और आगे झुका हुआ खड़ा रहा। अपने सूखे होंठों को वह चाट रहा था। उसकी अँगुली घोड़ी पर थी। तभी जूलिया ने रीछ के दाएँ पासे में जैसे छेद कर दिया हो। रीछ घूमा, पर जूलिया पर नहीं, अपने बायीं ओर के रिप पर! उसने उसे दोनों पासों से पकड़कर साथ ही झाड़ियों में पटक दिया। तभी पैनी ने फिर से घोड़ी दबा दी। इस बार एक बहुत बड़े धड़ाके की आवाज़ हुई। झटके से पैनी खुद पीछे गिर पड़ा। बन्दूक से धमाका आगे की बजाय पीछे हुआ था।

तब तक रिप फिर से अपने काम पर आ डटा था और रीछ की गर्दन पकड़ने की कोशिश में था। जूलिया पीछे की ओर से तंग करने में लगी ही हुई थी। रीछ एक बार फिर धारा के तट पर झूमता हुआ खड़ा हो चुका था। उसके चेहरे को दायीं ओर से बारूद ने काला कर दिया था। रीछ ने एक ही झटके में रिप से छुटकारा पाया और जूलिया को घुमाकर पटका। उसने उसकी छाती को अपने पंजों में भरकर उठाया। वह ज़ोर से चिल्ला उठी। रिप ने ज़ोर से पीछे से आकर उसके पिछले हिस्से में अपने दाँत गड़ा दिए।

जोडी चिल्ला पड़ा, "वह जूलिया को मार डालेगा।"

पैनी उन झाड़ियों में होकर दौड़ पड़ा और उसने रीछ की पसलियों में अपनी बन्दूक गड़ा दी। जूलिया जकड़ी हुई थी, फिर भी उसने रीछ की गर्दन को नीचे से दबोच लिया था। रीछ एकदम ही गुर्राकर मुड़ा और धारा के बीच में कूदकर गहरे पानी में चला गया। दोनों कुत्तों ने उसे जकड़े रखा। रीछ पागल होकर तैर रहा था। रीछ की गर्दन के नीचे जूलिया का केवल सिर ही पानी से बाहर दिखाई दे रहा था। रिप उसकी पीठ पर बड़ी बहादुरी से सवार था। रीछ धारा के परले तट तक पहुँच गया था और उसके ऊँचे तट पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। जूलिया की पकड़ ढीली पड़ गई और वह ज़मीन पर घायल दशा में गिर पड़ी। अब रीछ घनी झाड़ियों की ओर मुड़ पड़ा। एक क्षण तक और रिप उसके साथ रहा।

तब अनिश्चय में पड़कर वह उसे छोड़कर फिर धारा की ओर लौट पड़ा। वहाँ आकर वह जूलिया के पास रुका, उसे सूँघा और वहीं कमर झुकाकर बैठ गया। वह वहीं से पानी के इस ओर देखकर चिल्लाने लगा।

पैनी ने उनका ध्यान खींचा, "रिप, इधर! जूलिया, यहाँ!" रिप ने अपनी मोटी-सी पूँछ हिलाई और फिर शान्त-सा बैठ गया—बिना हिले-डुले। पैनी ने शिकार में बजाने वाला सींग उठाया और उससे एक लम्बी आवाज़ निकालने लगा। जोडी ने देखा, जूलिया ने एक बार सिर उठाया और फिर वैसे ही गिर पड़ी।

पैनी बोला, "मुझे उसे लेने जाना पड़ेगा।"

उसने अपने जूते उतारे और धारा के तट से उतरकर पानी में उतर गया। तट से कुछ ही दूरी पर एक तेज़ धार उसे बहा ले चली, जैसे वह भी कोई शहतीर हो! वह बहुत दूर तक इसका मुक़ाबला करता रहा। जोड़ी ने बहुत दूरीपर, धारा के बहाव की दिशा में, देखा कि उसके पिता के पाँव पानी से निकलते समय लड़खड़ा रहे थे, वह अपनी पलकों से पानी पोंछ रहा था और तट पर ही अपने कुत्तों की ओर वापस लौट रहा था। तब जूलिया के पास आकर वह झुका और उसे उसने बग़ल में ले लिया। अबकी बार वह धारा के कुछ ऊपर की ओर चला गया और तब धारा में कूदा। यद्यपि इस बार भी उसने अपनी खाली बाँह से पानी काटा, किन्तु फिर उस तेज़ धार में पड़ते ही बह निकला। पर इस बार वह जोडी के समीप ही आकर रुका। रिप उसके पीछे-पीछे तैरकर आ गया था। रिप ने बाहर निकलकर अपने को झटका गया। पैनी ने भी बाहर निकलकर उस शिकारी कुतिया को नीचे लिटा दिया। उसने जोडी से कहा, "यह बुरी तरह घायल हुई है।"

उसने अपनी कमीज़ उतारकर उसे कुतिया पर लपेट दिया और कमीज की बाँहें कस दीं। इस प्रकार एक गठरी-सी बन गई और उसने उसे पीठ पर लटका लिया।

तब वह पुत्र से बोला, "अब यह निश्चित हो गया है कि मुझे एक नई बन्दूक लेनी होगी।"

उसके गाल पर बारूद का काला निशान पहले ही छाला बन चुका था।

"पिताजी ! गड़बड़ क्या हुई ?"

"सभी कुछ ! नली में पड़ने वाली छड़ ढीली है। मुझे यह बात पता थी। मैंने इसे दो-तीन बार टेढ़ा करके बरता और इसने ठीक काम किया। पर आज जब इसने पीछे आग उगली तो पता चला कि इसका मुख्य स्प्रिंग भी काम करना बन्द कर चुका है। अच्छा, अब हमें चलना चाहिए। शायद तुमने सोचा कि बन्दूक की नली फट गई है।" पिता ने समझाते हुए कहा।

सबके सब उस दलदल में होकर घर की ओर चल पड़े। पैनी उत्तर और पश्चिम की ओर होकर चल रहा था।

"अब मैं रीछ का शिकार कर लेने तक एक मिनट भी आराम नहीं करूँगा। बस मुझे नई बन्दूक और कुछ समय चाहिए।" उसने प्रतिज्ञा की।

अचानक ही पैनी की पीठ पर लदी कुतिया के बदन से टपकते खून को देखकर जोडी का जी घबरा उठा। उसने स्पष्ट किया, "पिताजी ! मैं आगे चलना चाहता हूँ।"

पैनी ने मुड़कर उसकी ओर देखा और कहा, "मूर्छित होकर मुझ पर गिरने का यत्न न करो।"

जोडी तुरन्त सँभला, "नहीं, पिताजी ! मैं आपके आगे राह खोजता चलूँगा।"

"अच्छा, तो बढ़ो। देखो सैर के सामान का वह थैला खोलकर रोटी इसमें से लेकर कुछ टुकड़े खालो। तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी।"

जोडी ने थैले में हाथ से कुछ देर टटोला और अन्त में मीठे केक का बंडल निकाल लिया। जंगली बेरी के मुरब्बे को वह बड़ा तीखा और ठंडा बताया करता था। पर अब उसे चखने के बाद अत्यन्त स्वाद पाकर वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। वह कई केक जल्दी-जल्दी निगल गया। कुछ केक उसने पिता को भी दिए।

"खूराक काफी तसल्ली देती है," पैनी ने कहा। एक गुर्राहट-सी झाड़ियों में से आई। कोई छोटी-सी आकृति उनके पीछे-पीछे आ रही थी। यह दोगला पेर्क था। गुस्से में जोडी ने उस पर एक लात जमाई।

पैनी को दया आई, "उसे मत मारो। मुझे सारे समय यही सन्देह था।

कुछ कुत्ते शेर-दिल होते हैं और कुछ उससे बिलकुल उल्टे।"

आखिर पेर्क भी उस कतार के अन्त में आ मिला। जोडी रास्ता बना रहा था। राह में कुछ पेड़ गिरे पड़े थे। पर वे इतने मोटे थे कि उसके हिलाए हिलने वाले न थे। कुछ जंगली वृक्ष अत्यन्त कठोर थे। उन्हें पैनी भी न हिला सका। लाचार जोडी को या तो उनका चक्कर काटकर या फिर उनके नीचे से सरककर जाना पड़ा। पैनी को अपनी पीठ के बोझ के कारण राह बदलनी पड़ती थी। दलदल सटी हुई और गीली थी। रिप हाँफ रहा था। जोडी का पेट भरा हुआ था। फिर भी उसका हाथ थैले में पहुँच गया। अब उसने आलू का हलवा निकाला। उसके पिता ने हिस्सा बँटाने से मना कर दिया। तब जोडी ने रिप के साथ बाँटकर वह भी खा लिया। उसके विचार में पेर्क किसी चीज़ के लायक न था।

दलदल पार कर के चीड़ के जंगल में पहुँचने पर सबको ही सन्तोष हुआ। हालाँकि आगे का जंगल एक-दो मील तक फैला हुआ था, पर उन्हें वह हलका और घुसने लायक लगा। दलदल लाँघने की अपेक्षा जंगली सनावरों, ताड़नुमा छोटे पेड़ों, और गॉलबैरी के वृक्षों को पार करना उन्हें सरल और आरामदेह लगा। जब तक उन्हें अपनी ज़मीन के चीड़ के पेड़ दिखाई दिए, दोपहर ढल चुकी थी। वह सारा जत्था कतार बनाकर पूरब की ओर की रेतीली पगडंडी से अपने बाड़े में घुसा। रिप और पेर्क आगे-आगे दौड़कर सरू के पेड़ को सींचने वाली नाली पर पहुँच गए। यहाँ चूज़े पानी पीते थे। माँ दरवाज़े पर ही बैठी थी। उसके सामने मरम्मत के लिए ढेर-सा सामान पड़ा था।

वह दूर से ही पूछ बैठी, "एक मरा हुआ कुत्ता! बस; रीछ नहीं?"

पैनी ने उत्तर दिया, "नहीं, अभी मरी नहीं। ज़रा तुम मुझे पानी, कुछ चिथड़े और एक बड़ी सूई और धागा दे दो।"

सहायता के लिए वह तुरन्त दौड़ पड़ी। जोडी ऐसी कठिनाइयों में उसकी शारीरिक चुस्ती व सामर्थ्य को देखकर सदा ही अचरज में पड़ जाता था। पैनी ने बेचारी जूलिया को बरामदे के फर्श पर लिटाया। वह हलके से गुर्राई। जोडी उस पर झुका और उसका सिर हिलाने पर जूलिया ने उसे दाँत दिखा दिए। वह अधीर होकर माता के पीछे-पीछे दौड़ा। वह

पुराने कपड़ों में से पट्टियाँ फाड़ रही थी। उसे देखते ही वह बोली, "तुम पानी लेकर चलो।" जोडी पानी के लिए दौड़ पड़ा।

पैनी तब तक कोमल पत्तों की एक गठरी लेकर बरामदे में लौट आया, ताकि जूलिया के आराम के लिए गद्देदार बिस्तर बनाया जा सके। तब तक उसकी पत्नी मरहमपट्टी का सारा सामान लेकर आ गई। पैनी ने ख़ून से सनी अपनी कमीज़ जूलिया के शरीर से खोली और उसके लम्बे-चौड़े घावों को धो डाला। जूलिया ने रत्ती-भर विरोध न किया। उसने ऐसे पंजों की चोटें पहले भी सही थीं। पैनी ने अधिक गहरे दो घावों को सी दिया और राल को पीसकर उन सब घावों में भर दिया। एक बार तो वह चीखी, पर बाद में उसने पैनी को चुपचाप अपना काम करने दिया। पैनी ने बताया कि एक पसली टूट गई थी। वह उसे ठीक से नहीं बिठा सकता था। पर उसे यह भी पता था कि यदि जूलिया जीवित रही, तो यह पसली स्वयं ही जुड़ जाएगी। उसका खून बहुत बह चुका था। उसकी साँस बहुत तेज़ और उथली-उथली चलने लगी थी। पैनी ने उसे उठाया और बिस्तर व सभी चीज़ों को लेकर उसे सुलाने के लिए दूसरे कमरे में ले चला।

उसकी पत्नी पूछ बैठी, "तुम उसे कहाँ ले चले?"

"अपने सोने के कमरे में। मुझे आज रात उसकी निगरानी करनी है।"

वह खीझ उठी, "पर, एज़रा बैक्स्टर! मेरे कमरे में नहीं। मैं उसके लिए सब उचित बातें करने को तैयार हूँ, पर अपने कमरे में नहीं रखूँगी। मैं यह नहीं सह सकती कि तुम सारी रात उठ-उठकर उसे देखते रहो और उस तरह मेरी नींद तोड़ते रहो। पिछली रात भी मैं आधी नींद तक न ले सकी।"

पैनी बोल उठा, "तो, मैं जोडी के साथ सो जाऊँगा और जूलिया को वहीं रख लूँगा। पर, आज की रात उसे मैं किसी भी दशा में अकेले किसी कोठरी में नहीं छोड़ूँगा। जोडी, जरा पानी तो लाओ।"

तब वह उसे जोडी के कमरे में ले गया और पत्तों का गदेला-सा बना कर उस पर जूलिया को लिटा दिया। वह पानी तक भी नहीं पी रही थी। पैनी ने उसका मुख खोलकर उसमें पानी डाला। तब जोडी की ओर मुँह करके उसने कहा, "अब उसे आराम करने दो। आओ, चलकर और काम

निबटा लें।"

बाड़े में आज अजीब-सी गर्मी अनुभव हो रही थी। जोडी ने मुर्गीखाने से अंडे इकट्ठे किए, गाय को दुहा, बछड़े को उसके पास छोड़ा और माँ के लिए लकड़ियाँ काट लाया। पैनी बैंगी लेकर दो बाल्टियों में पानी भरने सोते तक गया। उधर माँ साँझ का खाना बनाने में लगी थीं। सूअर का ताज़ा माँस और दो सब्ज़ियाँ उसने पका ली थी। उसे अफसोस हुआ, "काश! आज एक टुकड़ा रीछ के माँस का भी खाने को मिलता!"

जोडी की भूख फिर तेज़ हो गई थी, पर पैनी को भूख कतई नहीं लगी थी। जूलिया को कौर देने के लिए वह दो बार उठा, किन्तु उसने इन्कार कर दिया। तब श्रीमती बैक्स्टर उठी और मेज़ आदि साफ करने लगी। उसने शिकार के बारे में कुछ अधिक न पूछा। जोडी की इच्छा थी कि इस बारे में उसे कुछ बोलने का मौक़ा मिले, ताकि जिस राह की थकान, लड़ाई और डर ने उसे घेर रखा था; उनका प्रभाव कुछ कम हो सके। पैनी चुप था। जोडी की ओर किसी ने भी ध्यान न दिया और वह अपने खाने में मस्त रहा।

सूर्य लाल पड़कर अस्त हो गया। रसोई में पड़ने वाली छाया बढ़ते-बढ़ते अन्धकार बन गई।

पैनी ने कहा, "मैं थक गया हूँ। मुझे अभी से सोना होगा।"

जोडी के पाँव भी जूते की कठोरता से छाले वाले और खुरदरे हो चुके थे। वह भी बोल पड़ा, "मैं भी!"

तब माँ की बारी थी।

"मैं तो थोड़ी देर काम करूँगी। मैंने दिनभर खाली बैठे चिन्ता करने के सिवाय कुछ नहीं किया; या फिर थोड़ा-सा कीमा पकाया।"

पैनी और जोडी सोने चले गए। दोनों कपड़े उतार रहे थे। चारपाई तंग थी। पैनी बोला, "अगर तुम भी अपनी माँ जितने मोटे होते तो मैं इस चारपाई पर न सो सकता, या फिर हममें से कोई एक नीचे गिरता।"

पर, उस चारपाई पर उन जैसे दो पतले शरीरों के समाने के लिए काफी जगह थी। धीरे-धीरे पश्चिम की रही-सही लाली भी विदा हुई और कमरे में अन्धकार भर गया। कुत्ता सो रहा था। कभी-कभी उसकी गुर्राहट निकल जाती थी। चाँद उठना शुरू हुआ और एक ही घंटे में पूरा उठ

आया। कमरा चाँदनी से नहा उठा। अचानक जोडी को पैरों में जलन अनु-भव हुई। उसने घुटने समेटे। पैनी पूछ बैठा, "जाग रहे हो, बेटे!"

जोडी ने उत्तर दिया, "मैं अब भी जैसे चल ही रहा हूँ!"

"आज हम कुछ ज़्यादा दूर निकल गए थे। बेटे, तुम्हें रीछ का शिकार कैसा लगा?"

अपने घुटने रगड़ते हुए जोडी बोला, "ठीक है! मुझे इस बारे में सोचने में मज़ा आता है।"

"मुझे पता है।" पैनी ने बढ़ावा दिया।

"मुझे खोजने और बढ़ने में मज़ा आया। शाखों का टूटना भी मुझे अच्छा लगा। दलदल के पतले पत्तों वाले पौधे भी अच्छे लगे।"

"मुझे मालूम है।" पैनी ने फिर बात को बढ़ाया।

"मुझे जूलिया का बार-बार भौंकना भी अच्छा लगा..."

"पर, लड़ाई डरावनी लगी। ठीक है न, बेटे!" पैनी ने बात पूरी की।

"सचमुच लड़ाई काफी डरावनी थी।"

पैनी सान्त्वना की आवाज़ में बोला, "यह बात ठीक है। कुत्ते का बुरी तरह घायल होना आदि बातें सचमुच जी गिराने वाली होती हैं। और, सच यह है कि तुमने कभी रीछ मारे जाते देखा नहीं। वे कितने ही नीच हों, किन्तु जब वे गिर जाते हैं तब कुत्तों द्वारा उनकी गर्दन आदि का नोचा जाना बहुत ही करुणाजनक होता है। वह बेचारा आदमी की ही तरह असमर्थ-सा चिल्ला-चिल्लाकर देखते ही देखते मर जाता है।"

तब कुछ देर के लिए दोनों ही मौन पड़े रहे। तब जोडी बोला, "मेरी इच्छा करती है, काश। हमें नुक़सान पहुँचाने वाले और हमारी चोरी करने वाले सभी जानवरों को हम एकदम समाप्त कर देते।"

पैनी ने समझाया, "पशुओं में इस तरह की बात चोरी नहीं कहलाती। आखिर पशुओं को अपनी जीविका ढूंढनी होती है और वे हमारी ही तरह अच्छे से अच्छे रूप में प्राप्त करने का यत्न करते हैं। चीते, भेड़िए और रीछ का यह स्वभाव है कि वे अपना भोजन पशुओं को मारकर प्राप्त करते हैं। गाँव की गलियाँ या खेतों की बाड़ें उनके लिए कुछ महत्त्व नहीं रखतीं। वे कैसे जान सकते हैं कि यह ज़मीन हमारी है और हमने इसे

खरीदा है ? कोई रीछ कैसे जान सकता है कि हमें भी अपने सूअरों की अपनी खुराक के लिए ही ज़रूरत होती है ? उसे केवल अपनी भूख का पता होता है। बस !"

जोडी उस चाँदनी में ताकता पड़ा रहा। उसे लगा कि उनका यह टापू एक किला है और उसके चारों ओर भूख मँडरा रही है। उसे उस चाँदनी में भी जैसे लाल, हरी और पीली आँखें सी चमकती दीखने लगीं। जैसे अभी कुछ भूखे जानवर खेतों में चुपचाप तेज़ी से घुस आएँगे और पालतू पशुओं को मारकर और खाकर चुपचाप खिसक जाएँगे। शायद, वनबिलावों की घात मुर्गी के चूजों पर जाएगी, बाघ का धावा प्रातः से पहले ही गाय के बछड़े पर होगा और शायद वह घाघ रीछ फिर से किसी को मारने और भूख मिटाने आएगा।

पैनी फिर बोला, "जानवर भी वैसा ही कुछ करता है, जैसा मैं घर के लिए माँस की ज़रूरत पड़ने पर शिकार के समय करता हूँ। जिसका शिकार करना है, उसके घर में घुसकर ही उसे मारना चाहिए, जहाँ वह रहता है, सोता है और बच्चों को पालता-पोसता है। यह बात है कठिन, पर सच्चा न्याय यही है : मारो या भूखे रहो।"

जोडी को पता था कि इस पर भी वह बड़ा सुरक्षित था। जानवर आते थे और लौट जाते थे। अचानक ही उसे कँपकँपी चढ़ आई। वह नहीं कह सकता था क्यों ?

"तुम्हें ठण्ड तो नहीं अनुभव हो रही, बेटे ?" पैनी ने पूछा।

"ऐसा ही लगता है।"

उसे उसी रीछ का ध्यान आ रहा था, जैसे वह चक्कर खा रहा हो, टूट पड़ता हो और गुर्राता हो। उसे जूलिया फिर लपकती दिखाई दी, जैसे फिर रीछ ने उसे पकड़कर कुचल दिया हो। पर फिर भी वह उसे जकड़े रही। और, तब उसने उसे एकाएक गिर जाते देखा। वह घायल थी और उसमें से खून बह रहा था। पर, सामने के अपने खेत उसे अब भी सुरक्षित लगे।

"मेरे समीप सरक आओ, बेटे। मैं तुम्हें गर्मी पहुँचाऊँगा।"

वह अपने पिता की हड्डियों और पसलियों से सट गया। पैनी ने अपनी

बाँह उसके ऊपर डाल दी और अपनी जाँघ उसकी जाँघ से सटा दी। अब जोडी को अपना पिता ही बचाव की एकमात्र आशा लगा। उसे लगा कि उसका पिता धार पार करके घायल कुत्ते को वापस ले आया। वाड़ा सुरक्षित था और उसका पिता स्वयं खेतों और जोडी के बचाव के लिए व्याकुल था। उसे ऐसे लगा कि वह एकदम सुरक्षित है। उसे नींद ने आ घेरा। एक बार वह घबराकर उठा। उसने देखा, पैनी उस चाँदनी में कमरे के एक कोने में झुका हुआ कुत्ते की देख-भाल कर रहा था।

5

पैनी ने नाश्ते के समय घोषणा की, "अब यह तो तय है कि हमें या तो नई बन्दूक का सौदा करना होगा या मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।"

जूलिया अब कुछ अच्छी थी। उसके घाव अब साफ थे और उनकी सूजन उतर चुकी थी। खून की कमी के कारण वह कमज़ोर थी। वह केवल सोना चाहती थी। उसने पैनी के हाथ से थोड़ा दूध भी पिया था।

पैनी की पत्नी का ध्यान उसकी घोषणा ने खींचा, "तुम नई बन्दूक खरीदने की बात सोच कैसे सकते हो? टैक्स देने के लिए तो पैसा पास नहीं है।"

पैनी ने बात काटी, "मैंने सौदे की बात कही है।"

"और, जिस दिन भी तुम्हारा सौदा अच्छा रहेगा, उस दिन मुझे खाली बर्तन चाटने होंगे।"

"मैं किसी से बढ़कर बात बनाने की इच्छा नहीं रखता। पर, इतना

निश्चित है कि बहुत से सौदे भी ऐसे होते हैं, जिनसे सभी को सन्तोष मिलता है।"

"तुम्हारे पास है क्या, उस सौदे के लिए ?"

"वह दोगला कुत्ता।"

"उसे लेना कौन चाहेगा ?"

"क्यों, वह अच्छा शिकारी कुत्ता है।"

"बिस्कुटों का शिकारी ना।"

"यह बात मेरी भाँति तुम्हें भी अच्छी तरह मालूम है कि फौरेस्टर लोग कुत्तों के विषय में बिल्कुल मूर्ख हैं।"

उसकी पत्नी घबरा गई। बोली, "एज़रा बैक्स्टर, क्या तुम फौरेस्टर लोगों से व्यापार करते चले हो ? यही शुक्र समझना कि तुम अपने कपड़ों में साबित वापिस लौट आओ।"

"खैर, जोडी और मैं आज उधर ही जा रहे हैं," पैनी ने ऐसी दृढ़ता से उत्तर दिया, जैसे उसकी भारी-भरकम पत्नी हवा की तरह हल्की हो।

उसने आह भरी, "बहुत अच्छा। मेरे पास लकड़ी चीरने, पानी भरने, या काम करते समय मेरे गिर जाने पर मदद करने के लिए किसी को न छोड़ जाओ। जाओ, उसे भी लेते जाओ।"

"नहीं, मैं तुम्हें लकड़ी और पानी बिना लाए कभी छोड़कर नहीं गया।" जोडी बहुत व्याकुल होकर सुनता रहा। फौरेस्टरों के यहाँ जाना वह खाने की अपेक्षा ज़रूरी समझता था।

पैनी ने बात साफ की, "जोडी को लोगों से मिलना-जुलना रहेगा, तभी वह उनके तौर-तरीके जान सकेगा।"

पत्नी खिसिया गई, "और, उसके लिए फौरेस्टर लोगों से ही आरम्भ होना चाहिए ! अगर उसने उनसे कुछ सीखा ही, तो उसे अपना दिल अँधेरी रात के समान काला करना सीखना होगा।"

"हो सकता है वह इससे बिलकुल उलटा सीखे। खैर, जा हम वहीं रहे हैं।" पैनी ने अपना फैसला सुनाया और मेज़ पर से उठ पड़ा।

"मैं पानी भर देता हूँ; और जोडी, तुम ज़रा लकड़ी चीर लाओ।"

पत्नी ने उत्सुकता से पूछा, "तो तुम दोपहर का खाना आकर खाओगे?"

"नहीं, वैसा करके मैं पड़ौसियों का अपमान नहीं करूँगा। हम दोपहर उनके साथ ही बिताएँगे।"

जोडी लकड़ियों की ओर दौड़ा गया। लकड़ियों पर कुल्हाड़े की चोट पड़ती थी और वह जैसे फौरेस्टरों के नज़दीक पहुँचता जाता था। उसने काफी लकड़ियाँ चीरीं और गट्ठर उठाकर रसोई का डिब्बा भर दिया। उसका पिता तब तक भी सोते से पानी लेकर न लौटा था। जोडी पशुओं की ओर दौड़ा और घोड़े पर ज़ीन कस दी, उसने सोचा यदि घोड़ा तैयार रहेगा और प्रतीक्षा कर रहा होगा, तब पिता के आते ही माँ का कोई नया बहाना सुनने से पहले ही वे निकल जाएँगे। उसने पिता को दूर से बैंगी में दो पानी से भरे डोल लटकाए आते देखा। वह पानी को आराम से उतारने में सहायता देने को दौड़ा। उसे डर था कि थोड़ी-सी भी चूक पानी खिडने का कारण बन सकती थी और तब फिर से पानी लाने जाना पड़ेगा।

"सीज़र पर ज़ीन कस दी है," उसने सूचित किया।

पैनी मुसकरा पड़ा, "और मैं यह भी मान लेता हूँ कि आग जल चुकी होगी। अब मुझे मेरा बाहर जाने का कोट देते जाओ, रिप को अच्छा बाँध दो और मेरी बन्दूक उठा लाओ। बस अब चले ही समझो।"

घोड़े की ज़ीन फौरेस्टर लोगों से ही खरीदी गई थी। उन्होंने अपने परिवार में से किसी के अयोग्य और छोटी पाकर उन्हें दे दिया था। पर, इस पर ये बाप-बेटा दोनों ही आराम से बैठ जाते थे।

"बेटे ! तुम आगे बैठ जाओ, पर अगर तुम मेरे से ऊँचा होने लगे तो तुम्हें पीछे आना पड़ेगा; क्योंकि उस स्थिति में मुझे कुछ दिखाई नहीं देगा। अरे, पेर्क ? चलो, बढ़ो !"

दोगला पेर्क पिछड़ रहा था। वह एक वार मुड़ा और उसकी नज़र पीछे की ओर गई। पैनी ताड़ गया, "उम्मीद है, तुम यह सब अन्तिम बार देख रहे हो।"

सीज़र आराम कर ही चुका था। बैठते ही वह दौड़ने लगा। उसकी पीठ विशाल थी, ज़ीन भी चौड़ी थी और पिता के आगे वह बैठा ही था। इस सुविधा में बैठे हुए जोडी को लगा जैसे वह किसी झूलेदार आरामकुर्सी पर बैठा हो। वह रेतीली पगडंडी सुनहले फीते-सी चमक रही थी, जिस-

पर पत्तों की परछाईं कहीं-कहीं पड़ रही थी। पश्चिम में सोते के पास, पगडंडी दो में बँट गई थी, एक राह फौरेस्टर परिवार की ज़मीन की ओर निकल गई थी और दूसरे उत्तर की ओर चली गई थी। उत्तर की ओर की राह की निशानी उस दिशा के चीड़ के पेड़ों पर लगे कुल्हाड़ी के निशानों से स्पष्ट थी।

जोडी को उत्सुकता जगी, "क्या आप या फौरेस्टर कभी उन पर निशान लगाते हैं ?"

"वे मेरे इस ज़मीन को लेने से पहले काटे गए थे, जैसा कि फौरेस्टर प्रायः बताते हैं। इनमें से कुछ निशान बहुत गहरे हैं और उनके कारण चीड़ों की बढ़ती ठीक से नहीं हो पाई। मुझे लगता है कि इनमें से बहुत से निशान स्पेनी लोगों के समय के हैं। क्यों, क्या तुम्हें इतिहास के अध्यापक ने स्पेनियों के विषय में कुछ नहीं बताया ? पुत्र ! कभी यह राह स्पेनियों ने बनाई थी। यह दायीं ओर की राह स्पेनियों ने फ्लोरिडा के आर-पार तक बनाई थी। यह फोर्ट बटलर के पास से फटती है। उसमें से दक्षिणी राह टाम्पा की ओर निकल गई है। इसे ड्रेगून नाम से पुकारते हैं। यह सामने की दूसरी राह 'ब्लैक बीअर' के नाम से प्रसिद्ध है।"

जोडी की आँखें उत्सुकता में पिता की ओर घूम गईं।

"आपका क्या खयाल है, स्पेनी भालुओं से लड़े होंगे ?"

"हाँ, और कोई चारा नहीं था। जब उन्हें यहाँ डेरा डालना ही पड़ा तो उन्हें आदिवासी इण्डियन लोगों से, भालुओं से और बनबिलावों से लड़ना पड़ा था। हममें उनमें यही अन्तर था कि हमें आज इण्डियन लोगों से लड़ना नहीं पड़ता।"

जोडी उसकी ओर ताकने लगा। उसे लगा वे चीड़ के वन पूरी तरह आबाद थे।

"क्या अब भी यहाँ कोई स्पेनी लोग रहते हैं ?"

"नहीं, यहाँ उनमें से कोई भी बसा हुआ नहीं दीखता। यहाँ के निवासियों में से किसी ने भी अपने पुरखों तक से नहीं सुना कि उन्होंने कभी किसी स्पेनी को बसा देखा हो। समुद्र-पार से स्पेनी आए और यहाँ व्यापार और युद्ध करते हुए, फ्लोरिडा प्रदेश के पार चले गए। पर, अब किसी को

नहीं पता कि वे किधर गए ?"

वसन्त की इस सुनहरी प्रातः में फूले हुए वन में मस्तीभरी हलचल छाई हुई थी। लाल चिड़ियाँ जोड़े बाँध रही थीं। कलगीधारी पक्षी संगीत की रागिनी छेड़ बैठे थे। बैक्स्टर परिवार की वह भूमि उस मधुर संगीत की गूँज से भर उठी।

"वॉयलन और गिटार बजाने से यह अधिक अच्छा नहीं है क्या ?" पैनी ने पूछा।

जोडी का ध्यान फिर से जंगल की ओर लौटा। वह स्पेनियों के बारे में सोचते-सोचते जैसे उन्हीं के साथ समुद्र पार जा चुका था।

मधुर गोंद वाले वृक्ष के नए पत्ते पूरी तरह निकल आए थे। चमेली, गुलाब, डौगवुड आदि पर फूल खिलकर समाप्त हो चुके थे, किन्तु शहतूत, टी-टी आदि पर बहार पूरी तरह छाई हुई थी। अब राह पश्चिम की ओर मुड़ गई थी। एक मील तक यह हरियाली और फूलों में से होकर जाती थी। अंगूरों के मधुर फूलों पर जंगली मधुमक्खियाँ भिनभिना रही थीं। यहाँ राह एक उजाड़ खेत के पास से सँकरी होकर गुज़री। सीज़र रुककर धीरे-धीरे चलने लगा। उनके चारों ओर का जंगल जैसे सिमटता आया। जंगली सनॉवर, बेरी और मेहन्दी उनके पाँवों से अटकते थे। वनस्पतियाँ घनी और छोटी थीं। कहीं-कहीं ही छायादार विशाल वृक्ष आते थे। वैशाख का सूर्य तेज़ होता जा रहा था। सीज़र पसीने से तर-बतर होता जा रहा था। चमड़े की ज़ीन उसकी पीठ पर रगड़ रही थी और थप-थप की आवाज़-सी हो रही थी।

राह के ये दो मील बड़े गर्म और शान्त थे। कभी-कभी समीप की झाड़ियों में चिड़ियाँ अवश्य चहचहा उठती थीं। एक लोमड़ी रास्ते को काट गई। टूटी झाड़ी भी उसके साथ ही घिसटती गई। और एक पीली-सी शक्ल—शायद वनबिलाव—अत्यधिक तेज़ी से मेहन्दी की झाड़ियों में घुस गया। इसके बाद की सड़क चौड़ी थी। वनस्पतियाँ कम पड़ गईं। और, फौरेस्टर परिवार की ज़मीन के ऊँचे-ऊँचे पेड़ एक पथ-चिह्न के रूप में जैसे ऊपर उठ आए। पैनी घोड़े से उतर आया। उसने पेर्क को गोदी में उठा लिया और उसे बग़ल में बाँधकर फिर से घोड़े पर चढ़ गया।

जोडी पूछ बैठा, "आप उसकी चिन्ता क्यों करते हैं?"

"तुम फिक्र न करो! कुछ खास बात नहीं।"

वे हरियाली में से गुज़रे। यह ठण्डी व गहरी थी। और ताड़ तथा सनावर की शाखों के साथ मुड़ी हुई थीं। यहाँ से सड़क घूम जाती थी। सामने ही फौरेस्टरों का घर एक विशाल सनावर की छाया में दिखाई दे रहा था।

पैनी ने जोडी को चेताया, "देखो, फौडरविंग को अधिक मत सताना।"

"मैं क्यों तंग करूँगा? वह तो मेरा अच्छा मित्र है।"

"यह अच्छी बात है। उसका महत्त्व दूसरे पर है। अगर वह किसी खास बात पर अड़ जाय, तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता।" पिता ने कहा।

"ओलिवर को छोड़कर वह मेरा सबसे अच्छा मित्र है।" जोडी ने बताया।

पैनी ने कहा, "इस मामले में, अच्छा है, तुम ओलिवर पर ही भरोसा करो। गप्पें वह भी फौडरविंग जितनी ही बड़ी हाँकता है, पर वह जानता है कि वह कब झूठ बोल रहा है?"

तभी जैसे एकाएक जंगल की शान्ति भंग हो गई। घर के अन्दर कुछ गड़बड़ मच गई थी। आनेवाली आवाज़ से लगा कि कुर्सियाँ कमरे की चौड़ाई में फेंकी गईं और कोई बड़ी भारी चीज़ टूटी। काँच बिखरने, लकड़ी के फर्श पर भारी-भरकम पाँव पटकने और फौरेस्टरों की दीवारों से टकराती आवाज़ें आईं। इस सबके बीच एक स्त्री की एक तेज़ आवाज़ गूँजी। तब अचानक ही दरवाज़ा खुला और कुत्तों का एक जत्था बाहर निकला। माँ फौरेस्टर रसोई की झाड़ू लेकर उनका पीछा कर रही थीं और वे सुरक्षा के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे। उनके पीछे उनके बेटे जमा हो गए थे।

पैनी ने पूछा, "क्या यहाँ उतरना खतरे से खाली है?"

फौरेस्टर लोगों ने बैक्स्टर पिता-पुत्र का स्वागत किया। किन्तु इसके साथ वे कुत्तों को भी आज्ञा दे रहे थे। माँ अपने एँप्रन को झंडी की तरह ऊपर-नीचे हिला रही थीं। स्वागत की आवाज़ें कुत्तों को दी जाने वाली आज्ञाओं के साथ मिलकर कुछ इस तरह गड़बड़ा गईं कि जोडी स्वागत के

विषय में कुछ स्थिर न कर सका। उसका जी घबराने लगा।

"उतरो! आओ! निकलो, माँस चोरो! हुश्! तुम कैसे हो? थक गए होगे!"

कुत्तों के पीछे भागती-भागती माँ बोली, "पैनी बैक्स्टर! जोडी! उतरो, अन्दर आओ!"

जोडी ज़मीन पर कूद पड़ा। श्रीमती फौरेस्टर ने उसकी पीठ थपथपाई। जोडी को उसमें से धुएँ आदि की गन्ध आ रही थी। यह गन्ध उसे बुरी तो नहीं लगी, पर इससे उसे अचानक ही दादी हुट्टो के शरीर से आने वाली मधुर गन्ध का स्मरण हो आया। पैनी भी उतर आया। उसने पेर्क को सँभालकर पकड़ा हुआ था। फौरेस्टर बन्धु इसके चारों ओर घिर आए। बक घोड़े को घुड़साल की ओर ले गया। मिलव्हील ने जोडी को पकड़कर उछाला और अपने कन्धे तक ले जाकर फिर ज़मीन पर रख दिया मानो उसने किसी कुत्ते के बच्चे को उछाला हो।

घर की सीढ़ियों से कुछ दूर जोडी ने फौडरविंग को अपनी ओर आते देखा। उसका शरीर कुछ इस तरह टेढ़ा-मेढ़ा होता आ रहा था, जैसे कोई घायल वनमानुष हो। फौडरविंग ने दूर से ही अपनी छड़ी हिलाकर स्वागत किया। उसे मिलने के लिए जोडी दौड़ा गया। फौडरविंग का मुख चमक उठा। खुशी से उसने जोडी का नाम पुकारा।

वे कुछ क्षण आलिंगन में बँधे और आनन्द में डूबे खड़े रहे। जोडी में आनन्द की एक लहर-सी दौड़ गई, जो उसने कभी किसी और के साथ अनुभव न की थी। उसे अपने साथी का शरीर गिरगिट या अमरीकी कंगारू से अधिक विचित्र न लगा। उसने बड़ों के इस कथन पर विश्वास कर लिया कि उसका मित्र प्रतिभाहीन है। उसके मित्र का फौडरविंग नाम पड़ने का एक कारण था। कभी उसने घर के समीपवर्ती सनावर के पेड़ से पक्षियों की भाँति उड़ने की कोशिश की थी। उसने सोचा कि पक्षियों के पंखों की भाँति वह भी अपनी बग़लों में कोई हल्की-फुल्की चीज़ बाँधकर, पंख-जैसे बनाकर वैसे ही उड़ सकता है। और एक दिन उसने चारे-भूसे आदि के बण्डल अपनी बगलों में बाँधे और पेड़ पर से कूद पड़ा। भाग्य से वह बच ज़रूर गया, पर उसके जन्म से टेढ़े-मेढ़े शरीर में से कुछ हड्डियाँ

और टूट गई। यह बात जोडी को स्वयं दुहराकर देखने की ज़रूरत नहीं थी। वह उसके उदाहरण से ही समझ सकता था। उसके दिमाग में भी यह बात बहुत दिन से घूम रही थी। वह बड़ी-बड़ी पतंगों के विषय में सोचता था। उसके अन्दर ही अन्दर उस अपंग साथी की उड़ने की उमंग के प्रति एक सहानुभूति थी। वह भी उड़ान, हल्केपन और धरती पर बँधे, झुके, लड़खड़ाते शरीर से क्षणभर की मुक्ति की इच्छा रखता था।

जोडी ने उसकी पुकार का उत्तर दिया, "कहो!"

फौडरविंग ने बताया, "मेरे पास रैकून का एक बच्चा है।"

उसके पास सदा ही कोई न कोई नया पालतू जानवर होता था।

"चलो, उसे देख लें।"

फौडरविंग उसे मकान के पिछवाड़े की ओर ले गया, जहाँ उसने अपने नित्य नए पालतू पशुओं और पक्षियों के सन्दूक और पिंजरे टिका रखे थे।

फौडरविंग ने बताया, "मेरी एक चील मर गई। वह निरी जंगली थी।"

दलदली खरगोश के जोड़े को जोडी पहले ही देख चुका था।

फौडरविंग ने शिकायत के स्वर में कहा, "इनके बच्चे होते नहीं दीखते। मैं इन्हें छोड़ दूँगा।"

एक लोमड़ीनुमा गिलहरी लगातार इधर-उधर मचल रही थी।

फौडरविंग ने कहा, "मैं यह तुम्हें भेंट कर दूँगा। अपने लिए मैं कोई और देख लूँगा।"

जोडी में आशा जगी और मिट गई। बोला, "माँ मुझे कुछ नहीं रखने देंगी।"

उसे लगा जैसे उसके दिल में एक टीस उठी। यह उसी गिलहरी के लिए थी।

"यह रहा वह रैकून का बच्चा!"

लोहे की सींकों में से एक काली नाक उभरती आई। एक छोटा-सा काला पंजा किसी बच्चे के हाथ की भाँति बाहर आया। फौडरविंग ने लोहे की एक-दो सींकें हटाईं और उसे बाहर निकाल लिया। यह उसकी बाँह पर चढ़ गया और चिल्लाने लगा।

"तुम इसे पकड़ सकते हो। यह तुम्हें काटेगा नहीं।"

जोडी ने उसी दशा में उस जन्तु को थपथपाना आरम्भ किया। उसे लगा कि इतनी मुलायम और आनन्द देनेवाली चीज़ उसने इससे पहले कभी नहीं देखी। उसके सलेटी बाल इतने मुलायम थे, जैसे उसकी माता के घूमते समय के गाउन के बाल। चेहरा नुकीला था, पर दोनों आँखों के बीच एक काली पट्ट -सी पड़ी थी। बालोंभरी पूँछ बहुत सुन्दर रूप में लिपटी हुई थी। उसने जोडी के हाथ को कुछ देर चूमा-चाटा और फिर चीखने लगा।

"ओह, इसे मीठी खूराक चाहिए।" फौडरविंग ने माता के समान कहा और फिर समझाते हुए बोला, "आओ, इसे घर में ले चलें। तब तक कुत्ते बाहर हैं। वह कुत्तों से घबराता है, पर धीरे-धीरे उनका आदी हो जाएगा। इसे किसी प्रकार की गड़बड़ पसन्द नहीं।"

जोडी पूछ ही बैठा, "जब हम आए तो सबमें यह लड़ाई कैसी हो रही थी?"

फौडरविंग ने घृणा से कहा, "मैं यहाँ नहीं था। ये वे लोग ही थे।"

"फिर भी था क्या?"

"किसी एक कुत्ते ने फर्श को बीचोंबीच गीला कर दिया था। उनमें इस बात पर ही झगड़ा था कि यह कुत्ता है किसका?"

6

छोटा-सा रैकून मीठी गुत्थी को चूसने में मस्त था। जोडी की बाँहों में अपनी पीठ के बल वह लेटा हुआ था। अपनी अगली दोनों टाँगों में उसने मीठे से सना कपड़ा पकड़ा हुआ था। उसका छोटा-सा पेट पहले ही दूध से भर चुका था, इसीलिए शीघ्र ही उस मीठे सने कपड़े को छोड़कर वह छूटने के लिए छटपटाने लगा। जोडी ने उसे अपने कन्धे तक उठा लिया। वह भी जोडी के बालों को छेड़ने लगा और उसकी गर्दन और कान आदि को अपने छोटे और चंचल हाथों से सहलाने लगा।

फौडरविंग बोल उठा, "इसके हाथ कभी शान्त नहीं रहते।"

विंग के पिता अँगीठी से परे के अँधेरे में से ही बोल पड़े। जोडी को इस बात का ध्यान भी न था। वह शान्त बैठा हुआ था।

वह बोले, "जब मैं छोटा था, तब मेरे पास भी एक छोटा रैकून था। दो साल का होने तक वह नम्र बना रहा। तब एक बार उसने मेरी ठोड़ी पर काट खाया। यह भी बड़ा होकर काटने लगेगा। इसकी आदत ही यह

है।" और उन्होंने अँगीठी की ओर थूक दिया।

विग की माता उसी समय मकान में आई और अपने बर्तन-भांडों की ओर चली गई। उसके बेटे भी उसके पीछे-पीछे चलते आए। बक, मिल-व्हील, गैबी और पैक आदि सभी वहाँ जमा हो गए। जोडी इन्हें देखते ही चक्कर में आ गया। इस विशाल डील-डौल को पालने वाले माता-पिता कितने कमज़ोर और पतले-दुबले थे। लेम और गैबी को छोड़कर सभी एक से थे। गैबी कुछ अधिक छोटा और उजले रंग का था। लेम ही ऐसा था जो दाढ़ी-मूँछ साफ करके रहता था। वह भी औरों की ही भाँति लम्बा तो था, पर पतला ज़रूर था। उसका रंग औरों से कुछ कम गाढ़ा था। वह प्रायः चुप रहता था। प्रायः वह कुछ सोचते हुए अलग बैठ जाता, जब कि बक और सबसे अधिक बातून मिलव्हील शराब पीकर गप्पें लड़ाते रहते थे।

पैनी बैक्स्टर कमरे में घुसते ही उनमें खो गया। उन लड़कों का पिता रैकूनों की आदतों पर अपनी बात कहता ही रहा। उधर केवल जोडी का ही ध्यान था, पर शायद उस बूढ़े को अपने शब्दों में स्वयं ही मज़ा आ रहा था।

"यह जन्तु कुत्ते-जितना बड़ा हो जाएगा, तब यह बेड़े में आने वाले किसी भी कुत्ते पर टूट पड़ा करेगा। यह उसके जीवन की सबसे ज़रूरी-सी बात हो जाती है। यह पानी में पीठ के बल लेट जाता है। मुँह में पानी भर-कर कुत्तों पर उछालता है। कभी-कभी वह उन्हें एक-एक करके डुबकियाँ देता है और जहाँ तक काटने का सवाल है, मरने के बाद भी जैसे इसके काटने की हवस बाकी रह जाती हो।"

अब जोडी के सामने समस्या यह थी कि वह पिता की बातें सुनें या उसके बेटों की! एक ओर उसकी इच्छा थी और दूसरी ओर उसकी रुचि। उसे यह देखकर अचरज हुआ कि उसके पिता ने अब तक भी उस निकम्मे दोगले कुत्ते को बड़े प्यार से अपनी बाँहों में उठा रखा था। पैनी कमरा पार कर बूढ़े फौरेस्टर-तक आया और बोला, "कहिए, क्या हाल है, फौरेस्टर साहब? आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। आपका स्वास्थ्य कैसा है?"

"कहिए, श्रीमान् पैनी! आप अपनी सुनाइए। मैं तो ठीक हूँ और काफी चुस्त हूँ, हालाँकि मैं लगभग अपनी आयु भोग ही चुका हूँ। सच तो

यह है कि मुझे इस क्षण तक मर चुकना चाहिए था, पर मैं मौत को धकेले ही जा रहा हूँ। ऐसा लगता है, जैसे मैं यहीं पर अधिक परिचित हूँ।"

तभी श्रीमती फौरेस्टर ने कहा, "बैठो, श्रीमान् बैक्स्टर !"

पैनी ने एक स्टूल सरकाया और बैठ गया। लेम फौरेस्टर कमरे के दूसरे कोने से ही बोला, "क्या तुम्हारा कुत्ता लँगड़ा है ?"

"क्यों ? नहीं तो ! मैंने तो उसे कभी लँगड़ाते नहीं पाया। मैं तो उसे तुम्हारे इन खूनी शिकारी कुत्तों से बचाने का यत्न-भर कर रहा हूँ।"

लेम ने पूछा, "क्यों ? बहुत कीमती है ?"

"नहीं, यह तो दो कौड़ी का भी नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि जब मैं यहाँ से जाऊँ, तुम इसे यहीं रोक लोगे ? क्योंकि इसके चुराये जाने का तो खतरा है ही नहीं।"

"अरे ! तुम तो बड़ी अजीब-सी बात कर रहे हो। क्या इसके पीछे कोई कहानी है ?" सबने एक साथ पूछा।

"हो सकता है !"

"क्या तुम उसे रीछ के शिकार पर ले गए थे ?"

"हाँ ! मैं उसे ले गया था।"

लेम कुछ अधिक समीप सरक आया और गहरी साँस लेकर बोला, "क्या यह अच्छी राह खोज लेता है और क्या यह रीछ को कोने में घेर लेता है ?"

"अरे ! यह बड़ा निराशाजनक है। आज तक ऐसा बुरा कुत्ता मैंने कभी न रखा, न साथ ले गया।"

लेम बोला, "मैंने कभी नहीं देखा कि कोई मनुष्य अपने कुत्ते की इतनी निन्दा करे।"

पैनी ने कहा, "खैर ! मैं यह जानता हूँ कि वह देखने में आकर्षक है। बहुत-से आदमियों ने इसे देखकर लेना भी चाहा है। परन्तु मैं तुम्हारे मन में यह जगाना भी नहीं चाहता कि मैं इसका सौदा करना चाहता हूँ, क्योंकि वैसी हालत में तुम मूर्ख बनोगे और ठगे जाओगे।"

"लगता है, लौटते हुए तुम और शिकार की घात में हो।"

"क्यों नहीं ? हममें से सभी के दिमाग में किसी-न-किसी शिकार की

टोह रहती है।"

लेम ने टिप्पणी की, "यह बड़ी अजीब बात है कि तुम इसे सारे रास्ते लाए भी और यह तुम्हारे किसी काम भी न आएगा।"

सभी भाई एक-दूसरे की ओर देखने लगे। वे चुप थे। उन सभी की काली-काली आँखें उस कुत्ते की ओर ही लगी थीं। पैनी ने मौक़ा देखकर कहा, "एक ओर यह कुत्ता किसी काम का नहीं और दूसरी ओर भरी जाने वाली मेरी शिकारी बन्दूक बेकार है। मैं एक दुविधा में पड़ गया हूँ।"

उसकी काली-काली आँखें कमरे की दीवारों पर दौड़ गईं, जहाँ उस परिवार के हथियार लटक रहे थे। जोडी को लगा जैसे यह सजावट किसी बन्दूकों की दूकान के लिए की गई हो। फौरेस्टर परिवार घोड़ों के व्यापार, हिरण का माँस बेचने और नाजायज़ शराब बनाने के द्वारा अच्छा पैसा कमा रहा था। उन लोगों के लिए बन्दूकें खरीदना वैसा ही था, जैसे औरों के लिए आटा और कॉफी आदि खरीदना।

लेम बोला, "मैंने कभी नहीं सुना कि तुम शिकार पाने में असमर्थ रहे हो।"

"पर कल मैं असमर्थ रहा। मेरी बन्दूक पहले तो चली ही नहीं और जब चली तो पीछे की ओर।"

"तुम शिकार किस चीज़ का कर रहे थे?"

"उस बुढ़ऊ, पाँवकटे रीछ का।"

चारों ओर एक शोर-सा फूट पड़ा। सभी पूछ बैठे, "वह किस खेत पर पल रहा है? किस रास्ते से वह आया था? वह किधर गया?"

उनके पिता ने उसी समय फर्श पर अपनी छड़ी पटकी और बोला, "तुम सब चुप रहो। पैनी को बताने दो। अगर तुम सब सांडों की तरह बीच में गड़बड़ करते रहे तो वह पूरी बात न बता सकेगा।"

श्रीमती फौरेस्टर ने तभी एक बर्तन का ढक्कन बड़े ज़ोर की आवाज़ के साथ रखा और रोटियों वाले डिब्बे को उठाया। जोडी को लगा जैसे यह किसी शरबत की पतीली हो। अँगीठी से उठने वाली सुन्दर सुगन्धें सब पर हावी हो गईं।

माँ बोली, "बैक्स्टर को तब तक मत शुरू करने दो, जब तक वह कुछ

पी नहीं लेते। क्या तुम लोग सभ्यता बिलकुल भूल गए ?"

पिता भी पुत्रों की ओर देखकर बोल उठे, "अरे, तुम्हारी सभ्यता कहाँ गई कि तुममें से कोई भी उसे भोजन से पहले गला गीला करने में साथ नहीं दे रहा ?"

मिलव्हील कमरे में गया और शराब की एक बड़ी बोतल लेकर आया। उसने उसका डाट खींचा और भरकर प्याला पैनी के हाथ में दिया।

पैनी बोला, "आप मुझे क्षमा करेंगे यदि मैं अधिक न पीऊँ। क्योंकि मेरा पेट आप लोगों जितना बड़ा तो है नहीं।"

वे खूब ठहाका मारकर हँसे। तब मिलव्हील ने शराब का पात्र कमरे में बैठे सभी को दिया। उसने जोडी को भी सम्बोधित किया।

पैनी बोला, "नहीं, अभी वह इतना बड़ा नहीं हुआ।"

पिता बोल उठे, "क्यों ? मैं तो इसी पर पाला गया था।"

तब तक माँ भी बोल उठी, "ज़रा थोड़ी-सी मेरे प्याले में भी डाल दो।"

उसने बड़ी-बडी थालियों में खाना पल्टा। वह लम्बी लकड़ी की मेज़ उबली हुई चीज़ों से भर गई। सूअर के माँस के साथ उबाले हुए सूखे मटर, हिरण के भुने हुए माँस का एक भाग, तली हुई गिलहरी की तश्तरी, उबली हुई गोभी, उबली हुई मक्की, बिस्कुट, रोटी, शरबत और कॉफी आदि वहाँ लगाये गए थे। किशमिशों वाली खीर अभी अँगीठी पर ही रखी थी। पैनी की ओर होकर वह बोली, "अगर मुझे तुम्हारे आने का पता होता तो मैं कोई उचित चीज़ बनाती। ख़ैर, शुरू करो।"

जोडी ने अपने पिता की ओर देखा कि क्या वह भी इस सुगन्धित और अधिक सामान को देखकर उत्तेजित हो उठा है ? पर पैनी की सूरत गम्भीर बनी हुई थी। वह बोला, "यह सब कुछ किसी शासक के योग्य है।"

माँ को यह अच्छा नहीं लगा। वह बोली, "मैं जानती हूँ तुम लोग खाने से पहले धन्यवाद देने के आदी हो।" और तब वह अपने पति की ओर मुड़कर बोली, "क्या आपको बुरा तो नहीं लगेगा यदि आप भगवान् से हमारे लिए आशीर्वाद माँगें।"

बेचारे बूढ़े ने परेशानी में हाथ जोड़े और प्रार्थना की, "हे भगवान् ! आज

तुमने फिर एक बार हम पापी आत्माओं पर कृपा की है और हमारे पेट के लिए अच्छा भोजन दिया है। धन्यवाद !''

फौरेस्टर लोगों ने अपने गले खँखारे और भोजन पर टूट पड़े। जोडी अपने पिता के सामने तथा अपने दोस्त के माता-पिता के बीच में बैठा था। उसने देखा कि उसके सामने की तश्तरी पूरी भरी हुई है। बक और मिलव्हील ने फौडरविंग तक खाना पहुँचाया और वह चुनी-चुनी चीज़ों को मेज़ के नीचे से चुपचाप उस तक पहुँचाता रहा। बाकी भाई बड़े ध्यान से खा रहे थे और खाते समय वे शान्त थे। उनके सामने से भोजन समाप्त होता जा रहा था। अचानक लेम और गैबी में किसी बात पर बहस होने लगी। उनके पिता ने अपना कमज़ोर-सा मुक्का मेज़ पर मारा। पहले तो वे दोनों पिता की बात पर नाराज़ हुए, पर बाद में शान्त हो गए। उनका पिता पैनी के समीप झुका और बहुत हलकी आवाज़ में बोला, ''मैं जानता हूँ कि मेरे लड़के असभ्य हैं। वे समयोचित बर्ताव नहीं करते। वे अधिक शराब पी लेते हैं और लड़ना शुरू कर देते हैं। अगर कोई भी औरत, जो उनसे दूर जाना चाहती है, उसे हिरणी की तरह भागना पड़ता है। पर यह बात भी मैं कहे बिना न रहूँगा कि इन बच्चों ने आज तक कभी भी अपने माता या पिता को, इस मेज़ पर बैठकर, बुरे शब्द नहीं कहे।''

7

बूढ़े फौरेस्टर बोले, "अच्छा, भई ! अब हमें उस बेचारे रीछ की बात बताओ।"

माता ने भी हामी भरी और अपने पुत्रों से बोली, "अरे भगोड़ो ! तुम इसके रस में डूबने से पहले अपनी-अपनी तश्तरियाँ आदि साफ कर लो।"

उसके बेटे शीघ्रता में अपनी-अपनी तश्तरी और अन्य बर्तन लेते हुए उठे। जोडी उनकी ओर ताकने लगा। उसे लगा कि शायद वे इतनी ही शीघ्रता में अपने बालों में फीते बाँधने को भी तैयार हो जाते। जोडी की यह बात समझकर उनकी माता ने प्यार से उसके कान मरोड़े और अपनी आरामकुर्सी पर बैठते हुए बोली, "मेरे लड़कियाँ तो हैं नहीं; अगर ये लोग चाहते हैं कि मैं इनके लिए खाना पकाऊँ, तो इन्हें अपने बर्तन साफ़ करने के लिए तैयार रहना ही चाहिए।"

जोडी ने बड़ी दयनीय दृष्टि से अपने पिता की ओर देखा, जैसे प्रार्थना कर रहा हो कि यह बात उनके घर तक न पहुँचे। इन भाइयों ने अपना

काम जल्दी ही निवटा लिया। फौडरविंग बचे-खुचे भोजन को पशुओं के लिए इकट्ठा करके लंगड़ाता हुआ उनके पीछे उठ गया। कुत्तों को स्वयं खिलाने के बहाने ही वह अपने पालतू पशु-पक्षियों के लिए भी कुछ न कुछ बचा सकता था। आज के खाने से काफी सामान बचा था। उसे देखकर वह स्वयं मुस्करा पड़ा। शाम के लिए भी काफी ठण्डा भोजन बचा हुआ था। जोडी को इस अधिकता पर आश्चर्य ही हुआ। सब भाइयों ने अपना काम खत्म कर बर्तन-भांडे वगैरह सब ठीक-ठिकाने लटकाए और रख दिए। यह सब करके वे पैनी के पास आ गए और अपनी-अपनी कुर्सियाँ लेकर बैठ गए। कुछ ने अपने पाइप सुलगाए; और कुछ ने दबाए हुए तम्बाकू में से कुछ भाग निकालकर खाना शुरू किया। उनकी माता ने थोड़ी-सी नस्वार ली। इसी बीच बक ने पैनी की बन्दूक उठा ली और एक छोटी-सी रेती लेकर उसकी ढीली हथौड़े वाली छड़ को ठीक करना शुरू किया।

पैनी ने कहानी शुरू की, "बात यह है कि उसने हमें एकदम ही अचरज में डाल दिया।"

जोडी को कँपकँपी छूट गई।

"वह एक रात चुपचाप एक छाया की भाँति आया और हमारी गाभिन सूअरी को मार गया। उसने उसे बुरी तरह चीर डाला, पर उसमें से खाया केवल एक कौर ही। वह भूखा नहीं था, बस वह नीचता पर उतर आया था।

पैनी अपना पाइप सुलगाने के लिए कुछ देर रुका। फौरेस्टर लोग उसकी ओर और अधिक झुक गए।

"वह एक काले बादल की भाँति चुपचाप निकलकर हवा में आया। कुछ देर इधर-उधर घूमा ताकि हवा अनुकूल मिल सके और ऐसा होते ही वह इतने चुपके से घुसा कि कुत्ते भी न कुछ सुन सकें, न गन्ध पा सकें। और यह कुत्ता भी बेवकूफ़ बना।" ऐसा कहते हुए उसने उस दोगले कुत्ते की ओर इशारा किया।

उन लोगों ने परस्पर आँखों ही आँखों में जैसे कुछ बातें की। "हम नाश्ता खाते ही निकल पड़े। मैं था, जोडी था और ये तीनों कुत्ते थे। हम उस भाल के निशान खोजते हुए दक्षिणी जंगल पार कर गए। उससे भी आगे

उन जोहड़ों तक निकल गए, जहाँ कँटीली धार वाली घास उगती है। फिर हम जूनियर खाड़ी तक निकल गए। तब दलदल में से होकर जाना पड़ा। खोज में गर्मी आती जा रही थी। आखिर हमने उसे पा ही लिया।"

उत्सुकता में सब सुनने वालों ने झुककर अपने घुटने पकड़ लिए।

"आखिर हम उसे मिले—जूनियर धारा के दाएँ किनारे वाले मोड़ पर, जहाँ कि पानी बहुत ही तेज़ और गहरा होकर बहता है।"

जोडी को लगा यह कहानी वास्तविक शिकार से भी ज़्यादा रोचक है। उसे जैसे फिर से सब कुछ दीखने लगा—वे छायाएँ, वे सरू, वे टूटी हुई ताड़नुमा झाड़ियाँ और धारा का बहता हुआ पानी। कहानी की उत्तेजना से वह आपे में नहीं रहा। उसे अपने पिता पर भी अपार गर्व हो रहा था। पैनी चाहे स्वयं कुछ भी न दिखाई देता हो, पर वह उनमें से बड़े से बड़े शिकारी से भी अच्छा और सधा हुआ था। वह बात सुनाते हुए जैसे रहस्य और जादू का एक जाल-सा बुनता गया, जिसमें इतने बड़े-बड़े आदमी भी उत्सुक और सन्न-से होकर फँसते गए। उसने उस दिन की छोटी-सी लड़ाई को एक महाकाव्य का रूप दे डाला। जब उसने अपनी बन्दूक के उल्टी आग उगलने और रीछ द्वारा जूलिया की छाती पीस देने की बात सुनाई, तो गैबी ने जल्दी से तम्बाकू निगला। उसे थूकता और घुटन-सी अनुभव करता हुआ वह अँगीठी की तरफ़ दौड़ा। अन्य सभी की मुट्ठियाँ कस गईं, मुँह खुले रह गए और उत्सुकता के साथ वे अपनी कुर्सियों पर चंचल-से हो उठे। बक ने गहरी साँस लेकर कहा, "हे भगवान्! काश, मैं भी वहाँ होता।"

गैबी ने तुरन्त पूछा, "और वह रीछ गया कहाँ?"

पैनी ने उन्हें बताया, "कौन जाने?"

कुछ क्षण के लिए वहाँ चुप्पी छा गई। आखिर लेम ने शान्ति भंग की, "तुमने एक बार भी इस कुत्ते का ज़िक्र नहीं किया, जबकि तुम इसे वहाँ ले भी गए थे।"

पैनी ने कहा, "देखो, ज़बरदस्ती न करो। मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि यह किसी काम का नहीं।"

"मैं देख रहा हूँ कि यह बिलकुल साफ़-साफ़ बच आया। एक भी तो

निशान इस पर नहीं लगा।"

"हाँ, निशान तो इस पर एक भी नहीं है।"

"यह तो किसी बहुत ही चतुर कुत्ते का गुण होता है कि वह भालू से लड़े भी और उस पर एक भी निशान तक न पड़े।"

पैनी ने अपने पाइप से एक और कश खींचा। लेम उस तक उठकर आया और झुका। उसने अपनी अँगुलियों को चटखारा। वह पसीने-पसीने हो रहा था।

वह बड़ी कठिनता से बोला, "मेरी दो इच्छाएँ हैं। एक तो यह कि उस खुर्राट रीछ की मौत पर मैं भी वहाँ रहूँ और दूसरी यह कि यह कुत्ता भी वहाँ हो।"

पैनी नम्रता से बोला, "अरे भाई, नहीं! इसका सौदा करके मैं तुम्हें ठगना नहीं चाहता।"

"देखो, इस सब झूठ में कुछ नहीं धरा। तुम बोलो बदले में चाहते क्या हो?"

"इसके बदले तुम रिप का सौदा कर लो।" पैनी ने फिर सुझाया।

"लगता है तुम स्वयं लोमड़ी की तबीयत के हो। रिप से ज्यादा अच्छे कुत्ते तो मेरे पास अब भी हैं।"

लेम दीवार तक गया और खूँटी पर से एक बन्दूक उतार लाया। यह लन्दन की बनी 'फाइनट्विस्ट' नाम की दुनाली बन्दूक थी। इसकी नालियाँ चमक रही थीं और अखरोट की लकड़ी की मूँठ बड़ी गर्म और चमकदार थी। दोनों घोड़े बहुत अच्छी तरह काम कर रहे थे। हर चीज़ बहुत अच्छी धातु से बनी थी। लेम ने इसे अपने कन्धे पर लटकाया और देखा, तब उसने वह पैनी को पकड़ा दी।

"यह सीधी इंग्लैण्ड से मँगाई है। अब अलग से मसाला भरने की जरूरत नहीं। बड़ी सरलता से इकट्ठे दो कारतूस भरो और उसे बन्द करो। घोड़ा दबाते ही बम! बम!! दो गोलियाँ बज उठेंगी। इसका निशाना चील के झपाटे जितना निश्चित है।"

पैनी ने प्रतिरोध किया, "ओह, नहीं! यह बहुत महँगी है।"

"जहाँ से यह आई है, वहाँ और भी मिलती हैं। मुझ से बहस की

ज़रूरत नहीं। जब मुझे कोई कुत्ता पसन्द आता है, तब मैं उसे बेहद चाहता हूँ। या तो उसके बदले यह बन्दूक ले लो या फिर मैं उसे चुराने आऊँगा।"

पैनी ने लाचारी दिखाई, "अच्छा, फिर ठीक है। पर, इन सब गवाहों के सामने यह वायदा करो कि तुम इसे शिकार पर एक बार ले जाने के बाद मेरा कचूमर नहीं निकाल दोगे।"

"रहा वायदा। हाथ मिलाओ।" पैनी का हाथ एक भारी पंजे में कसा गया।

लेम ने कुत्ते की ओर सीटी बजाई। उसकी गर्दन के बाल पकड़कर वह उसे बाहर ले चला, मानो उसे अब भी उसके छिन जाने का भय हो।

पैनी अपनी कुर्सी पर ही अशान्त-सा होने लगा। उसने उपेक्षा से बन्दूक को अपने घुटनों पर सँभाला। जोडी की आँखें अब भी उस बन्दूक की पूर्णता और सफ़ाई पर टिकी थीं। उसे इस बात से भय सा लगा कि उसके पिता ने किसी फौरेस्टर को धोखे में हरा दिया। उसे विश्वास नहीं हुआ कि लेम अपना वायदा निभा सकेगा। उसने व्यापार में बहुत-सी उलझनें सुनी थीं, किन्तु उसे कभी नहीं सूझा था कि कभी-कभी मनुष्य बिल्कुल सच्ची बात कहकर भी दूसरे से बहुत बड़ा लाभ उठा सकता है।

बात दोपहर बाद भी चलती रही। बक ने पैनी की पुरानी बन्दूक को भी कस दिया था और उसे विश्वास था कि अब यह भी ठीक काम कर सकेगी। उन लोगों को कुछ काम न होने से जल्दी न थी। पैनी उन्हें इस खुर्राट रीछ की चतुरता बता रहा था और साथ ही उससे पहले मिले रीछों से उसकी तुलना करके उसकी श्रेष्ठता समझा रहा था। उसने हर शिकार का किस्सा पूरे विस्तार से बताया। बीस साल पहले मरे हुए कुत्तों का नाम ले-लेकर उनके कामों का वर्णन किया। फौडरविंग सुनते-सुनते उकता गया और उसकी इच्छा हुई कि जोहड़ में जाकर छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़े। किन्तु जोडी इन पुराने किस्सों को सुनने का लोभ नहीं छोड़ सकता था। दोनों बूढ़े फौरेस्टर कभी आनन्द से और कभी भय से बातें करते थे और कभी खुमारी-सी में आ जाते थे, जैसे सो रहे हों। अन्ततः उनकी कमज़ोरियाँ उन पर हावी हो गईं और वे अपनी कुर्सियों पर ही गहरी नींद सो गए। नींद में भी उनके सूखे और कमज़ोर शरीर सख्त बने हुए थे।

पैनी ने भी कमर सीधी की और उठा।

उसने कहा, "ऐसा साथ छोड़ने को मेरा जी तो नहीं चाहता।"

उत्तर आया, "तो फिर रात यहीं बिताओ। आज किसी लोमड़ी का पीछा करेंगे।"

"इसके लिए धन्यवाद। पर मैं अपने घर को बिना किसी पुरुष के अकेला नहीं छोड़ सकता।"

फौडरविंग ने उसकी बाँह पकड़कर प्रार्थना की, "जोडी को तो मेरे साथ ठहरने दीजिए। उसने तो मेरी चीजें आधी भी नहीं देखीं।"

बक ने समर्थन किया, "पैनी, बच्चे को तो छोड़ ही जाओ। मैंने कल वौलूसिया की ओर जाना है। मैं उसे तुम्हारे स्थान तक पहुँचाता हुआ निकल जाऊँगा।"

"उसकी माँ सह न सकेगी," पैनी ने उत्तर दिया।

"माँ को तो बस इतना ही आता है। क्यों, जोडी?"

जोडी की हिम्मत बँधी, "पिताजी, यहाँ रहने में मैं बहुत गर्व अनुभव करूँगा। बहुत दिन से मैं किसी से भी नहीं खेला हूँ।"

पैनी ने लाचारी देखकर कहा, "परसों से आज तक नहीं। अगर ये लोग तुम्हारा रहना पसन्द करते हैं, तो रह जाओ। लेम, अगर तुम जाँच के बाद दोगले कुत्ते से निराश हो जाओ, इस बच्चे के घर लौटने से पहले ही इसे मार न डालना।"

हँसी के मारे सब चिल्ला-से पड़े। पैनी ने पुरानी बन्दूक के साथ ही नई बन्दूक भी अपने कन्धे पर लटकाई और घोड़े की ओर बढ़ा। जोडी भी उसके पीछे-पीछे गया। उसने हाथ बढ़ाकर बन्दूक की कोमलता और चिकनाहट को परखा।

पैनी ने हौले से कहा, "अगर लेम की जगह कोई और होता तो मुझे यह बन्दूक घर ले जाते शर्म आती। मुझे तो लेम को सीधा करना था, क्योंकि उसी ने मेरा नाम बिगाड़ा था।"

"तुमने तो उसे सच-सच ही कहा।"

"मेरे शब्द तो अवश्य सीधे थे, पर मेरी नीयत ओकलावा-हा नदी के समान टेढ़ी थी।"

"जब उसे सच्चाई का पता चलेगा तो वह क्या करेगा ?"

"पहले तो उसकी इच्छा होगी कि मुझे चीर डाले, पर मुझे आशा है कि बाद में वह हँस पड़ेगा।"

"अच्छा, तो मैं चला। कल मिलेंगे। ज़रा ठीक से रहना।"

वे सब भाई उसे कुछ दूर तक छोड़ने गए। जोडी ने भी हाथ हिलाकर विदा किया। उसे आज एक नया ही अकेलापन अनुभव हुआ। उसकी इच्छा हुई कि वह पिता को वापिस बुला ले, या फिर उसके पीछे दौड़कर घोड़े पर चढ़ जाय और ज़ीन पर बैठकर उसके साथ ही अपने घर और खेतों की सुरक्षा में लौट चले। इतने में विंग पीछे से बोल पड़ा, "अरे ! यह रैकून जोहड़ में मछलियाँ मार रहा है। जोडी ! आओ, देखो।"

सुनते ही जोडी रैकून को देखने दौड़ पड़ा। वह एक छोटे-से जोहड़ में चल-फिर रहा था। अपने हाथों से वह कुछ टटोलता-सा चलता था। जोडी साँझ तक विंग और उस जन्तु के साथ खेलता रहा। उसने गिलहरियों के पिंजरे को साफ़ करने में सहायता दी और अपंग लाल पक्षी के लिए पिंजरा तैयार किया। बाकी भाइयों के खिलाड़ी मुर्गे वास्तव में जंगली थे। मुर्गियाँ भी पास के जंगल में इधर-उधर अण्डे दे देती थीं—कभी किसी झाड़ी में, कभी किसी में। इससे साँपों की बन आती थी। वे सभी अण्डे साफ़ कर देते थे। जोडी ने विंग के साथ जाकर अण्डों को बटोर लिया। एक मुर्गी आराम कर रही थी। विंग ने उसे वे सारे अण्डे दे दिए। कुल अण्डे पन्द्रह थे। उसने बताया कि वह एक अच्छी माता थी। जोडी को लगा कि जैसे इन सब मामलों पर उसी का अधिकार था।

जोडी के दिल में एक बार फिर उमंग जगी कि कुछ उसका भी अपना हो। विंग उसे लोमड़ीनुमा गिलहरी तो देगा ही, शायद यह छोटा रैकून भी दे दे। पर उसे यह भी अनुभव था कि कम-से-कम अगले महीने तक उसे खाने-पीने के मामले में माँ का बोझ बढ़ाना न चाहिए। फौडरविंग मुर्गी से कहने लगा, "सुनती हो ? अब घोंसले में ही रहना, तुम्हें इन सब अण्डों को बच्चे होने तक सेना है। इस बार मुझे पीले बच्चे चाहिएँ। काला एक भी न हो।"

तब वे घर की ओर घूम पड़े। पीछे से रैकून भी दौड़ता-दौड़ता उनसे

ग्रा मिला। वह विंग के मुड़े हुए पाँवों के सहारे से पीठ से होता हुग्रा सिर तक चढ़ गया ग्रौर उसकी गर्दन पकड़कर चिपट गया। उसने ग्रपने ग्रगले उजले दाँतों से उसकी त्वचा कुरेदनी ग्रारम्भ की ग्रौर गुस्सा-सा दिखाते हुए सिर हिलाने लगा। जोडी ने उसे उठा लिया। विंग ने उसे घर तक ले जाने दिया। जन्तु पहले उसे ग्रजनबी जानकर उसकी ग्रोर ग्रपनी चमकीली ग्राँखों से देखता रहा, फिर धीरे-धीरे उससे हिल गया। शेष फौरेस्टर बन्धु लम्बे-लम्बे डग भरते हुए ग्राराम से ग्रपने-ग्रपने नियत काम करने के लिए ग्रपनी ज़मीन पर इधर-उधर फैल गए। बक ग्रौर ग्रार्क गायों ग्रौर बछड़ों को खदेड़कर पानी पिलाने के लिए जोहड़ तक ले गए। मिलव्हील घुड़साल में घोड़ों को दाना देने चला गया। पेर्क ग्रौर लेम उत्तर की ग्रोर घने जंगल में निकल गए जोडी ने सोचा शायद वे ग्रपनी शराब की भट्ठी की ग्रोर निकल गए हैं। यहाँ उग्रता ग्रवश्य थी, पर हर बात में ग्राराम ग्रौर ग्रधिकता भी थी। काम करने के लिए बहुत से लोग उपस्थित थे, जबकि पैनी ग्रकेला ही लगभग इतने ही बड़े खेत का काम निबटाता था। ग्रब जोडी को ग्रपना ग्रपराध ग्रनुभव हुग्रा कि ग्रनाज की निलाई का ग्रपना काम ग्रब भी वह ग्रधूरा छोड़ ग्राया था। उसे पता था कि पैनी उस काम को भी बिना कुछ खयाल किए पूरा कर देगा।

बूढ़े माता-पिता ग्रब भी ग्रपनी कुर्सियों में ही सो रहे थे। पश्चिम में सूर्य की लाली फैल गई थी। धीरे-धीरे कमरे में ग्रन्धकार छा गया। जो प्रकाश ग्रा भी सकता था, सनावरों ने उसे भी रोक दिया। बैक्स्टर परिवार के घर में इस समय भी यह प्रकाश ग्रा सकता था। धीरे-धीरे सब भाई कमरे में इकट्ठे होते गए। फौडरविंग ने ग्रँगीठी में ग्राग सुलगाई ताकि बची हुई कॉफी गर्म की जाय। जोडी ने देखा कि उनकी माँ ने एक ग्राँख खोली ग्रौर फिर बन्द कर ली। शेष भाइयों ने बासी खाना ठण्डा ही मेज़ पर इस ज़ोर से रखना शुरू किया कि यदि दिन में उल्लू यह शोर सुन लेता तो उसकी भी नींद गायब हो जाती। माँ की नींद खुली। उसने पति को भी चुटकी लेकर उठाया ग्रौर वे दोनों सबके साथ खाने में जुट पड़े। इस समय उन्होंने सारा भोजन साफ़ कर दिया। कुत्तों तक के लिए कुछ बचा नहीं रह गया। फौडरविंग ने ठण्डी रोटियों का डिब्बा ग्रौर दाल की बाल्टी उठाई ग्रौर

उनके लिए ले गया। वह बेचारा लड़खड़ाता चल रहा था। बाल्टी भी हिल-डुल रही थी। जोडी उसकी सहायता को दौड़ा।

भोजन के बाद परिवार के लोग तम्बाकू पीने लगे और घोड़ों के सम्बन्ध में बातें करने लगे। उस इलाके और उससे पश्चिम की ओर के पशुओं के व्यापारी इस बार घोड़ों की कमी की चर्चा करते थे। घोड़ों के नये उत्पन्न बच्चों को भेड़िये, रीछ और बाघ समाप्त करने पर तुले हुए थे। केण्टुकी से आने वाले घोड़े-व्यापारी भी अपने पशु लेकर नहीं पहुँचे थे। सब भाई उस बात पर सहमत थे कि उत्तर व पश्चिम की ओर जाकर अपने घोड़े व खच्चर निकालने का यही सबसे अच्छा अवसर था। जोडी और विंग को इस बात में रस नहीं आ रहा था, इसलिए वे एक कोने में सरककर अपनी ही चाकुओं की खेल में उलझ गए। माँ यह नहीं सह सकती थी कि खेल खेल में भी चाकू फर्श पर लगें, हालाँकि दो-चार छिलके इधर-उधर से उतर जाने से वहाँ कोई विशेष अन्तर पड़ने वाला न था। खेल से अलग होकर जोडी ने कमर सीधी की और बोला, "मैं एक ऐसी बात जानता हूँ, जो तुम्हें नहीं पता।"

"क्या ?"

"यही कि कभी स्पेनी लोग इसी राह से, हमारे दरवाज़े के रास्ते से, गुज़रे थे।"

फौडरविंग उत्तेजित होकर पास सरकता हुआ बोला, "क्यों ? मैं जानता था। उन्हें मैंने देखा भी है।"

जोडी आश्चर्य में डूबा-सा उसकी ओर ताकने लगा। बोला, "तुम उन्हें देख ही नहीं सकते। उसमें से कोई यहाँ बचा ही नहीं। वे भी आदि-वासी इण्डियन लोगों की तरह इस जगह से चले गए हैं।"

विंग ने बुद्धिमत्ता से एक आँख मींचकर कहा, "लोग यही बात आम तौर पर कहते हैं। ज़रा, इधर सुनो ! तुम्हारी ज़मीन के सोते के पश्चिम की ओर डौगवुड के पेड़ों से घिरा मैग्नोलिया का बड़ा पेड़ है। जब तुम कभी उधर जाओ, तो ध्यान से उस पेड़ के पीछे देखना। वहाँ से सदा एक स्पेनी काले घोड़े पर सवार होकर गुज़रा करता है।"

जोडी के रोंगटे खड़े हो गए। निःसन्देह फौडरविंग की यह एक और

गप्प थी। यही कारण था कि उसके माता-पिता विंग को सनकी कहा करते थे। फिर भी उसकी इच्छा हुई कि वह विंग की इस बात पर भरोसा कर ले। इसमें उसे कुछ बुरा न लगा कि वह एक बार मैग्नोलिया के पीछे झाँक ले।

शेष लोगों ने अपने पाइप उलटाये या तम्बाकू थूका! वे अपने-अपने सोने के कमरों में गए और कपड़े उतारने लगे। उनमें से हरेक का बिस्तर अलग था, क्योंकि कोई भी दो किसी भी दोहरे बिस्तर पर इकट्ठे नहीं सो सकते थे। फौडरविंग जोडी को रसोई के बाहर बरामदे के बने कमरे में बिछे अपने बिस्तर पर ले गया।

वह बोला, "तुम तकिया ले सकते हो।"

जोडी को भरोसा था कि विंग की माता उसे सोने से पहले पैर धोने के लिए नहीं कहेगी। वह देख रहा था कि वे सब कितनी स्वतन्त्रता के साथ रह रहे थे। बिस्तर पर लेटने से पूर्व किसी ने भी पाँव नहीं धोए। उधर विंग ने एक बड़ी गप्प हाँकनी शुरू की। वह बताने लगा कि जहाँ संसार खतम होता है वह कैसी जगह है? उसने बताया कि वह शून्य और अंधेरी जगह है और वहाँ सवारी के लिए बादल ही होते हैं। पहले तो जोडी चाव से सुनता रहा पर बाद में उसे यह कथा नीरस लगने लगी। धीरे-धीरे उसे नींद ने आ घेरा और वह घोड़ों के बदले बादलों पर सवार स्पेनियों के स्वप्न देखने लगा।

बहुत रात गए, उसकी नींद अचानक ही खुल गई। घर-भर में एक अजीब शोर भर गया था। पहले तो उसने सोचा कि शायद वे भाई आपस में फिर लड़ पड़े हैं, परन्तु बाद में उसे लगा कि उन सबकी आवाज़ों का लक्ष्य एक ही है और उनकी माता उन्हें उत्साह दे रही है। तभी ज़ोर से दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई और कमरा एक साथ ही अनेक कुत्तों की आवाज़ों से भर उठा। तभी फौडरविंग के कमरे के दरवाज़े पर रोशनी चमकी और एक साथ ही सब उसमें घुस आए। पुरुष एकदम नंगे थे और वे पतले और हलके दिखाई दे रहे थे, हालाँकि उनकी ऊँचाई कमरे जितनी ही थी। माँ ने चर्बी की बनी मोमबत्ती हाथ में थामी हुई थी। उसका टिड्डी-

सा पतला और हल्का-फुल्का शरीर मखमली गाउन के नीचे छिप गया था। कुत्ते कभी चारपाई के नीचे और कभी बाहर भौंक रहे थे। किसी ने भी न बताया कि गड़बड़ है क्या? लड़के कुत्तों के पीछे-पीछे ही निकल भागे। यह शिकार हर कमरे में से होता हुआ अन्त में एक खिड़की में लटकती हुई फटी मच्छरदानी में से कुत्तों के बाहर निकल भागने पर समाप्त हुआ।

माँ एकदम ही शान्त होती हुई बोली, "ये उस शैतान खेती उजाड़ने वाले जानवर को बाहर खोज लेंगे।"

फौडरविंग बड़े गर्व से बोला, "उजाड़ू जानवरों के लिए माँ के कान बहुत तेज़ हैं।"

माँ ने कहा, "मेरा तो अनुमान है कि जिसके बिस्तर के भी पास से वह गुज़रेगा, वही उसकी आवाज़ से पहचान लेगा।"

तब तक अपनी छड़ी टेकता हुआ उनका पिता भी कमरे में आ पहुँचा और बोला, "रात तो लगभग बीत चुकी है। फिर से सोने के स्थान पर मैं तो थोड़ी शराब लेना अधिक पसन्द करूँगा।"

बक ने कहा, "पिताजी! इस तरह के भयानक पशु-पक्षियों के लिए आपकी पहचान बड़ी तेज़ है।"

तब रसोई की मेज़ तक जाकर वह शराब की बड़ी बोतल ले आया। उसके बूढ़े पिता ने उसकी डाट खोलकर कुछ उँडेली और पी गया।

लेम बोल उठा, "यह मत सोचना कि और किसी को इसकी चाह नहीं होती। इधर भी लाओ!"

उसने एक बड़ा प्याला भरा और बोतल को आगे सरका दिया। अपना मुख पोंछकर उसने नंगे पेट पर हाथ फेरा। वह दीवार की ओर जाकर अपनी वीणा बजाने के लिए जगह बनाने लगा। पहले उसने लापरवाही में कुछ तारें छेड़ीं, किन्तु थोड़ी ही देर में वह बैठकर एक धुन बजाने लगा।

आर्क ने कहा, "भाई, तुम्हें अकेले ही यह अधिकार नहीं," और वह भी अपनी गिटार लाकर उसकी बगल में ही बेंच पर बैठ गया।

माँ ने जलती हुई बत्ती मेज़ पर टिकाकर लड़कों से पूछा, "क्यों?

क्या तुमने सवेरे तक इसी तरह नंगे बैठे रहने का सोच रखा है ?"

आर्क और लेम अपने बाजों की मस्ती में डूबे हुए थे। उनमें से किसी ने भी माँ की बात का उत्तर न दिया। बक ने अपना मुँह का बाजा निकाला और बजाना शुरू किया। उन दोनों का भी उधर ध्यान खिंचा और कुछ देर रुककर उन्होंने भी उसकी धुन में ही साथ देना शुरू कर दिया।

पिता प्रसन्न होकर बोले, "शाबाश ! बजाते रहो ! बहुत सुन्दर है।"

शराब की बोतल फिर एक बार घूम गई। पैंक ने अपनी वीणा और मिलव्हील ने अपना ढोल निकाल लिया। बक ने अपने सीधे से राग की जगह नृत्य की धुन बजानी शुरू कर दी। अब तक का वह शान्त संगीत एकदम अपने पूर्ण उभार पर आ गया। जोडी और विंग भी लेम और आर्क के बीच में फर्श पर आ बैठे।

माँ बोल पड़ी, "अब यह मत सोचना कि मैं जाकर सो जाऊँ और इस आनन्द को खो दूँ।"

उसने भट्ठी में आग धधकाई और एक मोटी-सी लकड़ी उसमें डालकर कॉफी का बर्तन चढ़ा दिया। वह बोली, "अरे, शोर करने वालो! तुम अपना नाश्ता आज जल्दी ही करोगे या कुछ देर बाद ?" तब उसने जोडी की तरफ पलक मारते हुए कहा, "क्यों न एक तीर से दो शिकार मारे जायँ, यह आनन्द भी उठाया जाय और नाश्ते से भी निबट लिया जाय ?"

जोडी ने भी इशारे से ही स्वीकृति दी। उसे अपने अन्दर कुछ बल, आनन्द और उत्साह-सा अनुभव हुआ। वह नहीं समझ सका कि उसकी माँ ऐसे मौजी लोगों को पसन्द क्यों नहीं करती ?

संगीत लय से बाहर था और खूब धूम-धड़ाके से हो रहा था। ऐसा लगता था जैसे जंगल के सभी वनबिलाव इकट्ठे हो गए हों। परन्तु फिर भी इसकी ताल और लय ने कानों और आत्मा को एक सन्तोष-सा प्रदान किया। जोडी को लगा जैसे उसके अन्दर की तारें हिल उठी हों और लेम अपनी अँगुलियाँ उस वीणा पर ही बजा रहा हो।

लेम ने बहुत धीमी आवाज़ में उसे कहा, "काश ! मेरी प्रेमिका भी यहाँ होती और वह भी नाचती और गाती।"

जोडी पूछ बैठा, "आखिर तुम्हारी प्रेमिका कौन है ?"

"वही मेरी छोटी-सी ट्विंक, वैदरबी।"

"अरे ! वह तो ओलिवर हुट्टी की प्रेमिका है।" जोडी के मुँह से निकल गया।

लेम ने अचानक ही अपनी वीणा उठाई। जोडी को लगा जैसे वह उसे ही मारना चाहता है, पर तभी उसने फिर वीणा पर खेलना शुरू कर दिया। अब उसकी आँखें गुस्से से जल रही थीं। बोला, "देखो, अगर अब कभी दुबारा यह बात तुमने अपने मुँह से निकाली, तो तुम्हारी जीभ काट लूँगा। समझे !"

"समझ गया। शायद मेरे समझने में कुछ ग़लती हो गई थी।" जोडी ने कहा।

"नहीं, मैंने तो तुम्हें यूँ ही कह दिया है।"

जोडी का मन कुछ देर के लिए बैठ गया और उसे लगा कि जैसे ओलिवर के प्रति वह विश्वास का पात्र नहीं रहा। पर कुछ देर बाद संगीत उसे फिर ले उड़ा। जैसे हवा का झोंका उसे पेड़ों से भी ऊँचा उड़ा ले गया हो। सब भाई नृत्य की तानों से फिर गीतों पर लौट आए और उनके माता-पिता ने भी इस बार अपनी काँपती और कमज़ोर आवाज़ों से उनका साथ दिया। दिन निकल आया और मचलते पक्षी पास के सनावर वृक्षों पर इतने स्पष्ट और ऊँचे सुरों में गा उठे कि सबने सुन लिया। उन्होंने अपने बाजे रख दिए और कमरे से ही उषा को देखने लगे।

नाश्ता मेज़ पर लगा दिया गया। प्रतिदिन की अपेक्षा यह बहुत थोड़ा था। माँ उस नाच-गाने में इतनी उलझ गई थी कि उसे बहुत कुछ पकाने का अवसर ही नहीं रहा। पुरुषों ने फिर से पाज़ामे पहन लिए, क्योंकि खाना तैयार था और उसकी सुगन्ध उन्हें आने लगी थी। नाश्ते के बाद उन्होंने अपने मुँह धोए और कमीज़ें तथा जूते आदि पहनकर अपने-अपने काम पर निकल पड़े। बक ने अपने चितकबरे घोड़े पर ज़ीन कसी और जोड़ी को उछालकर अपने पीछे बिठा लिया। जोडी को ज़रा पीछे सरककर बैठना पड़ा, क्योंकि ज़ीन पर एक इंच भी जगह न बची थी।

फौडरविंग उसे विदा करने के लिए खेत की मेंड़ तक गया। उसके कन्धे पर रैकून अब भी सवार था। जब तक वे आँख से ओझल न हो गए, वह विदाई के लिए अपनी छड़ी हिलाता रहा। जोडी बक के साथ ही अपने घर तक लौट आया और उसके विदा होने पर उसकी ओर कृतज्ञता से हाथ हिलाता रहा। वह अब भी एक नशे में था। जब उसने चीनी बेरी के नीचे के दरवाज़े को खोला, तब उसे याद आया कि वह मैग्नोलिया वृक्ष के पीछे घुड़सवार स्पेनी को देखना तो भूल ही गया।

8

जोडी ने घुसते हुए पीछे का दरवाज़ा ज़ोर से बन्द किया। भुनते हुए माँस की परिचित गन्ध चारों ओर फैल गई थी। वह पीछे से घूम-कर घर की ओर दौड़ा। उसमें नाराज़गी और उत्सुकता मिली-जुली थी। रसोई का दरवाज़ा खुला हुआ था। अपने को उधर से रोककर वह पिता के पास सीधा दौड़ा गया। वह भी पीछे के धुएँ वाली कोठरी से निकला और उसने जोडी का स्वागत किया।

एक साथ दर्द और खुशी देने वाली सचाई उसके सामने थी। एक बड़े से हिरण की खाल उसी कमरे के फर्श पर बिछी हुई थी। जोडी ने शिकायत के स्वर में कहा, "आप शिकार करते रहे और मेरी प्रतीक्षा भी नहीं की।" और तब पाँव पटककर कहा, "आज से मैं कभी भी आपको अपने को साथ लिए बिना न जाने दूँगा।"

"शान्त हो, प्यारे बेटे! पहले सुन तो लो। इसमें तुम्हें गर्व ही होना चाहिए कि कभी-कभी एकदम ही बहुत अधिक चीजें कैसे मिल जाती हैं?"

उसका गुस्सा ठण्डा हो गया और उत्सुकता एक सोते की भाँति फट पड़ी। वह पूछ बैठा, "मुझे जल्दी बताइए, कैसे हुआ?"

पैनी एड़ियों के बल ही रेत में बैठ गया। जोडी उसके पास ही घुटने के बल ही बैठ गया।

"एक हिरण था। मैं तो उसे कुचलने ही लगा था।"

जोडी का क्रोध फिर उमड़ आया। बोला, "आपने मेरे घर लौटने तक प्रतीक्षा क्यों न की?"

"क्या तुम्हें वहाँ आनन्द नहीं आया? आखिर तुम्हें सभी आनन्द एक साथ तो मिल नहीं सकते!"

"पर यह तो कुछ टाला जा सकता था। उनके पास तो कभी भी समय नहीं होता। यह सब बहुत जल्दी-जल्दी हुआ।"

पैनी हँस पड़ा। बोला, "खैर! न तो तुम ही, न मैं, और न कोई और कभी भी ऐसी घटना को होने से रोक सकते हैं।"

"क्या यह हिरण दौड़ रहा था?"

"जोडी, मैं सच बताता हूँ, मैंने जीवन में कभी शिकार को इस तरह रास्ते में खड़ा होकर प्रतीक्षा करते नहीं पाया। यह हिरण रास्ते के बीचों-बीच खड़ा था। इसने घोड़े की ओर ध्यान ही नहीं दिया। खड़ा ही रहा। मुझे पहले तो यही खयाल आया कि मेरी नई बन्दूक में गोली नहीं है और यह शिकार हाथ से यों ही निकल जाएगा। परन्तु ज्यों ही इसे खोला और झुकाकर देखा, परमात्मा की कृपा से, मैं देखकर हैरान रह गया कि उन्होंने यह बन्दूक पूरी भरी हुई दी थी। बन्दूक में दो कारतूस थे और सामने खड़ा था यह हिरण, जैसे मेरी प्रतीक्षा कर रहा हो। मैंने गोली दागी और वह गिर पड़ा। ठीक सड़क में बीचोंबीच, जैसे पके-पकाए भोजन का कोई थैला हो। मैंने इसे सीज़र की पीठ पर लाद लिया और हम चले आए। अब तुम ही बताओ मुझ पर क्या बीती होगी? मैं सोचने लगा, 'मैं यह हिरण का माँस ले जा रहा हूँ। जोडी की माँ कहीं मुझे उसे फौडरविंग के साथ छोड़ आने के लिए कुछ कह न बैठे।"

"तब जब उसने तुम्हें नई बन्दूक और माँस के साथ देखा तो क्या बोली?"

वह बोली, "अगर तुम-जैसे ईमानदार मूर्ख की जगह कोई और होता तो मैं यही सोचती कि वह चोरी करके लाया है।"

वे दोनों मिलकर हँसने लगे। रसोई से आने वाली सुगन्ध मस्ती-भरी थी। फौरेस्टर परिवार के साथ बिताया समय जोडी को भूल गया। दिन के खाने को छोड़कर और कोई सचाई सामने न थी। जोडी रसोई में घुसा।

"नमस्कार, माँ ! मैं घर वापस आ गया हूँ।"

"तो, क्या मैं हँसू या रोऊँ ?"

उसका भारी शरीर अँगीठी पर झुका हुआ था। गर्मी काफी थी और पसीना उसके बदन से बह रहा था।

"पिताजी कोई शिकार मारकर लाए हैं, क्यों माँ ?"

"हाँ ! और यह अच्छा ही है कि तुम सारे समय बाहर ही रहे।"

"माँ !..."

"क्या है ?"

"क्या हमें आज हिरण का माँस खाने को नहीं मिलेगा ?"

"अरे भागवान ! क्या तुम्हें पेट को छोड़कर और कोई बात नहीं सूझती ?"

जोडी ने अपना हथियार बरता, "तुम हिरण का माँस बहुत अच्छा पकाती हो, माँ !"

वह नरम पड़ गई। बोली, "हम इसे आज ही खाएँगे। मुझे यह डर था कि इस गर्म मौसम में रखा नहीं जा सकेगा।"

"जिगर तो इसका अब भी रखा नहीं जा सकता।"

"खैर, यह बड़े शोक की बात है कि हम सारा एक साथ तो खा नहीं सकते। अगर तुमने मेरा लकड़ियों का डिब्बा भर दिया, तो सम्भव है रात को इसका जिगर ही खा लेंगे।"

वह तश्तरियाँ टटोलने लगा। माँ खीझ पड़ी, "निकल जाओ रसोई से ! क्या तुमने मुझे दुखी करके मारने की सोच रखी है ? तुम भोजन में क्या खाओगे ?"

जोडी बोल उठा, "लाओ, मैं पका दूँ।"

"हाँ, तुम और तुम्हारे कुत्ते !"

जोडी रसोई से निकलकर पिता की ओर भागा। उसने जाकर जूलिया का समाचार पूछा। उसे लगा जैसे वह सप्ताह-भर बाहर रहकर आया हो।

पैनी ने बताया, "ठीक हो रही है। एक महीना लगेगा और तब वह उस खुर्राट रीछ को धर पकड़ेगी।"

"क्या फौरेस्टर लोग उसके शिकार में हमारी सहायता करने की सोच रहे हैं?"

"नहीं, ऐसा कोई समझौता नहीं हुआ। मैं यह ज़्यादा अच्छा समझूँगा कि वे अपने तरीके से शिकार करें और मुझे अपने तरीके के लिए छुट्टी है। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि उसे कौन पा लेता है? बस एक ही इच्छा है कि वह हमारे पशुओं से दूर ही रहे।"

"पिताजी! मैंने आपको कभी बताया नहीं! मैं तो घबरा गया था जब कुत्ते उससे लड़ रहे थे। मैं इतना घबरा गया था कि दौड़ भी न सका।"

"मुझे भी बहुत दुख हुआ, जब मैंने देखा कि मेरे पास अच्छी बन्दूक नहीं है।"

"पर आपने उनके सामने तो यही रौब रखा कि हमारे दिल बहुत बड़े हैं।"

"पर, बेटे! इसके बिना कहानी भी तो नहीं बनती।"

जोडी ने हिरण की खाल देखी। यह काफ़ी अच्छी और बड़ी थी। उसे शिकार में पशु के दो भिन्न रूप सामने आते दिखाई दिए। पहला, उसका पीछा करते समय जिसमें उत्सुकता मिली होती थी। वह इसे गिरता भी देखना चाहता था। दूसरा, मरने के बाद, जब उसमें से खून बह रहा हो। ऐसा रूप देखते ही उसका जी घबराने लगता और वह शोक में डूब जाता। किसी की दुखपूर्ण मृत्यु पर उसके दिल में टीस उठती। परन्तु, उसके टुकड़े काटकर सुखाने, पकाने, भूनने, उबालने या तलने पर, उसके लिए, यह केवल माँस रह जाता—सूअर के माँस की तरह! ऐसे माँस के लिए उसकी लार हमेशा ही टपकती रहती थी। वह आश्चर्य में पड़ जाता कि किस तरीके से यह परिवर्तन हुआ कि जो चीज़ अभी कुछ देर पहले उसका जी घबरा देने का कारण बनी थी, वही अब उसे भूख से पागल कर रही है।

उसे लगा कि या तो ये ही जानवर थे, या फिर वही दो लड़कों के रूप में था।

खालों में कोई परिवर्तन नहीं आता। वे जैसे सदा ताज़ा रहती हैं। अपने बिस्तरे के नीचे पड़ी हिरण की खाल पर जब भी वह पाँव रखता, उसे लगता जैसे वह अभी ज़िन्दा होकर चल पड़ेगी। छोटे शरीर का होने पर भी पैनी की छाती पर हलके-हलके बाल उग आए थे। उसकी पत्नी का कहना था कि पैनी अपने लड़कपन में सर्दियों में भी नंगे बदन रीछ की खाल ओढ़कर सोता था। खाल का बालों वाला हिस्सा उसके शरीर से छूने के कारण ही उसकी छाती पर बाल उग आए थे। माँ की इस मज़ाक पर जोडी ने सहज विश्वास कर लिया।

फौरेस्टर परिवार के खेतों की भाँति ही यहाँ के खेत भी भरे हुए थे। उसकी माँ ने सूअरी के माँस को पीसकर कीमा तैयार कर लिया था। शेष माँस मसाला भरकर और लपेटकर धुएँ वाली कोठरी में लटका दिया था। अखरोट की लकड़ी का हलका-हलका धुआँ उनके नीचे उठ रहा था। पैनी अपना काम छोड़कर लकड़ी के कुछ टुकड़े लाने गया ताकि सुलगती हुई उस लकड़ी पर उन्हें डाला जा सके।

जोडी ने पूछा, "मैं लकड़ियाँ काट लूँ, या अनाज की निलाई पूरी कर लूँ?"

"जोडी, तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं अनाज को यूँ ही नहीं छोड़ सकता था। इस तरह बेकार की घास-फूस बढ़कर उसे बिगाड़ देती। इसी लिए मैं उसे निला चुका हूँ। अब तुम लकड़ियाँ काट लो।"

इस समय उसे लकड़ियाँ काटने जाना बहुत अच्छा लगा, क्योंकि यदि वह अपने को उलझाए न रखता तो भूख उसे कुत्तों के लिए सुखाया गया मगरमच्छ का माँस खाने पर विवश कर देती, या फिर वह मुर्गियों के चूज़ों के भोजन में से रोटी उठाने पर विवश हो जाता। शुरू में समय बड़ा धीमे-धीमे बीत रहा था। उसके अन्दर पिता की हर हरकत का अनुकरण करने की इच्छा बल पकड़ती जा रही थी। तब पैनी एकाएक खच्चरों में घुस गया और जोडी भी बिना ध्यान इधर-उधर किए लकड़ी काटने लगा। वह एक गठरी भर लकड़ी माँ के पास ले चला, ताकि इस बहाने से देख सके

कि भोजन में कितनी देर है। उसने जाकर देखा और प्रसन्न हुआ कि यह मेज़ पर लगाया जा चुका था। अब माँ कॉफी डाल रही थी।

वह देखते ही बोली, "अपने पिता को बुलाओ और इन मैले हाथों को धो डालो। मुझे पूरा विश्वास है कि घर से जाने के बाद से तुमने अब तक पानी नहीं छुआ।"

तब पैनी भी आ गया। हिरण का पका माँस मेज़ के बीचोंबीच पड़ा था। उसने अपना तेज़ चाकू उठाया और मस्ती में माँस पर चलाने लगा।

जोडी बोल उठा, "मुझे बहुत भूख लगी है। मेरा पेट सोच रहा है कि मेरा गला ही कट चुका है।"

पैनी ने चाकू नीचे रख दिया और उसकी ओर देखने लगा।

माँ बोल उठी, "क्या तुम्हें कोई और अच्छी बात कहने को नहीं रही? यह सब तुमने कहाँ से सीखा?"

"क्यों? फौरेस्टर लोग इसी तरह बात करते हैं।"

"मुझे पता है। ये ही बातें हैं जो तुम उन नीच दुष्टों से सीखते हो।"

"माँ! वे नीच नहीं हैं।"

"उनमें से हर कोई खटमल से भी नीच है और सभी दिल के काले हैं।"

"नहीं, माँ! उनका दिल भी काला नहीं है। वे बड़े मित्रतापूर्ण हैं। वे वीणा बजाते हैं, नाचते और गाते हैं। और यह सब वे पेशेवर वीणा बजाने वालों से अधिक अच्छी तरह करते हैं। हम पौ फटने से काफी पहले से ही उठकर गाते और खुशियाँ मनाते रहे। सचमुच यह सब बहुत ही अच्छा था।"

"यह सब ठीक है, यदि उनके पास करने को और कुछ अच्छा काम नहीं है।"

तश्तरियों में ऊपर तक भरा हुआ माँस सामने पड़ा था। सब उस पर टूट पड़े।

9

रात को हल्की-सी वर्षा हुई। अगली सुबह उजली और साफ़ थी। नया अनाज अपने नुकीले पत्तों के साथ ऊपर उठ आया था। सामने के खेत में मटर भी फूटने लगे थे। भूरी-सी ज़मीन पर गन्ने के नुकीले पत्ते हरियाली की नुकीली सुइयाँ-सी लेकर उठ रहे थे। जोडी को यह सब देखकर अजीब-सा लगा। उसे लगा कि जब-जब भी बाहर से लौटने पर उसने खेतों पर नज़र डाली है, उसे सदा ही ऐसी नई चीज़ें दिखाई देती रही हैं, जिनकी ओर उसका ध्यान पहले न गया हो। फौरेस्टरों के यहाँ जाने से पहले उसका ध्यान शहतूत की ओर गया भी न था, किन्तु अब उसने देखा कि उसकी शाखों पर शहतूतों के फूलों के गुच्छे लदे हुए थे। एक विशेष प्रकार के अंगूरों की बेल भी सुन्दर नमूना-सा बनाती हुई फूल उठी थी। उसके हलके शहद को चूसने के लिए सुनहरी जंगली मधुमक्खियाँ अपना सिर गड़ाये हुए थीं।

पिछले दो दिन से वह इतना भारी और भरकर खाना खा रहा था कि आज उसे भूख न थी। बल्कि, वह कुछ सुस्ती-सी भी अनुभव कर रहा

था। उसका पिता नित्य की भाँति उससे पहले ही उठकर काम पर लग चुका था। नाश्ता मेज़ पर लग चुका था और उसकी माँ धुएँ वाली कोठरी में कीमे आदि को देख रही थी। लकड़ी वाला डिब्बा खाली ही था, पर जोडी इसे भरने में सुस्ती कर रहा था। वह काम तो करना चाहता था, पर कोई सरल-सा और धीरे-धीरे। उसने मस्ती-भरे दो चक्करों के बाद इस डिब्बे को भरा। उधर जूलिया लंगड़ाती हुई पैनी को खोज रही थी। जोडी ने झुककर उसके सिर को थपकाया। ऐसा लगता था कि जैसे वह भी उस खुशहाली की भावना से भरी हुई हो, जो इस समय उस सारे वातावरण में छा रही थी। या फिर वह शायद समझ चुकी थी कि अबकी बार उसे फिर से दलदल, जंगल और हरियाली में दौड़ते फिरने के लिए एक लम्बी आयु मिल गई है। उसके थपथपाने से खुश होकर उसने अपनी पूँछ उठाई और प्यार से सहलानी आरम्भ की। उसका सबसे गहरा घाव अब भी भर नहीं रहा था। दूसरे घाव भरने लगे थे। जोडी ने अपने पिता को सड़क के पार से, अनाजघरों और पशुओं की ओर से, घर की ओर आते देखा। उसने एक अन्य विचित्र वस्तु लटकाई हुई थी।

दूर से ही उसने जोडी को पुकारकर कहा, "देखो, मैं कितनी विचित्र चीज़ लाया हूँ!"

जोडी उसकी ओर दौड़ता हुआ गया। लटकती हुई चीज़ एक परिचित किन्तु विचित्र जन्तु था। यह जन्तु था तो रैकून ही, किन्तु इसका रंग धूसर न होकर, सफ़ेद-सा था। वह अपनी आँखों पर विश्वास न कर सका।

"पिताजी, यह एकदम सफ़ेद कैसे है? क्या यह बहुत बूढ़ा नहीं है?"

"यही तो अजब बात है। पर यह जानवर कभी वहाँ नहीं रहता, जहाँ इसका रंग सफ़ेद पड़ने लग जाय! इसका रंग जन्म से ही सफ़ेद है। यह संसार की सबसे दुर्लभ वस्तुओं में से एक है। इसे 'आल्बिनो' (सफ़ेद) नाम से पुकारा जाता है। इसकी पूँछ पर के छल्लों को देखो। चारों ओर काला रंग होने से उनका रंग एकदम उजला सफ़ेद दीखता है।"

वे रेत पर ही बैठ गए और उस जानवर को जाँचने लगे।

जोडी ने पूछा, "क्या यह जाल में फँस गया था?"

"हाँ, जाल में ही! यह मरा तो नहीं, पर बुरी तरह घायल ज़रूर हो

गया। मैं सौगन्ध खाता हूँ, मुझे इसके मारने में घृणा हो आई।"

जोडी को लगा कि जैसे वह कुछ खो बैठा हो। उसे यह भी दुख हुआ कि वह इस सफ़ेद जन्तु को जीवित न देख सका। उसने कहा, "पिताजी, मुझे इसे उठाने दीजिए।"

उसने उस मरे हुए पशु को अपनी भुजाओं में उठा लिया और सहलाने लगा। पीले बाल सादे बालों की अपेक्षा अधिक मुलायम थे। पेट के बाल भी ताज़ा निकले चूज़ों के बालों से भी अधिक कोमल थे। उसने उसे थपथपाया।

"मुझे बहुत ही अच्छा लगता यदि मैं इसे छोटा-सा पाकर पालता।"

"वह प्यारा तो अवश्य होता, पर होता उतना ही नीच जितने और होते हैं।"

वे दरवाज़े से अन्दर मुड़े और घर के पास से होते हुए रसोई की ओर गए।

"फौडरविंग कहता था कि उसका कोई भी रैकून कोई खास नीच नहीं रहा।"

"हाँ, पर यदि वह हो भी तो कोई फौरेस्टर नहीं समझ पाएगा।"

"शायद वह भी जवाब में काट ही डाले। क्यों, ठीक है न?"

वे कुछ देर ऐसे हँसे जैसे दो पड़ोसी हों। जोडी की माँ उन्हें दरवाज़े पर ही मिल गई। पशु को देखते ही उसका चेहरा खिल उठा। वह बोली, "तुमने इसे पाया? चलो, अच्छा हुआ। मेरी मुर्गियों को यही मारता रहा था।"

जोडी ने विरोध किया, "किन्तु माँ! इसको देखते तो सही। यह बिलकुल सफ़ेद है। कितना अजीब है!"

माँ ने उदासीन होकर उत्तर दिया, "आखिर है तो यह एक चोर जन्तु ही। क्या इसकी खाल औरों से ज़्यादा कीमती है?"

जोडी ने अपने पिता की ओर देखा, वह हाथ-मुँह धोने में लगा हुआ था। उसने साबुन की झाग से भरे चेहरे में से एक आँख खोली और उसे बेटे की ओर झपकाकर कहा, "नहीं, कानी कौड़ी की भी नहीं। जोडी बहुत दिन से एक छोटा-सा थैला चाह रहा था। यह तुम्हारी कृपा होगी, अगर तुम उसे यह खाल बरतने दो।" जोडी सोच रहा था, यदि यह सफ़ेद जन्तु

उसे ज़िन्दा न मिल पाया तो इसकी मुलायम बालों वाली खाल का थैला भी उसे उतना ही प्यारा लगेगा। इसी खुशी में वह नाश्ता भी ठीक से न खा सका। अपने पिता को वह उसकी कृपा के लिए जैसे धन्यवाद देना चाहता हो। बोला, "पिताजी, क्या मैं यह नालियाँ साफ़ कर दूँ ?"

पैनी ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी और बोला, "मैं हर साल वसन्त के आने पर सोचता हूँ कि एक गहरा कुआँ खुदवा लूँ और हमारी यह नालियाँ भरकर बहें। पर क्या करूँ ? ईंटें ही बहुत महँगी हैं।"

जोडी की माँ बोल पड़ी, "मैं नहीं जानती कि आखिर मैंने पानी की कब बचत नहीं की ? मुझे तो यह बचत करते हुए बीस साल हो गए।"

पैनी बोला, "अब कुछ धीरज रखो।"

उसके चेहरे की झुर्रियाँ उभर आईं। जोडी जानता था कि पानी की कमी पुत्र और माँ की अपेक्षा पिता को सख्त कठिनाई में डाल रही थी। जोडी का काम तो लकड़ी लाने तक ही खत्म हो जाता था, पर पैनी को अपने कन्धे पर बेंगी लटकाकर दो बड़ी-बड़ी बाल्टियों सहित उस रेतीली सड़क से होकर खेतों में उस सोते तक जाना होता था। वहीं से वह पानी लाता था। सोते से रिस-रिसकर बहने वाला पानी कुछ जगह इकट्ठा हो जाता था। गिरे हुए पत्तों से उसका रंग कुछ पलट जाता था और वह रेत से खुद ही छन जाता था। यह मेहनत मानो पैनी ऐसे करता था, मानो वह अपने परिवार को इतनी दूर बसाने के लिए क्षमा माँग रहा हो। यह ज़मीन उपजाऊ थी। पर इससे सोते, धाराएँ, कुएँ या नदियाँ कुछ ही दूरी पर मिल सकती थीं। जोडी को अचरज हुआ कि उसके पिता ने बसने के लिए इस जमीन को क्यों चुना ? सोते की ढलान की ओर के जोहड़ों का उसे ध्यान आया, जिन्हें साफ़ करना ज़रूरी था। तब उसकी इच्छा हुई कि काश ! उनकी ज़मीन भी दादी हुट्टो की ज़मीन के समान नदी के किनारे होती। इतने पर भी इन खेतों और ऊँचे चीड़ों का यह टापू उनका अपना संसार था। उसे दूसरी जगहों की बातें दूर देशों की कहानियों-जैसी ही लगीं, जिन्हें प्राय: ओलिवर सुनाया करता था।

उसकी माँ बोली, "बेटा ! तुम दो-एक बिस्कुट और कुछ माँस अपनी जेब में रख लो। तुमने कुछ नहीं खाया।"

उसने अपनी जेबें भर लीं।

"जानती हो, माँ ! मेरी क्या इच्छा करती है ? मेरी इच्छा करती है, काश ! मेरे पास भी चीज़ें ढोने के लिए कंगारू-जैसा एक थैला होता !"

"परमात्मा हमारा पेट भी तुम्हारे अन्दर डाल दे। उसकी मंशा शायद यही थी कि मैं ज्योंही भोजन मेज़ पर बिछाऊँ, तुम अपने पेट में सरकाते जाओ।"

उठकर वह धीरे-धीरे दरवाज़े तक गया। तभी पैनी ने कहा, "पुत्र ! ज़रा तुम सोते तक चलो। मैं भी तुम्हारे इस जन्तु की खाल उतारते ही तुम्हारे पीछे-पीछे आता हूँ।"

दिन चमक रहा था। हवा बह रही थी। जोडी ने निलाई करने वाली खुरपी ली और सड़क से होता हुआ चल दिया। बाड़ के पास के शहतूत के वृक्ष एकदम हरे हो चुके थे। माँ की प्यारी मुर्गी घोंसले में से अपने चूज़ों को आवाज़ देकर बुला रही थी। उसने एक छोटा-सा पीले रंग का गेंदनुमा चूज़ा उठाया और उसे गाल पर लगाया। उसकी कँपकँपी-भरी आवाज़ को वह सुन रहा था। उसने ज्योंही इसे छोड़ा, यह दौड़कर मोटी मुर्गी के पंखों की शरण में दौड़ा गया। उसे लगा कि इस आँगन में भी निलाई की शीघ्र ही ज़रूरत पड़ेगी।

घर की सीढ़ियों से दरवाज़े तक का रास्ता भी सफ़ाई और निलाई के लायक था। उस रास्ते के दोनों ओर सरू के पौधे लगे थे, किन्तु अनावश्यक घास इधर-उधर बढ़ आई थी। उसने खिलते हुए फूल-पौधों को भी घेर लिया था। चीनी बेरी के फूलों के सुगन्धित पत्ते झड़ रहे थे। जोडी अपने नंगे पंजे उनमें रगड़ता हुआ दरवाज़े तक चला गया। तब वह एक क्षण को झिझका। अनाज के भण्डारों ने उसका ध्यान खींचा। हो सकता है, वहाँ कुछ नये चूज़े निकल आए हों। हो सकता है बछड़े में ही कल की बजाय कुछ परिवर्तन आ गया हो ! और यदि उसे कोई ऐसा बहाना मिल सकता हो, जिससे वह वहीं घूमता रहे तो नालियाँ साफ़ करने का अनचाहा काम पीछे टाला जा सकता था। तभी उसे यह सूझा कि यदि वह खेतों का काम जल्दी ही निबटा डाले तो वह दिनभर के लिए स्वतन्त्र हो जाएगा। कस्सी कन्धे पर रखकर वह सोते की ओर जल्दी-जल्दी चल पड़ा।

वह सोचने लगा, हो सकता है कि संसार जहाँ खत्म होता है, वहाँ वह सोते जैसा ही हो ! फौडरविंग का कहना था कि वहाँ शून्य और अँधेरा है तथा वहाँ बादलों की सवारी करने को मिलती है। पर इस बात की सच्चाई कौन जानता है ? सोते की ओर जाते हुए उसे लगा मानो सृष्टि के अन्तिम छोर की ओर जाते समय जो कुछ अनुभव होगा, वह इस सोते की ओर जाते समय जैसा ही होगा ! उसने चाहा, काश ! इस बात को खोजने वाला वही पहला आदमी हो। वह बाड़ के छोर से मुड़ पड़ा। सड़क छोड़ वह पगडंडी पर आ गया। यह पतली थी और इसके दोनों ओर गोखरू आदि कँटीली वनस्पतियाँ लगी हुई थीं। उसने ऐसे दिखाया जैसे उसे वहाँ सोते के होने का पता ही नहीं। वह एक विशेष वृक्ष के पास से निकला। यह वृक्ष एक खास निशानी था। अपनी आँखें मींचकर सीटी बजाते हुए वह चलने लगा। उसने अपने क़दम लापरवाही से बढ़ाने शुरू किए। पर आँख बन्द करके चलने का निश्चय करके भी वह अधिक न बढ़ सका। वह फिर से आँख खोलकर चलने लगा। पर अब वह स्वयं को हल्का अनुभव कर रहा था। वह सोते के किनारे तक पहुँच चुका था।

सोता नहीं, मानो एक छोटा-सा संसार, उसके चरणों में पड़ा था। सोते का गढ़ा गहरा और बड़ी चिलमची जैसा था। फौडरविंग ने इस सम्बन्ध में बताया था कि परमात्मा जितने बड़े एक सूअर ने लिली की जड़ उखाड़ने के लिए यहाँ से एक पंजाभर मिट्टी निकाली थी। पर जोडी को सचाई अपने पिता से पता चल गई थी। सचाई यह थी कि धरती के नीचे कुछ नदियाँ बहती हैं और वे ऊपरी सतह तक उछलती हुई आ जाती हैं। उनका रास्ता भी बदलता रहता है, विशेषकर जहाँ यहाँ जैसे ही चूने के पत्थर होते हैं। हवा के छूने से पहले चूना बड़ा मुलायम और घुलने वाला होता है। बाद में, हवा के छूते ही, यह कठोर हो जाता है। ऐसी जगहों पर ही अचानक ही कभी बिना किसी कारण या चेतावनी के चुपचाप ही धरती का कुछ टुकड़ा पानी में बैठ जाता है। वहाँ एक गढ़ा-सा पड़ जाता है। यह गढ़ा उसी जगह होता है, जहाँ पहले कभी अन्दर ही अन्दर नदी बहा करती थी—पर कभी यह गढ़ा बहुत छोटा—कुछ फुट ही लम्बा, चौड़ा और गहरा होता है। बैक्स्टर परिवार के सोते का यह छेद

साठ फुट गहरा था। चौड़ा भी यह काफी था, इतना कि पैनी की बारूद भरने वाली बन्दूक एक पार से दूसरे पार की गिलहरी पर निशाना नहीं दाग सकती थी। सोते का यह छेद इतना गोल था, मानो किसी ने बाक़ायदा कुआँ खोदा हो। जोडी इसके भीतर ताकने लगा। उसे लगा, जैसे इसकी बनावट की सचाई फौडरविंग की कहानियों से भी बढ़कर आश्चर्य पैदा करने वाली हो।

यह छेद पैनी से भी पुराना था। पैनी ने बताया कि उसे याद है कि इसके निचले किनारे के पेड़ कभी शाखा जितने छोटे होते थे। अब वे बहुत बड़े हो चुके हैं। पूर्वी किनारे पर कुछ ऊपर उठकर जो मैग्नोलिया का वृक्ष है, उसका तना चक्की के पाट जितना गोल और मोटा हो चुका है। अखरोट का तना अब किसी आदमी की जाँघों जितना मोटा हो चुका है। सनावर की शाखें फैलकर सोते की आधी दूरी तक फैल गई हैं। और भी कई छोटे-छोटे वृक्ष किनारों से हटकर काफी अधिक उग आए हैं। उनमें से ताड़नुमा झाड़ियाँ अपने भाले-जैसे लम्बे नुकीले पंखों के साथ बढ़ आई हैं। विशाल सरू ऊपर से जड़ तक मोटे होते आए हैं। जोडी ने देखा वह बाग़ प्यालेनुमा-सा था। उसके हरे-हरे पत्ते पंखों से लग रहे थे। वह अत्यन्त शीतल और फुहार-भरा था, जैसे वह सदा ही किसी रहस्य से भरा रहता हो। उस उपजाऊ जंगल के बीचोंबीच, उस चीड़ों के टापू के किनारे पर, वह कुएँ-जैसा सोता ऐसे लगता था, जैसे उस जंगल का हरा-सा दिल हो।

उस सोते के नीचे की पगडडी पश्चिम के किनारे पर बढ़ गई थी। बरसों से पैनी के चलने एवं पशुओं को लाने-ले जाने से यहाँ की मिट्टी और चूना भुर कर रेत-से बन गए थे। सूखी से सूखी ऋतु में भी पानी लगातार रिसता ही रहता था और नीचे की ओर के एक छोटे जोहड़ में जमा होता रहता था। यह पानी खड़ा रहता था। पशुओं के पानी के लिए आने-जाने से यह गँदला भी था। पैनी के सूअर इसे पीने के भी काम लाते थे। बाकी पशुओं और अपने परिवार के लिए पैनी ने चतुरता बरती थी। उसने पगडण्डी वाले किनारे के दूसरी ओर कुछ नालियाँ उन चूने के पत्थरों को काटकर बनाई थीं। इनमें पानी रिस-रिसकर आता था। नीची से नीची नाली भी सोते की जड़ से पैनी के कन्धे तक ऊँची थी। यहीं पर वह गाय,

बछड़े और घोड़े को पानी पिलाने लाता था। अपनी जवानी में मोतिया रंग के अपने बैलों के हल को उसने यहाँ चलाया था। वे बैल ही उसकी खेती की सफ़ाई के एकमात्र सहारा थे। इससे कुछ ऊपर उसने कुछ गहरी नालियाँ खोदी थीं। यहाँ आकर उसकी पत्नी कपड़े आदि धोया करती थी। यहाँ तट के कुछ भाग पर बरसों के साबुन के उपयोग से जैसे सफ़ेदी-सी हो उठी थी। गद्दे, रज़ाई आदि के उछाड़ जैसे बड़े-बड़े कपड़े वह बरसात के पानी से ही धोती थी।

इन नालियों से भी ऊपर की ओर एक और नाली थी, जिसका पानी पीने और पकाने के काम आता था। इसका किनारा एकदम सीधी ढलान वाला था। इसीलिए किसी पशु के चढ़ने का भय ही नहीं था। हिरण, रीछ, बाघ आदि जितने भी जंगली पशु आते, वे प्राय: पश्चिमी पगडण्डी से आते। इसीलिए वे पानी भी या तो जोहड़ से या पशुओं वाली नाली से पीते थे। गिलहरियाँ और कभी-कभी वनबिलाव अवश्य सबसे ऊपरी नाली में से पानी पीते थे। इन्हें छोड़कर केवल पैनी ही अपनी बेंगी पर बाल्टियाँ लेकर वहाँ पानी भरने आता था।

जोडी पगडण्डी के नीचे की ओर कूदा। सहारे के लिए वह अपनी कस्सी का प्रयोग कर रहा था। जंगली अंगूरों की बेलों में पहुँचना आसान था। पर ढलान पर से ऐसा उतरना उसे सदा ही प्रिय लगा था। धीरे-धीरे वे नालियाँ ऊँची होती गईं। उधर नीचे की ओर के पेड़ों की चोटियों के पास से वह गुज़रने लगा। नीचे के लहलहाते खेतों पर हवा का एक शीतल झोंका आया और जैसे हरे बर्तन में रखा पानी लहरा उठा हो। पत्ते मानो अपना सिर हिला रहे थे। सरू एक क्षण के लिए धरती पर झुक-सा गया। सोते के परली पार लाल चिड़िया झूल उठी और जोहड़ पर ऐसे टूटी, जैसे कोई उजला पत्ता गिरा हो। परन्तु जोडी को देखते ही वह फिर उड़ गई। वह इस जोहड़ के किनारे घुटने टेककर बैठ गया।

पानी साफ़ था। सूअर उत्तर की ओर के दलदली मैदानों में चर रहे थे। उन्हें इस समय सोते का ध्यान नहीं था। किसी डूबी हुई शाखा के नीचे से एक हरे रंग के छोटे-से मेंढक ने जोडी की ओर झाँका। जोडी को ध्यान आया कि यहाँ से कम से कम दो मील परे कोई और पानी की जगह

है। उसे आश्चर्य हुआ कि एक छोटे से जोहड़ तक आने के लिए किसी मेढक ने इतनी दूरी तय की। उसे इस बात में भी सन्देह था कि पहले-पहल आने वाले मेढकों को तब तक यहाँ पानी होने का पता भी था, जब तक वे स्वयं ही पहुँच नहीं गए और पानी पाकर कुछ ठिठके और प्रसन्न हुए? उसे पैनी ने बताया था कि एक बार बरसात में उसके मेढकों की एक पंक्ति जंगलों में से पार आती देखी थी। वे अनजाने ही आ रहे थे या जान-बूझकर?—इस विषय में पैनी कुछ न कह सकता था। जोडी ने सरू की एक शाख जोहड़ में झटकी और वह मेढक वहीं हलके कीचड़ में छिप गया।

उस समय जोडी में अकेलेपन की भावना घर करने लगी। उसने निश्चय किया कि जब वह बड़ा होगा तब वह अपना घर इसी जोहड़ के किनारे बनाएगा। पशुओं को भी इसकी आदत पड़ जाएगी। और वह चाँदनी रात में अपनी खिड़कियों से झाँककर उन्हें पानी पीते देखा करेगा।

उसने उस सोते के नीचे के समतल को पार किया और कुछ ऊपर चढ़कर पशुओं की नाली तक गया। उसे लगा कि यहाँ कस्सी से सफ़ाई करना उचित नहीं। कस्सी को किनारे रखकर वह हाथों से सफ़ाई करने लगा। पत्तों और मिट्टी के जमा होने से एक कड़ी तह-सी बन गई थी। उसने उसे अच्छी तरह उखाड़ा और खोदा। आते हुए पानी को रोककर उसने कुछ देर सूखी नाली को ही साफ़ करने का यत्न किया। उसके साफ़ करने तक पानी फिर रिस आया था। चूने के पत्थरों पर की नाली साफ़ थी। उसे उसने वैसा ही छोड़ दिया और ऊपर की ओर कपड़ा धोने वाली नालियों की कठिन सफ़ाई में लग गया। बार-बार प्रयोग में आने से इनमें पत्ते आदि तो नहीं जमा हुए थे, पर साबुन की तह-सी जम गई थी, जिससे यह फिसलन भरी हो गई थीं। उसने एक पेड़ पर चढ़कर कुछ स्पेनी काई इकट्ठी की और साफ़ करने के लिए इसे किनारे की सूखी रेत के साथ नालियों के तल पर रगड़ा।

जब तक वह सबसे ऊँची पीने के पानी की नाली पर पहुँचा तब तक थक चुका था। ढलान इतनी सीधी थी कि अगर वह पेट के बल तट पर खड़ा हो जाय, तो पानी पीने के लिए उसे सारस की भाँति केवल सिर झुकाने की ज़रूरत थी। वैसे खड़े होकर उसने अपनी जीभ नाली के ऊपर-नीचे की ओर घुमाई। इसमें से पानी पीकर वह इसी में कुल्ले करने लगा

और उनसे उठने वाले बुलबुलों को देखने के लिए पीछे हट आता था। वह निश्चय न कर सका कि रीछ कुत्ते के समान लपलपाकर पानी पीता है या हिरण की भाँति चूसते हुए। उसे विश्वास था कि उसका पिता ही यह बात जानता होगा। उसने अवश्य ही रीछ को पानी पीते देखा होगा।

तब जोडी ने अपना सिर इसी नाली में डुबो दिया। कभी एक गाल और कभी दूसरा—करके वह अपने सिर के सभी भागों को पानी में भिगोने और डुबोने लगा। इससे उसे शीतलता अनुभव हुई। अपनी हथेलियों पर शरीर का बोझ सँभाले वह नाली में सिर डुबोए खड़ा रहा। वह देखना चाहता था कि इस प्रकार कितनी देर तक वह साँस रोके रह सकता है। मुख से वायु छोड़कर वह बुलबुले भी बना रहा था। तभी उसे पिता की आवाज़ नीचे से आती सुनाई दी।

"बेटे ! तुम्हें यह पानी इतना अधिक पसन्द कैसे आ गया ? जब यही पानी हाथ धोने के बर्तन में डाला जाता है, तब तुम उससे दूर भागते हो, जैसे यह कोई गन्दी चीज़ हो !"

जोडी मुडा। उसके सिर से पानी टपक रहा था।

बोला, "पिताजी, मुझे नहीं पता चला कि आप आए हैं।"

"तुमने अपना मैला सिर जो उसी नाली में गहरे डुबो रखा था, जिससे तुम्हारा बेचारा पिता पानी पीना चाहता था।"

"पर मैं मैला नहीं था। पानी भी गन्दा नहीं हुआ।"

"पर मैं भी इतना प्यासा नहीं हूँ।"

पैनी किनारे पर चढ़ आया और नीचे की नालियाँ देखकर प्रसन्न हुआ। तब उसने वहीं से कपड़े धोने वाली नाली को देखा। सन्तुष्ट होकर एक पतली-सी टहनी चबाते हुए बोला, "मैं सच कहता हूँ, जब तुम्हारी माता ने 'बीस साल' की बात कही, तो मुझे बहुत दुख हुआ। सच यह है कि मैंने कभी समय गिनने का यत्न नहीं किया। सालों पर साल बीतते चले गए, पर मुझे उनका ध्यान नहीं। हर वसन्त में मैं सोचता रहा कुएँ को ठीक से बनवाने की, पर कभी बैल की ज़रूरत आ पड़ती, कभी गाय इसमें फँसकर डूब जाती या कोई छोटा पशु इसमें डूब जाता। तब मेरे अन्दर कुआँ खुदवाने का उत्साह ठण्डा पड़ जाता। ईंटों की महँगाई का तो पूछो

ही मत ! एक बार मैंने कुआँ खुदवाना आरम्भ किया, पर तीस फुट पर भी पानी न मिला। मुझे पता ही था कि यह कुछ होगा। पर, दूसरी ओर तुम्हारी माँ की शिकायत भी ठीक ही है। किसी भी स्त्री को बीस साल तक उस ऊँचाई और दूरी पर आकर कपड़े धोने को कहना, सचमुच ज़्यादती है।"

जोडी गम्भीर होकर सुनता रहा। फिर बोला, "एक न एक दिन हम उसे कुआँ बनवा ही देंगे।"

पैनी ने फिर दुहराया, "पर बीस साल ! और हर बार कोई न कोई गड़बड़ ! फिर युद्ध आ गया। और तब ज़मीन फिर से साफ़ करनी पड़ी।"

वह उसी तरह नाली के किनारे खड़ा रहा। उसकी आँखों के आगे से गुज़र रहे थे वे बीते वर्ष !

याद करते हुए वह बोला, "जब मैं पहले-पहल यह जगह चुनकर यहाँ आया ही था, मैंने आशा की थी..."

जोडी के दिमाग़ में सवेरे वाला प्रश्न फिर से कौंध गया, "पिताजी, आपने उसे चुना कैसे ?"

"मैंने इसे इसलिए चुना कि मैं शान्ति चाहता था, बस !" कहते हुए वह कारण सोचते हुए कुछ देर को रुका और फिर मुसकरा पड़ा। "यहाँ, दुनिया से दूर, मैंने जगह पा ली। यहाँ भालू, चीता, भेड़िया और बनबिलाव आदि सभी का डर जब-तब सहना पड़ा; और तुम्हारी माँ का भी !"

तब कुछ देर वे चुप बैठे रहे। गिलहरियों ने पेड़ों की चोटियों पर दौड़ना शुरू कर दिया था। अचानक ही पैनी ने जोडी को कोहनी मारकर उसका ध्यान खींचा।

"देखो उस जानवर को ! कैसे वह हमारी ओर ताक रहा है ?"

उसने एक वृक्ष की ओर इशारा किया। उसके तने पर ज़मीन से कोई चार गज ऊँचे पर एक छोटा रैकून चारों ओर चक्कर काट रहा था। यह सामने दिखाई देता और फिर छिप जाता। इतने में फिर इसका ढका-सा मुँह सामने दिखाई दिया।

पैनी ने कहा, "मुझे लगता है कि जैसे हमें जानवर अजीब लगते हैं,

हम भी उन्हें वैसे ही लगते हैं।"

जोडी ने पूछा, "पर यह कैसे कि कुछ घबरा जाते हैं और कुछ निडर होते हैं ?"

पैनी ने स्वीकार किया, "यह मुझे नहीं पता। शायद यह इस बात पर निर्भर करता है कि कितने बचपन में कौन-सा जानवर डर गया था। पर यह कोई नियम नहीं कहा जा सकता। मुझे याद आ रहा है। एक बार मैं बनविलावों वाले मैदान में दोपहर तक शिकार ढूँढते-ढूँढते परेशान हो गया। सनावर के एक वृक्ष के नीचे मैंने थोड़ी-सी आग जलाई और खाना गर्म करने और सूअर का माँस पकाने की तैयारी करने लगा। इसी बीच एक लोमड़ आया और आकर आग के दूसरी ओर लेट गया। मैंने उसकी ओर देखा और उसने मेरी ओर। मैंने अनुमान किया कि वह भूखा है। मैंने छड़ी पर माँस का एक टुकड़ा लटकाकर उस तक—नाक के ठीक ऊपर—पहुँचाया। अब देखा जाय तो लोमड़ बड़ा जंगली होता है। मैंने नहीं देखा कि कभी लोमड़ इतना भी भूखा हो सकता है कि उसमें भागने की हिम्मत न रह जाय। और यह अजब ही था कि वह लोमड़ वहीं लेटा रहा; न उसने खाया और न वह भागा; मेरी ओर देखता ही रहा !

"मैं उसे देखकर अवश्य प्रसन्न होता। पर पिताजी, आपका क्या अनुमान है ? वह आपकी ओर क्यों देखता रहा और फिर भी लेटा रहा ?"

"तब से आज तक मैं भी इस उलझन को सुलझा नहीं सका। मैं इतना अनुमान भी कर सका हूँ कि कुत्तों ने उसका पीछा करते-करते उसे थका दिया होगा और उसका दिमाग़ भी थक गया होगा। मेरा अनुमान है कि शायद वह लोमड़ कहीं झल्लाकर पागल न हो गया हो।"

अब तक रैकून पूरा-पूरा दीखने लगा था।

जोडी ने कहा, "मेरी इच्छा थी, पिताजी, कि मेरे पास भी फौडरविंग जैसे ही कोई खेलने योग्य पालतू जानवर होता। मैं चाहता था कोई रैकून, रीछ का बच्चा या वैसा ही कुछ और मेरे पास भी होता।"

पैनी ने स्पष्ट किया, "तुम जानते हो, तुम्हारी माता उसे नहीं सहेगी। मुझे तो जन्तुओं से प्यार है। उधर समय कठिन है, भोजन की सामग्री कम रह गई है और इस पर तुम्हारी माँ है।"

"मुझे कोई लोमड़ी का बच्चा या चीते का बच्चा भी प्यारा लगेगा। पर क्या उन्हें छोटा पकड़ सकते हैं ? और क्या आप उन्हें सधा सकते हैं ?"

पैनी ने पिता का उपदेश याद करते हुए कहा, "बेटे ! तुम रैकून, भालू, बनबिलाव या चीते में से किसी को भी पालतू बना सकते हो। तुम किसी भी चीज़ को साध सकते हो, सिवाय इस मनुष्य की जुबान के !"
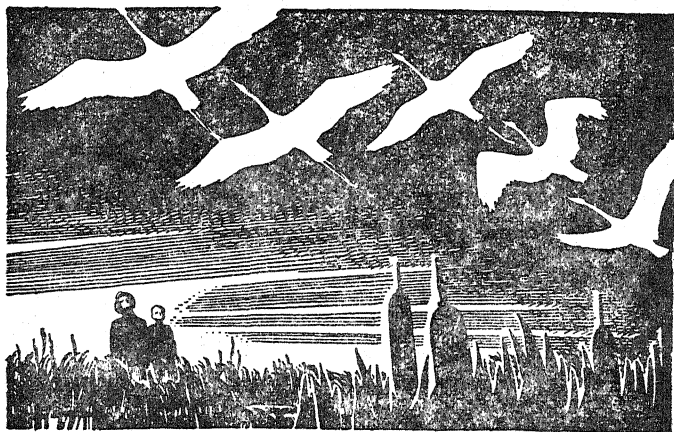
10

जोडी बीमार था। वह आराम से बिस्तर पर पड़ा, बुखार से ठीक हो रहा था। उसकी माँ का कहना था कि उसे बुखार है। उसने दलील बिना बढ़ाए चुपचाप स्वीकार कर लिया। उसका अपना विचार यह था कि यह गड़बड़ बहुत सारे अधपके झाड़ी के बेर खा लेने से हुई है। बुखार की बजाय ऐसी गड़बड़ों का इलाज कुछ अधिक सख्त होता है। उसकी माता ने उसे काँपता देखकर उसके तपते माथे पर हाथ रखा और कहा, "जल्दी बिस्तर में लेट जाओ। तुम्हें जाड़ा और बुखार हो गया है।" उसने प्रतिरोध न किया।

माँ पीने की कोई गर्म चीज़ प्याले में लेकर कमरे में घुसी। जोडी ने उत्सुकता से उस ओर देखा। दो दिन से माँ उसे नींबू के पत्तों की चाय दे रही थी। यह सुगन्धित और स्वादु होती थी। कभी उसे खटास की शिकायत होती तो माँ उसमें थोड़ा मुरब्बा डाल देती। वह सोचने लगा, हो सकता है माँ को अब भी असलियत का पता चल गया होगा। अगर उसने बीमारी

आँतों की दर्द के रूप में पहचानी होगी तब वह सर्पगन्धा जैसी कोई जड़ी देगी या फिर ख़ून साफ़ करने वाली कोई और जड़ी देगी। इन दोनों से ही उसे नफ़रत थी।

उसने आते ही कहा, "अगर तुम्हारे पिता सिर्फ़ बुखारी-घास की जड़ लाकर यहाँ बो दें तो मैं तुम दोनों के बुखार को तो एक मिनट में ठीक कर सकूँगी। बेड़े में उस घास का न होना कोई अच्छी बात नहीं है।"

जोडी को उत्सुकता थी, "माँ! प्याले में क्या है?"

"तुम्हें क्या मतलब? अपना मुँह खोलो!"

"मुझे पता चलना चाहिए। मान लो तुम मुझे मार डालती हो और मैं जान भी नहीं पाता कि तुमने कौन-सी दवा मुझे दी।"

"तो सुनो! यह मसालेदार चाय है। मुझे लगा कि कहीं शायद तुम्हें खसरा न हो गया हो।"

"माँ, यह खसरा नहीं है।"

"तुम्हें कैसे पता? तुम्हें कभी हुआ तो है नहीं। अपना मुँह खोलो! अगर तुम्हें खसरा नहीं भी हो तो यह दवाई नुखसान नहीं करेगी। और, अगर है तो यह उसका ज़ोर बाहर कर देगी।"

बीमारी का ज़ोर बाहर करने की बात उसे लुभावनी लगी। उसने मुँह खोल दिया। माँ ने एक हाथ उसके सिर के बालों पर रखा और दूसरे से आधा प्याला एक साथ ही उसके गले में उंडेल दिया। उसने उगलने की कोशिश की और रोकते हुए कहा, "नहीं, मैं और नहीं लूँगा। मुझे खसरा नहीं है।"

"अच्छा तो तुम इस बीमारी से मर जाओगे और इसका ज़ोर बाहर नहीं निकल पाएगा।"

उसने अपना मुँह फिर एक बार खोल दिया और बची हुई चाय को चुपचाप पी गया। स्वाद कड़वा था, पर और काढ़ों जितना नहीं। कुछ और काढ़े तो बहुत ही बुरे होते थे। पीकर वह तकिये पर सिर टिकाकर वैसे ही लेट गया।

"माँ! अगर मुझे खसरा ही है, तो यह कब तक बाहर आ जाएगा?"

"जितनी जल्दी तुम्हें पसीना आने लगेगा। अब अपने को ढँक लो।"

वह कमरे से चली गई और इधर जोडी पसीने की इन्तज़ार करने लगा। बीमार पड़ना भी जैसे स्वयं एक इलाज हो। अब उसे बीमारी की पहली रात से भय लगने लगा था। उस दिन दर्दों के मारे वह गठरी-सा बन गया था। परन्तु यह कमज़ोरी और माता-पिता से अलगाव उसे अच्छा लग रहा था। अन्दर-ही-अन्दर उसे यह बात खाए जा रही थी कि उसने माँ को जंगली बेर अधिक खा जाने की बात क्यों नहीं बताई। वैसा करने पर वह उसे जुलाब दे देती और रात ही रात में सब ठीक हो जाता। इन दो दिनों से अकेले पैनी को ही खेत का सारा काम करना पड़ रहा था। उसने बूढ़े सीज़र को हल में जोतकर गन्ने के खेतों में हल चलाया; अनाज और मटर के खेतों में काम किया और तम्बाकू के छोटे से खेत में भी निलाई आदि की। वह अकेला ही सोते से पानी लाया, लकड़ियाँ काटीं और सारे पशुओं को भोजन और पानी दिया।

जोडी ने सोचा शायद उसे बुखार है या शायद उसे खसरा निकलने वाला है। उसने चेहरे व पेट को टटोला। न उसे पसीना आया हुआ था, न खसरा बाहर निकला था। वह चारपाई पर ही हिलने-डुलने लगा, ताकि पसीना जल्दी आ सके। उसे अनुभव होने लगा कि जैसे वह हमेशा की भाँति ठीक हो, शायद उससे भी अच्छा, जितना वह माँस अधिक खा जाने से पहले था। उसे याद आया कि किस प्रकार वह माता के ना रोकने पर ताज़े कीमे और हिरण के माँस को अधिक-से-अधिक खाता गया। उसे लगा कि उसकी बीमारी में जंगली बेरों का कोई भी हाथ नहीं। अब तक वह पसीने से तर हो चुका था।

वह चिल्लाया, "माँ! आओ, देखो! आखिर पसीना आ ही गया।"

माँ आई और उसे अच्छी तरह देखकर बोली, "अरे, तुम तो मेरे जैसे ही भले-चंगे हो। चलो, बिस्तर छोड़ दो।"

रजाई आदि परे पटककर वह उठ खड़ा हुआ। उसके पाँव मृगछाला पर थे। उसने अपने को हलका अनुभव किया।

"तुम्हें सब ठीक लगता है?" माँ ने पूछा।

"हाँ, माँ! कुछ कमज़ोरी अवश्य है।"

"ठीक है। तुमने कुछ खाया भी तो नहीं। अच्छा, कमीज़-पाजामा

पहनो और थोड़ा भोजन कर लो।"

जल्दी से कपड़े बदलकर वह माँ के पीछे-पीछे रसोई में चला आया। भोजन अभी भी गर्म था। माँ ने उसे कुछ बिस्कुट, माँस और सब्ज़ी की मिली-जुली एक तश्तरी और मीठे दूध का एक प्याला दिया। वह उसे खाते देखने लगी।

"मुझे आशा थी कि तुम कुछ अधिक शान्त होकर उठोगे।" माँ ने कहा।

जोडी ने पूछा, "कुछ और सब्ज़ी दे सकोगी, माँ?"

"मुझे 'ना' करनी पड़ेगी। तुमने काफ़ी खा लिया है। इतने में तो किसी मगरमच्छ का पेट भर जाता।"

"पिताजी कहाँ हैं?" जोडी ने पूछा।

"मेरा अनुमान है, शायद अनाज की ओर।"

वह पिता की खोज में चल पड़ा। पैनी बाहर के दरवाज़े पर कुछ देर के लिए बैठा सुस्ता रहा था। दूर से ही वह बोल पड़ा, "बेटे! तुम अब ठीक लगते हो।"

"हाँ, पिताजी! मैं ठीक ही हूँ।"

"तुम्हें खसरा, बुखार या चेचक तो नहीं हो गई थी?" पैनी की आँखों में चमक दौड़ गई।

जोडी ने सिर हिला दिया। बोला, "पर, पिताजी!"

"हाँ, बेटे।"

"मेरा अनुमान है कि मेरी बीमारी का कारण जंगली बेरों को छोड़ और कुछ नहीं।"

"यही मेरा खयाल था। पर, मैंने तुम्हारी माता से इसलिए कुछ नहीं कहा कि उनके भरपेट खाने की बात सुनते ही वह मौत की भाँति टूट पड़ती।"

जोडी ने चैन की साँस ली।

पैनी ने फिर कहा, "मैं यहाँ बैठा-बैठा कुछ सोच रहा था। अभी दो-एक घंटे में पूरा चाँद उग आएगा। आपका क्या खयाल है, यदि हम दो मछली पकड़ने के जाल लेकर ज़रा देर को मछली मारने निकल पड़ें?"

"उसी धारा की ओर ?"

"असल में मेरे मन में उस नुकीली घास वाले जोहड़ों में शिकार खेलने की इच्छा है, जहाँ वह रीछ पेट भर रहा था।"

जोडी बोला, "मेरा विश्वास है कि हम वहाँ किसी न किसी जोहड़ में बिल्ली-जैसे मुँह वाली मछली पकड़ने में सफल हो जाएँगे।"

"हम इस तरह की कोशिश का आनन्द तो ले ही सकते हैं।"

वे घर के पीछे के गोदाम तक अपना माल-सामान लेने गए। पैनी ने पुराने काँटे की जगह दो नए काँटे साथ लिए। हाल के मारे हिरण की पूँछ से छोटे-छोटे बाल काटकर उसने उनकी सफेद और सलेटी-सी गुच्छियाँ बनाईं। उसने उन्हें काँटों के साथ ही बाँध दिया और बोला, "अगर मैं स्वयं मछली होता तो मैं इन गुच्छियों पर हमला करता।"

तब घर में जाकर उसने पत्नी से कुछ देर बात की।

"मैं और जोडी बास मछलियों को फँसाने जा रहे हैं।"

"मेरा ख़याल था कि तुम तो बाहर जाते नहीं और जोडी बीमार था।"

पैनी ने समझाया, "इसीलिए तो हम मछलियों का शिकार करने जा रहे हैं।"

वह दरवाज़े तक उनके पीछे-पीछे गई और उन्हें देखती रही। बोली, "अगर बास न मिले तो ताज़े पानी वाली मछली ही ले आना। मैं उसे भी तलकर खा सकती हूँ।"

पैनी ने विश्वास दिलाया, "हम बिना कुछ लिये नहीं आएँगे।"

दोपहर काफी गर्म थी। फिर भी रास्ता छोटा लगा। जोडी ने सोचा कि मछली पकड़ना शिकार खेलने से कहीं अच्छा है। यह उत्साह तो उतना नहीं देता, पर इसमें डर भी उतना नहीं। इसमें दिल नहीं धड़क उठता और इधर-उधर पेड़-पौधों को ताकने-झाँकने का भी मौक़ा रहता है। वे एक परिचित जोहड़ के पास रुके। बहुत देर से सूखा रहने से यह उथला था। पैनी ने एक टिड्डा पकड़ा और उसे जोहड़ में फेंका। पर वहाँ कोई हल-चल न हुई।

वह बोला, "मुझे डर है कि यहाँ की मछलियाँ मर न गई हों। मुझे सदा यही अचरज रहा है कि सुनसान के इन जोहड़ों में मछली पनप कैसे

सकती है ? और वह भी सालों-साल।"

उसने फिर एक टिड्डा पकड़ा और उसे फिर फेंका, पर बेकार। बोला, "हाय, बेचारी मछलियाँ ! कितनी लाचार हैं ! इन्हें फँसाने के स्थान पर मुझे इन्हें खिलाने आना चाहिए।"

उसने अपना बाँस कन्धे पर फिर से रख लिया। उसने खिसियाते हुए कहा, "शायद परमात्मा मेरे बारे में भी यही कुछ सोचता है। हो सकता है, वह मुझे देखकर कहता हो कि 'यह पैनी उस खेत पर ज़िन्दा रहता है।'" और फिर वह बोला, "पर यह खेत अच्छा ही है। शायद मछलियाँ भी मेरी ही भाँति सन्तुष्ट हैं।"

जोडी बोल पड़ा, "देखिए, पिताजी ! उधर कुछ लोग हैं।"

ऐसी अकेली जगह पर सनावर वृक्षों के इन टापुओं में और नुकीली घास वाले इन जोहड़ों और मैदानों में आदमियों का दीखना एक अजब बात ही थी। पैनी ने बड़े ध्यान से देखा। एक पंक्ति में आधी दर्जन आदमी और औरतें जंगल में उसी रास्ते से आ रहे थे, जिस पर से अभी वे स्वयं होकर आए थे।

जोडी बोला, "ये तो मिनोरकन हैं। केकड़े, बीवर आदि का शिकार करने आए दीखते हैं।" अब जोडी को उनके कन्धों पर लदे थैले साफ़ दिखाई दे रहे थे। दलदल की सूखी नालियों में चलने वाले कछुए जंगल के रहने वाले जीवों के लिए खाने लायक़ आखिरी चीज़ थे। पैनी बोला, "हमेशा ही मेरे मन में यह सवाल उठता है कि कहीं ये इन रेंगने वाले जीवों से कोई दवाई तो तैयार नहीं करते। क्योंकि इतनी दूर समुद्र के किनारे से यहाँ तक ऐसी चीज़ों का शिकार करने आना, केवल उन्हें खाने के लिए नहीं हो सकता।"

जोडी बोला, "आइए, हम भी उनके पास खिसक चलें और देखें।"

पैनी बोला, "मैं उन बेचारों से कुछ नहीं पूछूँगा। इन लोगों के साथ बहुत बुरी बीत चुकी है। मेरे पिता इनके बारे में बहुत कुछ जानते थे। कोई अंग्रेज इनको न्यू स्मरना के इलाक़े में समुद्र और नदियाँ पार करके ले गया। उसने इनसे वायदा किया कि वहाँ स्वर्ग मिलेगा और उन्हें काम में लगाया। परन्तु समय ख़राब था और फसलें ठीक से नहीं हुईं। वह

इन्हें बिना किसी सहारे भूखों मरने के लिए छोड़ आया। इनमें से बहुत कम बचे रह गए।"

"क्या ये जिप्सियों जैसे ही होते हैं?"

"नहीं, जिप्सी तो असभ्य होते हैं। इनमें से आदमी तो जिप्सियों जैसे गाढ़े रंग के होते हैं, पर औरतों का रंग उजला होता है, खासकर जब वे छोटे होते हैं। ये लोग अपने काम से मतलब रखते हैं और शान्तिपूर्वक रहते हैं।"

वे सब लोग फिर से जंगल में ओझल हो गए थे। जोडी को एक सिहरन-सी अनुभव हुई। उसे लगा जैसे उसने स्पेनियों को देख लिया हो। उसे लगा कि जैसे घने और काले से भूत सामने से गुज़र गए हों, जिनके कन्धे पर कछुए, केकड़े वगैरह के साथ-साथ उनके जीवन के अन्याय भी लदे हुए थे। पैनी ने कहा, "शायद उधर उस जोहड़ में मेढकों की भाँति बास मछलियाँ भी जमा हो गई होंगीं।"

अब वे मैदान के उस पश्चिमी हिस्से में पहुँच गए थे, जहाँ उस बूढ़े रीछ ने फायर प्लाण्ट का भोजन किया था। खुश्क मौसम ने पानी और भी सुखा दिया था। दलदल में खुश्की और सख्ती बढ़ती जा रही थी। जोहड़ साफ़ दिखाई दे रहे थे। वे जोहड़ नुकीली घास से रहित थे। उनकी सतह पर केवल नरगिस के कुछ पौधों के पत्ते ही फैले हुए थे। एक नीला सारस उनके ऊपर से गुज़रा। उसकी टाँगें पीली और मुख रंगा-सा था। हलकी-हलकी वायु उस दलदल में सन-सन करती बह रही थी और नीचे पानी की छपछपाहट सुनाई देती थी। नरगिस के पत्ते सूरज की अन्तिम चमक से एकबारगी चमक उठे।

पैनी ने कहा, "बस कुछ क्षण और! चाँद अब निकला ही चाहता है।"

उसने जाल फैलाया। उसे दोनों बाँसों पर बाँधा और उनमें हिरण के बालों के गुच्छे लटका दिए।

"अब तुम अपना काँटा लेकर उत्तर की ओर चले जाओ और मैं इधर दक्षिण में कोशिश करूँगा। देखना, चलने-फिरने की भी आवाज़ न हो!"

पैनी ने जोहड़ की ओर एक अनुभवी की भाँति नज़र डाली। जोडी यह देखने के लिए एक क्षण रुक गया। उसने उस जाल वाले बाँस को घुमाने

की बात को ठीक से समझा। उसने बाँस के कोने पर लगा बालों का गुच्छा कुछ दूर नरगिस के फूलों के एक गुच्छे के पास लटका दिया। पैनी ने अपना बाँस धीरे-धीरे जोहड़ के आर-पार हिलाना शुरू किया। यह डूबता और हिलता-डुलता किसी जन्तु के स्वर की लय की भाँति शब्द कर रहा था। किसी भी चीज़ के न टकराने पर जोडी ने इसे बाहर निकाला और फिर से वहीं डाला। उसे अनुभव हुआ, कोई मछली तले पर घूम रही है। वह उसे ललकारता-सा बोला, "अरी, बुढ़िया! मैं देख रहा हूँ कि तुम अपने अड्डे पर बैठ रही हो।" बाँस को धीरे-से थोड़ा और हिलाकर उसने फिर कहा, "अच्छा है अब तुम आकर अपना भोजन कर लो।"

जोडी ने पिता की इस खयाली हरकत से अपने को अलग किया और जोहड़ के अपने किनारे के कोने पर चला गया। कुछ देर तक वह अपने बाँस और बालों वाले गुच्छे को झुँझलाकर इधर-उधर डालता रहा। कभी उसका बाँस जोहड़ को भी पार कर जाता था और कभी नुकीली घास में अटक जाता था। तब अचानक ही वह शान्ति-सी अनुभव करने लगा। उसके हाथ आधे झुके हुए और ढीले पड़ गए। अब बाँस की गति केवल मुट्ठी के सहारे हो रही थी। आखिर उसने बालों वाले गुच्छे को मनचाही जगह पर लटका दिया।

पैनी दूर से बोला, "बहुत अच्छा, बेटे! इसे ऐसे ही एक मिनट पड़ा रहने दो। तैयार रहना, ज्योंही झटका लगे, खींच लेना।"

जोडी का खयाल न था कि उसके पिता सब कुछ देख रहे हैं। वह कुछ कसा-सा बैठा था। वह अपने बाँस को बड़े ध्यान से झटके दे रहा था और बालों के गुच्छे को इधर-उधर घुमा रहा था। अचानक ही एक भँवर-सी उठी। चाँदी-सी चमकीली कोई चीज़ पानी में आधी बाहर उछली और एक अच्छे खुले मुँह ने बालों के गुच्छे को पकड़ लिया। उसके जाल के सिरे पर चक्की के पत्थर का-सा एक बोझ गिरा। उसने वनबिलाव जैसे छूटने की कोशिश की और जोडी का संतुलन बिगाड़ने का प्रयत्न किया। उसने ऐसी हालत में बिगड़ उठने वाली अपने मन की हालत को सँभाला।

पैनी ने पुकारा, "आराम से! उसे उन झुण्डों के नीचे मत जाने दो। उसे ज़रा भी ढील न देना।"

पैनी ने उसके संघर्ष को छेड़ा नहीं। जोडी की बाँहें इस बोझ से दर्द करने लगी थीं। उसे डर था कि रस्सी इतनी भी न खिच जाय कि जाल का किनारा टूट ही जाय। पर वह एक इंच ढील देने को भी तैयार न था, कहीं वह बड़ा शिकार हाथ से न निकल जाय! उसकी इच्छा हुई कि उस समय उसके पिता कुछ ऐसे जादू भरे शब्द कहे, जिससे मछली भी पकड़ी जाय और उसकी यह बुरी हालत भी ठीक हो सके। मछली कुछ ढीली पड़ रही थी। उसने घास की ओर अन्तिम छलाँग भरी, ताकि उधर से जाल का किनारा फाँद सके। जोडी को इसी समय सूझा कि यदि वह तालाब के किनारे की ओर जाल को बिना ढीला किये, चलना शुरू कर दे तब यह मछली उथले पानी में आ जाएगी और तब किनारे पर उससे सुलझा जा सकेगा। उसने बहुत सावधानी से ऐसा ही किया। तब उसमें बाँस को छोड़ने, जाल का किनारा हाथ में लेकर बढ़ने और उस बास मछली से सीधा उलझने की इच्छा जागी। उसने तालाब से परे की ओर चलना शुरू कर दिया। तब अचानक ही बाँस को एक झटका दिया। मछली घास पर उछल-कर आ गई। बाँस को पटककर वह अपने शिकार को अच्छी जगह पर पहुँचाने के लिए दौड़ा। यह मछली पाँच सेर से कम की न होगी। पैनी पास आ चुका था। बोला, "पुत्र, आज मुझे तुम पर गर्व है। कोई भी इसे इससे अच्छी तरह नहीं पकड़ सकता था।"

जोडी भक्त-सा खड़ा रहा। पैनी ने उत्तेजना में उसकी पीठ थपथपाई। उसकी नज़र ज़मीन पर थी। उसे विश्वास नहीं आ रहा था। इतनी बड़ी मछली! वह बोला, "मुझे तो उतनी ही खुशी है, जितनी उस खुर्राट रीछ के मारे जाने पर होती।" वे वहीं खिलखिलाते और एक-दूसरे की पीठ थपथपाते कुछ देर साथ-साथ खड़े रहे।

पैनी ने फिर कहा, "अब मुझे तुमसे बाज़ी मारनी होगी।"

अब वे अलग-अलग जोहड़ों पर बढ़ गए। पैनी ने कहा कि वह पछाड़ दिया गया है। उसने श्रीमतीजी के लिए ब्रीम मछली की टोह शुरू की। अब उसने हाथ में पकड़ने वाला जाल लिया और घास के कीड़ों को जमा कर लिया। जोडी ने अपना जाल बार-बार डाला, पर अब की बार वैसी कोई भँवर न पड़ी, न वैसी कोई बोझिल चीज़ आई और न ही वैसी कोई

चमक दिखाई दी ! एक छोटी बास मछली अवश्य पकड़ी गई। उसे उसने पिता को दिखाया।

वह बोला, "उसे फेंक दो ! खाने के लिए तो उसकी ज़रूरत है नहीं। उसे भी दूसरी मछली की तरह बड़ी हो लेने दो, फिर कभी आकर हम उसे पकड़ ले जाएँगे।"

जोडी ने बड़े अनमने भाव से उसे फिर से जोहड़ में छोड़ दिया और वह उछलकर तैर गई। उसका पिता शिकार हो या मछली-पकड़ना, किसी भी हालत में उससे अधिक माल के हक़ में नहीं था, जितने को खाया या सँभाला जा सके। सूरज के छिपने के साथ-साथ किसी दूसरी बड़ी मछली पकड़ने की उम्मीद भी जाती रही। उसने अपने अंगों पर निगाह डाली। उसे अपने दायीं बाँह और कलाई की ताकत में मज़ा आने लगा। चाँद धोखा दे गया था। मछलियों को खूराक देने का समय नहीं रहा था। मछलियाँ आ नहीं रही थीं। अचानक उसको पिता की मीठी आवाज़ सुनाई दी। गिलहरियों को पकड़ते समय वे ऐसे ही इशारे करते थे। जोडी ने अपना बाँस और जाल रख दिया और उस जगह को ठीक-ठीक पहचानने लगा, जहाँ धूप से बचने के लिए उसने बास मछली को छिपा दिया था। अपने पिता की दिशा में वह सँभलकर बढ़ने लगा।

पैनी ने फुसफुसाहट की आवाज़ में कहा, "मेरे पीछे-पीछे आओ। हम जितना चुप और साथ-साथ चल सकें, उतना ठीक होगा।" उसने इशारे से दिखाकर कहा, "गाने वाले सारस नाच रहे हैं।"

जोडी ने कुछ दूरी पर उन बड़े सफेद पक्षियों को देखा। उसे लगा कि उसके पिता की आँख गिद्ध जैसी थी। हाथ ज़मीन पर टेककर वे घुटनों के बल धीरे-धीरे बढ़ने लगे। जब-तब पैनी पेट के बल लेट जाता था और जोडी भी वैसा ही करता। नुकीली घास के पास पहुँचकर पैनी ने अपने को छिपाने की कोशिश की। अब पक्षी इतने पास थे, जोडी को लगा कि वह उन्हें अपने मछली पकड़ने वाले बाँस से छू सकता है। पैनी घुटनों के बल बैठ गया। जोडी ने भी देखा-देखी वैसा ही किया। उसकी आँखें फटी रह गईं। उसने गिना, पक्षी सोलह थे।

वौलूसिया में होने वाले नृत्य की भाँति ये सारस भी नृत्य कर रहे थे।

इनमें से दो किनारे खड़े थे—सफेद और तने हुए। इन्होंने एक तराना छेड़ा हुआ था, जो चीख और गाने का मिला-जुला रूप था। नाच की भाँति उनकी लय भी एकसार नहीं थी। दूसरे सभी गोलाई में खड़े थे। गोलाई के बीचोंबीच कुछ सारस घड़ी की सुइयों की भाँति घूम रहे थे। दोनों गवैए अपना संगीत छेड़ रहे थे और नाचने वाले अपनी टाँगें और डैने एक-एक करके उठाते हुए नाच रहे थे। वे कभी अपने सिरों को अपनी सफेद छातियों में गहरा छुपा लेते और फिर कभी उठा लेते। बिना आवाज़ किए वे चल रहे थे, कभी नज़ाकत से, कभी अनघड़े तरीके से। नाच बड़ा गम्भीर था। बाँहों के समान उठते-गिरते पंख फड़फड़ा रहे थे। बाहरी घेरा गोले में घूम रहा था, पर अन्दर के नाचने वाले जोश में आते जा रहे थे।

एकदम ही सब कुछ रुक गया। जोडी को लगा कि या तो नाच समाप्त हो गया है, या उनके आने का पता चल गया है। परन्तु इस बीच वे दोनों रागी सारस घेरे में आ चुके थे और उनके स्थान पर दूसरे दो सारस गाने के लिए पहुँच चुके थे। कुछ देर रुककर नाच-गाना फिर शुरू हुआ। इन सबकी परछाईं दलदल के पानी में साफ़-साफ़ पड़ रही थी। सोलह सफेद परछाइयाँ हिलती-डुलती दिखाई दे रही थीं। साँझ की शीतल बयार का एक झोंका उस नुकीली घास के ऊपर से बह गया। घास झुकी और फड़-फड़ाई। पानी में भी हलकी-हलकी आवाज़ हुई। अस्त होते हुए सूर्य की लाली पक्षियों के सफेद शरीरों पर पड़ रही थी। उस जादूभरी दलदल में वे जादूगर पक्षी नाचते जा रहे थे। मानो घास और पानी ने भी उनका साथ दिया और नीचे की धरती भी उनके साथ नाचने लगी। जैसे धरती, सूरज, हवा और आकाश ने उन नाचने वाले सारसों के साथ नाचना शुरू कर दिया हो।

जोडी को लगा कि उसकी हर साँस-उसाँस के साथ उसकी अपनी बाँहें भी उठ-गिर रही हैं। यह सब सारसों के पंखों के डैनों के उठने-गिरने के साथ ही हो रहा था। सूरज जैसे उसी नुकीली घास में छिपने लगा। दलदल और सारस सुनहले पड़ गए, जैसे सोने के पानी से धोये गए हों। दूर की हरियाली काली पड़ने लगी थी। थोड़ी देर में वह कालापन कमल के पत्तों और फिर पानी तक उतर आया। सारस किसी बादल, कमल या कनेर से

भी ज्यादा सफेद थे। बिना किसी सूचना के वे अचानक ही उड़ गए। जोडी को लगा था तो वह घंटे-भर का वह नाच समाप्त हो गया था या फिर उन्होंने किसी मगरमच्छ की नाक पानी के ऊपर उठती देख ली थी ! कुछ भी हो, वे वहाँ से उड़ गए थे। छिपते हुए सूर्य की ओर उन्होंने एक गोला-सा बनाया था और उड़ान के समय की चीख भरते हुए उड़ गए। तब पच्छिम की ओर उनकी कतार लम्बी होती गई और अन्त में वे ओझल हो गए।

पैनी और जोडी ने भी कमर सीधी की और उठ खड़े हुए। बहुत देर तक रेंगकर चलने से उनके अंग दुख रहे थे। घास पर अँधेरा छा चुका था। जोहड़ साफ़-साफ़ दिखाई नहीं दे रहे थे। संसार जैसे परछाई में मिलते-मिलते स्वयं परछाईं बन गया था। वे उत्तर की ओर घूम पड़े। जोडी ने अपनी मछली खोज निकाली। तब वे पूरब की ओर मुड़े। दलदल को पीठ पीछे छोड़कर वे फिर उत्तर की ओर मुड़ चले। अन्धकार बढ़ता गया और पगडंडी धुँधली पड़ती गई, यह जंगल की सड़क में मिल गई थी। वहाँ वे फिर पूरब की ओर मुड़े और विश्वास के साथ बढ़ने लगे, क्योंकि यह सड़क दोनों ओर के घने पेड़ों के बीच से होकर चल रही थी। जंगल काला पड़ चुका था, पर यह सड़क अब भी धुँधली-सी दीख रही थी, जैसे कोई रेतीला और आवाज़-रहित नमदा बिछा हो। छोटे-मोटे जन्तु उनका रास्ता काट जाते और झाड़ियों में भाग जाते। दूर पर एक चीता दहाड़ा। उनके सिर पर से कुछ बड़े चमगादड़ उड़ गए। पर वे दोनों चुपचाप चलते रहे।

घर पर रोटी पककर तैयार थी। गर्म चरबी लोहे के पतीले में पड़ी थी। पैनी ने तेल वाली लकड़ी जलाई और उसे मशाल के रूप में लेकर पशुशाला की ओर नित्यकर्म के लिए चला। जोडी ने रसोई की पिछली तरफ अँगीठी की रोशनी में मछली को छीलकर काटा। माँ ने उन टुकड़ों को भी तलकर तैयार कर दिया। सबने भोजन किया, पर चुपचाप।

श्रीमतीजी पूछ बैठीं, "आखिर तुम लोगों को क्या हुआ है ?"

उत्तर में वे मौन रहे। उन्हें न तो खाने का ध्यान था, न ही उस औरत का ! उन्हें इतनी ही सुध थी कि वह कुछ बोली है, पर उनका ध्यान कहीं और था। उन्होंने आज एक ऐसा दृश्य देखा था, जो इस धरती का न था। उस नज़ारे की सुन्दरता से मोहित होकर वे ध्यान में डूब-से गए थे।

11

हिरणों के बच्चे होने का मौसम आ गया था। जोडी ने जंगल में इधर-उधर उनके नुकीले और कोमल खुरों के निशान देखने शुरू कर दिए थे। वह स्रोत, जंगल या मकान के दक्षिणी हिस्से की ओर या फंदों की ओर जहाँ भी जाता, वहीं पर किसी न किसी नए पशु के निशान देखता। उसे यह भी दिखाई दिया कि इनके आने-जाने को रोकने के लिए उसका पिता अत्यन्त विवश था। उसे कहीं-कहीं हिरणियों के पाँवों के निशान भी दिखाई दिए। यह निशान उन बच्चों के निशान के कुछ आगे-आगे चल रहे होते थे। परन्तु यह निशान कुछ चंचल भी थे। कुछ जगह यह निशान अलग-अलग स्थानों पर भी मिलते थे, क्योंकि हिरणी ने कहीं एक जगह भोजन किया और बच्चा कुछ दूरी पर टिका रहा। ऐसा हिरणी जान-बूझकर करती थी। क्योंकि उसे बच्चों को किसी सुरक्षित जगह पर छोड़ना होता था। कभी-कभी जुड़वा बच्चों के भी निशान दिखाई दे जाते। इन जुड़वा निशानों को देखते ही जोडी का मन चंचल हो उठता था। वह

हमेशा ही ऐसे समय सोचने लगता था, 'इनमें से एक अगर मैं हिरणी के लिए छोड़ भी दूँ तो दूसरे को बड़ी आसानी से अपने लिए रख सकता हूँ।'

एक रात उसने यह बात अपनी माँ से कह दी "माँ, क्या हमारे पास दूध काफी नहीं है? तो क्या ऐसी दशा में अगर मैं एक छोटा-सा हिरण का बच्चा पाल लूँ तो कुछ आपत्ति होगी? मैं चित्तीदार हिरण के बच्चे को पालना चाहता हूँ।"

"मुझे 'ना' कर देनी होगी। तुम्हारा मतलब है कि दूध अधिक है? एक सवेरे से दूसरी सुबह तक एक बूँद भी तो दूध नहीं बचता।"

"तो मैं अपना दूध उसके लिए दे दूँगा।"

"हाँ, वह बच्चा तो मोटा होता रहे और तुम और पतले होते जाओ। आखिर तुम यही चाहते हो कि एक बेकार चीज़ तुम्हारे चारों ओर चक्कर काटती रहे और दिन-रात तुमसे चिपटी रहे?"

"मैं तो कोई एक चीज़ चाहता हूँ, चाहे रैकून हो या कुछ और। पर रैकून नीच प्रवृत्ति का होता है। मुझे भालू का बच्चा भी पसन्द था, पर वह भी अपनी नीचता दिखा जाता है। मुझे आखिर कुछ न कुछ ज़रूर चाहिए जिसे कि मैं अपना कह सकूँ और जो हर जगह मेरे पीछे-पीछे चल सके। मैं भी ऐसी किसी चीज़ पर भरोसा करना चाहता हूँ।" उसका चेहरा कुछ संकोच में भर आया और जैसे-तैसे शब्दों को चुनते हुए उसने अपनी बात पूरी की। उसकी माँ ने घृणा प्रकट की, "तब इतनी तसल्ली रखो कि तुम्हें ऐसी चीज़ कहीं भी नहीं मिलेगी। कोई भी पशु या मनुष्य इस प्रकार का नहीं दिखाई देगा। मैं नहीं चाहती कि तुम सारे समय मुझे तंग करते रहो। यह भी मैं साफ बता दूँ कि अगर अब तुमने कभी हिरण के बच्चे, रैकून या भालू के बच्चे का नाम लिया, तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

दूर बैठा पैनी इस बात को सुन रहा था। अगले दिन सवेरे वह बोला, "हम आज एक बारहसिंगे का शिकार करने जाएँगे। जोडी, यह सम्भव है कि हमें कहीं कोई आराम करता हुआ हिरण का बच्चा मिल जाय। इनका बढ़कर जंगली हो जाना भी उतना ही प्यारा लगता है, जितना कि इनको पालतू बना लेना।"

जोडी ने उत्सुकता में पूछा, "क्या हम कुत्ते भी साथ लेते चलें?"

"नहीं, केवल जूलिया ही हमारे साथ चलेगी। वह भी इसलिए कि जब से वह जख़्मी हुई है, उस बेचारी को बाहर जाना नहीं मिला। शिकार में कुछ भाग-दौड़ उसके लिए अच्छी ही साबित होगी।"

श्रीमतीजी बोल पड़ीं, "वह पुराना हिरण का माँस बड़ी जल्दी समाप्त हो गया था। पर हम इस विषय में कभी अधिक ध्यान नहीं दे पाए। मुझे तो कुछ सूअर का माँस इस धुएँ वाली कोठरी में और भर दो। कम से कम यह कमरा तो फिर से भरा-पूरा लगे।"

उसका स्वभाव खाने-पीने की बात आते ही अपनी अच्छाई और बुराई साफ़ प्रकट कर देता था।

पैनी बोला, "जोडी, अब ऐसा लगता है कि बारूद वाली बन्दूक तुम्हें मिल जानी चाहिए। पर इसे अभी चलाना शुरू न कर देना। कहीं मेरे जैसे ही यह तुम्हें भी चोट न पहुँचाए।"

वह कुछ अशान्त-सा होने लगा, पर उसे यह भी विश्वास हो गया कि आखिर उसे कभी तो इसका प्रयोग करना मिलेगा। पिछले रैकून की सफ़ेद-सी खाल का थैला उसकी माँ ने सी दिया था। उसने उसी में कुछ गोलियाँ और कुछ टोपियाँ साथ, ही बारूद की डिब्बियाँ आदि भर लीं।

पैनी बोला, "श्रीमतीजी, मैं सोच रहा था कि मुझे वौलूसिया जाना ही पड़ेगा, क्योंकि कुछ तो कारतूस लाने हैं और कुछ असली कॉफ़ी और बीज वगैरह भी लाने हैं। लेम ने मुझे केवल दो-चार ही कारतूस दिए थे और वे खतम हो चुके हैं।"

श्रीमतीजी उत्साह में आ गईं। बोलीं, "हाँ, मेरे लिए भी ! सूई और धागा वगैरह मैंने भी मँगाना है।"

वह बोला, "आजकल बारहसिंगे नदी की तरफ चरने आये हुए हैं। उधर की तरफ मैंने उनके पाँवों के निशान बहुत बड़ी संख्या में जाते हुए देखे हैं। मुझे यकीन है कि मैं और जोडी उधर की ओर कोई अच्छा शिकार फँसा सकते हैं। कम से कम एक या दो बारहसिंगे हमें मिल जाएँगे और हम उनकी पीठ और धगड़ों के माँस और उसकी खाल को बेचकर वौलू-सिया से अपनी ज़रूरत की चीज़ों को खरीद सकते हैं। वहीं पर हम दादी हुट्टो का भी हाल-चाल पूछ लेंगे।"

श्रीमतीजी झुँझलाईं, "फिर तुम उस खुर्राट बुढ़िया के यहाँ जाने की सोचने लगे। तो, क्या दो दिन के लिए जा रहे हो? मुझे यह अधिक अच्छा लगेगा अगर तुम जोडी को यहाँ छोड़ते जाओ।"

जोडी घबराया और उसने बड़ी करुण दृष्टि से पिता को देखा। पैनी बोला, "हम कल ही वापस आ जाएँगे। यह बताओ अगर जोडी मेरे साथ न जाय, तो वह शिकार खेलना और लोगों से मिलना-जुलना कैसे सीख सकेगा?"

"हाँ, यह अच्छा बहाना है। ठीक है, मर्द लोग चाहते ही हैं कि वे इकट्ठे रहें।"

"अच्छा तो, श्रीमतीजी! आइए, आप ही मेरे साथ चलकर शिकार खेल लें।"

जोडी हँस पड़ा। उसे ज्यों ही अपनी माता के भारी-भरकम शरीर का ध्यान आया तो वह झाड़ियों और पगडंडियों में अटकती-भटकती उसकी शक्ल का ध्यान करके मन ही मन प्रसन्न हुआ। वह हँसकर बोली, "अच्छा भई, चले जाओ। तब पूरा काम करके आना।"

पैनी ने भी मज़ाक की, "मैं जानता हूँ, तुम भी अकेले रहना चाहती हो।"

उसने स्वीकार किया, "यही तो मेरे आराम का तरीका है। अच्छा, तो मुझे वह पुरानी बन्दूक भरकर यहीं देते जाना।"

जोडी को पुरानी खानदानी बन्दूक किसी घुस आने वाले से रक्षा करने की बजाय अपने पर ही आफ़त लाने के समान लगी। फिर उसकी माँ को न बन्दूक चलानी आती थी और न वह ठीक निशाना लगा सकती थी। यह बन्दूक पैनी की पुरानी बन्दूक के समान विश्वास के लायक भी नहीं थी। वह फिर भी यह अनुभव करता था कि इसके रहने से माँ को तसल्ली रहेगी। इसलिए वह गया और पिछले छप्परों में से वह बन्दूक उठा लाया और पिता के हाथ में दे दी। पैनी ने भी ख़ैर मनाई कि उसने ताज़ा मिली नई बन्दूक को नहीं माँगा।

उसने जूलिया के लिए सीटी बजाई और तब वे तीनों दोपहरी से पहले ही पहले पूरब की ओर निकल चले। जेठ का महीना था। गर्मी और घुटन

चारों ओर छा रही थी। जंगल में से सूरज की धूप छन-छनकर आ रही थी। जंगली सनावरों के छोटे-छोटे पत्ते छाते का काम दे रहे थे। परन्तु जोडी के पाँव झुलसने लगे। गाय के चमड़े के जूते भी रक्षा न कर सके। पर, इस सबके बाद भी जोडी तेज़ चाल से चलता रहा। और जोडी कर भी क्या सकता था ? आगे-आगे जूलिया उछलती-कूदती भाग रही थी, पर अब तक भी किसी शिकार की गन्ध उसे न आई थी। पैनी एक क्षण के लिए रुका और उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई। जोडी ने पूछा, "क्या देख रहे हो, पिताजी ?"

"कुछ नहीं, बेटे। ऐसे ही कुछ थोड़ा-सा।"

अपने खेतों के एक मील पूरब की ओर उसने अपनी दिशा बदल दी। वहीं उसे हिरणों के अनेक निशान एक साथ दिखाई दिए। पैनी ने उन्हें अच्छी तरह देखा और उनकी लम्बाई-चौड़ाई, ताज़गी और नर-मादा के भेद को देखने लगा। आखिर में वह बोला, "यहाँ से दो बारहसिंगे इकट्ठे गए हैं और वे यहाँ परसों आए थे।"

"आप यह कैसे जान सकते हैं, इन निशानों को देखकर ?"

"सिर्फ़ अभ्यास से।"

जोडी ने पहचानना चाहा, पर उसे उनमें कोई ख़ास फ़र्क न दिखाई दिया। पर तब उसके पिता ने कुछ ठहरकर अपनी अँगुली से निशान बनाते हुए उसे समझाया और बोला, "अब तुम हिरणी और बारहसिंगे का फ़र्क तो पहचान सकते हो। हिरणी का खुर नुकीला और साफ़ होता है। और यह तो कोई भी बता सकता है कि यह निशान कितना ताज़ा है ? क्योंकि पुराने निशान पर कुछ थोड़ी-बहुत रेत उड़कर गिर जाती है। और अगर और अधिक ध्यान से देखो तो तुम्हें हिरण के पाँव का निशान साफ़ फ़र्क से दीख जाएगा। दौड़ते हुए उसके पाँव थोड़े फैल-से जाते हैं। पर जब वह चल रहा होता है, तब उसके खुर अधिक सटे हुए रहते हैं।"

तभी उसे कुछ नए निशान दीख गए और जूलिया को सुनाकर वह बोला, "पकड़ो इसे। चलो इधर।"

जूलिया झुकी और अपनी लम्बी नाक से उसने उस पगडंडी को सूँघा। यह पैड़ उन्हें जंगल से बाहर दक्षिण-पूर्व की ओर ले गई और तब वह गॉल-

बेरी की झाड़ियों के खुले मैदान में निकल आए। यहाँ पर उन्हें भालू के पाँव के निशान भी दिखाई पड़े। जोडी ने पूछा, "अगर मौक़ा मिले तो क्या मैं भालू पर भी निशाना बाँध सकता हूँ ?"

पिता ने उत्तर दिया, "भालू हो या बारहसिंगा, निशाना मार ही देना चाहिए। पर इतना ध्यान अवश्य रखो कि मौक़ा ठीक हो। अपनी गोली बेकार न गँवाना।"

इन झाड़ियों में से राह निकालना कठिन न था, परन्तु सूर्य बहुत बुरी तरह तप रहा था। इन झाड़ियों के खत्म होते ही चीड़ के पेड़ों का एक खुला मैदान आ गया। इनकी छाया उन्हें अच्छी लगी। यहाँ पैनी ने एक छिले हुए पेड़ की ओर इशारा किया और जोडी को बताया कि इसे किसी रीछ ने छीला है। चीड़ के पेड़ पर कुछ ऊँचाई पर पंजों के निशान थे और इनमें से राल टपक रही थी। पैनी बोला, "मैंने कई बार भालू को इस तरह खुरचते देखा है। वह कभी अपने शरीर को तानता है, कभी पंजे इस पर जमाता है और फिर वह अपना सिर इधर-उधर मारते हुए खूब गुस्से में आकर इसे रगड़ना शुरू कर देता है। इनमें से टपकने वाली राल से वह अपने कन्धों को रगड़ता है। कुछ का यह खयाल है कि वह मधुमक्खियों के काटने से अपने को बचाना चाहता है और इसीलिए इस तरह रगड़ता है। पर मुझे ऐसा लगता है कि वह ऐसा केवल मस्ती के कारण ही करता है। बारहसिंगा भी मस्ती में आकर यही कुछ करता है। अपनी ताकत को परखने के लिए वह छोटे-छोटे पेड़ों पर अपने सींग और सिर मारता है।"

तभी जूलिया ने अपनी नाक उठाई। पैनी और जोडी उसकी ओर देखने लगे। कुछ देर के लिए सामने कुछ गड़बड़-सी लगी। पैनी ने जूलिया को पीछे किया और अपने आप सरककर आगे बढ़ा। टहनियों के बीच से उसे दिखाई दिया कि दो भालू के बच्चे चीड़ की एक शाख पर लटक रहे हैं, जैसे वह कोई झूला हो। यह पेड़ ऊँचा था, पर इसकी यह शाख झुकी हुई थी। इस पर लटकते हुए भालू के ये दो छोटे बच्चे आगे-पीछे आ-जा रहे थे। जोडी को इसी प्रकार का अपना झूलना याद आ गया। उसे लगा, काश ! वह भी इनके साथ ही इसी शाख पर झूल पाता। यह शाखा कभी एकदम झुक आती थी और कभी इधर-उधर उठती-गिरती थी। इस बीच

वे दोनों बच्चे बड़ी प्यार-भरी बातें भी करते चलते थे। जूलिया भौंकने से न रुक सकी। उसे सुनकर उन बच्चों ने कुछ देर के लिए खेल रोक दिया और वे इन इन्सानों पर अचरज में डूबकर देखने लगे। परन्तु वे चौंके नहीं। उन्होंने शायद इन्सान पहले-पहल ही देखे थे, इसीलिए उनमें कौतूहल अधिक था और डर कम। उन्होंने फिर से अपने काले बालों वाले सिर इधर-उधर घुमाने शुरू कर दिए। एक कुछ और ऊपर चढ़ गया, ताकि वह उन्हें और साफ़ देख सके। वहाँ से उसने अपनी एक बाँह शाख पर लटका ली और उसके सहारे नीचे झूल पड़ा। उसकी काली और रतनारी आँखें चमक रही थीं।

जोडी बोल पड़ा, "हाय, पिताजी! इनमें से एक को ज़रूर पकड़ लीजिए।"

पैनी को खुद भी लोभ आ गया। परन्तु कुछ सोचकर वह बोला, "इन्हें पालतू बनाना कठिन है। ये कुछ बड़े हैं। पर हमारे साथ एक दिक्कत और भी है और वह यह कि इनके पीछे-पीछे या तो तुम्हें या मुझे या फिर तुम्हारी माता को दौड़ते रहना पड़ेगा। और यह हम कर नहीं सकते।"

"पिताजी! वह देखिए, कैसी आँखें बना रहा है?"

"हाँ, यही इन दोनों में से नीच है। भालू के जुड़वा बच्चों में से हमेशा ही एक अच्छा होता है और एक नीच।"

"तो फिर, पिताजी! क्या हम भले बच्चे को न पकड़ लें?"

उन बच्चों ने अपनी गरदनें कुछ अधिक लटकाईं। पैनी ने जोडी को मना किया और मनाते हुए बोला, "आओ, इन्हें यहीं छोड़कर हम अपने काम पर आगे चलें।"

जोडी पीछे-पीछे चल रहा था और उसका पिता पैड़ खोजता हुआ आगे-आगे बढ़ रहा था। उसे लगा कि शायद एक बार वे बच्चे नीचे आने लगे थे। पर फिर वे ऊपर से ऊपर ही चढ़ते गए और अपने सिर घुमा-घुमा कर उसे देखते रहे। उसकी बहुत इच्छा थी कि वह उन्हें एक बार छू पाता। अब उसे खयाल आ रहा था कि दादी हुट्टो के बताए पालतू रीछों जैसे मानो ये भी अपनी कमर के बल उसके सामने बैठे हों और कुछ माँग रहे हों, या फिर कभी उसकी गोदी में आ चढ़ते हों और इस प्रकार अपना

प्यार, गुस्सा और खुशी उसे दिखाते हों। उसे लगा कि जैसे ये भी उसके बिस्तर पर उसके ही पाँवों में पड़कर सोना चाहते हों—शायद उसकी रज़ाई में घुसकर अगर कहीं सर्दियों की रात हो। यह सोचते-सोचते वह बहुत पिछड़ गया। उसका पिता बहुत दूर निकल चुका था। वह दौड़ा और पीछे की ओर मुड़कर उन भालू के बच्चों की ओर हाथ का इशारा भी करता गया। उन्होंने भी अपनी काली नाकें ऊपर को उठाईं, मानो हवा से उन्हें यह पता चल जाएगा कि ये आदमी कहीं शिकारी तो नहीं थे ? उसे लगा कि उन्हें जैसे कुछ घबराहट हुई और वे जल्दी-जल्दी नीचे उतरे और भागकर गॉलबेरी झाड़ियों की ओर निकल गए। तब तक वह अपने पिता के पास पहुँच चुका था। पैनी ने उससे पूछा, "क्या तुमने कभी अपनी माँ से ऐसा कोई जानवर पालने की बात पूछी है ? तुम्हें तो पालने के लिए कोई बहुत छोटा बच्चा चाहिए।"

जोडी को यह बात हौंसला बढ़ाने वाली लगी। उसे लगा कि इतने बड़े बच्चे पालने सचमुच कठिन होंगे।

पैनी बोला, "सच तो यह है कि मुझे अपने बचपन में कभी किसी ऐसी चीज़ से खेलना नहीं मिला। हमारे पिता ने हमें पाला ही इस ढंग से कि सब-कुछ गड़बड़ हो गया। वह तुम्हारी माता के समान ही थे। आखिर खेती और बाइबिल ही तो हमारा भला नहीं कर देंगी। वे सारे जानवरों को खाना-पीना नहीं दे सकतीं। वे जैसे-तैसे हमारा पेट ज़रूर भर देते थे। पर एक दिन वे भी गुज़र गए। और, तब सबसे बड़ा होने के कारण मुझे ही सारे परिवार की देख-भाल का बोझ अपने कन्धों पर उठाना पड़ा।"

"पिताजी, क्या भालू का बच्चा अपने दाने-पानी की चिन्ता खुद नहीं पूरी कर लेता ?"

"हाँ, पर तुम्हारी माता के मुर्गी के बच्चों को खाकर।"

जोडी ने एक लम्बी साँस ली और पिता के साथ ही बारहसिंगे के पाँव के निशानों को खोजने लगा। उन दोनों बारहसिंगों के पाँव के निशान साथ-साथ चल रहे थे। जोडी को अचरज हुआ कि जानवर भी वसन्त और गर्मी के मौसम में इतने साथ-साथ रह सकते हैं। जब इनके सींग बड़े हो जाते हैं, तब ये हिरणियों के पास से बच्चों को खदेड़ देते हैं। और इसके

लिए बुरी तरह लड़ते हैं। इन दोनों में से एक बड़ा था और एक छोटा।

पैनी ने इशारा किया, "इनमें से एक इतना बड़ा है कि इस पर सवारी भी की जा सकती है।"

वहीं चीड़ के पेड़ों में हरियाली का एक छोटा-सा मैदान था। यहीं पर डौगबेन काफी खिला हुआ था और उसके पीले घंटीनुमा फूल खिले हुए थे। पैनी ने यहाँ अनेक पेड़ों में से कुछ खोजबीन की और बोला, "हाँ, तो बेटे, तुम हिरण के बच्चे देखना चाहते थे न ! मैं और जूलिया कुछ दूर तक चक्कर काटने जाएँगे। तुम यहाँ पेड़ पर [illegible] में ढूंढो। मुझे विश्वास है कि तुम कुछ न कुछ अवश्य देखोगे। अपनी बन्दूक यहीं झाड़ियों में छुपा देना। तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

जोडी ने उस पेड़ के अधबीच ही अपने को टिका लिया। थोड़ी देर में पैनी और जूलिया उसकी आँखों से ओझल हो गए। इस सनावर की छाया उसे बड़ी शीतल लगी। एक हल्की-सी मन्द बयार इसके पत्तों में से बहने लगी। जोडी के उलझे हुए बालों में गीलापन-सा आ गया। चेहरे और आँखों का नीलापन उसने अपने हाथ से पोंछ डाला और बालों को हाथों से पीछे हटा दिया। वह खुद भी चुप हो गया और चारों ओर भी सन्नाटा-सा छा गया। बहुत दूर पर एक बाज़ बहुत तेज़ आवाज़ में चिल्लाता हुआ उड़ गया। पेड़ों पर विश्राम करते हुए पक्षी न हिले, न डुले। किसी भी पक्षी या जन्तु ने खाना खाने के लिए भी हिल-डुल न की। दोपहरी पूरे उभार पर थी। सूर्य अपनी पूरी ऊँचाई पर था और उसकी गर्मी मानो सबको आराम करने के लिए विवश कर रही थी। केवल पैनी और जूलिया ही ऐसे थे जो कहीं दूर पर थोड़ी हलचल कर रहे थे। इसी बीच जोडी ने नीचे देखा। उसके नीचे की झाड़ियों में कुछ आवाज़-सी हुई। उसे लगा कि शायद उसका पिता लौट रहा हो, वह खुद जल्दी-जल्दी उतरने लगा। पर उसी बीच मिमियाने की आवाज़ आई। एक छोटा-सा हिरण का बच्चा इधर-उधर ताड़-जैसी झाड़ियों में भागता फिर रहा था। जोडी को लगा कि यह काफ़ी देर से वहीं था और उसके पिता को इसका पता था। वह साँस रोककर उसे देखने लगा।

इसी समय एक हिरणी झाड़ियों में से कूदती हुई आई और यह बच्चा

अपने लड़खड़ाते क़दमों से उसकी ओर बढ़ पड़ा। उसने इसके उत्सुक-से चेहरे को खूब चूमा-चाटा। इसके बदन पर इतनी चित्तियाँ थीं कि मानो चारों ओर आँखें और कान ही बने हुए हों। जोडी ने इतना छोटा बच्चा आज तक न देखा था। हिरणी ने अपनी नाक ऊपर की ओर उठाई और अपने चौड़े नथुनों से हवा को सूँघना चाहा। उसे अपना दुश्मन इन्सान कहीं पास ही दिखाई दिया। वह फिर अपने कदमों पर उछल पड़ी और इस सनावर के चारों ओर घूम गई। उसे एक आदमी और कुतिया के पाँवों के निशान दिखाई दिए। उसने कुछ दूर तक आगे-पीछे की ओर इसका पीछा किया और हर क़दम पर वह अपना सिर पटकती रही, मानो सूँघ रही हो। तब वह रुकी और उसने कुछ सुना। उसके कान जैसे अकड़कर खड़े हो गए। उसकी आँखें चमक रही थीं।

बच्चा मिमियाने लगा। हिरणी शान्त हो गई। उसे भरोसा हो गया था कि खतरा आया और टल गया। बच्चा उसके स्तनों को कुछ देर सिर मारता रहा और फिर उसने चूँघना शुरू कर दिया। सिर मारते हुए, इसकी छोटी-सी पूँछ अधिक पीने की खुशी में खड़ी हो जाती। परन्तु, हिरणी अब भी सन्तुष्ट न थी। वह अलग होकर सीधी उस पेड़ के नीचे ही आ गई। जोडी के नीचे की शाखों ने उसे पूरा नज़ारा न देखने दिया, परन्तु फिर भी उसने यह पहचान लिया कि हिरणी ने उसकी गन्ध पहचान ली है और वह ऊपर की ओर सिर उठाए उसे खोजना चाहती है। उसकी नाक उसके हाथ, चमड़े के जूतों और पसीने-भरे कपड़ों की ओर उठ रही थी; ठीक उसी तरह जैसे किसी पारखी की आँखें किसी ताज़ा पैड़ की ओर लगी हुई होती हैं। दूध का भूखा बच्चा उसके पीछे-पीछे चल रहा था। एकाएक ही हिरणी ने चक्कर काटकर छलाँग भरी और अपने पीछे पाँवों से बच्चे को एक झाड़ी की ओर पटक दिया। कुछ ही देर में कुलाँचें भरती हुई वह झाड़ियों को पार कर गई।

जोडी धीरे-धीरे नीचे उतरा और उसने उस काँपते हुए बच्चे को ढूँढना चाहा। परन्तु अब वह वहाँ नहीं था। उसने उस ज़मीन को भली प्रकार देखा-भाला। वे छोटे-छोटे निशान एक-दूसरे से इतने उलझे हुए थे कि वह एक को दूसरे से अलग नहीं कर सकता था। वह वहीं बैठकर पिता

का इन्तज़ार करने लगा। थोड़ी देर में पिता लौटा। उसका चेहरा लाल था और वह पसीने से तर था। आते ही वह बोला, "अच्छा बेटे, तो तुमने क्या देखा ?"

"मैंने देखी एक हिरणी और उसका बच्चा। वह बच्चा अब तक यहीं था, वह माँ को काफी देर तक सूँघता रहा। परन्तु उसकी माँ ने मुझे सूँघा और भाग गई। और अब मैं उस बच्चे को ढूँढ नहीं पा रहा हूँ। आपका क्या विचार है ? क्या जूलिया उसे ढूँढ सकती है ?"

पैनी धरती पर बैठ गया और बोला, "जूलिया उसे क्या किसी भी जानवर को ढूँढ सकती है। परन्तु, इस छोटी-सी चीज़ को तंग करने का क्या लाभ ? यह कहीं यहीं पर अब भी छिपा हुआ है और इसे देखते ही डर के मारे मर न जाय !"

"उसकी माँ को उसे इस तरह न छोड़ना चाहिए था।"

"यही तो उसकी चतुराई है। कोई भी शिकारी उसके पीछे दौड़ेगा, परन्तु वह अपने बच्चे को इस तरह चुपचाप लेटना सिखा चुकी है कि अगर वह उस तरह लेटा रहे तो उसकी ओर किसी का ध्यान भी न जाएगा।"

"पर पिताजी, इस पर बहुत अच्छे निशान बने हुए थे।"

"क्या सभी निशान एक कतार में थे या बिखरे हुए थे ?"

"नहीं, वे सब एक ही लाइन में थे।"

"तो यह किसी बारहसिंगे का बच्चा होगा। तुम्हें इसे इतना नज़दीक देखकर क्या आनन्द नहीं हुआ ?"

"हुआ क्यों नहीं ? पर मेरी मर्ज़ी तो इसे पकड़ने और पास रखने की थी।"

पैनी हँस पड़ा। उसने अपना थैला खोला और भोजन निकाला। जोडी की इच्छा अब भी खाने की बजाय शिकार पर ही जमी हुई थी।

पैनी बोला, "हमें दोपहर कहीं तो बितानी ही है। कोई न कोई हिरण अभी थोड़ी देर में हमारे पास से ही गुज़रेगा। तो क्यों न ऐसी शिकारवाली जगह पर ही यह दोपहर गुज़ारी जाय।"

जोडी ने अपनी छिपाई हुई बन्दूक निकाल ली और खाना खाने बैठ गया। उसका ध्यान अब भी खोया हुआ था, पर नए मुरब्बे की सुगन्ध ने

उसमें खाने के लिए रुझान पैदा कर दिया। यह मुरब्बा अब भी पतला था और पूरा मीठा भी नहीं था। फिर भी यह स्वादु था। जूलिया अभी भी कुछ कमज़ोर थी, वह एक पासा लेकर लेटी हुई थी। अब भी घावों के उसके निशान चमक रहे थे।

पैनी वहीं पीठ के बल लेट गया और आराम से बोला, "वे दोनों बारह-सिंगे इसी रास्ते से लौटने ही वाले होंगे, अगर यह हवा उलटी न बहने लग जाय! अगर तुम्हारा खयाल हो तो तुम उधर पूरब की ओर कुछ दूर पर के उस ऊँचे चीड़ के पेड़ पर चढ़ जाओ। वहाँ से तुम्हें सब-कुछ साफ़ दिखाई देगा। वह तुम्हारे लिए मचान का भी अच्छा काम देगा।"

जोडी ने अपनी बन्दूक उठाई और उन बिखरी हुई झाड़ियों की ओर निकल गया। उसने एक ऐसा पेड़ चुन लिया जहाँ से चारों ओर सब-कुछ दिखाई दे सकता था। इस पेड़ के चारों ओर से कोई भी जानवर बिना नज़र में आए गुज़र नहीं सकता था। इसके सीधे तने पर बन्दूक पकड़कर चलना था तो मुश्किल, पर वह जैसे-तैसे घुटने और ठोड़ी छिलवाता हुआ निचली टहनियों तक पहुँच गया। वहाँ कुछ देर उसने आराम किया और तब जितना ऊपर हो सकता था, चढ़ गया। वहाँ पर एक बहुत हल्की-सी हवा का झोंका बहा। ऐसे लगा, मानो चीड़ ज़िन्दा रहने के लिए हल्की-हल्की साँस ले रहा हो।

जोडी को उन भालू के बच्चों का ध्यान आया जो झूला झूल रहे थे। वह भी अपने पेड़ की एक डाल पकड़कर लटक गया, पर यह उसका और उसकी बन्दूक का बोझ न सहार सकी। इसके तड़कने की आवाज़ आई और वह शान्त हो गया। उसने अपने चारों ओर देखा। उसे लगा कि शायद बाज़ भी इसी तरीके से अपने चारों ओर के संसार को देखता है। ऊपर से एक चील उसकी ओर देख रही थी। जैसे वह कोई बहुत ऊँची बुद्धिमान शिकारी हो और किसी घात में बैठी हो। अब उसने अपना सिर फिर चारों ओर घुमाना शुरू किया। उसे पहली बार लगा कि दुनिया गोल है। वह अपने सिर को चारों ओर जल्दी-जल्दी घुमाने लगा, ताकि सारे क्षितिज को एक साथ ही देख सके।

उसे लगा कि उसकी नज़र सब तरफ पहुँच रही है। वह चारों ओर

की हलचल को देखकर हैरान रह गया। उसे कोई भी चीज़ पास आती हुई न दिखाई दी। हाँ, उसकी ओर ही एक बड़ा भारी बारहसिंगा चरता हुआ आ रहा था। शहतूत और दूसरी झाड़ियाँ उसके भोजन का काम दे रही थीं। पर वह निशाने की मार से बाहर था। जोडी ने सोचा कि कुछ नीचे उतर आए और उसकी ओर बढ़े, पर उसे यह पता था कि जानवर मनुष्य से भी अधिक चौकन्ने होते हैं। उसके बन्दूक उठाने से पहले ही कहीं वह भाग न जाय। वह मन ही मन प्रार्थना करने लगा कि यह उसकी पहुँच में ही रहे। बारहसिंगा भी बहुत धीमी चाल से चलता रहा।

कुछ देर के लिए उसने सोचा कि कहीं यह उससे दूर चरने न चला जाय। परन्तु तभी जैसे वह फिर इस ओर मुड़ पड़ा। जोडी ने अपनी बन्दूक शाखों के सहारे टिकाकर संभाल ली। उसका दिल उछलने लगा। वह अब भी ठीक नहीं सोच पा रहा था कि यह हिरण उसके पास था या बहुत दूर? उसकी आँखों के सामने कुछ धुँधलापन-सा आया और उसे लगा कि उसकी आँख और कान अब तक भी पूरी पहचान करनी नहीं सीखे। वह इस बीच अवसर की इन्तज़ार करने लगा था। तभी हिरण ने अपना सिर उठाया। जोडी ने उसकी गर्दन को निशाना बनाकर मक्खी को टिकाया और गोली दाग दी।

ज्योंही उसने गोली दागी, उसे महसूस हुआ कि उसने अपनी ऊँचाई का खयाल नहीं रखा। शायद गोली ऊँचे गई हो। पर तो भी उसे ऐसा लगा कि यह गोली जानवर को लगी ज़रूर है, क्योंकि उसी समय वह बहुत तेज़ी से उछला। यह उछलना महज़ चेतावनी के रूप में न था। इसने कुछ ही कुलांचों में सामने की झाड़ियों की ओर लम्बा रास्ता तय किया, यह उसी चीड़ के पेड़ के नीचे से गुज़रा। जोडी को लगा, अगर उसके पास अपने पिता वाली दुनाली बन्दूक होती तो वह इस समय दूसरी गोली भी दाग देता। इसी समय उसे अपने पिता की बन्दूक दागने की आवाज़ आई। वह काँपने लगा। धीरे-धीरे पेड़ से उतरा और फिर पुरानी हरियाली वाली जगह पर आ गया। वह बारहसिंगा वहीं सनावर की छाया में पड़ा हुआ था। पैनी उसे पहले से ही छील रहा था। जोडी बोला, "क्या इसे मेरी गोली ने मारा है?"

"हाँ, तुमने ही इसका शिकार किया है। आज तुमने बहुत अच्छा काम किया है। यह तो ऐसे उछल रहा था जैसे एक गोली से इसका कुछ न बनेगा। इसीलिए मैंने भी एक गोली दाग दी। पर यह केवल तसल्ला के लिए ही किया था। असल में तुम बहुत ऊँचे थे न !"

"मैं जानता हूँ। ज्योंही मैंने गोली दागी, मुझे यह समझ आ गया था।"

"अच्छा है, इसी तरीके से तुम सीख जाओगे। अगली बार तुम्हें यह भी पता चल जाएगा। देखो, यह निशान तुम्हारा है और यह मेरा।"

जोडी यह सब देखने के लिए घुटनों के बल झुक गया। उसके भारी-भरकम शरीर को देखकर जोडी पर फिर एक मुर्दनी-सी छाने लगी। उसने उसकी गीली आँखों और गले से बहते हुए खून को देखा और मुँह फेर लिया। बोला, "काश ! हम अपना माँस इन्हें बिना मारे ही पा सकते !"

"है तो यह बुरी बात, पर आखिर पेट के लिए सब करना पड़ता है।"

पैनी अपने काम में जुटा हुआ था। रेती को घिसाकर बनाया हुआ उसका चाकू अपने काम में लगा हुआ था। भुट्टे की मूंठ वाला वह चाकू बहुत तेज़ तो नहीं था, पर तो भी जोडी ने सिर को पहले धड़ से अलग कर दिया था। उधर वह खाल भी घुटनों से नीचे तक उतार चुका था। तब उसने टाँगों को आपस में बाँध दिया और उसके जोड़ों में से अपना हाथ अन्दर डालने लगा। तब इसे सँभालकर उसने पीठ पर लटका लिया। बोला, "अब बोयल्स उसकी खाल को अवश्य माँगेगा। पर अगर तुम चाहो तो दादी हुट्टो को वह भेंट दे सकते हो। हम बोयल्स को मना कर देंगे।"

"मेरा अन्दाज़ है कि वह इसे पाकर और इसका पायदान बनाकर खुश होगी। मेरी इच्छा थी, काश ! मैंने ही इसे मारा होता, ताकि मैं उसे दे सकता।"

"अब भी यह खाल तुम्हारी ही है। मैं अपने हिस्से के तौर पर इसका अगला चौथाई हिस्सा ले लूँगा। आखिर उसके पास भी शिकार मारकर लाने वाला कौन पड़ा है ? ओलिवर समुद्र पर गया हुआ है और वह भूतनाथ यांकी उसके चारों ओर यूँ ही घूमता रहता है।" तब पैनी ने बड़े भोलेपन से कहा, "वैसे अगर तुम चाहो तो अपनी किसी प्रेमिका को इसे

दे सकते हो ।"

जोडी ने नाक-मुँह सिकोड़ी और बोला, "पिताजी, आपको पता है कि मेरी कोई प्रेमिका नहीं है ।"

"क्यों ? क्या तुम्हारी उस यूलाली से दोस्ती टूट गई ? मैंने तुम्हें उसके हाथ से हाथ पकड़े देखा था ।"

जोडी ने उत्तर दिया, "मैंने उसके हाथ नहीं पकड़े थे । यह तो वे लोग एक खेल खेल रहे थे । देखो अगर आपने फिर कभी कहा, तो मैं मर जाना पसन्द करूँगा ।" पैनी कभी भी अपने बच्चे को चिढ़ाता न था, पर कभी-कभी ऐसा मौक़ा भी आ ही जाता था ।

जोडी ने फिर कहा, "मेरी प्रेमिका तो दादी हुट्टो है ।"

पैनी बोला, "कोई बात नहीं । अब तुम सीधे हुए । उसे ही दे देना ।"

वह रेतीली पगडण्डी गर्म और लम्बी थी । पैनी पसीने-पसीने हो रहा था, पर तो भी बोझे को उठाये हुए वह आराम से चलता रहा ।

जोडी बोला, "क्या इसे कुछ दूर मैं उठा लूँ ?"

पर पैनी ने इन्कार कर दिया । बोला, "यह बोझ किसी आदमी की ही पीठ पर अच्छा लगता है ।"

उन्होंने जूनीपर नदी पार की और तब दो मील का लम्बा रास्ता पार करके वौलूसिया नदी और नगर की ओर जाने वाली सड़क पर आ गए । दोपहर बाद वे कप्तान मैकडोनेल्ड के घर के पास से गुज़रे । जोडी को मालूम था कि अब वे फोर्ट बटलर के पास से गुज़र रहे थे । यहीं से सड़क में मोड़ था और चीड़ों और सनावरों का वह जंगल यहाँ खतम हो जाता था । यहाँ कुछ नई ही ताज़गी थी । कीकर और गुलाब वग़ैरह यहाँ खिले हुए थे । सामने बहने वाली नदी का इशारा जैसे उन्हें मिल चुका था । सरु, गेंदा और कई दूसरे प्रकार के अच्छे-अच्छे पौधे अपने केसर से लदे हुए यहाँ खड़े थे ।

वे अब सेंट जॉन नदी के किनारे पर आ चुके थे । यहाँ अँधेरा छाया हुआ था और चारों ओर सुनसान था, मानो चारों ओर की दुनिया से बेखबर और अपने किनारों का भी खयाल न करती हुई अथवा आने-जाने वाले मनुष्यों से भी उदासीन-सी बनी हुई, यह समुद्र की ओर चुपचाप

बढ़ती जा रही है। जोडी इसे देखता रह गया। संसार की ओर जाने के लिए यह एक रास्ता था। पैनी ने वहीं से दूर पार के किश्तीवालों को आवाज़ लगाई। एक आदमी बँधे हुए शहतीरों की किश्ती लेकर उनके पास आ गया और उन्हें परली पार ले आया। उन्होंने पार जाते हुए उस नदी के हलके-हलके बहाव को ध्यान से देखा। पैनी ने किराया अदा किया और वौलूसिया की प्रसिद्ध दूकान की ओर जाने वाली सड़क पर चल पड़े। जाते ही पैनी ने मालिक का स्वागत किया, "कहिए, श्रीमान बोयल्स कैसे हैं? आपको हमारा यह माल कैसा पसन्द आया?"

"पूरे छोटे जहाज़ के लिए अकेला ही काफी है, पर शायद कप्तान इसे अपने लिए ही ले ले।"

"इसके माँस की कितनी कीमत मिल जाएगी?"

"वही, एक ओर के माँस की डेढ़ डालर के क़रीब। मैं सच कहता हूँ कि इन जहाज़ों में नदी के ऊपर नीचे की ओर जाने वाले शहरी यात्री इस हिरण के माँस को सूअर के माँस से कम अच्छा मानते हैं। सचाई हम-तुम जानते ही हैं।"

पैनी ने उस हिरण को माँस वाली बड़ी मेज़ पर बिछा दिया और उसकी खाल उतारने लगा। वह बोला, "हाँ, उन्हें भी इसकी असली कीमत पता चल जाय, अगर वे इसे खुद मारकर लाएँ। जो इसका शिकार खुद खेलता है, उसे ही इसका असली मज़ा आता है।"

कुछ देर वे साथ-साथ हँसते रहे। पैनी का वहाँ हमेशा ही स्वागत होता था। वह अच्छा सौदागर भी था और साथ ही अच्छा मज़ाकिया भी। बोयल्स खुद वहाँ के लोगों के लिए निर्णायक, मध्यस्थ और सारी जानकारी रखने वाला बना हुआ था। इस अजीब-सी गन्धों वाली दुकान के बीचों-बीच खड़ा वह ऐसे लगता था जैसे किसी जहाज का कप्तान सारी कमान सँभाले हुए खड़ा हो। उसके सौदे में उस इलाके के लिए ज़रूरी सभी किस्म की छोटी-मोटी और बड़ी चीज़ें शामिल थीं। हल, गाड़ी, बग्घी, कल-पुर्ज़े, भोजन, दालें, शराब, बर्तन-भांडे, सूखी चीज़ें, दवाइयाँ वगैरह सभी चीज़ें उसके यहाँ मिल सकती थीं।

पैनी बोला, "अच्छा, इसका अगला एक चौथाई हिस्सा मैं कल लौटते

हुए अपनी पत्नी के लिए वापस ले जाऊँगा। और कुछ हिस्सा दादी हुट्टो के लिए हम ले जा रहे हैं।"

बोयल्स बोला, "उस बुढ़िया का भला हो ! मैं उसे बुढ़िया क्यों कहता हूँ, मुझे स्वयं नहीं पता। अगर किसी मनुष्य की स्त्री इतनी ही जवाँ-दिल हो तो उसका जीवन ही एक उत्सव बन जाएगा।"

जोडी उस शीशे के सन्दूक के पास घूमता रहा। उसमें मीठे बिस्कुट और चूसने की दूसरी चीज़ें मौजूद थीं। बालों के चाकू और रेज़र्स आदि बहुत-सी दूसरी चीज़ें भी थीं। जूतों के फीते, बटन, सूई और धागा आदि भी उसमें पड़े थे। कुछ खुदरा चीज़ें साथ के तख्तों पर दीवार के साथ-साथ रखी हुई थीं। बाल्टियाँ, सुराहियाँ, मिट्टी के तेल के दीये, चिलमचियाँ, दूसरे लैम्प, कॉफी के बर्तन, ढली हुई पतीलियाँ, डच चूल्हे आदि सब इस तरह मिले-जुले पड़े थे, जैसे एक घोंसले में बहुत सारी चीज़ें इकट्ठी कर दी गई हों। इससे परे पहनावे और शृंगार की चीज़ें पड़ी थीं। इनमें सफ़ेद सूती कपड़े, दुसूती सन के कपड़े और दूसरे किस्म के बहुत से कपड़े शामिल थे। कुछ गट्ठर फलालेन के कपड़े और कुछ लिनन और दूसरे ऊनी कपड़े धूल से भरे हुए थे। आराम और शृंगार की वस्तुओं की बिक्री गर्मियों के इन दिनों में बहुत कम होती थी। दुकान की पिछली ओर बहुत सारी खुदरा बिक्री की चीज़ें, सूअर का माँस, पनीर आदि पड़ी थीं। चीनी, आटा, मक्की और ज्वार आदि के टीन के टीन भरे पड़े थे। कॉफी के ताज़ा बीज भी डिब्बों में भरे पड़े थे। आलुओं की बड़ी-बड़ी बोरियाँ, राब के बड़े बर्तन, शराब की बड़ी बोतलें आदि भी वहाँ थीं। इन सबमें जोडी को कुछ भी लुभावना न लगा और वह फिर उसी बिक्री की जगह पर शीशे के बने सन्दूक के पास आ गया। उसमें मुँह से बजाने वाला एक बाजा मुलट्ठी के ढेर के पास ही पड़ा था। उसे लगा कि वह अपनी हिरण की खाल के बदले यह बाजा ही ले ले, ताकि दादी हुट्टो के सामने जाकर इसे बजा सके अथवा फौरेस्टर लोगों का साथ दे सके। पर शायद दादी खाल को लेना अधिक पसन्द करेगी। बोयल्स ने उसे पुकारा, "अरे बच्चे, तुम्हारा पिता इधर व्यापार करने कम ही आता है। आज तुम किसी भी चीज़ को माँगो, मैं उसे दो कौड़ी की न समझूँगा।"

उसने चारों ओर बड़ी भूखी निगाह से देखा और बोला, "मुझे यह मुँह से बजाने वाला बाजा तो कुछ महँगा दीखता है।"

"हाँ, पर तुम इसे ले लो। इस बात की चिन्ता मत करो। यह काफी देर से यूँ ही पड़ा है।"

जोडी ने चूसने की चीज़ों की ओर ध्यान दिया, पर उसे ध्यान आया कि दादी के पास ऐसी बहुत-सी चीज़ें उसके लिए होंगी। वह बोला, "धन्यवाद!"

बोयल्स बोला, "तुम्हारा बच्चा बड़ा सलीके वाला है।"

पैनी ने उत्तर दिया, "वह ठीक ही है। बहुत से बच्चे हम खो चुके थे। तब यह मिला। लगता है इसके लिए ही मेरा सारा प्यार बचा हुआ था।"

जोडी अपने गुणों को सुनकर खुश हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह और भी अधिक सभ्य बन सके। अब अपने चरित्र की अच्छाई दिखाने के लिए उसने उस मेज़ की ओर पीठ कर ली। वह दरवाज़े पर कुछ हरकत देखने लगा। यहाँ बोयल्स की भतीजी यूलाली अपनी गुत्तें लटकाए खड़ी थी। उसे उसके चेहरे के दाग़ों से नफ़रत हो आई। ये दाग़ उसके अपने दाग़ों से भी अधिक थे। उसने उसके गिलहरी जैसे दाँतों, हाथों, पैरों और पतले शरीर की हर हड्डी तक से नफ़रत करनी शुरू कर दी। उसी समय उसने एक छोटा-सा आलू एक बोरी में से उठाया और उसकी तरफ फेंकने के लिए तैयार हुआ। लड़की ने ईर्ष्या से उसकी ओर देखा। थोड़ी देर में उसने अपनी जीभ फनियर साँप की तरह निकालकर उसे दिखाई। उसने आलू उस पर दे मारा। यह उसके कन्धे पर जाकर लगा और वह गुस्से-भरी चीख में पीछे हटी।

पैनी बोला, "क्यों, बेटा, यह क्या?"

बोयल्स गुस्से में भरा हुआ आगे बढ़ा। पैनी ने बहुत सख्त होकर कहा, "एकदम यहाँ से बाहर चले जाओ! श्रीमान् बोयल्स, यह इस बाजे लायक नहीं है।"

वह बाहर तपती धूप में निकल आया। उसका अपमान हुआ था। पर अगर यह सब फिर भी उसे दुबारा करना मिलता तो इस बार वह एक और बड़ा आलू फेंकता।

अपना व्यापार खत्म करके पैनी भी उससे आ मिला। बोला, "मुझे अफसोस है कि तुमने मुझे शर्मिन्दा करना अधिक उचित समझा। शायद तुम्हारी माँ ठीक कहती है कि तुम्हें फौरेस्टर लोगों से सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।

जोडी अपने पाँव धरती पर मसलकर रह गया। बोला, "मैं परवाह नहीं करता। मैं उससे नफ़रत करता हूँ।"

"पर बेटे, तुम जिन औरतों से भी नफ़रत करते हो, उन सब पर ही इस तरह कोई भी चीज़ फेंकने का हक़ नहीं रखते।"

जोडी ने बिना पछतावा दिखाए मिट्टी में थूक दिया।

पैनी बोला, "खैर, मैं नहीं जानता दादी क्या कहेगी?"

"ओह! पिताजी, उन्हें मत बताइएगा।"

पैनी एकदम चुप हो गया। जोडी फिर बोला, "अब से मैं ठीक रहूँगा।"

"मुझे नहीं पता कि अब वह तुमसे यह खाल लेगी भी कि नहीं?"

"यह बात मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं अब किसी पर कुछ न फेंकूँगा। पर आप दादी को कुछ मत बताना।"

"अच्छा, इस बार छोड़े देता हूँ, पर मुझे आगे से कभी ऐसा न दिखाई दे। उठा लो अपनी खाल।"

उसका दिल फिर बड़ा हो गया, जैसे आया हुआ बादल हट गया हो। अब वे नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर जाने वाले रास्ते पर मुड़ गए। यहाँ मेग्नोलिया के बड़े छायादार वृक्ष खिले हुए थे। आगे चलकर कनेरों की एक बड़ी पंक्ति थी। यह भी खूब खिले हुए थे। यहाँ लाल चिड़ियाँ बहुत अधिक संख्या में उड़ रही थीं। ये कनेर सफ़द बेल से ढँके हुए एक दरवाज़े तक चले गए थे। यहीं से दादी हुट्टो का बग़ीचा शुरू होता था। जैसे एक उजली रजाई जैसी यहाँ किसी ने फैला दी हो। उसकी कुटिया चारों ओर से लताओं से ढँकी हुई थी, जैसे चमेली आदि की लताओं ने उसे धरती से बाँधा हुआ हो। यहाँ की हर चीज़ बहुत प्यारी और परिचित थी। जोडी रास्ते से होकर बगीचे तक घुसा चला गया। इसी में नील के पौधे अपने मुलायम फूलों के साथ खिले हुए थे।

उसने पुकारा, "दादी !"

हलके-हलके क़दम कुटिया के अन्दर से बाहर तक आए। दादी बोली, "अरे, जोडी ! तुम !"

वह उस तक दौड़ गया। पैनी बोला, "उन्हें गिरा मत देना।"

उसने जोडी के छोटे से शरीर को खूब प्यार किया और वह भी उसे कसता ही गया, जब तक वह चीख न पड़ी।

"अरे, दुष्ट ! भालू के बच्चे !"

वह हँसने लगी और उसने भी अपना सिर पीछे करके उसके साथ ही साथ हँसना शुरू किया। उसने देखा कि उसका चेहरा झुर्रीदार होकर भी गुलाबी था। उसकी आँखें अब भी जामुनों जैसी काली थीं। उसके हँसने के साथ-साथ वे खुलतीं और बन्द हो जाती थीं। उसकी झुर्रियाँ दोनों पासों की ओर तन जाती थीं। वे ऊपर-नीचे की ओर हिलने लगती थीं। और उसकी छोटी गुदगुदी छाती धूल में लोटती हुई बटेर की तरह काँपने लगती थी। जोडी ने उसे एक छोटे पिल्ले की तरह सूँघा। बोला, "मां, तुम्हारी गंध बहुत अच्छी है।"

पैनी बोला, "यह बात, दादी, हमारे-तुम्हारे लिए भी कह सकती हैं। हम तो बिलकुल मैले-कुचैले हैं।"

जोडी बोला, "हमारी गन्ध शिकार के कारण है। हिरण की खाल, पत्ते और दूसरी बहुत-सी चीज़ों की गन्ध है। और फिर पसीना भी है।"

वह बोली, "यह तो बहुत अच्छी गन्ध है। मैं तो सिर्फ़ बच्चे और आदमी की गन्ध के लिए लालायित हूँ।"

पैनी बोला, "खैर, कुछ भी हो, यह लो हमारी भेंट, ताज़ा हिरण का माँस।"

जोडी बोला, "और यह खाल भी। इसे पाँव के नीचे बिछाना। यह मेरी है, इसे मैंने मारा था।"

दादी ने अपने हाथ ऊपर को उठाए। उसके ऐसा करने से उनकी भेंटों की कीमत बढ़ गई। जोडी को लगा कि वह अब अकेला ही चीते को भी मार सकता है, अगर उसकी प्रशंसा मिल सके। दादी ने खाल और माँस को छुआ।

पैनी बोला, "अपने छोटे-छोटे हाथों को मैला मत करो।"

उसने सदा ही मनुष्यों से प्रशंसा पाई, वैसे ही जैसे सूर्य पानी खींचता है। उसकी सुन्दरता पुरुषों को आनन्दित करती थी। जवान मनुष्य उसके पास से उत्साह लेकर जाते थे। बूढ़े पुरुष उसके बालों की उजियाली पर मोहित थे। उसमें कुछ ऐसी बात थी कि जो उसे एक स्त्री के रूप में सबके लिए आकर्षक और सबको उससे उत्साहित कर देती थी। औरतें उससे ज़रूर चिढ़ जाती थीं। चार साल उसके घर में रहकर भी श्रीमती बैक्स्टर उससे नाराज़ होकर अपने घर लौटी थीं। हाँ, बूढ़ी औरतें अवश्य अच्छी भावना से जाती थीं।

पैनी बोला, "लाओ, यह माँस रसोई तक मैं ले जाता हूँ। और यह खाल भी तुम्हारे गोदाम की दीवार पर साफ करके टांग दूँगा।"

जोडी ने फ़लफ़ कुत्ते को पुकारा। वह सफेद कुत्ता दौड़ता हुआ आया और उस पर ऐसे कूदा जैसे वह एक गेंद हो। वह उसके मुख को चूमने लगा।"

दादी बोली, "यह तुम्हें देखकर ऐसे खुश है, जैसे तुम इसके सम्बन्धी हो।"

फ़लफ़ ने दूर बैठी हुई जूलिया को देखा और पहचान लिया। वह कुछ सीधा होकर उसकी ओर बढ़ा। जूलिया बिना हिले चुपचाप बैठी थी।

दादी बोली, "मुझे ऐसा कुत्ता पसन्द है। वह मुझे चाची लूसी लगती है।"

पैनी कुटिया के पीछे की ओर माँस और खाल को रखने गया। उन सबका ही वहाँ स्वागत होता था, चाहे पिता हो, पुत्र हो या कुत्ता हो। जोडी ने अनुभव किया कि जैसे अपने घर से भी वह यहाँ ज़्यादा सुखी था। वह बोला, "अगर मैं सारे समय यहाँ रहूँ तो शायद आप प्रसन्न न होंगी।"

दादी ने हँसी की, "यह तुम्हारी माँ ने कहा होगा। क्या उसने तुम्हें आने से रोका था?"

"नहीं, इस बार तो इतना नहीं रोका।"

वह तीखेपन से बोली, "तुम्हारे पिता ने ऐसी गन्दी औरत से विवाह किया है कि जो कभी खुश ही नहीं होती।"

उसने अपनी अंगुली आकाश की ओर उठाई और बोली, "मेरा दावा है कि तुम तैरने जाना चाहते हो।"

"नदी में ?"

"हाँ, नदी में ही। जब तुम आओगे, तब मैं ओलिवर के कुछ साफ कपड़े पहनने को दूँगी।"

उसने उसे मगरमच्छों या और किसी जन्तु आदि का भय नहीं दिखाया यह बात जोडी को अच्छी लगी। दादी को उसकी सूझ-बूझ पर भरोसा था। वह नदी के किनारे पर उतर गया। नीचे गहरी और छायादार नदी वह रही थी। इसके किनारों पर पानी के टकराने से एक मधुर आवाज़ हो रही थी। परन्तु सारा पानी जैसे बहुत धीमे-धीमे बढ़ रहा था केवल गिरे हुए पत्तों के बहने से ही पानी की तेज़ी पता चलती थी। जोडी किनारे के लकड़ी के मचान पर कुछ देर खड़ा रहा और तब नदी में कूद पड़ा। वह जब ऊपर निकला तो ठण्ड के कारण भारी साँस ले रहा था। उसे धार में फँसने का भय था। इसलिए वह किनारे-किनारे हलकी धार में बढ़ने लगा।

परन्तु वह कुछ बहुत ज़्यादा न बढ़ सका। नदी के दोनों किनारों पर पानी की घास अन्दर तक बढ़ आई थी। कहीं-कहीं वह सनावर और सरु की शाखाओं से घिर जाता था। उसने कल्पना की कि जैसे मगरमच्छ उसका पीछा कर रहा हो और वह तेज़ी से तैरने लगा। वह कुत्ते की तरह अपने पाँव पटकता हुआ एक स्थान से दूसरे स्थान तक मेहनत के साथ बढ़ने लगा। वह सोचने लगा कि वह उत्तर में दूर पर स्थित उस घाट तक शायद ही जा सके, जहाँ स्टीमर रुकते हैं। फिर भी वह बढ़ता गया। सरु का एक ठूंठ आगे बढ़ा हुआ था। वह कुछ देर के लिए उस पर रुका और अनुकूल हवा मिलते ही फिर बढ़ पड़ा। उसे घाट काफी दूर दिखाई दिया। अपनी कमीज़ और पाजामा उसे रुकावट डालते हुए महसूस हुए। उसे लगा कि अगर वह नंगा तैरता तो अधिक अच्छा रहता। दादी इसे बुरा न मानती। उसे आश्चर्य हुआ कि अगर वह अपनी माँ को फौरेस्टर लोगों के नंगा होकर खेलने-कूदने की बात बता देता तो वह क्या कहती ?

उसने अपने कन्धे पर से झाँका। दादी का घाट दूर रह गया था। इस गहरे कालेपन में उसे खुशी न थी। वह फिर मुड़ पड़ा, पर इस बार उसे एक

धार ने पकड़ लिया और वह नीचे की ओर बह पड़ा। उसने किनारे पर पहुँचने की कोशिश की, परन्तु लहरें उसे जकड़े रहीं। उसे लगा कि वह कहीं वौलूसिया बार तक बहकर न निकल जाय, या फिर कहीं जार्ज झील में ही न बह जाए, या फिर कहीं समुद्र में ही न चला जाए ! वह आँख बन्द कर हाथ-पैर मारने लगा और आशा करने लगा कि कहीं भी उसके पाँव टिक सकें। थोड़ी देर में उसने अपने को दादी के घाट के कुछ ऊपर रुका हुआ पाया। वह वहाँ तक बढ़ आया और लकड़ी के मचान को पकड़कर ऊपर चढ़ आया। उसकी साँस भारी थी। भय उससे दूर चला गया था, पर तब भी ठण्डे पानी और भय ने उसे प्रभावित किया था। पैनी वहीं घाट पर था। बोला, "तुम्हें काफी संघर्ष करना पड़ा है। मुझे लगता है कि मेरे लिए किनारे पर नहाना ही ठीक है।" और वह फट्टे से धीरे-धीरे नीचे उतर गया। बोला, "मैं अपने पाँव ज़मीन से नहीं उठाऊँगा। मेरे तैराकी के दिन बीत गए हैं।"

थोड़ी देर बाद ही वह भी पानी से बाहर आ गया। वे इकट्ठे ही कुटिया के पीछे की ओर आ गए। दादी वहाँ नए कपड़े निकालकर उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। पैनी के लिए उसने अपने स्वर्गीय पति के कपड़े निकाले थे और जोडी के लिए ओलिवर के छोटे पड़े हुए कपड़े।

दादी बोली, "लोग कहते हैं कि कुछ चीज़ें अगर बचा ली जाएँ, तो फिर भी बरती जाती हैं। हाँ, जोडी दो सत्ते कितने होते हैं ?"

"चौदह।"

पैनी बोला, "इससे आगे मत पूछना, क्योंकि इसका अध्यापक भी इससे आगे नहीं जानता।"

"खैर ! बहुत-सी चीज़ें पुस्तकों से भी ज़्यादा ज़रूरी हैं।"

"मैं जानता हूँ, पर फिर भी पढ़ना-लिखना तो आना ही चाहिए। मैं जो कुछ भी इसे सिखा सकता हूँ, यह सीख ही रहा है।"

उन्होंने पीछे जाकर अपने कपड़े बदले, बालों में कंघी फेरी और साफ और अच्छे लगने लगे। जोडी का दाग़ भरा चेहरा चमक रहा था। उसके उलझे हुए छोटे बाल गीले और चिकने थे। उन्होंने अपने जूते पहने और जमी हुई धूल अपने पुराने कपड़ों से झाड़ी। दादी ने उन्हें बुलाया और वे अन्दर गए।

जोडी को एक परिचित-सी सुगन्ध आई । उसे अलग-अलग चीज़ें पहचाननी न आती थीं । दादी की आदत एक सुगन्धित इत्र बरतने की थी । उधर अँगीठी पर मर्तबानों में कुछ सूखी घासें पड़ी थीं । शहद की भी गन्ध पहचानी जा सकती थी । पेस्ट्री, खटाइयाँ, फलों वाली केक, आदि बहुत-सी चीज़ें बनी हुई थीं । फ़लफ़ को धाने के लिए बरते जाने वाले साबुन की गन्ध भी आ रही थी । बाहर बग़ीचे से खिड़कियों की राह फूलों की फैलती हुई गन्ध भी आ रही थी । और इस सबसे बढ़कर नदी से उठने वाली सुगन्ध भी आ रही थी । नदी स्वयं कुटिया को चारों ओर से घेरे हुए थी और उसमें से गीलेपन और पत्तों के सड़ने की-सी गन्ध आ रही थी। वहीं पर एक भँवर-सी भी बन गई थी । उसने खुले दरवाज़े में से देखा। रास्ते पर गेंदे बिछे हुए थे । यह रास्ता नदी तक चला गया था । साँझ की मद्धिम रोशनी में नदी चमक रही थी, जैसे वह भी चमकदार सोना हो । इसके बहाव ने जोडी को समुद्र की याद दिला दी, जिस पर ओलिवर तूफानों में भी चढ़ा चला जाता था और संसार को जान पाता था ।

दादी अंगूरों की शराब लाई और मसालेदार केक भी । जोडी को भी शराब को चखने की छूट दे दी गई । यह पानी के समान साफ थी । पैनी ने अपने होंठों से इसे चाटा, पर जोडी को यह मीठी न लगी । उसे फालसे-जैसी कोई शराब अधिक अच्छी लगती । उसने मसालेदार केक खाई, पर साथ ही वह शर्म से गड़ गया, जब उसने देखा कि उसने अपनी तश्तरी खाली कर दी है । अगर वह घर पर ऐसा करता तो उसकी हालत बुरी होती । पर दादी ने केक फिर दे दिए ।

बोली, "अपना दोपहर का भोजन न बिगाड़ लेना ।"

"अगर बहुत देर से न हुआ तो निश्चिन्त रहें !"

वह रसोई में गई और जोडी उसके पीछे-पीछे गया । उसने हिरण का माँस पकाना शुरू किया । वह भी उत्सुकता से भौंह सिकोड़े खड़ा रहा । माँस उन लोगों के लिए कोई बहुत नई चीज़ न थी । दादी ने भट्ठी का दरवाज़ा खोला और उसे मालूम हुआ कि और भी बहुत-सी चीज़ें पकाई जा रही थीं । उसके पास ही लोहे का एक और चूल्हा भी था । इसके अन्दर से निकला हुआ खाना बहुत ही अजीब और खुले चूल्हे पर बने खाने की बजाय

अधिक अच्छा था । जैसे इसका बन्द दरवाज़ा अपने काले पर्दे के पीछे सभी अच्छी चीज़ों को छिपाये रखता हो । केक के कारण उसकी भूख कुछ मन्द पड़ गई थी, पर इन सुगन्धों ने फिर ताज़ा कर दी ।

वह दादी और अपने पिता के बीच आता-जाता रहा । सामने के कमरे में उसका पिता कुर्सी पर बैठा हुआ आराम कर रहा था । पड़ती हुई छाया में वह खोया हुआ था । फौरेस्टर परिवार जैसी उत्तेजना यहाँ न थी; बल्कि यहाँ वैसी ही शान्ति थी, जैसी सर्दियों में रज़ाई ओढ़ने पर होती है । घर में सब कामों से थक जाने पर पैनी के लिए माँस और शराब ही यहाँ अधिक महत्त्व रखती थी । जोडी ने दादी को रसोई में सहायता देनी चाही, पर दादी ने उसे वापस भेज दिया । वह बाहर आँगन में आकर फ़लफ़ से खेलने लगा । जूलिया उसको अचरज से देखने लगी । उसके लिए यह उछल-कूद अजीब-सी थी । उसका काला और भूरा चेहरा काम-काजी कुत्ते का-सा गम्भीर था ।

खाना तैयार था । जोडी की पहचान के लोगों में दादी ही ऐसी थी जिसके यहाँ खाने का कमरा बिलकुल अलग था । हर कोई रसोई में खाना खाता था और केवल एक नंगी चीड़ की मेज़ ही वहाँ इस काम के लिए काफी होती थी । जब दादी खाना लाई तो वह अपनी आँखें उस सफेद कपड़े और नीली तश्तरियों से न हटा सका ।

पैनी बोला, "यह बात अजब ही है । हम जैसे अनजान और आवारा आदमियों को इतनी अच्छी-अच्छी चीज़ें मिल रही हैं ।"

पर तो भी वह दादी से इतना हँसता-खेलता रहा कि जो उसे कभी अपने घर में भी नसीब न हुआ था । बोला, "आश्चर्य है, तुम्हारा प्रेमी अब तक न आया ।"

दादी की काली आँखें तन गईं । बोली, "यह बात तुमने ही कह दी । अगर कोई और होता तो उसे अब तक नदी में डुबो देती ।"

"हाय ! तुमने उस बेचारे ईज़ी के साथ ऐसा ही किया भी तो !"

"पर वह बेवकूफ डूबा नहीं । उसे कभी अपना अपमान पता नहीं चला ।"

"तुम उसे अब भी स्वीकार कर लो । कम से कम तुम्हें उसे डुबोने का

कानूनी अधिकार तो मिल जाएगा।"

जोडी खिलखिलाकर हँस पड़ा। खाना और सुनना दोनों काम वह एक साथ नहीं कर सकता। उसे लगा कि भोजन में वह पीछे रह जाएगा, इसीलिए वह ध्यान से खाने लगा। ईज़ी द्वारा पकड़ी गई एक ताज़ा बास मछली मसाला भरकर बनाई गई थी। आयरलैण्ड के आलू भी उम्दा बने थे। अपने खेतों के आलू खाते रहने के बाद उन्हें ये और भी अच्छे लगे। नए भुट्टों के दाने भी माँस के साथ भूने गए थे। नए दाने बैक्स्टर लोग कम खाते थे, क्योंकि वह सब कुछ पशु आदि के लिए पूरा पकने दिया जाता था। जोडी को दुख हुआ कि वह सब कुछ एक साथ ही नहीं खा सकता। उसने हलकी रोटी और मुरब्बे आदि पर ही खास ध्यान रखा।

पैनी बोला, "यह इतना बिगड़ जाएगा कि इसका माँ को इसे फिर से सुधारना पड़ेगा।"

भोजन के बाद वे बगीचे से नदी के किनारे तक साथ-साथ घूमने गए। किश्तियाँ गुज़र रही थीं। यात्री दादी की ओर हाथ हिलाते और उत्तर में दादी भी उनकी ओर हाथ हिला देती। सूरज अस्त होते-होते ईज़ी ओज़ेल भी शाम का काम करने के लिए उधर ही आ गया। दादी ने अपने प्रशंसक की ओर आँखें घुमाईं और बोली, "क्या वह दुर्भाग्य का एक सिरा नहीं लगता?" जोडी को वह एक पंख-गिरे सारस-सा लगा, जो बीमार हो और काला पड़ चुका हो। उसके बाल गर्दन तक लटके हुए थे। उसकी मूँछें मटमैली-सी थीं और उसके जबड़ों तक गिरी हुई थीं। उसकी बाँहें पासों से लटकती-सी लग रही थीं।

वह बोली, "ज़रा उस बिगड़े यांकी की ओर देखो! उसके पाँव मगरमच्छ की पूँछ की तरह घिसटते आ रहे हैं।"

पैनी ने स्वीकार किया, "वह निश्चय ही सुन्दर नहीं है, पर कुत्ते-जैसा नम्र अवश्य है।"

वह बोली, "मुझे ऐसे आदमी से घृणा है। मैं मुड़ी हुई टाँगों वाली किसी भी चीज़ से घृणा करती हूँ। उसके पाँव तो इतने मुड़े हुए हैं कि उसका पाजामा ज़मीन पर निशान बनाकर चलता है।"

ईज़ी घर के पीछे चला गया। जोडी ने उसे गाय दुहते और बाद में

लकड़ियाँ बटोरता सुना। जब साँझ का काम समाप्त हो गया, तो वह सामने की सीढ़ियों पर आकर बैठ गया। पैनी ने उससे हाथ मिलाए और दादी ने सिर से ही इशारा किया। वह अपना गला खँखारने लगा, जैसे किसी चीज़ ने उसके गले में शब्दों को रोक दिया हो। बाद में बोलने की कोशिश छोड़कर वह सबसे निचली सीढ़ी पर बैठ गया। उसके बारे में बातें होने लगीं और उसका चेहरा सुख अनुभव करने लगा। तारों की रोशनी दीखने पर दादी अन्दर चली गई और ईज़ी भी जाने के लिए उठा।

वह पैनी से बोला, "काश ! मैं भी तुम जैसी बातें कर सकता। तब शायद यह मुझे अधिक पसन्द करती। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते ? या तुम्हारी समझ में वह मुझे यांकी होने के कारण कभी माफ न करेगी। अगर ऐसी ही बात हो तो मैं कसम खाने को तैयार हूँ कि मैं झण्डे पर थूकता हूँ।"

"खैर ! तुम जानते ही हो कि जिस तरह मगरमच्छ अपने शिकार को पकड़े रखता है, उसी तरह औरत भी अपना विचार पक्का रखती है। वह उस बात को नहीं भुला सकती, जब यांकी लोग उसके सुई-धागे तक को उठा ले गए थे और उस बेचारी को मुर्गी के तीन अण्डे सुई और धागे के लिए बेचने पड़े थे। अब अगर यांकी हार मान चुके हैं, तो शायद वह तुम्हें माफ कर दे।"

"पर मैं तो मारा गया हूँ, पैनी ! मैं खुद बुरी तरह हार गया हूँ। यह तो बुल रन का दोष था। तुम लोगों ने हमें अच्छी तरह चाबुक मारे। मुझे वह सब बुरा लगता था।" उसकी याद फिर ताज़ा हो आई। उसने अपनी आँखें पोंछी और बोला, "तुमने हमें तब भी कुचल दिया, जबकि हम तुमसे दुगने थे।"

और वह खिसक गया।

पैनी बोला, "अब इस बेचारे हारे हुए आदमी को देखो। यह दादी तक पहुँचना चाहता था। अपनी छोटी आँखों से वहुत ऊँची उड़ान भरना चाहता है।"

कुटिया के अन्दर जाकर पैनी ने दादी को ईज़ी के विषय में तंग करना शुरू किया। ऐसा ही उसने जोडी को यूलाली के बारे में तंग किया था।

परन्तु दादी जो कुछ सुनती थी, वैसा ही सुना भी देती थी। वह बहुत अच्छी तबीयत की थी। जोडी को इस सब बात से एक पुरानी चीज़ का ध्यान हो आया।

वह बोला, "दादी, लेम फौरेस्टर कहता था कि ट्विंक वैदरबी उसकी प्रेमिका है। मैंने कहा कि वह ओलिवर की प्रेमिका है। पर उसने इस बात को पसन्द नहीं किया।"

"यदि लेम ठीक से लड़ना जानता हो तो ओलिवर खुद ही निबट लेगा।"

दादी ने एक उजले साफ कमरे में उनको सुला दिया। जोडी अपने पिता के साथ ही दूध-सी सफेद चादरों के बीच पसर गया।

वह बोला, "दादी क्या बहुत अच्छी तरह नहीं रहती ?"

पैनी बोला, "कुछ औरतें इसी तरह रहती हैं। पर अपनी माँ के विषय में इससे उलटा मत सोचना। सच तो यह है कि उसके पास करने के लिए कुछ है ही नहीं। सारा दोष मेरा है। वह गन्दे तरीके से रहने को मज़बूर है।"

जोडी बोला, 'काश ! यह मेरी दादी होती और ओलिवर मेरा भाई होता !"

"ठीक है। जो भी सम्बन्धी जैसे लगें, वे सम्बन्धी ही होते हैं। तुम यहाँ दादी के पास रहना पसन्द करोगे ?"

जोडी को खेतों के बीच अपने मकान का ध्यान हो आया। वहाँ उल्लू चिल्ला रहे होंगे। शायद भेड़िए भी चीखेंगे और चीते की चिल्लाहट भी सुनाई देगी। हिरण सोते तक पानी पीने आएँगे। बारहसिंगे उधर आएँगे और हिरणियाँ भी अपने बच्चों के साथ उधर से निकलेंगी। भालू के बच्चे अपने बिछौनों पर इधर-उधर लिपटे पड़े होंगे। उसे लगा कि अपने परिवार की उस ज़मीन में इन सफेद चादरों और रज़ाई आदि से भी अधिक कुछ आकर्षक है।

वह बोल पड़ा, "नहीं, बिलकुल नहीं। मैं दादी को अपने साथ रहने के लिए घर ले जाऊँगा। पर माँ को मनाना होगा।"

पैनी हँस पड़ा, "अरे, प्यारे बच्चे। अभी बड़े होकर तुम औरतों को समझोगे।"

12

जोडी ने पौ फटने से पहले ही दादी के घाट के पास गुज़रते हुए एक भाड़े के स्टीमर की आवाज़ सुनी। वह उठ बैठा और खिड़की में से झाँकने लगा। सवेरे के आकाश के नीचे स्टीमर की बत्तियाँ पीली-सी दिखाई दे रही थीं। उसके पहिए पानी में बड़े ज़ोर से चल रहे थे। वौलूसिया के नज़-दीक उसने एक तेज़ सीटी दी। उसे लगा कि यह रुका है और नदी में ऊपर की ओर आ गया है। कुछ भी हो, इसका गुज़रना ही उसे रुचिकर लगा। अब वह दुबारा सो न सका। बाहर आँगन में जूलिया गुर्राई। पैनी की नींद भी टूटी। उसके दिमाग़ में सदा ही पहरे की भावना रहती थी। हवा की आवाज़ भी उसे उठा देती थी।

वह बोला, "स्टीमर रुका है। कोई आ रहा होगा।"

बाहर जूलिया पहले तेज़ी से भौंकने लगी, फिर गुर्राई और तब शान्त हो गई।

"यह कोई जूलिया का परिचित है।"

जोडी चिल्लाया, "अरे, यह तो ओलिवर है।" और बिस्तरे से कूद पड़ा।

वह नंगा ही कुटिया से बाहर आ गया। फ़्लफ़ जाग गया था और अपने सोने की जगह से भौंकता हुआ दादी के दरवाज़े से बाहर आ गया।

एक आवाज़ आई, "ओ सुस्त लोगो! बाहर निकलो!"

दादी अपने कमरे से भागती हुई आई। उसने एक लम्बा सफेद रात का लिबास और सफेद टोपी पहन रखी थी। उसने अपने कन्धों पर जल्दी-जल्दी शाल कसी। ओलिवर बारहसिंगे की तरह कुलांचें भरता आ रहा था। जोडी और दादी एक झोंके के रूप में उससे जा मिले। उसने अपनी माँ को कमर से उठा लिया। वह अपनी हल्की-हल्की मुट्ठियों से उसे थपथपाती रही। जोडी और फ़्लफ़ उसकी ओर ध्यान बँटाने के लिए मुँह खोले बोलते रहे। ओलिवर ने उन्हें भी बारी-बारी उछाला। पैनी चुपचाप कपड़े पहनकर उनसे आ मिला। उन्होंने अच्छी तरह हाथ मिलाए। सवेरे के उस धुँधलके में ओलिवर के सफेद दाँत चमक उठे। दादी की आँखों ने कुछ और ही भाँप लिया।

बोली, "अरे, डाकू! ये बुन्दे मुझे दे दो।"

वह अपने पंजों के बल खड़ी होकर उसके कानों तक पहुँचने की कोशिश करने लगी। उसकी कनपटी पर दो बुंदे लटक रहे थे। उसने उन्हें खोला और अपने कानों में लगा लिया। वह हँसा और माँ को पकड़कर हिलाने लगा। फ़्लफ़ भी खुशी में भौंकने लगा। इस सब गड़बड़ में पैनी बोला, "भगवान बचाए! अरे, जोडी! तुम बिलकुल नंगे हो।"

जोडी जैसे जम गया। वह भागने को मुड़ा। ओलिवर ने उसे पकड़ लिया। दादी ने अपनी शाल कन्धों पर से खींची और उसकी कमर पर बाँध दी।

वह बोली, "यदि मुझे भी भागना पड़ता तो मैं भी नंगी ही दौड़ी आती। ओलिवर साल में कोई दो बार तो आता नहीं। क्यों बच्चे?"

वह बोला, "अभी अँधेरा ही था, जब मैं चल पड़ा।"

हलचल कुछ शान्त हुई। ओलिवर ने अपना यात्रा का थैला उठाया और अन्दर ले आया। जोडी पीछे-पीछे अन्दर आया। बोला, "ओलिवर,

तुम इतने दिन कहाँ रहे ? तुमने क्या इस बार ह्वेल मछलियाँ देखीं ?"

पैनी बोला, "जोडी, उसे साँस तो लेने दो। आखिर वह छोटे बच्चों के लिए कहानियाँ घड़ तो सकता नहीं। वह पानी उगलने वाला सोता तो है नहीं।"

पर ओलिवर के पास कहानियाँ भरी पड़ी थीं। वह बोला, "नाविक घर इसीलिए तो लौटता है ताकि वह अपनी माँ, प्रेमिका आदि से मिल सके और उन्हें गप्पें सुना सके।"

उसका जहाज इस बार गर्म जगहों पर गया था इसी बीच जोडी अन्दर जाकर कपड़े बदल आया था। वह और दादी सवाल-पर-सवाल पूछने लगे। ओलिवर उत्तर देता जा रहा था। दादी ने फूलदार कपड़ा पहना हुआ था और वह अपने बाल ठीक ढंग से बनाए हुए थी। रसोई में जाकर उसने नाश्ता तैयार किया। इधर ओलिवर ने अपना थैला खोलकर सारी चीज़ें फर्श पर फैला दीं।

दादी बोली, "मैं रसोई और देखने का काम साथ-साथ नहीं कर सकती।"

ओलिवर बोला, "तब कृपा करके नाश्ता पकाओ।"

"तुम कमज़ोर हो गए दीखते हो ?"

"हाँ, मैं तो हड्डियों का ढाँचा रह गया हूँ ! घर आने को बेताब था।"

दादी बोली, "जोडी, ज़रा आग तेज़ कर लो। ये माँस के टुकड़े काट लो। इस माँस को भी ज़रा काट देना। उधर हिरण के माँस को भी ठीक कर दो।"

वह मेज़ पर से एक वर्तन में अण्डे तोड़कर फेंटने लगी। जोडी ने उसकी सहायता की और फिर ओलिवर के पास दौड़ा आया। सूरज चढ़ आया और मकान रोशनी से भर गया। ओलिवर पिता-पुत्र के साथ अपने घुटनों के बल बैठकर हर चीज़ देखने लगा। बोला, "मैं जोडी को छोड़कर हरेक के लिए कुछ-न-कुछ लाया हूँ। इसे तो मैं बिलकुल भूल ही गया।"

जोडी बोला, "कभी नहीं। अभी तुम मुझे नहीं भूल सकते।"

"अच्छा, तो फिर अपनी चीज़ ढूँढकर बताओ !"

जोडी ने रेशम का एक कपड़ा देखा, यह निश्चय ही दादी के लिए था। उसने ओलिवर के कपड़े भी एक ओर कर दिए, जिनमें से अजीब सुगन्धें आ

रही थीं। एक अलग छोटी चीज़ फलालेन के कपड़े में लिपटी हुई थी। ओलिवर ने इसे उसके हाथ से छीन लिया और बोला, "यह मेरी प्रेमिका के लिए है।"

एक छोटी-सी थैली बहुत सारे कीमती और चमकीले पत्थरों से भरी हुई थी। जोडी ने इसे भी छोड़ दिया, और अन्त में एक थैली उठाकर सूँघी। और बोल उठा, "तम्बाकू!"

"हाँ, तुम्हारे पिता के लिए है। यह टर्की का है।"

पैनी ने इसे खोला और बोला, "ओलिवर! उसकी सुगन्ध सारे कमरे में भर गई।" वह फिर बोला, "मुझे याद नहीं आता कि कभी मुझे भी भेंट मिली हो।"

जोडी ने अन्त में एक लम्बे हत्थे वाली चीज़ ढूँढ़ ली। यह भारी और लोहे की बनी थी। बोल पड़ा, "यह है वह।"

"तुम इसे बिना देखे बता ही नहीं सकते कि यह क्या है?"

जोडी ने उसे खोल डाला। यह एक शिकारी चाकू था। इसका पत्ता बड़ा चमकीला और तेज था। जोडी ताकता रह गया।

बोला, "ओलिवर! नहीं, चाकू नहीं!"

"हाँ, चाकू ही। अब तुम्हें पिता जैसे पुरानी घिसी-पिटी रेती रखने की ज़रूरत नहीं।"

जोडी खुश हो गया। उसने रोशनी में एकदम ही तेज़ पत्ता चमका दिया। बोला, "उस जंगल में किसी के पास भी इतना अच्छा चाकू नहीं, फौरेस्टरों के पास भी नहीं।"

"यही बात मैंने भी सोची थी। आखिर वे काले दिल वाले आदमी हमसे आगे क्यों बढ़ें?"

जोडी ने उस चाकू की ओर देखा जो ओलिवर ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ था। उसे एक तरफ ओलिवर दिखाई देता और दूसरी ओर फौरेस्टर। वह उलझन में था। वह बोल पड़ा, "ओलिवर! लेम कहता था कि ट्विंक वैदरबी उसकी प्रेमिका है।"

ओलिवर हँस पड़ा और वह उस चाकू को एक से दूसरे हाथ में उछालने लगा।

वह बोला, "कोई फौरेस्टर कभी सच नहीं बोला। मेरे से मेरी प्रेमिका को कोई छीन नहीं सकता।"

जोडी को कुछ चैन महसूस हुग्रा। उसने दादी ग्रौर ग्रोलिवर दोनों को बता दिया था, इसलिए उसने ग्रपना काम पूरा हुग्रा समझा। ग्रोलिवर को कोई चिन्ता सताती न लगी। तब जोडी को लेम के उस गहरे चेहरे की याद ग्रा गई, जो बड़ा उदास ग्रौर दबा हुग्रा था ग्रौर जो डूबकर वीणा बजाते समय उसका हो गया था। उसने वह चित्र ग्रपने सामने से हटा दिया ग्रौर उन भेंटों में खो गया जो उसका मित्र समुद्र-पार से लाया था।

उसने ध्यान दिया, दादी ने नाश्ता नहीं किया। वह ग्रोलिवर की तश्तरी को ही भरती रही। उसकी चमकदार ग्राँखें ग्रपने बेटे पर भूखी निगाहों से टूटी रहीं। ग्रोलिवर सीधा ग्रौर तना हुग्रा बैठा रहा। उसकी खाल का रंग लाल-सा हो गया था ग्रौर केवल कमीज़ से ढँकी जगह पर ही उसका रंग साफ था। उसके बाल भी धूप से काले पड़ चुके थे ग्रौर कुछ लाली-सी भी उनमें ग्रा गई थी। उसकी ग्राँखें जैसे समुद्र के रंग की ही भूरी नीली-सी बन गई थीं, जिनमें कभी-कभी हरियाली-सी भी चमक जाती थी। जोडी ने ग्रपना हाथ ग्रपनी ही नाक ग्रौर मुरझाई हुई खाल पर घुमाया। उसे लगा कि उसके सिर के पीछे तक की खाल सारी ही भद्दी बनी हुई है। उसके बाल ग्रौर वे लटें, जो बत्तखों की पूंछ के तरीके से पीछे लटकी हुई थीं, उसे भद्दी दिखाई दीं। वह ग्रपने चेहरे से बिलकुल ग्रसन्तुष्ट था।

उसने पूछा, "दादी! क्या ग्रोलिवर बचपन से ही सुन्दर था?"

पैनी बोला, "मैं उत्तर देता हूँ। मुझे याद है जब वह तुम्हारे ग्रौर मेरे दोनों से बुरा था।"

ग्रोलिवर बोला, "तुम भी बड़े होकर सुन्दर हो जाग्रोगे। ग्रगर तुम्हें केवल इसी बात की चिन्ता है, तो उसे छोड़ दो।"

जोडी ने कहा, "मुझे तो इसका ग्राधा भी बहुत है।"

ग्रोलिवर बोला, "मैं तुम्हें ग्राज भेजूंगा, ताकि तुम मेरी प्रेमिका को सन्देश दे सको।"

दादी ने ग्रपनी नाक सिकोड़ी ग्रौर बोली, "घर ग्राने से पहले ही

नाविकों को अपने प्रेम की याद आने लगती है।"

पैनी बोला, "जैसा मैंने सुना है, नाविक लोग प्रेम करना कभी नहीं छोड़ते।"

ओलिवर ने पूछा, "जोडी, तुम्हारी क्या हालत है ? क्या तुमने भी कोई प्रेमिका ढूँढी ?"

पैनी बोल पड़ा, "क्यों नहीं ! क्या तुमने नहीं सुना ? जोडी की प्रेमिका बोयल्स की भतीजी यूलाली है।"

जोडी को फिर लगा कि जैसे एक घातक गुस्सा उस पर सवार हो गया हो। उसकी भी इच्छा हुई कि वह फौरेस्टरों की भाँति चिल्लाए और हरेक को अपने गुस्से से डरा दे।

वह लड़खड़ाता-सा बोला, "मुझे लड़कियों से घृणा है, खासकर यूलाली से।"

ओलिवर ने भोला बनकर कहा, "क्यों, उसमें ऐसी क्या बात है ?"

"मुझे उसकी टेढ़ी नाक से घृणा है। वह खरगोश जैसे देखती है।"

ओलिवर और पैनी एक-दूसरे को थपथपाते हुए हँस पड़े।

दादी बोली, "उस बच्चे को क्यों छेड़ते हो ? क्या तुम्हें अपने बारे में पुरानी बातें याद नहीं ?"

जोडी का ज़हर जैसे अन्दर ही अन्दर घुल गया और वह दादी के लिए कृतज्ञता से भर गया। दादी ही ऐसी थी जो उसका पक्ष लेती थी। पर उसने तुरन्त सोचा कि दादी के अलावा पैनी भी उसका इतना ही साथ देता रहा है। उसकी माता जब-जब भी बुरी बनी, पैनी ने हमेशा ही अपने बचपन की याद दिलाकर उसे भूल जाने को कहा। उसे याद आया कि उसके पिता ने केवल अपने मित्रों के सामने ही तो उसे एक बार छेड़ा है। अन्यथा जब भी उसे सहायता की ज़रूरत हुई है, पैनी ने कभी निराश नहीं किया।

वह मुसकरा पड़ा और पिता से बोला, "मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप ज़रा मेरी माँ को भी यह बता दें कि मैंने कोई प्रेमिका चुन ली है। फिर देखिए वह आप पर ऐसे टूटेगी जैसे मैंने कोई कीड़ा पाल लिया हो।"

दादी बोली, "क्यों, तुम्हारी माँ तुम्हें बहुत बुरा-भला कहती है ?"

"मुझपर और पिताजी पर खूब गुस्सा उतारती है, खासकर पिता-जी पर।"

दादी बोली, "वह उसकी तारीफ नहीं करती। और सच तो यह है वह इससे अच्छी कोई बात जानती भी नहीं।" हँसकर फिर बोली, "आखिर बुरे आदमी को भी अपने जीवन में कभी-कभी प्यार करना चाहिए और अच्छे आदमी के लिए अपना भाग्य मानना चाहिए।"

पैनी नम्रता में फर्श की ओर देखने लगा। जोडी आश्चर्य में डूबकर सोचने लगा, आखिर इसके पति अच्छे रहे होंगे या बुरे ? पर वह पूछ नहीं सका। उसने सोचा—कुछ भी हो, यह बात बहुत पुरानी हो गई है, इसलिए अब इसका महत्त्व भी नहीं है। ओलिवर उठा और उसने अपनी टाँगें फैलाईं।

दादी बोली, "अरे, अभी तुम आए हो और अभी छोड़कर जाने भी लगे ?"

"बस, थोड़ी देर के लिए ही ! मुझे जरा पड़ोसियों और परिचितों में चक्कर काटने जाना है।"

"अरे, वही छोटी-सी पीले बालों वाली ट्विंक ही तो।"

"निश्चय ही।" वह झुका और अपने बाल उसने ठीक किए। पैनी से बोला, "पैनी, तुम आज तो घर नहीं लौट रहे ?"

"हमें आज अपना व्यापार करके निश्चय ही जंगल की ओर लौटना है। मुझे यह लगता तो बुरा है कि शनिवार की यह हँसी-मज़ाक हाथ से जाने दी जाय। हम आए थे शुक्रवार को, परन्तु यह इस कारण कि हिरण का माँस वोयल्स को दे सकें, ताकि वह उत्तर की ओर जाने वाली किश्ती में उसे बेच सके। परन्तु ओरी को इतनी देर छोड़ना भी अच्छा नहीं लगता।"

दादी बोली, "नहीं, उस बेचारी को कहीं चीता न खा जाय।"

पैनी ने उसकी ओर निगाह डाली, पर वह अपने कपड़ों को ठीक करने में लग चुकी थी।

ओलिवर बोला, "अच्छा, तो तुम्हें नदी पर ही मिलूँगा।"

वह चला गया। उसने अपने सिर के पीछे अपनी टोपी लटका ली। उसकी सीटी बहुत देर तक सुनाई देती रही। जोडी अपने को अकेला अनुभव

करने लगा, उसका विश्वास था कि कोई न कोई ऐसी बात ज़रूर होगी जिससे वह ग्रोलिवर की कहानियाँ सुनने को रुक सकेगा। उसे ऐसा ग्रनुभव हो रहा था। उसकी इच्छा थी कि वह नदी के किनारे दिन ग्रौर रात बैठा रहता ग्रौर ग्रोलिवर कहानियाँ सुनाता रहता। उसे कभी भी ग्रोलिवर से ग्रधिक कहानियाँ सुनने को नहीं मिली थीं। वह कभी एक-दो सुना भी देता, तो बीच में कोई न कोई ग्रा जाता, या फिर उसका ध्यान कहीं ग्रौर लग जाता। कहानी कभी समाप्त न हो पाती।

वह बोला, "मैंने तो ग्रभी एक-दो कहानी भी नहीं सुनीं।"

दादी बोली, "मैंने भी इसे कभी ज़्यादा दिन नहीं रोका। इसे छोड़ जाग्रो।"

पैनी छोड़ने को तैयार हो गया। वह बोला, "मुझे स्वयं भी जाना पसन्द नहीं ग्रौर खासकर ग्रब जब ग्रोलिवर यहाँ ग्रा गया है।"

वह बोली, "मुझे ग्रोलिवर का जाना ग्रौर भी बुरा लगता है। जब वह यहाँ होता है तब ग्रौर भी बुरा। जब वह समुद्र पर होता है तब ग्रौर बात होती है।"

जोडी बोला, "यह सब ट्विंक के कारण है। उस लड़की की ही सारी शरारत है। मैं कभी कोई प्रेमिका न बनाऊँगा।"

जोडी को ग्रोलिवर के जाने का दुख था। वे चारों एक छोटा-सा समूह बना चुके थे, पर ग्रोलिवर ने उसे तोड़ दिया। पैनी बाहर जाकर धूप सेंकने लगा। उसने ग्रपनी पाइप दुबारा भरी ग्रौर उस विदेशी तम्बाकू का मज़ा लेने लगा।

वह बोला, "मुझे भी जाने से नफ़रत है। परन्तु हमें जाना ही पड़ेगा ग्राखिर हमें कुछ सौदा खरीदना है। फिर घर का पैदल रास्ता लम्बा है।"

जोडी नदी के साथ ही साथ घूमता रहा ग्रौर फ़्लफ़ से खेलता रहा। उसने ईज़ी को कुटिया की ग्रोर दौड़कर ग्राते देखा।

ईज़ी ने बुलाया, "ग्रपने पिता को बुलाग्रो। दादी को सुनाई न पड़े।"

जोडी बग़ीचे में से होकर दौड़ा ग्रौर पिता को बुला लाया। पैनी बाहर ग्राया। ईज़ी ने कहा, "ग्रोलिवर फौरेस्टर लोगों से लड़ रहा है। उसने दुकान के बाहर लेम पर हमला किया ग्रौर वे सब मिलकर उस पर टूट

पड़े हैं। वे उसे मार ही न डालें।"

पैनी दुकान की ओर भागा। जोडी उसका साथ न निभा सका। ईज़ी उन दोनों से भी पीछे घिसटता रहा।

पैनी ने पीछे की ओर मुड़कर कहा, "हमें आशा है कि हम दादी के बन्दूक लेकर पहुँचने से पहले ही मामला निपटा लेंगे।"

जोडी ने पूछा, "पिताजी, क्या हम ओलिवर की ओर से लड़ेंगे ?"

"हमें तो चोट खाने वाले की ओर से लड़ना है। और यह ओलिवर है।"

जोडी का दिमाग़ एक पनचक्की की तरह घूम गया। वह बोला, "पिताजी, आप ही तो कहते थे कि हम अपनी ज़मीन पर फौरेस्टरों से बिगाड़कर नहीं रह सकते। उनसे मित्र बनकर ही रहना होगा।"

"मैंने कहा ज़रूर था, पर ओलिवर को चोट सहते भी नहीं देखा जा सकता।"

जोडी दब गया। उसे लगा कि ओलिवर को दण्ड मिलना चाहिए। आखिर वह उसे छोड़कर एक लड़की को देखने चला गया था। उसे खुशी हुई कि फौरेस्टर उसके पीछे पड़े। आखिर ओलिवर घर आएगा और अपनी इस बेवकूफी को छोड़ देगा। ट्विंक का नाम याद आते ही जोडी ने थूक दिया। उसे फौडरविंग का ध्यान आया। वह उसकी दोस्ती कैसे छोड़ता ?

उसने पिता को पीछे से ही कहा, "मैं ओलिवर की ओर से नहीं लड़ूँगा।"

पैनी ने उत्तर नहीं दिया। उसकी छोटी-छोटी टाँगें थक गईं। दुकान के सामने सड़क रेत से भरी थी। वहीं पर लड़ाई हो रही थी। धूल ऐसे उठ रही थी जैसे गर्मियों का कोई अन्धड़ हो। जोडी ने दर्शकों की चिल्लाहट सुनी, पर वह किसी को पहचान न सका। सारा वौलूसिया वहाँ जमा था।

पैनी बोला, "यह कंगारू जैसी भीड़ नहीं परवाह करती कि कौन मर रहा है ? बस, इन्हें तो तमाशा देखने को मिलना चाहिए।"

जोडी ने ट्विक को घेरे के बाहर खड़े हुए देखा। पुरुष और स्त्रियाँ सभी उसे सुन्दर बता रहे थे। पर, उसकी इच्छा हुई कि वह उसके पीले बालों को एक-एक करके नोच डाले। उसका छोटा-सा खुदा हुआ चेहरा

सफ़ेद पड़ चुका था। उसकी बड़ी नीली आँखें लड़ने वालों पर जमी हुई थीं। अपनी अंगुलियों में वह एक रूमाल मरोड़ती जा रही थी। पैनी ने धक्का देकर रास्ता बनाया। जोडी भी उसके पीछे भीड़ में से घुस चला। उसने अपने पिता की कमीज़ पकड़ ली।

बात ठीक थी। फौरेस्टर ओलिवर को मार रहे थे। वह उन तीनों से एक साथ ही लड़ रहा था। लेम, मिलव्हील और बक कुत्तों के तरीके से उस पर वैसे ही टूट पड़े, जैसे उसने कभी एक बारहसिंगे को कुत्तों से चीरा जाता हुआ देखा था। ओलिवर का चेहरा भी खून और मिट्टी से भरा हुआ था। वह थका हुआ होकर भी मुक्के चलाता जा रहा था। उसकी कोशिश थी कि एक फौरेस्टर ही एक बार जूझे। लेम और बक उस पर एक साथ ही टूट पड़े। जोडी को आवाज़ आई, जैसे किसी हड्डी पर बहुत ज़ोर की चोट पड़ी। ओलिवर धूल में गिर पड़ा। भीड़ शोर मचाने लगी। जोडी का दिमाग चक्कर खा गया। ओलिवर के लिए यह सब ठीक था, क्योंकि उसने एक लड़की के लिए घर छोड़ा था। पर, एक के विरुद्ध तीन लड़ें, यह भी ठीक नहीं था। जब कुत्ते भी भालू या चीते पर टूट पड़ते थे, तब भी उसे यह बात अच्छी नहीं लगती थी। उसकी माँ बताती थी कि यह फौरेस्टर काले दिल वाले हैं। उसने कभी उस पर भरोसा नहीं किया। वे उसके सामने गाते-बजाते रहे, पीने और हँसी-ठट्ठा करने में मस्त रहे। उन्होंने उसको खूब अच्छी तरह खाना खिलाया, थपकियाँ दी थीं और फौडरविंग जैसा दोस्त भी साथ खेलने के लिए दिया था। तो क्या तीन का एक से लड़ना यही उनके काले दिल की निशानी है ? फिर भी मिलव्हील और बक लेम की ओर से इसलिए लड़ रहे थे कि उसकी प्रेमिका का मामला था। क्या यह ठीक नहीं था ? ओलिवर अपने घुटनों पर झुक गया और उसके पाँव लड़खड़ा गए। वह धूल और खून में सनकर भी हँसता रहा। जोडी का दिमाग पलटा : ओलिवर मर रहा था !

जोडी लेम की पीठ पर उछला। उसने उसकी गर्दन को अपने पंजों में जकड़ लिया और उसके सिर पर मुक्के मारे। लेम ने उसे हिलाकर परे पटक दिया। उसका चेहरा लेम के बड़े हाथ की चोट खाकर दर्द करने लगा। उसकी कमर में भी दर्द होने लगा।

लेम बोला, "तुम नाचीज़, इस झगड़े से बाहर ही रहो।"

पैनी ने गरजकर उत्तर दिया, "इस लड़ाई का फैसला कौन कर रहा है?"

लेम बोला, "हम खुद ही इसका फैसला कर रहे हैं!"

पैनी उसके सामने पहुँच गया। उसकी आवाज़ उस चिल्लाहट से भी ऊँची थी। बोला, "अगर एक आदमी को पीटने के लिए तीन की ज़रूरत है, तो मैं कहूँगा कि वह अकेला अधिक ठीक है।"

लेम उस पर बढ़ा और बोला, "पैनी, मेरी इच्छा नहीं है कि तुम्हें मारूँ। पर अगर तुम रास्ते से न हटे तो मैं तुम्हें एक मच्छर की भाँति कुचल दूँगा।"

पैनी बोला, "ठीक बात ठीक ही है। अगर तुम ओलिवर को मारना ही चाहते हो, तो उसे गोली मार दो या फाँसी देकर मार दो। पर, आदमी बनो!"

बक ने अपने पाँव धरती पर पटके। बोला, "हम उससे एक-एक करके ही लड़ लेंगे। पर वह ठीक ढंग से तो आए।"

पैनी ने फिर अपनी बात कही, "आखिर किस-किस की लड़ाई है? किसने किसका क्या बिगाड़ा है?"

लेम बोला, "इसने चोरी की। इसका दोष है।"

ओलिवर ने अपनी बाँहों से मुँह पोंछा और बोला, "लेम ने चुराने की कोशिश की है।"

पैनी ने मुट्ठियाँ मलते हुए कहा, "कैसी चोरी? कुत्ते, सूअर या बन्दूकों की?"

बाहर की ओर ट्विंक ने रोना शुरू कर दिया। ओलिवर धीमी आवाज़ में बोला, "पैनी, यह जगह पूरी बात बताने की नहीं है।"

"तो क्या लड़ने के लिए यह ठीक जगह है? जैसे कुत्तों का झुण्ड सड़क के बीचोंबीच लड़ने लगा हो। तुम दोनों अकेले में जाकर फिर कभी लड़ लेना।"

ओलिवर बोला, "मैं अकेले में कभी भी किसी भी आदमी से लड़ लूँगा। पर लेम एक बार फिर दोहरा दे।"

लेम बोला, "और मैं इसे फिर से कहता हूँ।"

वे फिर उलझ पड़े। पैनी ने उन्हें अलग-अलग किया। जोडी को लगा, जैसे एक छोटा-सा चीड़ का पेड़ बवण्डर का सामना कर रहा हो। भीड़ शोर कर उठी। लेम ने मुक्का तानकर पैनी के सिर के ऊपर से ओलिवर को मारा। इसकी आवाज़ जैसे बन्दूक की आवाज़ थी। ओलिवर कपड़े की गुड़िया की भाँति ज़मीन पर गिर गया और चुप पड़ा रहा। पैनी ने अपनी मुट्ठियाँ लेम के जबड़े के नीचे टिका दीं। बाकी दोनों भाई उस पर दोनों तरफ से टूट पड़े। लेम ने अपनी मुट्ठी पैनी की पसलियों में घुसा दी। जोडी गुस्से में आया और उसने लेम को बाहर से पकड़ लिया, मानो एक तेज़ हवा आई हो। उसने अपने दाँत लेम की कलाई में गाड़ दिए। उसने उसकी जाँघों पर खूब चोटें मारीं। लेम घूमा, जैसे वह रीछ कुत्ते के बच्चे से तंग आकर घूमा हो! उसने जोडी को अपने पाँव से ठोकर मारकर गिरा दिया। उसे लगा जैसे लेम ने फिर उसे हवा में उछाल दिया। उसने फिर देखा कि ओलिवर अपने पाँव पर उठ खड़ा हुआ है। उसने यह भी देखा कि पैनी अपनी बाँहों को बेतहाशा चला रहा था। उसे फिर एक शोर सुनाई दिया। पहले यह नज़दीक था, पर बाद में दूर होता गया। वह मुर्दा-सा होकर अँधेरे में डूब गया।

13
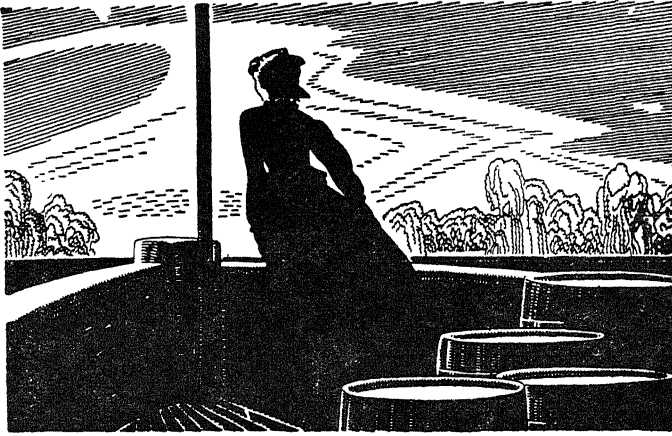
जोडी ने सोचा, 'शायद यह लड़ाई मैंने स्वप्न में देखी है।'

वह दादी के मकान की छत की ओर देखता रहा। उसे एक खाली कमरे में डाला गया था। कोई स्टीमर ऊपर की ओर गुज़र रहा था। उसने उसके पहियों को चलते हुए और पानी की धार काटते हुए सुना। वे बहुत-सा पानी भरकर और उसे फिर निकाल रहे थे। यह स्टीमर वौलूसिया के घाट की ओर बढ़ रहा था। वह अभी जगा ही था। इस स्टीमर की आवाज़ से नदी के किनारे और जंगल में सब ओर गूँज भर गई। उसे ओलिवर के बारे में स्वप्न आया, जैसे वह फौरेस्टर लोगों से लड़ने के लिए घर वापस आ रहा हो। उसने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला और गुज़रते हुए जहाज़ को देखा। उसकी गर्दन और कन्धे में एक तेज़ दर्द उठा। वह अपना सिर बड़ी मुश्किल से एक ओर सरका सकता था। तेज़ दर्द की भाँति उसकी याद ताज़ा हो आई थी। उसने सोचा कि लड़ाई एक सचाई थी।

दोपहर बाद का समय था। सूर्य नदी के पश्चिमी किनारे की ओर

झुक गया था। उसकी चादर पर चमकीली किरणें पड़ रही थीं। उसका दर्द रुक गया था, परन्तु अब भी कमज़ोरी और बेहोशी-सी लगती थी। उसे कमरे में कुछ हलचल दिखाई दी। एक आरामकुर्सी कमरे में घुसी।

दादी माँ बोली, "इसकी तो आँखें खुली हैं।"

उसने अपना सिर उधर मोड़ना चाहा, पर दर्द के बिना न मोड़ सका। वह उस पर झुक आई।

वह बोला, "ओह, दादी अम्मा !"

वह उससे न बोलकर, उसके पिता से बोली, "वह तुम-जैसा ही सख़्त है। वह बिलकुल ठीक है।"

पैनी बिस्तर के दूसरी ओर खड़ा था। उसकी एक कलाई पर पट्टी बँधी थी और एक आँख पर काली दवाई लगी थी। वह जोडी को देखकर हँस पड़ा। बोला, "हम और तुम दोनों ही अच्छी सहायता दे पाए।"

एक हल्का-सा गीला कपड़ा जोडी के माथे से खिसका। दादी ने इसे उतारकर अपना हाथ उसके सिर पर रखा। उसने अपनी अँगुलियों से उसके सिर का पिछला भाग टटोला और दर्द के मूल स्थान को ढूँढना चाहा। यह उसके बाएँ जबड़े में था और सिर के पीछे भी, जहाँ वह धरती पर गिरा था। उसने हल्की-सी मालिश की और जोडी को कुछ आराम लगा।

वह बोली, "तुम कुछ बोलो, जिससे मुझे तुम्हारे दिमाग़ की सही हालत का पता चले।"

वह बोला, "क्या कहूँ, कुछ समझ नहीं आता। क्या दोपहर के खाने का समय बीत गया ?"

पैनी बोला, "इसे तो अगर चोट अनुभव होगी ही तो वह पेट की ही !"

वह बोला, "मैं भूखा नहीं, मैं तो केवल सूर्य को देखकर अचरज कर रहा था।"

दादी बोली, "ठीक है, नाचीज़ !"

उसने पूछा, "ओलिवर कहाँ है ?"

"अपने बिस्तर पर !"

"उसे अधिक चोट तो नहीं लगी ?"

"इतनी बुरी नहीं कि अक्ल आ जाय।"

पैनी बोला, "मैं अधिक तो नहीं जानता, पर अगर उस पर एक चोट भी और पड़ जाती तो वह कुछ सीखने को ज़िन्दा न रह जाता।"

"खैर, अब उसकी अच्छी आँखें तो बिगड़ गईं। अब कोई पीले बालों वाली लड़की काफी समय तक उसकी ओर नहीं देखेंगी।"

पैनी बोला, "तुम औरतें एक-दूसरे पर अधिक सख्त होती हो। यह तो ओलिवर और लेम ही थे जो देखा-देखी करते थे। लड़की का दोष नहीं।"

दादी ने गीले कपड़े को लपेटा और कमरे से चली गई।

पैनी बोला, "यह ठीक तो नहीं था कि तुम-जैसा छोटा बच्चा बीच में पीसा जाता, पर फिर भी मुझे अभिमान है कि तुम भी अपने दोस्त को कष्ट में देखकर बीच में कूद पड़े।"

जोडी धूप की ओर देखने लगा और उसने सोचा कि फौरेस्टर भी तो उसके दोस्त थे। एक हलका-सी दर्द जोडी के सिर से उठा और पेट तक चला गया। वह फौडरविंग का साथ नहीं छोड़ सकता था। उसने निश्चय किया कि वह किसी दिन चुपचाप ही जंगल में निकलकर फौडरविंग से मिल आएगा। उसके सामने उस छिपी हुई मुलाकात का चित्र खिंच गया। शायद वे ढूँढ न लिए जायँ और लेम उन दोनों को ही मार न डाले! तब ओलिवर को दुख होगा कि वह ट्विंक के कारण व्यर्थ ही उनसे लड़ा। जोडी को फौरेस्टरों से अधिक ओलिवर पर गुस्सा था। उसे लगा कि जैसे ओलिवर पर उसका और दादी का जो अधिकार था, वह उस पीले बालों वाली लड़की ने छीन लिया हो, जोकि लड़ाई के समय किनारे पर ही घूमती रही।

इस पर भी अगर उसे दुबारा ऐसा ही मौक़ा हुआ तो वह ओलिवर की ही सहायता करेगा। उसे याद आया कि कैसे बहुत से कुत्ते एक बनबिलाव पर टूट पड़े थे? और उसे उन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। बनबिलाव के साथ ऐसा ही होना चाहिए भी। पर जब दर्द के मारे उसके मुख को खुला देखा और मरते समय उसकी आँखें अजीब-सी देखीं, तो जोडी दया के मारे पिघल पड़ा था। वह उस जन्तु की सहायता करने के लिए चिल्ला पड़ा था। बहुत ज़्यादा दुख भी अन्याय ही होता है। एक के विरुद्ध यदि बहुत-से आदमी

लड़ें, तो वह भी अन्याय है। इसीलिए उसने ओलिवर की ओर से लड़ना उचित समझा, हालांकि उसको फौडरविंग की दोस्ती खोनी पड़ी। उसने अपनी आँखें बन्द कीं। उसे सन्तोष अनुभव हुआ। जब उसने पूरी बात समझ ली तो उसे बीती बात ठीक ही लगी।

दादी हाथ में थाली लिए कमरे में घुस आई थी। बोली, "बच्चे, अब देखें कि तुम बैठ सकते हो या नहीं?"

पैनी ने तकिए के नीचे अपने हाथ डाले और जोडी को आराम से उठने दिया। वह कुछ सख्त और भरा हुआ-सा था। परन्तु उसे यह दर्द उस समय से अधिक बुरा न लगा जब वह चीनी बेरी के एक पेड़ से गिरा था।

पैनी बोला, "मेरी इच्छा थी कि ओलिवर भी इतना अच्छा हो जाता।"

दादी बोली, "यही खुशी की बात है कि उसकी सुन्दर नाक नहीं टूटी।"

जोडी ने अदरक की बनी रोटी खाते समय बड़ा दर्द अनुभव किया। सूज़न अधिक थी, इसीलिए उसे वह आधी छोड़नी पड़ी। उसने ललचाई आँखों से उधर देखा।

दादी बोली, "मैं तुम्हारे लिए इसे बचा रखूंगी।"

पैनी ने कहा, "यह भी कम अच्छी बात नहीं है कि कोई स्त्री तुम्हारे मन की बात भाँप ले और स्वयं उत्तर दे दे।"

"हाँ, मेरा भी यही आशय था," कहकर जोडी अपने तकिए पर लेट गया। जैसे हिंसा शान्ति में मिट गई हो, फिर संसार को उसने टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो, और जैसे बाद में फिर से चारों ओर शान्ति छा गई हो।

पैनी बोला, "मुझे तो चलना ही चाहिए, नहीं तो ओरी गुस्से होगी।"

वह दरवाज़े में खड़ा हो गया। छोटे-से शरीर में वह अपने आप अकेला लग रहा था। जोडी ने देखा और बोला, "मैं भी आपके साथ चलना चाहता हूँ।"

पैनी का चेहरा खिल उठा। उत्सुकता से बोला, "अच्छा बच्चे, तुम अपने को बिलकुल ठीक अनुभव करते हो? जो तुम कहोगे, वही मैं करूँगा। बोयल्स के पास एक बूढ़ी घोड़ी है। वह खुद ही घर लौट आती है। हम उस

पर चढ़ चलेंगे और उसे लौटा देंगे।"

दादी बोली, "निश्चय ही ओरी को जोडी के तुम्हारे साथ जाने से प्रसन्नता होगी। मुझे पता है ओलिवर को देखकर मुझे कितनी खुशी होती है अगर मेरी आँखों के पीछे उसे कुछ हो जाय, उससे सामने रहना ज़्यादा अच्छा है।"

जोडी ने अपने को आराम से लिटाया। उसका सिर घूम रहा था, जैसे वह कुछ बड़ा और भरा हुआ-सा हो गया हो। उसकी इच्छा हुई कि वह कुछ देर उन चादरों पर ही लेटा रहे।

पैनी बोला, "अगर मैं कहूँ तो जोडी सचमुच मर्द है!"

जोडी उठ खड़ा हुआ और दरवाज़े तक गया और बोला, "मुझे ओलिवर को विदा कहनी ही चाहिए न?"

"क्यों नहीं! परन्तु उसे यह पता न देना कि वह बुरा लगता है। उसे दर्द है।"

वह ओलिवर के कमरे तक गया। उसकी आँखें सूजी हुई थीं, जैसे वह भूंडों के चक्कर में फँस गया हो। एक गाल गुलाबी-सा दीख रहा था। उसके सिर के चारों ओर सफेद पट्टी बँधी हुई थी। उसके होंठ सूजे हुए थे। केवल ट्विक वैदरबी के कारण एक अच्छा नाविक सामने लेटा हुआ था।

जोडी ने कहा, "ओलिवर, विदा!"

ओलिवर ने उत्तर नहीं दिया। जोडी का दिल नरम हो आया। बोला, "मुझे दुख है, पिता जी और मैं ठीक समय पर जल्दी न पहुँच सके।"

ओलिवर ने पास बुलाया। जोडी बिस्तर तक चला गया।

ओलिवर बोला, "तुम कुछ मेरे लिए करोगे? ज़रा ट्विक को जाकर कह आओ कि मैं उसे पुरानी बगीची में मंगलवार को साँझ के धुँधलके में मिलूँगा।"

जोडी सन्न रह गया। वह बोल पड़ा, "नहीं, मैं यह नहीं करूँगा। मैं उससे घृणा करता हूँ। वह नीच, पीले बालों वाली!"

ओलिवर बोला, "ठीक है, मैं ईज़ी को भेज दूँगा।"

जोडी अपने पाँव से पायदान को रगड़ता रहा। ओलिवर बोला, "मैंने

तुम्हें दोस्त समझकर कह दिया था।"

जोडी ने सोचा, दोस्त होना भी एक बला है। फिर उसे शिकारी चाकू का ध्यान आया और उसके साथ ही कृतज्ञता और शर्म से वह झुक गया। बोला, "अच्छा, ठीक है। मैं चाहता तो नहीं, पर तो भी कह दूँगा।"

ओलिवर हँस पड़ा। जोडी ने सोचा, यह मरते दम भी हँसेगा।

"विदा, ओलिवर!"

"विदा, जोडी!"

वह कमरे से निकल आया। बाहर दादी उसका इन्तज़ार कर रही थी।

वह बोला, "दादी, ओलिवर आया और यह लड़ाई हुई। क्या यह सब निराशाजनक नहीं?"

पैनी बोला, "बेटे, कुछ सभ्यता सीखो!"

दादी बोली, "सचाई खुद सभ्यता है। जब रीछ अपने सूजे हुए सिर लेकर प्यार करने निकलेंगे तो कोई न कोई मुसीबत ही आएगी। शुक्र है अगर यही अन्त हो, किसी नई मुसीबत की यह शुरुआत न हो!"

पैनी बोला, "अगर ऐसी बात हो तो मेरा बुलाने का पता तुम्हें पता ही है।"

वे बगीचे में होते हुए निकल गए। जोडी ने मुड़कर देखा, दादी उनकी ओर हाथ हिला रही थी।

पैनी बोयल्स की दुकान पर रुका और उसने अपना सामान और हिरण के माँस का चौथाई हिस्सा लिया। बोयल्स अपनी घोड़ी देने को इस बात पर राज़ी हो गया कि अगर पैनी बारहसिंगे की खाल का कुछ हिस्सा जूतों के फीतों के लिए उसकी काठी में बाँधकर लौटा दे। आटा, कॉफी, बालू, सीसे की गोलियाँ और कारतूस आदि सब सामान बोरी में भर दिया गया। बोयल्स अपनी घोड़ी निकाल लाया और कम्बल डालकर काठी लाद दी।

वह बोला, "इसे सवेरे से पहले मत लौटाना। यह भेड़िये से तो पार पा सकती है, पर मैं नहीं चाहता कि कोई चीता इस पर हमला कर बैठे।"

पैनी अपनी बोरी को उठाने मुड़ा। जोडी दुकानदार के पास लौट आया। वह नहीं चाहता था कि उसका पिता ओलिवर के रहस्य को जाने।

वह बोला, "मैं ट्विक से मिलना चाहता हूँ। वह कहाँ रहती है?"

"तुम्हें उससे मतलब?"

"मुझे उससे कुछ कहना है।"

बोयल्स बोला, "हममें से बहुतों ने उसे कुछ कहना है! अब तुम्हारी बारी भी ग्राई है। ग्रब तो वह ग्रपने बालों पर रूमाल बाँधकर सांनफोर्ड की ग्रोर नाव में चली गई है।"

जोडी को ऐसा सन्तोष हुग्रा, जैसे उसने खुद ही उसे बहुत दूर भगा दिया हो, उसने कागज़ ग्रौर पेंसिल उधार ली ग्रौर ग्रोलिवर के लिए कुछ लिख दिया। उसके लिए यह काम कठिन था, क्योंकि उसके पिता ने ग्रध्यापक की थोड़ी-सी पढ़ाई को ही पक्का कराया था।

उसने लिखा, "प्यारे ग्रोलिवर, तुम्हारी ट्विक नदी पार चली गई है। मुझे खुशी है! तुम्हारा मित्र, जोडी।"

उसने फिर पढ़ा। उसे ग्रपनी गलती ग्रनुभव हुई। 'खुशी' को काटकर उसने 'दुख' शब्द लिख दिया। उसे ग्रब ग्रधिक ग्रच्छा लगा, जैसे ग्रोलिवर के लिए उसका पुराना प्यार उमड़ ग्राया था। शायद वह उसकी कहानियाँ ग्रब भी सुन सकता था।

जंगल की ग्रोर बढ़ते हुए किश्ती में नदी पार करते समय उसने तेज़ बहती धारा में देखा कि उसके विचार भी नदी के समान ही बौखला रहे थे। ग्रोलिवर ने उसे पहले कभी निराश नहीं किया था। ग्राखिर फौरेस्टर वैसे ही थे जैसा कि उसकी माँ ने कहा था। उसे ऐसा होना बुरा लगा, पर उसे यह भी विश्वास था कि फौडरविंग नहीं बदलेगा। उस टेढ़े-मेढ़े शरीर में वह सीधा-सादा दिमाग़ इन सब लड़ाइयों से बचा ही रहेगा। हाँ, इस सब घटना से उसका पिता ग्रवश्य उसके सामने ग्रजेय बनकर ग्राया।

14
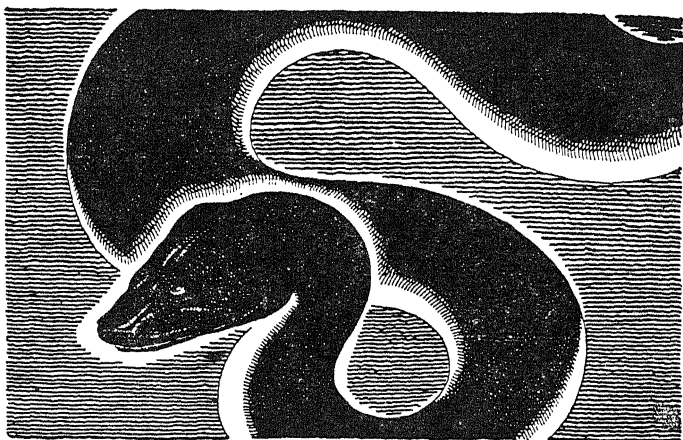
बटेरों ने घोंसले बनाने शुरू कर दिए थे। उनकी संगीतभरी तानें कुछ देर के लिए शान्त हो गई थीं। अब वे जोड़ों में बँटने लगे थे। मुर्गे भी जोड़ी बाँधने की साफ, मधुर और लम्बी बांगें देने लगे थे।

जेठ के अन्त में एक दिन जोडी ने एक मुर्गे और मुर्गी को अंगूरों की बेल में से भागते देखा। उनके दिल में बच्चों का खयाल था। उसने उनका पीछा न किया, पर वह सरकता हुआ उनके घोंसले तक पहुँच अवश्य गया। उसने देखा कि मोतिया रंग के बीस अण्डे पड़े थे। उसने उन्हें छुआ नहीं, उसे डर था कि मुर्गी उन्हें छोड़ न दे। तीतर ऐसे ही छोड़ देते हैं। एक हफ्ते बाद वह फिर अंगूरों की बढ़ती देखने के लिए उस ओर गया। अंगूर छोटी-छोटी गोलियों के रूप में उभर आए थे। वे अभी हरे और सख्त थे। उसने बेल का कुछ हिस्सा उठाया, ताकि इस समय गर्मी में भी उन सुनहरे अंगूरों को कहीं पा सके।

अपने पाँव में उसे सरसराहट-सी महसूस हुई, जैसे घास फूट पड़ी हो।

जहाँ अण्डे सेये गए थे। छोटे-छोटे चूज़े चारों ओर बिखर पड़े थे। मुर्गी चिल्लाई और बारी-बारी सबको बचाने की कोशिश करने लगी। वह कभी जोडी पर भी टूट पड़ती। वह चुप खड़ा रहा। यही बात उसके पिता ने समझाई थी। मुर्गी ने अपने चूज़ों को इकट्ठा किया और लम्बी पत्ती की घास में से लेकर दूर निकल गई। जोडी अपने पिता को खोजने बढ़ा। पैनी मटर के खेतों में काम कर रहा था। जोडी बोला, "पिताजी, मुर्गी ने अंगूरों के नीचे बच्चे दिए हैं और अंगूर भी पक रहे हैं।"

पैनी अपने हल को थामकर खड़ा हो गया। वह पसीने से तर हो रहा था। उसने खेत के पार देखा, एक बाज़ बहुत नीचे चक्कर काटता हुआ उड़ रहा था।

वह बोला, "अगर बाज़ों ने इन बच्चों को न पकड़ लिया और अगर रैकूनों ने अंगूर न खा डाले तो हमें पहले पाले पर काफी अच्छा खाना मिलेगा।"

जोडी बोला, "मुझे बाजों के चूज़े खाने पर घृणा आती है, पर मैं यह सह सकता हूँ कि रैकून अंगूर खा लें।"

"यह इसलिए कि तुम चूज़ों का माँस पसन्द करते हो और अंगूर नहीं।"

"नहीं, यह बात नहीं है। बात यह है कि मैं बाज़ों को पसन्द नहीं करता और रैकून मुझे पसन्द हैं।"

पैनी बोला, "यह सब तुम्हें फौडरविंग ने सिखाया है। उसे रैकून पसन्द हैं।"

"मेरा भी यही खयाल है।"

"क्या छोटे सूअर लौट आए?"

"नहीं, अभी नहीं।"

पैनी ने भौंह सिकोड़ी, "मुझे यह सोचकर भी बुरा लगता है कि फौरेस्टरों ने उन्हें फँसा लिया होगा। परन्तु वे इतनी देर कभी बाहर रहे नहीं। अगर भालू उन पर हमला करते तो ये सब एक साथ खत्म न हो जाते।"

"पिताजी, मैं पुराने खेतों पर गया था। सूअरों के निशान वहाँ से पश्चिम की ओर गये हुए हैं।"

"ज्यों ही मैं इन मटरों को खत्म कर लूँगा, हमें रिप और जूलिया को लेकर उन्हें ढूँढने निकलना होगा।"

"अगर फौरेस्टरों ने उन्हें फँसा लिया होगा तो हमें क्या करना होगा?"

"समय आने पर जो कुछ भी उचित जँचे वही करना होगा।"

"क्या आप फौरेस्टरों से दुबारा मुक़ाबला करने में घबराते नहीं?"

"नहीं, मैं ठीक हूँ।"

"अगर आप ग़लत हों तो आप घबराएँगे?"

"अगर मैं ग़लत होऊँ तो मैं कभी उनके सामने भी न जाऊँ।"

"अगर वे हमें फिर पीट डालें तो फिर हम क्या करेंगे?"

"इसे अपना भाग मानकर अपने काम पर चलते रहो।"

"इससे अच्छा तो मैं चाहूँगा कि सूअर फौरेस्टरों के पास ही रहें।"

"और, तुम यह भी चाहोगे कि हम बिना माँस के रहें। किसी की बुरी आँख खाली पेट की अपेक्षा जल्दी ठीक हो जाती है। तुम जाना नहीं चाहते?"

वह हिचकिचाया और बोला, "मेरा विचार ऐसा नहीं है।"

पैनी अपनी खेती में जुट गया और बोला, "जाओ, फिर अपनी माँ से कहो कि हमारे लिए भोजन जल्दी परोस दे।"

जोडी घर में गया, उसकी माँ कपड़ा सीते हुई ड्योढ़ी में बैठी थी। एक नीले पेट वाली छिपकली उसकी कुर्सी के नीचे घूम रही थी। जोडी यह सोचकर हँस पड़ा कि अगर उसकी माँ को छिपकली का पता चल जाय, तो वह किस तरह अपने भारी-भरकम शरीर को लेकर जल्दी मचाएगी।

वह बोला, "माँ, कृपा करके खाना जल्दी बना दो। पिताजी का यह कहना है कि हमें सूअरों को खोजने जाना है।"

"इसी समय!"

उसने अपना सीना खत्म किया और वह उसके साथ की सीढ़ी पर ही बैठ गया। बोला, "हमें शायद फौरेस्टरों का मुक़ाबला करना पड़े। शायद उन्होंने ही हमारे सूअर फँसाए हैं।"

"अच्छा है, उनका मुक़ाबला करो। वे काले दिल वाले चोर हैं।"

वह उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगा। वह पहली बार वौलूसिया में फौरेस्टरों से लड़ने के कारण उससे और उसके पिता से नाराज़ थी।

वह बोला, "हो सकता है, हमें फिर से बड़ी बुरी मार सहनी पड़े।"

उसने अपनी सिलाई जल्दी-जल्दी समेट ली और बोली, "तो यह हमारा फर्ज़ है। हमें अपने माँस की रक्षा करनी है। अगर तुम नहीं जाओगे तो और कौन इसे बचाने जाएगा है?"

वह घर में चली गई। जोडी ने माँ द्वारा डच चूल्हे के ढक्कन खोलने की आवाज़ को सुना। वह चक्कर में पड़ गया। उसकी माँ हमेशा फर्ज़ की बात ले बैठती थी। उसे इस शब्द से ही घृणा थी। उसका यह फर्ज़ कैसे ठहरता है कि वह फौरेस्टरों को केवल सूअरों को बचाने के लिए अपने को कुचलने का फिर से मौक़ा दे? और यह तब, जबकि ओलिवर को बचाने के लिए फौरेस्टरों से लड़ने पर उसका कोई फर्ज़ नहीं गिना गया। उसे लगा कि माँस के लिए लड़ने की अपेक्षा एक मित्र के लिए खून बहाना अधिक अच्छा है। वह ऊपर उड़ने वाले पक्षियों की मधुर आवाज़ को सुनता रहा। छोटी चिड़ियाँ लाल चिड़ियों का पीछा कर रही थीं और उन्हें शहतूत के पेड़ से बाहर निकाल रही थीं। उसे लगा कि इस सुरक्षित खेत में भी हरेक अपने खाने के लिए लड़ रहा है, जबकि उसका विश्वास था कि यहाँ प्रत्येक के लिए पर्याप्त खाना मौजूद है। माँ, बाप बेटे, घोड़े, गाय, बछड़े, रिप, जूलिया, चूज़ें, सूअर और पक्षी तथा मुर्गियों वगैरह सभी के लिए इस खेत में पूरा खाना मौजूद था। किसी को भी कमी नहीं थी।

बाहर जंगल में यह लड़ाई अवश्य सदा चलती रहती थी। भालू, भेड़िए और चीते तथा बनबिलाव सदा ही हिरणों की टोह में रहते थे। भालू तो दूसरे भालुओं के बच्चे तक खा जाते थे। उनके जबड़े में सब माँस एक हो जाता था। गिलहरियाँ, चूहे, कंगारू और रैकून सभी अपनी-अपनी जिन्दगी की लड़ाई में लगे हुए थे। पक्षी और छोटे जन्तु बाज़ों और उल्लुओं से बचते फिरते थे। परन्तु यह खेत बिलकुल सुरक्षित था। पैनी ने बहुत अधिक सतर्क होकर और दिन-रात जागकर, रिप और जूलिया के सहारे और चारों ओर बाड़ बनाकर, इस खेत को बिलकुल सुरक्षित बना दिया था। उसे कभी रात को भी कोई-न-कोई फुसफुसाहट सुनाई देती रहती थी।

जोडी अक्सर रात को दरवाज़ का खुलना और बन्द होना सुनता था। पैनी चुपचाप ही बाहर जाकर और किसी लुटेरे जानवर का पीछा करके वापस आ जाता था।

यह चोरी या घुसपेंठ दोनों ओर से चलती थी। हिरण के माँस या बन-बिलाव की खाल के लिए बैक्स्टर लोग जंगल में घुस जाते थे और हिंसक जानवर और भूखे पशु उनके खेत में मौक़ा पाते ही घुस आते थे। जैसे इस खेत के चारों ओर भूख नाच रही थी। जंगल के बीचोंबीच यह एक किला था, मानो भूख के समुद्र में एक भरा-पूरा द्वीप हो।

उसे झनझनाती जंजीरों की आवाज़ सुनाई दी। पैनी पशुओं की ओर बाड़ के सहारे-सहारे लौट रहा था। जोडी दरवाज़े खोलने के लिए दौड़ गया। उसने जुआ आदि खोलने में भी सहायता की। वह सीढ़ी से ऊपर चढ़ गया और मटरों का एक गट्ठर उसने सीज़र की नांद के लिए फेंका। गर्मियों की फ़सल से पहले अब और सूखी मक्की नहीं मिल सकेगी। उसे सूखे मटरों का भूसा मिल गया और उसने उसे भी गाय के लिए फेंक दिया। सवेरे बैक्स्टरों और बछड़े के लिए कुछ अधिक दूध हो जाएगा। बछड़ा पतला होता जा रहा था, क्योंकि पैनी उसे गाय से दूर ही रखता था। इस ऊँचाई पर धूप के कारण उसे गर्मी महसूस हुई। इसके ऊपर की हाथ से बनी छत के कारण घुटन-सी आ गई थी। उसे भूसे की एक मधुर गन्ध वाली चुर-मुराहट सुनाई दी। यह उसके नाक में घुस गई। वह एक क्षण के लिए सब ओर से बचकर इसी में लेट गया। ज्यों ही उसे माँ की आवाज़ सुनाई दी, उसका आराम खत्म हो गया। वह जल्दी-जल्दी नीचे उतरा। पैनी दूध दुह चुका था। वे घर साथ-साथ ही लौटे। भोजन परोसा जा चुका था। जमा दूध और मक्का की रोटी ही सामने पड़ी थी, पर तो भी खाना काफी था।

माँ बोली, "तुम दोनों बाहर जाकर किसी शिकार को अवश्य लाना।"

पैनी ने स्वीकृति दी, "मैं अपनी बन्दूक इसीलिए ले जा रहा हूँ।" वे पश्चिम की ओर निकल पड़े। सूर्य अभी भी छिपा नहीं था। बहुत दिनों से वर्षा नहीं हुई थी। परन्तु अब उत्तर और पश्चिम में हल्के-हल्के बादल जमा होने शुरू हो गए थे। पूर्व और दक्षिण से एक धुँधलापन पश्चिम की ओर बढ़ना शुरू हो गया था। पैनी बोला, "अगर अच्छी बारिश हुई तो हमें अनाज

के पास ही रहना होगा।"

पर नीचे हवा नहीं चल रही थी। सड़क पर हवा ऐसे लग रही थी, जैसे कोई ऊनी चादर पड़ी हो। जोडी को लगा, जैसे वह इस भारी हवा को धक्का देकर अलग कर सकता था और इसके बीच में से रास्ता बना सकता था। उसके सख्त तलवों के नीचे मिट्टी जल रही थी। रिप और जूलिया सिर नीचे झुकाए और पूँछें लटकाये हुए चलते जा रहे थे। उनकी जीभ खुले जबड़ों से, प्यास के मारे, नीचे लटक रही थी। सूअरों के निशान ढूँढना और उनके पीछे चलना आसान नहीं था, क्योंकि रास्ते का मैला काफी दिन से सूख चुका था।

जूलिया की नाक की अपेक्षा पैनी की आँखें अधिक काम कर रही थीं। सूअर पीछे खेतों से होते हुए पुराने उजाड़ खेत तक पहुँच गए थे और वहाँ से नरगिस के मैदानों तक पहुँचकर ठण्डे पानी के जोहड़ों में पहुँचे थे, ताकि वहाँ आनन्द मना सकें। जब घर के आस-पास ही उन्हें खुराक मिल जाती थी, तब वे कभी इतनी दूर न गए थे। परन्तु अब एक उजाड़ और कठोर मौसम थी। चीड़, सनावर या अखरोट का कोई एक-आध ही फल कहीं पत्तों के ढेर के नीचे दबा रह गया हो तो बात अलग है अन्यथा कहीं कोई फल न दिखाई देता था। छोटी खजूरियों पर अभी फल हरे ही थे। सूअर भी इन्हें पसन्द न करते थे। अपनी ज़मीन से तीन मील परे पैनी उनके निशान ढूँढने के लिए झुका। उसने एक भुट्टे को उठाया और देखा। उस पर घोड़े के खुर के निशान थे। वह बोला, "उन लोगों ने इन सूअरों को खदेड़ा है।"

उसने अपनी कमर सीधी की। उसका चेहरा गम्भीर हो गया। जोडी उत्सुकता से देखने लगा।

पैनी बोला, "बेटे! अब हमें पीछा तो करना ही पड़ेगा।"

"फौरेस्टरों तक?"

"जहाँ पर भी सूअर हों, वहीं तक। हा सकता है कि हम किसी के बाड़े में बने जाल में उन्हें पा लें।"

पैड़ टेढ़ी-मेढ़ी होती हुई बढ़ रही थी, क्योंकि सूअर बिखरे हुए अनाज के लिए इधर-उधर होते चले थे। फौरेस्टरों ने अनाज से उन्हें लुभाया था।

पैनी बोला, "मुझे फौरेस्टरों का ओलिवर से लड़ना तथा मुझे और

तुम्हें कुचलना तो समझ में आता है, परन्तु यह गहरी नीचता मैं नहीं समझ पाया।"

दो फर्लांग आगे सूअरों को फँसाने का एक जाल-सा तैयार किया हुआ था। यह फैलाया ज़रूर गया था, पर अब खाली पड़ा था। इसे बिना छटी टहनियों और एक बड़ी शाखा से बनाया गया था। साथ ही दरवाज़ा बन्द करने का तरीका भी कर लिया गया था। पैनी बोला, "वे नीच यहीं-कहीं इन्तज़ार करते रहे होंगे। क्योंकि इस घेरे में सूअर अधिक देर नहीं टिक सकते। यहीं से एक गाड़ी घेरे के चारों ओर घूमती हुई निकली थी। उसके पहियों के निशान फौरेस्टरों की ज़मीन की ओर जाने वाली सड़क तक गए थे।

पैनी बोला, "ठीक है, बेटे! यह हमारा सीधा रास्ता है।"

सूर्य अब छिपने ही वाला था। घने होते हुए बादल रूई के गोलों जैसे सफेद थे। परन्तु अब जैसे उन पर लाल और पीला रंग अस्त होते सूर्य ने छिड़क दिया हो। दक्षिण की ओर बारूद के धुएँ की भाँति अंधेरा घिर आया था। सारे जंगल में ठण्डी हवा का एक झोंका ऐसे घूम गया, जैसे किसी बड़े भारी जानवर ने एक बहुत ठण्डी साँस ली हो और वह उधर से गुज़र गया हो। जोडी काँप गया। पर पीछे आने वाली गर्म हवा ने उसमें फिर हौसला भर दिया। एक अंगूरों की बेल पतली-सी सड़क के बीचोंबीच से गुज़र गई थी। पैनी उसे हटाने के लिए झुका। वह बोला, "तुम्हारे लिए कोई मुसीबत इन्तज़ार कर रही है और तुम्हें उसका मुक़ाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

एक फनियर साँप ने उसे डस लिया। वह इसी बेल के नीचे छिपा हुआ था। जोडी ने एक चमक देखी, जो एक छाया की तरह उठी और कटकौवे से भी अधिक तेज़ी से जिसने काटा और भालू के पंजों से भी अधिक ठीक निशाने पर जिसने वार किया। उसने अपने पिता को लड़खड़ाकर पीछे हटते देखा। चोट खाए पैनी को चिल्लाते उसने सुना। उसकी इच्छा हुई कि वह पीछे हटे और अपनी पूरी आवाज़ के साथ चीख पड़े। परन्तु, वह वहीं गड़ा रहा और आवाज़ भी न कर सका। उसे लगा जैसे एक गाज गिरी हो, साँप नहीं। या, फिर एक शाख टूटी हो, एक पक्षी उड़ रहा हो, या, कोई खरगोश भाग गया हो। पैनी चिल्ला पड़ा, "पीछे हटो, कुत्तों को सम्हालो!"

इस आवाज़ ने उसे चैन दी। वह पीछे हटा और उसने कुत्तों को उनकी गर्दन के बालों से पकड़ लिया। उसने देखा कि साँप की एक धुँधली छाया ने घुटनों तक ऊँचा अपना चपटा-सा सिर उठाया। यह फन एक ओर से दूसरी ओर घूम रहा था। इसकी हरकत उसके पिता की हरकत के साथ-ही साथ हो रही थी। उसने उसकी खटखटाहट को सुना। कुत्तों ने भी पहचाना और समझ लिया। उनके बाल खड़े हो गए। जूलिया गुर्राई और उसके हाथ से निकल गई। वह पगडण्डी पर आगे बढ़ी। उसकी लम्बी पूँछ पीठ पर मुड़ चुकी थी। रिप भी अपने पिछले पाँव पटकता हुआ भौंकने लगा।

पैनी धीरे-धीरे पीछे हटा, जैसे कोई स्वप्न देख रहा हो। साँप की आवाज़ अब भी आ रही थी। जैसे यह साँप नहीं थे, बल्कि टिड्डियाँ भिनभिना रही हों, या पेड़ के मेढक टरटरा रहे हों। पैनी ने अपनी बन्दूक़ उठाई, कन्धे पर चढ़ाई और गोली दाग दी। जोडी काँप गया। सामने का साँप बल खा गया और उसमें एक ऐंठन-सी दौड़ गई। उसका फन धूल में गिर गया। ऐंठन सिर से पूँछ की तरफ बढ़ती गई। उसकी आवाज धीमे-धीमे समाप्त होती गई। और, आखिर में उसके शरीर में लहर धीमी पड़ने लगी जैसे कोई ज्वार बैठ रहा हो। पैनी मुड़ा और अपने बच्चे की ओर देखकर बोला, "उसने मुझे डस लिया है।"

उसने अपनी दाहिनी भुजा उठाई और उसे फैला दिया। उसके होंठ सूखे पड़ गए थे और वे दाँतों के ऊपर उठ रहे थे। उसका गला काम कर रहा था। उसने दाँत के दो निशान साफ़ देख लिए। उन दोनों से खून बह रहा था। वह बोला, "यह बहुत बड़ा साँप था।"

जोडी ने रिप को ढीला छोड़ दिया। कुत्ता दौड़कर मरे हुए साँप पर टूट पड़ा और बुरी तरह भौंकने लगा। वह इधर-उधर दौड़ा और अन्त में उसने उसकी पूँछ को और सलवटों को एक ही पंजे से उठा लिया। उसे मरा हुआ देखकर वह चुप हो गया और धरती पर फुफकारने लगा। पैनी ने उन निशानों से अपना सिर उठाया। उसका चेहरा काला पड़ना शुरू हो गया था।

वह बोला, "लगता है मुझे मौत घेर रही है।"

उसने अपने होंठ चूसे। बहुत जल्दी मुड़ा और जंगल में से अपने खेतों की ओर जल्दी-जल्दी लौटने लगा। सड़क खुली थी और इसीलिए वह छोटी रह सकती थी, पर पैनी जंगल में से ही होता हुआ सीधी राह काटने लगा। वह रास्ते में पड़ने वाली जंगली सनावरों, बढ़हल और खजूरों को पार करता गया। जोडी भी उसके पीछे लटकता रहा। उसका दिल बड़ी तेज़ी से धड़क रहा था और वह न जान सका कि किधर जा रहा है। उसे दूर से पिता के जाते हुए किसी चीज़ के टूटने या कुचले जाने की आवाज़ आ रही थी। एकदम ही यह घनापन समाप्त हुआ। कुछ ऊँचे-ऊँचे सनावर के बीच एक खेत-सा था। जोडी को चुप होकर चलना अजीब-सा लगा।

पैनी रुक गया। उसको सामने कुछ हलचल दिखाई दी। एक हिरणी अपने पाँवों के बल कूदी। पैनी ने एक लम्बी साँस खींची, जैसे किसी कारण साँस लेना कुछ आसान हो। उसने अपनी बन्दूक़ उठाई और अपने सिर तक उठाकर दाग़ दी। जोडी को लगा कि उसका पिता पागल हो गया है, नहीं तो इस क्षण उसे शिकार की क्या सूझी? हिरणी एक झटके के साथ उछली, पर फिर धरती पर गिर पड़ी। कुछ देर अपने पाँव पटक-कर वह चुप हो गई। पैनी उस तक दौड़ा गया और अपना चाकू निकाल-कर उसे चीरने लगा। जोडी के विचार में उसका पिता पागल था। उसने देखा पैनी ने गला न चीर कर हिरणी का पेट चीरा और उसके शव को पूरा खोल दिया। हिरणी का दिल अब भी धड़क रहा था। पैनी ने उसका जिगर काट लिया। घुटने टेककर उसने चाकू अपने बाएँ हाथ में पकड़ा और तब दाएँ हाथ के उन दोनों निशानों पर उसे चला दिया। वे अब बन्द हो चुके थे। उसकी अगली बाँह सूज चुकी थी और काली पड़ गई थी। पसीना उसके माथे पर आ रहा था। ज़ख्म काटते ही काला खून अन्दर से बहने लगा और उसने उस गर्म जिगर को उस काटी जगह पर लगा दिया और बोला, "मैं अनुभव कर रहा हूँ कि यह कुछ खींच रहा है।"

उसने और ज़ोर से दबाया। फिर इसे हटाकर देखा। इसका रंग ज़हर के कारण हरा पड़ चुका था। इसे फेंककर वह बोला, "एक दूसरा टुकड़ा दो।"

इस तरह एक के बाद दूसरा वह बार-बार पलटता रहा। फिर वह

बोला, "ज़रा मुझे चाकू पकड़ाओ।"

अब उसने अपनी बाँह के और ऊपर से कुछ हिस्सा काटा। यहाँ अधिक काली सूजन हो चुकी थी। जोडी चिल्ला पड़ा, "पिताजी, आप इस तरह खून बहने से मर जाएँगे।"

"इस तरह सूजते जाने की बजाय खून बहाकर मर जाना अधिक अच्छा है। मैंने इसी तरह एक आदमी को मरते हुए देखा था।"

उसके गालों से पसीना बह रहा था।

जोडी ने पूछा, "पिताजी, इसने बहुत बुरी तरह काटा ?"

"हाँ बेटे, जैसे एक तपा हुआ चाकू मेरे कन्धे में घुस गया हो।"

अब माँस हरा पड़ना बन्द हो चुका था। मौत के कारण हिरण का माँस अपनी गर्मी खो चुका था।

वह खड़ा हो गया और बोला, "अब इससे मुझे कुछ अधिक लाभ न होगा। मैं घर की तरफ चल रहा हूँ। तुम फौरेस्टरों की ओर जाओ और उनसे कहो कि वे नदी की ओर जाकर डाक्टर को बुला लाएँ।"

"क्या आपके विचार में वे चले जाएँगे ?"

"मौक़ा ही ऐसा पड़ गया है। तुम उन्हें बुलाते ही रहना, चाहे वे तुम पर कुछ फेंकें या गोली ही दाग दें। उन्हें पूरी बात सुना देना।"

वह लौटा और फिर से अपनी राह पर बढ़ गया। जोडी भी उसके पीछे चला। अपने पीछे उसे एक हल्की-सी आवाज़ सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा एक चित्तीदार छौना उस मैदान के कोने पर खड़ा हुआ देख रहा था और अपने कमज़ोर पाँवों पर लड़खड़ा रहा था। उसकी काली आँखें खुली और आश्चर्य में डूबी थीं।

जोडी चिल्ला पड़ा, "पिताजी, इस हिरणी के एक छौना भी है।"

"बड़ा दुख है, बच्चे! मैं क्या करूँ? अब आ जाओ।"

जोडी पर छौने के लिए एक दर्द सवार हो गई। वह हिचकिचाया। छौना अपना छोटा-सा सिर उठाकर खोया-खोया-सा देख रहा था। यह उस शव के पास आकर झुका और इसे सूँघने लगा। तब यह मिमियाया।

पैनी बोला, "बच्चे, तेज़ी से बढ़ो।"

जोडी उससे मिलने के लिए दौड़ा। सड़क पर आकर एक क्षण के लिए

रुका और बोला, "उनमें से किसी को हमारे घर की ओर जाने वाली यह सड़क पकड़ने के लिए भी कह देना और, अगर मैं इसपर चल रहा होऊँ तो मुझे उठाने को कह देना। जाओ, जल्दी करो।"

उसके पिता का सड़क पर चलता हुआ सूजा शरीर एक भय के रूप में उस पर छा गया। वह दौड़ने लगा। उसका पिता अपने घर की ओर धीमी-धीमी चाल में लड़खड़ाता चल रहा था। जोडी उस गाड़ी की राह पर मेहंदी की झाड़ियों तक बढ़ता गया, जहाँ से यह फौरेस्टरों की ज़मीन की ओर फट गई थी। बहुत ज़्यादा चलने से यह सड़क घास आदि से रहित थी। यह उड़ती हुई धूल उसकी एड़ियों को जैसे अपने अन्दर दाब लेती थी और उसके पाँव का माँस जैसे उसके चुभन महसूस करता था। वह वहाँ से एक छोटी कुत्तों वाली पगडण्डी पर पड़ गया और यहाँ से उसके पाँव जम-कर चलने लगे। उसके पाँव बढ़ रहे थे, परन्तु उसका मन और शरीर कहीं और अटका हुआ था। जैसे एक खाली सन्दूक गाडी के पहियों पर बढ़ रहा हो। उसके पाँव के नीचे सड़क ऐसे लगती थी जैसे कोल्हू के चारों ओर का रास्ता हो। उसके पाँव ऊपर-नीचे उठ और गिर रहे थे, परन्तु उसे ऐसा लगता था कि जैसे बार-बार वे ही पेड़ और वे ही झाड़ियाँ आती-जाती हों। उसे लगा कि उसकी चाल बहुत धीमी और इसीलिए बेकार थी। परन्तु अब वह एक मोड़ पर पहुँच चुका था। उसे अचरज हुआ, यह मोड़ फौरेस्टर परिवार की ज़मीन में जाने वाली सीधी सड़क पर निकलता था।

वह उस ज़मीन के बड़े ऊँचे वृक्षों तक पहुँच गया। वे उसे घूरते-से लगे, जैसे वे उसे बता रहे हों कि वह बिलकुल पास आ गया है। वह ज़िन्दा पहुँच गया था, पर वह डरा भी हुआ था। उसे फौरेस्टरों से डर भी था और अगर वे उसकी सहायता करने पहुँचे भी। और वह लौट भी पाया तो अब वह कहाँ जाएगा ? वह एक क्षण के लिए उन्हीं पेड़ों के नीचे रुका और सोचने लगा। तारे चमक आए थे, उसे पता था कि अब अंधेरा नहीं रहा। आसमान में बारिश के बादल नहीं थे, पर एक धुँधला-सा कुहरा जैसे चारों ओर छा गया था। पश्चिम आकाश में केवल एक हरा-सा प्रकाश फैल रहा था, जोडी को लगा जैसे यह हिरणी के ज़हर से पलटे

हुए हरे रग का माँस हो। उसे लगा कि वह जैसे अभी फौडरविंग को बुला लेगा। जैसे उसका मित्र उसकी आवाज़ सुन लेगा और उस तक पहुँचने के लिए दूसरों से अनुमति पा लेगा। जब वह अपने मित्र की आँखें दुख से भरी हुई देखेगा, उस क्षण का विचार-मात्र ही उसके हृदय को चैन देने लगा। उसने एक लम्बी साँस खींची और उन सनावर के वृक्षों के नीचे से एकदम तेज़ी से दौड़ पड़ा।

वह चिल्लाया, "फौडरविंग ! फौडरविंग ! मैं जोडी हूँ।"

अब एक ही क्षण में उसका मित्र बाहर आएगा और अपने टेढ़े मेढ़े शरीर से जल्दी में चारों हाथों-पाँवों से सीढ़ियाँ पार करता हुआ उस तक पहुँच जाएगा। या, फिर जैसे वह झाड़ियों में से निकलकर रैकून के साथ-साथ सामने प्रकट हो जाएगा। वह फिर बोला, "फौडरविंग ! यह मैं हूँ।"

पर कोई उत्तर न मिला। वह रेतीले आँगन में आगे बढ़ आया। फिर बोला, "फौडरविंग !"

घर में दीया-बत्ती पहले ही जल चुका था। चिमनी में से धुआँ उठ रहा था। चारों ओर के दरवाज़े बन्द थे, कहीं रात में मच्छर आदि न घुस आएँ। इतने में दरवाज़ा खुला। प्रकाश में उसने देखा कि एक-एक करके सारे फौरेस्टर ऐसे उठते हुए आए, जैसे लम्बे-चौड़े वृक्ष जंगल में जड़ों-समेत उखड़कर उसकी ओर आ रहे हों। वह रुक गया। लेम उसकी ओर बढ़ा। उसने अपना सिर झुका लिया और एक ओर को देखने लगा, जब तक कि लेम ने उसे पहचान न लिया।

लेम बोला, "तुम हो ! ओछे जानवर ! तुम यहाँ किसलिए ?"

जोडी लड़खड़ाया, "फौडरविंग !"

"वह बीमार है, तुम उसे किसी भी हालत में नहीं देख पाओगे।"

उसके लिए यही बहुत था। वह रोता हुआ फूट पड़ा, "पिताजी को साँप ने काट लिया है।"

सभी फौरेस्टर सीढ़ियों से उतर आए और उसके चारों ओर खड़े हो गए। वह ज़ोर से सुबकने लगा, मानो अपने और अपने पिता के लिए करुणा और दया की भीख माँग रहा हो। उसमें यह भावना भी मिली थी कि आखिर जिस काम के लिए चला था, वहाँ पहुँचकर वह पूरा हो गया।

उन आदमियों में कुछ ऐसी हलचल मची, जैसी आटे में खमीर लगने पर होती है।

"वह है कहाँ ? साँप कैसा था ?"

"फनियर साँप ! एक बहुत बड़ा ! वह घर की ओर बढ़ रहे हैं। मैं वायदा करता हूँ कि आगे से ओलिवर को कभी मदद नहीं करूँगा। आप सहायता कीजिए।"

लेम हँस पड़ा, "एक मच्छर वायदा कर रहा है कि वह काटेगा नहीं।"

बक बोला, "किसी भी इलाज से उसका कोई भला न होगा। उसकी बाँह में साँप ने काटा है और वह मर रहा है। हो सकता है कि डाक्टर को उसके पास ले जाने से पहले ही वह मर जाए।"

जोडी बोल पड़ा, "नहीं, उन्होंने एक हिरणी मारी थी और उसके जिगर को काट कर अपना ज़हर निकाल दिया था। कृपा करके डाक्टर को ले आइए।"

मिलव्हील बोला, "मैं उसे ले आऊँगा।"

जोडी को जैसे चैन उमड़ती-सी लगी, बोला, "मैं धन्यवाद देता हूँ।"

"मैं तो किसी साँप के काटे कुत्ते की भी मदद करता। धन्यवाद की ज़रूरत नहीं।"

बक बोला, "अच्छा मैं घोड़े पर जाकर रास्ते से पैनी को उठा लूँगा। अगर वह सह सकता होगा तो अब तक बचा हुआ होगा। अगर तो उसने शराब पी हुई होगी, तो उसकी साँस अब भी चल रही होगी। यह अच्छी बात होगी।"

बक और मिलव्हील बड़े अजीब इशारों के साथ घुड़साल की ओर अपने घोड़ों को तैयार करने चले गए। उनका आराम से चलना जोडी को अखरा। अगर उसके पिता की ज़िन्दगी की आशा होती तो वे जल्दी मचाते। परन्तु, उनका धीमेपन और निश्चिन्तता से काम करना, पैनी को दफ़ना देने के बराबर था। वह निराश-सा खड़ा रहा। जाने से पहले वह एक क्षण के लिए फौडरविंग को देखना चाहता था। शेष फौरेस्टर लोग उसकी तरफ पीठ फेरकर उपेक्षा से सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। लेम दरवाज़े के पीछे से बोला, "मच्छर, जाओ भागो !"

आर्क बोला, "अरे, उस छोटे पर दया करो। उसे मत सताओ। उसका पिता मर ही रहा है।"

लेम ने उत्तर दिया, "अच्छा है, मरे और छुटकारा हो। वह बड़ा अड़ियल है।"

वे घर में घुस गए और दरवाज़ा बन्द कर लिया। जोडी पर एक डर सवार हो गया कि जैसे उनमें से कोई सहायता नहीं करेगा और शायद बक और मिलव्हील भी मज़ाक के लिए ही घुड़साल की ओर गए हैं और वहाँ जाकर हँसी में डूब गए हैं। उसे और उसके पिता को जैसे सबने भुला दिया है। पर उसी समय अचानक दोनों घोड़ों पर सवार होकर वहाँ आ गए और बक ने मित्रतापूर्ण ढंग से उसकी ओर हाथ उठाकर कहा, "बच्चे, डरने की ज़रूरत नहीं। जो कुछ हो सकेगा, हम करेंगे। मुसीबत में फँसे आदमी से हमें कोई गिला नहीं।"

उन्होंने एड़ लगाई और तीर की तरह निकल गए। जोडी पर से जैसे मौत का सन्नाटा हट गया और उसकी जगह उसके दिल में एक हलकापन छा गया। उसने समझ लिया कि यह केवल लेम ही था कि जिसने ओछापन दिखाया और जो असल शत्रु था। उसकी सारी घृणा सन्तोष के कारण दब गई। वह तब तक वहीं खड़ा रहा जब तक घोड़ों के खुरों की टाप सुनाई देनी बन्द न हो गई। और तब घर की ओर चल पड़ा।

अब वह सच्चाई को स्वीकार करने के लिए तैयार था। साँप ने उसके पिता को काटा था और पिता मर भी सकता था। पर सहायता तैयार थी और जो कुछ उससे आशा थी उसने पूरा कर दिया था। उसे अपना डर साफ दिखाई दे रहा था, पर अब वह भयानक नहीं रहा था। उसने न दौड़ने का निश्चय किया और वह स्थिर क़दमों से चलने लगा। उसकी इच्छा थी कि वह भी अपने लिए एक घोड़ा माँग ले, पर उसकी हिम्मत नहीं पड़ी।

वर्षा की एक बौछार उस पर से गुजर गई। उसके बाद फिर एक चुप्पी सी छा गई। शायद एक आँधी जंगल में बड़ी तेज़ी से आएगी, जैसा कि अक्सर होता है। चारों ओर आकाश में हल्की-सी चमक थी। उसे तनिक भी ख़याल न था कि पिता की बन्दूक़ उसी के पास है। उसने इसे एक कंधे पर लटकाए रखा और पक्की सड़क की ओर जल्दी-जल्दी बढ़ने लगा। वह सोचने लगा

कि मिलव्हील डाक्टर तक पहुँचने में कितनी देर लगाएगा ? उसे यह भी सन्देह था कि डाक्टर बहुत अधिक शराब न पीये हुए हो ! क्योंकि अगर वह बिस्तरे से न उठ सका तो वह न आएगा।

वह भी एक बार बहुत छुटपन में डाक्टर के यहाँ गया था। उसे अब भी उस लम्बे-चौड़े और बड़े बरामदों वाले टूटते-फूटते मकान का ध्यान था, जो कि एक बड़े जंगल के बीच में था। उसे अब भी दीवारों में उगने वाले वृक्षों और छिपकलियों आदि का ध्यान था और साथ ही बाहर की ओर चढ़ी हुई लम्बी-लम्बी बेलों का भी। उसे अब भी याद था कि किस तरह शराब के नशे में डूबा हुआ डाक्टर अपनी मच्छरदानी के अन्दर पड़ा हुआ छत की ओर ताक रहा था। जब उसे बुलाया गया तो वह अपने पाँव के बल पर उठ पड़ा और लड़खड़ाते क़दमों से अपने काम में जुट पड़ा। परन्तु उसका दिल और उसके हाथ बड़े उदार थे। वह एक अच्छे डाक्टर के रूप में चारों ओर प्रसिद्ध था। शराब का पीना या न पीना उसके लिए महत्त्व न रखता था। जोडी ने सोचा, अगर मिलव्हील उसके पास समय से पहले पहुँच गया तो उसका पिता निश्चय ही बच जाएगा।

वह फौरेस्टरों की पगडण्डी से सड़क पर आ गया और तब अपने खेतों की ओर दौड़ने लगा। उसके सामने चार मील का लम्बा रास्ता पड़ा था। ज़मीन सख्त होती तो उसे एक घंटे से ऊपर लगना आवश्यक था। मिट्टी नर्म थी और अंधेरा छा रहा था। इसलिए उसके पाँव जैसे पीछे को खिच रहे थे। इस तरह तो वह दो घंटे में भी शायद ही पहुँचे। इसीलिए कभी-कभी वह दौड़ने लगता था। चारों ओर की हल्की-हल्की चमक भी अंधेरे में डूब गई, जैसे जल-मुर्गी नदी में गोता लगा गई हो। सड़क के दोनों ओर की चौड़ाई समीप आती जा रही थी, मानो सड़क तंग हो गई।

उसे पूर्व में ज़ोर की गरज और बिजली की चमक आकाश में भरती दिखाई दी। उसे ऐसा लगा कि जैसे सनावरों के नीचे किसी के क़दमों की आवाज़ उसने सुनी हो, पर ये वर्षा की बूँदे थीं। उसे न रात की परवाह रही थी, न अंधेरे की, परन्तु तब पैनी उपस्थित होता था। आज पैनी साथ न था और वह अकेला था। वह उदास और सुस्त हो गया और सन्देह में पड़ गया कि शायद उसका पिता ज़हर से सूजकर रास्ते में ही गिरा पड़ा

हो। या फिर, अगर उसके मरने से पहले जीवित रूप में बक ने उसे खोज लिया हो तो शायद बक के घोड़े की पीठ पर लदकर घर पहुँच गया हो। बिजली एक बार फिर चमकी। ऐसी कितनी ही आँधियों में वह अपने पिता के साथ इन्हीं सनावरों के नीचे बैठा रहा था, तब यह वर्षा उसे परिचित लगती थी और मित्र भी, क्योंकि उन दोनों को साथ-साथ बैठने का मौक़ा मिलता था।

झाड़ियों में उसे एक गुर्राहट सुनाई दी। कोई बहुत तेज़ गति वाली चीज़ उसके सामने से एक क्षण में ही सड़क पार करके चुपचाप दूसरी ओर निकल गई। वह बिल्ली या बनबिलाव से नहीं डरता था, परन्तु चीता घोड़े पर भी हमला कर सकता था। उसका दिल धड़कने लगा। उसने पिता की बन्दूक़ के घोड़े पर अँगुली रख ली। पर यह सब व्यर्थ था, क्योंकि पैनी दोनों गोलियाँ पहले ही चला चुका था—एक साँप पर और एक हिरणी पर! उसके पास पिता का चाकू भी था। उसने सोचा, काश! ओलिवर वाला चाकू भी उसके पास उस समय होता। पर क्योंकि उसके लिए कोई खोल नहीं था और वह बहुत तेज़ था, इसलिए पैनी ने उसे लाने से मना कर दिया था। घर में आराम से बैठे-बैठे या अंगूरों की बेल के नीचे या फिर सोते के किनारे बैठकर उसने हमेशा ही सोचा था कि किसी भालू, भेड़िए या चीते की छाती में वह एक ही वार में इसे घुसेड़ देगा। परन्तु वह सब सोचना अब उसे अच्छा नहीं लग रहा था। उसे लगा कि चीते के पंजे उससे भी बहुत तेज़ थे।

जो भी जानवर रहा हो, वह अब जा चुका था। अब वह फिर तेज़ी से लड़खड़ाता हुआ बढ़ने लगा। उसे लगा, जैसे उसने भेड़िए की पुकार सुनी हो। परन्तु यह इतनी दूर से आ रही थी, जैसे हवा की ही आवाज़ हो। हवा बढ़ती आ रही थी, बहुत दूरी से आती हुई इसकी आवाज़ उसे सुनाई दी। जैसे इन अंधेरे जंगलों से परे वह किसी दूसरे संसार में चल रही हो। पर एकदम ही उसे यह आवाज़ पास आती हुई सुनाई दी, जैसे कोई दीवार पास बढ़ती आ रही हो। सामने के पेड़ों की शाखाएँ हिलने लगी। झाड़ियाँ आवाज़ के साथ नीचे गिरने लगीं। आँधी इतने बड़े शोर के साथ आई, जैसे उसे किसी ने धक्का दे दिया हो।

उसने अपना सिर नीचे झुका लिया और इसके विरुद्ध बढ़ने लगा। उसकी खाल एक ही मिनट में भीग गई। उसकी पीठ और गर्दन पर बारिश गिर रही थी और वहाँ से पाजामों तक बहकर उसे गीला कर गई। उसके सारे कपड़े भारी हो गए और उसकी चाल रुकने लगी। वह रुका और उसने अपनी पीठ हवा की ओर करके अपनी बन्दूक़ सड़क के एक किनारे रख दी। उसने अपनी कमीज़ और पाजामा उतारा और उन्हें एक गठरी के रूप में बाँध लिया। बन्दूक़ उठाकर वह उस आँधी में नंगा ही चलने लगा। उसकी नंगी खाल पर पड़ने वाली बारिश ने उसे स्वच्छ और स्वतन्त्र होने का अनुभव दिया। बिजली चमकी और वह अपने गोरेपन से स्वयं चकित रह गया। परन्तु, उसे ऐसा लगा कि अब जैसे वह रक्षा से रहित था। वह अकेला और नंगा था। चारों ओर का संसार उसका शत्रु था। आँधी और अंधेरे में वह खोया और भूला हुआ था। कोई चीज़ उसके पीछे से दौड़ती हुई उसके आगे निकल गई। वह जंगल में इस तरह घूम गई, जैसे चीता हो। इसकी कोई शकल न थी और यह बहुत लम्बी-चौड़ी थी। यही उसका शत्रु था। लगता है मौत जंगल में खुली घूम रही थी।

उसे लगा कि उसका पिता या तो मर चुका या मर रहा था। परन्तु इस विचार का बोझ भी वह न सह सका। इस विचार को हटाने के लिए वह तेज़ी से दौड़ने लगा। उसके विचार में पैनी मर नहीं सकता था। कुत्ते मर सकते थे; भालू, हिरण और दूसरे मनुष्य मर सकते थे। उन सबके मरने का उसे ग़म न था, क्योंकि उसका कोई सम्बन्ध उनसे न था। पर पैनी अगर मर गया तो उसके लिए कोई भी चीज़ महत्त्व की न थी। आज वह ज़िन्दगी में सबसे अधिक डरा हुआ था। वह रोने लगा। उसके आँसू नमकीन स्वाद के साथ उसके मुँह में आने लगे। उसने जैसे फौरेस्टरों से प्रार्थना की थी, ऐसे ही रात से प्रार्थना की, "कृपा करो।"

उसका गला दर्द करने लगा। उसकी जाँघें जैसे गर्म सीसे से दाग़ दी गई हों। इतने में बिजली फिर चमकी और फिर उसे सामने एक रास्ता दिखाई दिया। यह उनका पुराना छोड़ा हुआ खेत था। वह तेज़ी से दौड़ा और क्षण-भर के लिए पुरानी बाड़ का सहारा लेकर खड़ा हो गया। अब हवा का झोंका उसे बारिश से भी अधिक ठण्डा लगने लगा। वह काँपा,

उठा और फिर आगे चल पड़ा। रुकने के कारण उसे सर्दी लग गई थी। अब उसने अपने को गर्म करने के लिए दौड़ना चाहा, परन्तु उसकी ताक़त केवल घिसटने लायक ही रह गई थी। वर्षा के कारण मिट्टी जम गई थी और इसलिए चलना आसान हो गया था। हवा का ज़ोर कम हो गया। मूसलाधार बारिश भी धीमी पड़ गई। वह सुस्ती से चलने लगा। उसे लगा कि जैसे वह हमेशा चलता ही रहेगा, पर अचानक ही उसने देखा—वह सोते के पास से गुज़र रहा था और घर के खेत आ चुके थे।

घर में बत्तियाँ जगमगा रही थीं। घोड़े बाहर हिनहिना रहे थे और खुर पटक रहे थे। वहाँ बाड़ के साथ तीन घोड़े बंधे हुए थे। दरवाज़े में से होता हुआ वह कमरे तक आ गया। जो होना था सो हो चुका था। उसका किसी ने भी उठकर स्वागत न किया। बक और मिलव्हील भी नंगी ज़मीन पर ही बैठे थे और उन्होंने कुर्सियों की ढासना ली हुई थी। वे कुछ बातें कर रहे थे। उन्होंने उसकी ओर देखा, पुकारा और फिर अपनी बातों में लग गए।

मिलव्हील बोला, "बक, क्या तुम यहाँ नहीं थे, जब ट्वीसल साँप के काटने से मरा था ? पैनी ने शायद ठीक ही सोचा कि शराब का कोई लाभ नहीं। ट्वीसल ने जलमुर्ग की तरह शराब पी रखी थी और उसी नशे में साँप पर पाँव रख बैठा।"

बक बोला, "खैर, अगर कभी मुझे साँप काटे तो मुझे शराब से जितना अधिक भर सको, भर देना। मैं किसी भी दिन रोकर मरने की अपेक्षा शराब पीकर मरना अधिक पसन्द करूँगा।"

मिलव्हील ने आग की ओर थूका, "मत डरो। तुम ऐसे ही मरोगे।"

जोडी को होश न रहा, पर वह उनसे कुछ पूछ भी न सका। वह उनके पास से होता हुआ, जल्दी से पिता के कमरे में चला गया। उसकी माता बिस्तर के एक ओर बैठी थी और डाक्टर विल्सन दूसरी ओर। डाक्टर ने अपना सिर ऊँचा न उठाया। उसकी माँ ने उसकी ओर देखा और बिना बोले उठी। वह एक आलमारी तक गई और उसमें से एक साफ पाजामा और कमीज़ निकाल लाई। उसने अपने गीले कपड़े एक किनारे रखे और बन्दूक़ दीवार के सहारे खड़ी की और अपने बिस्तर की ओर

धीरे-धीरे बढ़ गया। वह सोचने लगा कि अगर अब तक नहीं मरा तो उसका पिता अब भी नहीं मरेगा।

अपने बिस्तर में ही पैनी हिला। जोडी का दिल यह देखते ही ऐसे उछला, जैसे कोई खरगोश उछला हो। पैनी दर्द के मारे चिल्लाया, और उसने उल्टी का प्रयत्न किया। डाक्टर एकदम झुका और उसने चिलम्ची उसके सिर के साथ लगा दी और सिर थपथपाने लगा। पैनी का चेहरा काला और सूजा हुआ था। उसने बड़ी दर्द के साथ उल्टी की। परन्तु उल्टी में कुछ निकला नहीं। वह ज़ोर से साँसें लेता हुआ फिर से पड़ गया। डाक्टर ने चादर में हाथ डालकर कपड़े में लिपटी हुई ईंट निकाली और जोडी की माँ को पकड़ा दी। उसने जोडी के गीले कपड़े बिस्तर के पाँयते की ओर रख दिए और रसोई में ईंट को दुबारा गर्म करने के लिए चली गई।

जोडी ने धीमे से पूछा, "क्या वह ठीक नहीं हैं? बीमारी ज़्यादा है?"

"बुरे तो क़ाफी हैं, पर लगता है ठीक हो जाएँगे। कभी-कभी निराशा भी होने लगती है।"

पैनी ने अपनी सूजी हुई आँखें खोलीं। पुतलियाँ फैली हुई थीं और उसकी आँखें काली-सी लग रही थीं। उसने अपनी बाँह उठाई और घुमाई। यह ऐसे सूजी हुई थी, जैसे बैल की जाँघ हो।

वह भारी गले से बोला, "तुम्हें ठंड न लग जाय!"

जोडी ने अपने कपड़े जल्दी से पहने। डाक्टर प्रसन्नता में बोला, "यह बहुत अच्छा चिह्न है कि वह तुम्हें पहचानता है। ये पहले शब्द हैं जिन्हें यह बोल पाया है।"

जोडी का हृदय एक साथ ही प्रसन्नता और दुख से भर गया। अपने दुख में भी पिता उसे भूला नहीं। उसे विश्वास था, अब पैनी नहीं मरेगा।

वह बोला, "श्रीमान् डाक्टर! इन्हें अवश्य ठीक होना चाहिए।" और तब उसने पिता के ही पुराने शब्दों को दोहराया, "हम बैक्स्टर लोग बहुत ठिगने किन्तु कठोर होते हैं।"

डाक्टर ने स्वीकृति में सिर हिलाया और रसोई की तरफ देखकर पुकारा, "कुछ गर्म दूध लाओ। कोशिश कर देखें।"

आशा के साथ जोडी की माँ ने ज़ोर की साँस ली। जोडी भी भट्ठी पर

उससे जा मिला। वह बोली, "अगर कहीं बुरा हुआ तो हम कहीं के न रहेंगे।"

जोडी बोला, "माँ, ऐसा नहीं होगा।" पर अन्दर ही अन्दर वह डर गया। वह बाहर कुछ लकड़ी लाने गया। आँधी पश्चिम की ओर जा रही थी। बादल भी स्पेनी लोगों की सेनाओं की तरह बढ़ते जा रहे थे। पूर्व में कुछ जगह रोशनी साफ होने लगी थी और वहाँ तारे दीख रहे थे। ताज़ी और ठण्डी हवा बहने लगी थी। तब तक वह तेल-भरी लकड़ी का एक गट्ठर ले आया।

वह बोला, "कल का दिन बहुत अच्छा होगा, माँ!"

"सचमुच दिन निकलने तक अगर यह ज़िन्दा रहे तो कल का दिन बहुत अच्छा होगा।" वह आँसुओं में फूट पड़ी। उसके आँसू भट्ठी पर गिर रहे थे। उसने रूमाल उठाकर आँसू पोंछे और बोली, "तुम यह दूध अन्दर ले जाओ। मैं अपने और डाक्टर के लिए चाय बनाऊँगी। मैंने अभी कुछ भी नहीं खाया था कि बक इन्हें इस रूप में लेकर आ गया। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा ही कर रही थी।"

उसे याद था कि उसने भी हल्का ही भोजन किया था, परन्तु इस समय उसे किसी भी चीज़ का स्वाद अच्छा नहीं लग रहा था। भोजन का विचार भी उसे बुरा लगा। उसने दूध का प्याला लिया और अपने हाथों को सम्हालता हुआ डाक्टर के पास ले गया। डाक्टर ने इसे लिया और पैनी के पास बिस्तर पर बैठकर बोला, "बेटा! तुम इनका सिर उठाओ, मैं इन्हें चम्मच से दूध पिलाऊँगा।"

तकिए पर पड़ा पैनी का सिर भारी था। जोडी की बाँहें उठाने के ज़ोर से दर्द करने लगीं। उसके पिता की साँस भारी चल रही थी, वैसी ही जैसे फौरेस्टर लोगों की शराब पीने की दशा में चलती थी। उसके चेहरे का रंग पलट चुका था। हरे रंग का चेहरा पिलपिला-सा हो गया था, जैसे वह मेढक के पेट जैसा बन गया हो। पहले-पहल उसके दाँतों ने चमचे के घुसने का विरोध किया।

डाक्टर बोला, "इससे पहले कि मैं फौरेस्टरों को बुलाऊँ, तुम अपना मुँह खोल लो।"

उसके सूजे हुए होंठ अलग हो गए। पैनी ने दूध निगल लिया। आधा प्याला पीते ही उसने अपना सिर पलट लिया।

डाक्टर बोला, "ठीक है। पर अब अगर तुमने इसे निकाला, तो फिर मैं और ज़्यादा पिलाऊँगा।"

पैनी को पसीना आने लगा।

डाक्टर बोला, "बहुत अच्छा। पसीना आना ज़हर उतरने की दृष्टि से अच्छा लक्षण है। हे भगवान्! अगर कहीं हम सबके पास ही शराब समाप्त न हो गई होती, तो मैं तुम्हें और अधिक पसीना ला देता।"

जोडी की माँ कमरे में चाय के दो प्याले और कुछ बिस्कुट लेकर आई। डाक्टर ने अपनी चाय ली और घुटनों पर रखकर सम्हाली। उसने इसे स्वाद और घृणा के मिले-जुले भाव के साथ पिया।

वह बोला, "यह ठीक तो है, पर यह शराब नहीं है।"

जोडी ने उसे इतनी नम्रता से बोलते हुए कभी नहीं सुना था।

डाक्टर बड़े शोक से बोला, "एक भला आदमी साँप से डसा गया है और सारे इलाके में शराब किसी के पास भी नहीं है।"

माँ ने बड़े धीरे से पूछा, "जोडी, तुम्हें कुछ चाहिए ?"

"नहीं, मुझे भूख नहीं है।"

उसका पेट भी उसके पिता के समान ही इस समय अरुचि से भरा हुआ था। उसे लगा कि जैसे वह ज़हर उसी की नसों में घूम रहा हो और उसके दिल और आँतों पर बार-बार असर कर रहा हो।

डाक्टर बोला, "शुक्र करो, उसने उलटी नहीं की।"

पैनी बहुत गहरी नींद में सो गया था। माँ कुर्सी पर झूलती हुई चाय पीती रही। बोली, "परमात्मा छोटे-से-छोटे पक्षी का भी ध्यान रखता है। लगता है कि उसने हमारे परिवार की सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है।"

जोडी सामने के कमरे में गया। बक और मिलव्हील वहीं फर्श पर हिरण की खाल बिछाकर लेटे हुए थे।

जोडी बोला, "माँ और डाक्टर खा रहे हैं। तुम्हें भी भूख लगी होगी ?"

बक बोला, "तुम्हारे आने से पहले हम खाकर ही निबटे थे। हमारा

खयाल न करो। हम यहीं पर सो जाएँगे और परिणाम की प्रतीक्षा करेंगे।"

जोडी अपनी एड़ियों के बल बैठ गया। उसकी इच्छा थी कि उनसे कुछ बात करे। कुत्तों, बन्दूक़ों और शिकार के विषय में बात करना अच्छा था। और, उन सब बातों में भी उसे मज़ा आता, जो कोई भी जीवित मनुष्य कर सकता। परन्तु, बक खर्राटे भरने लगा। जोडी अपने कमरे में खिसक आया। डाक्टर भी सो रहा था। उसकी माँ ने बत्ती को सिरहाने से हटा कर एक ओर कर दिया और आरामकुर्सी पर लौट आई। उसकी कुर्सी के पाये कुछ देर चरमराए और फिर चुप हो गए। वह भी सो गई थी।

जोडी को लगा कि जैसे अपने पिता के साथ वह अकेला था। अब चौकीदारी का काम उसका था। अगर वह जागता रहा और इस दुखी सोने वाले पिता के साथ उसकी साँस बचाने के लिए संघर्ष करता रहा और उसके लिए ही स्वयं साँस लेने का यत्न करता रहा, तो वह इसे जीवित रखने में अवश्य सफल हो जाएगा। उसने अपने पिता के समान ही एक गहरी साँस ली। इसने उसे चक्कर-से ला दिए। परन्तु अब उसका सिर हलका था, पर अपना पेट उसे खाली लगने लगा। उसे लगा कि खाने से वह शायद कुछ ठीक अनुभव करे। परन्तु वह कुछ निगल नहीं सकता था। वह फर्श पर ही बैठ गया और उसने अपना सिर चारपाई के किनारे टिका दिया। वह दिन की पुरानी बातों पर विचार करने लगा, मानो वह सड़क पर लौटकर जा रहा हो। अब पिता के पास बैठकर उसे अधिक सुरक्षा महसूस हुई। इतनी सुरक्षा उसे तूफ़ानी रात में भी नहीं अनुभव हुई थी। उसने अनुभव किया कि बहुत-सी बातें, जो पैनी के साथ रहने पर उसे भयंकर नहीं लगतीं, अकेला रहने पर उसे डरा सकती हैं। इस समय उसे केवल फनियर साँप का ही भय सता रहा था।

उसे साँप का तिकोना सिर, उसके काटने की बिजली-जैसी तेज़ी और बाद में ऐंठनों का दब जाना—आदि सब याद हो आया। उसका माँस जैसे कचोट उठा। उसे लगा, जैसे जंगल में वह फिर कभी चैन महसूस न कर सकेगा। उसे पिता का शान्तिपूर्वक साँप पर गोली चलाना और कुत्तों का डरना भी याद हो आया। फिर उसे हिरणी और उसके गर्म माँस की याद आई, जिसे पिता ने अपने घावों पर लगाया था। फिर उसे उस छोटे से

छौने की याद आई। अब वह सीधा होकर बैठ गया। उसे ध्यान आया कि छौना इस समय भी अकेला ही होगा, जैसे जंगल में वह अकेला था। जो घटना उसके पिता की जान ले सकती थी, उसने उस छौने की माता की जान ले ली। वह छौना भूखा और प्यासा ही उस बिजली, वर्षा और कड़क में माँ के शव के पास लेटा रहा होगा। शायद वह अब भी इन्तज़ार कर रहा होगा कि कब यह उठेगी और उसे गर्मी, आराम और भोजन देगी? यह याद आते ही जोडी ने अपना मुँह चादर में छिपा लिया और तेज़ी से रोने लगा। वह एक ओर सब प्रकार की मृत्यु के लिए घृणा से भर गया था, और दूसरी ओर उसे सबका अकेलापन अखरने लगा।

15

जोडी ने एक बहुत बुरा स्वप्न देखा। वह अपने पिता के साथ ही फनियर साँपों के जाल में जा फँसा। वे उसके पाँवों पर घूम रहे थे। उनकी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। अन्त में यह सारा समूह जैसे एक साँप के रूप में बदल गया। यह साँप बहुत बड़ा था और उसकी ओर उसके मुँह को निशाना बनाकर बढ़ा आ रहा था। उसने डस लिया। जोडी ने चिल्लाने की कोशिश की, पर नाकाम रहा। वह अपने पिता को देखने लगा। उसका पिता वहीं साँप के नीचे आकाश की ओर आँखें उठाए पड़ा था। उसका शरीर भालू के शरीर जैसे सूज गया था। वह मर चुका था। अब जोडी साँप से हटकर दर्द-भरे क़दम उठाता हुआ पीछे हटा। परन्तु उसके पाँव जैसे जम गए थे। साँप एकदम ही छिप गया। अब जैसे वह एक हवादार स्थान पर अकेला खड़ा हो और हिरणी का वह छौना उसके हाथ में हो। पैनी मर चुका था। दिल तोड़ देने वाली एक दुखभरी भावना उस पर सवार हो गई। वह रोता हुआ जागा।

वह फर्श पर बैठ गया। दिन का प्रकाश खेतों के ऊपर पड़ना शुरू हो गया था। चीड़ के पेड़ों के परे पीला प्रकाश दीखने लगा था। कमरा कुछ हल्के प्रकाश से भर रहा था। एक क्षण के लिए उसे अनुभव हुआ कि जैसे अब भी वह छौना उसके पास हो। तब उसे याद आया। उसने अपने पिता को देखा और अपने पाँवों को अच्छी तरह जाँचा।

पैनी अब कुछ सरलता से साँस ले रहा था। उसका चेहरा अब भी सूजा हुआ था और उसे अब भी बुखार था। परन्तु जब उसे एक बार मक्खियों ने काटा था, तब की अपेक्षा अब उसे सूजन कम थी। माँ अब भी अपनी आरामकुर्सी पर सिर पीछे किए सो रही थी। डाक्टर बिस्तरे के पाँयते पर ही लेट गया था।

जोडी ने धीमे से डाक्टर को पुकारा। कुछ खीजते हुए डाक्टर ने सिर उठाया और बोला, "क्या बात है ? क्या है ?"

"डाक्टर ! पिताजी की ओर देखिए।"

डाक्टर उठा और एक कोहनी के बल टिक गया। उसने पलक झपकाई और हाथ से उन्हें मला। वह बैठ गया और पैनी पर झुककर बोला, "हे भगवान् ! यह तो ठीक हो रहा है।"

माँ सोते से उठकर पूछ बैठी, "हैं, क्या ?"

अब वह सीधी बैठ गई थी। उसने पूछा, "क्या वह मर गया ?"

"नहीं, अब तो वह बात बहुत दूर की हो गई।"

वह फूट-फूटकर रोने लगी।

डाक्टर ने कहा, "ऐसा लगता है, जैसे तुम बहुत दुखी हो गई हो।"

वह बोली, "तुम क्या जानो, अगर वह न रहता तो हम पर क्या बीतती ?"

जोडी ने उसे कभी इतने प्यार से बोलते न सुना था।

डाक्टर बोला, "क्यों ? जोडी को देखो। तुम्हारे पास यह जो दूसरा आदमी तैयार बैठा है ! यह हल चलाने, फसल काटने और शिकार खेलने के लिए काफी है।"

वह बोली, "जोडी तो ठीक है। पर अभी तो यह बच्चा ही है। इसका ध्यान अभी खेलने-कूदने में ही लगा रहता है।"

बात सच थी। जोडी का सिर लटक गया।

वह बोली, "और इसके पिता ही इसे हौंसला देते हैं।"

डाक्टर बोला, "बेटा! खुश रहो! तुम्हें पिता से उत्साह मिलता है। हम में से बहुतों को यह नसीब नहीं होता। अच्छा श्रीमतीजी, अब ज़रा थोड़ा दूध और ला दें, ताकि इसके जागने के पहले ही इसे कुछ पिला दें।"

जोडी ने उत्सुकता से कहा, "माँ, मैं दूध दुहकर लाता हूं।"

वह बड़े सन्तोष के साथ बोली, "हाँ, समय पर ले आना।"

वह सामने के कमरे से होकर निकला। बक नींद से जागता हुआ अपने सिर को मसलता हुआ बैठा था। मिलव्हील अब भी सो रहा था।

जोडी बोला, "डाक्टर का कहना है कि पिताजी बच गए हैं।"

"बुरा हो मेरा! मैं तो उसे दफनाने में सहायता करने के लिए जागा था।"

जोडी किनारे-किनारे होता हुआ दीवार पर गया और वहाँ से दूध की बाल्टी उतार ली। उसे बाल्टी जैसा ही हल्कापन अपने में भी अनुभव हुआ। उसे लगा कि जैसे वह इतना हल्का हो गया है कि अपनी बाँहों को पंखों की तरह फैलाकर तैर सकता है। अभी सुबह की लाली फूट ही रही थी। सामने के वृक्ष पर हँसी की आवाज़ वाला पक्षी अपनी पतली और सुरीली आवाज में गा उठा। उधर पालतू मुर्गे ने लम्बी बाँग दी। यही वह समय था, जब पैनी जागा करता था और जोडी को सोते रहने देता था। सुबह की चुप्पी छा रही थी। चीड़ की चोटियों पर हल्की-सी हवा की फरफराहट सुनाई दे रही थी। उगते ही सूर्य ने अपनी लम्बी अंगुलियाँ खेतों पर फैला दी थीं। उसने ज्यों ही पशुओं की जगह का दरवाजा खोला कि चीड़ों पर से कुछ कबूतर अपने पंख फड़फड़ाते हुए उड़ गए। उसने उन्हें पीछे से आवाज़ लगाई।

गाय उसकी आवाज़ सुनते ही झुक गई। वह उसके लिए चारा लेने के लिए ऊपर चढ़ गया। वह सोचने लगा कि इतने थोड़े से चारे के बदले यह बेचारी चुपचाप ही दूध देने को तैयार हो गई है। वह भूखी होने से चारा चबाती रही। उसने अपनी पिछली टाँग एक बार खतरे के लिए उठाई। परन्तु यह जोडी की गलती के कारण हुआ। तब उसने दो स्तन तो अच्छी

तरह दुहे और बाकी दो बछड़े के लिए छोड़ दिए। इतना दूध नहीं निकला, जितना उसका पिता निकाल लेता था। उसने निश्चय किया कि वह स्वयं दूध नहीं पीएगा, ताकि उसका पिता ठीक होने से पहले सारा का सारा दूध पी सके।

बछड़ा उन भरे हुए स्तनों पर टक्कर मारकर उन्हें ज़ोर-ज़ोर से चूसने लगा। अब यह काफी बड़ा हो चुका था। इसे देखकर जोडी को फिर से उस हिरणी के छौने का ध्यान हो आया। फिर एक भारी-सा बोझ उसके दिल पर छा गया। आज वह बेचारा भूख के मारे व्याकुल होगा। उसे अचरज हुआ कि कहीं वह मरी हुई हिरणी के स्तनों को ही चूसने की कोशिश न करे। हिरणी का खुला माँस भेड़ियों को बुलावा देगा। हो सकता है कि उनकी निगाह इस छौने पर भी पड़ जाय और वह इसे तार-तार करके फाड़ दें। सुबह की उसकी खुशी अब फिर दुख में बदल गई। पिता के अच्छे होने से हटकर, उसका दिमाग़ छौने की ओर लग गया और उसे चैन नहीं मिल पाई।

उसकी माँ ने दूध की बाल्टी ली और कमी पर कुछ न बोली। दूध को उसने गर्म किया और प्याला भरकर बीमार पति के पास आई। जोडी भी पीछे-पीछे आया। पैनी जग रहा था। कमज़ोरी के साथ वह मुसकराया।

बहुत भारी आवाज़ में वह बोला, "बेचारी मौत को मेरे लिए इन्तज़ार करनी पड़ेगी।"

डाक्टर बोला, "लगता है तुम भी फनियर साँपों के सम्बन्धी हो। मैं नहीं जानता कि शराब के बिना तुम कैसे बच गए।"

पैनी धीमे-धीमे बोला, "क्यों, डाक्टर! मैं खुद जो साँपों का राजा हूँ। तुम जानते हो कि साँप कभी भी अपने राजा को नहीं मार सकता।"

बक और मिलव्हील भी कमरे में आ गए। वे हँसने लगे।

बक बोला, "तुम अच्छे तो नहीं लगते, पैनी! पर बच ज़रूर गए हो।"

डाक्टर ने दूध पैनी के होंठों से लगा दिया और वह इसे तुरन्त पी गया।

डाक्टर बोला, "तुम्हें बचाने में मेरा अधिक हाथ नहीं है। सच तो यह है कि अभी तुम्हारा मरने का समय ही नहीं आया है।"

पैनी ने अपनी आँखें बन्द करते हुए कहा, "अब मैं एक हफ्ता सो सकता हूँ।"

डाक्टर बोला, "यही तो मैं चाहता हूँ। इससे अधिक मैं क्या कर सकता हूँ।"

खड़े होकर उसने अपनी टाँगें फैलाईं।

माँ बोली, "ये तो सोते रहेंगे, खेती कौन करेगा ?"

बक बोला, "क्या-क्या काम है, जो करना है ?"

"अधिकतर मक्की है, उसकी गोड़ाई करनी है। आलू हैं, उनकी भी निलाई करनी है। पर निलाई का काम जोडी भी कर सकता है, अगर वह चाहे।"

"मैं करूँगा, माँ !"

बक बोला, "मैं रुकूँगा। मक्की आदि का सारा काम मैं करूँगा।"

वह उत्तेजित-सी हो गई। कठोर-सी बनकर बोली, "मैं तुम्हारी कृपा नहीं चाहती।"

"रहने दो। अरे, कोई हम सारे के सारे उठकर रहने के लिए यहाँ तो आ नहीं जाएँगे ! मैं तो एक बहुत नाचीज़ आदमी हूँ। क्या मैं भी नहीं रह सकता ?"

वह नम्र बनकर बोली, "निश्चय ही मैं कृतज्ञ हूँ। अगर मक्की ठीक न हुई, तो हम सचमुच ऐसे ही मर जाएँगे, वैसे ही जैसे साँप के काटने से मरते हैं।"

डाक्टर बोला, "यह बात मैंने अपनी पत्नी के मरने के बाद से पहली बार सबसे अधिक नम्र रूप में सुनी है। मुझे खुशी होगी कि अगर जाने से पहले मैं नाश्ता कर लूँ।"

वह रसोई में जाकर काम में लग गई। जोडी भी आग जलाने में लग गया।

वह बोली, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि किसी फौरेस्टर की कृपा लूँगी।"

"बक पूरा फौरेस्टर नहीं है, माँ ! वह मित्र है।"

"हाँ, लगता तो ऐसा ही है।"

उसने कॉफ़ी का बर्तन पानी से भरा और पिसी हुई ताज़ा कॉफी उसमें डाल दी। बोली, "जाओ, धुआँघर में जाकर थोड़ा सूअर का माँस ले आओ। मैं यों ही हार न मानूँगी।"

वह बड़े अभिमान से ले आया, और माँ ने उसे माँस काटने दिया।

वह बोला, "माँ, पिताजी ने एक हिरणी मारी थी और उसका जिगर ज़हर चूसने के लिए प्रयोग किया था। उन्होंने अपना खून बहाया और उस पर जिगर रख दिया।"

"तुम उसी में से पीठ पीछे का माँस ले आते!"

"परन्तु उस समय तो यह सब सोचने का समय ही नहीं था।"

"यह भी ठीक है।"

"माँ, उस हिरणी के एक छौना भी था।"

"हाँ, बहुतों के होते हैं।"

"पर यह बहुत छोटा था। लगता है अभी पैदा ही हुआ था।"

"खैर, उससे क्या? जाओ, मेज़ ठीक करो। मुरब्बा लगा दो। यह मक्खन अब भी ठीक ही है। जाओ, इसे भी लगा दो।"

वह मक्की का हलवा बना रही थी। चर्बी बर्तन में पिघलने लगी थी। उसे हलवे में डाल दिया। उधर सूअर की कमर का माँस भी तड़कने लगा था। उसने सब टुकड़ों को फैला दिया, ताकि वे सभी ठीक से पक सकें। वह सोचने लगी कि इस सबसे बक और मिलव्हील का पेट भर भी सकेगा या नहीं? क्योंकि उन्हें अपने परिवार के अनुसार बहुत अधिक खाने की आदत पड़ी हुई है।

वह बोला, "माँ, माँस का शोरवा काफी सारा बना लेना।"

"अगर तुम अपना दूध न पिओ तो फिर मैं दूध-मिला शोरवा बनाऊँगी।"

यह बात कोई बड़ी थी नहीं। वह बोला, "हम कोई चूज़ा भी मार सकते हैं।"

"मैंने सोचा था, पर वे सभी अभी बहुत छोटे हैं।"

उसने हलवे को पटका। कॉफी उबलने लगी थी।

वह बोला, "मैं आज सवेरे कुछ कबूतर या गिलहरियाँ मार सकता हूँ।"

"बात तुमने ठीक समय पर सोची। जाओ, सबको अपने हाथ धोकर मेज़ पर बैठने के लिए कहो।"

उसने सबको बुलाया। वे सब हाथ धोने के लिए नल पर गए और अपने हाथ-मुँह आदि को पानी से धोने लगे। उसने उन्हें साफ तौलिया दिया।

डाक्टर बोला, "यह अच्छी बात है कि जब मैं ठीक होता हूँ, तब मैं बहुत अधिक भूखा नहीं होता।"

मिलव्हील बोला, "शराब स्वयं एक भोजन है। मैं उस पर ज़िन्दा रह सकता हूँ।"

डाक्टर बोला, "पत्नी को मरे बीस साल हुए। तब से मुझे तो शराब पर ही रहना पड़ रहा है।"

जोडी को आज के नाश्ते पर गर्व था। फौरेस्टरों जैसे बहुत-सी चीज़ें तो नहीं थीं, पर तब भी हर चीज़ अधिक थी। सभी पुरुष चाव से खा रहे थे। खाकर सबने अपनी तश्तरियाँ सरका दीं और पाइप लगा लिए।

मिलव्हील बोला, "लगता है जैसे इतवार हो। नहीं क्या ?"

माँ बोली, "बीमारी आने पर हमेशा ही इतवार हो जाता है। सम्बन्धी चारों ओर बैठे रहते हैं और कोई भी आदमी काम पर नहीं जा पाता।"

जोडी ने अपनी माँ को इतना मित्रतापूर्ण कभी न देखा था। जब तक सबने खा न लिया, तब तक वह प्रतीक्षा करती रही। उसे डर था कि सामान थोड़ा न पड़ जाए। अब वह आराम से खाने लगी। उधर पुरुष इधर-उधर की बातें करने लगे। जोडी का ध्यान फिर हिरण के छौने की ओर चला गया। वह उसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहा था। वह जैसे उसके पीछे ही हो, उसके स्वप्नों में या उसकी बाँहों में हो। वह मेज़ पर से उठा और पिता के पास चला गया। पैनी आराम से लेटा हुआ था। उसकी आँखें साफ और खुली हुई थीं। पर पुतलियाँ अब भी काली और फैली हुई थीं।

जोडी बोला, "कैसा लग रहा है आपको ?"

"बहुत अच्छा, बेटे ! शैतान मौत कहीं और सेंध लगाने चली गई है। पर क्या सब खतम होने वाला ही नहीं था ?"

"हाँ, मैं भी यही सोचता हूँ।"

पैनी बोला, "मुझे तुम पर अभिमान है। तुमने अपना दिमाग़ शान्त रखा और समय के अनुसार सब काम किया।"

"पिताजी !"

"हाँ, बेटे !"

"आपको याद है कि हिरणी के एक छौना भी था।"

"हाँ, मैं उन्हें कभी नहीं भूल सकता। उस हिरणी ने ही मुझे बचाया था।"

"पिताजी ! वह छौना अब तक वहीं होगा। वह भूखा और डरा हुआ होगा।"

"मेरा भी यही अनुमान है।"

"पिताजी ! अब मैं काफी बड़ा हो गया हूँ और मुझे दूध नहीं चाहिए। कैसा रहेगा यदि उस छौने को जंगल में जाकर ढूँढने की कोशिश करूँ ?"

"और उसे यहाँ उठा लाओ ?"

"और उसे पालूँ।"

पैनी छत की ओर देखता हुआ शान्त पड़ा रहा।

बोला, "बेटे ! तुमने मुझे फँसा लिया।"

"नहीं, पिताजी ! उसे पालना अधिक कठिन नहीं है। बहुत जल्दी ही बड़ा होकर वह अपना भोजन—पत्ते और फूल आदि—स्वयं ढूँढ लिया करेगा।"

"अजीब बात है। मैं जितने भी बच्चों को जानता हूँ, उनमें से तुम किसी से भी बहुत दूर के लगते हो।"

"हमने उसकी माँ को छीना, और वह बुरा नहीं था।"

"हाँ, यह ठीक तो नहीं लगता कि उसे भूखों मरने छोड़ दिया जाय। बेटे ! मेरे अन्दर हिम्मत नहीं है कि तुम्हें ना कर सकूँ। मुझे तो यह दिन देखने की भी आशा न थी।"

"तो क्या मैं मिलव्हील के साथ घोड़े पर जाकर उसे खोजने का यत्न करूँ ?"

"जाओ, अपनी माँ को कह दो कि मैंने तुम्हें जाने के लिए कहा है।"

वह मेज़ तक फिर सरक आया और बैठ गया। उसकी माँ हरेक के

लिए कॉफी परोस रही थी।

वह बोला, "माँ! पिताजी का कहना है कि मैं लौटकर उस छौने को लाने की कोशिश करूँ।"

माँ का हाथ वैसे ही रुक गया। पूछ बैठी, "कौनसा छौना?"

"वही! जिस हिरणी को हमने मारा था, उसका बच्चा! हमने उस हिरणी का जिगर पिताजी के ज़हर को दूर करने के लिए लिया था न!"

उसने गहरी साँस लेकर कहा, "ज़रा कृपा करो।"

'पर, पिताजी का कहना है कि उसे भूखों मरने देना उचित नहीं।"

डाक्टर बोल पड़ा, "श्रीमतीजी, यह बात ठीक है। कभी भी संसार में कोई भी चीज़ मुफ्त में नहीं आती। बेटा और बाप दोनों ठीक कहते हैं।"

मिलव्हील बोला, "वह मेरे साथ घोड़े पर चलेगा। मैं ढूँढने में सहा-यता दूँगा।"

उसने बड़ी निराशा में बर्तन नीचे रख दिया और बोली, "अच्छा, फिर तुम ही अपने हिस्से का दूध उसे दे देना, और तो हमारे पास कुछ है नहीं।"

"यही तो मैं कहना चाहता था। कुछ ही समय में वह कुछ भी न चाहेगा।"

सभी आदमी मेज़ से उठ गए।

डाक्टर बोला, "मैं तो अब इनकी सेहत अच्छी ही होती देखता हूँ। फिर भी अगर कोई ऐसी-वैसी बात हो जाय तो, श्रीमती जी! आप जानती ही हैं मुझे कहाँ से बुलवाना है।"

"डाक्टर, आप सचमुच बहुत अच्छे हैं। हम अपनी ज़िन्दगी की लड़ाई में उलझे हुए हैं। हमने कभी नहीं जाना कि लोग इतने उदार भी हो सकते हैं।"

"चुप रहो! यह आदमी सबसे भला है। इसके लिए और लोग क्यों न भले होंगे?"

बक बोला, "माँ, तुम्हारा क्या विचार है? क्या यह घोड़ा हल में मेरे काम आ जाएगा? मुझे तो लगता है कि कहीं मैं इसे पीस न डालूँ?"

डाक्टर बोला, "पैनी को जितना दूध पिला सको, पिलाते रहो। तब इसे हरी सब्ज़ी और ताज़ा माँस, अगर मिल सके तो, देना।"

बक ने कहा, "मैं और जोडी इस बात का ध्यान रखेंगे।"

मिलव्हील ने पुकारा, "आओ, जोडी ! हम तो चढ़कर चलें।"

माँ ने उत्सुकता से पूछा, 'तुम बहुत देर तो नहीं लगाओगे।"

जोडी बोला, "मैं दोपहर के खाने से पहले ही बहुत जल्द वापिस आऊँगा।"

वह बोली, "मेरे विचार में अगर यह खाने की बात न हो तब तुम शायद कभी लौटो ही ना !"

बक और मिलव्हील हँस पड़े। डाक्टर की निगाह मोतिया रंग के रैकून की खाल वाले थैले पर जा पड़ी।

"क्या यह बहुत अच्छी चीज़ नहीं है ? अपनी दवाइयाँ ले जाने के लिए मुझे ऐसा थैला पसन्द आता।"

जोडी के पास इससे पहले कभी कोई ऐसी चीज़ न रही थी, वह जिसे किसी को दे सके। उसने थैला खुशी से निकाला और डाक्टर के हाथ में दे दिया।

बोला, "यह मेरा है। आप इसे ले लीजिए।"

"क्यों ? मैं तुम्हें नहीं ठगना चाहता।"

वह फिर बोला, "पर यह मेरे किसी काम का नहीं। मैं दूसरा बना लूंगा।"

डाक्टर बोला, "अच्छा, धन्यवाद ! जब तक भी मैं कहीं जाऊँगा, मेरे मुख से तुम्हारे लिए धन्यवाद ही निकलेगा।"

जोडी को डाक्टर की खुशी से प्रसन्नता हुई। वे सब घोड़ों को पानी पिलाना और दाना खिलाने के लिए बाहर गए। बैक्स्टरों के भंडार में दाना कम ही था।

बक ने जोडी से कहा, "क्या तुम इतने थोड़े पर ही गुज़र नहीं कर रहे ?"

डाक्टर बोला, "पैनी को अकेले ही काम करना पड़ता है। कभी यह बच्चा भी बड़ा होगा; और तब सब ठीक हो जाएगा।"

बक बोला, "बैक्स्टर लोगों के लिए ऊँचाई का कोई महत्त्व नहीं।"

मिलव्हील घोड़े पर चढ़ गया और जोडी को उसने ऊपर खींच लिया। डाक्टर भी अपने घोड़े पर चढ़ा और दूसरी दिशा में चलने लगा। जोडी ने

उसे हाथ हिलाकर विदाई दी। उसका हृदय हल्का था।

वह मिलव्हील से बोला, "क्या तुम्हारे खयाल में छौना अब भी वहीं होगा? उसे ढूँढने में तुम मेरी सहायता करोगे?"

"अगर वह ज़िन्दा होगा तो हम उसे ढूंढ निकालेंगे। पर तुम यह कैसे जानोगे कि यही वह है?"

"उसके शरीर पर चित्तियाँ एक ही कतार में थीं। पिताजी का कहना है कि मादा छौने के चित्तियाँ ऐसी ही होती हैं।"

"यही बात इसके स्त्री होने की निशानी है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?"

"स्त्रियों की कोई बात विश्वसनीय नहीं होती।"

मिलव्हील ने घोड़े को एड़ लगाई और घोड़ा दौड़ने लगा।

"औरतों का मामला ही ऐसा होता है। अच्छा, तुम और तुम्हारे पिता हमारे और ओलिवर के बीच कैसे आ कूदे थे?"

"बात यह थी कि ओलिवर पर बुरी मार पड़ रही थी। यह बात हमें अच्छी नहीं लगी कि तुम सब-के-सब मिलकर अकेले उस बेचारे पर टूट पड़ो।"

"तुम ठीक हो। यह तो लेम और ओलिवर का मामला था। उन्हें ही लड़ना चाहिए था।"

"पर एक लड़की दो प्रेमियों से एक साथ कैसे प्रेम कर सकती है?"

"तुम लड़कियों का मामला नहीं समझ सकते।"

"मुझे ट्विंक वैदरबी से सख्त नफ़रत है।"

"मैं भी उसे देखना पसन्द नहीं करता। मुझे तो एक विधवा स्त्री का पता है। वह फोर्ट गेट पर रहती है और बहुत ही विश्वासपात्र है।"

मामला उलझा हुआ था। जोडी का ध्यान फिर से छौने पर चला गया। अब वे उजाड़ खेत के पार जा रहे थे।

वह बोला, "मिलव्हील, उत्तर की ओर मुड़ चलो। यहीं पर पिताजी को साँप ने काटा था और उन्होंने हिरणी को मारा था। यहीं मैंने उसे देखा था।"

"तुम दोनों इस सड़क पर क्या कर रहे थे?"

जोडी हिचकिचाया। बोला, "हम अपने सूअरों को ढूंढ रहे थे।"

"ओह, अपने सूअरों को ढूंढ रहे थे? अच्छा, डरो मत, मुझे एक बात सूझी है। सूअर शाम तक तुम्हारे घर पहुँच जाएँगे।"

"माँ और पिताजी उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न होंगे।"

"मुझे रत्ती-भर भी अनुमान नहीं था कि तुम लोग इतने तंग होगे।"

"नहीं, हम तंग तो नहीं हैं। सब ठीक चल रहा है।"

"सचमुच तुम लोगों में बड़ा हौंसला है। मुझे यही कहना पड़ता है।"

"तुम्हारा क्या अन्दाज़ है? पिताजी नहीं मरेंगे न?"

"नहीं, वह नहीं मरेगा। उसका ढाँचा फौलाद का बना है।"

जोडी बोला, "मुझे फौडरविंग के बारे में बताओ। क्या वह सचमुच बहुत बीमार है? या लेम नहीं चाहता था कि मैं उसे देख सकूं?"

"वह सचमुच बहुत बीमार है। वह हम जैसा नहीं है। सचमुच वह किसी साधारण आदमी जैसा भी नहीं है। लगता है वह पानी की जगह हवा पीकर ज़िन्दा रहता है और माँस की जगह जैसे वह जंगली जानवरों का भोजन खाता है।"

"वह ऐसी चीज़ें देखता है, जो हैं नहीं। है न यह बात? जैसे स्पेनी आदि।"

"वह देखता ज़रूर है, पर मज़ा तो यही है कि वह तुम्हें इस तरह बताएगा जैसे वह सब उसने सचमुच देखा हो।"

"तुम्हारा अन्दाज़ है कि लेम मुझे उसे देखने के लिए आने देगा?"

"मैं अभी यह नहीं कह सकता। मैं तुम्हें सन्देशा भेज दूंगा। जब भी लेम वहाँ न होगा, तुम आ जाना। समझे?"

"मुझे फौडरविंग को देखने की बड़ी इच्छा है।"

"तुम उसे ज़रूर देखोगे। अब यह बताओ कि तुम उस छौने को देखने कहाँ जाना चाहते हो? यह पगडण्डी बहुत घनी होती जा रही है।"

अचानक ही जोडी मिलव्हील को साथ ले जाने से कतराने लगा। कहीं छौना मर गया हो या मिल न सके, तब वह उसकी निराशा देखना नहीं चाहेगा। और, अगर कहीं छौना वहीं हुआ, तो यह मिलन इतना प्यारा और इतना अन्दरूनी होगा कि वह उसे बाँटना नहीं चाहेगा।

वह बोला, "अब यह बहुत दूर तो है नहीं। पर यहाँ से आगे रास्ता इतना कठिन है कि घोड़ा चल नहीं सकेगा। मैं अकेला ही पैदल चला जाऊँगा।"

"पर तुम्हें अकेला छोड़ने का मुझे साहस नहीं होता। कहीं तुम भी न खो जाओ। या तुम्हें भी साँप न काट खाए?"

"मैं खुद ध्यान रखूँगा। मुझे उसे ढूँढने में कुछ अधिक देर लग जाएगी। कहीं वह इधर-उधर न भटक गया हो। मुझे तुम यहीं छोड़ दो।"

"अच्छा ठीक है, पर तुम बहुत आराम से जाना, इन छोटी खजूरियों में ढूँढते जाना। यह साँपों का स्वर्ग है। तुम्हें यहाँ दिशाओं का पता है न?"

"हाँ, क्यों नहीं? इधर-उधर—! मुझे उन ऊँचे चीड़ों की पहचान है।"

"ठीक है, अगर कोई बात ग़लत हो जाय तो बक या तुम मुझे खबर दे देना। अच्छा, तब तक के लिए विदा।"

"अच्छा विदा, मिलव्हील! मैं तुम्हारा अहसान मानता हूँ।"

वह उसके पीछे हाथ हिलाता रहा। उसे खुरों की आवाज़ मिट जाने की प्रतीक्षा थी। तब वह दाहिनी ओर मुड़ा। जंगल में चारों ओर शान्ति थी। केवल उससे शाखाओं का टकराना उस चुप्पी में शोर पैदा कर रहा था। वह बहुत अधिक सावधान और उत्सुक था। उसने एक शाखा तोड़ी। शाखाओं को किनारे करता वह आगे बढ़ा। यहाँ राह कुछ घनी थी और ज़मीन नहीं दीख रही थी।

साँप मौक़ा मिलते ही रास्ते से हट जाते थे। पैनी इसी घने जंगल में बहुत आगे तक बढ़ गया था। उसे शक हुआ कि कहीं वह रास्ता तो नहीं भूल गया। तभी उसके सामने से एक गिद्ध उठा और हवा में उड़ गया। अब वह सनावरों के नीचे के मैदान में आ गया था। गिद्ध हिरणी के शव के चारों ओर एक घेरा बाँधे बैठे थे। उन्होंने अपनी लम्बी और पतली गर्दनें मोड़ीं और उसकी ओर देखा। उसने अपने हाथ की शाख उन पर फेंकी और वे पास के ही एक पेड़ पर उड़कर बैठ गए। उनके डैने आवाज़ के साथ उड़े, जैसे किसी जंग खाए नल के हत्थे से आवाज़ उठी हो। मिट्टी पर बिलावों के पाँव के निशान थे। वह नहीं जान सका कि बनबिलाव

के निशान थे या चीते के ? परन्तु बड़ी बिल्लियों ने कुछ और नए शिकार मार लिए थे और वे इस हिरणी को पक्षियों के लिए छोड़ गई थीं। उसने अपने मन से पूछा कि कहीं छौने के मधुर माँस की तो गन्ध नहीं आ रही ?

वह शव के पास होकर आगे बढ़ गया। जहाँ उसने छौने को देखा था, वहाँ घास हटाकर उसने फिर खोजा। उसे यह सम्भव न दिखाई दिया कि सब बात अभी कल की ही है। छौना वहाँ नहीं था। अब वह खेत में चारों ओर चक्कर काटने लगा। वहाँ न कोई आवाज़ थी और न कोई निशान। केवल गिद्ध अपने पंखों को फड़फड़ा रहे थे, क्योंकि वे अपने खाने पर फिर से लौटना चाहते थे। वह फिर वहीं आया, जहाँ से छौना बाहर आया था और अपने चारों हाथों-पाँवों के बल गिरकर छोटे-छोटे खुरों के निशान ढूँढने लगा। रात की बारिश ने बिल्ली और गिद्धों के निशान को छोड़कर बाकी सभी निशान मिटा दिए थे। परन्तु, बिल्लियों के निशान इस दिशा में नहीं थे। आखिर उसे एक छोटे ताड़ के पेड़ के नीचे कुछ निशान दिखाई दिए। ये निशान जैसे किसी छोटे कबूतर के हों। वह ताड़ से आगे सरक आया।

यहाँ उसके सामने अचानक ही कुछ हलचल हुई और वह चौंककर पीछे हट गया। यहाँ छौना ही था। इसने अपना सिर उसकी ओर उठाया और फिर बड़ी-बड़ी आँखों में आश्चर्य लिए उसने अपना सिर फेर लिया। इसकी चमकदार आँखों ने जोडी को अन्दर से हिला दिया। यह काँप रहा था। इसने दौड़ने या उठने का कोई प्रयत्न नही किया। जोडी स्वयं अपने बढ़ने पर विश्वास नहीं कर सका। वह फुसफुसाया, "यह मैं हूँ !"

छौने ने उसे सूँघते हुए अपनी नाक उठाई। जोडी ने अपना हाथ बढ़ाया और उसकी मुलायम गर्दन पर रख दिया। उसके छूने-मात्र ने जोडी को पागल बना दिया। वह चारों पाँवों पर बढ़ता रहा, जब तक उसके बिलकुल पास न पहुँच गया। तब उसने अपनी बाँह उसके शरीर के चारों ओर डाल दी। छौने में जैसे एक कँपकँपी दौड़ गई, पर वह हिला-डुला नहीं। जोडी ने उसके दोनों पासों को इस तरह थपथपाया कि जैसे यह मिट्टी का हिरण हो, जिसके टूटने का खतरा हो। इसकी खाल सफेद रैकून की खाल से भी ज़्यादा कोमल थी। यह पतला और साफ़ था। इसमें से

घास की मधुर गन्ध आ रही थी। जोडी ने धीमे से इसे ज़मीन से उठा लिया। जूलिया से भी यह हलका था। इसकी टाँगें लटकती रहीं। ये बहुत लम्बी थीं। जोडी को इसे अधिक-से-अधिक ऊँचा उठाना पड़ा।

जोडी को डर था कि यह कहीं अपनी माँ को देखकर उछलकर भाग न जाय। वह उस मैदान का कोना काटकर घने जंगल में से होता हुआ निकलने लगा। इस बोझ को लेकर उसमें से निकलना कठिन था। इसके पाँव झाड़ियों में अटक जाते थे और वह खुद स्वतन्त्रता से अपने पाँव नहीं उठा पाता था। उसने इसका चेहरा ढँकना चाहा, ताकि बेलें आदि इसे न चुभें। उसकी चाल बढ़ने के साथ-साथ इसका सिर भी उछलता था। जोडी का दिल इसके चुपचाप अपनापन दिखाने पर उछलने लगा। वह पगडण्डी पर पहुँचकर अधिक-से-अधिक तेज़ चलने लगा और तब वह घर को मुड़ने वाली सड़क पर पहुँच गया। यहाँ वह एक क्षण रुका और उसने छौने को लड़खड़ाते पाँवों पर खड़ा किया। यह काँपने लगा। उसकी ओर देखकर यह मिमियाया।

प्रसन्न होकर जोडी बोला, "ज़रा मुझे साँस लेने दो। मैं तुम्हें ले चलूंगा।"

उसे याद था, उसके पिता ने बताया था कि छौना अपने पहले-पहल उठाने वाले के पीछे चलने लगता है। वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा, पर छौना उसकी ओर ताककर रह गया। वह लौट आया और इसे थपथपाकर फिर आगे बढ़ने लगा। छौने ने कुछ लड़खड़ाते क़दम उसकी ओर उठाए और बड़ी करुणा-भरी आवाज़ में चिल्लाया। यह उसके पीछे चलना चाहता था। यह उसका अपना था और उसी का था। अब जोडी का दिल खुशी से हलका हो गया। उसने इसके साथ खेलना चाहा और इसके साथ दौड़ना और उछलना-कूदना चाहा। उसने चाहा कि वह इसे पास आने को कहे। पर वह इसे चौंकाना भी न चाहता था। इसलिए उसने इसे फिर से उठा लिया और अपने सामने दोनों बाँहों में उठाकर ऊँचा किया। उसे लगा कि वह अब बिना किसी तकलीफ़ के चल सकता है। उसे अपने में फौरेस्टरों जैसी ताक़त अनुभव हुई।

उसकी बाँहें दर्द करने लगीं और वह फिर रुकने पर मजबूर हुआ।

अब जब वह चला तो छौना उसके पीछे चलने लगा। उसने कुछ देर इसे इसी तरह चलने दिया, पर फिर इसे बाँहों में उठा लिया। अब घर कुछ अधिक दूर था भी नहीं। अगर यूँ भी उसे अब सारे दिन, सारी रात इसे उठाकर चलना पड़ता और इसे पीछे चलता हुआ देखना मिलता तो वह चलता रह सकता था। वह पसीने से तर हो गया। परन्तु जेठ की हवा के एक ठण्डे झोंके ने उसे ठण्डक पहुँचाई। आकाश एक नीले प्याले में रखे सोते के पानी की भाँति निर्मल था। वह अब खेतों के पास पहुँच चुका था। ये रात की बारिश के बाद ताज़ा और हरे-भरे दीख रहे थे। उसे घोड़े के साथ-साथ बक हल चलाता दिखाई दे रहा था। वह मक्का के खेतों में था। जोडी को लगा कि जैसे बक ने घोड़े को उसकी सुस्ती पर कोसा हो। दरवाज़े पर आकर उसने चिटखनी को खोलने की कोशिश की और अन्त में उसने छौने को नीचे रखकर इसे खोल दिया। उसे लगा कि यह घर में स्वयं घुस आएगा और पैनी के सोने के कमरे तक उसके पीछे-पीछे पहुँच जाएगा। परन्तु सीढ़ियों पर यह छौना रुक गया और उन्हें न चढ़ सका। उसने इसे उठा लिया और अपने पिता के पास पहुँचा। उसका पिता आँखें बन्द किए पड़ा था।

जोडी बोला, "पिताजी, इसे देखिए।"

पैनी ने अपना सिर पलटा, जोडी वहीं खड़ा था। उसकी बग़ल में छौना था। पैनी को लगा कि जैसे छौने की भाँति उसके बच्चे की भी आँखें उजली हो आई थीं। उसके चेहरे पर इन दोनों को साथ-साथ देखकर प्रसन्नता छा गई।

वह बोला, "मुझे खुशी है कि तुमने इसे पा लिया।"

"पिताजी, यह मेरे से डरा नहीं। यह ठीक वहीं लेटा हुआ था, जहाँ इसकी माँ ने इसे लिटाया था।"

"हिरणी बचपन से ही उन्हें इस प्रकार की बात सिखला देती है। कई बार ये इतने चुप पड़े होते हैं कि तुम इन पर भले ही पाँव रखकर बढ़ जाओ।"

"पिताजी, मैंने इसे उठाया और जब मैंने इसे नीचे रखा तो यह मेरे पीछे चलने लगा। बिलकुल वैसे ही जैसे कि कोई कुत्ता चलता है।"

"कितनी अच्छी बात है ! अच्छा, इसे और ठीक तरह दिखाओ।"

जोडी ने छौने को ऊँचा उठाया। पैनी ने अपना हाथ फैलाया और इसकी नाक को छुआ। यह मिमियाया और उसकी अंगुलियों तक बड़ी आशा से बढ़ा।

पैनी बोला, "छोटे बच्चे, मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारी माँ छीन ली।"

"आपका अनुमान है कि इसे उसकी कमी खल रही है।"

"नहीं, इसे तो अपने भोजन की कमी खल रही है। और यह इस बात को जानता है। इसे कुछ और भी कमी खल रही है, परन्तु यह नहीं जानता कि वह कमी क्या है ?"

माँ भी कमरे में आ गई। जोडी बोला, "देखो, माँ, मैंने इसे पा लिया।"

वह बोली, "देख रही हूँ।"

"माँ, क्या यह बहुत अच्छा नहीं है ? कतारों में बनी इसकी चित्तियाँ देखो। इसकी ये बड़ी आँखें देखो, क्या ये सुन्दर नहीं हैं ?"

"पर यह बहुत छोटा है। यह तो काफी दिनों तक दूध पीएगा। अगर मुझे पता होता कि यह इतना छोटा है तो शायद मैं स्वीकृति न देती।"

पैनी बोला, "ओरी, मुझे तुमसे एक बात कहनी है और वह अभी कहे देता हूँ। इसके बाद मुझे इस विषय में कुछ न सुनना मिले। इस छोटे से छौने का इस घर में वही स्थान है जो जोडी का। यह इसका बेटा है। हम इसे दूध या भोजन के विषय में बिना कुछ सोचे पालकर बढ़ाएँगे। अगर मैंने कभी तुम्हें इस विषय में झगड़ा करते सुना, तो तुम्हें मुझे उत्तर देना पड़ेगा। जैसे जूलिया मेरी कुतिया है, उसी प्रकार यह जोडी का छौना है।"

जोडी ने अपने पिता को माँ के साथ इतना सख्ती के साथ बोलते कभी नहीं सुना था। उसकी माँ के लिए यह आवाज़ परिचित ही रही होगी, क्योंकि उसने अपना मुँह खोला और बन्द किया और अपनी पलकें झपकाईं।

वह बोली, "मैंने तो केवल इसके छोटा होने की बात कही थी।"

"ठीक है, बस बात इतनी ही है।" उसने फिर आँखें बन्द कर लीं। "बोला, "अब अगर हरेक सन्तुष्ट है, तो कृपा करके मुझे आराम करने के लिए छोड़ दो। बोलने से मेरा दिल धड़कने लगता है।"

जोडी बोला, "मैं इसका दूध बाँध दूँगा। माँ, तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं।"

वह चुप रही। जोडी रसोईघर में गया। छौना उसके पीछे लड़खड़ाता हुआ गया। रसोई की आलमारी में सवेरे के दूध का बर्तन पड़ा था। इस पर मलाई जम चुकी थी। उसने मलाई को एक अलग बर्तन में निकाल दिया और जो बूँदें नीचे गिर गईं उन्हें अपनी बाँह के कपड़े से पोंछ डाला। उसने सोचा कि यदि इस छौने के कारण माँ को कोई तकलीफ न हो तो वह इसका कम बुरा मनाएगी। उसने एक छोटे-से डिब्बे में दूध डाला और छौने के आगे बढ़ाया। दूध सूँघते ही यह इसे टक्कर मारने लगा। जोडी ने जैसे-तैसे फर्श पर गिरने से बचा लिया। वह अब छौने को आँगन में ले आया और फिर नए सिरे से पिलाने की कोशिश करने लगा। परन्तु उस डिब्बे में से यह छौना दूध न पी सका।

अब जोडी ने अपनी अंगुलियाँ दूध में भिगोईं और उन्हें छौने के कोमल मुँह तक ले गया। इसने बड़े चाव से उन्हें चाट लिया। ज्योंही उसने अपनी उँगलियाँ हटाईं, यह बड़ी तेज़ी से मिमियाने लगा और उसे टक्कर मारने लगा। उसने फिर अपनी अंगुलियाँ डुबोईं और अब ज्योंही छौना उन्हें चाटने लगा, उसने धीमे-धीमे उन्हें दूध तक झुका दिया। छौने ने फुफकारा और फिर दूध चूसना शुरू कर दिया। यह अपने खुर बड़ी अधीरता से पटकने लगा। जब तक उसने अपनी अंगुलियाँ दूध के नीचे रखीं, छौना खुश रहा। उसकी आँखें बन्द ही रहीं, जैसे सपना देख रहा हो। उसके हाथ पर इसकी जीभ का स्पर्श अत्यन्त आनन्द देने वाला था। इसकी छोटी-सी पूँछ आगे-पीछे उठ-गिर रही थी। झाग और आवाज़ के साथ ही दूध थोड़ी ही देर में समाप्त हो गया। छौना मिमियाने और सिर मारने लगा। इसकी यह हरक़त बहुत प्रसन्नता देने वाली थी। जोडी की इच्छा हुई कि वह कुछ और दूध ले आए, पर पिता की कृपा होते हुए भी उसे इतना आगे बढ़ना अच्छा न लगा। हिरणी की दूध की थैली साल भर की बछड़ी की थैली से बड़ी नहीं थी। निश्चय ही छौना उतना दूध पी चुका था, जितना वह माँ से पीता होगा। अब यह एकदम ही लेट गया, जैसे थक गया हो और तृप्त हो गया हो।

जोडी का ध्यान इसके सोने की जगह बनाने की ओर गया। घर में सुलाने के लिए पूछना उसे उचित न जँचा। वह पिछली कोठरियों में गया और मिट्टी पर एक कोना साफ़ कर लिया। सनावरों पर जाकर उसने कुछ स्पेनी काई इकट्ठी की और उसे लाकर उसका एक मोटा-सा बिछौना तैयार किया। पास ही एक मुर्गी का दड़बा था। उसकी चमकदार मोतियों जैसी आँखें उसे सन्देह से देखने लगीं। उसने अण्डा दिया और दरवाज़े में से चीखती हुई उड़ गई। उसका घोंसला नया ही था। उसमें छः अण्डे पड़े थे। जोडी ने उन्हें इकट्ठा किया और माँ के पास रसोई में ले गया।

वह बोला, "माँ, इन कुछ अण्डों को पाकर तुम प्रसन्न होगी। ये फालतू हैं।"

"जब कोई खाने वाला फालतू हो तब फालतू चीज़ मिलनी अच्छी ही है।"

उसने माँ की इस टिप्पणी की परवाह नहीं की। बोला, "नया दड़बा इस नए छौने के बिस्तर के बिलकुल पास ही है। वहाँ रहकर यह किसी को सताएगा नहीं।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और जोडी बाहर वहाँ चला गया, जहाँ छौना शहतूत के पेड़ के नीचे लेटा हुआ था। उसने इसे उठाया और इसके नए बिस्तर पर अँधेरी कोठरी में ले आया।

"अब से जो कुछ मैं बताता हूँ तुम्हें वही करना होगा, वैसे ही जैसे तुम माँ का कहना मानते। मैं तुम्हें यहाँ लेटने को कह रहा हूँ, जब तक मैं ही तुम्हें लेने दुबारा न आ जाऊँ।"

छौने ने अपनी आँखें झपकीं। आराम में आकर वह आवाज़ करने लगा और धीरे-धीरे उसने अपना सिर झुका दिया। जोडी पंजों के बल चुपचाप कोठरी से बाहर आ गया। उसने सोचा, कोई भी इतना कहना नहीं मान सकता। वह लकड़ियों के ढेर की ओर गया और वहाँ से तेल भरी लकड़ी के कुछ छोटे टुकड़े इकट्ठे कर रसोई में ले आया। वह मकान के पिछली ओर के सनावरों की भी कुछ लकड़ियाँ लेता आया। इन सबको उसने रसोई के डिब्बे में इकट्ठा कर दिया।

वह बोला, "माँ, जिस तरह मैंने मलाई उतारी थी, वह ठीक था।"

"हाँ, ठीक था।"

वह बोला, "फौडरविंग बीमार है।"

"हैं ?"

"लेम मुझे देखने नहीं देता, केवल एक वही हम पर पागल है। उसका गुस्सा ओलिवर की प्रेमिका के कारण ही है।"

"उंह !"

"मिलव्हील कहता था, वह मुझे पता देगा और तब मैं किसी समय जाकर फौडरविंग से मिल सकूँगा; जब लेम वहाँ न होगा।"

वह हँस पड़ी और बोली, "आज तो तुम बूढ़ी औरतों जैसी बातें कर रहे हो।"

वह उसके पास से गुज़रती हुई भट्टी तक गई और जाते-जाते उसके सिर को हलके से छूती गई। वह बोली, "आज मुझे बहुत अच्छा अनुभव हो रहा है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम्हारे पिता आज का दिन देख पाएँगे।"

रसोई भी आज शान्ति से भरी हुई थी, जैसे सबका मन तृप्त हो। बक खेत में से आता हुआ दरवाज़े पर से गुज़रा और सड़क पार कर पशुशाला में दोपहरी के लिए घोड़े को बाँधने चला गया।

जोडी बोला, "मुझे उसकी मदद करने के लिए जाना चाहिए।"

परन्तु वहाँ छौने के कारण वह गया। घर में फैले सन्तोष ने उसे तृप्त कर दिया था। वह कोठरी तक गया ताकि अपने अधिकार को पूरा-पूरा जाँच सके। फिर जब वह बक के साथ वहाँ से लौटा, तो वह छौने की ही बातें कर रहा था। उसने बक को भी कोठरी में पीछे-पीछे आने दिया।

वह बोला, "इसे डराना मत। वह सामने लेटा हुआ है।"

बक उसे उतना सन्तोष न दे सका, जितना पैनी ने दिया था। उसने फौडरविंग के सैकड़ों ही पालतू जानवर आते-जाते देखे थे।

वह बोला, "यह बहुत जल्दी ही जंगली बनकर दौड़ जाएगा," और तब वह पानी तक जाकर खाने से पहले अपने हाथ-पाँव धोने लगा।

जोडी के शरीर में एक ठण्ड-सी दौड़ गई। बक तो उसकी माँ से भी

खराब निकला। इसने सारी प्रसन्नता ही नष्ट कर दी। वह थोड़ी देर छौने को थपथपाता रहा। छौने ने अपने नींद-भरे सिर को हिलाया और उसकी अंगुलियाँ चाटने लगा। बक को इस अपनेपन का पता न था। अच्छा था इस बात को कोई भी न जान सके। जोडी ने छौने को वहीं छोड़ा और हाथ धोने के लिए पानी तक गया। छौने के स्पर्श ने उसके हाथों में जैसे एक सुगन्ध भर दी थी, जिसमें घास की मीठी सुगन्ध भी मिली हुई थी। उसे बुरा लगा कि इसे यों ही धो दे, पर उसे यह भी पता था कि माँ इसे बहुत पसन्द नहीं करेगी।

उसकी माँ ने भी नहाकर अपने बाल सँवार लिए थे। उसने ऐसा किसी शौक से नहीं, बल्कि अभिमान और खुशी के कारण किया था। आज उसने बहुत ही उजले कपड़े पहने थे।

वह बक से बोली, "हमारे यहाँ केवल पैनी ही काम करने वाला है। इसलिए हमारे पास तुम्हारे जैसे अनाज बहुत अधिक नहीं हैं, पर फिर भी हम साफ़ और सुथरा खा लेते हैं।"

जोडी ने जल्दी ही बक की ओर देखा कि कहीं उसने बुरा तो नहीं माना। बक ने अपनी तश्तरी में दलिया डाला और उसके बीच में जगह बनाकर तले हुए अण्डे और खीर डाल दी। वह बोला, "हाँ, श्रीमती ओरी, अब मेरे से डरना मत। मैं और जोडी आज शाम को जाकर तुम्हारे लिए बहुत-सी गिलहरियाँ और, हो सका तो, एक तीतर मार लाएँगे। आज मैंने एक तीतर को मटरों के खेत के परे की ओर देखा था।"

माँ ने पैनी के लिए एक तश्तरी भरी और उसमें एक प्याला दूध भी मिला दिया। वह जोडी को देकर बोली, "ज़रा तुम उन तक पहुँचा दो।"

वह पिता के पास गया। पिता ने अपना सिर उस तश्तरी की ओर हिलाते हुए कहा, "बेटा, मेरे लिए इतना ही बहुत है, पर तुम इसे यहाँ रखकर मुझे चमचे से अगर खिला सको और दूध पिला सको तो कृपा होगी। मुझे अपनी बाँह उठाते हुए तकलीफ़ होती है।"

अब उसके चेहरे से सूजन उतर चुकी थी। पर उसकी बाँह अब भी पहले की अपेक्षा तिगुनी मोटी थी। उसका साँस अब भी भारी चल रहा था। उसने मुलायम दलिए के कुछ ही ग्रास लिए और थोड़ा-सा दूध पिया,

और तब तश्तरी परे सरका दी।

बोला, "तुम्हारी छौने के साथ खूब निभ रही है ?"

जोडी ने उसे बिस्तर बनाने की बात सुना दी।

पिता बोला, "तुमने जगह तो अच्छी चुनी है। उसका नाम क्या रखोगे ?"

"मुझे नहीं पता। मैं उसका कोई खास नाम चुनना चाहता हूँ।"

बक और माँ भी वहाँ आ गए और पास ही उसे देखने के लिए बैठ गए। गर्मी अधिक थी और भरी दुपहरी थी। किसी काम की जल्दी भी नहीं थी।

दैनी बोला, "जोडी छौने के लिए नाम खोजने की चिन्ता में है।"

बक बोला, "जोडी, जब तुम फौडरविंग को मिलो तब उसे बताना। वह तुम्हें नाम चुन देगा। इन बातों में वह काफी चतुर है। जैसे औरों को वीणा का संगीत अच्छा लगता है, उसे ये बातें अच्छी लगती हैं। वह तुम्हें कोई बहुत अच्छा नाम चुनकर देगा।"

माँ बोली, "जोडी, जाकर अपना खाना खा लो। उस चित्तीदार छौने ने तुम्हारा ध्यान भोजन से भी उचाट कर दिया है।"

इस अवसर की वह ताक में था ही। वह रसोई में गया और अपने खाने के लिए एक तश्तरी ऊपर तक भरकर कोठरी में ले गया। छौना अब भी नींद में था। जोडी ने उसके पास ही बैठकर भोजन किया। उसने फिर अपनी अंगुलियाँ घी मिले दलिए में भिगोई और उन्हें उसके मुख तक ले गया। परन्तु छौने ने केवल फुफकारकर अपना सिर दूसरी ओर कर लिया।

जोडी बोला, "अच्छा हो कि दूध के अतिरिक्त तुम कुछ और भी लेने लगो।"

ऊपर छत के फट्टों में धूल उड़ाने वाली मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। उसने अपनी तश्तरी खाली की और एक किनारे रख दी। वह वहीं छौने के पास ही लेट गया और उसने अपनी एक बाँह उसकी गर्दन पर रख दी। उसे अब विश्वास था कि अब वह फिर कभी अकेला न रहेगा।

16

छौना अब जोडी का अधिक समय ले लेता था। जहाँ भी जोडी जाता, यह उसके पीछे-पीछे दौड़ा जाता। लकड़ियों के ढेर पर यह उसके कुल्हाड़ा चलाने में रुकावट डालता। दूध दुहने का काम जोडी को दिया गया। उसे लाचार होकर उस समय छौने को दरवाज़े के पास बहुत दूर बाँधना पड़ता। यह वहीं से छड़ों के बीच से झाँकता रहता और उसके निबटने पर मिमियाता रहता। वह गाय के स्तन दुहता रहता, जब तक कि वह विरोध न करती। उसे पता था कि दूध का हर अधिक प्याला इस छौने के लिए अधिक खूराक बनकर आ रहा था। उसे लगा कि जैसे वह इसे बढ़ता हुआ देख रहा हो। छौना अपने पाँव पर खड़ा होने लगा और उछ-लने-कूदने और अपनी पूँछ और सिर को उछालने लगा था। जोडी भी इसके साथ बहुत देर तक खेलता-कूदता रहता और अन्त में अपने को शान्त करने के लिए वे दोनों ही किसी ढेर पर लेट जाते।

दिन गर्म होते जा रहे थे। पैनी को भी बिस्तरे में ही पसीना आने

लगा। बक भी खेतों में से पसीने से तर होकर लौटता था। उसने अपनी कमीज़ पहननी छोड़ दी थी और खेतों में कमर तक नंगा होकर काम करता था। उसकी छाती मोटी थी और उस पर काले बाल उगे हुए थे। उन पर पसीने की बूँदें ऐसी लगती थीं, जैसे सूखी काई पर वर्षा की बूँदें। माँ जब भी देखती कि बक अपनी कमीज माँग नहीं बैठेगा, तो वह उसे धो डालती, या उबालकर सूखने के लिए झुलसती धूप में लटका देती।

वह बड़े सन्तोष के साथ कहती, "अब उसमें से उतनी बदबू नहीं आएगी।"

बक ने बैक्स्टर परिवार का घर पूरी हद तक भर दिया।

माँ ने पैनी से कहा, "पहले-पहल जब मैं सवेरे कभी इसकी दाढ़ी और छाती देख लेती हूँ तो मैं घबरा जाती हूँ। मुझे लगता है जैसे कोई भालू घर में घुस आया हो।"

पहले-पहल वह भोजन की उस मात्रा से घबरा गई थी जो बक दिन में तीन बार खा लेता था। परन्तु वह शिकायत क्यों करती? क्योंकि बक उससे बहुत अधिक कमी को पूरा भी कर देता था। वह बहुत लगन से काम करता और साथ ही उसे शिकार भी मारकर ला देता था। जिस हफ़्ता-भर वह उनके खेत पर रहा; उसने मक्का, मटर और आलू आदि के सभी खेत ठीक कर दिए थे। इसके साथ ही उसने पश्चिम की ओर दो एकड़ नई ज़मीन भी तैयार कर दी थी। यह ज़मीन मटर के खेत और सोते के बीच में थी। उसने एक दर्जन से ऊपर सनावर, चीड़ और कीकर आदि के पेड़ और दूसरी बहुत शाखें काट दी थीं। बहुत-सी जड़ें और ठूँठ उसने जला दिए थे और बहुत से गिरे पेड़ों को उसने छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दिया था। अब जोडी और पैनी के लिए लकड़ी काटने का काम बहुत आसान हो गया था।

बक बोला, "जो खेत मैंने नया तैयार किया है, इसमें तुम समुद्री टापू वाली रुई आने वाली वसन्त में बो देना। उससे बहुत अच्छी कमाई होगी।"

माँ सन्देह के साथ बोली, "तुम्हारे यहाँ तो रुई होती नहीं?"

बक बोला, "हम लोग असल में किसान नहीं हैं। हम खेत भी साफ़

करते हैं, हल चलाकर बोते भी हैं, पर हमारी आदत उस पर जीवन बिताने की नहीं है। हम जिस चीज़ पर जीवन बिताते हैं, तुम उसे अच्छा नहीं कहोगी।"

वह सोचकर बोली, "परन्तु बुरे तरीके आफ़त में ही फँसा देते हैं।"

वह बोला, "तुम्हें मेरे परदादा का पता है? लोग उन्हें कहते ही थे मुसीबत वाला फौरेस्टर।"

वह उसे नापसन्द न कर सकी। उसे लगा कि वह भी किसी कुत्ते के समान अच्छी आदत का था। रात को एकान्त में उसने पैनी से कहा, "वह एक बैल की तरह काम करता है, पर वह काला बहुत अधिक है। एज़रा! वह गिद्ध जैसा काला है।"

पैनी बोला, "उसकी दाढ़ी काली है। अगर मेरे भी उसके जैसे ही काली दाढ़ी होती तो मैं भी गिद्ध न सही, कौआ तो ज़रूर लगता।"

पैनी में धीरे-धीरे शक्ति आने लगी थी। ज़हर की सूजन कम होने लगी थी। जहाँ साँप ने काटा था, वहाँ की खाल भी सूखकर उतरने लगी थी। परन्तु अब भी थोड़ी-सी मेहनत करने पर ही उसे चक्कर आ जाते थे और उसका दिल नदी के किसी स्टीमर के पहियों की भाँति धड़कने लगता था। वह साँस के लिए हाँफने लगता था और उसे फिर से ठीक होने के लिए लेटना पड़ता था। उसके लकड़ी जैसे खुरदरे शरीर पर उसकी नसें ऐसे तनी हुई थीं, जैसे वीणा की तारें हों।

जोडी के लिए बक का वहाँ रहना बहुत अच्छा सिद्ध हुआ। उसमें बहुत अधिक उत्साह भर गया। अकेला छौना ही उसे पागल बनाने के लिए काफ़ी था, परन्तु इन दोनों ने मिलकर उसमें एक जोश पैदा कर दिया। पैनी के कमरे से बक के काम की जगह पर और वहाँ से छौने तक वह चारों ओर दौड़ता फिरता था।

उसकी माँ ने कहा, "तुम्हें चाहिए कि जो कुछ भी बक करता है उसे ध्यान से देखो ताकि उसके जाने के बाद तुम भी वह सब कुछ कर सको।"

उन तीनों में ही अन्दर-ही-अन्दर जैसे एक समझौता-सा हो गया था कि पैनी को कोई कष्ट न होने दिया जाय और उसे काम से अलग ही रखा जाय।

आठवें दिन सुबह बक ने जोडी को मक्की के खेत पर बुलाया। कुछ लोमड़ों ने रात में उस खेत पर धावा किया था। मक्की की आधी क्यारी वे उजाड़ गए थे। इस क्यारी के बीचोंबीच भुट्टों का ढेर लगा हुआ था।

बक बोला, "तुमने देखा, यह किसने किया ?"

"रैकूनों ने ?"

"नहीं, लोमड़ियों ने। लोमड़ियाँ हमसे भी ज्यादा मक्की को पसन्द करती हैं। दो-तीन लोमड़ियाँ रात को आई हैं और उन्होंने यहाँ खूब आनन्द लूटा है।"

जोडी हँस पड़ा। बोला, "लोमड़ियों ने मौज़ उड़ाई ? खूब रही। मुझे उसे देखकर बहुत ही खुशी होती।"

बक ने अधिक सख्ती से कहा, "तुम्हें रात को अपनी बन्दूक लेकर उन्हें दूर रखने के लिए आना चाहिए था। अब हम दोनों ही रात को उन्हें पकड़ लेंगे। तुम्हें गम्भीर होना चाहिए। आज की रात हम सोने के किनारे के शहद के छत्ते से भी शहद निकाल लेंगे, ताकि तुम्हें इसका भी अभ्यास हो जाय।"

जोडी ने अपना दिन जैसे-तैसे बिताया। बक के साथ शिकार करना निश्चय ही पिता के साथ किये गए शिकार से अलग क़िस्म का होगा। उसे पता था कि फौरेस्टर जो भी काम करते हैं, उसमें एक अजीब ही उत्तेजना होती है। पर इससे वह घबरा भी गया था। उनके शिकार में शोर-शराबा खूब होता था। पैनी के साथ शिकार में बहुत सन्तोष होता था, जिसका महत्त्व स्वयं शिकार से भी अधिक था। उसमें ऊपर उड़ते पक्षियों को देखने या फिर मगरमच्छ की आवाज़ सुनने, या दलदल में और चीज़ें देखने का मौका रहता था। उसकी इच्छा हुई कि काश ! आज भी पैनी मक्खियों के छत्ते से शहद निकालते समय उनके साथ होता और लोमड़ियों के शिकार में भी उनका साथ देता। दोपहर बाद बक नए खेतों से लौटकर आया। पैनी सो रहा था।

बक माँ से बोला, "मुझे तेल की एक शीशी, कुल्हाड़ी और कुछ रद्दी चीथड़े दे दो, ताकि मैं उनकी मशाल बनाकर जला सकूँ।"

घर में बहुत सारे चीथड़े तो थे नहीं। जब भी कपड़े फट जाते, उनमें टांकियाँ लगाकर तब तक काम चलाया जाता था, जब तक कि वे बिलकुल

तार-तार न हो जायँ। आटे के थैले भी कपड़े बनाने के ही काम आ जाते थे। या उनके छोटे-मोटे झाड़न या गिलाफ़ अथवा कढ़ाई आदि के काम आ जाते थे। इन्हें रज़ाइयों के नीचे भी सी दिया जाता था। बक ने बहुत निराशा के साथ उसके दिए थोड़े से चिथड़ों को देखा और बोला, "कोई नहीं, हम कुछ काई भी बरत लेंगे।"

वह बोली, "देखो, तुम्हें डंक न लग जाय। मेरे दादा भी इनके जाल में फँस गए थे और उन्हें पूरे पन्द्रह दिन तक बिस्तरे पर पड़े रहना पड़ा था।"

"अगर हमें डंक लगे ही, तो भी उससे कोई नुकसान न होगा।"

जोडी को साथ लेकर वह आँगन के पार चल पड़ा। छौना उनके पीछे-पीछे चल रहा था।

वह बोला, "तुम चाहते हो कि इसे ज़रूर मक्खियाँ लड़ें? अगर नहीं चाहते कि यह मर जाय, तो इसे बन्द कर जाओ।"

जोडी बड़ा अनमना होकर उसे कोठरी तक ले गया और उसे बाँधकर दरवाज़ा बन्द कर आया। उसे इससे जुदाई अच्छी नहीं लगती थी, भले ही शहद इकट्ठा करने क्यों न जाना हो? उसे यह भी अच्छा न लगा कि पैनी साथ में न जाय। उसकी अपनी निगाह इस शहद के छत्ते पर सारे वसन्त-भर रही थी। वह ठीक समय की इन्तज़ार कर रहा था, ताकि मक्खियाँ पीली चमेली तथा शहतूत और दूसरे मीठे फूलों पर से शहद चुन लें। इन फूलों में ताड़, चीनी बेरी, जंगली अंगूर, नाशपाती, जंगली अलूचे आदि बहुत से फूल थे। अब भी और बहुत से फूल खिले हुए थे, जिनसे वे सर्दियों में और शहद इकट्ठा कर सकती थीं। गुलाब, और दूसरे कई फूल पूरी तरह खिले हुए थे। और कुछ नए फूल—जयन्तिया, गेंदा आदि—खिलने वाले थे।

बक बोला, "मुझे समझ नहीं आता कि तुम लोग उतनी दूर से पानी ढोकर कैसे गुज़ारा कर लेते हो? अगर मैंने जल्दी ही न चले जाना होता, तो निश्चय ही मैं घर के पास ही कुआँ खोदने में सहायता देता।"

"तो क्या तुम जल्दी ही जाना चाहते हो?"

"हाँ, निश्चय ही। मुझे फौडरविंग का ख़तरा है। और फिर मैं इतने

दिन तक शराब के बिना कभी नहीं रहा।"

मधुमक्खियों का छत्ता एक सूखे चीड़ पर था। इसकी आधी ऊँचाई पर एक बड़े खोल में से मक्खियाँ आ-जा रही थीं। यह सोते के उत्तरी किनारे पर खड़ा था। बक सनावरों के पास कुछ देर हरी काई इकट्ठी करने के लिए रुका। उसने चीड़ के नीचे उस काई का ढेर लगा दिया और साथ ही पंख आदि भी इकट्ठे कर दिए।

वह बोला, "यहाँ जंगली बत्तखों ने भी घोंसला बनाना चाहा था। वे हमेशा पेड़ के खोल में घोंसला बनाती हैं, फिर चाहे वहाँ कठकौआ या कोई और क्यों न रहता हो ? वे मधुमक्खियों के छत्ते से भी नहीं डरतीं। जब उनका दिल आ जाय, तो वे उस खोल में घोंसला बनाकर ही रहती हैं। लगता है इन मक्खियों ने उन्हें यहाँ से भगा दिया है।"

अब उसने उस सूखे चीड़ को नीचे से काटना शुरू किया। उस चोट से ऊपर की मक्खियाँ उड़ने और भिनभिनाने लगीं, लगा जैसे साँपों की बहुत दूर पर स्थित कोई बामी छेड़ दी गई हो। उस कुल्हाड़े की चोट सोते के आर-पार गूँज उठी। सनावरों में शान्त पड़ी गिलहरियाँ हड़बडाकर शोर करती हुई इधर-उधर भागने लगीं। जंगली चिड़ियाँ डर से चिल्लाने लगीं। चीड़ हिलने लगा। भिनभिनाना धीरे-धीरे शोर का रूप धारण करने लगा। मक्खियाँ उनके सिर के चारों ओर इस तरह भिनभिना रही थीं, जैसे छोटी-छोटी बन्दूक की गोलियाँ हों।

बक बोला, "ज़रा मशाल लाओ। जल्दी करो।"

जोडी ने काई और चीथड़ों का एक गोला बनाया और बक के आग जलाने वाले डिब्बे को खोला। पत्थर और लोहे को लेकर वह उलझा रहा। पैनी इस तरह आग जलाने में जितना ही चतुर था, जोडी उतना ही नादान। उस पर एक भय-सा समा गया। चिनगारियाँ निकलती थीं, पर वह उन्हें कपड़ों में पकड़ नहीं पाता था। बक ने कुल्हाड़ा किनारे पर रखा और उसकी तरफ आकर उससे वे दोनों चीज़ें ले लीं। उसने एक क्षण में ही लोहे और पत्थर को रगड़कर आग पैदा की और बड़े अन्दाज़ से चीथड़ों में आग जला ली। ऐसे अन्दाज़ की और किसी फौरेस्टर से उम्मीद नहीं की जा सकती। चीथड़े जलने लगे और उनसे उसने आग लगा दी। अब बिना

लपटों के धुआँ उठने लगा।

बक फिर से चीड़ पर आकर कुल्हाड़ा चलाने लगा। यह कुल्हाड़ा बहुत जल्दी पेड़ को आधे तक काट गया। इसके लम्बे तन्तु कटने, फटने और टूटने लगे। वह पेड़ बड़े शोर के साथ नीचे गिरा, मानो अपने बचाने के लिए वह चिल्ला उठा हो। यह धरती पर आ गिरा और इसके बीचोंबीच मक्खियाँ बहुत तेज़ी से भिनभिनाने लगीं। बक ने उस काई की जलती ढेरी को उठाया और जल्दी से एक नेवले की तरह उसे लेकर आगे बढ़ा। उसने वह सारा ही जलता हुआ समूह उस खोल में डाल दिया और बहुत तेज़ी से वहाँ से भाग पड़ा। इस समय वह एक भारी-भरकम भालू-जैसा लग रहा था। उसके मुख से एक चीख-सी निकली और उसने ज़ोर-ज़ोर से अपनी पीठ, छाती और कन्धों पर हाथ मारे। जोडी उस पर हँस पड़ा। इसी बीच उसकी अपनी ही गर्दन पर जैसे किसी ने गर्म सूई चुभो दी हो।

बक चिल्लाया, "जाओ, जोहड़ के पास उतर जाओ। पानी में घुस जाओ।"

वे दोनों ही एकदम ढाल पर उतर आए। जोहड़ के पास जाकर वे उसमें घुस गए। वर्षा की कमी के कारण यह उथला ही था। इसीलिए वे लेटकर भी इसमें पूरे ढँक न सके। बक ने कीचड़ लेकर जोडी के बालों और गर्दन पर मल दी। उसके अपने बाल ही उसकी रक्षा अच्छी तरह कर सकते थे। कुछ मक्खियाँ उनका पीछा करती हुई आईं और उनके आगे-पीछे चक्कर काटने लगीं। थोड़ी देर बाद बक ने अपने को बड़ी सावधानी से उठाया।

वह बोला, "अब वे शान्त हो गई होंगी। पर क्या हम सूअर नहीं बन गए?"

उनके पाजामे, चेहरे और कमीजें सभी कीचड़ से सनी हुई थीं। अभी धुलाई का दिन दूर था। इसलिए जोडी उसे सोते की धुलाई वाली नाली तक ले गया। उन दोनों ने ही एक में अपने कपड़े डुबोए और दूसरी में स्वयं नहाए।

बक बोला, "तुम किस बात पर हँस रहे हो?"

जोडी ने अपना सिर हिला दिया। वह अपनी माँ की बात का अनुमान

कर हँस रहा था। उसकी समझ में माँ कहेगी, "अगर मक्खियों के काटने से ही कोई फौरेस्टर नहा-धोकर साफ़ हो सकता है, तो मैं उन्हें एक पूरे छत्ते से कटवा दूँगी।"

बक के शरीर पर कम से कम छः डंक लगे थे, पर जोडी को दो ही लगे थे। अब वे उस छत्ते के पास बहुत धीरे-धीरे आए। काई का ढेर ठीक तरह रखा गया था। उसके घने धुएँ से मक्खियाँ भाग गई थीं। वे अब भी उस खोल के चारों ओर चक्कर काट रही थीं, ताकि रानी को खोज सकें।

बक ने और ज़्यादा चौड़ा छेद किया और अपने चाकू से उसके किनारों को साफ़ किया। उसने चारों ओर सफ़ाई करके चाकू समेत अपना हाथ अन्दर डाला। जब उसने अपना हाथ लौटाया, तो वह चकित रह गया। बोला, "खुशी का दिन है! शहद तो जैसे घड़ों भर के है। पेड़ ही भरा पड़ा है।"

उसने एक टुकड़ा काटकर निकाला। शहद सुनहली बूँदों में गिर रहा था। छत्ता सख्त और काला-सा था, परन्तु शहद राब से भी अधिक पीला और साफ था। उन्होंने तेल का बर्तन भरा और उसे दोनों ओर से उठाकर घर तक ले आए। अब माँ ने उन्हें एक बड़ा बर्तन दिया।

बक बोला, "बस अब इतने ही बिस्कुटों की और कसर है।"

लौटते हुए बोझ कुछ अधिक था। बक ने बताया कि आज तक इतना अधिक शहद उसने एक छत्ते में से कभी भी निकलते हुए नहीं देखा।

वह बोला, "जब मैं कल घर जाकर यह बात बताऊँगा, ता हमारे यहाँ कोई भी इस पर विश्वास नहीं करेगा।"

माँ धीरे से बोली, "क्या तुम कुछ घर ले जाना नहीं चाहोगे?"

"बस, जितना मेरे पेट में जा सके। दलदल में दो-तीन पेड़ों पर मेरी निगाह है। अगर मुझे वहाँ निराशा हुई तो फिर मैं आपके पास माँगने आऊँगा।"

माँ बोली, "तुम सचमुच अच्छे पड़ोसी बनकर रहे हो। हो सकता है कभी हमारे पास भी बहुत कुछ होगा और तब हम तुम्हारा उपकार चुका सकेंगे।"

जोडी बोला, "मैं चाहता था, काश, तुम न जाते, बक!"

उस बड़े शरीर वाले आदमी ने उसे प्यार से थपथपाया और बोला, "मेरे जाने के बाद तुम्हें उस छौने को खिलाने-पिलाने का मौक़ा नहीं मिल सकेगा।"

बक निश्चय ही बेचैन था। शाम के खाने पर भी उसके पाँव टिक न सके। उसने आकाश की ओर देखा और बोला, "सवारी के लिए यह रात अच्छी है।"

जोडी बोला, "तुम एकदम ही कैसे बेचैन हो उठे हो ?"

बक अपनी हरकत में कुछ रुका। बोला, "मेरे साथ ऐसा ही होता है। मैं आना भी ऐसे ही चाहता हूँ और जाते हुए भी इसी तरह चंचल हो उठता हूँ। जहाँ भी जाऊँ, मैं थोड़ी देर ही सन्तुष्ट रहता हूँ। पर, उसके बाद मैं कहीं भी सन्तोष से नहीं रह सकता। जब मैं लेम और मिलव्हील के साथ घोड़ों का व्यापार करने कैन्टुकी की ओर जाता हूँ तब, मैं सौगन्ध के साथ कहता हूँ, जब तक घर लौट न आऊँ, बेचैन रहता हूँ।" वह रुका और अस्त होते सूर्य की ओर देखता रहा। तब उसने धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे असल बेचैनी फौडरविंग के कारण है। मुझे दिल में अनुभव होता है कि जैसे वह ठीक नहीं है।"

"अगर ऐसा होता तो क्या कोई आता न ?"

"बात ठीक है, पर अगर वे यह न जानते कि तुम्हारे पिता की हालत ठीक नहीं है, तो उनमें से अवश्य आ जाता और हाल-चाल बता जाता। उन्हें पता है कि तुम्हारे पिता को सहायता की आवश्यकता है और इसलिए वे मुझे यहाँ से ले जाना नहीं चाहते, फिर भले ही खबर ही बुरी क्यों न हो ?"

वह बड़े गिरे दिल से अँधेरे की प्रतीक्षा करने लगा। वह अपना काम ख़त्म करके जाना चाहता था। पैनी भी किसी फौरेस्टर की ही भाँति रात का अच्छा शिकारी था। जोडी की इच्छा हुई कि वह पिता से उसके मारे हुए जानवरों के विषय में बात करे। परन्तु, उसे पता था कि इस तरह बक के साथ वह रात के शिकार पर न जा सकेगा। उसने अपनी जीभ पर काबू कर लिया। उसने बक को मशाल के रूप में जलाने के लिए तेल वाली लकड़ियाँ इकट्ठी करने में सहायता दी।

बक बोला, "मेरे चाचा कौटन के लाल बाल थे। वे काफ़ी अधिक थे और सदा तने खड़े रहते थे, जैसे लड़ने वाले मुर्गे की कलगी हो। एक रात वह आग लेकर शिकार कर रहा था। मशाल का हत्था कुछ छोटा था। एक चिनगारी उड़ी और उसके बालों में आग लग गई। जब उसने पिता जी को सहायता के लिए बुलाया, उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया। उन्होंने सोचा कि यह चाँद चमका होगा और इसके सिर के बालों पर उसी की चमक पड़ रही होगी।"

जोडी ने भारी साँस ली और पूछा, "क्या यह बात सच है ?"

बक हँस पड़ा और बोला, "अगर तुम मुझे कोई कहानी सुनाओ, तब मैं तुमसे कभी ऐसा प्रश्न नहीं करूँगा।"

पैनी अपने कमरे से ही बोल उठा, "मेरे से यह सहन नहीं होता। मुझे अच्छा नहीं लगता कि तुम दोनों मेरे बिना शिकार पर जाओ।"

वे उसके कमरे में आ गए। पैनी बोला, "अगर तुम किसी चीते के शिकार पर जा रहे हो, तो मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे साथ चलने के लिए मैं काफी ठीक हूँ।"

बक बोला, "मैं चीते के शिकार पर तुम्हें अवश्य ले चलता, अगर मेरे कुत्ते यहाँ होते।"

"क्यों ? मेरे दोनों कुत्ते तुम्हारे सारे कुत्तों के झुण्ड से बहुत ज़्यादा तेज़ हैं," और फिर पूछ बैठा, "आखिर तुम लोगों के साथ कुत्ते की कैसे निभी, जो मैंने तुम्हें बेचा था ?"

बक धीरे-धीरे बोला, "वह कुत्ता तो सबसे अधिक तेज़ और अच्छा साबित हुआ। उस-जैसा शिकारी और निडर कुत्ता कभी हमने नहीं देखा। उसे ज़रूरत थी किसी सिखाने वाले की !"

पैनी प्रसन्न हुआ और बोला, "मुझे खुशी है कि तुमने उसे कुछ बना दिया। पर अब वह कहाँ है ?"

"सच यह है कि वह इतना अधिक अच्छा था कि उसने दूसरे कुत्तों को शर्म में डाल दिया। लेम यह न सह सका और उसने अकेले में ले जाकर उसे गोली मार दी और तुम्हारे पीछे की ज़मीन में ही एक रात लाकर गाड़ दिया।"

पैनी ने उदास होकर पूछा, "मैंने वह नई क़ब्र देखी तो थी, पर मेरा अनुमान था कि शायद तुम लोगों की क़ब्रगाह छोटी पड़ गई है। अब शक्ति आते ही मैं उस पर एक पत्थर खड़ा कर दूँगा और इस पर लिख दूँगा, 'यहाँ अपने सम्बन्धियों से उपेक्षित एक फौरेस्टर सो रहा है।'"

वह मुसकराया और अपनी चादर को थपथपाने लगा।

वह बोला, "झुक जाओ, बक! झुक जाओ!"

बक ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा, "अच्छा, ठीक है। मैं इसे हँसी में सह लेता हूँ, पर लेम को अगर यह कहा तो वह अपमान समझेगा।"

पैनी बोला, "कोई बुरा भाव मेरे दिल में कतई नहीं है और मुझे आशा है कि तुम लोग और लेम भी कोई बुरा भाव मेरे लिए नहीं रखोगे।"

"लेम की बात और है। वह हर बात को अपने पर ही लेता है।"

"यही मुझे दुख है। मैं तो ओलिवर और इसके बीच इसलिए कूदा था कि तुम लोग बहुत सारे एक ही ओर हो गए थे।"

बक बोला, "ठीक है! पर खून हमेशा ही पानी से अधिक गाढ़ा होता है। हम लोग आपस में कितना ही लड़ लें, पर जब किसी दूसरे के साथ सवाल आ पड़ता है, तो हमें एक ही तरफ़ होकर लड़ना पड़ता है। पर मुझे और तुम्हें एक-दूसरे के लिए बुरा मानने की कोई बात नहीं है।"

शब्दों से ही लड़ाई शुरू हुई थी और शब्दों ने ही उसे मिटा दिया।

जोडी ने पूछा, "अगर लोग लड़ाई वाली बातें न कहें, तो लड़ाई ही क्यों हो?"

पैनी बोला, "मुझे यह बात ठीक नहीं जँचती। मैंने एक बार दो बहरी पुतलियों को देखा था। लोग कहते हैं कि उनकी भाषा इशारों में होती है और वे इशारों में ही अपमान भी कर देते हैं।"

बक बोला, "यह तो पुरुष की आदत है। जोडी, जब तुम भी प्यार करने लगोगे, तब तुम्हारी भी कई बार दुर्गत होगी।"

"पर यहाँ तो लेम और ओलिवर के सिवाय किसी के प्यार का मामला न था, पर फिर भी हम सब और तुम सब इसके बीच में कूद पड़े।"

पैनी बोला, "इस बात का कोई अन्त नहीं कि आदमी किस चीज़ के

पीछे लड़ता है ? मुझे पता है कि एक प्रचारक, आपे से बाहर होकर, किसी से भी लड़ने लगता था, अगर बच्चों को तकलीफ़ देने का प्रश्न हो ! कोई इतना ही कर सकता है कि वह जिस चीज़ को ठीक समझता है उसी के लिए लड़े और बुराई का ख़याल न करे।"

बक बोला, "सुनो ! मेरा ख़याल है कि मैंने अभी उधर हरे मैदान में लोमड़ी को भौंकते सुना है।"

पहले-पहल रात शान्त-सी दिखाई दी, पर तभी बादलों के समान गरजती आवाज़ें उन्हें सुनाई देने लगीं। उल्लू का चिल्लाना और मेढक का टर्राना उन्हें सुनाई दिया। यह इस बात की सूचना थी कि वर्षा होने वाली है।

बक बोला, "वह उधर है।"

एक हलकी-सी आवाज़ बहुत दूरी पर सुनाई दी, जैसे कोई रो रहा हो। बक बोला, "क्या यह आवाज़ मेरे कुत्तों के लिए संगीत न होती ? क्या वे इस ऊँची आवाज़ पर गाने न लगते ?"

पैनी बोला, "अगर तुम और जोडी आज की रात इन सबको साफ़ न कर दो, तो अगली पूरनमासी के रोज़ अपने कुत्ते ले आना और हम इनका पीछा करेंगे।"

बक बोला, "जोडी, अब हमें चलना चाहिए। अब यह मक्की के खेतों तक आने ही वाली होगी।" उसने पैनी की बन्दूक कोने से उठाई और बोला, "आज मैं इसे ही गाड़ आऊँगा। लगता है, मैंने इसे कहीं देखा है।"

पैनी बोला, "इसे उस कुत्ते के पास ही मत गाड़ देना। यह बन्दूक बहुत अच्छी है।"

जोडी ने बारूद भरने वाली अपनी बन्दूक भरकर कन्धे पर लटका ली और वह बक के साथ निकल गया। छौने ने उसे निकलते सुना और उसके पीछे-पीछे कोठरी में से ही मिमियाने लगा। वे शहतूतों के पास से होकर बाड़ तक गए और वहाँ से मक्की के खेतों में निकल गए। बक पहली क्यारी के उत्तर की ओर गया और दूसरे किनारे जाकर उसने और क्यारियों के बीच चलना शुरू किया। वह हर क्यारी पर रुकता और रोशनी को नीचे की ओर कर खेत को देखता। बीचोंबीच वह रुका। मुड़कर

उसने जोडी को हिलाया। रोशनी जहाँ रुकी थी वहीं पर जैसे किन्हीं दो हरे पत्थरों में आग-सी पकड़ ली थी।

वह बोला, "खेत के आधे रास्ते तक किनारे-किनारे चले जाओ। मैं यह रोशनी ऐसे ही थामे रहूँगा, मगर रोशनी के बीच में न आना।"

जोडी अपने पाँव के नीचे की मक्की को बचाता सरकता हुआ आगे बढ़ा। वे हरी चमकती हुई रोशनियाँ एक क्षण के लिए मिटीं और फिर चमकने लगीं। उसने अपनी बन्दूक उठाई और जलती हुई लकड़ियों से आने वाली रोशनी को बन्दूक के ऊपर से जाने दिया। तब उसने घोड़ा दबा दिया। उसके झटके से वह लड़खड़ा गया, पर फिर सँभलकर सामने की ओर दौड़ने लगा ताकि निश्चय कर सके पर बक ने उसे मना किया।

वह बोला, "तुमने उसे मार लिया। उसे वैसा ही पड़ा रहने दो। वापस आ जाओ।"

वह क्यारी से होता हुआ फिर लौट आया। बक ने अब उसे दूसरी बन्दूक दे दी और बोला, "अभी यहीं पर कहीं पास ही दूसरा भी होगा।"

वे एक क्यारी से दूसरी क्यारी तक धीरे-धीरे सरकते आए। इस बार बक से भी पहले जोडी ने वे चमकती आँखें देख लीं। वह पहले की तरह ही फिर पगडण्डी के साथ-साथ बढ़ा। इस बन्दूक के पकड़ने में उसे आनन्द अनुभव हो रहा था। यह पुरानी भरने वाली बन्दूक की अपेक्षा हलकी थी, उतनी लम्बी भी नहीं थी और देखने में भी अच्छी थी। उसने पूरे विश्वास के साथ गोली दाग़ दी। बक ने फिर उसे पीछे बुला लिया और वह बहुत सँभलकर पीछे चला आया। यद्यपि वे क्यारियों को बहुत अच्छी तरह देख रहे थे और खेत के दक्षिण की तरफ़ खड़े होकर मक्की की क्यारियों पर पश्चिम की ओर रोशनी डाल रहे थे, पर उन्हें फिर वैसी चमकती हुई आँखें नहीं दिखाई दीं।

बक ज़ोर से बोला, "आज का शिकार इतना ही है। आओ, देखें, हमें क्या कुछ मिला ?"

दोनों गोलियाँ ठीक निशाने पर लगी थीं। एक लोमड़ था और एक लोमड़ी। दोनों ही इसी मक्की पर मोटे हुए थे।

बक बोला, "इनके बच्चे भी यहीं कहीं माँद में होंगे। परन्तु, वे इतने

बड़े हो गए होंगे कि अपनी गुज़र आप कर सकें। इन सर्दियों में हम इन लोमड़ियों का ही शिकार करेंगे।"

लोमड़ियाँ सलेटी रंग की थीं। उनकी सेहत और बाल ठीक हालत में थे। जोडी ने उन्हें आराम से उठाया।

घर के पास पहुँचते-पहुँचते उन्होंने कुछ गड़बड़-सी सुनी। माँ चिल्ला रही थी।

बक ने पूछा, "तुम्हारी माँ पिता की बीमारी में ही तो उसे तंग नहीं कर रही। क्या वह ऐसा कर सकती है ?"

जोडी ने कहा, "वह बातों के अलावा और कुछ नहीं बिगाड़ती।"

"मैं तो यह ज़्यादा अच्छा पसन्द करूँगा कि कोई औरत तेज़ बोलने की बजाय मुझे मार डाले।"

घर के पास उन्होंने पैनी को चिल्लाते हुए सुना।

बक बोला, "जोडी, तुम्हारी माँ उसे मार डालेगी।"

जोडी बोला, "छौने के पीछे ही कोई बात हो रही होगी।"

आँगन में कभी-कभी छोटे जानवरों के अलावा और कोई उत्पात नहीं होता था। बक ने बाड़ लाँघी और जोडी भी उसके पीछे कूद गया। दरवाज़े पर कोई रोशनी चमकती उन्हें नज़र आई। पैनी केवल पाजामा पहने वहाँ खड़ा था। माँ उसी के पीछे अपना अँगरखा झटक रही थी। जोडी को लगा कि उसने कोई एक काली-सी चीज़ रात में घूमती हुई देखी है, जैसे वह अंगूरों के बगीचे की ओर बढ़ गई हो और उसके पीछे-पीछे कुत्ते भी भौंकते हुए चले गए हों।

पैनी चिल्लाया, "यह रीछ है। इसे पकड़ो। कहीं यह बाड़ लाँघ न जाय!"

बक के दौड़ते हुए आग की लकड़ियों से कुछ चिनगारियाँ उड़ गईं। वह रोशनी उस दौड़ते हुए काले शरीर पर भी पहुँची, जो नाशपाती के वृक्षों के नीचे पूरब की ओर जा रही थी। जोडी चिल्लाया, "यह आग मुझे पकड़ा दो, बक ! और तुम गोली दाग़ो।"

वह खुद डरा हुआ था और अपने को ठीक अनुभव नहीं कर रहा था। दौड़ते-दौड़ते हुए उन्होंने चीज़ें बदलीं। बाड़ पर पहुँचकर रीछ कुत्तों के

ऊपर पलटा। उसकी आँखें और दाँत बड़ी तेज़ चमक के साथ रोशनी में चमके और तब वह फिर बाड़ को लाँघने के लिए मुड़ पड़ा। बक ने गोली दाग़ दी। भालू लड़खड़ाया। कुत्ते एक जोश के साथ भौंकने लगे। पैनी भी दौड़ता हुआ पहुँच गया। रोशनी में देखा कि वह मर चुका। कुत्तों ने दिखाया कि जैसे उन्होंने ही शिकार किया हो और वे फिर भौंककर उस पर टूटने लगे। बक खुश था। वह बोला, "यह बेचारा इधर न आता, अगर इसे पता होता कि कोई फौरेस्टर यहाँ आया हुआ है।"

पैनी बोला, "उसने कुछ चीज़ें यहाँ ऐसी देखीं, जिन्होंने उसे पागल बना दिया, इसीलिए शायद वह तुम लोगों का ख़याल न रख सका।"

"वह क्या चीज़ थी?"

"जोडी का छौना और शहद।"

"क्या, पिताजी, उसने छौने पर हमला कर दिया? उसे चोट तो नहीं लगी।"

"नहीं, वह उसे नहीं पा सका। क़िस्मत से दरवाज़ा बन्द था। तब निश्चय ही उसे शहद की गन्ध आई होगी। वह इन सीढ़ियों तक चक्कर काटता हुआ आ गया। मैंने सोचा कि तुम सब लौटकर आए होगे। मैंने तब तक ध्यान नहीं दिया, जब तक कि उसने शहद के बर्तन का ढक्कन ही न हटा दिया। मैं उसे दरवाज़े पर ही मार चुका होता, पर यहाँ कोई बन्दूक ही नहीं थी। हम दोनों केवल चिल्ला ही सकते थे और मेरा अनुमान है कि इसे इतनी चिल्लाहट का सामना कभी करना न पड़ा होगा। यह यहाँ से निकल भागा।"

जोडी छौने की बात सुनते ही सुन्न-सा रह गया था। वह एकदम ही कोठरी की ओर भागा गया और यह देखकर उसे सन्तोष हुआ कि छौना गहरी नींद में बेखबर होकर सो रहा था। उसने उसे जी भरकर प्यार से थपथपाया और तब परिवार के आदमियों और भालू की ओर लौट आया। यह दो वर्ष का नर-भालू था। इसकी हालत अच्छी थी। पैनी ने ज़िद की कि वह इसे काटेगा। उन्होंने उसके शव को पीछे की ओर खींच लिया और तब उन जलती लकड़ियों की रोशनी में उसकी खाल उतार ली। साथ ही इसके माँस के टुकड़े करके उसे धुआँघर में लटका दिया।

बक बोला, "मेरी इच्छा है कि कुछ चर्बी मैं माँ के लिए ले जाऊँ, ताकि वह इसका तेल और इसमें तली कुछ चीज़ें बना सके। कुछ चीज़ें ऐसी हैं, जिन्हें वह भालू की चर्बी के बिना तलना ही नहीं चाहती। उसका कहना है कि भालू के तले हुए माँस के टुकड़े और आलू उसके दाँतों को सबसे अच्छे लगते हैं। सच तो यह है कि उसके चार छोटे-छोटे दाँत दिन भर उन्हें चबाते रहते हैं।"

श्रीमती बैक्स्टर इस बहुतायत से बड़ी उदार बन गई थीं।

वह बोली, "और साथ ही फौडरविंग के लिए इसके जिगर का एक टुकड़ा भी लेते जाना। इससे उसे ताक़त मिलेगी।"

पैनी बोला, "मुझे इस बात का दुख है कि यह बूढ़ा पाँवकटा भालू नहीं है। मैं उसे देखकर केवल चाकू से ही उसकी पीठ चीर डालता।"

लोमड़ियों की खाल सवेरे भी उतारी जा सकती थी, क्योंकि उनका माँस केवल चूज़ों के ही काम आना था। उसमें मसाले मिलाकर ताक़तवर बना दिया जाएगा।

बक बोला, "कभी तुम लोगों से ईज़ी ओज़ेल ने अपने यहाँ आकर लोमड़ी के माँस का पुलाव खाने की बात भी कही है?"

पैनी बोला, "उसने तो कहा था, पर मैंने उसे धन्यवाद देते हुए कहा कि हम उस दिन आएँगे जब तुम अपने ही कुत्तों में से किसी को पकाओगे।"

पैनी उत्तेजना से भरा हुआ था। वह बक के साथ ही अपनी एड़ियों के बल बैठ गया और लोमड़ियों, कुत्तों, अजीब भोजनों और उन्हें खाने वाले अजीब आदमियों की बातें करता रहा। ये सब बातें आज जोडी का ध्यान अपनी ओर न खींच सकीं। अब वह इस बात के लिए उत्सुक था कि हर कोई जाकर सो जाय। आखिर पैनी की ताकत जवाब दे गई और वह अपने हाथ धोने और चाकू साफ करने के लिए उठा और अपनी पत्नी के साथ सोने चला गया। बक आधी रात तक बातें करने के लिए तैयार था। जोडी समझ गया और वह अपने ही कमरे में फर्श पर बिस्तर लगाकर सोने के लिए बहाना करने लगा। बक ने उसका बिस्तरा बहुत दिन से सम्हाला हुआ था। उसकी बालों वाली लम्बी टाँगें बिना सहारे के लटकती रहती थीं। अपनी चारपाई पर बैठे हुए वह बातें करता रहा, जब तक सभी खिसकने

न शुरू हो गए। जोडी ने उसे जम्हाई लेते हुए सुना श्रौर श्रपने पाजामे ढीले कर वह भी वहीं भूसे की चटाई पर लेट गया।

वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा, जब तक तेज़ खुर्राटे न सुनाई देने लगे। तब वह घर से खिसककर पिछली कोठरियों की श्रोर चला गया। छौना उसकी श्रावाज़ सुनते ही जग पड़ा। जोडी भी उसके पास पहुँचा श्रौर उसने श्रपनी बाँह उसकी गर्दन के चारों श्रोर डाल दी। छौने ने उसके गाल से श्रपनी नाक मलनी शुरू की। उसने इसे उठा लिया श्रौर दरवाज़े तक ले श्राया। इतने थोड़े दिनों में यह इस तेज़ी से बढ़ गया था कि वह इससे श्रधिक वज़न उठा भी न सकता था। इसे लेकर वह पंजों के बल श्रांगन में चला श्राया श्रौर इसे वहाँ छोड़ दिया। यह श्रब उसके पीछे चलने लगा। जोडी घर में धीरे-धीरे घुसा। उसने एक हाथ इसके सिर पर रखा हुश्रा था, ताकि उसे भी रास्ता पता चल जाय। इसके खुर लकड़ी के फर्श पर श्रावाज़ कर रहे थे। उसने फिर से इसे उठा लिया श्रौर सँभल-सँभलकर क़दम रखने लगा। वह माँ के कमरे को पार कर श्रपने कमरे में श्रा गया।

श्रपने बिस्तर पर वह लेट गया श्रौर इसको भी श्रपने पास ही उसने सरका लिया। इसी प्रकार वह कितनी ही बार पीछे की कोठरी में श्रौर सनावरों की छाया में इसके साथ सोया था। श्रब भी उसने श्रपना सिर इसके शरीर से सटा दिया श्रौर इसकी पसलियों के उठने श्रौर गिरने के साथ इसकी साँस को श्रनुभव करने लगा। छौने की ठोड़ी जोडी की बाँह पर टिकी हुई थी। दो-चार बाल, जो उसके मुख पर उग श्राए थे, इसकी बाँह में चुभ रहे थे। श्रब तक वह उन चालाकियों पर गौर करता रहा था कि जो वहाने बताकर वह इसे रात को श्रपने साथ सुलाने के लिए श्रपने कमरे में ला सकता था, पर श्राज वह इसे बिना किसी झगड़े के श्रन्दर ले श्राया था। श्रब उसे पता चल गया कि वह उसे जब भी चाहे श्रन्दर ला श्रौर बाहर ले जा सकता था। बहाना एक ही था कि इसकी वज़ह से कोई बखेड़ा न खड़ा हो। श्रगर श्रचानक किसी दिन वह पकड़ा ही गया, तो इससे बढ़कर श्रौर क्या बहाना होगा कि वह भालुश्रों के ख़तरे की बात याद दिला देगा।

17

आलुओं के खेत समुद्र के समान लहरा रहे थे। अभी-अभी निलाये हुए खेतों को जोडी ने पीछे मुड़कर देखा। वे बहुत अच्छे दीखने लगे थे। किन्तु बिना निलाये खेत अभी भी काफ़ी अधिक थे। आषाढ़ की धूप ज़मीन को झुलसा रही थी। तपती हुई रेत उसके पाँवों को जला रही थी। आलू की बेलों के पत्ते ऊपर की ओर मुड़ने लगे थे, मानो उन्हें धूप की बजाय ज़मीन जला रही हो। उसने ताड़ के पत्तों से बनी टोपी को पीछे सरकाया और मुख का पसीना अपनी आस्तीन से पोंछा। सूर्य को देखकर उसने अनुमान किया कि लगभग दस बजे का समय होगा। उसे ध्यान आया कि उसके पिता ने कहा है कि यदि वह दोपहर तक आलुओं की निलाई कर ले तब वह फौडरविंग से मिलने जा सकता है और इस प्रकार हिरण के बच्चे का नाम रखवा सकता है।

हिरण का बच्चा बेरी की एक झाड़ी की छाया में सो रहा था। जोडी ने जब काम आरम्भ किया था, तो इसने काफ़ी गड़बड़ मचाई थी। यह

उन क्यारियों में ऊपर-नीचे दौड़ता हुआ बेलों को कुचलता रहा। उसने कई मुँडेरों को गिरा भी दिया। फिर जोडी के ऐन सामने ग्राकर ग्रड़ गया ग्रौर उसे खेलने के लिए मजबूर करने लगा। इसकी बड़ी-बड़ी ग्राँखों में शुरू में ग्रचरज का-सा भाव रहता था, पर ग्रब इनमें चौकन्नापन समा चुका था। इसकी निगाहों में भी जूलिया-जैसी बुद्धिमत्ता टपकने लगी थी। ग्रभी जोडी सोच ही रहा था कि उसे वापस ले जाकर पिछले गोदाम में बन्द कर दे कि यह चुपचाप झाड़ी की छाया में ग्राकर लेट गया।

इसका सिर एक कन्धे पर झुका हुग्रा था ग्रौर वहीं से लेटे-लेटे यह एक खुली ग्राँख से ही जोडी को देख रहा था। उसकी छोटी-सी पूँछ जब-तब हिलकर शरीर की खाल से टकराती थी, ताकि मक्खियाँ उड़ाई जा सकें। ग्रगर यह इसी भाँति चुपचाप पड़ा रहे तो उसे काम निबटाने में ग्रासानी होगी। उसे भी इसके पास रहते काम करने में मज़ा ग्राता था। इसके साथ रहने से निलाई के काम में कुछ ऐसा उत्साह जगता था, जैसा पहले कभी नहीं जगा था। वह घासों को फिर उत्साह से उखाड़ने लगा ग्रौर ग्रपनी बढ़ती पर स्वयं सन्तोष करने लगा। क़तारों पर क़तारें वह पार कर बढ़ता गया। मस्ती में बेसुरी सीटी की धुन भी बजाने लगा।

इस छौने के लिए उसने कई नाम सोचे थे। उसने बारी-बारी से उन नामों से इसे पुकारा भी। पर उसे उनमें से कोई नाम भी जँचा नहीं। जू, ग्रैब, रोवर, रौव ग्रादि उसकी जान-पहचान के तमाम कुत्तों के नाम उसे ठीक नहीं लगे। इसके छोटे-छोटे पाँवों की ग्रोर पैनी के ध्यान दिलाने पर उसने इसे 'ट्विकल-टोज़' नाम भी देना चाहा ग्रौर उसका भी छोटा नाम 'ट्विक' बना लिया। पर यह नाम भी उसे बुरा लगा, क्योंकि उसी समय उसे ग्रोलिवर की प्रेमिका ट्विक वैदरबी का ध्यान ग्रा गया। 'टिप' नाम उसे इसलिए नहीं जंचा कि इस नाम का एक झबरा कुत्ता पहले कभी पैनी ने रखा था ग्रौर वह ग्रच्छा न था। उसे विश्वास था कि फौडरविंग उसे निराश न करेगा। ग्रपने सभी प्रिय जन्तुग्रों के नाम उसने चुन-चुनकर रखे थे। रैकून का नाम 'रैकट', कंगारू का नाम 'पुश', गिलहरी का 'स्क्वीक', गाने वाले लँगड़े लाल-पक्षी का 'प्रीचर' ग्रादि नाम उसने स्वयं रखे थे। फौडरविंग ने यह नाम उसकी ग्रावाज़ को देखकर ही न रखा था, बल्कि

वह यह भी कहता था कि इसके पास जंगल के और लाल-पक्षी अपने विवाह के लिए आते थे। जोडी जानता था कि ऐसी आवाज़ और लाल-पक्षी भी करते हैं। फिर भी यह नाम उचित ही था।

पिछले दो हफ्तों में, बक के जाने के बाद से, उसे काफी काम करना पड़ा था। पैनी अब ठीक होता जा रहा था, फिर भी कभी-कभी उसका दिल धड़कने लगता और वह मूर्छित हो जाता। पैनी को पूरा विश्वास था कि यह साँप के ज़हर का असर ही था, फिर भी उसकी पत्नी उसे नींबू के पत्तों की चाय ज़बरदस्ती देती थी, क्योंकि उसकी समझ में यह बुखार के कारण था। मौत का ख़तरा टल जाने पर यह अच्छा ही था कि पैनी जल्दी ही ठीक हो जाय और काम में जुट पड़े। जोडी यह ध्यान रखने की कोशिश रखता था कि उसके पिता को काम में न ही लगना पड़े। अकेलेपन के दुःख से बचने के लिए किसी साथी की ज़रूरत थी और यह कमी उस हिरण के बच्चे से पूरी हो जाती थी। जोडी इस बच्चे को रखने की अनुमति देने के लिए स्वयं को माँ का आभारी मानता था। माँ इसको चुपचाप सह भी रही थी। कठिनाई केवल इस बात की थी कि इसे दूध अधिक चाहिए था। इसने धीरे-धीरे रसोई में भी घुसना शुरू कर दिया। एक दिन रोटी बनाने के लिए आटा गुँधा पड़ा था। इसने आते ही उसे साफ़ कर दिया। तब से सब्ज़ियाँ, आटा, बिस्कुट आदि हर चीज़ पर इसने हाथ डालना शुरू कर दिया। इसे परिवार के भोजन के समय अपनी जगह पर बाँधना ज़रूरी हो गया, क्योंकि इसने खाने वालों के हाथ की तश्तरियाँ तक टक्कर मारकर गिरानी शुरू कर दीं। पैनी और जोडी जब भी कभी इस पर हँसते, यह अपना सिर जान-बूझकर उछालने लगता। पहले-पहल कुत्ते इसका पीछा करते थे, पर अब वे भी इसकी हरकतों को सह लेते थे। जोडी की माँ को यह कभी खुश न कर सका, हालाँकि इसकी हरक़तें वह सह लेती थी।

जोडी ने इसकी खूबियों की ओर इशारा किया, "इसकी आँखें अच्छी नहीं हैं, क्या माँ, ?"

"हाँ, वे बहुत दूर से ही आटे की परात देख लेती हैं !"

"क्यों, क्या इसकी पूँछ बहुत अच्छी नहीं है ?"

"सभी हिरणों की पूँछ बड़ी अच्छी दिखाई देती है।"

"लेकिन माँ, यह कुछ नुकीली और अजीब-सी नहीं है ?"

"हाँ, अजीब वाली बात तक तो ठीक है ।"

सूर्य धीरे-धीरे पूरी ऊँचाई तक चढ़ आया । हिरण का बच्चा आलू की उन बेलों के बीच में आ घुसा और उनमें से कुछ को उसने कुचल दिया । तब वह फिर से बाड़ की ओर दौड़ गया और जंगली चैरी के पेड़ के नीचे उसने एक नया छायादार स्थान ढूँढ लिया । जोडी ने अपने काम पर निगाह डाली । एक-दो कतारें अब भी बची पड़ी थीं । वह पानी पीने के लिए घर की ओर जाना चाहता था । पर उसे पता था कि इससे उसका काम खतम होने में और देर लग जाएगी । उसके कारण भोजन देर से होगा और वह फौडरविंग के यहाँ शायद न भी जा सके । इसलिए उसने खुरपी जल्दी-जल्दी चलानी शुरू की और बेलों को बचाता हुआ बढ़ने लगा । अभी उसने वह आधी कतार ही पूरी की थी कि सूरज बिलकुल ऊपर चढ़ आया । अब भी एक पूरी कतार बिना निलाई किए पड़ी थी । उसे लगा कि कुछ क्षण में ही उसकी माँ रसोई के दरवाज़े पर लटकने वाली घंटी बजाएगी और उसे अपना काम छोड़ना पड़ेगा । पैनी ने यह बात पहले ही साफ़ कर दी थी कि यदि फौडरविंग के यहाँ जाना है तो अपना सारा काम दोपहर के भोजन के पहले ही खतम करना होगा । तभी उसने बाड़ के दूसरी ओर किसी के क़दमों की आवाज़ सुनी । यह पैनी था । वह उसे देख रहा था ।

बोला, "बेटे ! आलू तो इस बार बहुत हुए हैं न !"

"सचमुच ! बहुत ज़्यादा हुए हैं ।"

"इतना तो सोच भी नहीं सकते थे । पर अगले साल इस समय तक इनमें से कुछ भी नहीं बचेगा । यह तुम्हारा बच्चा अपना और ज़्यादा हिस्सा माँगने लगेगा । अब यह आराम से चैरी के नीचे सो रहा है । तुम्हें याद है कि दो साल पहले हिरणों को दूर रखने के लिए हमें कितनी मेहनत करनी पड़ी थी ?"

"पिताजी ! मुझे कुछ नहीं पता । मैं तो सवेरे से अब तक शायद ही कुछ क्षण रुका होऊँ । और अब भी एक पूरी कतार मेरे सामने बिना निलाई किए पड़ी है ।"

"अच्छा, तो मैं तुम्हें बताता हूँ । मैंने तो तुम्हें यही कहा था कि तुम्हें

यों जाना न मिलेगा, पर तुम एक शर्त पर जा सकते हो। तुम सोते तक जाकर अपनी माँ को ताज़ा पानी ला दो। शाम तक मैं तुम्हारे इन आलुओं का काम निबटा दूँगा। उस सोते की चढ़ाई चढ़ना मुझे थका देता है और यह सौदा बिलकुल उचित है।"

जोडी ने खुरपी नीचे रख दी और पानी की बाल्टियाँ लेने घर की तरफ़ दौड़ गया। पैनी ने पीछे से आवाज़ दी, "उन्हें भरकर मत उठाना। आखिर एक बच्चा जवान जितना बोझ नहीं उठा सकता।"

बाल्टियाँ खुद ही काफ़ी भारी थीं। वे सरु के पत्तों से बुनी हुई थीं। बैंगी सफ़ेद सनावर से बनी हुई थी। जोडी ने उसे कन्धे पर रखा और सड़क पर जल्दी-जल्दी चलने लगा। हिरण का बच्चा भी उसके पीछे-पीछे कुलाँचें भरने लगा। सोते पर छाया पड़ रही थी और शान्ति थी। यहाँ सवेरे और शाम के समय अधिक रोशनी होती थी और दोपहर को कम, क्योंकि ऊपर के घने पत्ते सूरज की धूप को रोक लेते थे। इस घनी दोपहरी में पक्षी भी शान्त थे। सोते के चारों ओर की रेत में वे आराम कर रहे थे। शाम से पहले ही वे फिर उड़ जाएँगे। तब कबूतर, लाल चिड़ियाँ आदि अनेक प्रकार के पक्षी आएँगे। वह जल्दी में उस सोते की सीधी ढलान पर से फिसलना नहीं चाहता था। हिरण उसके पीछे-पीछे था। वे उछलते-कूदते जोहड़ के पास से निकले। हिरण पानी पीने के लिए झुक गया। जोडी इसी बात का स्वप्न देखा करता था।

उसने उसकी ओर झुककर कहा, "किसी दिन मैं यहीं अपना घर बनाऊँगा और मैं तुम्हें एक हिरणी ढूँढ दूँगा। फिर हम सब इसी जोहड़ के किनारे रहा करेंगे।"

एक मेंढक उछला और वह हिरण का बच्चा डरकर पीछे हट गया। जोडी हँस पड़ा और दौड़कर ऊपर पीने वाले पानी की नाली तक पहुँच गया। वह पानी पीने के लिए उस पर झुका। हिरण का बच्चा भी उसके पीछे-पीछे पहुँच गया और वहीं पर अपना सिर नाली के बहाव के ऊपर-नीचे हिलाते हुए पानी पीने लगा। एक क्षण के लिए इसका सिर जोडी के गालों के पास आ गया और उसी की-सी आवाज़ में जोडी पानी पीने लगा; मानो उसे एक साथी मिल गया हो। तब उसने अपना सिर उठाया, उसे

झटका दिया और पोंछ डाला। उस बच्चे ने भी अपना सिर उठाया, पर उसके मुँह से पानी की बूँदें टपक रही थीं।

जोडी ने कुँएनुमा उस सोते के किनारे पर बँधी हुई रस्सी के सहारे बाल्टियाँ भरीं। पिता की चेतावनी के बाद भी उसने उन्हें पूरा भर लिया। वह इसी तरह घर तक जाना चाहता था। उसने झुककर अपने कन्धे बेंगी के नीचे लगाए, पर वह उस बोझ के मारे सीधा खड़ा न हो सका। उसने उस पानी का कुछ हिस्सा गिरा दिया और तब उसे उठाकर आसानी से ढलान पर उतरने लगा। बेंगी उसके कमज़ोर कन्धों में धँसी चली जा रही थी। उसकी कमर दर्द करने लगी। अभी वह आधे रास्ते भी न पहुँचा था कि उसे रुकना पड़ा और उसने कुछ पानी और गिरा दिया। तभी उस हिरण ने अपनी नाक जैसे किसी खोज में एक बाल्टी में डाल दी। सौभाग्य से उसकी माँ इस बात को नहीं जान सकेगी। वह इस बात को नहीं समझ सकती थी कि हिरण कितना साफ़ था और उसकी सुगन्ध कितनी मीठी थी ?

जब वह घर पहुँचा तब तक वे सब खाने पर बैठ चुके थे। उसने बाल्टियों को टंकी में उल्टा दिया और हिरण को अपनी जगह बाँध दिया। उसने पानी की सुराही ताज़ी बाल्टियों में से भरी और मेज़ पर रख दी। अधिक मेहनत करने के कारण वह इतना अधिक थका और तपा हुआ था कि उसे कोई ख़ास भूख महसूस नहीं हो रही थी। इस बात से वह प्रसन्न था और कुछ अधिक हिस्सा हिरण के लिए बचाने में सफल हो गया। माँस भालू की कमर के हिस्से में से लेकर बर्तन में भूना गया था और बचाव के लिए मसाले से भरा हुआ था। लम्बे रेशों से युक्त यह माँस कुछ खुरदरा-सा था, पर फिर भी इसकी खुशबू जोडी को गाय के माँस से भी अच्छी लगी, मानो यह हिरण का ही माँस हो। उसने अपना पेट इससे ही भरा और कुछ हरी सब्ज़ी साथ खा ली। बाकी बचे हुए मक्की के हलवे और दूध को हिरण के बच्चे के लिए बचा लिया।

पैनी बोला, "हमारा बड़ा सौभाग्य था कि ऐसा छोटा भालू ठीक हमारी नाक के नीचे यहाँ शिकार करने आया। अगर कहीं कोई बड़ा भालू होता तो इन दिनों हम उसका माँस न खा सकते। भालू आषाढ़ के दिनों में मादा-रीछों से जोडी बाँधा करते हैं। और, जोडी, यह बात याद रखना,

जिन दिनों नर-रीछ जोड़ी बाँध रहा हो, उसका माँस खाने लायक नहीं होता। ऐसे रीछ का कभी शिकार मत करना, जब तक वह तुम्हें हानि न पहुँचाए।"

"क्यों? यह माँस क्यों खाने लायक नहीं होता?"

"इस बात का मुझे पता नहीं। पर एक बात साफ़ है कि जिन दिनों रीछ जोड़ी बाँध रहा होता है वह बहुत नीच और घृणित होता है।"

"जिस तरह लेम और ओलिवर नीच हैं?"

"हाँ! उनकी तरह से ही। उसका जिगर और तिल्ली बढ़ जाती है और ऐसा लगता है जैसे उसकी रग-रग में घृणा भर जाती हो।"

तभी श्रीमतीजी बोल उठीं, "जंगली सूअर की भी यही हालत होती है। अन्तर यही है कि वह साल-भर ही इसी तरह रहता है।"

"अच्छा, पिताजी, यह नर-रीछ आपस में लड़ते भी हैं?"

"क्यों नहीं? वे बुरी तरह लड़ते हैं। मादा-रीछ दूर खड़ी होकर लड़ाई देखती रहती है।"

"वैसे ही जैसे ट्विक वैदरबी खड़ी थी?"

"हाँ! वैसे ही। और, तब वह जीतने वाले के साथ चली जाती है। फिर वे आषाढ़ के पूरे महीने साथ-साथ रहते हैं और कई बार अधिक भी। तब नर-रीछ दूर चला जाता है। बच्चे फाल्गुन में पैदा होते हैं और यह बात ध्यान रखना कि अगर कोई नर-रीछ चाहे तो वह इन बच्चों को भी खा जाता है। इसी कारण मुझे भालुओं से नफ़रत है। उनका प्यार स्वाभाविक नहीं होता।"

माँ जोडी से बोली, "आज फौरेस्टर परिवार की ओर जाते हुए तुम ध्यान रखना। जोड़ी बाँधते समय भालुओं से बचकर ही रहना चाहिए।"

पैनी बोला, "बस, अपनी आँखें खुली रखो। जब तक तुम उसे अचरज़ में नहीं डाल देते, वह तुम्हारा कुछ नुकसान न करेगा। यहाँ तक कि जिस साँप ने मुझे डसा, वह भी इसी कारण कि मेरे कारण वह अचरज में आकर डर गया था। नहीं तो वह कुछ न कहता। वह तो अपने को बचाना चाहता था।"

माँ बोल पड़ी, "हाँ, तुम्हारे लिए तो यमदूत भी अपने को बचाना चाहता है।"

"हाँ, ठीक है। मनुष्य अपनी करतूत को देखता नहीं और हर बुराई को दूसरे पर मढ़ना चाहता है।"

सन्देह के साथ माँ ने पूछा, "जोडी ने शर्त के मुताबिक अपना काम खतम कर लिया ?"

पैनी ने दो टूक उत्तर दिया, "हाँ, उसने अपना वायदा पूरा कर दिया।"

उसने जोडी की ओर आँख मिचकाई। जोडी ने भी उसी तरह पलक झपकाई। उसके सामने सारी बात खोलने की ज़रूरत भी न थी। पुरुषों की आपसी बातों से उसे बाहर ही रखा जाता था।

जोडी ने पूछा, "माँ, क्या अब मैं जा सकता हूँ ?"

"अच्छा, देखो ! हाँ, शायद मुझे लकड़ियों की ज़रूरत पड़ेगी।"

"माँ ! अच्छा है, बहुत दूर की बात न सोचो। क्या तुम यह चाहती हो कि मुझे इतनी देर हो जाय कि लौटते हुए रीछ खा जायँ ?"

"तुम जान-बूझकर अँधेरा होने के बाद लौटोगे और चाहोगे कि मेरी बजाय कोई रीछ तुम्हें टकर जाय।"

तब तक उसने लकड़ियों का डिब्बा भर दिया और जाने के लिए तैयार हो गया। माँ ने उसे कमीज़ बदलने और कंघी करने के लिए विवश किया। उसे इस देरी पर गुस्सा आ रहा था।

माँ बोली, "मैं चाहती हूँ कि उन मैले-कुचैले फौरेस्टर लोगों को भी यह पता चल जाय कि कुछ साफ़ रहने वाले लोग भी होते हैं।"

वह बोला, "किन्तु वे मैले नहीं रहते। वे बड़े साफ़ और सीधे-सादे तरीके से रहते हैं और ज़िन्दगी का मज़ा लेते हैं।"

माँ ने घृणा से नाक सिकोड़ी। जोडी ने पिछवाड़े से हिरण के बच्चे को खोला और उसे दूध-पानी वाली बाटी अपने हाथ में थामकर खुराक दी। तब दोनों चल पड़े। छौना कभी उसके आगे दौड़ जाता था, कभी पीछे। कभी वह इधर-उधर की झाड़ियों में चक्कर काट आता था। उसके पास लौटते हुए वह बहुत चौकन्ना होता था। जोडी समझता था कि यह झूठ-मूठ का दिखावा है। कभी वह उसके साथ चलने लगता। जोडी को यह बात

सबसे अधिक पसन्द थी। जोडी उसकी गर्दन पर अपना हाथ बहुत हल्के से रख देता और एक ताल के साथ उसके चारों पैरों की आवाज़ से आवाज़ मिलाता हुआ चलने लगता। वह सोचने लगता, जैसे वह स्वयं भी एक दूसरा छौना है। वह अपने घुटने झुकाकर उसकी चाल की नक़ल करने लगा और उसके जैसा ही चौकन्ना होकर अपना सिर पीछे की ओर फेंकने लगा। पास ही मटरों की एक बेल फैली हुई थी, उसमें से कुछ लम्बा हिस्सा काटकर उसने हिरण की गर्दन में जंज़ीर के रूप में बाँध दिया। इसके खिले हुए लाल-लाल फूलों से वह छौना इतना अच्छा लगने लगा, जोडी को लगा जैसे उसकी माँ भी उसकी प्रशंसा करेगी। उसने निश्चय किया कि अगर यह उसके लौटने तक मुरझा गई तो वह लौटते समय एक-दूसरी ऐसी बेल उसके गले में बाँध देगा।

उजाड़ खेत के पास ही एक चौराहा पड़ता था। यहाँ वह छौना एक मिनट को रुका और उसने अपने नथुने हवा में उठा दिए। उसके कान खड़े हो गए। वह अपना सिर हवा को सूँघने के लिए इधर-उधर घुमाने लगा। जोडी ने भी उसके साथ ही एक दिशा में अपना सिर घुमा लिया और उधर से आने वाली एक तेज़ मधुर गंध को अनुभव किया। उसे अपनी गर्दन के बाल खड़े हुए अनुभव हुए। उसे एक हल्की-सी मसलने की आवाज़ आई और फिर दाँत किटकिटाने की। डर के मारे वह घर की ओर लौटने की इच्छा करने लगा। परन्तु साथ ही वह इस अचरज में भी डूब गया कि आखिर आवाज़ किस चीज़ की थी? वह उसी चौराहे पर एक-दो क़दम आगे बढ़कर झाँकने लगा। छौना भी उसके पीछे ज़ड़ा-सा खड़ा रहा। जोडी एकाएक रुक गया।

दो नर-रीछ उसी सड़क पर आगे-आगे बहुत धीमे-धीमे बढ़ रहे थे। वे सौ गज़ दूर भी न रहे होंगे। आदमियों की तरह वे पिछली टाँगों पर खड़े होकर कन्धे-से-कन्धा भिड़ाकर चल रहे थे। उनकी चाल नाग-जैसी थी, वैसे ही जैसे जोड़ियाँ बाँधकर नाच के समय होती है। वे एकदम ही पहल-वानों की तरह एक-दूसरे से उलझ गए और अगले पंजे उठाकर एक-दूसरे पर गुर्राते हुए एक-दूसरे का गला पकड़ने की कोशिश करने लगे। एक ने दूसरे के सिर पर अपना पंजा गड़ा दिया और उनकी गुर्राहट शोर से भी

ऊँची हो गई। कुछ देर यह लड़ाई बहुत तेज़ी से चली। तब वे दोनों एक-दूसरे पर मुक्के मारते हुए और एक-दूसरे को धक्का देते हुए चलने लगे। क़िस्मत से हवा जोडी के अनुकूल थी। वे उसकी गन्ध न पा सके। वह भी उनके पीछे-पीछे सरकता हुआ बढ़ने लगा। पर बीच की दूरी उसने कम न होने दी। वह उन्हें आँखों से ओझल न होने देना चाहता था। उसे उम्मीद थी कि वे किसी एक के खतम होने तक लड़ते रहेंगे। पर उसे यह भी डर था कि कहीं लड़ाई खतम करके उनमें से कोई उसकी ओर न मुड़ पड़े। उसे विश्वास हो गया कि वे काफी देर से लड़ रहे हैं और थक चुके हैं। पगडंडी की धूल में उसे खून के निशान भी मिले। उनके हमले धीमे पड़ते जा रहे थे। उनकी चाल भी धीरे-धीरे मन्द पड़ती जा रही थी। इसी समय उसने देखा कि एक मादा-रीछ तीन नर-रीछों के साथ झाड़ी में से निकली। पग-डंडी पर आकर वे सब चुपचाप एक क़तार में चलने लगे। लड़ने वाली जोड़ी ने एक बार अपने सिर उठाकर उनकी ओर देखा और तब वे उनके पीछे-पीछे चलने लगे। जोडी तब तक खड़ा देखता रहा, जब तक यह शानदार, गम्भीर और उत्तेजक जुलूस उसकी निगाहों से ओझल न हो गया।

वह वहीं से लौट पड़ा और फिर दौड़कर उसी चौराहे पर आ गया। उसे वह हिरण का छौना कहीं भी न दिखाई दिया। उसने उसे पुकारा और वह सड़क के किनारे की ही एक झाड़ी में से निकलकर सामने आ गया। तब जोडी ने फौरेस्टर परिवार के घर की ओर जाने वाली सड़क पकड़ी और उस पर भागता हुआ बढ़ने लगा। खतरा टल गया था, पर उसे अपनी हिम्मत पर अचरज हुआ। अब वह नज़ारा सामने नहीं था। पर अगर फिर-फिर दुबारा मौक़ा मिला, तो वह फिर भी ऐसा नज़ारा देखेगा। ऐसा मौक़ा कम लोगों को ही मिलता है जिसमें वे पशुओं के अन्दरूनी जीवन की झाँकी ले सकें।

वह सोचने लगा, 'मैंने आज एक अजब चीज़ देखी है।'

यह सचमुच अच्छी ही बात है कि आदमी ज्यों-ज्यों बढ़ता जाय त्यों-त्यों नए-नए दृश्य और नई-नई आवाज़ें देखता और सुनता जाय, जैसे बक और उसके पिता ने देखी और सुनी थीं। यही कारण था कि वह ऐसे आदमियों के बात करते होने पर पेट के बल लेटकर, घर में या जंगल में, उनकी बातें

सुनना अधिक पसन्द करता था। उन्होंने बहुत-सी अचरज की बातें देखी थीं। जिसने जितनी ही उम्र बिताई, उसने उतनी ही अजब बातें देखी थीं। यह सब सोचता हुआ वह चल रहा था। मानो कोई न दीखने वाला साथी उसके साथ चल रहा हो। अब उसके पास अपनी भी एक कहानी थी जिसे वह सर्दियों की रातों में आग के पास बैठकर दूसरों को सुना सकता था। उसका पिता उससे पूछेगा, "जोडी, ज़रा सुनाओ तो सही उस समय की बात, जब तुमने दो नर-भालुओं को सड़क पर लड़ते देखा था।"

फिर, फौडरविंग को भी वह यह सब बात सुना सकेगा। दोस्त का ध्यान आते ही वह दौड़ने लगा, ताकि जल्दी ही जाकर वह उसे अपनी कहानी सुना सके। वह उसे अचरज में डाल देगा। अगर वह अब तक भी बीमार होगा, तो उसके घर में, और अगर वह ठीक हुआ तो जंगल में, अथवा उसके पालतू जन्तुओं के पास वह उसे खोजने निकल जाएगा। हिरण का यह छौना उसके साथ-साथ चल रहा होगा। फौडरविंग का चेहरा इसे देखते ही एक अजीब चमक से चमक उठेगा। वह अपने मुड़े-तुड़े शरीर को इस छौने के पास झुका लेगा और अपना मुड़ा हुआ हाथ बड़े प्यार से फैला-कर इसे छुएगा। वह मुसकराएगा और देखेगा कि जोडी को इससे खुशी हुई है। तब बहुत देर बाद वह बोलेगा। जो कुछ भी वह कहेगा, वह चाहे अजीब ही होगा, फिर भी वह सुन्दर अवश्य होगा।

अब जोडी फौरेस्टर परिवार की ज़मीन की सीमा तक पहुँच गया था और जल्दी-जल्दी सनावरों को पार करके आँगन में पहुँच चुका था। घर बहुत शान्त था। न चिमनी में से धुआँ उठ रहा था, न कहीं कुत्ते दिखाई दे रहे थे। केवल एक कुत्ता पीछे के कुत्तेखाने में से आवाज़ दे रहा था। ऐसा लगता था कि जैसे परिवार के सब व्यक्ति दोपहर की गर्मी से तंग आकर सो रहे हों। पर वे जब कभी भी सोते थे, तो घर में न समाकर बरामदे तक फैल जाते थे; बल्कि पेड़ों के नीचे भी सोते थे।

जोडी रुका और उसने आवाज़ दी, "फौडरविंग ! मैं जोडी हूँ।"

शिकारी कुत्ता गुर्राया। अन्दर लकड़ी के फर्श पर एक कुर्सी के खिस-कने की आवाज़ आई। बक दरवाज़े पर आ गया था। उसने जोडी की ओर देखा और अपने मुँह पर हाथ फेरा। उसकी आँखें कहीं खोई हुई

थीं। जोडी को लगा जैसे वह शराब पिये हुए हो। वह बोल उठा, "मैं फौडर-विंग को देखने आया हूँ। मैं उसे अपना यह छौना दिखाने आया हूँ।"

बक ने अपना सिर हिला दिया जैसे वह शहद की मक्खियों या विचारों को उड़ा देना चाहता हो। उसने फिर से अपना मुँह पोंछा।

जोडी फिर बोला, "मैं विशेष रूप से उसी के लिए आया हूँ।"

बक बोला, "पर वह तो मर चुका है।"

जैसे शब्दों का कोई अर्थ ही नहीं था। उसके सामने वे कुछ सूखे पत्तों की तरह आए और हवा में उड़ गए। परन्तु उनके गुज़रते ही एक भय और ठण्डापन-सा उसके दिल में समा गया। वह कुछ देर के लिए जड़-सा बन गया।

बोला—"मैं उसे देखने आया हूँ।"

"तुम बहुत देर से आए हो। मैं तुम्हें खुद ले आता, अगर कहीं समय होता। डाक्टर तक को लाने का समय नहीं था। एक मिनट पहले तक वह ठीक साँस ले रहा था और अगले ही मिनट वह समाप्त हो चुका था। वह ऐसे ही मिट गया, जैसे किसी जलती हुई मोमबत्ती को किसी ने बुझा दिया हो।"

जोडी और बक एक-दूसरे की ओर जड़-से बने ताकते रह गए। जोडी को तो जैसे लकवा मार गया हो। उसे कोई दुख महसूस न हुआ। पर अन्दर-ही-अन्दर एक अजीव उदासी और बेहोशी-सी समा गई। फौडरविंग न मरा था, न ज़िन्दा था; बस वह कहीं रहा नहीं था।

बक ने भरे गले से कहा, "आओ, तुम उसे देख सकते हो!"

पहले तो बक ने कहा कि फौडरविंग रहा नहीं और अब वह कहता है अन्दर आने और देखने को। जोडी को दोनों ही बातें विरोधी-सी लगीं। बक अन्दर की ओर मुड़ पड़ा। उसने मुड़कर जोडी की ओर देखा। उसकी सूनी आँखों ने जोडी को जैसे बेबस कर दिया। उसकी एक एक टाँग बड़े बोझ के साथ उठने लगी और वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। बक के पीछे-पीछे वह घर में चला आया। सभी पुरुष इकट्ठे बैठे थे। चुपचाप, शान्त और भरे-से बैठे उन लोगों में जैसे अनजाने ही एकता समा गई थी। ऐसा लगता था जैसे एक ही काली चट्टान के बहुत-से टुकड़े उनके रूप में बिखर गए थे। पिता ने उसकी ओर सिर घुमाकर उसे देखा, मानो वह एक अजनबी था

और फिर सिर घुमा लिया। लेम और मिलव्हील ने भी उसकी ओर देखा, पर और कोई न हिला। जोडी को लगा जैसे वे सब उसे एक ऐसी दीवार के पार से देख रहे हों जो उसे दूर रखने के लिए ही बनाई गई है। उनमें से कोई भी उसकी नज़र से नज़र न मिलाना चाहता था। बक ने उसका हाथ पकड़ा और उसे बड़े सोने वाले कमरे में ले चला। उसने कुछ कहना चाहा पर उसकी आवाज़ टूट गई। वह रुका और उसने जोडी के कन्धे को दबाया।

बोला, "धीरज रखना।"

फौडरविंग सामने लेटा हुआ था। उसकी आँखें बन्द थीं और वहाँ एक बड़े भारी बिस्तर पर बहुत ही छोटा-सा बनकर ऐसे पड़ा था, जैसे खो गया हो। वह इस समय उससे भी छोटा था, जितना हर रोज़ सोते हुए लगता था। उस पर एक चादर डाली हुई थी, जो कि उसकी ठोड़ी के पास से मोड़ी हुई थी। उसकी बाँहें चादर के बाहर, उसकी छाती पर, मोड़कर रखी हुई थीं। हथेलियाँ बाहर को मुड़ी-सी और भद्दी-सी दीख रही थीं। जोडी यह सब देखकर घबरा उठा। विंग की माता चारपाई के सिरहाने बैठी हुई थी। उसने अपना सफेद अंगरखा मुख पर डाला हुआ था और वह आगे-पीछे झुक रही थी। उसने वह अंगरखा नीचे गिरा दिया और बोली, "मेरा बेटा चला गया। हाय, प्यारा अपंग बेटा!"

उसने फिर वैसे ही अपने को ढक लिया और फिर से अपने दोनों पासों की ओर झुकने लगी। वह बोल रही थी, "परमात्मा सचमुच बहुत निर्दयी है।"

जोडी की इच्छा हुई कि वह वहाँ से भाग जाय। उस तकिये पर पड़ा, हड्डियों का ढाँचा वह चेहरा उसे डरा रहा था। यही फौडरविंग था। पर अब वह कहाँ था? बक उसे बिस्तर के पास तक ले गया और बोला, "यह अब सुन तो न सकेगा, पर फिर भी इससे तुम कुछ बात करो।"

जोडी का गला बोलने को तैयार हुआ, पर कोई शब्द बाहर न आ रहा था। उसे लगा जैसे फौडरविंग एक मोमबत्ती की तरह मोम से ही बना हुआ था। जोडी को अचानक ही उसका वह रूप पहचाना-सा लगा। वह बुदबुदाया, "ओ!" वह चुप्पी उन शब्दों से टूट गई। उसका कण्ठ कुछ

कड़ा पड़ गया, जैसे किसी रस्सी ने उसे जकड़ दिया हो। फौडरविंग की चुप्पी सही न गई। अब उसने समझा कि मौत क्या है? मौत एक चुप्पी है, जो कोई उत्तर नहीं दे सकती। अब विंग उससे कभी भी बोल नहीं सकेगा। वह मुड़ा और उसने अपना सिर बक की छाती में छिपा दिया। दो बड़ी-बड़ी बाँहों ने उसे थाम लिया और वह वैसे ही कुछ क्षण खड़ा रहा।

बक बोला, "मैं जानता था कि तुम्हें यह सब डरावना और घिनौना लगेगा।"

वे कमरे से बाहर निकल आए। पिता ने उसे इशारा किया और वह उनके पास चला गया। बूढ़े आदमी ने उसकी बाँह थपथपाई और अपनी अंगुली सब बैठे हुए लड़कों की ओर घुमाते हुए कहा, "क्या यह अजब बात नहीं है कि इन सब में से एक भी न उठा? चला वह गया जिसे हम किसी भी भाँति जाने नहीं देना चाहते थे और वह बेचारा जिसकी न कोई कीमत थी और जिस पर न किसी का ध्यान था।"

यह कहकर पिता फिर से अपनी आरामकुर्सी पर ही पड़ गया और कुछ सोचने लगा। जोडी के वहाँ रहने से जैसे सभी को दुख हुआ। वह बाहर आँगन में चला गया और घर के पीछे की ओर निकल गया। यहीं पर फौडरविंग के पशु और पक्षी बिना देख-भाल के पड़े थे। एक पाँच महीने का भालू का बच्चा भी वहीं बँधा था, जो इसी बीमारी में उसकी प्रसन्नता के लिए लाया गया था। यह एक चक्कर-सा बनाकर धूल में घूम रहा था। घूमते-घूमते इसकी जंज़ीर खूँटे के चारों ओर लिपटती गई और अन्त में यह खूँटे पर ही जकड़ा-सा रह गया। इसकी पानी पीने की बाल्टी उलटी हुई खाली पड़ी थी। जोडी को देखते ही पीठ के बल लेटकर वह मचलने लगा और आदमी के बच्चे की तरह रोने लगा। उधर गिलहरी खूब उछल-कूद मचा रही थी। उसके पिंजरे में भी न भोजन था, न पानी। कंगारू अपने पिंजरे में सो रहा था। 'प्रीचर' नाम का लाल पक्षी अपनी अच्छी टाँग के बल पर खड़ा हुआ अपने पिंजरे के तले पर चोंचें मार रहा था। पर रैकून का कहीं पता नहीं था।

जोडी को पता था कि फौडरविंग इनका दाना-पानी कहाँ रखता था? उसके भाइयों ने उसे एक बड़ा डिब्बा बना दिया था और वे उसे हमेशा

भर भी देते थे। जोडी ने पहले छोटे-छोटे जन्तुओं को खिलाया और पिलाया। फिर वह भालू के बच्चे के पास बहुत सावधान होकर पहुँचा। यह बहुत ही छोटा और गोल-मटोल था। तब भी जोडी यह निश्चय न कर सका कि कब यह अपने पंजों का प्रयोग करने लगेगा? यह प्यार से गुर्राने लगा और जोडी ने अपना एक हाथ उसकी ओर बढ़ाया। उसने अपने चारों पंजों से उसे जकड़ लिया और बुरी तरह चिपट गया। उसके कन्धों से यह अपनी काली नाक रगड़ने लगा। उसने इसे खोला और इसकी जंज़ीर को सीधा किया, तब वह इसके लिए पानी लाया। यह उसे एकदम पीने लगा और अन्त में थोड़ा-सा पानी शेष रह जाने पर इसने अपने अगले पंजों से, मनुष्य की ही तरह, बर्तन को पकड़ लिया और पानी को मुँह में उँडेल लिया। इस बात को देखकर जोडी हँस पड़ता, यदि उसका दिल उस समय भारी न होता। पर तो भी उसे इस बात से आनन्द मिला कि वह विंग के पालतू जन्तुओं को सुख दे रहा था, जो उन्हें अपने स्वामी से कभी दुबारा न मिल सकेगा। वह दुख में डूबकर अचरज करने लगा कि इन सबका क्या होगा?

वह कुछ खोया-सा उनसे खेलता रहा। फौडरविंग के साथ उनसे खेलने में जो कभी उसे खुशी हुई थी, वह अब नहीं रही थी। थोड़ी देर में रैकट नाम का वही पुराना रैकून जंगल से अपनी अजीब और भद्दी चाल में आया। उसे पहचानते ही उसकी टाँगों पर से होते हुए वह कन्धे पर चढ़ गया और अपनी तीखी तथा खुशी-भरी आवाज़ में चिल्लाने लगा। अपनी पतली-पतली चंचल अँगुलियों से वह उसके बालों से खेलने लगा। ऐसे समय उसे फौडरविंग की याद बहुत अधिक आई और वह वहीं पेट के बल लेटकर बार-बार अपने पाँव धरती पर पटकने लगा।

धीरे-धीरे यह दुख हिरण के छौने के लिए उसकी चाह के रूप में बदल गया। वह उठा और कुछ मूँगफलियाँ रैकून के लिए ले लाया ताकि वह कुछ देर उनमें उलझा रहे। तब वह छौने को ढूँढने निकला। यह एक छोटी-सी झाड़ी के पीछे छिपा हुआ था, जहाँ से यह सब कुछ देख सकता था। जोडी ने सोचा कि इसे प्यास भी लगी होगी। इसलिए भालू के बच्चे के बर्तन में पानी लेकर वह इसके पास आया। छौने ने उसको सूँघा परन्तु पिया नहीं। उसकी इच्छा हुई कि मक्की के दानों के ढेर में से एक-दो मुट्ठी दाने लेकर

इसे भी खिला दे। पर वह यह सोचकर रुक गया कि इसके दाँत यह चबा न सकेंगे और साथ ही ऐसा करना ईमानदारी भी न होगी। वह एक सनावर के वृक्ष के नीचे छौने को लेकर बैठ गया। इस समय उसे जितनी शान्ति अनुभव हुई, वह बक की बाँहों में खड़े होने पर भी नहीं हुई थी। वह सोचने लगा कि फौडरविंग के न रहने की वजह से उसका प्यार इन जन्तुओं में कम हो गया है या इस छौने की वजह से? क्योंकि अब उसे सारा आनन्द इस छौने से ही मिल जाता था।

वह छौने से बोला, "मैं तुम्हें इन सबके और रीछ के बदले में भी नहीं दूँगा।"

उसके हृदय में वफ़ादारी की एक भावना-सी भर गई, क्योंकि अब वह इस छौने के बदले अपने प्यार को उन जन्तुओं के लिए देने को तैयार न था, जिन्हें कभी वह बहुत अधिक चाहता था।

वह शाम लम्बी होती जा रही थी। उसे लगा कि उसका काम अभी भी बाकी हो। यद्यपि फौरेस्टर लोग उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहे थे तब भी उसे यह लगा कि वे चाहते हैं कि वह अभी वहीं रहे। अगर वे चाहते कि वह चला जाय तो बक उसे विदाई अवश्य देता। सूर्य पेड़ों के पीछे उतर गया। उसकी माँ अवश्य गुस्से होगी पर तब भी वह किसी बात की प्रतीक्षा में था। वह स्वयं को बिस्तर में मरे पड़े मोम के समान सफ़ेद पड़े हुए फौडरविंग से बंधा हुआ पाता था। वह उस बन्धन के टूटने की घड़ी की इन्तज़ार कर रहा था। साँझ के धुँधलके में परिवार के सब लोग एक-एक करके कमरे से बाहर निकले और अपने-अपने दैनिक काम निबटाने के लिए चुपचाप चले गए। चिमनी से धुआँ उठने लगा। जलती हुई चीड़ की गन्ध तले जाते हुए माँस की गन्ध से मिलकर एक हो गई थी। बक गायों को पानी पिलाने जा रहा था। जोडी उसके पीछे हो लिया और बोला, "मैंने भालू के बच्चे, गिलहरी और दूसरे सब जन्तुओं को दाना-पानी दे दिया है।"

बक ने एक बछड़ी को एक डंडे से छुआ और बोला, "मुझे दिन में एक बार याद आई थी, पर तभी फिर से भूल गया।"

जोडी बोला, "क्या मैं कुछ सहायता करूँ?"

"हम लोग यह काम करने के लिए काफ़ी हैं। हाँ, तुम माँ के पास जा

सकते हो, जैसा कि फौडरविन की आदत थी। वहाँ आग धधकाना और दूसरे छोटे-मोटे काम करते रहना।"

बड़ा अनमना-सा होकर वह घर में घुस गया। उसने विंग वाले कमरे की ओर निगाह भी न फेरी। यह लगभग बन्द ही था। माँ इस समय भट्टी पर थी। उसकी आँखें लाल पड़ गई थीं। वह उन्हें अपने कपड़े से पोंछने के लिए हर कुछ क्षण बाद रुक जाती थी। उसके उलझे हुए बाल पसीने से गीले थे। पर फिर भी पीछे की ओर सलीके से मुड़े हुए थे, मानो कोई मेहमान आया हो।

वह बोला, "मैं सहायता के लिए आया हूँ।"

वह कड़छी हाथ में लिए हुए मुड़ी और बोली, "मैं यहाँ खड़ी-खड़ी तुम्हारी माँ के विषय में सोच रही थी। जितने मेरे बच्चे ज़िन्दा हैं, इतने तो वह दफ़ना चुकी है।"

वह उदास-सा होकर आग धधकाने लगा। उसकी बेचैनी बढ़ती गई, पर वह जा न सकता था। भोजन उसके अपने परिवार जैसा ही हल्का था। माँ ने उदासी में ही मेज़ लगा दी।

वह बोली, "भई, मैं कॉफ़ी बनाना भूल गई। वे लोग कॉफ़ी ज़रूर पीएँगे।" उसने बर्तन अँगीठी पर रख दिया। वे सब भाई एक-एक करके आए और पीछे की ओर जाकर उन्होंने अपने हाथ-मुँह धोए तथा बालों और दाढ़ियों में कंघी की। वे न आपस में बोल रहे थे, न कोई हँसी-मजाक कर रहे थे और न ही किसी प्रकार का शोर ही कर रहे थे। वे मेज़ के पास इस तरह जमा हुए, जैसे कोई मनुष्य स्वप्न में खोया हुआ हो। उनके पिता सोने के कमरे से बाहर निकले और उसकी ओर अचरज से देखने लगे और पूछ बैठे, "क्या यह विचित्र नहीं है···?"

जोडी माँ के साथ बैठा। माँ ने सबको माँस परोसा और साथ ही दुख में चिल्ला पड़ी, "हे भगवान! मैंने तो उसे हमेशा की भाँति खाने वालों में गिना था।"

बक बोला, "माँ, अब जोडी उसका हिस्सा खाएगा और हो सकता है वह भी मेरे जैसा ही बड़ा हो जाय। क्यों, बच्चे!"

सारा परिवार खाने में जुट गया। थोड़ी देर तक तो वे भूख के

कारण खाते रहे, पर बाद में उनका जी मिचलाने-सा लगा और उन्होंने अपनी थालियाँ सरका दीं। माँ बोल उठी, "आज मैं बर्तनसाफ़ न कर पाऊँगी और न तुममें से कोई करेगा। कल सवेरे तक बर्तनों को ऐसा ही इकट्ठा कर दो।"

जोडी को लगा कि छुटकारा सवेरे ही मिल पाएगा। माँ ने उसकी थाली की ओर देखा और बोली, "बच्चे ! न तुमने बिस्कुट खाए और न दूध पिया। क्या कुछ ख़राबी है ?"

"नहीं, मैंने अपने छौने के लिए इन्हें बचाया है। मैं हमेशा ऐसे ही करता हूँ।"

वह बोली, "हाय ! कितना सीधा बच्चा है !" वह फिर से रोने लगी, "क्या मेरा बेटा तुम्हारे छौने को देखना पसन्द न करता ? वह इसके विषय में खूब बातें करता था। कहता था कि जोडी को तो एक भाई मिल गया है।"

जोडी को लगा कि उसका गला भारी हो आया हो। उसने निगलते हुए कहा, "यही कारण है मेरे यहाँ आने का। मैं उससे अपने इस छौने का नाम रखवाने आया था।"

माँ बोली, "क्यों नहीं ! उसने इसका नाम रखा था। जब उसने अन्तिम बार बातें कीं तो इसे नाम भी दिया था। उसने कहा था—छौने की पूँछ एक झण्डे-जैसी होती है, जैसे वह एक छोटा-सा सफ़ेद झण्डा हो। अगर मेरे पास अपना छौना होता, तो मैं उसे 'फ्लैग' नाम से ही पुकारता।"

जोडी ने दोहराया, "फ्लैग !"

उसे लगा वह फूट पड़ेगा। फौडरविंग उसके बारे में बातें करता रहा और उसने उसके छौने का नाम रखा। उसके उस दुख में अनजाने ही एक खुशी मिल गई। इससे उसे राहत भी मिली पर साथ ही दुख भी असह्य हो गया।

वह बोला, "मुझे जाकर उसे खिलाना चाहिए। मुझे 'फ्लैग' को खिलाना चाहिए।"

वह अपनी कुर्सी से उठकर दूध का प्याला तथा बिस्कुट हाथ में

लिए बाहर चला गया। उसे लगा कि फौडरविंग अब भी जीवित है और उसके पास ही है। बाहर आते ही उसने पुकारा, "फ्लैग ! इधर आओ !"

छौना उसके पास आया। उसे लगा जैसे यह हमेशा से अपना नाम जानता था। उसने दूध में बिस्कुट भिगोए और उसे खिलाए। उसके होंठ कोमल और गीले थे। जोडी वापस कमरे में गया और फ्लैग भी उसके पीछे-पीछे घुस गया। उसने पूछा, "क्या फ्लैग अन्दर आ सकता है ?"

"हाँ, उसे अन्दर ले आओ ! उसका स्वागत है !"

वह कोने में पड़े फौडरविंग के तिपाए स्टूल को लेकर बैठ गया। पिता बोल उठे, "यह उसके लिए खुशी की ही बात होगी कि आज तुम उसके पास रात-भर बैठने के लिए आए हो।"

जोडी ने सोचा, 'यही बात थी, जो उससे उम्मीद की जाती थी।'

पिता फिर बोले, "यह किसी भी रूप में उचित न होता कि तुम्हारे न होने पर उसे हम सवेरे दफ़ना देते। तुम्हारे सिवाय उसका कोई मित्र न था।"

जोडी का ध्यान अपने माता-पिता की ओर गया। उसे उनकी दशा पर चिन्ता हुई, पर इतनी ज़रूरी बात के सामने वहाँ जाना उतना महत्त्व न रखता था। माँ देख-भाल के लिए कमरे के अन्दर गईं। छौना बारी-बारी से कमरे में बैठे सभी के पास घूम गया और, हरेक को सूँघकर, अन्त में फिर जोडी के पास ही बैठ गया। अँधेरा कमरे में भरता गया और उसने दुख को कुछ और गहरा कर दिया। वे दुख की घनी छाया में बैठे थे, जिसे केवल समय की हवा ही हटा सकती थी।

नौ बजे बक उठा और उसने एक मोमबत्ती जलाई। लगभग एक घंटे बाद दरवाज़े पर किसी घुड़सवार के रुकने की आवाज़ आई। यह पैनी था। उसने लग़ाम सीज़र के सिर पर ही रखी और घर में आ गया। पिता ने घर के बुज़ुर्ग के रूप में उठकर उसका स्वागत किया। पैनी ने सबके उदास चेहरों को देखा। बूढ़े पिता ने सोने वाले कमरे के अधखुले दरवाज़े की ओर इशारा किया।

पैनी बोला, "हाय ! बच्चा ?"

पिता ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

पैनी ने फिर पूछा, "गुज़र गया या गुज़र रहा है ?"

"गुज़र गया।"

"मुझे यही डर था। मुझे यह लगा था कि केवल इसी कारण जोडी वहाँ रुका होगा।"

उसने अपना हाथ बूढ़े पिता के कन्धे पर रखा और बोला, "मुझे आपसे सहानुभूति है।"

फिर वह बारी-बारी से प्रत्येक से कुछ बोला। तब उसने लेम की ओर देखकर पूछा, "क्या हाल-चाल है, लेम ?"

लेम हिचकिचाया और बोला, "कहो, तुम्हारे कैसे हाल-चाल हैं ?"

मिलव्हील ने उसके लिए कुर्सी दी।

पैनी ने पूछा, "यह सब कब हुआ ?"

"बस आज सवेरे ही।"

"माँ सवेरे जब नाश्ते के लिए उसे देखने गई।"

"वह दो-एक दिन तो बहुत अधिक बीमार रहा। फिर हम डाक्टर के पास जाने की सोच ही रहे थे, कि वह ठीक होता नज़र आया।"

पैनी पर उत्तरों की जैसे बौछार होने लगी। इन शब्दों ने अन्दर-ही-अन्दर बढ़ता हुआ घाव जैसे धोकर साफ़कर दिया। वह गम्भीर बनकर सुनता रहा और कभी-कभी अपना सिर हिलाता रहा। वह एक छोटी चट्टान के समान था, जिस पर उनका दुख टकरा रहा था। जब वे सब अपनी बात कहकर चुप हो गए तब पैनी ने अपने दुखों की बात कहनी शुरू की। यह उसने केवल इतना याद दिलाने के लिए कहा कि कोई भी मनुष्य दुख से बचा नहीं है। जब सब उसे सहते आए हैं, तो अब भी हरेक सह सकता है। उसने उनके दुख में हिस्सा बँटाया और वे उसके दुख के भागीदार बन गए और इस प्रकार घना दुख बँटकर हल्का हो गया।

बक बोला, "शायद जोडी कुछ देर उसके साथ अकेला बैठना चाहेगा।"

जोडी कमरे में घुसते ही डर-सा गया, क्योंकि उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया था। उसे लगा कि सोने में कोई काली-सी चीज़ बैठी है। यह चीज़ उसे उस रात भी जंगल में फैलती हुई दिखाई दी थी, जिस रात उसके पिता को नाग ने डसा था। यह मौत थी। उसने पूछा, "अगर मैं 'पलैग' को अन्दर

ले लूं तो ठीक होगा ?"

उन्होंने इस बात को पसन्द किया और छौना उसके पास पहुँचा दिया गया। वह कुर्सी पर बैठ गया, जो माता के बैठने के कारण अब तक गर्म थी। उसने अपनी गोदी में हाथ रख लिए। उसका ध्यान उस तकिए पर पड़े चेहरे की ओर खिच गया। बिस्तरे के सिरहाने की ओर पड़ी एक मेज़ पर एक मोमबत्ती जल रही थी। उसकी लपट के हिलते ही ऐसा लगता जैसे फौडरविंग की पलकें फड़की हों। एक हलका-सा ठण्डी हवा का झोंका सारे कमरे को कँपा गया। चादर कुछ इस तरह उठी मानो फौडरविंग साँस ले रहा है। कुछ देर बाद यह डर खतम होगया औरअब वह आराम से कुर्सी पर बैठ गया। पीछे की ओर झुकने पर उसे फौडरविंग का चेहरा रोज़ जैसा ही लगने लगा; पर फिर भी यह उस चेहरे से भिन्न था, जिसे वह रोज़ देखता था। मोमबत्ती की रोशनी में पड़ा यह चेहरा जैसे गालों से रहित था। उसे लगा जैसे फौडरविंग बाहर रैकून के साथ खेल रहा हो; और जैसे वह कुछ ही देर में कमरे में अपनी लड़खड़ाती चाल में घुस आएगा और तब जोडी उसकी आवाज़ सुन सकेगा। उसकी निगाह एक-दूसरे पर रखे हुए उन मुड़े और टेढ़े हाथों पर गई। उनकी शान्ति और जड़ता उसे अजीब-सी लगी। वह मन-ही-मन में चीख पड़ा।

काँपती हुई मोमबत्ती जैसे उस पर जादू का असर करने लगी। उसकी आँखों में धुँधलापन घिरने लगा। फिर भी उसने अपने को जगाए रखने की कोशिश की। पर कुछ ही देर बाद उसकी आँखें खुली न रह सकीं। मौत और चुप्पी के साथ उसकी नींद एक हो गई थी।

वह सुबह की पहली किरणों के साथ उठा। उसका दिल भारी था। हथौड़े चलने की आवाज़ बाहर से आ रही थी। उसे किसी ने बिस्तर के पाँयते पर सुला दिया था। वह एकदम ही उठ बैठा। फौडरविंग अपने बिस्तर पर नहीं था। वहाँ से वह बड़े कमरे में लाया जा चुका था। जोडी ने कमरा खाली देखा और बाहर आ गया। पैनी चीड़ के ताज़ा बनाए एक सन्दूक पर ढँकना ठोंक रहा था। जोडी से किसी ने बात न की। पैनी ने अन्तिम कील भी ठोंक दी और पूछा, "सब तैयार है ?"

उन सबने सिर हिलाया। बक, मिलव्हील और लेम आए। बक बोला,

"मैं इसे अकेला ही उठा लूँगा।" उसने उस सन्दूक को अपने कन्धे पर रख लिया। पिता और गैबी वहाँ नहीं थे। बक दक्षिण की हरियाली की ओर चल पड़ा। उसके पीछे-पीछे माँ चली, मिलव्हील ने माँ की बाँह थामी हुई थी। बाकी लोग पीछे-पीछे चलने लगे। वे सब धीमे-धीमे उस हरे मैदान में पहुँचे। जोडी को याद आया कि यहीं एक सनावर के पेड़ पर अंगूर की बेल का एक झूला फौडरविंग ने बनाया हुआ था। उसने देखा कि बूढ़े पिता इस झूले के पास ही खड़े हैं। उनके हाथ में बेलचे पकड़े हुए थे। धरती में एक गढ़ा खोदा गया था। पास की खुदी पड़ी मिट्टी लकड़ी की खाद मिली होने से काली पड़ गई थी। वह हरा मैदान सूर्य की चमकीली किरणों के बिछ जाने से जगमगा उठा था। बक ने कफ़न उठाया और उसे गढ़े में रख दिया। वह पीछे हट आया। सभी फौरेस्टर लोग हिचकिचाए। पैनी बोला, "पहले पिता!"

पिता ने अपना बेलचा उठाया और सन्दूक पर मिट्टी डाली। तब उसने यह बेलचा बक को पकड़ा दिया। बक ने भी कुछ बेलचे मिट्टी फेंकी। तब बारी-बारी से सब भाइयों ने वैसा ही किया। थोड़ी-सी मिट्टी बच गई थी। सहमे हुए-से जोडी ने अपने हाथ में बेलचा लेकर चुपचाप वह मिट्टी उस ढेर पर ही डाल दी। सभी लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

पिता बोले, "पैनी, तुम्हारा पालन ईसाई ढंग पर हुआ है। अच्छा होगा यदि तुम कुछ शब्द कहो।"

पैनी कब्र तक गया अपनी आँखें बन्द करके और सूर्य की ओर मुँह करके खड़ा हुआ। फौरेस्टर लोगों ने अपने सिर झुका लिए।

"हे सर्वशक्तिमान भगवान्! हम मूर्ख और नाशवान मनुष्य क्या जानें कि क्या ठीक है और क्या गलत? अगर हम लोगों के वश में होता तो ऐसे गरीब बच्चे को अपंग हालत में हम जन्म न देते और न उसके मन को दुख देते। हम तो उसे भी उसके और भाइयों की तरह सीधा और ऊँचा तथा जीने और काम करने लायक बना देते। पर भगवान् तुम्हारी लीला कुछ न्यारी ही है। तुमने उसे जंगली जन्तुओं के साथ खेलने के लायक बना दिया। उसे तुमने एक खास प्रकार की बुद्धि दी। वह जानकार और सभ्य था। पक्षी उसके पास आते थे। जानवर उसके पास बेरोक-टोक घूमते

थे। और वह बनबिलाव तक को अपने हाथ में प्यार से पकड़ सकता था।

"अब तुमने यह ठीक समझा कि उसे ऐसे लोक में ले जाओ कि जहाँ मन और शरीर का टेढ़ा होना भी कोई अर्थ नहीं रखता। हमें इस बात की प्रसन्नता है कि तुमने उसके मुड़े-तुड़े अंगों से निकालकर उसे सीधा कर दिया है। हमें यह सोचकर भी खुशी है कि वह अब हमारे चारों ओर हमारी ही तरह जैसे घूम-फिर सकेगा। पर भगवान्, इतना और करना कि उसे कुछ लाल चिड़िया, एक गिलहरी, एक रैकून और एक कंगारू आदि अगर हो सके तो साथ रखने के लिए दे देना। यही चीज़ें उसे यहाँ प्यारी थीं। हम यहाँ अपने को अकेला अनुभव करते हैं। पर हम जानते हैं कि अगर उसे यह चीज़ें वहाँ मिल गईं तो वह अपने को अकेला अनुभव नहीं करेगा। शायद इन कुछ जन्तुओं को स्वर्ग में ले जाने की प्रार्थना अधिक न होगी। तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। आमीन !"

बाकी सबने भी 'आमीन' कहा। सबके चेहरे पर पसीना आया हुआ था। वे सब बारी-बारी से पैनी के पास आए और उसका हाथ छुआ। रैकून दूर से दौड़ता हुआ आया और नई पलटायी हुई मिट्टी के ऊपर दौड़ने लगा। वह चिल्लाया और बक ने इसे अपने कन्धे पर बैठा लिया। फौरेस्टर लोग मुड़े और अपने घर की ओर चल पड़े। उन्होंने सीज़र पर ज़ीन कस दी। पैनी चढ़ा और उसने जोडी को पीछे बिठा लिया। जोडी ने छौने को आवाज़ दी और वह झाड़ियों में से निकलकर आ गया। बक घर के पीछे से आया। उसके हाथ में एक छोटा-सा तारों से बना पिंजरा था। इसमें लंगड़ा लाल पक्षी—प्रीचर—था। वह बोला, "मैं जानता हूँ कि तुम्हारी माँ तुम्हें कोई भी जन्तु न रखने देंगी, पर यह बेचारा पक्षी रोटी के एक छोटे-से टुकड़े से ही पेटभर लेता है। इसके बहाने तुम उसे याद कर लोगे।"

"धन्यवाद ! अच्छा, विदा !"

"विदा।"

सीज़र घर की तरफ़ दौड़ने लगा। वे कुछ न बोले। धीरे-धीरे घोड़े ने चाल धीमी कर दी। पर पैनी ने उसे कुछ न कहा। दिन काफ़ी चढ़ आया था। उस छोटे-से पिंजरे को लटकाते हुए लाने से जोडी की बाँह दुखने लगी थी। अपने खेत सामने ही दीखने लगे थे। उसकी माँ घोड़े की टाप

सुनकर दरवाज़े पर आ गई थी।

वह बोली, "डराने के लिए एक ही काफ़ी था। तुम तो दोनों वहीं रुक गए।"

पैनी उतर आया और जोडी भी नीचे खिसक आया। पैनी बोला, "धीरज धरो! हमारा एक फर्ज़ था। बेचारा फौडरविंग मर गया था और हमें उसे दफ़नाने में सहायता करनी थी।"

वह बोली, "अच्छा, पर यह बात लड़ाकू लेम के साथ होनी चाहिए थी।"

पैनी ने घोड़े को चरने के लिए छोड़ दिया और घर में लौट आया। नाश्ता तैयार था, पर अब तक ठण्डा हो चुका था।

वह बोला, "चिन्ता मत करो। केवल कॉफ़ी गर्म कर दो।"

उसने खोये-खोये-से नाश्ता खाया। बोला, "मैंने किसी परिवार को कोई भी दुःख इतनी गहराई के साथ लेते नहीं देखा।"

वह बोली, "मुझे मत सुनाओ कि उन उजड्ड लोगों में से किसी ने ऐसा किया।"

पैनी बोला, "ओरी! एक दिन आएगा जब तुम यह जान सकोगी कि मनुष्य का दिल सदा एक-सा होता है। दुख हर जगह एक-सी चोट करता है। फर्क़ यही है कि अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग निशान छोड़ता है। मुझे लगता है कि तुम पर इन दुखों ने असर नहीं छोड़ा। हाँ! तुम्हारी जीभ तीखी कर दी है।"

वह एकदम ही बैठ गई और मरी-सी बोली, "ऐसा लगता है कि केवल कठोर होकर ही मैं इन सब दुखों को सह सकी हूँ।"

पैनी अपना नाश्ता छोड़कर उठ खड़ा हुआ और उसके पास जाकर बालों को सहलाता हुआ बोला, "मैं समझता हूँ! थोड़ा-सा दूसरों के लिए भी उदार बनो।"

18

सावन के महीने में गर्मी बहुत बढ़ गई थी। परन्तु आराम का महीना भी यही था। कुछ विशेष काम करने को नहीं रह गया था। जो था भी, उसके लिए जल्दी मचाने की ज़रूरत न थी। बारिश हो चुकी थी और मक्की अब पक रही थी। धीरे-धीरे वह सूखने लगी थी और अब इसे काटकर ठीक किया जा सकेगा। पैनी को लगा कि इस बार उसकी फ़सल बहुत अच्छी होगी और कम-से-कम एक एकड़ में छः मन से कम अनाज़ न होगा। आलू की लताएँ भी खूब बढ़ रही थीं। मुर्गी के चूज़ों आदि के लिए भी दाना काफ़ी हो गया था। चूज़ों की ही एक और खूराक सूरजमुखी के रूप में बाढ़ पर काफी मात्रा में उग आई थी। मटर भी खूब उग चुके थे। माँस के साथ प्रतिदिन के भोजन में वे ही रेशेदार वनस्पति के रूप में बरते जाते थे। मटरों का भूसा भी सर्दियों-भर चारे आदि का काम देगा। पिंडार अधिक नहीं हो पाई थी, पर पाँवकटे भालू द्वारा बेट्सी सूअरी के मारे जाने के बाद से और कोई सूअरी तो थी नहीं, जिसके लिए पिंडार की अधिक आवश्यकता हो। उनके

सूअर एक दिन चुपचाप ही लौट आए थे और उनके साथ ही थी एक छोटी सूअरी। उसके निशान फौरेस्टरों के निशानों की जगह बैक्स्टरों जैसे कर दिये गए थे। पैनी ने इसे सुलह की भेंट के रूप में स्वीकार कर लिया था।

पौंडा गन्ना काफी ऊँचा खड़ा हो चुका था। बैक्स्टरों का ध्यान पतझड़ और पाले की ओर लगा हुआ था। उसी मौसम में आलू खोदे जाएँगे, सूअर काटे जाएँगे, मक्का का आटा पीसा जाएगा और गन्ने को पीड़कर उसकी राब बना ली जाएगी। इस प्रकार अब की कमी तब अधिकता में बदल जाएगी। इस ऋतु में भी यों तो खाने को बहुत कुछ था, पर सामान की किस्में दो-चार ही थीं। साथ ही बहुत ऊँची और काफी खूराक भी न थी। वे अपने दिन एक-एक करके बिता रहे थे। आटा और माँस कम पड़ गए थे। पैनी कभी- कभी हिरण या जलमुर्गी आदि का शिकार कर लाता था। उसने एक रात एक मोटे-ताज़े कंगारू को जाल में फँसा लिया था। साथ ही उसने इसके माँस के साथ भूनने के लिए कुछ ताज़े आलू खोद लिए थे। आलू अभी छोटे व अधपके थे, इसीलिए यह फिजूलखर्ची गिनी गई।

जंगल और खेतों में धूप बहुत तेज़ पड़नी शुरू हो गई थी। श्रीमती बैक्स्टर के भारी शरीर के लिए यह गर्मी असह्य थी। पैनी और जोडी पतले थे। उन्हें यह गर्मी केवल अधिक काम के समय ही रुकावट डालती थी। सुबह वे दोनों मिलकर काम निबटाते थे। गाय दुहना, घोड़े को दाना-पानी देना, लकड़ी चीरना, सोते से पानी लाना आदि काम निबटाकर वे और छोटे-मोटे काम निबटाकर साँझ तक निश्चिन्त हो जाते थे। श्रीमती बैक्स्टर दोपहर को गर्म खाना बनाकर आग को राख से ढँक देती थी। शाम का खाना दोपहर के इस खाने में से बचे-खुचे सामान से ही निबटाया जाता था।

जोडी को फौडरविंग के न रहने का सदा ही शोक रहता था। विंग अब भी उसके मन में सदा ही साथ रहता था और उससे वह मन-ही-मन बातचीत भी कर लेता था। यद्यपि सचाई में ऐसा होना सम्भव न था। इसी बीच फ्लैग काफी बढ़ गया था। जोडी को इस बात की खुशी थी। जोडी को लगता था कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ इसके शरीर की चित्तियाँ मिटती जा रही थीं, पर पैनी को उनमें कोई अन्तर नहीं दिखाई देता था। इसमें सन्देह नहीं कि यह चतुर होता जा रहा था। पैनी का कहना था कि

जंगल के सब प्राणियों में से भालू का दिमाग़ सबसे अधिक तेज़ होता है। हिरण का स्थान दूसरे पर आता है।

माँ कहती, "यह तो बहुत ही अधिक चुस्त है।" तभी पैनी काट बैठता, "क्यों तुम इसे गाली देती रहती हो," और जोडी की ओर वह पलक झपका देता।

फ्लैग अब दरवाज़े की निचली चिटखनी खोलकर अन्दर आना सीख गया था। यदि वह खुला रह जाता तो दिन या रात में किसी भी समय अन्दर आ जाता था। जोडी के बिस्तर में से पंखों भरा सिरहाना निकालकर वह उसे सारे कमरे में तब तक पटकता फिरता, जब तक वह फटकर बिखर न जाता। उसके पंख बिखरकर कोने-कोने में भर जाते और बिस्कुटों से बनी खीर में पड़ जाते। उसने कुत्तों से भी खेलना शुरू कर दिया था। जब भी वह जूलिया की ओर अपने पंजे उठाकर बढ़ता, वह शान से अपनी पूँछ-भर हिलाकर रह जाती। परन्तु रिप पूरा मज़ा लेता था। वह गुर्राता था, दौड़ता और उछलता था और हमले का दिखावा करता था। उधर फ्लैग भी अपनी एड़ियाँ पटकता, उछलता, पूँछ खड़ी करता और अपना सिर हिलाता। अन्त में वह सामने की बाड़ कूद जाता और सड़क पर भागने लगता। उसे जोडी से खेलने में सबसे अधिक मजा आता था। वे आपस में उलझते, सिर टकराते और तब तक साथ-साथ दौड़ते थे, जब तक कि जोडी की माँ ही न टोक देती कि जोडी एक काले साँप की तरह पतला होता जा रहा है।

सावन के दिनों में एक दिन जोडी फ्लैग को लेकर शाम के भोजन के लिए पानी भरने सोते तक गया। रास्ते में चमकीले फूल खिल रहे थे। फूल अनेक प्रकार के और अनेक रंगों के थे। फ्रांसीसी शहतूत भी पतली-पतली टहनियों पर पकने लगे थे। उनका रंग लाल-काला-सा था। उनके गुच्छे खूब लदे हुए थे, मानो नरगिस के आस-पास साँप के अण्डे भरे हुए हों। तितलियाँ सुगन्धित गुलाबी कलियों पर आकर बैठतीं और उनके खिलने की प्रतीक्षा में अपने मुख खोलती-बन्द करती बैठी रहतीं। बटेर की मधुर कूक मटर के खेतों से साफ और लय में उठ रही थी। सूर्य कुछ जल्दी ही छिपने लगा था। बाड़े के एक कोने में सूर्य की केसरिया रंग की किरणें झुके हुए सनावरों के नीचे से होती हुई स्पेनी काई पर पड़

कर उसे भी चमकीली बना रही थीं। इसी कोने से स्पेनी लोगों द्वारा अपनाया गया रास्ता मुड़ जाता था।

जोडी का हाथ छौने के शरीर पर घूमते-घूमते रुक गया। उसके सामने से ही लोहे की टोपी पहने एक घुड़सवार उसी काई के बीच से होता हुआ गुज़र रहा था। जोडी ने ज्यों ही एक क़दम आगे बढ़ाया वह छिप गया, जैसे वह खुद काई से अधिक मोटा न हो। जोडी ने ज्यों ही क़दम पीछे हटाया वह फिर से सामने दीखने लगा। जोडी ने एक लम्बी साँस ली। उसे लगा फौडरविंग इसी स्पेनी घुड़सवार की चर्चा करता था। वह नहीं जान पाया कि इससे उसे डर लगा या नहीं? उसकी इच्छा हुई कि वह घर भाग चले और यह निश्चय कर ले कि उसने सच ही एक भूत को देखा है। परन्तु उसके अन्दर पिता के खून ने जोश मारा और वह ज़बरदस्ती उस शक्ल दीखने वाली जगह तक बढ़ता चला गया। एक ही क्षण में सचाई सामने आ गई। काई और शाखों की उलझन ने उस तरह का धोखा खड़ा कर दिया था। अब वह घोड़े, घुड़सवार और लोहे के टोप को अलग-अलग पहचान सकता था। उसके हृदय को शान्ति हुई, किन्तु साथ ही उसे निराशा भी हुई। अच्छा था उसका यह भ्रम न टूटता और वह इसी विश्वास के साथ घर जाता।

वह उस सोते के किनारे तक बढ़ता रहा। मधुर सुगन्धित गुलाब अब भी खिला हुआ था। उसकी सुगन्ध उस सोते पर चारों ओर छा रही थी। इस समय उसे फौडरविंग के साथ की याद जगी। अब वह यह कभी न जान पाएगा कि फौडरविंग इसी स्पेनी घुड़सवार की बात करता था या किसी और की? हो सकता है वह इससे भी अधिक रहस्य वाला और इससे भी अधिक सच हो। उसने अपनी बाल्टियाँ नीचे रख दीं और उस पतली पगडंडी की ओर बढ़ा, जिसे पैनी ने नीचे उतरने के लिए दोनों तटों के बीच में से नीचे की ओर काटा था। यह पगडंडी उसके जन्म से भी बहुत पहले काटी गई थी।

वह अपने उद्देश्य को भूल गया और वहीं ढलान की ओर एक बड़े छायादार वृक्ष के नीचे लेट गया। फ्लैग भी सूँघ-साँघकर उसके पास ही लेट गया। वह वहाँ से सारे सोते को अच्छी तरह देख सकता था। ऊपरी किनारों पर सूर्य की किरणें पड़कर उन्हें ऐसे चमका रही थीं, मानो चारों

ओर कोई आग जल रही हो। उसके आने से गिलहरियाँ कुछ देर के लिए चुप हो गई थीं। अब उन्होंने फिर से शोर और चहल-पहल शुरू कर दिए। पेड़ के ऊपर उनकी यह चहलक़दमी दिन के ढलते समय वैसी ही थी, जैसी दिन उगने के समय। ताड़ के फलों पर टकराकर वे काफ़ी ऊँची आवाज़ पैदा कर रही थीं। परन्तु, सनावर के पेड़ों पर किसी प्रकार का शोर न था। गूलर और अखरोटों पर भी उनकी कोई आवाज़ न थी। कभी-कभी ऊपर-नीचे दौड़ने पर या किसी शाखा के किनारे पर लटककर दूसरे वृक्ष पर चढ़ जाने पर ये दिखाई देती थीं या इनकी आवाज़ सुनाई देती थी। शाखों पर बैठे पक्षी मधुर और तेज़ आवाज़ें कर रहे थे। बहुत दूर एक लाल चिड़िया बहुत मीठे स्वर में गाती आ रही थी। नज़दीक आती हुई वह अन्त में उनकी पीने वाले पानी की नाली में पानी पीने पहुँच गई। इसी समय कुछ कबूतरों का एक झुण्ड भी पानी पीने नीचे उतरा और थोड़ी ही देर बाद चीड़ों की ओर फिर उड़ गया। उनके डैनों से ऐसी आवाज़ हुई, मानो उनके पंख हवा को चीरने के लिए तेज़ चाकू हों।

जोडी की निगाह में नीचे की ओर एक हलचल-सी आई। एक मादा रैकून अपने दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ चूने के पत्थरों वाली नाली तक आई। उसने सारी नालियों में मछलियाँ ढूँढीं। पीने वाले पानी की नाली से उसने यह टोह आरम्भ की। जोडी को देरी का बहाना मिल गया। अब उसे पानी के साफ़ होने और बैठने तक इन्तज़ार करनी पड़ेगी। मादा रैकून को उन नालियों में अपने लायक कोई शिकार न मिला। उन बच्चों में से एक पशुओं की नाली के पास तक आकर उसमें झाँकने लगा। माँ ने उसे तुरन्त ही खींच लिया। वह ढलान के नीचे की ओर उतर गई और नीचे के ऊँचे पेड़ों में ही खो गई। तभी चेरोकी के तनों के बीच से उसका काला चेहरा फिर दिखाई दिया। उसके पीछे से दोनों बच्चे भी झाँक रहे थे। उनकी शक्ल माँ पर थी। उनकी पूँछें बड़े निश्चित रूप में हिल रही थीं।

वह नीचे के जोहड़ में पहुँचकर मछलियों के लिए उसे गाहने लगी। उसकी लम्बी अँगुलियाँ गिरी हुई टहनियों और शाखों को हटाती जाती थीं। वह एक केकड़े-जैसी मछली को पकड़ने के लिए एक किनारे पर लेट गई। एक मेढक उछला और इसने उछलकर उसे पकड़ा और फिर किनारे

पर आ गई। अपनी जाँघों के बल बैठकर उसने इसे एक-दो झटके दिए और तब अपने दाँत इसमें वैसे ही गड़ा दिए, जैसे कुत्ता चूहे के साथ करता है। तब इसे उसने अपने बच्चों के सामने डाल दिया। वे इस पर गुर्राते-मचलते टूट पड़े और इसकी हड्डियों तक को उन्होंने तोड़ डाला और इसे दो हिस्सों में बाँट लिया। वह कुछ क्षण तक यह सब देखती रही और फिर जोहड़ की ओर मुड़ गई। उसकी झबरी पूँछ ऊपर की ओर, पानी की सतह के ऊपर, उठी हुई थी। दोनों छोटे बच्चे भी उसके पीछे-पीछे पानी में घुस गए। उनकी नाक पानी के ऊपर दिखाई दे रही थी। उसने पीछे मुड़कर उन्हें देखा और उन्हें किनारे की ज़मीन पर फिर से घसीट लाई। उसने उन्हें एक-एक करके उठाया और मनुष्य की तरह ही उनके पेट आदि को अपने हाथ से पोंछा। जोडी यह देखकर खुशी से इतना उत्तेजित हुआ कि उसे चुप रहने के लिए अपने मुँह पर हथेलियाँ रखनी पड़ीं। वह उसे बहुत देर तक देखता रहा। वह मछलियों का शिकार करती और बच्चों को खिलाती। तब वह ढलान पर चढ़ती हुई ऊपर तक आई और किनारों पर होकर परे निकल गई। बच्चे उसके पीछे-पीछे हँसते-खेलते साथ-साथ बढ़ रहे थे।

सोते पर अब छाया आ चुकी थी। जोडी को लगा, जैसे फौडरविंग अभी-अभी इन रैकूनों के साथ ही गया हो। उसे जंगली जन्तुओं के चरने और खेलने की जगह पर सदा ही विंग के होने का आभास होता था। किसी न किसी रूप में वह ऐसी जगह रहता ही था। अब उसके लिए विंग भी पेड़ों के समान बन चुका था। पेड़ों के समान ही वह भी अब धरती का ही अंग था और उसकी टेढ़ी-मेढ़ी जड़ें भी मिट्टी में गड़ी थीं। वह रंग बदलते बादलों, डूबते सूर्य और उगते चन्द्रमा जैसा था। उसकी आत्मा का कुछ भाग जैसे उसके मुड़े-तुड़े शरीर से सदा ही अलग रहा था। यही हिस्सा हवा के समान आता-जाता रहता था। जोडी को अनुभव हुआ जैसे अब वह कभी अपने मित्र की कमी अनुभव न करेगा। अब वह उसके गुज़र जाने को सह सकता था।

वह पीने वाले पानी की नाली तक गया और उसने ढोने लायक पानी से बाल्टियों को भर लिया। भरकर वह घर की ओर चल पड़ा। घर आकर

खाने की मेज़ पर बैठकर उसने रैकूनों की बात सुनाई। उसकी माँ भी बच्चों को पोंछे जाने की बात बड़े मज़े से सुनने लगी। किसी ने उससे देरी के लिए कुछ न कहा। भोजन के बाद वह अपने पिता के पास बैठा उल्लुओं और मेढकों की आवाज़ सुनता रहा। कहीं दूर पर एक बनबिलाव चिल्लाया और उससे भी दूर से लोमड़ियों की आवाज़ आई। एक तरफ से एक भेड़िए की आवाज आई तो दूसरी ओर से उसका उत्तर भी दिया गया। उसने पिता को अपना दिन का अनुभव समझाना चाहा। पैनी गम्भीरता से सुनता रहा और सिर हिलाता रहा। पर जोडी अपनी भावनाओं का पूरा-पूरा समझाने के लिए न पूरे शब्द पा सका और न अपनी बात पूरी-पूरी समझा सका।

19

भादों का तीसरा हफ्ता पुरानी हड्डियों की तरह एकदम खुश्क था। केवल घास ही उगी हुई थी। गर्मी में एक तनाव-सा था। कुत्ते अधिक चिड़-चिड़े हो गए थे। छिपने के दिन समाप्त होने से साँप खुले में आने लगे थे। उनकी केंचुली और अन्धापन छूट चुके थे। पैनी ने अंगूरों की बेलों के नीचे एक सात फुट लम्बा फनियर साँप मारा था। उसने कॉफ़ी की पौध को हिलते हुए देखा, जैसे कोई मगरमच्छ उनके बीच से निकल रहा हो। उसने उसका पीछा किया। उसने बताया कि साँप एक बटेर का पीछा कर रहा था। सर्दियों की गहरी नींद में जाने से पहले वह अपना लम्बा पेट भर लेना चाहता था। उसने इस साँप की खाल को पहले तो धुआँघर की दीवार पर लटकाकर सुखाया और बाद में सामने के कमरे में अँगीठी के पास ही दीवार पर टाँग दिया।

वह बोला, "मैं इसे शौक से देखता हूँ। मुझे सन्तोष है कि एक नीच तो ऐसा है, जो अब किसी को हानि न पहुँचा सकेगा।"

सारे मौसम में कभी इतनी गर्मी नहीं पड़ी थी। फिर भी कुछ अन्तर था। मानो वनस्पतियों ने मौसम बदलने की बात भाँप ली हो। जयन्तिया, गेंदा आदि इस खुश्की में भी फूल रहे थे। झाड़ी के बेर पक चुके थे और पक्षी उन्हें खाने लगे थे। पैनी ने बताया कि इन दिनों सभी जन्तुओं के लिए भोजन पाना कठिन हो गया है। बेरी की सभी किस्में बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी थीं। जंगली अलूचों और अंजीरों आदि पर भी बहुत दिन से एक भी फल पक्षियों के लिए न बचा था। जंगली अंगूरों की बेलों को रैकून और लोमड़ियों ने कभी का साफ़ कर दिया था।

सर्दियों के ताड़, माजू आदि फल अभी पके नहीं थे। चीड़ों के चिलगोजे, सनावरों के बीज और छोटी खजूरें आदि पहला पाला पड़ने तक तैयार होंगे। हिरण कोमल व हरी उपज को चर रहे थे। उनका यह भोजन तेजपात की कलियों, मेंहदी के मुलायम पत्तों, कँटीली घास आदि मैदानी और जोहड़ की उपज पर आधारित था। ऐसे भोजन के कारण उन्हें नीचे और गीले इलाकों में रहना पड़ता था। ये इलाके दलदलों, मैदानों या खाड़ियों के आस-पास के थे। बैक्स्टरों की ज़मीन की ओर उनका आना कम ही होता था। दल-दले स्थानों पर उनका शिकार अधिक कठिन होता था। महीने-भर में पैनी केवल एक ही साल-भर के बारहसिंगे को मार सका था। इस बच्चे के अभी सींग भी निकलने शुरू न हुए थे। छूने पर वे खुरदरी ऊन की तरह मालूम होते थे। जहाँ-जहाँ से उसने उन्हें पेड़ों से रगड़ा था, वहीं से वे छिले थे। माँ ने उन्हें उबालकर बनाया था। उसका कहना था कि ये हड्डी के अन्दरूनी हिस्से की भाँति कोमल हैं। पैनी और जोडी को उनमें कोई स्वाद न आया। उन्हें उन सींगों के नीचे की बड़ी-बड़ी आँखों का स्मरण हो आता था।

रीछ भी नीची सतहों पर चले गए थे। वे छोटे खजूरों की कलियाँ खा रहे थे। स्वीट वाटर स्प्रिंग के पास की झाड़ियाँ और हरियाली बता रही थीं जैसे उधर से कोई बवण्डर गुज़रा हो। नीची खजूरनुमा झाड़ियों के निचले पत्ते तार-तार हो गए थे। ज़मीन के अन्दर तक के पत्ते खा लिये गए थे। कुछ ऊँचे ताड़ के पेड़ भी ऐसे लगते थे, जैसे उन पर बिजली गिरी। इन पर कोई चुस्त और भूखा रीछ ऊपर तक चढ़कर इनकी कलियों को चीर गया

था। पैनी ने बताया कि छोटी ताड़नुमा झाड़ियाँ तो सूख जाएँगी। वे अन्य प्राणियों की तरह ही थीं। जब उनका कली-रूपी दिल ही निकल गया, तब वे कैसे जीवित रह सकती थीं? एक नीचा ताड़ केवल बाहर ही बाहर से छीला गया था। उसका 'दिल' अभी बचा हुआ था। पैनी ने अपना चाकू निकाला ताकि उसे घर पकाने के लिए ले चले। उसका परिवार इस प्रकार की दलदली चीज़ों को रीछों के ही समान पसन्द करता था।

पैनी ने जोडी से कहा, "पर जब इनके पास ये ताड़ भी खाने के लिए न बचेंगे, तब ये सूअरों के बच्चों को खाने निकलेंगे। अब तुम किसी भी रात रीछों के यहाँ आने की उम्मीद कर सकते हो। अच्छा हो, फ्लैग को तुम रात को अपने पास ही सुलाया करो। यदि तुम्हारी माँ ने इस बात पर झगड़ा किया, तो मैं उसे समझा दूँगा।"

"क्या फ्लैग भालू के लिहाज़ से काफी बड़ा नहीं हो गया?"

"उसके लिए कोई भी जन्तु, जो उसकी पकड़ में आ सकता है, बड़ा नहीं है। एक बार मैदान में एक रीछ ने अपने से भी बड़े मेरे एक बैल को मार डाला। उसके लिए हफ्ते-भर की खूराक हो गई। जब तक बैल का पेट ही न बचा रह गया, वह रोज आता रहा। अन्त में वह उसे भी खा गया।"

जोडी की माँ की शिकायत भी वर्षा की कमी के बारे में थी। बारिश के दिनों में भरे जाने वाले पीपे खाली पड़े थे। उसे सारी धुलाई के लिए सोते पर ही जाना पड़ता था। कपड़े भी मैले से लगने लगे थे। वह बोली, "बादलों वाले दिन कपड़े आसानी से धुलते हैं। मेरी माँ अक्सर कहा करती थी—'नरम मौसम और मुलायम कपड़े।'"

दूध में मिलाकर उबालने और जमाने के लिए भी उसे वर्षा का पानी चाहिए था। सोते के पानी से दूध खट्टा हो जाता था, पर जमता नहीं था। गर्मी के मौसम में वह वर्षा की कुछ थोड़ी-सी बूँदों से ही काम चला लेती थी। हर वर्षा के अवसर पर वह जोडी को अखरोट के पेड़ के नीचे पानी जमा करने को भेजती थी, क्योंकि उसके पत्तों से गिरने वाला पानी इस काम के लिए सबसे अच्छा माना जाता था।

सारे परिवार की निगाह इस महीने में चाँद के चारों ओर पड़ने वाले घेरे की ओर लगी थी। ज्योंही पहला घेरा दिखाई दिया, पैनी ने पुत्र और

पत्नी को बुलाकर दिखाया। चाँदी का-सा यह घेरा एकदम सीधा था। वह बहुत खुश था।

उसने बताया, "अब जल्दी ही वर्षा होगी। अगर चाँद दूसरी तरह होता, तो हमें पानी बिलकुल न मिलता। पर, देखो! वर्षा हर जगह होगी; जहाँ भी कपड़े टाँगों, भगवान् धो देगा।"

उसकी भविष्यवाणी प्रायः सच रहती थी। तीन दिन बाद हर तरह से वर्षा की आशा हो गई। किसी शिकार के लिए जूनियर स्प्रिंग के पास से गुज़रते हुए पैनी और जोडी ने मगरमच्छों की आवाज़ सुनी। चमगादड़ दिन में ही उड़ने लगे। रातों में मेढकों की टर-टर बे-रोकटोक चलने लगी। मुर्गे भरी दुपहरी में भी बाँग देने लगे। छोटी-छोटी चिड़ियाँ और कुंज-पक्षी समूहों में आने-जाने लगे। घनी दोपहरी में भी फनियर नाग खेतों को पार-कर छिपने लगे। चौथे दिन सफेद समुद्री पक्षियों का एक झुण्ड भी उधर से उड़ता हुआ गुज़रा। पैनी ने अपने हाथ से ढँककर अपनी आँखों को ऊपर उठाया और उन्हें बेचैनी से देखकर बोला, "ये पक्षी फ्लोरिडा के इस इलाके पर से कभी नहीं गुज़रते। मुझे इनका आना अच्छा नहीं लगा। इसका मतलब है बुरा मौसम! बहुत बुरा मौसम!"

जोडी को अपना हौसला उन समुद्री पक्षियों के समान ही उड़ता हुआ दिखाई दिया। उसे तूफान और आँधी पसन्द थे। ये बड़ी तेज़ी से आते और सारे परिवार को घर में शरण लेनी पड़ती है। काम करना कठिन हो जाता और सभी लोग इकट्ठे बैठ जाते। उधर वर्षा बड़ी कठिनाई से बनाई गई छत पर तड़ातड़ गिरने लगती। ऐसे समय उसकी दयालु माता उसे शर्बत या मिश्री देती और पिता कहानियाँ सुनाने लगते।

वह बोल उठा, "मुझे उम्मीद है कि यह केवल बवण्डर होगा!"

पैनी कुछ कठोर होकर उसकी ओर मुड़ा और बोला, "तुम ऐसी इच्छा मत करो। बवण्डर सारी फ़सलों को गिरा देता है, बेचारे नाविकों को डुबा देता है और नारंगी आदि फलों को पेड़ों से नीचे गिरा देता है। दक्षिण की ओर तो यह छतें उड़ाकर आदमियों को मार भी देता है।"

जोडी ने नम्रता से कहा, "मैं आगे से ऐसा नहीं चाहूँगा। पर, हवा और वर्षा तो अच्छी है!"

"हाँ ! वर्षा और हवा की बात और है !"

उस शाम सूरज कुछ अजब तरीके से छिपा। छिपते सूरज का रंग लाल न होकर हरा था। सूरज छिपते ही पश्चिम का रंग धुएँ का-सा और पूरब का रंग मटियाला-सा हो गया। पैनी ने फिर सिर हिलाकर कहा, "मैं इसे अच्छा नहीं समझता। यह बहुत ही बुरा है।"

रात को हवा का एक तेज़ झोंका आया और दोनों दरवाज़े खटखटा गए। छौना जोडी के बिस्तर तक पहुँच गया और अपने नथुने उसके मुख से रगड़ने लगा। उसने इसे भी अपने बिस्तरे में ही ले लिया। सुबह कुछ अधिक साफ़ थी, परन्तु पूरब दिशा का रंग बिलकुल लाल था। पैनी ने सबसे पहले धुआँघर की छत को ठीक किया। सोते से पानी भी वह दो बार भर लाया और सारी बाल्टियों को पानी से भर दिया। दोपहर से पहले आसमान का रंग धुएँ जैसा हो गया और वैसा ही रहा। हवा चारों ओर से बन्द थी।

जोडी ने पूछा, "क्या बवण्डर आने वाला है ?"

"मेरी समझ में नहीं ! पर कुछ बुरी बात होने ही वाली है। यह सब स्वाभाविक नहीं है।"

भरी दोपहरी में आसमान एकदम काला पड़ गया। मुर्गों ने बाँग देनी शुरू कर दी। जोडी गाय और बछड़े को ले आया और पैनी ने उसे दुह लिया। उसने सीज़र को अस्तबल में बाँधा और उसकी नाँद में आखिरी बची सूखी घास डाल आया।

पैनी बोला, "दड़बों में से अण्डे बटोर लाओ ! मैं घर जा रहा हूँ। ज़रा जल्दी करना, नहीं तो रास्ते में ही पकड़े जाओगे।"

मुर्गियाँ अण्डे दे ही नहीं रही थीं। कुल तीन अण्डे उन सारे दड़बों में थे। जोडी अनाज-भण्डार में चढ़ गया। यहाँ एक पुरानी मुर्गी लेटी हुई थी। बचा-खुचा भूसा उसके पाँव के नीचे मसला गया। खुश्क और मधुर गन्ध वाली हवा भी इस समय भारी और घुटी हुई थी। उसे दम घुटता-सा लगा। दड़बों में कुल दो अण्डे थे। उसने पाँचों को कमीज़ में डाला और घर की ओर चल पड़ा। उसे अपने पिता के समान जल्दी की ज़रूरत महसूस न हुई। एकदम ही उस दमघोंटू शान्ति में एक चमक-सी हुई और वह चौकन्ना हो

गया। बहुत दूर उसे एक बड़ी गरज सुनाई दी। जंगल के सारे रीछ यदि नदी के किनारे इकट्ठे होकर शोर करते, तब ऐसी आवाज़ होती। यह हवा की आवाज़ थी। उसने इसे उत्तर-पूरब से ऐसे आते अनुभव किया, मानो किन्हीं बड़े पंजों वाले पाँवों पर चलकर राह में पड़ने वाले पेड़ों की चोटियों को मसलती आ रही हो। ऐसा लगा जैसे यह मक्का के खेत को एक ही झपेटे में लाँघ आई। बाड़े के वृक्षों पर एक रगड़ के साथ यह टकराई और शहतूत की शाखों को उसने ज़मीन तक झुका दिया। चीनी बेरी का वृक्ष जैसे चीख़-सा पड़ा। यह उसके ऊपर से ऐसे गुज़री जैसे ऊँचे उड़ने वाले सैकड़ों हंसों के पंखों की सरसराहट एक साथ ही हुई हो। चीड़ों से टकराकर सीटियों की-सी आवाज़ निकली। इसके साथ ही वर्षा आई।

हवा काफ़ी ऊपर थी। वर्षा धरती से आकाश तक जैसे एक ठोस दीवार बनकर आई। जोडी ने तनकर इसका मुक़ाबला किया, जैसे वह बहुत ऊँचे से कूदकर आया हो। पर वर्षा ने उसे लड़खड़ाकर पीठ के बल गिरा दिया। तब हवा का एक और तेज़ झोंका आया। इस बार यह ऐसे आया, जैसे अपने बड़े-बड़े पंजों में धरती की हर चीज़ को समेटता हुआ आया हो। यह उसके कुर्ते, आँख, मुँह, कान-सभी जगह घुस गया, जैसे उसका गला ही घोंट देगा। उसने अपनी कमीज़ के अण्डे गिरने नहीं दिए। उसने एक बाँह से उन्हें बचाया और दूसरी से अपने मुँह को ढँके रखा और आँगन में घुस आया। यहाँ छौना काँपता हुआ उसकी इन्तज़ार कर रहा था। इसकी पूँछ गीली और गिरी हुई थी और इसके कान झुके हुए थे। यह उसकी ओर दौड़ा और उसके पीछे शरण ढूँढने लगा। वह घर का चक्कर काटकर रसोई की ओर गया। छौना भी उसके पीछे-पीछे था। रसोई के दरवाज़े की चिटखनी लगी हुई थी। इस पर हवा और वर्षा के इतने तेज़ थपेड़े पड़ रहे थे कि उसकी हिम्मत इसे खोलने की न पड़ी। वह चीड़ के मोटे दरवाज़ों को थपथपाता रहा। एक बार तो उसे लगा कि उसकी आवाज़ अन्दर न सुनी जा सकेगी और वह तथा छौना बाहर ही रह जाएँगे और चूज़ों की तरह डूब जाएँगे। तभी पैनी ने चिटखनी उठाई और दरवाज़े को खोल दिया। वे दोनों ही अन्दर घुस आए। जोडी साँसें भर रहा था। उसने अपनी आँखों पर से पानी पोंछा। छौने ने भी पलकें झपकीं।

पैनी ने पूछा, "ऐसी बात किसने चाही थी ?"

जोडी बोला, "यदि मेरी इच्छा सदा ही इस तरह जल्दी ही पूरी हो जाय, तब मुझे अपनी इच्छा के लिए बहुत सावधान रहना पड़ेगा।"

माँ बोली, "पहले जाकर अपने कपड़े बदलो ! क्या तुम आने से पहले इस छौने को बन्द करके नहीं आ सकते थे ?"

"समय नहीं था, माँ ! और फिर वह डरा और भीगा हुआ था।"

"अच्छा; जब तक यह कुछ गड़बड़ नहीं करता, ठीक है। हाँ, इस समय अच्छा पाजामा पहनने की ज़रूरत नहीं। एक छेदों और टाकियों से भरा पाजामा तुम्हारे पास है। घर के लिए वही काफी है।"

पैनी ने जोडी की ओर देखकर कहा, "वह एक छोटा भीगा हुआ सारस नहीं लगता ? उसमें केवल पंखों और पूँछ की कमी है। हे भगवान् ! क्या वह पिछली नसल से अब तक काफी बढ़ नहीं गया है ?"

माँ बोली, "मेरे विचार में वह खूबसूरत बन जाएगा अगर उसके चेहरे के दाग मिट जायँ, उसके बाल ठीक हो जायँ और उसकी टाँगों की हड्डियों पर माँस चढ़ जाय।"

पैनी ने भोला बनकर चिढ़ाते हुए कहा, "और कुछ थोड़े से परिवर्तन और हो जायँ तो वह खूबसूरत बैक्स्टर बन जाएगा। भगवान् को मनाओ !"

वह उसकी ओर भौंचक-सी देखती रही।

पैनी फिर बोला, "और शायद एल्वर्स लोगों जैसा सुन्दर भी हो जाय।"

पत्नी बोली, "यह बात अधिक ठीक है। अच्छा है तुम अपना लहज़ा बदल लो।"

पैनी बोला, "अब मुझे नए सिरे से तो गला फाड़ना नहीं है और प्रिये! हमारा-तुम्हारा सम्बन्ध कोई आँधी के झोंके से तो हो नहीं गया था !"

वह उससे हँसी में उलझ गई। अपने कमरे से उनकी आवाज़ सुनकर जोडी यह न जान सका कि वे उसकी मज़ाक उड़ा रहे थे या उसकी शक्ल निकल आने की सचमुच आशा थी। वह फ्लैग से बोला, "तुम तो मुझे सुन्दर मानते हो न ! या तुम भी नहीं मानते ?"

फ्लैग ने अपने सिर से उसे टक्कर मारी। उसे तसल्ली हुई और वे

दोनों रसोई की ओर आ गए।

पैनी बोला, "यह उत्तर-पूरब से आने वाला झोंका तीन दिन चलेगा।"

"पिताजी, आप कैसे कह सकते हैं यह तीन दिन चलेगा ?"

"ख़ैर, इस बात पर मैं कोई शर्त तो बद नहीं सकता। परन्तु इन दिनों उत्तर-पूरब से आने वाली पहली बारिश प्रायः तीन दिन की ही होती है। इन दिनों सारा देश—बल्कि सारा संसार—बदल-सा जाता है। इन दिनों के तूफान की बात ओलिवर ने चीनी समुद्र के बारे में भी बताई थी।"

माँ बोल उठीं, "वह इस बार हमें देखने क्यों नहीं आया ? दादी का व्यवहार मुझे पसन्द नहीं, पर ओलिवर मुझे अच्छा लगता है।"

"मेरी समझ में वह फौरेस्टरों से तंग आ गया है और इसीलिए इस राह से नहीं आया।"

"अगर वह लड़ाई पर न उतरे, तो भी क्या वे लड़ाई पर उतर आएँगे ? मुझे तो ऐसा नहीं लगता। वीणा कभी कमानी के बिना नहीं बजती।"

"मुझे डर है कि फौरेस्टर—और विशेषकर लेम—उसे जब भी पा लेंगे, उसी समय उस पर टूट पड़ेंगे, जब तक लड़की वाली बात ठीक नहीं हो जाती।"

"ऐसी ओछी बातें ! जब मैं लड़की थी, तब कभी ऐसा न सुना था।"

पैनी ने मज़ाक में कहा, "नहीं; तुम्हें चाहनेवाला मैं जो अकेला था !"

पत्नी ने बनावटी क्रोध में भौंहें तरेरीं।

पैनी बोला, "पर प्यारी ! बाकी सबमें से मेरे-जैसा चुस्त कोई नहीं था !"

बाहर की तेज़ हवा के थपेड़े कुछ देर के लिए रुके। एक करुणा-भरी आवाज़ दरवाज़े पर आई। पैनी दरवाज़े तक गया। रिप ने जगह बना ली थी, पर जूलिया अब भी भीगती हुई खड़ी थी। शायद उसने भी जगह पा ली हो पर वह और सुरक्षित जगह पर आना चाहती हो। पैनी ने उन्हें अन्दर ले लिया। पत्नी बोल उठी, "अब ट्रिक्सी और उसके बछड़े को भी अन्दर ले लो। तुम्हारी मनचाही चीज़ें इकट्ठी हो जाएँगी।"

पैनी ने जूलिया से कहा, "क्यों, फ्लैग से ईर्ष्या हो गई क्या ? तुम इस

परिवार में फ्लैग से बहुत पुरानी हो चुकी हो। आकर अपने को सुखा लो!"

उसने अपनी पूँछ धीरे-धीरे उठाई और उसका हाथ चाटने लगी। जोडी को प्रसन्नता हुई कि पिता ने फ्लैग को भी बैक्स्टर परिवार में गिन लिया है।

माँ बोल उठीं, "तुम पुरुष लोग गूँगे जानवरों को भी इस तरह अपना लेते हो और उन्हें अपना नाम दे देते हो! यह बात मेरी समझ से बाहर की है और फिर वह फ्लैग जोडी के बिस्तर में भी सो जाता है।"

जोडी बोला, "मुझे वह जन्तु नहीं लगता। माँ, मुझे तो वह एक लड़का ही लगता है।"

माँ बोली, "ख़ैर, बिस्तर तुम्हारा है। जब तक वह मक्खियाँ, जुएँ या चीचड़ नहीं लाता, तब तक ठीक है।"

उसे बुरा लगा। बोला, "देखो, माँ! उसकी सुन्दर और चिकनी खाल को देखो! उसे सूँघकर देखो!"

"मुझे सूँघने की चाह नहीं।"

"पर उसकी गन्ध मीठी है।"

'शायद गुलाब-जैसी! ख़ैर, मेरी निगाह में गीले बाल गीले ही हैं!"

पनी बोल उठा, "गीले बालों की सुगन्ध मुझे पसन्द है। एक बार जब मैं एक लम्बे शिकार पर गया था, मेरे पास कोई कोट न था। मौसम एकदम ठण्डा हो गया। यह साल्ट स्प्रिंग की बात है, जहाँ पगडंडी समाप्त हो जाती है। ठण्ड बहुत अधिक थी। हमने एक भालू मारा। मैंने उसकी खाल उतारी और उसके नीचे रात गुज़ारी! उसका बालों वाला हिस्सा बाहर की ओर रहा। रात को हल्की-हल्की ठण्डी वर्षा आई। मैंने नीचे से अपनी नाक बाहर निकाली और उन गीले बालों को सूँघा। नी गिनराइट, बर्ट हार्पर और मिल्ट रैवल्स आदि ने तो उसे दुर्गन्ध ही कहा, पर मैंने जब अपना सिर फिर से खाल में छिपाया तो मुझे उतनी ही गर्मी लगी, जितनी किसी गिलहरी को पेड़ के किसी खोल में अनुभव होती है। मुझे तो उस गीली खाल में चमेली से भी अच्छी गन्ध आई।"

वर्षा छत पर खूब आवाज़ कर रही थी। छज्जों के नीचे हवा खूब

सनसनाती चल रही थी। जूलिया फर्श पर फ्लैग के साथ ही पसर गई थी। आँधी उतनी ही आराम देने वाली लगी जितनी जोडी ने आशा की थी। उसने मन ही मन सोचा कि वह चाहेगा कि अगले एक-दो सप्ताह में ही, फिर एक बार ऐसी ही आँधी आए। पैनी जब-तब खिड़की में से बाहर अँधेरे में कुछ झाँकता था।

वह बोला, "इससे ज़मीन के सारे मेढक मर जाएँगे।"

शाम का भोजन अच्छा और काफ़ी था। मटर, हरिण के माँस का कीमा और बिस्कुटों का हलवा आदि चीज़ें बनी थीं। कोई भी तनिक-सी असाधारण बात माँ को कुछ खास चीज़ बनाने के लिए उत्तेजित कर देती थी, मानो उसकी सारी कल्पना-शक्ति का परिचय आटे आदि के द्वारा ही मिल सकता था। उसने फ्लैग को अपने हाथों से हलवा खिलाया। जोडी ने अन्दर-ही-अन्दर उसकी कृपा मानते हुए खाने के बाद बर्तन आदि धोने में उसकी सहायता की। पैनी तुरन्त ही कमज़ोरी के कारण बिस्तर पर लेट गया, यद्यपि उसे नींद नहीं आई। सोने वाले कमरे में मोमबत्ती जल रही थी। माँ वहीं सिलाई का काम करने लगी और जोडी बिस्तर के पाँयते की ओर लेट गया। वर्षा खिड़की से टकराकर होती रही।

जोडी बोला, "पिता जी, मुझे कोई कहानी सुनाइए।"

पैनी ने उत्तर दिया, "जितनी कहानियाँ मुझे आती थीं, सब तुम्हें सुना चुका हूँ।"

"नहीं; अभी नहीं! आपके पास हमेशा कोई नई बात तैयार रहती है।"

"ख़ैर, एक बात जो मैंने तुम्हें नहीं बताई, उसे कहानी नहीं कहा जा सकता। क्या मैंने कभी तुम्हें उस कुत्ते की बात बताई है जो हमारे साथ यहाँ पहले-पहल आने पर आया था?"

"जोडी रजाई के पास सरक आया। बोला, "सुनाइए!"

"अच्छा, भई! वह कुत्ता लोमड़ी और शिकारी कुत्ते का मिला-जुला रूप था। उसके लम्बे भौंडे कान थे जो ज़मीन तक लटक जाते थे। उसकी टाँगें इतनी झुकी हुई थीं कि वह आलू की क्यारियों में सीधा चल भी नहीं सकता था। उसकी आँखें खोई-खोई-सी, जैसे दूर पर कोई चीज़

देखती रहती थीं। इन आँखों के कारण तंग आकर मैंने उसे बेचने का निश्चय कर लिया। मैं उसे शिकार पर ले गया। तब यह बात मुझे स्पष्ट हुई कि वह और कुत्तों-जैसे आचरण नहीं करता। वह बनबिलाव या लोमड़ी के निशानों को बीच में ही खोजना छोड़कर किनारे पर लेट जाता था। पहले-पहल जब उसने ऐसा किया, मैंने समझा उसका होना-न-होना एक-सा है।

"पर बाद में मुझे ऐसा भान हुआ कि वह ऐसा जान-बूझकर करता था। जोडी! मुझे मेरा पाइप पकड़ा दो।"

जोडी को यह रुकावट अजीब-सी लगी। वह खीझकर उठा और पाइप ले आया।

"अच्छा, बेटे! अब तुम ज़रा फर्श या कुर्सी पर बैठ जाओ और मेरे बिस्तर से थोड़ा परे ही रहो। ज्यों ही मैं 'पैड़' या 'खोज' की बात कहूँ, तुम अपने बिस्तर की ओर बढ़ने लगना, जहाँ वह फट्टा उठा हुआ है। यह ठीक रहेगा।"

"फिर मैं भी लाचार हो गया उस कुत्ते के साथ ही बैठकर यह देखने के लिए कि आखिर वह ऐसा क्यों करता है? तुम्हें पता है कि वन-बिलाव या लोमड़ी कैसे बेवकूफ बनाते हैं? वे अपने ही निशानों पर लौट आते हैं। और यह बात बिलकुल सच है। वे कुत्तों से काफी आगे रहते हैं और इस फासले को बनाए रखते हैं। फिर एकाएक हल्के क़दमों से वे मुड़ पड़ेंगे। जहाँ तक सम्भव होगा वे पीछे लौट आएँगे और कुत्तों की ओर कान लगाए रहेंगे। उनकी गन्ध पाते ही वे एक ओर बड़ा काट काटेंगे और एक चिमटे जैसा चौड़ा मोड़ बनाएँगे, जिस आकार में कुंज-पक्षी उड़ा करते हैं। साधारण कुत्ते उनकी पहली पैड़ परही बढ़ते रहेंगे औरएक ऐसी जगह पहुँच जाएँगे जहाँ से आगे कोई निशान नहीं मिलते। वे इधर-उधर खोज कर हार जाते हैं और बहुत देर बाद पीछे लौटना आरम्भ करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वे ठीक पैड़ खोज लेते हैं और जहाँ से बिलाब या लोमड़ी बड़ी काट काटते हैं, उसे भी ढूंढ लेते हैं। पर इसमें काफी समय लग जाता है और अक्सर शिकार हाथ से बहुत दूर निकल चुका होता है। तुम्हारा क्या अनुमान है हमारे उस कुत्ते के बारे में? वह ऐसे समय क्या करता था?"

"आप ही बताइए !"

"वह इस बात का अनुमान लगा लेता था। वह पहले ही सोच लेता था कि कब वह शिकार लौटने वाला होगा ? किनारे पर लेटकर वह इन्तज़ार करने लगता और जब शिकार लौटता हुआ आता, तब वह उस पर उछलकर टूट पड़ता।

"पर कई बार शिकार बहुत दूर से ही अपना रास्ता बदल लेता। अनुमान ग़लत सिद्ध होने पर निराशा के कारण उसके कान लटक जाते। पर अधिकतर उसका अनुमान सही होता था और वह मुझे और किसी भी कुत्ते की अपेक्षा अधिक बिलाव या लोमड़ी पकड़कर ला देता था।"

पैनी ने पाइप के एक-दो कश खींचे। उसकी पत्नी ने अपनी कुर्सी बत्ती के पास खींच ली। कथा का इतनी जल्दी समाप्त होना किसी को अच्छा न लगा। जोडी ने पूछा, "पिताजी ! वह कुत्ता और क्या-क्या करता था ?"

"एक दिन उसे भी अपना जोड़ टकर गया।"

"बिलाव या लोमड़ी ?"

"इन दोनों में से कोई नहीं ! एक बारहसिंगा इस कुत्ते जितना ही चतुर था। उसके सींग मुड़े हुए थे। उसकी उम्र के साथ-साथ ये भी मुड़ते गए थे। हिरण प्रायः कभी अपनी पैड़ पर दोबारा नहीं लौटता। परन्तु इस बारहसिंगे की यह आदत थी और यह बात इस कुत्ते की मनपसन्द थी। परन्तु इसके साथ उसकी दाल न गली। बारहसिंगे ने कुत्ते के अनुमान से हमेशा उल्टा रुख अपनाया। कभी वह लौट पड़ता, तो कभी भागता ही चला जाता। कभी वह अपना रास्ता एकदम उछलकर बदल लेता था। सालों बीतते गए। दोनों एक-दूसरे को छकाते रहे।"

"इन दोनों में से अधिक चतुर कौन था, पिताजी ? और अन्त में कौन जीता ?"

"तुम उत्तर अवश्य सुनना चाहते हो ?"

जोडी झिझका। उसकी इच्छा हुई कि लम्बे लटकते कानों वाला वह कुत्ता जीते, पर वह यह भी नहीं चाहता था कि बारहसिंगा मारा जाए !

वह बोला, "हाँ, उत्तर मुझे जानना ही चाहिए।"

"अच्छा ! पर उत्तर अन्तहीन है, क्योंकि वह कुत्ता कभी बारहसिंगे

को नहीं पा सका।"

जोडी ने चैन की साँस ली। उसे यह ठीक ढंग की कहानी लगी। जब उसने दुबारा इस पर ध्यान दिया तो उसे कुत्ता सदा ही बारहसिंगे का पीछा करता नज़र आया।

वह फिर बोला, "पिताजी! कोई दूसरी वैसी ही कहानी सुनाइए, जिसका उत्तर तो मिले पर अन्त न हो!"

"पर बेटे! वैसे कहानियाँ संसार में अनेक तो हैं नहीं। तुम इतने से ही सन्तुष्ट रहो!"

माँ बोली, "मुझे कुत्तों का अधिक पता नहीं। पर एक बार एक कुत्ता अवश्य मेरी निगाह में आया था। यह कुतिया थी और इसके बाल बहुत ही अच्छे थे। मैंने उसके स्वामी से कहा कि, 'जब इसके बच्चे हों तो एक मुझे दीजिएगा।' उसने उत्तर दिया, 'अवश्य! पर आप उसे शिकार नहीं खेला सकेंगी। और, शिकारी कुत्ते को यदि शिकार खेलना न मिले तो वह मर जाएगा।' मैंने पूछा, 'क्या यह शिकारी कुतिया है?' उसने 'हाँ' में उत्तर दिया। मैंने उसे कहा, 'तब मुझे नहीं चाहिए, क्योंकि वह अण्डे खा जाएगी!'

जोडी शेष कहानी की प्रतीक्षा उत्सुकता से करता रहा। पर तब उसे ध्यान आया कि माँ की बात बस इतनी ही थी। यह उसकी और कहानियों की तरह ही थी, जो उस शिकार की तरह होती थी जिसमें कोई घटना न घटी हो। वह फिर से बिलावों और लोमड़ियों को छकाने वाले उस कुत्ते के बारे में सोचने लगा, जो बारहसिंगे को कभी न हरा सका था।

वह बोला, "मेरा दावा है, फ्लैग बड़ा होकर अवश्य चतुर निकलेगा।"

पैनी बोला, "अगर किसी दूसरे के कुत्ते ने उसका पीछा किया, तब तुम क्या करोगे?"

उसे गले में घुटन सी लगी। बोला, "जो भी आदमी या कुत्ता इसका पीछा करता यहाँ आएगा, मैं उसे मार डालूँगा। यहाँ कोई भी नहीं आएगा। ठीक है न?"

पैनी ने धीमे से कहा, "हम सब तक यह ख़बर पहुँचा देंगे। तब कोई भी नहीं आएगा। पर, यह भी बहुत दूर घूमने न निकले!"

जोडी ने घुस आने वाले लुटेरों के विरुद्ध अपनी बन्दूक सदा ही भरकर तैयार रखने का निश्चय किया। उस रात वह फ्लैग को अपने साथ अपने ही बिस्तर पर लेकर सोया। सारी रात हवा खिड़कियों से टकराती रही। जोडी चैन से न सो सका। उसे उन कुत्तों के स्वप्न आते रहे, जो फ्लैग को वर्षा में से भी बुरी तरह दौड़ाते रहे।

सुबह उठकर उसने देखा कि पैनी ने सर्दियों की पोशाक पहन ली है। भारी गर्म कोट पहनने के साथ-साथ सिर पर गर्म शाल भी वह लपेटे हुए था। वह गाय को दुहने के लिए इस आँधी में भी निकलने को तैयार था। मूसलाधार वर्षा अब भी धीमी नहीं पड़ी थी।

माँ बोली, "जोडी, अब तुम तैयार हो जाओ और यहाँ आ जाओ, नहीं तो निमोनिया से मर जाओगे।"

जोडी ने कहा, "मुझे जाने दो"; पर पैनी बोल उठा, "तुम्हें आँधी उड़ा ले जाएगी, बेटे!"

तेज़ आँधी के सामने अपने पिता के छोटे ढाँचे की ओर देखते हुए उसे लगा कि उसमें बोझ न होकर भी शक्ति अधिक थी। पैनी जब लौटकर आया तो वह भीग चुका था और उसकी साँस भारी होकर चल रही थी। दूध पर बूँदों के छींटे पड़े थे।

वह बोला, "यह अच्छा रहा कि मैंने कल ही पानी ढो लिया!"

दिन-भर सुबह की तरह ही आँधी और वर्षा होती रही। वर्षा मूसलाधार होती रही और हवा छज्जों के नीचे टकराती रही। यह देखकर माँ ने बाल्टियाँ और दूसरे बड़े बर्तनों में पानी भरना शुरू कर दिया। वर्षा का पानी जमा करने के डोल पहले ही भर चुके थे और छत से गिरने वाला पानी उनमें शोर के साथ गिरता जा रहा था। जूलिया और फ्लैग को ज़बरदस्ती बाहर निकालना पड़ा। थोड़ी ही देर में वे फिर रसोई के दरवाज़े पर आ धमके। वे भीगकर कांप रहे थे। इस बार रिप भी उनके साथ था और गुर्रा रहा था। माँ मना करती रही, पर पैनी ने उन तीनों को अन्दर ले ही लिया। जोडी ने उन तीनों को ही बोरी के टुकड़े से भट्ठी के सामने खड़ाकर सुखा दिया।

पैनी बोला, "अब शान्ति होने ही वाली है।"

परन्तु शान्ति न आई। कुछ क्षण ऐसे ज़रूर आते थे जिनमें हवा और वर्षा का ज़ोर कम पड़ता दीखता और पैनी बड़ी आशा से उठकर बाहर झाँकता। परन्तु उसने शीघ्र ही लकड़ी काटने और चूज़ों को देखने के लिए बाहर जाने का निश्चय किया। उसे वर्षा के और भी तेज़ हो जाने का भय था। दोपहर बाद वह गाय को दुहने एक बार फिर गया। उसी समय वह घोड़े को दानी-पानी तथा डरे और सहमे हुए, पेट भरने में असमर्थ, चूज़ों को चुग्गा भी देता आया। जोडी की माँ ने उसे तुरन्त ही कपड़े बदलने पर मजबूर किया। उन्हें वहीं, भट्ठी के पास, सूखने के लिए टाँग दिया। उनमें से सीलन और पसीने की बू आ रही थी।

शाम का भोजन थोड़ा ही था। पैनी कहानी सुनाने को तैयार न था। सब लोग जल्दी ही सोने लगे और कुत्तों को भी कमरे में सोने दिया गया। अँधेरा कुछ जल्दी ही हो गया था। ठीक समय जानना भी कठिन था। जोडी पौ फटने के समय से भी घंटा-भर पहले ही उठ पड़ा। अँधेरा चारों ओर छाया हुआ था। वर्षा और हवा का ज़ोर अब भी कम नहीं पड़ा था।

पैनी बोला, "आज सुबह यह तूफ़ान अवश्य रुकेगा। यह उत्तर-पूरब की तीन दिन चलने वाली वर्षा अवश्य है, पर वर्षा ने भी हद कर दी है! धूप देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी।"

पर सूरज न निकला और वर्षा भी न रुकी। दोपहर बाद कुछ क्षण शान्ति रही, जैसी पैनी ने पहले दिन आशा की थी। परन्तु इस चुप्पी के बाद भी आसमान धुँधला था; पेड़ फूले हुए-से, छतें चूती हुईं और धरती दलदली बनी हुई थी। इसी समय चूज़े अपने दड़बों से बाहर निकल आए और कुछ क्षण के लिए उदास से बाहर घूमने लगे।

पैनी ने कहा, "खैर, अब हवा बदलेगी और सब साफ हो जाएगा।"

हवा ने रुख बदला, पर आसमान धुँधले की बजाय हरा हो गया। पहले की ही भाँति हवा का तूफ़ान दूर से शोर करता उठा। इस बार यह उत्तर-पूरब की ओर से न होकर दक्षिण-पूरब की ओर से आया था। इसके आते ही वर्षा पहले से भी अधिक तेज़ हो गई।

पैनी बोला, "मैंने ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी।"

वर्षा पहले से भी अधिक मूसलाधार थी। यह इतनी अधिक बरसी,

जैसे सभी परिचित नदियाँ और झीलें एक साथ इस जंगल पर आकर उलट गई हों। हवा पहले से अधिक तेज़ न थी, पर इसमें ज़ोर अधिक था। यह सब जल्दी ही दबने वाला न दीखता था। हवा और वर्षा का बारी-बारी से राज्य पलटता दीखता था।

पैनी बोला, "लगता है परमात्मा ने समुद्र इसी तरह बनाया होगा।"

पत्नी बोली, "हुश ! तुम सभी दण्ड के भागी बनोगे।"

"इससे अधिक दण्ड और क्या मिलेगा ? आलू सड़ जाएँगे, मक्का ज़मीन पर लोट जाएगी और भूसा नष्ट हो जाएगा। और गन्ने का अभी पता नहीं!"

सारा आँगन जैसे तैर रहा था। जोडी ने खिड़की से बाहर झाँककर देखा और दो चूज़े डूबकर उलटे हुए तैरते देखे।

पैनी बोला, "मैंने अपने जीवन में बहुत कुछ देखा है, किन्तु ऐसी तबाही कभी न देखी थी।"

जोडी ने सोते तक जाकर पीने का पानी लाने की उत्सुकता दिखाई।

पैनी ने कहा, "वह भी वर्षा का पानी ही होगा। उसका लाभ क्या?"

उत्तर-पश्चिम के कोने में रखे बर्तन में जमा पानी को ही वे सब पीते रहे। इसमें छत पर सूखे सरु की हलकी-हलकी गन्ध आ रही थी। जोडी ने शाम के काम निबटा लिए। वह रसोई के दरवाज़े से दूध की बाल्टी लेकर निकला। बाहर का संसार अजीब ही बना हुआ था, जसे वह उजाड़-बियाबान बन चुका हो, या फिर जैसे यह सृष्टि का आरम्भ या अन्त आ गया हो। सब वनस्पतियाँ गिर चुकी थीं। सड़क पर नदी बह रही थी। इस पर बहकर चपटे तले की कोई नाव सीधी सिल्वर घाटी तक जा सकती थी। परिचित चीड़ के वृक्ष ऐसे लगते थे जैसे समुद्र के तल में मौजूद पेड़ हों और वर्षा ज्वार और बहावों से बहकर वे यहाँ लाये गए हों। उसे लगा कि वह वहाँ तैरकर जा सकता है। पशुओं की जगह पानी घुटनों तक था। यह जगह घर से कुछ नीची सतह पर थी। ट्रिक्सी ने अपने और बछड़े के बीच की लकड़ियों को उखाड़कर बच्चे को अपने पास ले लिया था और एक ऊँचा कोना अपने दोनों के लिए ढूँढ लिया था। वे वहाँ सटे खड़े थे। बछड़ा प्रायः सारा दूध पी ही चुका था। इसलिए जोडी उससे बहुत थोड़ा

दूध ही पा सका। यहाँ से आज भण्डार के रास्ते में पानी बह रहा था। उसकी इच्छा थी कि गाय को वह कुछ सूखा भूसा ला दे। पर पानी से निराश होकर उसने सोचा कि वह उसे भूसा प्रातः दे देगा, अभी ऊपर पड़ी सूखी घास ही काफी रहेगी। उसे यह बात अच्छी लगी कि सूखी घास की फसल जल्दी ही तैयार हो जाएगी। कुछ खास काम बचा नहीं था। उसे पता नहीं था कि बड़े बछड़े को गाय से अलग किया जाय या नहीं? इसे बाँधने के लिए कोई सूखी जगह नहीं थी। इस पर भी परिवार को दूध तो चाहिए ही था। उसने रुककर पिता से पूछने और आवश्यक होने पर पुनः लौटने का निश्चय किया। बाहर आकर वह बहुत कठिनता से घर तक पहुँचा। वर्षा के तेज़ झोंके ने उसकी आँखें बन्द कर दीं। खेतों की गन्ध उसे अनजान और अजनबी-सी लगने लगी। दरवाज़ा खोलकर घर में घुसते ही उसने आनन्द अनुभव किया। रसोई उसे सुरक्षित और परिचित स्थान लगा। उसने बाहर के सारे हाल-चाल बताए।

पैनी ने कहा, "अच्छा है, ऐसे समय बछड़े को गाय के पास ही रहने दो। सवेरे तक हम बिना दूध के भी गुज़र कर सकते हैं। तब तक सब साफ हो जाएगा।"

सुबह भी कोई अन्तर न पड़ा। पैनी बेचैन रसोई में घूमता रहा।

वह बोला, "मेरे पिताजी ने सन् 50 की एक भयंकर आँधी की चर्चा की थी। पर मेरे ख़याल में फ्लोरिडा के सारे इतिहास में इतनी भयानक वर्षा कभी नहीं हुई।"

इसी तरह बिना किसी परिवर्तन के कुछ दिन और बीत गए। अब तक माँ मौसम की बात पैनी पर छोड़ दिया करती थी, पर अब वह भी परेशान होकर दुख मनाने लगी थी। पाँचवें दिन पैनी और जोडी मटरों के खेत से कुछ मटर लेने गए, ताकि एक-दो दिन का काम चल सके। मटर की सारी पौध गिर चुकी थी। उन्होंने वर्षा की ओर पीठ करके कुछ पूरी की पूरी लताएँ उखाड़ लीं। लौटते हुए वे धुआँघर के पास भालू का मसालेभरा कुछ माँस लेने को रुके। यह भालू बक ने जाने से पहली रात मारा था। पैनी को यह भी याद था कि पत्नी के पास पकाने के लिए चर्बी नहीं है। उन्होंने आलू की सुनहली चर्बी वाले पीपे को टेढ़ा किया और

कुछ चर्बी निकाल ली। इसे ढँकने के लिए उन्होंने माँस को बर्तन पर रखा और घर की ओर भागे।

खेतों में बाहर की ओर के मटर गलने लगे थे। पर बीच के मटर अच्छी दशा में थे। माँ ने उसके साथ हलवा बनाया, जिसकी सुगन्ध अच्छी थी और जिसमें लकड़ी और धुएँ का स्वाद आ रहा था।

पैनी बोला, "सम्भव नहीं दीखता कि वर्षा सवेरे भी रुके। पर यदि यह ना ही रुकी तो जोडी! मैं और तुम जाकर अधिक से अधिक मटर उखाड़ लाएँगे।"

पत्नी बोली, "पर मैं उन्हें रखूँगी कहाँ?"

"उन्हें सुखा लो, और ज़रूरत होने पर रोज़ गर्म कर लो।"

छठे दिन भी रोज़ से कोई अन्तर न पड़ा। भीगना तो था ही, इसलिए पैनी और जोडी ने अपने पाजामों के पाँयचे चढ़ाए और बोरे लेकर खेतों में पहुँच गए। मूसलाधार वर्षा में वे दोपहर तक इसी तरह काम करते रहे और बहकर झाड़ियों में अटकी हुई पौध को भी निकालते रहे। वे दोपहर को लौटे और जल्दी-जल्दी खाना खाकर फिर काम पर लौट गए। उन्होंने कपड़े भी न बदले। उन्होंने अधिकांश खेत पूरे कर लिये थे। पैनी ने बताया कि इनकी सूखी घास बिलकुल काम लायक न रही थी, परन्तु मटरों को बचाने का हर सम्भव उपाय उन्हें करना होगा। कुछ बेलें पक चुकी थीं। घर आकर सारी शाम और काफी रात तक भी वे मटर छीलते रहे। मटर चिपकने और गलने लगे थे। माँ ने भट्ठी में धीमी आग जलाकर उसके चारों ओर सूखने के लिए मटर फैला दिए। जोडी ने रात में कई बार सुना कि कोई रसोई में जाकर आग को फिर से सुलगा आता है।

सातवें दिन भी सुबह वही हाल रहा। पहले दिन के समान ही तेज़ हवा घर के चारों ओर चलती रही, मानो यह सदा से ऐसे ही चलती आई है और ऐसे ही चलती रहेगी। छत और नीचे के ढोलों में वर्षा के पानी की आवाज़ सुनने की ओर अब किसी का ध्यान न था। दिन चढ़ने पर सामने के चीनी बेरी की एक बड़ी डाल टूटकर धरती पर गिरी। सारा परिवार नाश्ते के लिए चुप बैठ गया।

पैनी बोला, "अभी तो इससे भी बुरा हाल काम सँभालते समय होगा।

ऐसा लगता है जैसे हमने अपना जीवन ही नहीं बिताया।"

उसकी पत्नी बोली, "इसमें भी कुछ भलाई देखने का प्रयत्न करो। ऐसा करना ही उचित है।"

पैनी ने कहा, "इसमें कुछ भी भला नहीं। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि इससे मनुष्य को नम्र बनने की याद दिलाई गई है, क्योंकि वह इस धरती पर किसी भी चीज़ को अपना नहीं कह सकता।"

नाश्ते के बाद जोडी को लेकर पैनी मक्की के खेतों में गया। आँधी से पहले ही भुट्टे उतार लिये गए थे। अब जड़-समेत सारी पौध धरती पर आ गिरी। उसके सिट्टे अभी बचे हुए थे। उन्होंने उन्हें इकट्ठा किया और रसोई में ले आए, ताकि कुछ गर्मी में उन्हें बचाया जा सके।

माँ बोली, "मैं तो अभी मटर भी नहीं सुखा पाई। इन्हें कैसे सुखाऊँगी?"

बिना उत्तर दिए पैनी सामने वाले कमरे में गया और उसने भट्टी में आग जला दी। जोडी और लकड़ी लाने के लिए बाहर चला गया। लकड़ी पानी से फूल चुकी थी, पर थोड़ा गर्म करते ही यह जलने लायक हो जाती थी। पैनी ने मक्की के सिट्टे फर्श पर फैला दिए।

उसने जोडी से कहा, "अब तुम्हारा काम इन्हें पलटते रहने का है, ताकि सभी को गर्मी मिल सके।"

पत्नी ने गन्ने के बारे में पूछा, "गन्ना कैसा है?"

पैनी ने बताया, "वह भी गिर चुका है।"

"आलुओं के विषय में तुम्हारा क्या ख़याल है? वे कैसे होंगे?"

उसने सिर हिला दिया। दोपहर बाद वह आलुओं के खेत में गया और शाम के लिए कुछ इकट्ठे कर लाया। वे भी सड़ने लग गए थे। छाँटने से कुछ ठीक हो गए। शाम का भोजन आलुओं के कारण एक बार फिर अच्छा बन गया।

पैनी ने कहा, "अगर कल सुबह तक भी मौसम में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ, तो हमारे लिए सब संघर्ष छोड़कर मरने के लिए पड़ रहना ही ठीक होगा।"

जोडी ने अपने पिता को इतनी निराशा से बात करते कभी न सुना

था। वह सुन्न रह गया। भोजन की कमी का प्रभाव फ्लैग पर भी पड़ने लगा था। उसकी पसलियाँ और रीढ़ की हड्डी दीखने लगी थी। वह प्रायः ही मिमियाने लगा था। पैनी ने बछड़े का ध्यान रखकर दूध दुहना बिलकुल छोड़ दिया था।

आधी रात के समय जोडी जागा। उसे लगा कि उसने पिता की आवाज़ पास में ही सुनी है। वर्षा का ज़ोर कुछ कम पड़ गया था। पूरी सचाई जानने से पहले ही वह फिर सो गया। वह आठवें दिन की सुबह उठा। सब कुछ बदल चुका था। शोर के स्थान पर चुप्पी छा गई थी। वर्षा रुक गई थी। हवा अब भी तेज़ थी। धुँधले और गीले आकाश में लाल किरणें फैलने लगी थीं। पैनी ने सारे दरवाज़े और खिड़कियाँ खोल दीं।

वह बोला, "अभी बाहर जाने लायक मौसम तो नहीं हुआ, फिर भी हम सबको बाहर निकलकर भगवान का धन्यवाद करना चाहिए कि आखिर दुनिया देखने को तो मिली।"

कुत्ते उसे धक्का देते हुए बढ़े और उसकी बगलों में कूदने लगे।

वह हँसा और बोला, "ऐसा लगता है जैसे हम किसी नाव में बाहर जा रहे हैं। पशु दो-दो करके बढ़ेंगे और, ओरी, आओ, तुम मेरे साथ बढ़ोगी!"

जोडी कूदा और छौने के साथ सीढ़ियाँ नापता नीचे उतर गया।

वह बोला, "हम दो हिरण हैं!"

माँ ने खेतों की ओर देखा और रोने लगी। पर जोडी को हवा ठण्डी, मधुर और सुहावनी लगी। छौने ने भी उसके विचार की हामी भरी और आँगन के दरवाज़े को एड़ियों के बल उछलकर लाँघ गया। बाढ़ से दुनिया की काफी तबाही हुई थी, पर पैनी के कहने के अनुसार उनका संसार यही था।

20

तूफान के दो दिन बाद बक और मिलव्हील घोड़े पर चढ़कर उस ओर आए, ताकि बैक्स्टर परिवार की कुशलता जान सकें। वे अपने पशुओं की देखभाल से सीधे ही इधर आ रहे थे। उन्होंने बताया कि मुख्य पगडण्डी के साथ जो कुछ भी उन्होंने देखा वह उनके जीवन के लिए बिलकुल नया ही था। इस बाढ़ ने चारों ओर छोटे पशुओं के लिए क़हर ढा दिया है। बक, मिलव्हील, पैनी और जोडी ने मिलकर चारों ओर कुछ मील दूर तक खोज-बीन के लिए यात्रा करना उचित समझा, ताकि वे जान सकें कि निकट भविष्य में शिकार के अलावा हिंसक जन्तुओं की किस प्रकार की हलचल का उनको सामना करना पड़ेगा? फौरेस्टर अपने साथ दो कुत्ते लाए थे और एक घोड़ा भी फालतू ले आए थे। उन्होंने रिप और जूलिया को साथ लेने का आग्रह किया। जोडी को खुशी थी कि वह भी साथ चलेगा। उसने पूछा क्या वह फ्लैग को भी साथ ले जा सकता है?

पैनी बड़े गुस्से में उसकी ओर घूमा और बोला, "देखो, यह गम्भीर

बात है। मैं तुम्हें कुछ सिखाने के लिए साथ ले जाना चाहता हूँ। अगर तुम्हारी इच्छा हँसी-मज़ाक की है तो तुम भी घर पर ही रुक जाओ।"

जोडी का चेहरा उतर गया। उसने जाकर फ्लैग को फिर से पिछली कोठरी में बन्द कर दिया। मिट्टी का फर्श कुछ फूला हुआ था और कोठरी में से अब भी सीलन की बू आ रही थी, परन्तु उसने सन के बोरों का बिस्तर बनाया, ताकि छौना सूखे में रह सके। तब उसने पानी और दाना भी साथ ही रख दिया; कहीं वह बहुत देर में लौटकर न आए।

वह बोला, "अब तुम चुप होकर यहाँ पड़े रहना। मैं आकर तुम्हें अपनी देखी सारी बात समझाऊंगा।"

फौरेस्टरों के पास सदा की भाँति काफी अधिक गोला-बारूद था। पैनी को इस बाढ़ की दो साँझों में अपनी गोलियाँ दो-तीन बार बरतनी पड़ी थीं। उसके पास अब भी एक महीने की पूरी गोलियाँ तैयार थीं। उसने अपना थैला भरा और अपनी बन्दूक की नालियों को साफ किया।

वह फौरेस्टरों से बोला, "देखो, मैंने तुम्हारे साथ उस कुत्ते को बेचकर बहुत बुरा बर्ताव किया था। अब अगर कभी तुम्हारी इच्छा हो तो इस बन्दूक को बेखटके बरत सकते हो।"

बक बोला, "पैनी, हमारे में से लेम के सिवाय और कोई इतना नीच नहीं है कि इसे वापस माँगे। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि वह इन बाढ़ के दिनों में भी इतना नीच हो गया था कि मुझे उसे दुरुस्त करना पड़ा।"

"अब कहाँ है वह ?" पैनी ने पूछा।

बक ने घृणा के साथ कहा, "वह नदी की ओर चला गया है। उसे डर था कि कहीं उसकी प्रेमिका के साथ बुरी न बीती हो। उसे उम्मीद है कि वह उसे पटा लेगा और ओलिवर से बदला चुकाएगा। इस बार वह अकेला ही लड़ने को तैयार है।"

यह निश्चय किया गया कि बैक्स्टर और फौरेस्टर परिवारों की सारी ज़मीन को घेरते हुए एक लम्बा चक्कर काटा जाय, ताकि जूनिपर स्रोत, हौपकिन्स मैदान, हिरणों का प्रदेश और दलदली नुकीली घास वाले इलाके में स्थिर सनावरों का टापू आदि सभी बीच में आ जायँ, क्योंकि इस टापू में ही पशुओं के छिपने की उम्मीद थी। ओक्लावाहा नदी की

ओर की पश्चिमी ढलान को छोड़कर बैक्स्टर परिवार की सारी ज़मीन उस जंगल में सबसे ऊँची थी। परन्तु, इसके चारों ओर की ज़मीन नीची थी। जो चक्कर उन्होंने काटने की सोची थी, उससे उन्हें सब कुछ पता चल जाना था। उन्होंने सोचा कि वे लोग फौरेस्टर परिवार की ज़मीन पर लौटकर सोएँगे। पर अगर यह सम्भव न हुआ तो जहाँ पर भी हो सकेगा वे रात गुज़ारेंगे। पैनी ने अपना थैला खूब सोचकर भरा। उसने तलने का बर्तन, नमक, आटा, सूअर की कमर का माँस और थोड़ा तमाखू आदि सब कुछ ले लिया। सन् की एक बोरी में उसने जलाने वाली कुछ लकड़ियाँ, पतले तेल की एक बोतल, शेर की चर्बी की एक बोतल आदि भी ले ली। शेर की चर्बी वह अपने जोड़ों के दर्द के लिए बचाकर रखता था। तूफ़ान के दिनों में ठण्ड लगने से उसका यह दर्द बहुत तेज़ी से बढ़ रहा था। उसके पास कुत्तों के लिए कुछ भी माँस नहीं बचा हुआ था।

बक बोला, "हम उनके लिए कुछ वहीं से मार लेंगे।"

आखिर में वे तैयार होकर घोड़ों पर उछलकर चढ़ गए और एकदम ही दक्षिण-पूर्व की ओर सिल्वर घाटी और जॉर्ज झील की ओर बढ़ गए।

पनी बोला, "जब तक हम साथ हैं, हमें डाक्टर विल्सन की ओर जाकर भी उसका हालचाल पता करना चाहिए। लगता है उसका स्थान पानी में आधे से अधिक डूब गया होगा।"

बक बोला, "और सम्भव है कि वह शराब के नशे में यह जान ही न सका हो।"

पैनी की ज़मीन और सिल्वर घाटी के बीच की सड़क बहुत गीली और नीची थी। बाढ़ का पानी इस पर इतनी तेज़ी से और इतना अधिक बहा था कि रेतीली चपटी सड़क एक पतली खाई की भाँति गहरी हो गई थी। आस-पास घने रूप में उगे हुए चीड़ों के निचले हिस्सों पर सारा कूड़ा-करकट जमा हुआ था और नीचे जाकर छोटे-छोटे पशुओं के साथ होने वाला ज़िन्दगी का खिलवाड़ सामने आ गया। नेवले, कंगारू आदि सबसे अधिक सताये गए थे। उनके मरे हुए शरीर दर्जनों की संख्या में ज़मीन पर पड़े हुए थे। हटता हुआ पानी इन्हें वहीं छोड़ गया था या फिर कहीं-कहीं पेड़ों की शाखों पर लटके हुए थे। दक्षिण और पूरब की ओर अधिक शान्ति थी।

यों तो जंगल सदा ही शान्त रहता था, परन्तु अब जोडी को अनुभव हुआ कि जैसे जंगल की इस शान्ति में भी कुछ चिल्लाहट और हलचल रहती थी, जिसमें पशुओं की चीख-पुकार, उनकी भाग-दौड़ और हवा की तेज़ चाल आदि सब मिल जुलकर एक-से हो जाते थे। उत्तर की ओर जहाँ जंगल कुछ ऊँचा उठ गया था और जहाँ चीड़ कुछ अधिक घने हो गए थे, कुछ अधिक हलचल और आवाज़ सुनाई दे रही थी। यहाँ साफ तौर पर गिल-हरियाँ डरकर रहने आ गई थीं। उन्हें बाढ़ न सही, भूख और मौत का डर तो था ही। इसीलिए दलदलों और हरे-भरे मैदानों को छोड़कर वे यहाँ आ बसी थीं।

पैनी बोला, "मैं शर्त के साथ कहता हूँ कि जंगल का केवल यही हिस्सा छोटे-मोटे जानवरों से भरा हुआ है।"

वे कुछ क्षण तक घने जंगल में घुसने से हिचकिचाए। उन्होंने निश्चय किया कि पहले सोचे अनुसार यह अधिक उचित है कि नीचे के हिस्सों से होते हुए पहले नुकसान का अन्दाज़ लिया जाय और तब बचे हुए जानवरों को देखा जाय। तब उन्होंने सिल्वर घाटी की ओर अपने घोड़ों का रुख कर दिया।

"जो कुछ मैं देख रहा हूँ, क्या तुमने भी देखा ?"

"अगर तुमने भी यह न देखा होता, तो मैं शायद इस पर विश्वास ही न करता।"

सिल्वर घाटी खूब भरकर बह रही थी। चारों ओर से बाढ़ का पानी इसमें आ-आकर मिल रहा था और एक अजीब प्रलय चारों ओर मची हुई थी। इसके किनारों पर मरे हुए जानवर बह रहे थे।

पैनी बोला, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि संसार में इतने अधिक साँप होंगे।"

ऊँची ज़मीनों पर रहने वाले साँपों के शरीर गन्ने से अधिक मोटे थे। इन मरे हुए साँपों में फनियर, राजा, काला और अनेक प्रकार के छोटे-बड़े साँप मौजूद थे। बिलकुल किनारे पर रुई-से मुलायम मुँह वाले एक खास जाति के साँप और कुछ दूसरे पानी के साँप तैर रहे थे।

बक बोला, "मुझे यह बात समझ में नहीं आई, क्योंकि कोई भी साँप

तैर सकता है। मुझे एक बार नदी के बीचोंबीच एक फनियर साँप मिला था।"

पैनी बोला, "ठीक है, परन्तु ज़मीन के साँप अक्सर अपने बिल में ही पकड़े जाते हैं।"

यह बाढ़ हर जगह आई थी, मानो रैकून की खोजने वाली अंगुलियाँ हों। इसने ज़मीन पर रहने वाली तमाम ऐसी चीज़ों को नष्ट कर दिया था, जिनका एकमात्र सहारा ज़मीन ही थी। एक छौना फूले हुए शरीर के साथ वहीं मरा पड़ा था। जोडी का दिल उछल पड़ा। अगर कहीं जंगल में होता तो शायद फ्लैग भी इसी भाँति मरा हुआ होता। ज्योंही वे आगे बढ़े, दो फनियर साँप उनके सामने से ही ज़मीन पर निकले। उन्होंने इन्हें नहीं देखा, मानो बड़े खतरे के मुक़ाबले में छोटा खतरा कोई अर्थ नहीं रखता।"

पैनी बोला, "अच्छा होगा कि इस ऊँची ज़मीन को हम पार करें, क्योंकि यही हमारे जीवन की सफलता की बात होगी।"

बक ने स्वीकृति दी। वे पूरब की तरफ आगे नहीं जा सकते थे। इसलिए उथले पानी को काटते हुए वे उत्तर की ओर मुड़े। यहाँ जहाँ भी दलदल थी, वहाँ जोहड़ बन चुके थे और जहाँ हरी घास के मैदान थे, वहाँ दलदल बन चुके थे। केवल ऊसर जंगल ही इस विनाश से बचे हुए थे। यहाँ पर भी चीड़ उखड़ चुके थे और जो बचे खड़े थे वे एक ओर को झुक चुके थे। उन्हें हवा और बारिश ने पश्चिम की ओर झुका दिया था।

पैनी बोला, "इन पेड़ों को सीधा होने में काफी समय लगेगा।"

नदी तक पहुँचते-पहुँचते वे काफी परेशान हो गए थे। पानी अब भी बहुत ऊँचा था। जार्ज झील भी काफी नीची थी। तीन-चार दिन पहले यहाँ पानी और भी ऊँचा रहा होगा। वे रुके और झील के ढलान की ओर उन्होंने डाक्टर की ज़मीन की ओर देखा। सामने का घना हरा मैदान अब सरू के पत्तों के कीचड़ से भरा हुआ था। बड़े-बड़े ऊँचे सनावर, अखरोट, कीकर, मैग्नोलिया, नारंगी के पेड़ आदि सभी बुरी तरह गीले और फूले हुए-से खड़े थे।

पैनी बोला, "आओ, इस सड़क पर बढ़कर देखें।"

बैक्स्टर परिवार की ज़मीन से यह सड़क दक्षिण-पूरब की ओर उतरती

हुई आजकल नाले के रूप में पानी बहने का मार्ग बनी हुई थी। इस समय यह सूख चुकी थी। इसमें से होकर वे आगे बढ़े। सामने ही डाक्टर का घर दिखाई दिया। यह अँधेरे और छाया में बड़े-बड़े पेड़ों के नीचे खड़ा था।

बक बोला, "मुझे तो सचमुच अचरज है कि कोई भी आदमी, भले ही वह बड़ा भारी शराबी हो, ऐसी अन्धेरी जगह रहने के लिए क्यों चुन लेता है?"

पैनी बोला, "अगर सभी लोग एक-सी जगह चुनें तो सभी जगह भीड़ होगी।"

पानी घुटनों तक ऊँचा था। फर्श के पत्थरों से पता चलता था कि पानी फर्श से ऊँचा चढ़ आया था। बरामदे के लकड़ी के फट्टे ऊपर की ओर मुड़ गए थे। ये लोग सामने की सीढ़ियों पर चढ़े। वहीं पर कुछ मुलायम साँप छिपे बैठे थे। सामने ही एक पर्ची लिखकर दरवाज़े पर बाँधी हुई थी। स्याही से इस पर एक सन्देश लिखा हुआ था। स्याही मिट जाने पर भी इसके अक्षर साफ़ थे।

बक बोला, "हम लोग अच्छा नहीं पढ़ सकते। पैनी, तुम पढ़ो।"

पैनी ने वे अक्षर पढ़े—"मैं समुद्र की ओर जा रहा हूँ। वहाँ यह पानी बहुत अधिक नहीं लगेगा। मैं वहाँ पर तब तक शराब में डूबा रहूँगा, जब तक यह तूफ़ान समाप्त नहीं हो जाता। मैं यहाँ और समुद्र के बीच में ही कहीं पड़ा हूँगा। कोई मुझे तब तक ढूंढने न आए, जब तक कि किसी की गर्दन ही न टूट गई हो या कोई बच्चा न होने वाला हो।—डाक्टर। पुनश्च—अगर गर्दन टूट गई हो, तब आने की कोई आवश्यकता नहीं।"

बक, मिलव्हील और पैनी चिल्ला पड़े और जोडी भी देखादेखी हँस पड़ा।

बक बोला, "यह डाक्टर तो भगवान् के सामने भी कोई-न-कोई मज़ाक करेगा।"

पैनी बोला, "तभी तो वह अच्छा डाक्टर है।"

"वह कैसे?"

"वह यूँ कि वह भगवान् को भी बार-बार मूर्ख बनाता रहता है।"

वे बहुत देर तक हँसते रहे। चारों ओर के उदास और दुखिया संसार

दिल में हल्का करना अच्छा ही था। वे घर के अन्दर गए और वहाँ उनको बिस्कुटों का एक डिब्बा और शराब की एक बोतल मेज़ पर ही मिली। उन्होंने इन्हें भी अपने थैलों में डाल लिया और फिर वे सड़क पर आ गए; और उत्तर की ओर मील-भर से कुछ अधिक चलकर पश्चिम की ओर मुड़ गए।

पैनी बोला, "हौपकिन्स मैदान में जाने की ज़रूरत नहीं। हम मान सकते हैं कि वह एक झील बन गया होगा।"

बक और मिलव्हील भी सहमत हो गए। उस मैदान के दक्षिण में वही कुछ मिला। कमज़ोर और छोटे जन्तु नष्ट होकर बह चुके थे। खाड़ी के एक किनारे एक भालू आँखों के सामने ही भारी चाल से कूदता चल रहा था।

पैनी बोला, "उसे मारने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमें उसका माँस आज से एक महीने बाद ही चाहिए। इसे बहुत दूर ढोकर ले जाना पड़ेगा और इस बीच रात से पहले ही पहले हमें ऐसे कई शिकार मिल जाएँगे।"

फौरेस्टर भाइयों ने अनमने भाव से मान लिया। उनके लिए शिकार का मतलब शिकार ही था, चाहे उसका कोई फायदा हो या न हो। पैनी जब तक किसी चीज़ का लाभ न देख ले, उसे मारना नहीं चाहता था। वह तो अपने दुश्मन भालुओं को भी तभी मारता था जब उनके माँस का कोई फायदा और ज़रूरत हो। वे पश्चिम की ओर बढ़ते रहे। यहाँ गाल-बेरी की झाड़ियाँ फैली हुई थीं। अच्छे मौसम में इनमें ही भालू, भेड़िया और चीते आकर रहते थे। यहाँ की ज़मीन घनी थी। वनस्पतियाँ छोटी थीं। और यहाँ की खाड़ियाँ उत्तर और पूरब की ओर खुराक और छिपने का स्थान बनाती थीं। परन्तु अब यह जगह एक दलदल बन चुकी थी। जहाँ रेतीली ज़मीन थी, वहाँ से पानी निकल चुका था। परन्तु जहाँ ज़मीन भरी थी, वहाँ मिट्टी पर पानी अब भी जमा था। इन झाड़ियों के बीच में ही सनावरों के टापू और कुछ खजूर के हरे मैदान चारों ओर फैले हुए थे। इस दलदल का किनारा काटकर वे इन हरे मैदानों की ओर बढ़ गए।

पहले-पहल जोडी को कुछ भी न दिखाई दिया, पर पैनी के बार-बार

इधर-उधर के वृक्षों की ओर इशारा करने पर उसने अनेक पशुओं की आकृतियाँ देखीं। वे साथ-साथ बढ़ रहे थे। वे सारे जन्तु उन्हें निडर से लगे। एक बहुत अच्छा बारहसिंगा उनकी ओर ताक रहा था। लाचार होकर बक ने इस पर गोली चला दी। अब वे फिर पास-पास बढ़ने लगे। बनबिलाव और बिल्लियाँ पेड़ों की शाखों में से उनकी ओर ताकती रहीं। बक आदि ने उन्हें मारने की ज़िद की।

पैनी बोला, "यह अच्छा नहीं कि हम उनकी मुसीबतें बढ़ा दें। इस संसार में उनके लिए भी काफी जगह रहनी चाहिए। यही उचित है।"

मिलव्हील बोला, "पैनी, तुम्हारे साथ रहना भी एक मुसीबत है। तुम्हें एक प्रचारक ने पाला है। तुम तो शेर और भेड़ियों को भी साथ-साथ सुलाकर ही प्रसन्न रहोगे!"

पैनी ने सामने की ऊँची ज़मीन की ओर इशारा किया और बोला, "वहाँ पर तुम्हें हिरण और बिल्लियाँ आदि बहुत कुछ मिलेगा।"

पर उसे यह मानने पर मजबूर होना पड़ा कि हर बनबिलाव, भालू, बिल्ली, भेड़िया और चीता उनके अपने सूअरों, चूज़ों, पशुओं आदि के लिए एक खुला ख़तरा थे। हिरण, रैकून, गिलहरियाँ और कंगारू आदि के लिए भी इन चीज़ों का ख़तरा बराबर था। ये चीज़ें शिकार के लिए ज़रूरी थीं। ऐसा लगता था, जैसे चारों ओर 'खाओ या खाये जाओ' अथवा 'मारो या भूखे रहो' की पुकार मची हुई थी।

अब उसे भी बड़ी बिल्लियों के शिकार में शामिल होना पड़ा और छः को उन्होंने मार गिराया। जोडी ने एक बिल्ली मारी। पुरानी भरने वाली बन्दूक के झटकों ने उसे घोड़े की पीठ से लगभग गिरा ही दिया था। उतरकर उसने फिर से बन्दूक भरी। बक आदि ने उसकी पीठ थपथपाई। सबने मिलकर बारहसिंगे की खाल आदि उतारी। उस पर माँस थोड़ा था, जिससे भूख की कमज़ोरी स्पष्ट थी। उन्होंने वे शव बक के घोड़े पर डाल दिए और तब सनावरों के टापू में जा पहुँचे। बहुत दूरी पर कुछ धुँधली आकृतियाँ भाग रही थीं। जानवरों को इधर-उधर डरकर भागते हुए देखना और उनके सरकने की आवाज़ सुनना बड़ा अजीब-सा लग रहा था।

बनबिलावों की खाल अच्छी और बचाने लायक नहीं थी।

पैनी बोला, "इनका माँस कुत्तों के लिए अच्छा रहेगा और हम इसे आसानी से ढो सकेंगे।"

कुत्ते उन बिल्लियों की कमर के माँस को पहले ही खा रहे थे। इन तूफ़ान के दिनों में उनको भी पूरा खाना न मिला था। बिल्लियों का माँस साफ करके घोड़ों पर लटका दिया। दोपहर बाद इस समूह ने अपने को फौरेस्टर लोगों की ज़मीन के उत्तर और पश्चिम की ओर पाया। उनकी इच्छा हुई कि अभी वे आगे चलते रहें और आज की रात कहीं बाहर ही बिताएँ। एक-दो घंटे के लिए धूप भी तेज़ हो गई। चारों ओर एक सड़ी हुई-सी गन्ध गीली ज़मीन और पानी से उठ रही थी। जोडी की तबीयत कुछ मिचला गई।

बक बोला, "मुझे खुशी है कि फौडरविंग इस समय यहाँ नहीं है। उसे जानवरों का इस तरह मरना अच्छा नहीं लगता।"

अब भालू फिर से दिखाई देने लगे। भेड़िए और चीते सामने नहीं थे। वे जंगल में से होकर कुछ मील तक बढ़ते रहे। यहाँ हिरण और गिलहरियाँ अधिक थीं। लगता है कि वे यहाँ से कभी निकले ही नहीं थे। उन्हें यहीं सुरक्षा अनुभव हुई। वे सब साहसी दीखती थीं, पर भूखी भी। फौरेस्टर लोगों ने कुछ लोभ के कारण और कुछ इस इच्छा से कि दोनों परिवारों को माँस की काफी ज़रूरत थी, एक और बारहसिंगा मार लिया और उसे मिलव्हील के घोड़े पर लटका दिया।

साँझ होते-होते जंगल खतम कर वे फिर सनावरों के टापू में पहुँच गए। यहाँ से काफी दूर दक्षिण में जूनिपर मैदान था। अब वहाँ भी बाढ़ आ गई होगी। इसके पूरब की ओर एक फैली हुई ज़मीन में, जहाँ न जंगल था और न मैदान, न ही कोई टापू था और न दलदल और हरियावल, उन्हें एक खुली खेत जैसी जगह दिखाई दी। सबने रात को यहीं डेरा डालने का निश्चय किया, हालाँकि अभी एक-दो घंटे दिन बाकी था। कोई नहीं चाहता था कि वे रात अँधेरे में निचले दुर्गन्ध भरे और साँपों वाले मैदानों में रहें। उन्होंने देवदार के दो बड़े पेड़ों के नीचे अपना डेरा डाला। ऊपर रक्षा के लिए कोई चीज़ तो न थी, परन्तु रात साफ थी और ऐसी बुरी हालतों में खुले में रात गुज़ारना अधिक अच्छा था।

मिलव्हील बोला, "जब मैं किसी चीते के साथ लेटता हूँ तो मेरी इच्छा होती है कि मैं उसे मार डालूँ।"

उन्होंने अपने घोड़ों को खुला छोड़ दिया और उनकी लगाम ढीली कर दी, ताकि वे रात-भर अच्छी तरह चर सकें। मिलव्हील सनावरों के एक समूह में दक्षिण की ओर निकल गया, औरों ने उसे चिल्लाते हुए सुना। कुत्ते भी उसके पीछे दौड़ते हुए गए। उन्हें दिन-भर की इस दौड़-धूप में खूब मज़ा आ रहा था। वे धीमे-धीमे चल रहे थे, क्योंकि हर जगह गन्ध और पाँवों के निशान बहुत अधिक थे। जूलिया ऊँची आवाज़ में चिल्लाई।

पैनी बोला, "यह बिल्ली है।"

बनबिलावों का उत्साह समाप्त हो चुका था। चारों कुत्ते भौंक रहे थे। उनकी आवाज़ों में पतली और भारी सभी आवाज़ें मिली थीं। मिलव्हील चिल्लाया।

पैनी बोला, "क्या तुम फौरेस्टरों को कभी बनबिलाव का शिकार नहीं करने को मिला?"

बक बोला, "वह कभी भी किसी बनबिलाव पर इस तरह नहीं चिल्लाएगा।"

कुत्तों की आवाज़ तेज़ होकर बढ़ गई। तीनों ही इस आवाज़ से जोश में आ गए और उधर की ओर बढ़ पड़े। एक जंगली सनावर बहुत बड़े आकार का था। इसकी आधी ऊँचाई पर उन्होंने एक अजीब-सी चीज़ देखी। यह मादा चीता थी। इसके दो बच्चे भी साथ थे। यह कमज़ोर और पतली थी, पर इसकी लम्बाई बहुत अधिक थी। इसके बच्चों के शरीर पर अब बचपन के नीले और सफ़ेद निशान मौजूद थे। जोडी को लगा कि इनके ये निशान अब तक के देखे सभी बच्चों से ज़्यादा प्यारे थे। वे घर की पालतू बिल्लियों से अधिक बड़े थे। उन्होंने अपनी मूँछें अपनी माँ की गुर्राहट की नक़ल में ऊपर उठाईं। उसकी शक्ल बड़ी भयावनी थी। उसके दाँत नंगे थे और उसकी पूँछ आगे-पीछे उठ-गिर रही थी। उसके पंजे सनावर की शाख पर चल रहे थे। लगता था पास जाने वाले किसी भी मनुष्य या कुत्ते पर वह टूट पड़ेगी। कुत्ते पागल हो रहे थे।

जोडी ने पुकारा, "मुझे ये बच्चे चाहिएँ!"

मिलव्हील बोला, "पहले हम उसे मार लें और तब कुत्तों को छोड़ देंगे।"

पैनी बोला, "हमारे चारों कुत्ते बहुत थके हुए हैं।"

बक बोला, "तुम बिलकुल ठीक हो। हमें केवल उसे ही मारना चाहिए।" और, यह कहकर, उसने गोली दाग़ दी। धरती पर शिकार के गिरते ही कुत्ते उस पर टूट पड़े। रही-सही ज़िन्दगी भी उसमें से खतम हो गई। बक ने पेड़ पर चढ़कर शाख हिला दी।

जोडी फिर चिल्लाया, "मुझे ये बच्चे चाहिएँ!"

नीचे गिरने पर, उसने सोचा, वह दौड़कर उन्हें उठा लेगा। उसे विश्वास था कि वे बहुत सीधे होंगे। आखिर वे नीचे गिरे। बक को बहुत अधिक हिलाना पड़ा। जोडी तेज़ी से दौड़ा पर उससे पहले कुत्ते वहाँ पहुँच चुके थे। इससे पहले कि वह पहुँचता, बच्चे मर चुके थे। मरते-मरते भी, उसने देखा कि, उन्होंने कुत्तों पर अच्छी तरह वार किया और उन्हें काट-कर पंजे चलाए। उसे लगा कि अगर कहीं वह उन्हें पकड़ लेता तो उसका माँस भी चिथड़े-चिथड़े हो जाता। फिर भी वह उन्हें ज़िन्दा ही देखना चाहता था।

पैनी बोला, "बेटा, अफसोस है, पर तुम इन्हें रख भी न पाते। ये लोग बचपन से ही नीचता सीख जाते हैं।"

जोडी ने उनके छोटे, पर खतरनाक, दाँत देखे।

"क्या मैं एक और थैला बनाने के लिए इनकी खाल ले सकता हूँ?"

"ज़रूर। बक उनकी खाल उतारने में मेरी सहायता करेगा, अगर कुत्ते उसे तब तक फाड़ न डालें।"

जोडी ने उनके शरीरों को उठाया और उन्हें हिलाता हुआ बोला, "मैं किसी चीज़ को मरते हुए नहीं देख सकता।"

सभी चुप रहे। पैनी धीरे से बोला, "बच्चे, तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि कोई भी चीज़ मौत से नहीं बच सकती।"

"हाँ, मैं मानता हूँ।"

"बात यह है कि मौत एक पत्थर की दीवार है, जिसे लाँघना असंभव है और न कोई अब तक लाँघ सका है। तुम इससे टक्कर ले सकते हो, पर

अपना ही सिर फोड़ोगे। चिल्लाओगे तो कोई उत्तर देने वाला न होगा।"

बक बोला, "पर मैं अपनी मौत के बारे में कह सकता हूँ कि जब मैं मरूँगा तब मैं इस चिल्लाहट को अवश्य खरीद लूँगा।"

उन्होंने कुत्तों को वहाँ से हटा लिया। वह तीन गज़ से भी ऊपर लम्बी थी, पर उसमें से तेल निकालना असम्भव ही था। वह कमज़ोर थी।

पैनी बोला, "या तो मुझे कोई मोटा चीता फँसाना पड़ेगा, या फिर इस गठिया से छुटकारा पाना होगा।"

उसकी खाल भी कोई बहुत अच्छी हालत में न थी। उन्होंने उसका दिल और जिगर कुत्तों के लिए भूनने को निकाल लिया।

पैनी बोला, "जोडी, उन बच्चों की अधिक देखभाल से कोई लाभ नहीं। जाओ, उन्हें छोड़कर कुछ लकड़ी ले आओ। मैं उनकी खाल तुम्हारे लिए उतार दूँगा।"

जोडी चला गया। साँझ का आकाश साफ़ और गुलाबी रंग का था। सूर्य पानी की ओर बढ़ता जा रहा था। उसकी छायादार अंगुलियाँ जैसे चमकते आकाश से फूली हुई धरती तक बढ़ती आ रही थीं। जंगली सनावरों के गीले पत्ते और चीड़ों के सूई जैसे पत्ते इस प्रकाश से चमक रहे थे। यह देखकर जोडी अपना दुख भूल गया। रात के डेरे के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी था। लकड़ी सब जगह गीली थी, परन्तु घूमते-फिरते हुए उसे एक जगह एक गिरा हुआ चीड़ मिल गया। इसके एक किनारे से काफी राल निकल रही थी। उसने बक और मिलव्हील को बुला लिया और वे तीनों इसे डेरे की जगह तक घसीट लाए। अब वे इसे रात-भर जला सकते थे और इस पर दूसरी लकड़ियों को सुखा सकते थे। उन्होंने इसे आधे में से काट लिया और दोनों टुकड़ों को एक-दूसरे के साथ-साथ रख दिया। जोडी ने फिर पत्थर और लोहे से आग जलाने की कोशिश की, पर पैनी ने फिर उसके हाथ से लेकर उन दोनों लट्ठों के बीच में तेल वाली लकड़ी के टुकड़ों के साथ आग जलाई। इस पर थोड़े से झाड़ी के टुकड़े रख दिए और आग जल्दी ही भड़क उठी। तब कुछ बड़े टुकड़े और लट्ठे इस पर लाकर रखे गए। पहले उनमें से धुआँ उठा, फिर वे सुलगने शुरू हुए और तब उनमें से लपटें निकलने लगीं। अब इस चूल्हे पर गीली से गीली लकड़ी भी सुखाई जा

सकती थी, और तब उसे धीमे-धीमे जलाया जा सकता था। जोडी आस-पास से प्राप्त तमाम वह लकड़ी उठा लाया, जो उस अकेले से उठाई जा सकती थी। उसने रात-भर जलने के लिए एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया। बक और मिलव्हील भी अपने लायक बड़े-बड़े लट्ठे ले आए।

पैनी ने मोटे बारहसिंगे की पीठ के माँस में से कुछ टुकड़े काटे और उन्हें शाम के भोजन के लिए तलने के लिए रख लिया। एक ओर से मिल-व्हील ताड़ के फूले हुए पत्ते थाली के स्थान पर बरतने को ले आया, ताकि उन पर भोजन परोसा जा सके। वह कुछ और भी चीज़ें डेरे की सफ़ाई के रखने लायक ले आया। साथ ही ताड़ के दो जिगर भी लेता आया। उसने उन पर से एक पर एक सफेद परत उतारी और अन्त में साफ़ पपड़ी वाले दो मीठे जिगर निकल आए।

वह बोला, "मुझे यह तलने वाली बाटी चाहिए। पैनी, क्या मेरी लाई दलदली सब्ज़ी के लिए इसे दोगे? इसके बाद तुम उस माँस को तलते रहना।"

उसने उन ताड़ के जिगरों के पतले-पतले टुकड़े किए। उसने पैनी से चर्बी के लिए पूछा। पैनी ने सन के थैले में पड़ी एक बोतल की ओर इशारा किया। जोडी औरों की ओर देखता हुआ इधर-से-उधर घूमता रहा। उसका काम था कि छोटी-छोटी शाखों से आग जलाता रहे और उसे बुझने न दे। लट्ठे अच्छी तरह जल रहे थे। भूनने के लायक अंगारे पहले ही हो चुके थे। बक ने कुछ नुकीली छड़ियाँ ऐसी तैयार कर ली थीं जिन पर माँस भूना जा सके। मिलव्हील ने अपनी दलदली सब्ज़ी के लिए पास के जोहड़ से पानी लिया। इसे ताड़ के पत्ते से ढँक दिया और अंगारों पर पकाने के लिए रख दिया।

पैनी बोला, "भई, मैं कॉफ़ी लाना भूल गया।"

बक बोला, "कोई बात नहीं, डाक्टर विल्सन की शराब हमारे पास है ही। उसके रहते क्या कमी?"

बोतल लाकर उसने सबको दी। पैनी माँस पकाने के लिए तलनेवाली बाटी की प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु मिलव्हील की सब्ज़ी अभी बनी न थी। उसने उन छड़ियों को ठीक किया, जिन पर बिलावों का माँस लटकाया

हुआ था। उसने बिलावों और चीते के दिल और जिगर काटे और उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके छड़ियों में लटकाकर अंगारों पर भूनने के लिए रख दिया। उनकी गन्ध बहुत ही उत्तेजक थी। जोडी ने हवा को बार-बार सूँघा और अपने पेट पर हाथ फेरने लगा। पैनी ने हिरणों के जिगरों को भी चीरा और टुकड़े-टुकड़े करके बहुत सावधानी से बक की चिमटानुमा छड़ियों पर टिका दिया और तब उसने हरेक के हाथ में अपनी-अपनी छड़ियाँ भूनने के लिए दे दीं, ताकि हर कोई अपने स्वाद के अनुसार भून सके। लपटें कुत्तों के लिए रखे गए माँस को भी पका रही थीं। उससे उठने वाली गन्ध कुत्तों को भी वहीं खींच लाई। वे भी वहीं आकर लेट गए और अपनी पूँछों को आगे-पीछे उठाकर गुर्राने लगे। बिल्ली का कच्चा माँस उनके लिए उतना उत्तेजक न था। उन्होंने तो इसलिए उसे लगातार काटा था ताकि अपनी जीत साबित कर सकें। भूने हुए माँस का स्वाद कुछ और ही था। कुत्ते अपने हिस्से के टुकड़ों को चबाने लगे।

जोडी बोला, "मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह बहुत अच्छा है।"

पैनी ने आग पर से एक टुकड़ा उठाया और उसे दिया। बोला, "ज़रा चखो और बताओ। यह उबाले हुए सेब से भी अधिक गर्म है।"

जोडी हिचकिचाया, पर तब उसने अपनी अँगुली उस गर्म सुगन्धित माँस पर लगाई और उसे मुँह में डाला। बोल पड़ा, "यह बहुत ही अच्छा है।"

सब हँस पड़े। पर वह दो टुकड़े खा ही गया।"

पैनी बोला, "कुछ लोग कहते हैं कि बनबिलाव का जिगर खाने से आदमी निडर बन जाता है। जोडी, आज हम यह बात देखेंगे।"

बक बोला, "सचमुच इसकी गन्ध बहुत अच्छी है। एक टुकड़ा इधर भी दो।"

उसने इसे चखा और बताया कि और किसी भी जिगर की भाँति यह भी बहुत अच्छा है। मिलव्हील ने भी एक टुकड़ा खाया। पर पैनी ने कुछ न लिया।

वह बोला, "अगर मैं कहीं और अधिक बहादुर बन गया तो मैं तुम फौरेस्टरों पर टूट पड़ूंगा और फिर से कोई चोट खा बैठूंगा।"

शराब की बोतल एक बार फिर घूम गई। आग जल रही थी। माँस का रस लपटों में गिर रहा था, धुआँ और गन्ध मिलकर उठ रहे थे। उधर सनावरों के पीछे सूरज छिप रहा था। मिल की सब्ज़ी भी बनकर तैयार हो गई थी। पैनी ने उसे ताड़ के पत्ते पर उलटा दिया और एक सुलगते हुए लट्ठे पर गर्म रखने के लिए उसे रख दिया। उसने तलने वाली बाटी को साफ किया और अंगारों पर रखकर इसमें सूअर की कमर का माँस डाल दिया। जब वह भुन गया तब उस पर गर्म-गर्म चर्बी भी डाल दी। इसके बाद इसी में उसने हिरण की कमर के माँस के टुकड़े सख्त और कोमल रूप में तल लिए। बक ने ताड़ के तने में से प्याले बना लिए और तब हर कोई अपना हिस्सा लेकर उस सब्ज़ी में भिगो-भिगोकर खाने लगा। पैनी ने आटा, नमक और पानी को मिलाकर पकौड़े-से तल लिए। इस चर्बी में माँस पकाया था।

बक बोला, "अगर मुझे यह पता हो कि स्वर्ग में ही ऐसा सुन्दर खाना मिलेगा, तो मैं मरने से कभी न कतराऊँ।"

मिलव्हील बोला, "जंगल में हर भोजन बहुत अच्छा लगता है। घर में हलवा खाने की बजाय जंगल में ठण्डी और बासी रोटी खाना मुझे अच्छा लगता है।"

पैनी बोला, "मेरे साथ भी यही बात है।"

बिलावों का माँस पक चुका था, इसे ठण्डा करके उन्होंने कुत्तों को दे दिया। वे इस पर लोभ में टूट पड़े और तब पानी पीने के लिए जोहड़ की ओर चले गए। कुछ देर अजीब-अजीब सुगन्धों से खिंचे-से वे इधर-उधर भटकते रहे और तब उस जलती हुई आग के पास ही लेटने के लिए लौट आए, क्योंकि ठण्ड बढ़ती जा रही थी। बक, मिलव्हील, जोडी अपना पेट पूरा भर चुके थे। वे भी लेटकर आकाश की ओर ताकने लगे।

पैनी बोला, "बाढ़ आए न आए, यह सैर खुद बहुत अच्छी है। मैं तुम लोगों से एक वायदा लेना चाहता हूँ। जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ तो मुझे किसी ठूँठ पर बिठा देना और शिकार की बातें सुनने देना। मुझे कहीं खाड़ी में छोड़कर भाग न जाना।"

तारे टिमटिमा रहे थे। पिछले नौ दिन में यह ऐसा पहला मौक़ा था।

ग्राखिर पैनी ने बाकी बचे सामान को हटाया। उसने कुत्तों को बची हुई राटियाँ खाने को दीं। चर्बी की बोतल पर उसने भुट्टे की डंठल फिर से लगाई। उसने बोतल को सीधा उठाकर देखा ग्रौर हिलाया।

वह बोला, "ग्ररे, यह क्या किया ? मैं लुट गया। हमने यह मेरे जोड़ों के दर्द की दवाई बरत ली।"

उसने थैले में फिर से हाथ डाला ग्रौर दूसरी शीशी निकाली ग्रौर खोली। इसमें ग्रसल तेल मौजूद था।

वह बोला, "ग्ररे, मिलव्हील ! तुमने ग्रपनी सब्ज़ी के लिए चीते का तेल बरत लिया।"

कुछ देर शान्ति रही। जोडी को ग्रपना पेट पलटता नज़र ग्राया।

मिलव्हील बोला, "मैं कैसे जानता कि यह चीते का तेल है ?"

बक ने ग्रपनी साँस रोक ली, पर तभी वह बहुत तेज़ हँसी से फूट पड़ा। बोला, "मेरे पेट में क्या होता है ?' इसकी मुझे चिन्ता नहीं। मुझे तो इस बात की खुशी है कि मैंने इतनी ग्रच्छी सब्ज़ी कभी नहीं खाई।"

पैनी बोला, "खाई तो मैंने भी नहीं ! पर जब मेरी हड्डियाँ दर्द करेंगी तब मैं ज़रूर चाहूँगा कि इस सब्ज़ी में से तेल निकलकर इसी बोतल में ग्रा जाय।"

बक बोला, "खैर, हमें यह पता चल गया कि जंगल में रहने पर कौन-सा तेल बरतना चाहिए।"

जोडी का पेट फिर से शान्त हो गया। वनबिलाव के जिगर के दो टुकड़े खाने के बाद भी दिल छोटा करना उसे ग्रच्छा न लगा। पर यह चीते का तेल कुछ ग्रौर महत्त्व रखता था; क्योंकि वह देख चुका था कि सर्दियों की रातों में पैनी इसे ही ग्रपने घुटने ग्रौर हाथों में रगड़ता है।

मिलव्हील बोला, "ग्रच्छा, मैं सबके बिस्तरों के लिए नर्म शाखाएँ काट लाता हूँ, क्योंकि यह ग्रपराध मैंने ही किया है।"

पैनी बोला, "मैं भी तुम्हारे साथ ग्राऊँगा। ग्रगर मैं सो गया ग्रौर उठकर तुम्हें झाड़ियों में देख लिया तो मैं समझ बैठूँगा कि कोई भालू ग्रा गया है। मैं सच कहता हूँ कि मैं कभी नहीं सोच पाया कि तुम लोग इतने बड़े कैसे हो गए हो ?"

मिलव्हील बोला, "अरे, वाह ! हम लोग चीते के तेल पर पाले गए हैं।"

खुशी और हँसी के साथ हर कोई अपना बिस्तर बनाने में जुट गया। जोडी ने चीड़ की पतली शाखें तोड़ीं और उन पर काई आदि बिछाकर बिस्तर तैयार किया। उन्होंने अपने बिस्तर आग के आस-पास बनाए। बक और मिल दोनों ही अपने बिस्तर पर धड़ाम से लेट गए।

पैनी बोला, "मैं शर्तिया कहता हूँ कि पाँवकटा खुर्राट भालू भी इतनी भारी आवाज़ के साथ कभी नहीं सोता होगा।"

बक बोला, "मैं शर्त के साथ कहता हूँ कि जून पक्षी भी तुम लोगों की बजाय बहुत जल्दी सो जाता है।"

मिल बोला, "मैं सोचता था, काश ! हमारे पास भूसे का एक बोरा गदेले के लिए होता।"

पैनी ने कहा, "जहाँ तक मुझे याद है, सबसे अच्छा गद्दा मैंने बिल्ली की पूँछ के रोयों से बना हुआ देखा है। इस पर सोना मानो बादल पर सोना था। परन्तु, बिल्ली की इतनी पूँछें इकट्ठी करना बहुत देर में सम्भव हो पाया।"

बक बोला, "सबसे अच्छा गद्दा तो पंखों से बना होता है।"

पैनी बोला, "क्या तुम्हारे में से किसी को याद है कि तुम्हारे पिता ने कभी पंखों के गद्दे से क्या तूफ़ान मचाया था ?"

"तुम्हीं बताओ !"

"यह तुम्हारे पैदा होने से पहले की बात है। हो सकता है कि तुममें से दो-तीन अभी पलनों में पड़े हों। मैं भी खुद बहुत छोटा था। मैं तुम्हारी ज़मीन पर अपने पिता के साथ गया। शायद मेरे पिता तुम्हारे पिता को शान्ति देने गए थे। जब तुम्हारे पिता जवान थे, तो वह तुम सबसे अधिक जंगली थे। वह मक्का की शराब का पूरा मर्तबान पानी की तरह पी जाते थे। उनका यह प्रायः रोज़ का ही काम था। ख़ैर, उस दिन हम तुम्हारे यहाँ गए और वहाँ जाकर देखा कि तश्तरियाँ टूटी पड़ी थीं और अनाज रास्ते में बिखरा पड़ा था। कुर्सियाँ दरवाज़े में एक दूसरे पर अटकी हुई थीं और सब तरफ, चारों ओर, पंख ही पंख बिखरे हुए थे। लगता था जैसे

स्वर्ग के चूज़ों के पंख उड़कर आ गए हों। इस सब समूह के ऊपर वह गद्दा चाकू से बीच में चीरा हुआ पड़ा था।

"तुम्हारे पिता दरवाज़े तक आए। मैं यह तो नहीं कहूँगा कि वे शराब के नशे में चूर थे, पर तो भी उन्होंने पी ज़रूर हुई थी। आँख के सामने आने वाली हर चीज़को वह चीर रहे थे और अन्तिम चीज़ जो उन्हें दिखाई दी वह पंखों का गद्दा था। वह न पागल थे और न लड़ रहे थे। सच तो यह है कि वे चीज़ों को तोड़ते-फोड़ते आनन्द मना रहे थे। इस सबके बाद वह फिर शान्त और प्रसन्न हो गए। अब तुम भली प्रकार अनुमान कर सकते हो कि इस सब के बीच तुम्हारी माँ क्या कर रही होगी और क्या कह रही होगी? पर उस समय वह चुप थी और बर्फ-जैसी जड़ थी। वह अपनी आरामकुर्सी पर हाथ जोड़े बैठी थी। उसका मुँह जैसे लोहे से जकड़ा हुआ था। मेरे पिता प्रचारक होने के कारण मौक़े को समझ गए और उन्होंने निश्चय किया कि कभी अगली बार आकर बात करेंगे। इसलिए उस दिन इधर-उधर की बातें करके हम फिर लौट आए।

"पर तुम्हारी माता को सभ्यता और व्यवहार का पता था। उसने पिताजी को पीछे से बुलाया और रुककर भोजन करने के लिए कहा। उसने बताया कि हमारे पास मक्की के हलवे और शहद के अलावा और कुछ देने के लिए नहीं है। यही कुछ वह हमें देने को उत्सुक थी। तुम्हारे पिता उसकी ओर आश्चर्य में डूबकर देखने लगे और चिल्ला पड़े, "शहद? क्या अब भी कुछ शहद अन्दर बचा हुआ है?"

बक और मिलव्हील खूब हँसे और एक-दूसरे को थपथपाने लगे।

बक बोला, "अच्छा कुछ देर रुको, पहले मैं माँ से शहद की यही बात पूछ लूँ? कुछ देर इन्तज़ार करो।"

जोडी फौरेस्टरों के चुप होने के बाद भी बहुत देर तक हँसता रहा। उसके पिता ने एक कहानी इतने सच्चे ढंग से सुनाई कि उसे अब भी अपनी बाड़ के परले पार पंख उड़ते हुए नज़र आ रहे थे। इस हँसी से कुत्ते भी उठ गए और उन्होंने अपनी बैठक बदल ली। वे मनुष्यों और आग की गर्मी को अनुभव करने के लिए अधिक पास सरक आए थे। जूलिया उसके पिता के पाँवों के पास लेटी हुई थी। उसने सोचा, 'काश!

फ्लैग भी उसके साथ होता और अपनी कोमल खाल उसके साथ सटा सकता। बक ने उठकर एक और लकड़ी आग पर रख दी। वे सब दलदल के जंगली जानवरों की हलचलों पर अनुमान करने लगे। साफ तौर पर और जानवरों की अपेक्षा भेड़िये दूसरी दिशा में भाग रहे थे। उन्हें गीले हिस्से बिलकुल पसन्द नहीं थे। बड़ी बिल्लियों की अपेक्षा वे जंगल की ऊँची जगहों पर पहुँच गए। भालू आशा से बहुत कम मिल रहे थे।

बक बोला, "तुम जानते हो, इस समय भालू कहाँ होंगे? जंगल के दक्षिण में 'सैलर्स बीयर होल' या 'स्कौ पौण्ड बीयर होल' के आस-पास होंगे।"

मिल बोला, "नदी की ओर के टौली के हरे मैदान की ओर भी! मैं शर्त के साथ कहता हूँ।"

पैनी ने कहा, "वे दक्षिण की ओर नहीं होंगे, क्योंकि हवा और वर्षा, पिछले दिनों, दक्षिण-पश्चिम की ओर से आती रही है। उन्होंने इसकी ओर पीठ रखी होगी और उधर नहीं गए होंगे!"

जोडी ने अपनी बाँह अपने सिर के नीचे टिकाई और आकाश की ओर देखने लगा। यह तारों से इतना खचा हुआ था जैसे उजली छोटी-छोटी मछलियों से भरा कोई जोहड़ हो। उसके ऊपर के दोनों चीड़ों में से उसे आकाश दूधिया-सा दिखाई दिया, मानो ट्रिक्सी गाय ने झाग-भरे दूध की एक बड़ी बाल्टी को आकाश की ओर उँडेल दिया हो। चीड़ों की शाखें ठण्डी हवा के झोंके से इधर-उधर हिल-डुल रही थीं। उनके नुकीले पत्ते तारों की चमचमाहट से जैसे नहा उठे थे। आग से उठता हुआ धुआँ आकाश के तारों से मिलने के लिए बढ़ रहा था। चीड़ों के शिखरों तक जाते हुए उसने इसे देखा। उसकी आँखें झपकने लगीं। वह सोना नहीं चाहता था। उसकी इच्छा थी कि कुछ सुनता रहे। उसे मनुष्यों की शिकार की बातचीत सबसे अच्छी लगती थी। इसे सुनते ही उसकी रीढ़ की हड्डी में जैसे ठण्ड दौड़ जाती थी। तारों तक उठता हुआ और सामने आता हुआ धुआँ उसे ऐसा लगा, जैसे उसकी आँख पर कोई पर्दा डाल दिया गया हो। उसने आँखें बन्द कीं। कुछ देर तक उसे गीली लकड़ी के चुरमुराती जलने की आवाज़ की अपेक्षा आदमियों की शिकार की बातचीत बहुत धीमी लगी और तब

जैसे वह आवाज़ हवा में कहीं खो गई। अब वह आवाज़ न रहकर केवल स्वप्न की फुसफुसाहट-मात्र ही रह गई थी।

वह जब रात में जागा तो उसका पिता एकदम सीधा बैठा हुआ था। बक और मिल बहुत तेज़ी से खुर्राटे ले रहे थे। आग मन्द पड़ चुकी थी। गीली लकड़ी धीरे-धीरे जल रही थी। वह भी पैनी के साथ ही बैठ गया। पैनी ने पुकारा, "सुनो।"

बहुत दूर एक उल्लू चिल्लाया, एक चीते की चीख़ सुनाई दी, पर इनसे भी पास एक और आवाज़ थी, जैसे कहीं से आवाज़ करती हुई हवा गुज़र रही हो—'वू···वू···वू···'

उसे यह आवाज़ अपने पाँव के पास ही मालूम पड़ी। जोडी का माँस जैसे हलचल में आ गया। उसने सोचा, 'हो सकता है कहीं फौडरविंग का स्पेनी घुड़सवार न हो ? या फिर स्वर्ग के लोग ही मनुष्यों के समान कहीं बाढ़ और वर्षा से तंग आकर अपने अदृश्य हाथ इस आग की ओर तो नहीं बढ़ा रहे ?' पैनी ने अपने पाँव सीधे किए और चीड़ की तेल-भरी एक गाँठ को ढूँढने लगा, ताकि उसे मशाल के तौर पर जलाया जा सके। उसने इसे जलाया और सामने की ओर बड़े ध्यान से बढ़ने लगा। कुछ देर के लिए वह आवाज़ रुक गई। जोडी भी उसके पीछे चला। तभी एकदम सरकने की आवाज़ सुनाई दी। पैनी ने मशाल उठा ली। दो चमकती हुई चमगादड़-सी लाल आँखें इस मशाल की रोशनी से टकराईं। पैनी ने रोशनी और ऊपर उठाई और हँस पड़ा। जोहड़ से आने वाला यह अतिथि एक मगरमच्छ था।

वह बोला, "इसे भी ताज़े माँस की गन्ध आ गई। मैं नहीं चाहता कि यह बढ़कर उन फौरेस्टरों तक पहुँच जाय।"

जोडी बोला, "क्या इसी की आवाज़ आ रही थी ?"

"हाँ, यही था—साँस लेता हुआ, फुफकारता हुआ और स्वयं को ऊपर और नीचे उठाता-गिराता हुआ !"

"बक और मिलव्हील को हम इसके द्वारा तंग क्यों न करें ?"

पैनी हिचकिचाया और बोला, "मज़ाक के लिए यह बहुत बुरा होगा। यह दो गज से अधिक बड़ा है। अगर कहीं इसने उन दोनों में से किसी एक

को काट लिया तो यह एक बहुत बुरा मज़ाक साबित होगा।"

"तब क्या हम इसका शिकार करेंगे?"

"नहीं, कोई लाभ नहीं। हमारे पास कुत्तों को देने के बाद भी माँस बचा रहेगा। हमें क्या ज़रूरत है? मगरमच्छ कोई नुक़सान भी नहीं करता।"

"तो क्या आप उसे सारी रात यों ही फुफकारने देंगे?"

"नहीं, वह अभी यह फुफकारना और माँस की ओर बढ़ना छोड़कर भाग जाएगा।" यह कहकर पैनी उसके पीछे भागा। उसने भी अपना शरीर पिछले छोटे-छोटे पाँवों पर उठाया और जोहड़ की ओर फिर से भाग पड़ा। पैनी को मिट्टी या पत्थर जो कुछ भी मिला, इसकी ओर फेंकता हुआ दौड़ता रहा। मगरमच्छ बहुत ही तेज़ चाल से दौड़ रहा था। पैनी उसके पीछे था और जोडी उसके भी पीछे। अन्त में उसके जोहड़ में घुसने की आवाज़ आई।

"वह देखो, अब वह अपने सम्बन्धियों के पास पहुँच गया है। अब अगर वह यहीं रुका रहा तो ठीक है। हम इसे तंग नहीं करेंगे।"

वे फिर से आग की ओर लौट आए। अब भी अँधेरे में यह आग धीरे-धीरे जल रही थी। चारों ओर आधी रात का सन्नाटा था। तारे भी खूब अच्छी तरह चमक रहे थे। आग से निगाह हटाकर वे दोनों देख रहे थे कि तारों से जोहड़ का पानी भी जगमगा उठा है। हवा ठण्डी होकर बह रही थी। जोडी ने चाहा, काश! वह इसी तरह हमेशा अपने पिता के साथ डेरा डाल सके। उसे अपने पास केवल फ्लैग की ही कमी अनुभव हो रही थी। पैनी ने मशाल फौरेस्टरों के ऊपर घुमाई। बक ने अपनी बाँह से मुँह ढँक लिया, पर सोता रहा। मिलव्हील पीठ के बल सो रहा था। उसकी काली दाढ़ी भारी साँस के साथ-साथ उठ और गिर रही थी।

पैनी ने कहा, "इसकी साँस भी मगरमच्छ से कम गहरी नहीं है।"

उन्होंने कुछ और लकड़ी आग पर रख दी और फिर अपने बिस्तरों पर ही लौट आए, पर अब उन्हें ये बिस्तर उतने आराम देने वाले नहीं लग रहे थे, जितने पहली बार लेटने पर लगे। उन्होंने काई को हिलाया और चीड़ की शाखों को सीधा करने की कोशिश की। जोडी ने अपने लिए

बीचोंबीच एक घोंसला-सा बना लिया और अपने हाथ-पाँव सिकोड़कर लेट गया। कुछ देर वह आनन्द से नई लपटों को देखता रहा और फिर पहले जैसे ही एक गहरी नींद में सो गया।

सवेरा होने पर सबसे पहले कुत्ते जागे। उनके पास से ही एक लोमड़ी गुज़री थी, जिसकी हलकी-सी गन्ध अब भी हवा में थी। पैनी उछलकर उठा। उसने उन्हें बाँध डाला और बोला, "अरे, हमें इससे बड़े शिकार करने हैं।"

लेटे-लेटे ही जोडी उगते हुए सूर्य की ओर सीधा देख सकता था। अपने चेहरे के बराबर ऊँचाई पर उगते हुए सूर्य को देखना उसके लिए एक विचित्र अनुभव था। घर में उनके पास का जंगल बड़ा ऊँचा था और खेतों से परे तक का ऊँचा जंगल इस उगते सूर्य की रोशनी को रोके रखता था। परन्तु अब इस उगते सूर्य और उसके बीच में हलका-सा कुहरा था। उसे लगा कि जैसे सूर्य उठ नहीं रहा है, बल्कि एक धुंधले पर्दे में से उछलता बढ़ता आ रहा है। धीरे-धीरे यह पर्दा फटने लगा। अब सूर्य की धूप कुछ पीली पड़ गई थी। यह उसकी माँ की शादी की अँगूठी के सोने के रंग के समान ही थी। धीरे-धीरे सूर्य उजले से उजला होता गया। तब सूर्य की ओर देखना भी उसे असम्भव लगा। पिछले भादों में कुछ देर के लिए पेड़ों की चोटियों पर उसे कुहरा दिखाई दिया था, मानो सूर्य की विनाशक अंगुलियों को रोकने के लिए जैसे वह तन गया हो। पर यह भी मिट गया था और सारा का सारा पूरब ही लाल रंग से रंगा गया था।

पैनी बोला, "मुझे चीते का तेल ढूंढने में कोई मदद करे, ताकि मैं नाश्ता बना सकूं।"

बक और मिलव्हील उठ बैठे। अपनी गहरी नींद के बाद वे अभी ऊँघ में थे। पैनी बोला, "रात को ठीक तुम्हारे ऊपर से लोमड़ियाँ और मगर-मच्छ घूमते रहे हैं।" और तब उसने रात की सारी बात कह सुनाई।

बक बोला, "तुम्हें पूरा यकीन है कि यह उन मच्छरों में से एक नहीं था, जिन्हें तुमने डाक्टर के यहाँ से शराब पाने के बाद देखा था ?"

"यह उससे भी कुछ छोटा था, पर फिर भी दो गज के लगभग था।"

"हाँ, ठीक है। एक बार पहले भी मैं इसी तरह डेरे में सोया था।

तब स्वप्न में मैंने एक मच्छर भिनभिनाता सुना था और जब मैं जागा तो मैं अपने बिस्तर समेत एक दलदल में किसी चीज़ पर अटका हुआ था।"

पैनी ने जोडी को हाथ-मुँह धोने के लिए तालाब के किनारे जाने को कहा। जब वे पानी के पास पहुँचे तो सड़ाँध से वे वहाँ न टिक सके और लौट आए। पैनी बोला, "कोई बात नहीं, तुम्हारी मैल केवल लकड़ियों के धुएँ के कारण है। ऐसे गन्दे पानी में तुम्हारी माँ भी तुम्हें धोने को नहीं कहेगी।"

नाश्ता शाम के भोजन जैसा ही था। हाँ, अब चीते के तेल में तली सब्ज़ी न थी। अब फिर कॉफी की जगह शराब का दौर चला। पैनी ने इस बार मना कर दिया। जोहड़ का पानी पीने लायक नहीं था, पर जोडी को प्यास लगी थी। चारों ओर पानी ही पानी होने पर किसी को भी नहीं सूझा कि पानी भी लेते चलें।

पैनी बोला, "तुम कहीं किसी पेड़ के खोल को ढूंढो, जो ज़मीन से कुछ ऊपर हो और जिसमें वर्षा का पानी भरा हुआ हो। वह अच्छा होगा।"

तला हुआ और भुना हुआ माँस और पकौड़े रात-जितने अच्छे नहीं लगे। नाश्ते के बाद पैनी ने फिर सफाई की। घोड़े पूरी तरह चर न सके थे, क्योंकि घास लगभग खतम हो चुकी थी। जोडी ने गठरी-भर काई इकट्ठी की और उन्हें स्वाद के साथ खाने के लिए दे दी। डेरे को उखाड़कर घोड़ों पर चढ़ना और दक्षिण की तरफ उन्हें मोड़ना एक नई यात्रा के आरम्भ का सूचक था। जोडी ने पीछे मुड़कर देखा, डेरे की जगह अब उजाड़ थी। कोयला बने हुए लट्ठे, काली राख आदि सब कुछ उजाड़-सा था। रात की आग का जादू समाप्त हो गया था। सुबह कुछ ठण्डा मौसम था, पर अब चढ़ते हुए सूर्य के कारण दिन अधिक गर्म हो गया था। धरती में से भाप उठ रही थी। सड़े हुए पानी की दुर्गन्ध बहुत बुरी थी।

पैनी आगे चल रहा था। उसने बक को बुलाया, "मुझे सन्देह है कि जानवरों के पेट इस सड़े पानी को सह सकेंगे?"

बक और मिल ने अपने सिर हिला दिये। जंगल में यह बाढ़ एक अनहोनी घटना थी। कोई नहीं कह सकता था कि इसका परिणाम क्या हो सकता था? वे लोग दक्षिण की ओर बढ़ते रहे।

पैनी ने जोडी से कहा, "तुम्हें याद है, हमने गाने वाले सारसों का नाच कहाँ देखा था ?"

जोडी अब उस मैदान को नहीं पहचान पाया। अब यहाँ चारों ओर पानी ही पानी भरा पड़ा था। यहाँ कोई सारस आने और घूमने का साहस नहीं कर सकता था। कुछ और दक्षिण की ओर फिर जंगल था और तब गॉलबेरी की झाड़ियाँ थीं। पर जहाँ दलदल होनी चाहिए थी वहाँ झील बनी पड़ी थी। उन्होंने अपने घोड़े उधर बढ़ा दिये, मानो रात उन्होंने किसी किनारे की जमीन पर बिताई हो और अब वे किसी पानी भरे नये देश में बढ़ रहे हों। एक सप्ताह पूर्व जो जमीन सूखी थी, अब वहीं पर उनके सामने ही मछलियाँ उछल रही थीं। यहाँ बहुत लम्बा रास्ता तय करने के बाद उन्हें भालू दिलाई दिए। वे यहाँ खूब जी भरकर मछलियों का शिकार कर रहे थे। वे इतने मस्त थे कि उन्हें किसी के भी पास आने का ध्यान न रहा। कम-से-कम दो-तीन दर्जन काली शक्लें घुटने तक गहरे पानी में घूमती दिखाई दे रही थीं। मछलियाँ उनके सामने ही उछल रही थीं।

पैनी बोला, "यह समुद्री मछली है।"

पर जोडी ने सोचा, समुद्री मछलियाँ तो समुद्र में होती हैं। या वे जार्ज झील में भी मिलती हैं, क्योंकि यहाँ का पानी भी नमकीन है। ये ज्वार वाली नदियों और बहुत कम ताजा पानी वाली नदियों में भी रहती हैं, जहाँ बहते हुए सोते और तेज धारें उन्हें समुद्र के समान ही आनन्द देती हैं, और जहाँ से वे खूब अच्छी तरह गोला बनाती हुई उछल सकती हैं।

पैनी बोला, "अब यह बात साफ है। जार्ज झील से यह जूनिपर नदी में और वहाँ से पानी बढ़ने पर मैदानों में आ गई हैं। और, इस प्रकार यहाँ समुद्री मछली आई है।"

बक बोला, "तब हमें एक नया मैदान मिल गया। आज से इसका नाम 'समुद्री मछलियों का मैदान' होगा। और देखो, उन भालुओं की ओर..."

मिल ने कहा, "यह तो भालुओं का भी स्वर्ग है। अच्छा यह बताओ कि हमें चाहिएँ कितने ?"

उसने अपनी बन्दूक जाँचनी चाही। जोडी ने अपनी आँखें झपकाकर फिर खोलीं। उसने अपने सारे जीवन में कभी भी इतने भालू इकट्ठे नहीं देखे थे।

पैनी बोला, "चाहे ये भालू ही हों, पर हमें सूअर नहीं बन जाना चाहिए।"

बक बोला, "इस समय हमारे लिए चार काफी होंगे।"

"बैक्स्टरों के लिए एक काफी रहेगा। जोडी, तुम भी मारना चाहते हो?"

"हाँ, ज़रूर।"

"अच्छा भाई, अब अगर यह बात मंजूर है तो हमें अपना शिकार चुन लेना चाहिए और थोड़ा ठहर जाना चाहिए। शायद किसी को दूसरी गोली भी चलानी पड़े और अगर जोडी चूका तो तीसरी भी।"

पैनी ने जोडी को सबसे पास का निशाना दिया। यह बहुत बड़ा नर भालू था।

पैनी बोला, "जोडी, तुम थोड़ा-सा बाईं ओर चले जाओ, जहाँ से निशाना इसके गाल पर जम सके। ज्यों ही मैं इशारा करूँ, सब गोली चला देना। अगर सामने शिकार हिल जाय तो जिस किसी और पर गोली दाग़ सको, दाग़ देना। और अगर तुमसे छिपने के लिए अपना सिर वह नीचे कर ले तो उसके शरीर के बीचोंबीच गोली चला देना। हम उसे बाद में मार डालेंगे।"

बक और मिलव्हील ने अपना-अपना निशाना चुन लिया और सभी दोनों दिशाओं में सावधानी से फैल गए। पैनी ने अपना हाथ उठाया और वे सब रुक गए। जोडी इतना अधिक काँप रहा था कि जब उसने अपनी बन्दूक उठाई तो वह अपने सामने सिवाय पानी की एक चमक के और कुछ भी नहीं देख पा रहा था। उसने अपने को साधकर निशाना सीधा किया। उसका भालू उससे किनारा काट रहा था, पर तो भी उसने पीछे से उसकी बायीं गाल का निशान बाँध लिया। पैनी ने अपना हाथ गिराया। बन्दूकें एक साथ बोल उठीं। बक और मिलव्हील ने एक-एक गोली और छोड़ी। घोड़े कुछ हिले। जोडी को याद नहीं रहा कि उसने भी गोली चलाई थी। पर,

उससे पचास गज दूर सामने एक काला शरीर पानी में आधा डूबा-सा दिखाई दे रहा था।

पैनी बोला, "बहुत अच्छा निशाना साधा, बेटे !" और सामने बढ़ आया।

बाकी भालू दलदल को पार कर भागते हुए स्टीमर के चप्पुओं की भाँति अपने पैरों से पानी पीछे उछालते हुए भाग गए। अब उनमें से किसी को मारने का मतलब था, बहुत दूर का निशाना साधना। जोडी उनकी इस तेज़ चाल को देखकर फिर अचरज में डूब गया। सबका पहला निशाना बहुत ठीक जगह बैठा था। दूसरे निशाने में बक और मिलव्हील ने शिकार को केवल घायल ही किया था। कुत्ते भौंकते रहे और उनके पीछे पानी में दौड़े। पानी इस लायक नहीं था कि उसमें पैदल जाया जाय और तैरना सम्भव नहीं था, इसलिए वे सब पीछे हट आए और बड़े निराश हुए। अब आदमी उन घायल दोनों जानवरों के पास आ गए और उन्होंने फिर से गोली दाग़ी। दोनों शिकार शान्त हो गए। किसी भी चोट से बचे हुए भालू उनके सामने ही भागते जा रहे थे। ऐसा कोई शिकार इतनी जल्दी और इतनी सफाई से कभी न हुआ था।

बक बोला, "हमने यह न सोचा कि इनको पानी में से कैसे निकालेंगे ?"

जोडी की आँख केवल अपने शिकार पर लगी हुई थी। वह विश्वास न कर सका कि उसने ही इसे मारा था। उसका शिकार बैक्स्टर परिवार के लिए एक पूरे पखवाड़े के लिए काफी था। और, यह सब उसके कारण।

मिलव्हील बोला, "हमें घर जाकर बैलों वाला जुआ लाना चाहिए।"

पैनी बोला, "तुम्हीं बताओ ? तुम्हारे पास ले जाने के लिए पाँच रीछ हैं और हमारे पास एक। मुझे इतने शिकार से ही सन्तोष है और अब मुझे यह भी पता चल गया है कि शिकार के लिए हमें कहाँ आना चाहिए ? क्या तुम मुझे और जोडी को सहायता देकर यह शिकार ले जाने और अपना घोड़ा एक-दो दिन रखने की अनुमति दोगे ? और, तब हम अपनी राह चले जाएँगे और तुम अपनी।"

"हमें मजूर है।"

पैनी बोला, "हमारी उम्र के लोग ऐसे समय रस्सी में बाँधकर ले जाना

अधिक अच्छा समझते।"

"किसने सोचा होगा कि यह सारा जंगल ही पानी के नीचे आ जाएगा?"

बक बोला, "हमारी टाँगें तुमसे अधिक लम्बी हैं। तुम लोग ऊपर बैठ जाओ!"

पैनी पहले ही उतर चुका था। पानी उसके घुटनों तक आ रहा था। जोडी को घोड़े पर बैठे रहने में शर्म आ रही थी, जैसे वह भी एक छोटा बच्चा हो! वह भी पानी में उतर पड़ा। ज़मीन सख़्त थी। उसने भालू को ज़मीन तक खींचने में सहायता की। फौरेस्टर लोग जैसे इस बात का महत्त्व नहीं समझ पाए कि यह उसने पहले-पहल मारा था। पैनी ने उसका कन्धा दबाया और यह उसकी अत्यधिक प्रशंसा थी। यह भालू साढ़े तीन मन से अधिक ही था। उन सबने ही यह स्वीकार किया कि इसको लम्बाई के रुख आधा काटकर दो टुकड़ों में बाँट लिया जाय, ताकि दोनों घोड़ों की पीठ पर यह आसानी से जा सके। उन्होंने इसकी खाल उतारी और इसकी मोटाई देखकर हैरान रह गए। हिरण और चीते बहुत अधिक पतले थे। लगता है, तूफ़ान के अन्तिम दिनों में भी भालू यहाँ पर आकर चरते रहे थे।

बूढ़ा सीज़र तब उछला, जब उस पर आधा भालू डाला गया। खाल की गन्ध उसे अच्छी नहीं लगी। उसने ऐसी ही गन्ध कई रात अपने ही खेत के आस-पास चौकन्ने होकर अनुभव की थी। एक बार एक भालू पशुओं की ओर बढ़ आया था और वह काफी देर वहीं रहा, जब तक उसके गुर्राने से चौंककर पैनी ही न वहाँ पहुँच गया। फौरेस्टरों का घोड़ा उसकी अपेक्षा बाकी बोझ को उठा लेने में काफी अच्छा था। भालू की खाल पैनी को ही सँभालनी पड़ी। बक और मिलव्हील ने अपने घोड़ों के रुख अपने घर की ओर मोड़ दिए।

पैनी बोला, "अपनी बैलगाड़ी इधर ही ले आना। बैल इस सारे को एक ही बारी में उठा ले जाएँगे। फिर हमारी ओर ज़रूर आना।"

"तुम हमारी ओर आना।"

उन्होंने अपने हाथ हिलाए और निकल गए। पैनी और जोडी भी

उनके पीछे-पीछे चल पड़े। सबने ही कुछ दूर तक साथ-साथ जाना था, परन्तु बोझ न होने के कारण फौरेस्टर अपने तेज़ घोड़ों पर पहले ही बहुत आगे निकल गए। पूरब की ओर वे अपने घर की सड़क पर मुड़ पड़े। पैनी और जोडी के लिए रास्ता धीमा और कठिन था। सीज़र भालू की खाल के पीछे चलना नहीं चाहता था, परन्तु पैनी ने जब जोडी को पहले चलाया तो फौरेस्टरों का घोड़ा इस बात पर अड़ गया कि वह आगे चले। कुछ देर तक यह संघर्ष चलता रहा। जूनिपर मैदान में आकर अन्त में पैनी ने अपने घोड़े को एड़ लगाई और काफी आगे निकल गया। अब भालू की खाल आँखों और नाक से दूर चले जाने के कारण सीज़र धीमे-धीमे चलने लगा। पहले-पहल जोडी को यह अकेला चलना अच्छा न लगा, क्योंकि चारों ओर पानी ही पानी था। तब पीछे भालू का माँस लदा होने से, उसने फिर से उत्साह अनुभव किया और बढ़ने लगा।

उसे लगा कि जैसे वह हमेशा ही शिकार खेलना चाहेगा। परन्तु, ज्योंही उसे घर के पास के चीड़ दिखाई दिए और वह सोते के पास के रास्ते और अपने खेतों की बाड़ के पास से गुज़रा, घर आने की खुशी से वह भर उठा। पानी की तबाही के कारण खेत उजाड़ हो चुके थे। आँगन भी ऊसर हो चुका था। परन्तु वह उस माँस को लेकर आ रहा था, जिसे उसने सारे परिवार के लिए जुटाया था। फ्लैग उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

21

दो हफ्ते तक पैनी फसलों को ठीक करने में लगा रहा। आलू अभी पके नहीं थे और उनमें अभी दो महीने की कसर थी। परन्तु वे सड़ रहे थे और अगर उन्हें उखाड़ा न जाता तो वे बिलकुल तबाह हो जाते। जोडी भी उन पर बहुत देर तक काम करता रहता। उसे इस बात का ध्यान रखना पड़ता था कि आलू उखाड़ने वाली ख़ुरपी को काफी गहरा चलाए और यह भी कि कहीं यह मुँडेरों के बीचोंबीच न पड़ जाय। फिर वह उसे बड़े ध्यान से उठाता और बिना नुक़सान के आलुओं को बाहर निकाल लेता। जब सारे आलू निकाल लिये गए तो माँ ने उन्हें सुखाने के लिए फैला दिया और पिछली छत पर जितनी अच्छी तरह ठीक किया जा सकता था, कर दिया। सारे के सारे आलू देखने पड़े और उनमें से आधे फेंक देने पड़े। उनके सड़े हुए हिस्से काट दिये गए और बाकी अधपके आलुओं समेत सूअरों के लिए रख दिये गए।

गन्ना ज़मीन पर गिर चुका था। उसको अभी ठीक नहीं किया जा

सकता था, क्योंकि अभी वह अधपका था। इसकी पोरों में से अंकुर निकलने शुरू हो चुके थे, पर बाद में इसको काटा और बचाया जा सकता था।

मटरों के सूखे पौधे नष्ट हो चुके थे। यह लगभग पक ही चुके थे। परन्तु हफ्ते-भर की बारिश ने इन्हें ज़मीन पर लिटा दिया था और अब वे एक सड़े हुए ढेर के रूप में रह गए थे। जो कुछ भी दाने वे बचा सके वे ही ठीक बच पाए। इस बाढ़ के तीन हफ्ते बाद जब काफी धूप निकल आई, तब पैनी अपनी दराँती लेकर समुद्री मछली वाले मैदान की ओर गया और वहाँ से दलदली घास काटकर उसे सुखाने छोड़ आया। उसने बताया कि बुरे समय में यह बहुत अच्छे चारे का काम देती है। मैदान का पानी उतर चुका था, पर वहाँ मछलियों की दुर्गन्ध के अलावा और कुछ नहीं बचा था। जोडी को कोई भी दुर्गन्ध बुरी न लगती थी, परन्तु यह सड़ांध उसे भी बुरी लगी। चारों ओर मौत की ही सड़ांध फैली हुई थी।

पैनी बड़ा अशान्त होकर बोला, "कुछ न कुछ गड़बड़ ज़रूर है। यह सड़ांद तो खतम होने वाली है, पर जानवर अभी भी मर रहे हैं।"

इसके एक हफ्ते बाद मघहर के महीने में जोडी के साथ वह फिर इसी मैदान में लौटा ताकि सुखाई हुई घास को ला सके। रिप और जूलिया भी गाड़ी के पीछे-पीछे चले। पैनी ने फ्लैग को भी साथ ही आने दिया, क्योंकि घर में बन्द करने या कोठरी में छोड़ने पर वह हमेशा ही शरारतें करने लगा था। फ्लैग कभी-कभी घोड़े से भी आगे भागने लगता और कभी चौड़ी सड़क पाकर उसके साथ-साथ दौड़ने लगता। कभी वह पीछे आकर कुत्तों से खेलने लगता। अब उसे हरी चीज़ें खानी आ गई थीं और कहीं-कहीं वह कोई कली या घास का गुच्छा उखाड़ने के लिए रुक जाता।

जोडी ने कहा, "पिताजी, इसकी ओर देखिए। यह कलियों को खींचकर ऐसे खा रहा है जैसे यह बहुत बड़ा हो गया हो।"

पैनी ने हँसकर कहा, "मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि मैंने ऐसा छौना आज तक नहीं देखा।"

अचानक ही जूलिया ने जीभ उठाई और झाड़ी में घुस गई। रिप भी उसके पीछे-पीछे भागा। पैनी ने गाड़ी रोकी और जोडी को देखने के लिए कहा कि वे किसके पीछे दौड़े हैं। जोडी नीचे कूदा और उनके पीछे कुछ ही

दूर जाकर उसने पेड़ पहचान ली। उसने बताया कि वे एक बिल्ली के पीछे दौड़ रहे थे। पैनी ने अपना सींग का बाजा उठाकर ज़ोर से बजाया ताकि कुत्ते लौट आएँ। परन्तु जूलिया को भौंकते हुए सुनकर वह नीचे उतर आया और घने पेड़ों में से होकर आगे बढ़ा। कुत्तों ने एक बिलाव को एक कोने में फँसा लिया था, पर कोई लड़ाई नहीं हो रही थी। वहाँ जाकर उसने जोडी को भी खड़े पाया। एक बनबिलाव अपने एक पासे पर लेटा हुआ था। जूलिया और रिप उसके चारों ओर चक्कर काट रहे थे, परन्तु कोई किसी पर हमला नहीं कर रहा था। बिलाव अपने दाँत दिखा रहा था और अपनी पूँछ उठाता था, परन्तु हिल-डुल नहीं सकता था। यह बीमार और कमज़ोर था।

पैनी ने कहा, "यह जानवर भी मरने वाला है, इसे छोड़ दो।"

उसने कुत्तों को वापस बुलाया और गाड़ी की ओर लौट आया।

जोडी ने पूछा, "पिताजी, यह किस चीज़ से मर रहा है ?"

"जानवर भी हमारे जैसे ही मरते हैं। ये हमेशा ही दुश्मनों से ही नहीं मारे जाते। हो सकता है कि यह बिलाव बूढ़ा हो और कोई शिकार न मार सका हो।"

"उसके दाँत तो बूढ़े जानवरों जैसे नहीं गिरे थे।"

पैनी ने उसकी ओर देखा, "लगता है, बेटे ! तुम ठीक से देखने लगे हो ! अब मुझे भी यह देखना पड़ेगा।"

अब भी बनबिलाव की कमजोरी का कारण न पता चल सका। वे आगे मैदान तक बढ़ गए और सूखी घास से अपनी गाड़ी को भर लिया। पैनी ने अनुमान किया कि कम-से-कम पूरी घास ढोने के लिए तीन चक्कर और लगाने पड़ेंगे। जंगल की घास खुरदरी और कँटीली थी, परन्तु पाला आने पर, और नुकीली घास के सूख जाने पर, घोड़ा, गाय और उनकी बछड़ी और बछड़े इस सबको खाकर खुश होंगे। अब वे घर की ओर आराम से आने लगे। सीज़र ने अपनी चाल तेज़ कर दी और जूलिया भी आगे-आगे दौड़ने लगी और दोनों पशु भी घर के लिए तेज़ दौड़ पड़े। सोते की पगडण्डी को पार करके बाढ़ के पास कोने में पहुँचते ही जूलिया ने अपनी नाक फिर से उठाई और भौंकना शुरू किया।

पैनी बोला, "अब इस दिन की रोशनी में वहाँ कुछ भी न होगा।"

पर जूलिया ज़िद्द पर अड़ गई और बराबर बाड़ पर कूदने लगी। परन्तु उसका भौंकना एकाएक रुक गया और वह चीख़ने-सी लगी। रिप भी बाड़ पर चढ़ा और वह भी तेज़ी से भौंकने लगा।

पैनी बोला, "मैं जानता हूँ कि अच्छे कुत्ते की सूझ पर कभी शंका नहीं करनी चाहिए।"

उसने गाड़ी रोकी और अपनी बन्दूक लेकर बाड़ तक जोडी के साथ गया। वहाँ एक बारहसिंगा एक कोने में लेटा हुआ था। अपने सींगों को हिलाकर यह एक अजीब-सी हरक़त कर रहा था। पैनी ने अपनी बन्दूक उठाई और फिर उसे नीचे झुका लिया।

बोला, "यह भी बीमार है।"

वह हिरण के पास तक गया, पर यह न हिला। इसकी जीभ सूजी हुई थी। जूलिया और रिप बहुत जोश में थे। वे नहीं समझ पाए कि शिकार को यों ही कैसे छोड़ दिया जाय ?

पैनी बोला, "गोली खोने का कोई लाभ नहीं।"

उसने अपना चाकू लिया और इसे खोल में से निकालकर हिरण तक गया और उसका गला काट डाला। वह ऐसे मर गया, जैसे मौत इसे अपनी दर्दनाक हालत से ज्यादा अच्छी लगी। उसने कुत्तों को भगा दिया और इसे देखने लगा। इसकी जीभ काली और सूजी हुई थी। इसकी आँखें लाल थीं और उनसे पानी बह रहा था। यह उतना ही पतला था जितना कि मरता हुआ बनबिलाव। वह बोला, 'यह तो मेरे अनुमान से भयंकर है। इन सब जंगली जानवरों को प्लेग हो गई। इसकी जीभ काली है।"

जोडी ने आदमियों को प्लेग होती सुनी थी। उसकी नज़र में सभी जंगली जानवर हमेशा ही सुखी और मनुष्य के सब कष्टों से परे रहने वाले थे। कोई जानवर या तो पीछा करते हुए मरता था या जब कोई और बड़ा जानवर उसे दबा ले या खतम कर दे। जंगल में ऐसी मौत बड़ी स्पष्ट और भयानक होती थी। कभी भी उसने कोई बीमारी या लम्बी मौत न देखी थी। वह उस मरे हुए हिरण को देखने के लिए झुक गया।

उसने पूछा, "हम इसे नहीं खाएँगे। क्यों, ठीक है न ?"

पैनी ने अपना सिर हिलाया और बोला, "इसका माँस ठीक नहीं है।"

कुत्ते बाड़ के नीचे की ओर अब भी फुफकार रहे थे। जूलिया फिर भौंकी। पैनी ने उधर देखा, मरे हुए जानवरों का एक ढेर पड़ा हुआ था। दो बारहसिंगे और एक साल-भर का छौना इकट्ठे ही मरे हुए थे। जोडी ने अपने पिता का चेहरा कभी भी इतना उतरा हुआ न देखा था। पैनी ने प्लेग से मरे हुए इन हिरणों को देखा और बिना बोले लौट आया। उसे लगा, जैसे हवा में से मौत चुपचाप निकल आई हो।

जोडी ने पूछा, "इन्हें किसने मारा है?"

पैनी ने फिर अपना सिर हिला दिया और बोला, "मैं नहीं जानता कि यह जीभ काली क्यों हो जाती है? हो सकता है, मरे हुए जानवरों से भरा हुआ बाढ़ का ज़हरीला पानी इसका कारण हो।"

जोडी के दिल में एक भय गर्म छुरी की भाँति घुस गया।

उसने पूछा, "पिताजी, फ्लैग को तो ऐसा कुछ नहीं होगा?"

"बेटा, जितना मैं जानता था, मैंने तुम्हें बता दिया।"

वे अब फिर गाड़ी पर लौट आए और पशुओं की जगह तक आ गए और वहाँ उन्होंने घास उतार दी। जोडी ने अपने में कमज़ोरी और मचलाहट अनुभव की। फ्लैग मिमिया रहा था। वह उसके पास गया और उसे गर्दन के पास से पकड़कर उसने कस लिया। फ्लैग बहुत कठिनता से छूटा।

जोडी ने धीरे से कहा, "तुम इसे न पा लेना, ज़रा बचे रहना।"

घर में माँ ने यह खबर बहुत दुख के साथ सुनी। जब फ़सल ख़राब हुई थी तो उसने आँसू बहाए थे और दुख प्रकट किया था। क्योंकि उसके अनेक बच्चों का मरना उसके दुख के सोते को सुखा ही चुका था, इसलिए अब उसे इतने सारे शिकार का इस तरह मर जाना बुरा न लगा।

उसने केवल इतना ही कहा, "अच्छा है, अपने पशुओं को सोते की ऊपर की नाली में से ही पानी पिलाओ और उन्हें जोहड़ पर मत जाने दो।"

जोडी को फ्लैग के लिए भी आशा हो आई। अब वह उसे वही कुछ खिलाएगा जो वह स्वयं खाएगा और उसे हर तरह की घास से बचाएगा। पानी वह भी उसे अपने पीने वाले पानी में से ही पिलाएगा। उसने सोचा कि अगर फ्लैग मरेगा ही तो वे दोनों साथ-साथ ही मरेंगे।

उसने पिताजी से पूछा, "क्या मनुष्यों की भी जीभ काली पड़ जाती है ?"

"नहीं, केवल जानवरों की ही।"

जब वह अगली बार घास लेने गया तो उसने फ्लैग को मज़बूती से पिछली कोठरी में बाँध दिया। पैनी ने कुत्तों को भी वैसे ही बाँध दिया। जोडी ने अनेक सवाल पूछे, "क्या घास भी सड़ जाएगी ? क्या यह प्लेग सदा ही चलती रहेगी ? क्या कोई शिकार बचा भी रहेगा ?......" इन सबके उत्तर में पैनी ने न जानने के कारण अपना सिर हिला दिया। जोडी समझे बैठा था कि पैनी सब कुछ जानता है।

पैनी बोला, "बेटा, भगवान् के नाम पर चुप रहो। यह एक ऐसी बात हुई है, जो आज तक न हुई थी। इसे कोई कैसे जाने ?"

उसके पिता ने घास इकट्ठी करने और गाड़ी लादने के लिए उसे अकेला ही छोड़ दिया और घोड़ा खोलकर वह फौरेस्टरों को खबर देने चला गया। जोडी को दलदल के इस किनारे पर अकेले काम करना अजीब-सा लगा। उसे सारा संसार उजाड़-सा लगा, केवल जंगल पर ही गिद्ध मँडराते नज़र आए। उसने अपना काम जल्दी-जल्दी निबटाया और अपने पिता के पहुँचने से बहुत पहले वह अपना काम समाप्त कर चुका था। वह घास पर चढ़कर लेटा हुआ था और आकाश की ओर देख रहा था। उसे लगा कि संसार रहने के लिए एक बहुत अजीब जगह है। यहाँ बिना किसी कारण के और बिना किसी मतलब के बातें हो जाती हैं और यहाँ के जानवर बिना किसी कारण के दूसरों पर हमला करते हैं। उसे यह बात अच्छी नहीं लगी।

इन सब अशान्त और चौकन्ना करने वाली बातों के मुक़ाबले में उसने फ्लैग को रखा और उसे अपने पिता का भी ध्यान आया। परन्तु, फ्लैग का स्थान उसके दिल में छिपा हुआ था और वह उसके लिए बहुत समय से कमी अनुभव कर रहा था। उसने सोचा कि अगर फ्लैग को प्लेग जैसा कोई कष्ट न हुआ, तो यह बाढ़ भी एक अच्छी ही बात रहेगी। अगर वह भी पैनी, दादी और अपनी माँ की उम्र तक पहुँचा, तो वह कभी भी इस डर और खुशी की इन रातों और दिनों को न भूलेगा। उसे अचरज हुआ कि कहीं बटेरों के बच्चे इसी बीमारी से मर न जायँ। उसके पिता ने कहा

था कि अगले महीने वह कुछ शाखाओं का जाल बनाकर उनमें से कुछ को खाने के लिए फँसाएगा। वह नहीं चाहता था कि इतनी छोटी चिड़ियों पर भी गोली नष्ट की जाय। जब तक बच्चे बड़े न हो जायँ, पैनी नहीं चाहता था कि उन्हें फँसाया जाय। हर साल वह दो-तीन मुर्गियों के जोड़ों को भी अण्डे-बच्चों के लिए बचा लेता था। अगर तीतर और गिलहरियाँ तथा भेड़िये, भालू और चीते गुज़र गए तब क्या होगा? उसकी कल्पना यहाँ आकर डूब गई।

तभी दूर से आने वाली सीज़र के खुरों की हल्की-हल्की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी और वह अपनी बेचैनी को भूल गया। पैनी अब भी उदास था, पर फौरेस्टरों की बात से वह कुछ सुखी हुआ था। उन्होंने भी अपने शिकार के समय वही बात देखी थी। उनके अनुसार जानवरों की कोई भी जाति इस नाश से नहीं बची थी। हिंसक जानवरों को भी उन्होंने अपने शिकार के पास ही मरा हुआ पाया था। जैसे बलवान और कमज़ोर इस धरती पर एक बराबर बन गए हों। अब तेज़ दाँत और पंजे न कोई गाड़ने वाला रहा था और न उनका शिकार बनने वाला।

जोडी ने पूछा, "क्या सब कुछ मिट जाएगा?"

पैनी ने बहुत गुस्से से उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि ऐसे प्रश्न मत पूछो। मेरी ही तरह तुम भी प्रतीक्षा करो और देखो।"

22

पौष के महीने तक बैक्स्टर और फौरेस्टर प्लेग के नुक़सान और साथ ही हिंसक जानवरों के सर्दियों में पाए जाने वाले शिकार के विषय में पूरा-पूरा जान गए थे। हिरण अपनी असली संख्या से बहुत थोड़े रह गए थे। जहाँ पहले दर्जनों हिरण खेतों में घुसे रहते थे, अब वहाँ कहीं कोई एकाध ही बारहसिंगा या हिरणी मटर के उजाड़ खेतों में भोजन ढूँढने आती थी। छोटे हिरण कुछ अधिक साहसी हो गए और पुराने आलू के खेतों में न निकाले गए आलुओं पर मुँह मारते रहते थे। बटेर पहले जितनी ही थीं, पर जंगली तीतर कम हो चुके थे। इन सब बातों से पैनी को लगा कि यह सब खराबी दलदल के पानी के कारण हुई है, क्योंकि तीतर वहीं पानी पीते थे और बटेर वहाँ नहीं जाती थी।

अनाज खाने वाले शिकार के सभी हिरण, तीतर, गिलहरी, कंगारू आदि जानवर इतने थोड़े हो गए थे कि दिन-भर में खोज कर भी कुछ न हाथ लगता था। हिंसक जानवरों का भी काफी नुक़सान हुआ था। पहले-

पहल पैनी ने सोचा था कि यह अच्छा हुआ, परन्तु बाद में उसे एकदम साफ़ हो गया कि इससे बाकी बचे हुए हिंसक जानवर और ज़्यादा भूखे हो उठेंगे और अपना भोजन कम हो जाने के कारण वे और खूँखार हो उठेंगे। उसे अपने सूअरों की चिन्ता बढ़ गई और उसने पशुओं के पास ही एक जाल का घेरा बना दिया था। सब-के-सब मिलकर जंगल जाते और सूअरों के लिए दाने और ताड़ के फल ले जाते। पैनी ने नई मक्का का कुछ हिस्सा उनके लिए एक ओर रख दिया था, ताकि वे मोटे हो सकें। कुछ दिन बाद एक बहुत भारी आवाज़ और चीख आधी रात के समय पशुओं की तरफ से सुनाई दी। कुत्ते जागकर दौड़े और भौंकने लगे। पैनी और जोडी पाजामे पहनकर मशाल हाथ में लिए पीछे भागे। सबसे मोटा सूअर गायब था। मारनेवाले ने इतनी सफाई से मारा था कि लड़ाई का एक निशान भी वहाँ न था। खून की कुछ बूंदें बाड़े के कुछ पार बाड़ से ऊपर चली गई थीं। निश्चय ही कोई बहुत भारी पशु आया होगा, तभी वह इतने बड़े सूअर को आसानी से उठा सका। पैनी ने पैड़ देखी और बोल पड़ा, "एक बहुत बड़ा भालू आया है।"

जूलिया ने वह पैड़ पकड़ने की प्रार्थना की और पैनी को भी लालच हुआ, क्योंकि इस समय यह हिंसक पशु शायद जुगाली करता हुआ एकदम समीप ही मिल जाय। परन्तु, रात अँधेरी थी। यदि निशाना न लगा या वह केवल घायल ही हुआ तो मुक़ाबले का भी डर था। इसलिए उसने सोचा कि सवेरे भी ये निशान ताज़ा रहेंगे। तभी खोज में जाना उचित होगा। वे लौट आए और सो गए। सवेरा होने पर कुत्तों को निकालकर वे चल पड़े। ये निशान उसी पुराने पाँव कटे खुर्राट रीछ के थे।

पैनी बोला, "मैं जानता ही था कि जंगल के सारे भालुओं में से यह ज़रूर इस प्लेग से बच जाएगा।"

इस भालू ने कुछ ही दूरी पर सूअर को खाया था। उसने खूब जी भर-कर खाया और बाद में शव को ढँक दिया था और तब यह दक्षिण की ओर जाकर जूनिपर नदी के पार हो गया था।

पैनी बोला, "वह इसे खाने फिर आएगा। अपने शिकार के साथ भालू एक हफ्ते तक भी उलझा रहता है। मैंने तो उसे अपने शिकार के लिए, चाहे

न भी खाना हो, गिद्धों तक से लड़ते हुए देखा है। अगर इसके अलावा कोई और भालू होता, तो हम शायद जाल भी तान देते, पर इसे कोई भी जाल फँसा नहीं सकता, क्योंकि इसका पंजा ऐसे ही जाल में कट गया था।

"क्या हम फिर आकर उसकी इन्तज़ार करके खाते हुए इसे पकड़ नहीं सकते?"

"कोशिश करेंगे।"

"कल?"

"हाँ, कल।"

वे फिर घर लौट आए। एक हलकी-सी उछलने की आवाज़ पास से पास आती गई। फ्लैग अपनी रस्सी तुड़ाकर इस खोज में आ मिला था। वह अपनी एड़ियों पर उछल रहा था और उसकी पूँछ तनी हुई थी।

"क्यों पिताजी, क्या यह देखने योग्य नहीं है?"

"बेटे, निश्चय ही यह देखने में बहुत अच्छा है।"

अगले दिन पैनी को जाड़ा और बुखार हो आया। वह तीन दिन तक बिस्तर पर पड़ा रहा। अब इस भालू को पकड़ने की कोशिश करने में कोई लाभ न था। जोडी ने अकेले जाकर झाड़ी में छिपकर उसे देखने की अनुमति माँगी, पर पैनी ने मना कर दिया। यह भालू बहुत बुद्धिमान् और खतरनाक था और जोडी बहुत ही छोटे दिल और दिमाग़ वाला था।

माँ बोली, "मैं नहीं चाहती कि यह सूअर के बच्चे भालुओं को ही खिला दिये जायँ, भले ही वे अधिक मोटे न हों।"

जब पैनी बिस्तरे से उठा तो उसने यह स्वीकार किया कि सब सूअरों को पूर्णमासी या मोटा होने की बिना प्रतीक्षा किये मार डालना ही उचित है। जोडी ने तेल वाली लकड़ी जलाई और राब की देग के नीचे आग जलाई और गर्म करने के लिए सोते से पानी ले आया। एक तरफ उसने एक बड़ा डोल टिकाया और उसे रेत के सहारे से खड़ा किया। जब पानी बिलकुल ठीक गर्म हो गया तो माँ ने इसे ढोल में उलटा दिया। पैनी सूअरों को मार कर और उनकी खाल उतारकर एक के बाद एक इस डोल में डालता गया और पूरी तेज़ी के साथ पाँव से पकड़कर उन्हें इसमें हिलाता गया। माँ और जोडी, दोनों मिलकर इनको लटकाने में उसकी सहायता करने लगे, क्योंकि

उसकी शक्ति एकदम ही जवाब दे गई थी। तीनों ने बहुत तेजी के साथ बाल उतारने का काम किया, क्योंकि उनके जमने से पहले-पहले बाल उतार लिए जाने चाहिएँ।

अब जोडी ने पालतू और प्यारे जानवरों के मरने के बाद उनके माँस को खाने लायक बनाने का तरीका भी खूब अच्छी तरह सीख लिया। मारे जाने की बात खतम होते ही उसे प्रसन्नता हुई। खाल उतारने के बाद उसकी सफ़ाई करने और उसे सफ़ेद कर देने में उसे आनन्द आने लगा। वह अभी से अन्दाज़ करने लगा कि इनके कीमे के तलने से कैसी गन्ध उठेगी? और इनके माँस के टुकड़ों को चर्बी में तलने से कैसी? कुछ भी बेकार नहीं गया, आँतें तक नहीं! माँस को कन्धे, पीठ और कमर के माँस के रूप में अलग-अलग बनाया गया। बाद में इसी में नमक, मसाला और खांड आदि मिलाकर धुआँघर में अखरोट के कोयलों के ऊपर धुआँ लगने के लिए इसे रख दिया जाएगा। टाँगें और उनके जोड़ बच गए थे। उन्हें भी चटनी में डालने के लिए बचा लिया गया। उनकी पसलियों और रीढ़ की हड्डी को तलकर उन्हें तेल की एक तह के नीचे सुरक्षित रख दिया जाएगा। उनके सिर, जिगर, गुर्दे और दिल को पनीर में मथकर वैसे ही रख दिया जाएगा। उनके पतले माँस के टुकड़े करके कीमा बना दिया जाएगा। उनकी चर्बी को साफ करके किसी बर्तन में रख लिया जाएगा और उसका तेल बोतलों और पीपों में भर दिया जाएगा। कुछ माँस के टुकड़े भूनकर मक्की की रोटी में रख-कर खाने के लिये रख लिए जाएँगे। इनका पेट और आँतें उलटाकर और काटकर सुखा ली जाएँगी और तब एक थैली के तौर पर उनमें कीमा आदि भर दिया जाएगा। इन्हें भी और माँसों के साथ धुआँघर में लटका दिया जाएगा। जो रही-सही चीज़ें हैं, उन्हें मक्की के आटे के साथ पकाकर कुत्तों और चूज़ों आदि को दे दिया जाएगा। इनकी पूँछें तक साफ की गईं, केवल गले की एक नाली ही ऐसी थी जिसे परे फेंक दिया गया। जोडी के पूछने पर माँ ने बताया कि यह उनका 'कण्ठ' है। अगर यह न हो तो वे चीख-चिल्ला न सकें।

कुल मिलाकर आठ सूअर मारे और ठीक किये गए। केवल एक बहुत बड़ा सूअर और दो छोटी सूअरियाँ और एक गाभिन सूअरी बचा ली गई।

यही सूअरी फौरेस्टरों ने समझौते के तौर पर भेजी थी। इन्हें इसलिए बचाया गया, ताकि पैदायश का काम फिर से चालू हो सके। इनको जंगल में चरने के लिए भी छोड़ दिया जाएगा। उन्हें मैले और मक्की पर पाला जाएगा और रात को उन्हें घेरे में रक्षा के लिए बन्द कर दिया जाएगा। बाकी समय वे चाहें तो अपना खाना बाहर से प्राप्त करें और अगर वे इसमें मर भी जायँ तो कोई चिन्ता नहीं होगी।

उस शाम का भोजन फिर उत्सव जैसा ही था और बहुत दिनों बाद मेज़ खूब भरी हुई दिखाई दी। थोड़े दिनों में घर के पीछे बाथ और खेतों में जंगली सरसों आदि भर जाएगी। उनके साथ सूअर का माँस और मटर मिलाकर बहुत स्वादु बनेगा। माँस के भुने हुए टुकड़े रोटी के साथ अभी महीनों चलेंगे। साफ था कि बैक्स्टर लोग यह सर्दियाँ बहुत अच्छी गुज़ारेंगे। मौसम साल के सब मौसमों से अच्छा था। शिकार कम होने पर भी बहुत भय न था, क्योंकि धुआँघर में माँस काफी जमा था।

ज़मीन पर गिरे हुए गन्ने में से फिर जड़ें फूट आई थीं, इसलिए उसे धरती पर से अलग काटना पड़ा। गन्ने की पोरें कुछ सूख-सी गई थीं। बेकार की जड़ें उन्हें पीड़ने से पहले अलग करनी पड़ीं। चर्खी के चारों ओर जोडी सीज़र को लगातार घुमाता रहा और वे पतले गन्ने पैनी चर्खी में डालता रहा। इनमें से रस कम ही निकला और उससे बनने वाली राब बहुत पतली और तीखी थी, पर फिर भी घर में कोई मीठी चीज़ आई। माँ ने उबलती हुई राब के आखिरी हिस्से में सन्तरे भी डाल दिए और इस तरह बनी हुई राब बहुत देर तक बचे रहने के लायक हो गई।

मक्का को बहुत नुक़सान नहीं हुआ था। उसकी बालियाँ भी इस बारिश में टिकी रही थीं। जोडी उन्हें पीसने के लिए चक्की के पास घंटों पड़ा रहा। निचले पत्थर पर की खुदाई बहुत थोड़ी थी और वह चारों ओर एक चक्कर में घूम रहा था। ऊपर का पत्थर इसी पर टिका हुआ था। दोनों एक लकड़ी के ढाँचे में जड़े हुए थे, जो चार पाँवों पर खड़ा था। निकाले हुए दाने ऊपर के खोल में डाले जाते थे और पिसा हुआ आटा एक खास सीमा तक बारीक होकर नीचे से निकल आता और एक थैले में भर लिया जाता था। ऊपर वाले हत्थे को घंटों घुमाते रहना बहुत उकता देने वाला

था, पर तो भी उसका अपना मज़ा था। जोडी ने एक ऊँचा ठूंठ पास ही रख लिया था और जब उसकी कमर दर्द करने लगती तो वह इस पर आराम के बहाने टिक जाता।

वह अपने पिता से बोला, "मैं यहीं पर बहुत कुछ सोचता रहता हूँ।"

पैनी ने कहा, "मुझे आशा है कि तुम बहुत अधिक विचार करते हो, क्योंकि इस बाढ़ ने तुम्हें काफी शिक्षा दी है। इस बार हमने और फौरेस्टरों ने मिलकर तुम्हारे और फौडरविंग के लिए एक शिक्षक रखने की सोची थी। फौडरविंग के मरने के बाद भी मैंने अब तक भी यह बात सोची हुई है। इसके लिए मुझे कुछ शिकार फँसाना होगा और पैसे जमा करने होंगे। पर अब प्राणी इतने कम हो गए हैं और उनकी खाल इतनी कमज़ोर हो गई है कि उसका कोई लाभ ही नहीं दिखाई देता।"

जोडी ने तसल्ली देते हुए कहा, "कोई बात नहीं, मैं यों ही काफी जान गया हूँ।"

"यह तुम्हारी अज्ञानता की निशानी है। मैं यह अच्छा नहीं समझता कि तुम बड़े होते जाओ और कुछ न जानो। तुम्हें इस साल उतने से ही काम चलाना होगा, जितना मैं तुम्हें थोड़ा-बहुत सिखा सकता हूँ।"

यह बात जोडी को बहुत अच्छी लगी। वह जानता था कि पैनी पाठ पढ़ाना और सवाल निकालना सिखाने तो लगेगा, पर किसी भी बात पर बढ़ने से पहले वह कहानी सुनाने में लग जाएगा। अब जोडी पीसने के काम में आनन्द से जुट गया। फ्लैग दौड़ता हुआ आया और जोडी ने रुककर उसे ताज़ा निकलता हुआ आटा चाटने दिया। वह खुद भी कभी-कभी स्वाद ले लेता था। पत्थर रगड़ से गर्म हो गए थे और आटा भी हलवे जैसी सुगन्ध देने लगा था। बहुत भूख लगने पर वह एक मुट्ठी बड़े स्वाद से खा लेता परन्तु इसकी सुगन्ध के समान इसका स्वाद अच्छा न था। फ्लैग भी निष्क्रियता के कारण उदास हो गया और इधर-उधर घूमने लगा। अब वह साहसी होता जा रहा था और जंगल में एक-दो घण्टे को निकल जाता था। अब उसे कोठरी में बन्द नहीं किया जाता था और वह अपने चारों ओर की दीवारों को लाँघने लगा था। माँ ने अपनी आशा के अनुसार विश्वास प्रकट किया कि यह जंगली होता जा रहा है और एक दिन घर से भाग जाएगा। अब

जोडी को भी ऐसी बातों से अधिक दुख न होता था। वह जानता था कि फ्लैग भी उस जैसा ही अशान्त है। यह केवल अपने पाँव फैलाने और आसपास का संसार देखने के लिए निकल जाता है। वे दोनों एक-दूसरे को भली-भाँति पहचानते थे। वह यह भी जानता था कि फ्लैग जब भी बाहर जाता है तो अपनी ज़मीन के चारों ओर ही घूमता रहता है। वह कभी भी इतनी दूर नहीं जाता कि उसे जोडी की आवाज़ न सुनाई दे सके।

उस साँझ फ्लैग को काफी बुरा बनना पड़ा। आलू सुखाकर पिछली छत पर ढेरी के रूप में लगा दिये गए थे। जब सब लोग अपने-अपने काम में लगे थे, फ्लैग ने टक्करें मारकर इस ढेर को नीचे गिरा दिया। उसे उनके गिरने की आवाज़ में आनन्द आने लगा। वह तब तक उन्हें खिडाता रहा, जब तक वे सारे आँगन में न फैल गए। तब वह अपने खुरों से उन्हें कुचलने लगा। उनकी गन्ध ने उसे लुभा लिया और वह एक को खा गया। स्वाद उसे पसन्द आया और तब एक से दूसरे को चखकर फेंकने लगा। माँ को यह बात बहुत देर बाद पता चली। तब तक बहुत अधिक नुकसान हो चुका था। माँ ने गुस्से से उसे बुरी तरह झाड़ू मारकर निकाला। अब यह खेल वैसी ही हो गया, जैसे जोडी खेल-खेल में उसका पीछा करता था। ज्यों ही माँ लौटी वह भी उसके पीछे लौट पड़ा और पीछे से आकर उसे ही टक्कर मारने लगा। जोडी अपने पीसने के काम से इधर निकल आया। पैनी ने भी ऐसी हालत में ही पत्नी को देखा। अपने पिता के चेहरे के भाव को जोडी न सह सका। उसके आँसू निकल आए।

वह बोला, "उसे नहीं पता कि वह क्या कर रहा है?"

"जोडी, मैं जानता हूँ, पर उसने आलुओं को इतना नष्ट किया है कि जैसे यह सब नीचता के कारण हो। हमारे पास साल-भर के लिए है ही कितना?"

"तो मैं साल-भर आलू नहीं खाऊँगा और इस तरह कमी पूरी हो जाएगी।"

"कोई नहीं चाहता कि तुम आलू न खाओ। अगर तुम इसे रख सकते हो तो सम्हालकर रखो। अब से यह देखना तुम्हारा काम है कि यह कोई

नुक़सान न कर पाए।"

"मैं उसे देखूं भी और मक्की भी पीसूं, यह दोनों काम इकट्ठे होने कठिन हैं।"

"तो जब तुम उसे न देख सको तो उसे कोठरी में बाँध देना, यही अधिक ठीक है।"

"उसे उस अँधेरी कोठरी से नफ़रत है।"

"तो फिर उसे एक घेरे में बन्द कर दो।"

जोडी अगले दिन मुँह-अँधेरे ही उठ गया और एक घेरा आँगन के कोने में बनाने लगा। उसने इसे इस तरह बनाया, ताकि घेरे के दो कोने बाड़ के कोनों के साथ बन जायें और यह ऐसी जगह हो कि जहाँ वह अपने काम की हर जगह से उसे देख सके, फिर चाहे वह चक्की पर हो, लकड़ी काटते समय या भूसे के ढेर पर। वह जानता था कि अगर फ्लैग उसे देखेगा तो वह सन्तुष्ट रहेगा। उसने शाम तक वह घेरा बना लिया। इसी समय उसे और काम करने होते थे। अगले दिन उसने कोठरी से खोलकर फ्लैग को इस घेरे में डाल दिया। यहाँ फ्लैग उछलने-कूदने लगा और कुछ ही देर में जंगले से पार कूदकर जोडी से पहले घर में पहुँच गया। पैनी ने देखा कि जोडी फिर रो रहा था।

"रोओ मत, बच्चे! हम किसी न किसी रूप में इसका हल निकाल लेंगे। अब केवल आलू ही ऐसे हैं कि जिस पर वह परेशान करेगा। तुम उसे अगर बाहर रखो तो अच्छा है। उन्हें हम ढँककर रखेंगे। अब तुम उस घेरे को गिरा डालो और उसकी बजाय उन आलुओं को ढँकने के लिए कोई छज्जा-सा बना दो, वैसे ही जैसे चूज़ों के लिए छज्जा बनाया जाता है। उसे एक तम्बू की तरह बना देना। मैं तुम्हें बनाना सिखा दूँगा।"

जोडी ने अपनी बाँह से नाक पोंछी और बोला, "आपकी बहुत कृपा है।"

आलुओं को ढँक देने के बाद और कोई खास दिक्कत नहीं थी। फ्लैग को अब धुआँघर और घर से बाहर ही रखना पड़ता था, क्योंकि वह इतना बड़ा हो गया था कि अपने पिछले पाँवों पर खड़ा होकर वह लटकते हुए माँस तक चढ़कर उसके नमक और मसाले आदि को चाट सकता था।

माँ बोली, "इस जानवर की बात ही क्या, मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि कोई मेरे खाने वाले माँस को चाटे।"

फ्लैग अब बहुत ज़्यादा उत्सुक हो गया था और उसने एक दिन तेल के भरे पीपे को धुआँघर में उसके ढक्कन के गिरने की आवाज़ सुनने और उसके अन्दर भरी चीज़ को देखने के लिए टक्कर मारी। दिन शीतल था और तेल जमा हुआ था। इससे पहले कि वह पिघलकर बह पड़ता, हानि को पहचान लिया गया। परन्तु इस तरह की वारदातें दरवाज़े बन्द करके और उसे दूर रखकर बचाई जा सकती थीं। जोडी को अब इन बातों का ध्यान रहने लगा।

पैनी ने उसे समझाया, "सावधान रहना सीखने से तुम्हें कोई हानि न होगी। भोजन की चीज़ों को पाने के बाद, तुम्हें सबसे बढ़कर उनकी रक्षा करना सीखना चाहिए।"

23

कार्तिक के मध्य में पहली बार बहुत ज़बरदस्त पाला पड़ा। उत्तर की ओर के बड़े भारी अखरोट के पत्ते पीले पड़ गए। कीकर के पत्ते भी लाल और पीले हो गए थे। घर के पीछे के घने पेड़ों के पत्ते भी आग की लपटों जैसे लाल हो गए। अंगूर की बेलें पीली और सुनहरी-सी पड़ गई थीं। यही बात और भी कई चीज़ों के साथ हुई थी। मगहर के बहुत-से खिले फूल इस समय सफेद-से पड़ गए थे। दिन ठण्डे होकर आते, दोपहर को कुछ गर्मी होती और शाम को वे फिर ठण्डे हो जाते। शाम को बैक्स्टर लोग अपने कमरे की अँगीठी में आग जलाकर पहली बार बैठे।

माँ बोली, "यह सम्भव नहीं दीखता कि अभी से आग जलाने का समय आ गया है।"

जोडी वहीं अपने पेट के बल लेटा हुआ लपटों को देख रहा था। यहीं पर उसने कई बार फौडरविंग के स्पेनी घुड़सवार को देखा था। उठती हुई लपटों पर अपनी आँखों को मींचकर देखते हुए उसने कई बार बिना

किसी अड़चन के एक घुड़सवार को लाल पोशाक पहने और चमकदार टोप पहने देखा था। यह तसवीर बहुत देर न टिक सकी थी, क्योंकि या तो लकड़ियाँ हिल पड़तीं या लट्ठे गिर जाते और वह घुड़सवार भाग जाता।

उसने पूछा, "पिताजी, क्या स्पेनियों की लाल पोशाक होती थी ?"

पैनी ने कहा, "मैं नहीं जानता, बेटे ! अब तुम देख सकते हो कि कोई शिक्षक कितना जानता होगा ?"

माँ अचरज के साथ बोल उठी, "तुम्हारे दिमाग़ में ऐसे विचार कौन भर देता है ?"

वह अपने एक पासे पर झुक गया और उसने अपनी बाँह फ्लैग के ऊपर रख दी। यह वहीं पर पेट के नीचे अपनी टाँगें रखे सो रहा था, जैसे कोई बछड़ा हो। इसकी सफेद पूँछ नींद में सिकुड़ी हुई थी। खाना खाने के बाद शाम को इसके घर में आने से माँ बुरा नहीं मानती थी। उसने जोडी के कमरे में इसके सोने पर भी ध्यान देना बन्द कर दिया था, कम-से-कम जब तक यह कोई उधम न मचाए। उसने इसे भी उसी घृणा और अरुचि से स्वीकार किया, जैसे और कुत्तों को किया था। वे घर से बाहर छत के छज्जे के नीचे सोते रहते थे। बहुत ठण्डी रातों में पैनी उन्हें भी अन्दर ले आता था, क्योंकि वह आराम को बाँटकर उसका मज़ा लेना चाहता था।

माँ बोली, "ज़रा एक लकड़ी आग पर डाल दो। मुझे सिलाई नहीं दिखाई देती।"

उसने पैनी के सर्दी के पाजामे को काटकर जोडी के लिए बनाया था।

वह बोली, "अब तुम ज़रा इस साल जैसे ही और बढ़ जाना, तो अगली बार मैं तुम्हारे पाजामे काटकर तुम्हारे पिता के लिए ठीक कर दूँगी।"

जोडी बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। पैनी ने दिखाया जैसे उसका अपमान हुआ है। परन्तु तभी उसने आँखें झपकीं और अपने पतले कन्धे हिलाए। माँ आरामकुर्सी में धीरे-धीरे हिल-डुल रही थी। जब भी कभी वह मज़ाक करती, वे सभी प्रसन्न होते थे। जिस तरह इस ठण्ड-भरी साँझ में भट्ठी की आग ने अन्तर ला दिया था, उसी तरह उसकी अच्छी आदत भी घर में

अन्तर ला देती थी।

पैनी बोला, "बेटा, तुम्हें और मुझे शब्द-ज्ञान की वह पुस्तक पढ़नी है।"

जोडी बोला, "हो सकता है, उसे टिड्डियाँ खा गई हों।"

माँ ने सूई से हवा में इशारा किया और उसकी तरफ होकर वह बोली, "अच्छा है, तुम व्याकरण भी पढ़ लो। तुम ठीक नहीं बोलते।"

वह फिर से कुर्सी पर झूलने लगी।

पैनी ने कहा, "देखो, मेरा विचार है कि इस बार बहुत ठण्ड नहीं होगी।"

जोडी बोला, "अगर लकड़ियाँ न ढोनी पड़ें, तो मुझे ठण्ड पसन्द है।"

"हाँ, ठीक है। वह सचमुच अच्छी ठण्ड होगी। माँस और फसल मेरे अनुमान से अधिक अच्छी हुई है। अब हम चैन की साँस ले सकते हैं।"

माँ बोली, "समय आने पर पता चलेगा।"

"हाँ, जी! दुर्भिक्ष तो कहीं और शिकार खेलने चला गया है।"

इसके बाद शाम बिना किसी बातचीत के ही बीत गई। आग जलने के अलावा कोई आवाज़ न थी, या फिर पैनी अपना पाइप सुलगा रहा था या माँ की आरामकुर्सी लकड़ी के तख्तों पर चुरमुरा रही थी। अचानक ही घर के ऊपर से सीटी-सी बजाती हुई कोई चीज़ गुज़री, जैसे अचानक ही हवा का कोई बड़ा झोंका निकला हो। बत्तखें दक्षिण की ओर उड़ रही थीं। जोडी ने पिता की ओर देखा। पैनी ने अपने पाइप से आकाश की ओर इशारा किया और सिर हिलाया। अगर वह इतने आराम से न पड़ा होता तो जोडी उससे पूछना चाहता कि ये पक्षी किस प्रकार के थे और कहाँ जा रहे थे? उसने सोचा कि अगर वह भी अपने पिता के समान ही इन सब बातों को जान ले तो उसे व्याकरण, गणित और शब्द-ज्ञान सीखने की कोई आवश्यकता न रहेगी। उसे पढ़ना पसन्द था, क्योंकि उसमें कहानियाँ बहुत होती थीं; भले ही वे पैनी की कहानियों-जैसी रोचक न हों।

पैनी ने कहा, "क्या यहीं सोना है, या अपने बिस्तरों पर जाकर?"

वह उठा और भट्ठी पर अपने पाइप को उसने उलटाया। वह ज्योंही

झुका कि कुत्तों ने बाहर भागते हुए भौंकना शुरू किया। ऐसा लगा जैसे उसके हिलने ने उन्हें जगा दिया हो और वे किसी काल्पनिक दुश्मन के पीछे भाग पड़े हों। पैनी ने दरवाज़ा खोला और अपने कान पर हाथ रखकर सुना।

"मुझे तो कुत्तों के अलावा कोई और चीज़ सुनाई नहीं देती।"

इतने में बछड़ा चिल्लाया। यह चीख़ बड़ी भयानक और पीड़ा-भरी थी। फिर एक बार चीख़ उठी और अचानक ही बन्द हो गई। पैनी अपनी बन्दूक लेने के लिए रसोई की ओर दौड़ा गया और बोला, "मशाल जलाओ!"

जोडी ने समझा कि उसकी माँ के लिए इशारा किया गया है। वह अपने पिता के पीछे अपनी बन्दूक लेकर भागा, जो कि अब उस बड़े भालू के आने के बाद से भरी हुई रखी रहती थी। माँ भी पीछे-पीछे अनमने भाव से जली हुई लकड़ी लेकर भागी और अपनी धीमी चाल से रास्ता खोजती हुई बढ़ी। जोडी पशुओं की ओर की बाड़ पर चढ़ गया। अब उसे अफसोस हुआ कि वह मशाल खुद नहीं लाया। उसे कुछ भी नहीं दीख रहा था। वह केवल लड़ाई और गुर्राने की मिली-जुली आवाज़ें और बहुत सारे दाँतों की कड़कड़ाहट सुन रहा था। तभी रिप और जूलिया की आवाज़ें चुप पड़ गईं। इसी बीच उसके पिता की आवाज़ सुनाई दी, "जूलिया रिप! पकड़ो उन्हें! हे भगवान्! रोशनी कहाँ है?"

जोडी पीछे की ओर लौटा और दौड़कर माँ के हाथ से मशाल ले आया। जो कुछ हो रहा था उसे पैनी ही सम्हाल सकता था। वह फिर पीछे दौड़ा गया। उसने मशाल ऊँची उठाई। भेड़ियों के एक बड़े झुण्ड ने पशुओं पर धावा बोल दिया था और बछड़ी को मार भी दिया था। ये भेड़िए तीन दर्जन से भी अधिक थे। उनकी आँखें इस रोशनी में ऐसे चमक रही थीं, जैसे कोई चमकदार पानी किसी जोहड़ में लहरा रहा हो। वे बहुत ही पतले और खुरदरी खाल वाले थे। उनके लम्बे दाँत मछली के बाहरी काँटों की भाँति चमक रहे थे। उसने अपनी माँ को झाड़ी से परे चीख़ते हुए सुना और देखा कि वह स्वयं भी चीख़ रहा था।

पैनी चिल्लाया, "रोशनी को हिलाओ मत, स्थिर रखो!"

उसने उसे स्थिर रूप में पकड़ने का प्रयत्न किया। उसने देखा कि पैनी ने बन्दूक उठाई और एक के बाद एक गोली दाग़ दी। भेड़िये लौटे और बाड़ को कूदकर पार हो गए। रिप उनकी एड़ियों पर कूद पड़ा। पैनी भी उनके पीछे चिल्लाता हुआ भागा। जोडी भी उनके पीछे रोशनी उन पर फेंकता हुआ भागा। उसे याद था कि उसके दूसरे हाथ में उसकी अपनी बन्दूक है। उसने अपने पिता की ओर यह बढ़ा दी और पैनी ने इससे फिर गोली दाग़ दी। भेड़िये बिजली की गति से भाग गए। रिप हिचकिचाया। उसकी पतली-सी खाल अँधेरे में भी चमक रही थी। वह अपने स्वामी की ओर लंगड़ाता हुआ लौट आया। पैनी ने झुककर उसे शाबाशी दी। वह भी अब लौट पड़ा और पशुओं के पास आ गया। गाय चिल्ला रही थी।

पैनी ने शान्ति से कहा, "रोशनी मुझे दे दो।"

उसने रोशनी उठाई और बाड़े के अन्दर इसे घुमाया। बछड़ी का चिरा हुआ शरीर बीचोंबीच पड़ा था और इसके साथ ही पड़ी थी जूलिया, जिसके दाँत एक भेड़िये के गले में अटके हुए थे। यह भेड़िया अपनी अन्तिम साँसें ले रहा था। यह कीचड़ों से लदा हुआ और खारिश से युक्त था।

पैनी बोला, "अच्छा, उठो, बेटी। चलो, चलें!"

जूलिया ने अपनी पकड़ ढीली की और खड़ी हो गई। उसके बूढ़े और चपटे दाँत ही इस अकेले शिकार के काम आए थे। पैनी ने उस मारी हुई बछड़ी को देखा और साथ ही उस मरे हुए भेड़िये को और तब उसे अचानक ही एक अदृश्य शत्रु की हरी-हरी आँखें दिखाई दीं, जैसे वह बहुत दूर रात में उसे देख रहा हो। वह खुद बहुत छोटा और सिकुड़ा हुआ दीख रहा था।

वह बोला, "अच्छा..."

उसने जोडी को उसकी बन्दूक पकड़ाई और बाड़ के किनारे से अपनी बन्दूक उठा ली। वह झुका और बछड़ी का एक खुर उठाकर घर की ओर उसे घसीट लाया। जोडी समझ गया और काँप पड़ा। उसके पिता की इच्छा थी कि यह शव लुटेरे जानवरों के लिए दरवाज़े के पास ही पड़ा रहे। वह अब भी डरा हुआ था। कोई चीता या भालू किसी भी जगह फँसकर उसे हमेशा ही डरा देते थे। परन्तु आदमी हमेशा ही खड़े होकर बन्दूकें

उधर तान देते थे। ऐसी जगह कुत्तों को भी पीछा करने में आनन्द आता था। परन्तु इस भयंकर जत्थे ने पशुओं के बीच आज जो दृश्य पैदा किया था, उसे वह कभी देखना नहीं चाहता था। वह चाहता था कि उसका पिता इस शव को जंगले पर पटक दे। माँ दरवाज़े तक आई और काँपते हुए उसने उसे बुलाया। वह बोली, "मुझे अँधेरे में ही आना पड़ा। मैं कभी इतना नहीं घबराई। क्या फिर ये भालू आए थे ?"

अब वे फिर घर में आ गए। पैनी उसके पास से होकर भट्ठी तक गया, ताकि खौलते हुए पतीले में से कुत्तों के घावों के लिए गर्म पानी ले सके।

वह बोला, "भेड़िये थे।"

"हे भगवान् ! क्या उन्होंने बछड़ी मारी ?"

"हाँ, उन्होंने ही मारी।"

"अरे भगवान् ! यह तो बछड़ी मारी है।"

वह भी कुछ देर वहीं खड़ी रही, जब तक वह चिलमची में कुत्तों के घावों को गर्म पानी से धोता रहा। घाव बहुत गहरे नहीं थे।

उसने उदासी के साथ कहा, "मैं चाहता था कि कुत्ता एक-एक करके उन पर टूटता।"

घर की इस सुरक्षापूर्ण स्थिति में अपनी माँ की कमज़ोरी को देखकर जोडी में साहस आ गया और वह बोला, "पिताजी, क्या वे आज रात फिर लौटेंगे और क्या हमें फिर उनका शिकार करने जाना होगा ?"

पैनी ने उबली हुई राल रिप के एक गहरे घाव में भरी। यह उसकी एक बगल में था। आज उसकी इच्छा किसी प्रश्न का उत्तर देने की नहीं थी। वह तब तक कुछ न बोला, जब तक उसने कुत्तों का काम निबटा नहीं लिया और उनके लिए घर के पास ही खिड़की के नीचे लेटने लायक जगह नहीं बना ली। वह नहीं चाहता था कि फिर दुबारा ऐसी अनहोनी बात हो जाय। उसने आकर अपने हाथ धोये और आग पर उन्हें सुखा लिया।

वह बोला, "इतना बुरा समय आने पर कोई मनुष्य चैन से कैसे सो सकता है ? मुझे निश्चय ही फौरेस्टरों के पास कल जाना पड़ेगा।"

'क्या आप कल वहाँ जाएँगे ?"

"हाँ, मुझे उनकी सहायता चाहिए। मेरे कुत्ते तो ठीक हैं; परन्तु एक

औरत, मर्द और बच्चा मिलकर आख़िर कितना मुक़ाबला कर सकते हैं इन भूखे भेड़िये के जत्थों का ?"

आज जोडी को अपने पिता की अपनी असमर्थता स्वीकार करते देखना बड़ा विचित्र लगा। परन्तु इससे पहले कभी भेड़िये एक समूह में इस तरह उनके खेत पर आए भी नहीं थे। हिरण और छोटे जानवर जंगल में उनके लिए काफी अधिक थे। कभी-कभी कोई थोड़े से भेड़िये एक या दो के रूप में आए थे और वे भी डरते हुए और घबराते हुए। चेतावनी पाते ही भाग जाते थे। उनसे कभी भी कोई बड़ा खतरा नहीं हुआ। पैनी ने अपना पाजामा उतारा और अपनी पीठ आग की ओर कर ली। वह बोला, "मैं खुद घबरा गया था और मेरी कमर तक सुन्न हो गई है।"

बैक्स्टर लोग फिर से सो गए। जोडी ने अपनी खिड़की अच्छी तरह बन्द कर ली। उसने फ्लैग को अपनी ही रजाई में सुलाना चाहा, परन्तु वह लातें झाड़कर उससे अलग हो जाता था। उसे बिस्तरे के पाँयते पर सोने में ही आनन्द आता था। जोडी रात को दो बार उठा, ताकि वह यह देख सके कि छौना वहीं है। अभी फ्लैग बछड़े जितना बड़ा तो नहीं हुआ था, पर फिर भी अँधेरे में जोडी का दिल धड़कने लगा। उसे लगा कि जो खेत आज तक क़िले के रूप में थे, अब वे भी हमले के लिए खुल गए थे। उसने रजाई अपने सिर तक खींच ली। अब वह सोने से भी घबरा रहा था। पर, बिस्तरे के आराम और पतझड़ की पहली रात ने उसे सोने के लिए विवश कर दिया।

पैनी सुबह होते ही फौरेस्टरों की ओर जल्दी चल पड़ा। भेड़ियों का जत्था रात में फिर दुबारा नहीं लौटा। उसने उम्मीद की कि उनमें से एक-दो जरूर घायल हुए होंगे। जोडी ने भी साथ चलने की प्रार्थना की, पर माँ ने बिलकुल अकेले रहने से मना कर दिया।

उसने कहा, "तुम्हारे लिए तो जाने के लिए पूछना तमाशा ही बन गया है। आदमी बनकर अपनी माँ की रक्षा करना तुम्हारे लिए कोई महत्त्व नहीं रखता।"

उसके अभिमान को चोट लगी। उसने माँ की बाँह थपथपाई और बोला, "घबराओ नहीं, माँ! मैं रुकूँगा और भेड़ियों को दूर रखूँगा।"

"अब ठीक बात हुई ! कभी-कभी मुझे उन जानवरों के बारे में सोच-कर झटका-सा लगता है।"

अपने पिता से यह विश्वास पाकर कि वे दिन में फिर हमला नहीं करेंगे, उसने मन में साहस अनुभव किया परन्तु ज्योंही पैनी घोड़े पर चढ़कर चला गया, उसे अपने अन्दर फिर एक बेचैनी अनुभव होने लगी। उसने फ्लैग को अपने कमरे में बिस्तर के एक पाए के साथ बाँध दिया और सोते से पानी लेने चला गया। लौटते हुए उसे लगा कि उसने कुछ ऐसी आवाज़ें सुनी हैं जो बिलकुल अजनबी थीं। वह बार-बार पीछे देखने लगा और बाड़ के कोने तक आकर तेज़ी से दौड़ने लगा। उसने अपने मन में कहा कि वह डरा तो नहीं है, पर कहीं उसकी माँ न डरी हो ? उसने जल्दी-जल्दी लकड़ियाँ काटीं और उन्हें ले जाकर रसोई के लकड़ी के डिब्बे में खूब ऊपर तक भर दिया। एक ढेर उसने भट्टी के पास भी लगा दिया, क्योंकि हो सकता है माँ को बाद में ज़रूरत पड़े। उसने पूछा कि अगर कुछ माँस धुआँघर से लाना हो ? पर माँ ने मना कर दिया। उसकी बजाय उसने कुछ तले हुए माँस के टुकड़े और तेल का पीपा मँगवाया।

वह बोली, "तुम्हारे पिता यहाँ से चले गए हैं और उन्होंने नहीं बताया कि इस बछड़ी का क्या करना है ? इसे गाड़ दें या कुत्तों के लिए पका लें, या फिर शिकार के लिए बचा लें। खैर, हम उनके लौटने तक इसे बचा रखेंगे।"

बाहर के किसी काम की जल्दी नहीं थी। उसने रसोई का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया।

माँ बोली, "तुम छौने को बाहर निकाल दो।"

"माँ, मुझे इस बात पर मजबूर मत करो, क्योंकि उसे सूँघते ही चारों ओर से भेड़िये यहाँ टूट पड़ेंगे।"

"ठीक है, पर तुम्हें उसकी असभ्यता के कारण बार-बार सफ़ाई करनी होगी।"

"हाँ, मैं करूँगा।"

जोडी ने अपने शब्द-ज्ञान वाली पुस्तक निकालने और पढ़ने का निश्चय किया। उसकी माँ ने इसे फालतू रजाइयों और सर्दी के कपड़ों और कागज़ों

वाले ट्रंक में से ढूँढकर निकाल दिया। अब वह सारी सुबह इसी में लगा रहा।

माँ ने सन्देह के साथ कहा, "मैंने कभी तुम्हें पुस्तक में इतना तल्लीन नहीं पाया।"

वह पृष्ठों पर लिखे शब्द देख भी नहीं पा रहा था। उसने अपने मन को फिर समझाया कि वह डर नहीं रहा है। परन्तु उसके कान जैसे अब भी कुछ सुन रहे थे। वह सारी सुबह कुछ न कुछ तेज़ चाल-सी सुनता रहा था। थोड़ी देर में उसे अपने पिता के घोड़े के खुरों की टाप सुनाई दी और फिर दरवाज़े पर पिता की आवाज़ उसने सुनी।

दोपहर के भोजन से पहले ही पैनी लौट चुका था। उसने सुबह का नाश्ता भी बहुत थोड़ा खाया था, इसलिए उसे भूख लग आई थी। किन्तु अब जब तक वह पेट न भर ले, वह कुछ बात नहीं कर सकता था। उसने अपना पाइप सुलगाया और अपनी कुर्सी पीछे की। जोडी की माँ ने तश्तरियाँ धोईं और झाड़ू से फर्श साफ किया।

पैनी बोला, "अब मैं तुम्हें सारी बात ठीक-ठीक समझा देता हूँ। मेरी समझ में भेड़ियों का सबसे अधिक नुक़सान हुआ है। यह जो जत्था कल रात यहाँ आया था, बस इतने ही भेड़िये बच गए हैं। बक और लेम फोर्ट बटलर और वौलूसिया की ओर गए थे और उन्होंने एक भी भेड़िया न कहीं देखा और न सुना। केवल इसी जत्थे की बात उन्होंने भी सुनी। यह हमेशा ही इकट्ठे होकर रहते हैं। यहाँ यह फोर्ट गेट्स की ओर से आए थे और रास्तेभर जो भी पालतू पशु इन्हें मिला उसे ये मिटाते आए हैं। इन्हें बहुत अधिक खाने को नहीं मिल पाया, क्योंकि खाने से पहले ही ये पहचान लिए जाते हैं और भाग जाते हैं। ये सचमुच भूखों मर रहे हैं। अभी परसों की रात ही इन्होंने एक बछड़ी और एक साल-भर का बछड़ा फौरेस्टरों के पशुओं में से मार डाला। आज पौ फटने पर उन्होंने इन्हें फिर चिल्लाते हुए सुना। यह बात उनके यहाँ से लौट जाने के बाद की है।"

जोडी के मन में उत्सुकता जगी। उसने पूछा, "क्या हमें फौरेस्टरों के साथ शिकार करने जाना होगा?"

"हाँ, यही बात मैं उन लोगों के साथ जाकर एक लम्बा चक्कर काट

तय करके आया हूँ। हम सब इन पशुओं को मारने पर एक मत न बना सके। मैं चाहता था कि एक-दो बार अच्छा शिकार किया जाता और अपने पशुओं या उनकी घुड़साल के चारों ओर जाल में उन्हें फँसाया जाता। परन्तु फौरेस्टर लोग उन्हें ज़हर देने पर तुले हैं। मैंने आज तक कभी भी किसी भी जानवर को ज़हर देकर नहीं मारा है और न मेरा अब भी ऐसा इरादा है।"

माँ ने बर्तन साफ करने का कपड़ा दीवार पर लटकाया। वह बोली, "एज़रा, अगर तुम्हारा दिल काटकर देखा जाय तो यह माँस का बना हुआ नहीं होगा। शायद यह मक्खन से बना होगा। तुम तो प्लेग के मारे कोई मूर्ख मनुष्य हो! उन जंगली जानवरों को हमारे पशु बेरहमी से मारने दो और हमें भूखा मरने दो। परन्तु उन्हें मारने के लिए बहुत दयालु बनते हो!"

आह भरकर पैनी ने कहा, "मैं कितना मूर्ख लगता हूँ! पर मैं क्या करूँ? अनजान जानवरों को ज़हर मिलना ही है और उससे कुत्ते वगैरह भी मरेंगे।"

"भेड़िये हमें साफ कर दें, यह उससे तो अच्छा है।"

"ओह, ओरी! अब हमारा बछड़ा तो खत्म हो गया। उसी के पीछे वे आ सकते थे। न वे हमें मार सकते हैं, न गाय और घोड़े पर हमला कर सकते हैं, क्योंकि उनकी पुरानी खाल में उनके दाँत नहीं गड़ सकेंगे। वे मेरे कुत्तों जैसे शिकारी कुत्तों के साथ भी कभी नहीं उलझेंगे। वे हमारे चूज़ों को भी पेड़ों पर चढ़कर कभी नष्ट नहीं करेंगे। हमारे पास अब तंगीवाली चीज़ ही कौन-सी है?"

जोडी बोला, "पिताजी, फ्लैग जो है!"

जोडी को पहली बार लगा कि जैसे पिता एक गलती कर गए। वह बोला, "पिताजी, ज़हर देना बछड़े के चीरे जाने से तो अच्छा है।"

"बछड़े का चीरा जाना स्वाभाविक था, वे भूखे थे। पर ज़हर देना स्वाभाविक नहीं है। यह अच्छी लड़ाई नहीं होगी।"

माँ बोली, "क्या तुम भेड़ियों से भी साफ और न्यायपूर्ण लड़ाई लड़ना चाहते हो?"

"हाँ, हाँ, कहो, ओरी ! कहकर शान्ति पा लो।"

"अगर मैं कहने लगूँ तो मुझे ऐसे शब्द ढूँढने होंगे जिन्हें, बोल तो क्या, मैं सोच भी नहीं सकती।"

"तो श्रीमतीजी, फूट पड़िए ! ज़हर देने में मैं साथ नहीं दूँगा।"

पैनी अपना पाइप पीने लगा और बोला, "अगर तुम्हें अच्छा लगे तो सुन लो कि फौरेस्टरों ने तुमसे भी अधिक बुरा-भला कहा। मैं जानता था कि जब मैं अपनी बात कहूँगा तो वे मेरे सामने ही हँसी उड़ाएँगे और ऐसा ही हुआ भी। और अब वे ज़हर फैलाने के लिए अपने प्रोग्राम के अनुसार बढ़ रहे हैं।"

"मुझे अभिमान है कि हमारे आस-पास कुछ मर्द तो रहते हैं।"

जोडी उन दोनों की ओर देखने लगा। उसने सोचा कि उसका पिता गलत हो सकता है, पर उसकी माँ अन्याय पर उतर आई है। पिता की हस्ती जैसे उसे फौरेस्टरों से ऊँची दीखने लगी। इस बार अगर फौरेस्टर उसकी नहीं सुन रहे थे तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह बिलकुल आदमी ही नहीं रहा है, बल्कि यह कि उसको गलत समझा गया है। पर शायद वह गलत भी नहीं था।"

वह बोला, "माँ, तुम मेरे पिताजी को अकेला छोड़ दो। मुझे पता है कि उनमें फौरेस्टरों से अधिक अक्ल है।

माँ उसकी ओर मुड़ी और बोली, "श्रीमान्, बड़े मुँह वाले भोंदू महाराज ! तुम एक चपत में ही ठीक हो जाओगे।"

पैनी ने अपना पाइप मेज पर उलटाया और बोला, "छोड़ो ! हम सब क्या जानवरों से ही काफी दुखी नहीं हैं जो अब परिवार में भी झगड़ा शुरू हो गया ? क्या शान्ति खोजने के लिए आदमी को मरना ही पड़ेगा ?"

माँ अपने काम में फिर से लग गई। जोडी भी अपने सोने के कमरे में खिसक गया और पलैग को खोलकर बाहर दौड़ने के लिए ले गया। जंगलों में भी उसे चैन न मिली और वह बहुत दूर न जा सका। उसने छौने को फिर अन्दर बुला लिया और उसके साथ अखरोट के पेड़ के नीचे बैठकर गिलहरियों को देखने लगा। उसने गिलहरियों द्वारा खत्म कर देने से पहले-पहले अखरोट इकट्ठे कर लेने का निश्चय किया। अखरोट बहुत थे

और फ्लैग के कारण गिलहरियाँ थोड़ी रह गई थीं। पर उसने चाहा कि यह अखरोट किसी और के हिस्से में न पड़ें। पेड़ पर चढ़कर उसने डालें हिला दीं। अखरोट एक बौछार के रूप में गिर पड़े। वह उतरा और एक ढेर उसने इकट्ठा कर लिया। अपनी कमीज़ को उतारकर उसने उसका एक थैला बनाया और उसे अखरोटों से भरकर घर की ओर ले चला। वहाँ जाकर उसने इसे खाली कर दिया और अखरोटों को सूखने के लिए डाल दिया। जब उसने फिर कमीज़ पहनी तो उसे लगा कि कुछ जगह ऐसे दाग़ लग गए हैं, जो अभी धुलने से भी नहीं जायेंगे। यह छिलके के रस के दाग थे। यह कमीज़ बहुत अच्छी थी और इसमें केवल एक ही टाँकी लगी थी, वह भी उस जगह जहाँ अनाजघर की छत से गुज़रते हुए फँसकर यह फट गई थी। उसे मन-ही-मन अफसोस हुआ। पहले से ही सब बातों को जान लेना उसे बहुत कठिन लगा। कष्ट और बचाव की बातें वह पहले ही कैसे जान पाता? पर क्योंकि उसकी माँ पैनी पर नाराज़ थी इसलिए ऐसे मौकों पर जोडी की बातों को नहीं देखती थी।

साँझ तक वह ठीक हो गई। आखिर फौरेस्टरों ने सारा काम निबटा ही देना है। उनमें से तीन साँझ के समय आ गए। वे पैनी को ज़हर की ठीक जगह बताने आए थे, ताकि पैनी अपने कुत्तों को उस रास्ते से अलग रख सके। उन्होंने इसे बहुत चालाकी से फैलाया था। घोड़े की पीठ पर चढ़े-चढ़े ही उन्होंने यह सब किया, ताकि भेड़िये आदमी की गन्ध न पा सकें। उन्होंने ताज़ा माँस के टुकड़े अपनी ही बछड़ी और बछड़े में से तैयार किए और इन्हें बिखेरते हुए बारहसिंगे की खाल में पकड़े रहे। तीनों ही अलग-अलग रहकर उन पगडण्डियों पर बढ़े जहाँ से भेड़ियों के जत्थे के आने की सम्भावना थी। उन्होंने ताड़ की छोटी छड़ों से छेद किए। यह सब घोड़े पर चढ़े-चढ़े ही उन्होंने किया। वहीं से ज़हरीला माँस उन छेदों में डाल दिया और उन पर पत्ते ढक दिए। आखिरी पगडण्डी पर वे पैनी के पशुओं की ओर बढ़ आए थे। यह सोते से एक सीधी कतार में थी। इस सोते पर ही भेड़िये पानी या दूसरे शिकार के लिए इन्तज़ार कर सकते थे। पैनी ने सब बात स्वीकार कर ली।

"ठीक है, एक सप्ताह के लिए मैं अपने कुत्ते बचा रखूँगा।"

उन सबने पानी पिया और पैनी के तमाखू में से कुछ पिया। परन्तु धन्यवाद के साथ शाम का भोजन खाने से मना करके वे लौट गए। वे चाहते थे कि शाम से पहले ही घर पहुँच जायँ ताकि घुड़साल में जत्थे के धावे से पहले वे वहाँ हों। उन्होंने पैनी के साथ कुछ देर इधर-उधर देख-भाल की और तब घोड़ों पर चढ़कर लौट गए।

साँझ बड़ी शान्ति से बीत गई। पैनी ने कुछ और कारतूस भर लिए और अपनी बन्दूक भरकर रख ली। जोडी की पुरानी बन्दूक को भी उसने भर दिया। जोडी ने इसे बहुत अच्छी तरह देखभाल कर अपने बिस्तर के किनारे रखा। वह ऐसे मौक़ों पर अपना ध्यान रखने के लिए पिता के प्रति कृतज्ञ था। वह सबके सो जाने के बाद भी बहुत देर तक सोचता हुआ लेटा रहा। उसे अपने पिता और माता की बातचीत सुनाई दे रही थी।

पिता कह रहा था, "मैं तुम्हारे लिए एक खबर लाया हूँ। बक ने मुझे बताया कि ओलिवर ने जैक्सनविले से बोस्टन तक के लिए एक नाव ली और उसका अनुमान है कि वहाँ पहुँचने से कुछ देर बाद ही वह फिर अपने जहाज पर चला गया। उसने ट्विंक वैदरबी को कुछ पैसे दिए और उसे जैक्सनविले ले गया। लेम को इस बात पर गुस्सा है। वह कहता है कि अगर दोनों मिल गए तो वह दोनों को ही मार डालेगा।" जोडी ने सुना कि उसकी माँ का भारी शरीर बिस्तर में ही बड़ी आवाज़ के साथ मुड़ा। वह कह रही थी, "अगर लड़की सच्ची है तो ओलिवर उससे शादी करे और मामला रफ़ा-दफ़ा करे। और अगर वह निरी दिखावे की चीज़ है तो उससे इस मेल-जोल का मतलब क्या ?"

पिता कह रहा था, "मैं ठीक से तो नहीं कह सकता। जवानी बीते बहुत दिन हो गए। अब मुझे दोस्ती का तरीका भी पूरा नहीं पता। ओलिवर क्या सोचता होगा, यह मैं कैसे कह सकता हूँ ?"

"कुछ भी हो, उसे नहीं चाहिए कि वह उसे पीछा करने दे।"

जोडी उससे सहमत था। उसने रजाई में अपने पाँव पूरे फैला दिए। अब उसका ओलिवर से सम्बन्ध समाप्त था। अगर वह कभी दुबारा दिखाई भी दिया तो उसे साफ-साफ कह देगा कि वह उसके बारे में क्या सोचता है। उसे उम्मीद थी कि कभी-न-कभी ट्विंक को देखेगा और

उसके पीले बाल खींचेगा या उस पर कोई चीज़ फेंकेगा। केवल उसके कारण ही तो ओलिवर बिना मिले चला गया है। वह ओलिवर को खो चुका है। अब उसे उस पर इतना गुस्सा था कि वह उसकी चिन्ता भी नहीं करना चाहता था। धीरे-धीरे वह गहरी नींद में सो गया और स्वप्न में ट्विक की तसवीर खींचता रहा—जैसे वह जंगल में भटक रही हो और भेड़ियों के लिए फेंके गए ज़हर को उसने खाया हो और वहीं बहुत पीड़ा के साथ गिरकर मर गई हो।

24

फौरेस्टरों के ज़हर ने एक सप्ताह में तीस भेड़ियों की जान ले ली। अब कुल मिलाकर एक या दो दर्जन भेड़िये रह गए थे और वे भी ज़हर से बचने के लिए इधर-उधर भागते रहते थे। पैनी ने साथ मिलकर उन रहे-सहों को नष्ट करना स्वीकार कर लिया, परन्तु अब यह सब जाल या शिकार से ही होना था। यह जत्था बहुत दूरी तक मार करता और एक ही जगह पर कभी दो शिकार नहीं करता था। एक रात उन्होंने फौरेस्टरों की घुड़साल पर हमला कर दिया। बछड़े चिल्लाने लगे और फौरेस्टर निकल आए। उन्होंने देखा कि गायों ने भेड़ियों को एक कोने में फँसा लिया था। उन्होंने एक गोला-सा बना लिया और बछड़ों को अपने बीच में ले लिया। और, तब सींग नीचे करके रक्षा करने लगीं। बीचोंबीच एक बछड़ा अपने कटे हुए गले के कारण मर रहा था। दो और बछड़ों की पूँछें जड़ से ही खा ली गई थीं। फौरेस्टरों ने उस जत्थे में से छः को मार गिराया। अगले दिन उन्होंने फिर ज़हर फैला दिया, पर अब कोई भी भेड़िया उसे खाने न लौटा।

उनके अपने ही दो कुत्तों ने वह माँस खाया और मर गए। फौरेस्टर लोग बचे-खुचे जत्थे का पीछा करना मान गए।

एक शाम को बक आया और उसने पैनी को अगली सुबह शिकार में शामिल होने के लिए निमन्त्रित किया। भेड़िये सवेरे से ही उस दिन फौरेस्टरों के पश्चिम की ओर के कुएँ के पास शोर मचा रहे थे। बाढ़ के बाद बहुत दिन तक सूखा पड़ा और उससे काफी ऊँचा पानी भी सूखकर थोड़ा रह गया था। गीली जगहों, दलदलों, जोहड़ों, नदियों आदि में पानी पहले जैसा ही हो गया था। जो थोड़ा बहुत शिकार बचा था, अब वह भी इन सब सोतों और कुओं पर बार-बार नहीं आता था। भेड़ियों को भी यह बात सूझ गई थी।

इस शिकार से दो बातें पूरी होनी थीं। एक तो यह कि सौभाग्य से बचे-खुचे सारे भेड़िये मारे जाते और दूसरा यह कि कुछ नया शिकार भी आसानी से मिल जाता। लगता था कि प्लेग समाप्त हो चुकी थी। अब फिर से हिरण और भालू का माँस लुभाने लगा। पैनी ने बड़ी नम्रता से निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। यों तो फौरेस्टर ही अकेले शिकार के लिए बहुत थे, पर यह उनकी उदारता ही थी। उन्होंने बक को कह भेजा। जोडी यह जानता था। वह यह भी जानता था कि उसके पिता का शिकार के तौर-तरीकों का ज्ञान हमेशा ही स्वागत योग्य था।

पैनी बोला, "बक, रात यहीं गुज़ारो। हम सवेरे पौ फटने से पहले ही निकल चलेंगे।"

"नहीं, क्योंकि अगर मैं सोने के समय तक नहीं पहुँचा तो वे लोग अनुमान करेंगे कि कल कोई शिकार नहीं होना और तैयारी भी नहीं करेंगे।"

यह तय हुआ कि पैनी उन्हें दिन निकलने से एक घंटा पहले मुख्य पगडंडी और फौरेस्टरों की पगडंडी के मिलने के स्थान पर मिलेगा। जोडी ने अपने पिता की बाँह पकड़ी।

पैनी ने पूछा, "क्या मैं जोडी और कुत्तों को साथ ले सकता हूँ?"

"कुत्तों को लेना तो ठीक है, क्योंकि हमारे दो कुत्ते मारे गए थे, पर बच्चे की बात हमने नहीं सोची थी। अगर तुम वायदा करो कि यह गड़बड़ नहीं करेगा, तब इसे ले चलते हैं।"

"मैं इसके लिए वायदा करता हूँ।"

बक चला गया। पैनी ने गोली-बारूद तैयार की और बन्दूक में तेल दिया। सभी जल्दी सोने चले गए।

जोडी को लगा कि पैनी उस पर झुककर उसे जगा रहा है। अभी वह पूरा सोया भी न था। रात अभी बीती न थी। यों तो रोज़ ही जल्दी उठा जाता था, पर पूरब से कोई चमकीली किरण तब तक आ चुकी होती थी। परन्तु इस समय संसार में चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई दे रहा था। रात की हवा अब भी पेड़ों में पत्तों की फिसलन का शोर पैदा कर रही थी। और कोई आवाज़ इस समय नहीं सुनाई दे रही थी। एक क्षण के लिए उसे दुख हुआ कि उसने पहली शाम क्यों उत्सुकता दिखाई। पर तभी उसने शिकार की कल्पना की और वह एक जोश से भर गया। ठण्डी हवा में ही वह बिस्तरे से उछलकर बाहर आ गया। हिरण की कोमल खाल पर उसने अपने पाँव रगड़े और कमीज़ और पाज़ामा पहना। वह दौड़कर रसोई में पहुँच गया।

भट्टी में आग जल रही थी। उसकी माँ ने डच चूल्हे में बिस्कुटों का एक बर्तन रखा था। अपनी रात की पोशाक पर उसने पैनी का एक पुराना शिकार के समय का कोट डाला हुआ था। फीतों में बँधे उसके सलेटी बाल उसके कन्धों पर लटक रहे थे। वह उसके पास गया और उसे सूँघकर अपनी नाक उसकी पोशाक और छाती पर रगड़ने लगा। उसे माँ में काफी बड़ा-पन, गर्मी और कोमलता अनुभव हुई। उसने अपने हाथ उसकी पीठ तक फैला दिए, ताकि वह भी कोट की गर्मी ले सके। माँ ने एक क्षण यह सब सहा और तब उसे एकदम अलग कर दिया।

वह बोली, "मैंने कभी किसी शिकारी को इस तरह बच्चा बनते नहीं देखा। अगर नाश्ते में देरी हुई तो तुम लोगों को उनसे मिलने में देर हो जाएगी।"

पर यह कहते हुए भी उसकी आवाज़ मित्रतापूर्ण थी। जोडी ने सूअर के माँस के टुकड़े काट दिए। माँ ने उन्हें गर्म पानी में डुबोकर ताज़ा कर लिया और तब आटे में लपेटकर उनके तेल में पकोड़े तल लिए। उसे अपनी भूख का अनुमान नहीं था, पर तो भी जोडी ने इस सुन्दर सुगन्ध से अपने

को बेचैन पाया। फ्लैग भी उसके कमरे से वहीं आ गया और इधर-उधर सूँघने लगा।

माँ बोली, "तुम इसे खिलाकर कोठरी में बन्द कर आओ, क्योंकि बाद में भूल जाओगे। तुम लोगों के पीछे कहीं मैं तकलीफ में न फँसूं ?"

वह फ्लैग को बाहर ले गया। बाहर जाते हुए वह उछलकर भाग गया। जोडी को उसका पीछा करने और पकड़ने में कठिनाई हुई, क्योंकि चारों ओर अँधेरा था। उसने उसे बाँधकर घास और पानी खाने को दिया।

वह बोला, "ठीक बनकर रहना। भेड़ियों के साथ जो कुछ घटेगा, वह मैं आकर तुम्हें बताऊँगा।"

फ्लैग उसके पीछे मिमियाता रहा। अगर कोई छोटा-मोटा शिकार होता तो शायद जोडी भी उसके साथ घर पर रुक जाता, परन्तु पैनी ने कहा था कि वे भेड़ियों का निशान तक जंगल में से मिटा देना चाहते थे और अपने जीवन में फिर शायद यह मौक़ा उसे देखने को न मिले। इसलिए उसने अकेले ही जाना पसन्द किया। जब वह घर की ओर गया तो पैनी दूध दुहकर आ चुका था। बहुत सुबह दुहने के कारण दूध की मात्रा कम थी। नाश्ता तैयार हो चुका था। उन्होंने जल्दी-जल्दी खाया। माँ ने कुछ न खाया और उनके लिए खाना बाँध दिया। पैनी ने ज़िद की कि वे दोपहर के खाने तक घर आ जाएँगे। पर वह बोली, "ये बातें तुम पहले भी कहते रहे हो और तब प्रायः अँधेरा होने के बाद ही खाली पेट लौटते रहे हो।"

जोडी बोला, "माँ, तुम बहुत अच्छी हो !"

"हाँ, ज़रूर ! खासकर खाने के समय !"

"मैं इस बात से बहुत प्रसन्न होऊँगा अगर तुम खाने के मामले में अच्छी रहो और चाहे दूसरे किसी भी मामले में कितनी भी ओछी बन जाओ।"

"ओह ! मैं और ओछी !"

उसे प्रसन्न करने के लिए वह बोला, "नहीं, कुछ थोड़ी चीज़ों के लिए ही।"

पैनी अनाज-भण्डार की ओर जाते समय घोड़े पर काठी कस आया था। घोड़ा अब दरवाज़े पर बँधा हुआ ही खुर पटक रहा था। उसे शिकार और कुत्ते दोनों का ही अनुभव था। कुत्ते भी अपनी पूँछें हिलाते हुए आए

और दानों और शोरबों से भरी थाली खाली करके उसके पीछे चल पड़े। पैनी ने रस्सी का एक गट्ठर भी साथ ले लिया और दोनों ओर काठी के साथ बोरियाँ भी लटका लीं। घोड़े पर चढ़कर उसने पैनी को खींच लिया। माँ ने उन्हें बन्दूकें पकड़ा दीं।

पैनी ने जोडी से कहा, "इन बन्दूकों को लटकाने का खास ध्यान रखना। अगर कहीं तुमने इन्हें मेरे पास रखा तो तुम्हारा बाप मर जाएगा और तब तुम्हें अपनी रोज़ी खुद खोजनी पड़ेगी।"

दिन निकलने ही वाला था। घोड़े के खुर मिट्टी पर पड़ रहे थे। सड़क से आवाज़ लौट रही थी और वह पीछे छूटती जा रही थी। रास्ता जितना ही आगे लम्बा दीखता था उतना ही पीछे भी छूटता जा रहा था। उसे अजीब-सा लगा कि दिन के बजाय रात अधिक चुप लगती है, जब कि बहुत सारे जानवर रात को जागते रहते हैं और दिन में सोते हैं। कहीं से उल्लू चिल्लाया। जब उसका चिल्लाना रुका, तब तक वे एक बिलकुल अँधेरे स्थान पर पहुँच चुके थे। इस समय फुसफुसाकर बोलना ही उचित था। हवा ठण्डी थी। जल्दी में वह अपनी चीथड़ों वाली बण्डी पहनना भी भूल गया था। वह अपने पिता की पीठ से सट गया।

पिता ने पूछा, "क्या तुम कोट पहनकर नहीं आए? मैं अपना कोट दे दूँ?"

उसकी इच्छा हुई कि वह 'हाँ' कर दे, परन्तु उसने मना कर दिया।

वह बोला, "नहीं, मुझे ठण्ड नहीं लग रही है।"

पैनी की पीठ उसकी अपनी पीठ से भी पतली थी। कोट न लाना उसका अपना अपराध था।

वह पूछ बैठा, "क्या आपका अनुमान है कि हमें देर हो जाएगी?"

"ऐसा अन्दाज़ तो नहीं। लगता है, हम दिन रहते ही यहाँ लौट आएँगे।"

वे फौरेस्टरों से कुछ पहले ही पहुँच गए थे। जोडी नीचे उतर आया और रिप के साथ खेलकर गर्म होने लगा। प्रतीक्षा करना असह्य था। उसे यह भी डर था कि वे आगे न निकल गए हों। इसी बीच उन्हें बहुत से खुरों की टाप सुनाई देने लगी। पहले वह कुछ दूर थी, पर फिर पास आने लगी।

छहों फौरेस्टर आ गए थे। उन्होंने इन दोनों को प्रणाम किया। हवा हलकी और अनुकूल बह रही थी। दक्षिण-पश्चिम की ओर से यह आ रही थी। अगर उन्हें कोई पहरेदार भेड़िया न टकर गया, तो वे भेड़ियों को अचानक ही जा घेरेंगे। बहुत दूर से ही निशाना लगाना अधिक अच्छा होगा। बक और पैनी साथ-साथ आगे बढ़ने लगे। सब लोग पीछे एक-एक करके चल रहे थे।

एक सलेटी-से रंग की रोशनी जंगल में फैलने लगी। अभी सूर्य निकला नहीं था। जोडी को लगा कि जैसे रात और दिन के बीच वह एक सपनों की दुनिया में घूम रहा हो। सूर्य उगते ही जैसे वह जग पड़ेगा। सुबह ज़रूर धुँधली होगी। यह सलेटी रंग धुन्ध में भी इसी प्रकार छाया रहा। लगता था जैसे यह उठेगा नहीं। ये दोनों इकट्ठे मिल गए और सूर्य के विरुद्ध एक हो गए, पर सूर्य इन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। घुड़सवारों की यह पंक्ति जंगल से बाहर आई और सनावरों से घिरे हुए एक खुले मैदान में आ गई। यहाँ पर एक बहुत अच्छा जोहड़ जैसा सामने बना हुआ था। इस पर अच्छा शिकार मिल सकता था। यह साफ और गहरा था। इसका पानी जानवरों के लिए बहुत स्वादु था। इसके दो ओर दलदल थी और दूसरी दो तरफ जंगल था। दलदल की ओर से शिकार आ सकता था और जंगल की ओर ये भाग-कर बच सकते थे।

भेड़िये अब तक नहीं आए थे, शायद वे आ रहे थे। बक, लेम और पैनी घोड़ों से उतरे और उन्होंने कुत्तों को पेड़ों से बाँध दिया। पूरब में एक पीली-सी रोशनी फीते के रूप में फैल गई। इसके ऊपर पतझड़ का कुहरा छाया हुआ था। ज़मीन से कुछ ऊपर तक की शक्ल ही दिखाई दे रही थीं। पहले-पहल तो यह लगा कि जैसे इस पानी के जोहड़ पर कोई जानवर है ही नहीं। और, तब धीरे-धीरे इधर-उधर कुछ शक्लें दीखने लगीं, जैसे सलेटी रंग का पतला कुहरा अपने आप जमकर काला बन गया हो। बहुर दूर पर एक बारहसिंगे के सींग दिखाई दिए। लेम ने अपनी बन्दूक उठाई पर उसे चुपचाप ही कुछ सोचकर फिर झुका लिया। भेड़िये ज्यादा ज़रूरी थे।

मिलव्हील फुसफुसाया, "मैंने कभी यहाँ कोई ठूंठ नहीं देखे थे।"

वह कह ही रहा था कि ठूँठ दीखने-वाली चीज़ें हिलने लगीं। जोडी ने आँखें झपकाईं। यह ठूँठ छोटे-छोटे भालू थे। कम-से-कम एक दर्जन होंगे। दो बड़े भालू भी थे, जो उनके पीछे धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। उन्होंने बारहसिंगे को या तो देखा नहीं या उस पर ध्यान नहीं दिया। थोड़ी देर बाद धुंध और ऊपर उठ गई। पूरब की ओर रोशनी का रंग और साफ हो गया। पैनी ने इशारा किया, उत्तर और पश्चिम में कुछ हलचल हुई। भेड़ियों की शक्लें बहुत थोड़ी-सी दीख रही थीं। वे एक-एक करके पंक्ति में चल रहे थे। जूलिया की तेज़ नाक ने उनको सूँघ लिया और वह नाक उठाकर भौंकने लगी। पैनी ने उसे थपथपाकर चुप किया और वह ज़मीन पर बैठकर शान्त हो गई।

पैनी फुसफुसाया, "हमें इस दुनिया में शिकार फँसाने का ऐसा सुनहरी मौक़ा कभी नहीं आया। हमें और ज्यादा पास जाना उचित नहीं।"

बक ने फुसफुसाकर कहा, पर उसकी आवाज़ चिल्लाने से कम न थी। वह बोला, "इस बारहसिंगे और उन भालुओं पर निशाना कैसा रहेगा?"

"सुन लो, हम में से एक पूरब से होता हुआ दक्षिण की ओर उस दलदल के परे तक चला जाय। वहाँ से भेड़िये लौट नहीं सकेंगे। वे दलदल में भी नहीं जाएँगे। वे यहीं पर हमारी ओर जंगल में ही आएँगे।"

पैनी का यह विचार सबको भा गया। वह बोला, "फिर बढ़ पड़ो।"

"जोडी इस काम को अच्छी तरह कर सकता है। वह अच्छा निशाने-बाज़ भी नहीं है। हमें सभी निशानेबाज़ यहीं चाहिएँ।"

"ठीक है।"

"जोडी, तुम दक्षिण की ओर जंगलों के बीच से सामने तक चले जाओ। जब तुम सामने के उन ऊँचे चीड़ों तक पहुँच जाओ, वहाँ से दाहिनी ओर दलदल की ओर बढ़ जाना। ज्योंही मुड़ो, तुमने एक निशाना इस जत्थे की ओर दाग़ देना है। इन्हें मारने की कोशिश मत करना। बस, अब चलो और तेज़ी से बढ़ो।"

जोडी ने सीज़र को एड़ लगाई और निकल भागा। उसे लगा जैसे उसका दिल अपनी जगह से उछलकर कहीं और धड़कने लगा हो, शायद

उसके गले में। उसकी आँखें चौंधियाने लगीं। उसे लगा कि जैसे वह उन ऊँचे चीड़ के पेड़ों को नहीं देख पाएगा और या तो बहुत जल्दी या बहुत देर में मुड़ पड़ेगा और इस तरह सभी मामला गड़बड़ हो जाएगा। बिना देखे वह बढ़ता रहा। उसने अपनी कमर सीधी की और अपना एक हाथ बन्दूक की नाली पर फेरा। अचानक उसमें एक सख्ती और स्पष्टता आ गई। उसने सामने के चीड़ पहले ही पहचान लिए, वहाँ जाकर घोड़े को एकदम दाहिनी ओर मोड़कर उसे एड़ लगाई। उसे थपथपाकर उसने ऊपर की ओर एक गोली दाग़ दी। दलदल का पानी उसके नीचे से बह रहा था। उसने देखा कि छोटे-छोटे भालू भी तितर-बितर हो गए। उसे लगा, शायद वह भेड़ियों के बहुत पीछे नहीं आया था। उसके सामने का सरकता हुआ भेड़ियों का जत्था जैसे कुछ हिचकिचाया और अपने आने वाले रास्ते से लौटने के लिए तैयार हुआ। उसने फिर बन्दूक उठाकर उनके पीछे एक गोली दाग़ दी। अब वे सारे के सारे एक साथ ही उछले। उसने अपनी साँस रोककर देखा, वे जंगल की ओर बढ़ रहे थे। तभी उसे एकदम ही बन्दूकों की आवाज़ सुनाई दी, जैसे बन्दूकों का ही कोई संगीत हो। उसने अपना काम कर लिया था और अब कुछ उसके वश में न था। वह जोहड़ के दक्षिणी ओर से होता हुआ अपने साथियों की ओर बढ़ा। बंधे हुए कुत्तों ने अपनी आवाज़ें तेज़ कर दीं। अब एक ही बन्दूक कभी-कभी सुनाई दे जाती थी। उसका दिमाग़ साफ़ था। उसने सोचा, काश! उसके पास एक और गोली होती। उसे निश्चय था कि वह बड़ी शान्ति से पूरे निशाने पर गोली दाग़ सकता था।

पैनी की सूझ ने पूरा-पूरा काम किया। एक दर्जन सलेटी रंग के शरीर ज़मीन पर सामने पड़े थे। एक विवाद-सा हो रहा था। लेम चाहता था कि बचे हुए भेड़ियों के पीछे कुत्ते छोड़ दिये जायँ। बक और पैनी ऐसा करना नहीं चाहते थे।

पैनी बोला, "लेम, तुम जानते हो कि हमारे पास एक भी ऐसा कुत्ता नहीं जो बिजली के समान तेज दौड़ने वाले इन भेड़ियों का पीछा कर सके। ये बिल्ली के समान न तो पेड़ पर चढ़ेंगे और न ही किसी कोने में भालू के समान छिपेंगे। ये तो भागते ही जाएँगे।"

बक बोला, "लेम, यह बात ठीक है।"

पनी उत्तेजित होकर मुड़ा और बोला, "देखो, उन छोटे-छोटे भालुओं ने क्या किया है ? वे पेड़ पर चढ़ गए हैं। क्या हम उन्हें ज़िन्दा ही न पकड़ लें ? क्या पूर्वी तट पर इनकी अच्छी कीमत नहीं मिलेगी ?"

"सुना तो ऐसा ही है।"

पैनी फिर घोड़े पर चढ़ गया और जोडी भी उसके पीछे बैठ गया। पैनी बोला, "तुम सब आराम से धीमे-धीमे काम करना। तभी ठीक होगा।"

वसन्त में पैदा हुए तीन भालू-बच्चे पेड़ पर नहीं चढ़े थे। शायद उनकी माँ नहीं थी और इसीलिए उन्हें नियम पता नहीं था। वे अपने कमर के बल बैठे हुए थे और बच्चों जैसे चिल्ला रहे थे। उन्होंने भागने की कोशिश नहीं की। पैनी ने उन तीनों को बाँध दिया और रस्सी का एक किनारा ऊँचे चीड़ से बाँध दिया। कुछ बच्चे छोटी शाखों पर ही चढ़े थे। उन्हें शाख हिलाकर नीचे गिराया जा सकता था। केवल दो ही बहुत ऊँचे एक बड़े पेड़ पर चढ़ गए थे। सबसे हलका और पतला होने के कारण जोडी ही उनके पीछे चढ़ा। वे ऊपर-ऊपर चढ़ते गए और एक बड़ी शाख पर लटक पड़े। वह भी उसी शाख पर पहुँच गया। अपने आप बिना गिरे उसे हिलाना बड़ा कठिन था। वह शाख जैसे टूटने लगी। पैनी ने नीचे से ही चिल्लाकर उसे प्रतीक्षा करने को कहा। सनावर की एक डाल काटी गई और उसे छीलकर ऊपर पहुँचाया गया। जोडी पेड़ पर कुछ नीचे उतरा और इसे पकड़कर उसने ऊपर उठाया। इसे लेकर उसने रीछ के बच्चों की ओर बढ़ाया। वे इस पर ऐसे चिपट गए जैसे इस पर ही वे बड़े हुए हों। आखिर में वे गिर पड़े। जोडी भी उतर आया।

बूढ़े भालू और बारहसिंगा पहली गोली की आवाज़ सुनते ही भाग गए थे। कुछ बड़े दो भालू के बच्चों ने जीवित पकड़े जाने से पहले बहुत लड़ाई की। वे चुस्त और भारी थे और दोनों परिवारों को ताज़ा माँस की ज़रूरत थी। इसलिए उन्हें भोजन के लिए मार दिया गया। कुल दस बच्चे पकड़े गए।

बक बोला, "फौडरविंग निश्चय ही इन्हें देखकर बहुत प्रसन्न होता। काश ! वह जीवित होता।"

जोडी बोला, "अगर मेरे पास फ्लैग न होता, तो एक को मैं ज़रूर ले जाता।"

पैनी बोला "और तब तुम दोनों को एक साथ ही बाहर निकाल दिया जाता।"

जोडी पास जाकर उन बच्चों से बात करने लगा। उन्होंने अपने तेज़ नथुने ऊपर उठाए और उसे सूँघने लगे। वे पिछले पावों पर खड़े हो गए।

वह बोला, "क्या तुम सब जीवित रहने के लिए खुश नहीं हो?"

वह और पास गया और उसने एक को छूने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। इसने अपने तेज़ पंजे उसकी आस्तीन पर बढ़ा दिए। जोडी पीछे उछला।

वह बोला, "पिताजी, यह अहसान नहीं मानते। हमने इन्हें भेड़ियों से बचा लिया है, पर तब भी इन्हें कुछ ख्याल नहीं।"

पैनी ने कहा, "तुमने उसकी आँखों की ओर नहीं देखा। तुमने एक नीच को प्यार के लिए चुना। मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि जब दो जुड़वाँ बच्चे होते हैं तो उनमें से एक नीच और एक मित्रतापूर्ण होता है। अब फिर से इनमें से खोजो कि कौन मित्रतापूर्ण है?"

"मैं नहीं खोज सकूँगा। मैं इन्हें ऐसे ही रहने देता हूँ।"

फौरेस्टर हँस पड़े। लेम ने एक छड़ी उठाई और एक बच्चे को तंग करने लगा। वह उसकी पसलियों में छड़ी घुसाता और छड़ी को काटने के लिए उसे मजबूर करता। उसके चुभाने से बच्चा चीखने लगा।

पैनी बोला, "लेम, अगर तुम्हें उसे सताना ही है तो उसे मार ही डालो।"

लेम बहुत गुस्से के साथ घूमा और बोला, "तुम जिसे चाहो, अपने बच्चे के लिए बचा लो। मेरी जो मर्ज़ी होगी, करूँगा।"

"जब तक मेरी साँस है, तब तक तुम किसी को भी नहीं सता सकोगे।"

"तो क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी साँस पहले निकाल दूँ?"

बक बोला, "लेम, थोड़ी देर के लिए अपनी नीचता छोड़ दो।"

लेम गुस्से में बोला, "तुम भी लड़कर देखना चाहते हो?"

फौरेस्टर भाई बिना ही किसी बात और तुक के आपस में बँट जाते

थे। पर इस बार उन सबने ही पैनी और बक का साथ दिया। ताज़ा शिकार से वे बहुत खुश थे और इसीलिए उनका स्वभाव अच्छा बना रहा। लेम कुछ देर घूरता रहा, पर तब उसने अपनी मुट्ठियाँ नीचे कर लीं। यह निश्चय हुआ कि गैबी और मिलव्हील पीछे रुक जायँ और इन बच्चों पर निगाह रखें कि कहीं ये रस्सियाँ चबाकर भाग न जायँ। यह रस्सी पैनी की लाई रस्सी और बक के हिरण की खाल से बने जूतों के फीतों से तैयार की गई थी। बाकी सब फौरेस्टरों के यहाँ जाकर बच्चों को पकड़ने के लिए गाड़ी लेते आएँगे।

पैनी बोला, "क्या हम इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि उन्हें कहाँ ले जाया जाय? मैं और जोडी तब घर चले जाएँगे। लौटते हुए मुझे घर के लिए कुछ शिकार भी मारना है।"

लेम ने सन्देह के साथ पूछा, "तुम उस बारहसिंगे को मारना चाहते हो?"

"अगर तुम्हें मेरी बातों से मतलब ही है तो सुन लो, मैं जूनिपर स्रोत पर जाकर नाके का शिकार करना चाहता हूँ। मुझे अपने जूतों के लिए चर्बी और अपने कुत्तों के लिए उसकी पूँछ का माँस चाहिए। तुम सन्तुष्ट हुए?"

लेम ने उत्तर नहीं दिया। पैनी बक की ओर मुड़ा और बोला, "क्या तुम्हारे ख्याल में इन्हें बेचने के लिए सेण्ट ऑगस्टाइन अच्छी जगह नहीं है?"

"ख़ैर, अगर क़ीमत अच्छी न मिले तो जैक्सनविले जाकर कोशिश करना भी ठीक होगा।"

लेम बोला, "मुझे भी वहाँ कुछ काम है।"

मिलव्हील बोला, "मेरी भी वहाँ एक प्रेमिका है, पर मुझे वहाँ कुछ काम नहीं है।"

बक बोला, "अगर यह वही है जिसका विवाह हो गया है, तो तुम्हारा वहाँ क्या काम?"

पैनी ने शान्ति से कहा, "तो फिर जैक्सनविले ही सही। जाएँगे कौन-कौन?"

फौरेस्टर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। पैनी बोला, "तुम्हारे में से केवल बक ही ऐसा है जो बिना किसी झगड़े के इन्हें बेच सकेगा।"

लेम ने कहा, "गाड़ी मुझे लिए बिना नहीं हिलेगी।"

"तो ठीक है, बक और लेम जायँ। क्या मुझे भी जाना होगा? इस पर बैठने के लिए तीन से अधिक की जगह भी तो नहीं है।"

वे सब कुछ देर को चुप हो गए। अन्त में मिलव्हील बोला, "पैनी, इन बच्चों में तुम्हारा हिस्सा सबसे बड़ा है, पर वहाँ जाने की इच्छा मेरी भी है। तुम्हीं सोचकर देखो, मेरे पास वहाँ बेचने के लिए कुछ और भी चीज़ है।"

पैनी बोला, "खैर, मुझे तो जाने की इच्छा भी नहीं। बक! मैं तुम्हारी कृपा मानूँगा, यदि तुम मेरे हिस्से का ध्यान रखो और मेरे लिए भी कुछ चीज़ें खरीदते लाओ। तुम कब जाओगे? कल? ठीक है, अगर तुम कल तक रुके तो मैं और मेरी पत्नी सोच लेंगे कि हमने क्या कुछ मँगाना है?"

"मैं तुम्हें निराश नहीं करूँगा। तुम तसल्ली रखो।"

"मैं जानता हूँ।"

अब सब अलग-अलग हो गए। फौरेस्टर उत्तर की ओर और बैक्स्टर दक्षिण की ओर चले गए।

जोडी ने पूछा, "आपके अन्दाज में बक हम से ठीक-ठीक रहेगा?"

"वह ठीक ही करेगा। इनमें से वही एक भला है या फिर फौडरविंग था?"

जोडी बोला, "मुझे भी यही बात उचित लगती है।" पैनी ने सीज़र को रोका और चारों ओर देखा। जोडी उसे सफेद पड़ता दिखाई दिया।

वह बोला, "क्यों बेटा, तुम बहुत उत्तेजित हो रहे थे? अब ठीक हो जाओ।"

वह उतरा और उसने जोडी को भी बाँहों में पकड़कर उतार लिया। जोडी सुस्त था। पैनी ने उसे एक शाखा के सहारे खड़ा किया और बोला, "तुमने आज एक बड़े आदमी का काम किया है। अब आराम से बैठो, मैं तुम्हें कुछ खाने को देता हूँ।"

उसने बोरी में हाथ डाला और एक बासी पके हुए आलू को निकाल-

कर छीला और जोडी को खाने को दिया।

वह बोला, "यह तुम्हें ताज़ा कर देगा। जब हम सोते पर पहुँचेंगे तब तुम काफी पानी पी लेना।"

पहले-पहल जोडी उसे न निगल सका, पर तब उसका स्वाद उसे पसन्द आ गया। बैठकर उसने उसके छोटे-छोटे कौर खाए। वह एकदम ही ठीक अनुभव करने लगा।

पैनी ने कहा, "तुम भी ठीक वैसे ही हो, जैसा बचपन में मैं था। तुम बहुत कठिन काम अपने पर ले लेते हो और इससे तुम मूर्च्छित हो जाते हो।"

जोडी हँस पड़ा। अगर उसका पिता न होता, तो शायद इस बात पर उसे शर्म आती। वह अपने पाँवों पर खड़ा हो गया।

पैनी ने उसके कन्धों पर हाथ रखा और बोला, "मुझे औरों के सामने तुम्हारी प्रशंसा करने की आदत नहीं, पर तुमने आज बहुत ही अच्छा काम किया है।"

ये शब्द उसे आलू से भी ज्यादा शक्ति देने वाले लगे।

वह बोला, "मैं ठीक हूँ, पिताजी।"

वे घोड़ों पर चढ़े और चल पड़े। सवेरे का धुँधलका पतला पड़कर समाप्त हो चुका था। मगहर की हवा अब भी लहरों में बह रही थी। धूप जैसे उनके कन्धों पर एक गर्म बाँह के रूप में लेट गई। बड़े काले पेड़ों में जैसे आग लग गई हो। सनावर भी चमकने लगे। इसी समय आस-पास के फूलों की सुगन्ध चारों ओर भर गई। जंगली चिड़ियाँ उड़ने लगीं। जोडी को लगा कि उनके डैने नीलकण्ठ की अपेक्षा भी अधिक सुन्दर थे, क्योंकि इनकी कुछ और भी विशेषता थी। सीज़र की कमर पर बँधे हुए मरे हुए भालू के बच्चे की गन्ध घोड़े के पसीने, उसकी काठी, पास के फूल और खाये हुए आलू आदि की गन्ध से मिलकर उसके लिए नशीली हो उठी थी। वह सोचने लगा कि फ्लैग को घर जाकर बताने के लिए उसके पास बहुत कुछ होगा। उस बातचीत का सबसे अच्छा भाग यह था कि वह बिना किसी को कुछ कहे बहुत कुछ सोच सकता था। उसे अपने पिता से बात करना अच्छा लगता था, परन्तु अपने भावों को स्पष्ट करने के लिए उसे शब्द नहीं मिलते थे। जब भी वह कभी अपनी सोची हुई बात पिता को कहने

की कोशिश करता, उसके भाव सोचते-ही-सोचते गायब हो जाते। उसे लगता जैसे वह पेड़ पर बैठे कबूतरों पर निशाना बाँध रहा हो। वह उन्हें देखता, बन्दूक साधता और पास तक जाता, परन्तु निशाना लगाने से पहले ही वे उड़ जाते।

वह फ्लैग को कह सकता था, "वहाँ भेड़िये आए, तालाब की ओर खिसक आए।" और यह कहकर वह वहीं बैठे-बैठे सब कुछ देखता रहता और अपनी सारी भावनाओं को, डर और उत्तेजनाओं को अनुभव कर लेता। उस समय फ्लैग उससे अपना मुँह सटाकर उसकी ओर देखेगा और अपनी पतली-पतली आँखें उसकी ओर उठाएगा। तब जोडी समझ लेगा कि वह सब समझ गया है।

वह चौंककर सजग हो गया। अब उन्होंने जूनिपर स्रोत की ओर जाने वाली पुरानी स्पेनी पगडण्डी चुन ली थी। स्रोत इस समय पुरानी सतह तक ही था। बाढ़ में बहकर आया हुआ मलबा इसके किनारों पर पड़ा था। स्वयं स्रोत में से बहुत ही साफ़ और नीला पानी निकल रहा था। एक गिरा हुआ पेड़ इसके आर-पार पड़ा हुआ था। उन्होंने सीज़र को मैग्नोलिया के पेड़ के साथ बाँधा और स्रोत में नाके के निशान ढूँढने लगे। वहाँ कोई निशान न था। केवल एक बूढ़ी मादा मगरमच्छ बहुत समय से उसमें रहती थी और पालतू बन चुकी थी। हर दो साल बाद उससे नए बच्चे उत्पन्न होते। वह खुद ही किसी के बुलाने पर किनारे पर जाती और फेंके हुए माँस को ले लेती। शायद इस समय वह अपने बच्चों के साथ बहुत नीचे किसी गुफा में होगी। वह इतनी पालतू और परिचित थी कि कोई भी उसे सताता नहीं था। पैनी को डर था कि कहीं कोई अजनबी आकर उसे आसान शिकार समझकर मार न डाले। वे धारा के नीचे की ओर खोजने लगे। ऊपर से एक पक्षी चीख के साथ उड़ गया।

पैनी ने अपना हाथ पीछे को बढ़ाकर जोडी को रोका। सामने के तट पर एक मगरमच्छ के ताज़ा निशान पड़े हुए थे। नीचे का कीचड़ घना हो गया था। यहाँ आकर वह लोट-पोट हुआ था। पैनी अपनी एड़ियों पर बैठ गया और एक झाड़ी के पीछे छिप गया। जोडी भी उसके पीछे बैठ गया। पैनी ने अपनी बन्दूक फिर से भर ली। इतने में पानी में फिर से कुछ

हलचल हुई। सामने एक लट्ठा-सा दीख रहा था। वह कुछ ऊपर उठा। इसके एक किनारे पर दो मोटी गाँठें-सी थीं। यह आठ फुट लम्बा मगर-मच्छ था और ये गाँठें इसकी भारी पलकों वाली आँखें थीं। यह फिर छिप गया और अब अपने चौथाई शरीर के साथ उठकर किनारे तक आ गया। यहाँ से यह उसी पुरानी राह पर धीरे-धीरे बढ़ा। अपने छोटे-छोटे पाँवों पर यह शरीर को आगे-पीछे करता हुआ बढ़ने लगा और अपनी पूँछ को छिटकारते हुए शान्त होकर पड़ गया। पैनी ने बहुत सावधान होकर निशाना साधा। जोडी ने उसे रीछ या हिरण पर कभी इतना सावधान होते न देखा था। उसने गोली दाग़ दी। इसकी लम्बी पूँछ बहुत तेज़ी से उठी और गिरी, पर उसके बाद एकदम ही उसका शरीर कीचड़ में धँस गया। पैनी ऊपर की ओर दौड़ा हुआ गया और सोते से भी ऊपर जाकर दूसरी तरफ लौट आया। जोडी उसके पीछे-पीछे था। शिकार के चौड़े जबड़े खुद ही बन्द हो रहे थे और खुल रहे थे। पैनी ने उन्हें बन्द किया और दो सामने के पाँवों को पकड़ लिया। कुत्ते बहुत उत्तेजित होकर भौंक रहे थे। जोडी ने भी उसे पकड़ा। दोनों ने उसे मज़बूत ज़मीन पर घसीट लिया। पैनी ने खड़े होकर अपनी आस्तीन से माथे का पसीना पोंछा। वह बोला, "इसे कुछ दूर तक उठाकर ले जाया जा सकता है।"

उन्होंने कुछ देर आराम किया और तब उसकी पूँछ का माँस काटने में जुट गए। यह कुत्तों के लिए अच्छा शिकारी भोजन रहेगा। पैनी ने खाल पलटी और उसकी चर्बी उतारने लगा। वह बोला, "यह मगरमच्छ ही अकेला ऐसा है जो इस बाढ़ में भी मोटा हो गया है।"

जोडी अपनी एड़ियों पर बैठा और हाथ में चाकू सम्भाले रहा।

पैनी बोला, "तीतरों को छोड़कर बाकी पक्षी भी बच ही गए हैं।"

जोडी इस बात पर अचरज करने लगा कि पानी और हवा के जानवर बच गए। केवल वही चीज़ें नष्ट हुईं जो सख्त ज़मीन पर रहती थीं, क्योंकि पानी और हवा के बाहरी तत्त्वों के बीच वे फँस गई थीं। इस विचार ने उसे झकझोर दिया। अब यह विचार वह अपने पिता को कैसे समझाता! उसके दिमाग में यह विचार एक कुहासे की भाँति छा गया। उसने फिर चर्बी की ओर ध्यान दिया और काम में जुट गया।

कुत्ते इस माँस की ओर न झुके। उन्हें यह भी मेढकों, जलमुर्ग या बत्तखों के मछली पर पलने वाले माँस जैसा ही बेतुका और बेस्वाद लगा। परन्तु जब पूँछ के गुलाबी माँस को पकाया जाएगा तो उसकी दुर्गन्ध और बुरा स्वाद मिट जाएंगे और वे ही इसे चाव से खाएँगे। उस समय कोई और माँस भी सामने न होगा। पैनी ने थैलों में से भोजन निकाला और उन्हें इसके माँस और चर्बी से भर लिया।

तब उसने भोजन की ओर देखा और जोडी से पूछा, "क्या तुम इसे अभी खाओगे ?"

जोडी ने कहा, "मैं किसी भी समय खाने के लिए तैयार रहता हूँ।"

"तब हम इस नाके से निबटकर इसे खा लेंगे।"

उन्होंने अपने हाथ धारा में धोए और सोते के ऊपर की ओर जाकर पेट के बल लेटकर पानी पिया। अब वे भोजन को दो हिस्सों में बाँटकर खाने लगे। पैनी ने मुरब्बे से भरे दो बिस्कुट और कुछ हलवा एक ओर रख दिया। जोडी ने इसे भी कृपा मानते हुए स्वीकार कर लिया।

पैनी उसके फूले हुए छोटे पेट की ओर देखता रहा और बोला, "तुम इस सबको कहाँ रख लेते हो ? मुझे खुशी है कि मेरे पास तुम्हें देने के लिए यह बच गया। जब मैं बच्चा था तो मेरी भी यही हालत थी। मेरा भी पेट काफी बड़ा था।"

वे अपनी पीठों के बल आराम से लेट गए। जोडी अपने ऊपर के मैग्नोलिया वृक्ष की ओर ताकने लगा। उसके पत्तों का निचला हिस्सा ताँबे-जैसा लाल था। उस पेड़ के लाल सूखे फल फूटने लगे थे। जोडी ने उनके बीजों को इकट्ठा कर अपनी छाती पर रख लिया। पैनी ने आराम से उठकर कुत्तों को कटे हुए माँस के कुछ टुकड़े दिए। सीज़र को वह सोते तक पानी पिलाने ले गया। तब फिर से चढ़कर वे अपनी ज़मीन की ओर चल पड़े।

मीठे पानी के सोते के पास ही जूलिया ने निशानों की नई पैड़ का पीछा शुरू किया।

पैनी ने झुककर देखा और बोला, "यह बहुत ही ताज़ा पैड़ किसी बारह्-सिंगे की है। मेरी इच्छा है कि इसे पीछा करने दिया जाय।"

उसकी पूँछ बराबर हिल रही थी। उसकी नाक ज़मीन पर लगी रही और वह तेज़ी से आगे बढ़ती रही। तब नाक उठाकर वह बहुत तेज़ी से भागी और हवा से ही गन्ध लेने लगी।

पैनी बोला, "वह हमारे ठीक सामने से ही गया है।"

वह पैड़ कुछ सौ गज़ तक सड़क पर ही बढ़ी, तब दाहिनी ओर मुड़ गई। जूलिया तेज़ी से चीख पड़ी।

पैनी बोला, "बस, पास ही है। मेरा निश्चय है कि वह सामने के इस घने झुरमुट में ही लेटा हुआ है।"

वह उस घने झुरमुट तक जूलिया के पीछे-पीछे गया। वह भौंकती रही। एक बारहसिंगा अपने घुटनों पर खड़ा होकर ज़ोर से लपका। इसके सींगे पक चुके थे। डरकर भागने के बजाय यह सींगों के बल कुत्ते की ओर आया। कारण साफ़ था। उसके पीछे ही एक हिरणी ने बिना सींगों वाला अपना सिर उठाया। बाढ़ आ जाने के कारण हिरणों के जोड़ों को मिलने का मौक़ा नहीं मिला था। यह बारहसिंगा जोड़ी बाँध रहा था और इसी-लिए लड़ने के लिए तैयार हो गया। पैनी ने निशाना रोक लिया, जैसे वह सभी अजीब मौक़ों पर करता था। जूलिया और रिप भी अचरज में डूब गए। उन्हें भालू, चीते और बनबिलावों से डर नहीं था, परन्तु यहाँ उन्हें शिकार के भागने की उम्मीद थी, पर वह भागा नहीं। वे दोनों पीछे हटे। बारहसिंगा बैल की तरह से ज़मीन खोदने लगा और अपने सींग हिलाने लगा। जूलिया ने अपनी चालाकी बरती और उसकी गर्दन पर जा टूटी। उसने भी उसे अपने सींगों पर उठा लिया और पास की झाड़ियों में पटक दिया। जोडी ने देखा कि हिरणी उठी और भाग गई। जूलिया को चोट नहीं लगी थी, इसलिए वह फिर मोर्चे पर आ गई। रिप भी बारहसिंगे पर पीछे से टूट पड़ा। बारहसिंगे ने एक बार फिर हमला किया और सींग नीचे करके कोने में खड़ा हो गया।

पैनी ने कहा, "बूढ़े दोस्त, मुझे बहुत दुख है।" और गोली दाग़ दी।

बारहसिंगा गिर पड़ा। एक क्षण के लिए उसने पाँव चलाए और फिर शान्त हो गया। जूलिया ने जीत की खुशी में अपनी शिकारी आवाज़ तेज़ की।

पैनी बोला, "मुझे यह करना पसन्द नहीं था।"

बारहसिंगा काफी बड़ा और सुन्दर था। सनावर ताड़ के फलों पर पल कर वह काफी मोटा हो गया। गर्मियों की लाल खाल अब ज़रूर ढीली पड़ गई थी। इसका रंग भी सर्दियों के अनुसार सलेटी हो गया था। यह रंग चीड़ के पेड़ पर उगने वाली स्पेनी काई या दूसरी काई जैसा था।

पैनी बोला, "आज से एक महीने बाद यह बिलकुल पतला हो जाता और इसका माँस दुर्गन्धित हो जाता, क्योंकि पूरे महीने यह जंगल में जोड़ी बाँधता फिरता।"

वह उत्साह से भरा खड़ा रहा।

फिर बोला, "बेटे! क्या आज का दिन हमारा दिन नहीं है? यह सचमुच हमारा दिन है।"

उन्होंने बारहसिंगे की खाल उतारकर सफाई की।

पैनी बोला, "मुझे भरोसा नहीं कि यह सब कुछ बूढ़ा घोड़ा उठा सकता है।"

जोडी ने उत्तर दिया, "पिताजी, मैं पैदल चलूँगा। यह मुझसे कुछ अधिक भारी है!"

"यह और भी भारी है। हम दोनों ही पैदल चलेंगे।"

सीज़र ने चुपचाप ही यह नया बोझ भी उठा लिया। उसे छोटे भालू का भी पहले जैसा कोई डर नहीं था। पैनी उसके आगे-आगे चला और जोडी पीछे। उसे लगा कि जैसे अभी दिन शुरू ही हुआ था। वह और आगे भागने लगा। कुत्ते पीछे-पीछे आ रहे थे। अभी दोपहर बीते कुछ ही समय हुआ था कि वे अपने खेतों तक पहुँच गए। जोडी की माँ को उनके इतना जल्दी आने की आशा न थी। वह दरवाज़े पर उन्हें मिलने आई। धूप के कारण उसने अपनी आँखों पर छाया की। शिकार देखते ही उसका चेहरा खिल उठा।

वह बोली, "अगर तुम ऐसे ही लौटा करो तो मुझे अकेलापन भी बुरा नहीं लगेगा।"

जोडी बातों में फूट पड़ा। उसकी माँ हिरण और भालू के माँस को देखने में इतनी खो गई कि वह पूरी बातें न सुन सकी। वह वहाँ से फ्लैग

के पास कोठरी में चला गया। बैठकर बातें करने का समय तो था नहीं। उसने उसे अपने हाथ, कमीज़ और पाजामा सुँघाये और बोला, "यह भालू की गन्ध है। इसको सूँघते ही तुम एकदम बिजली की तरह दौड़ने लगना और यह भेड़िए की गन्ध है। बाढ़ के बाद से यह बहुत बुरे हो गए हैं। हमने उन्हें लगभग आज सवेरे साफ ही कर दिया है, पर तीन-चार बच गए हैं। तुम उनसे भागते रहना और यह दूसरी सुगन्ध तुम्हारे ही किसी रिश्तेदार की है।" और तब डरावने ढंग से बोला, "हो सकता है, यह तुम्हारा पिता हो, इससे भागने की ज़रूरत नहीं। पर इससे भी भागना। यह छोटे बच्चों को भी मार डालता है, खासकर पिताजी के कहने के अनुसार बुरे मौसम में! तुम हर चीज़ से भागते रहना।"

फ्लैग मचलकर अपनी पूँछ हिलाने लगा और अपने पाँव पटकने और साथ ही सिर मारने लगा।

जोडी बोला, "तुम मुझे ना मत करो। जो कुछ कहता हूँ, सुनते जाओ।"

उसने उसे खोल दिया और बाहर ले आया। पैनी उसे मदद के लिए बुला रहा था, ताकि घर के पीछे की ओर शिकार ले जाया जा सके। फ्लैग भालू की सुगन्ध से भाग गया और तब दूर से ही सूँघने के लिए फिर लौट आया। शाम तक का बाकी समय खाल उतारने और माँस काटने में बीत गया। भोजन नहीं पक सका, पर वे भूखे भी नहीं थे। शाम के भोजन के समय से पहले ही माँ ने काफी सारा गर्म भोजन तैयार कर दिया। पैनी और जोडी पहले तो खूब चाव से खाते रहे और बाद में अचानक ही इतने थक गए कि उनकी भूख आधे में ही मिट गई। जोडी मेज़ से उठकर फ्लैग की ओर गया। अभी सूर्य अस्त हो ही रहा था। उसकी कमर दर्द कर रही थी और उसकी आँखें भारी हो आई थीं। उसने सीटी बजाकर फ्लैग को बुला लिया। सौदा मँगाने के विषय में वह अपने माता और पिता की बात सुनना चाहता था और यह भी निश्चय करना चाहता था कि खास अपने लिए जैक्सनविले से क्या मँगाएगा? परन्तु उसकी आँखें खुली न रह सकीं और वह बहुत जल्दी बिस्तरे में लुढ़ककर सो गया।

पैनी और ओरा शाम को अपनी सारी सर्दी की आवश्यकताओं पर

विचार करते रहे। माँ ने बहुत साफ़-साफ़ लिखकर एक लम्बी सूची बनाई जो इस प्रकार थी—

पैनी और जोडी के लिए एक गाँठ शिकारी गर्म ज़ीन।
माँ के लिए आधी गाँठ नीला और सफेद चारखाना गिंगाम कपड़ा
एक गाँठ घरेलू कपड़ा,
एक बोरी कॉफी के बीज,
एक बोरा आटा,
एक कुल्हाड़ी,
एक थैला नमक,
एक सेर सोडा,
दो डिब्बी सीसे की गोलियाँ,
बड़ी गोलियाँ दो सेर,
कुछ खाली कारतूस,
आधा सेर बारूद,
छ: गज़ घरबुना कपड़ा,
चार गज़ हिकरी कपड़ा
छ: गज़ ओसनाबुर्ग,
जोडी के खेती के जूते,
आधा दस्ता कागज़,
एक डिब्बा बड़े बटन,
एक पत्ता छोटे बटन,
एक बोतल एरण्ड तेल,
एक डिब्बा चूसने की गोलियाँ,
एक डिब्बा जिगर की गोलियाँ,
एक शीशी अमृतांजन
एक शीशी अफीम घोल
एक शीशी कपूर,
एक शीशी नींबू का सत
एक शीशी पोदीने का सत,
एक शीशी पैरागोरिक,
शेष, पैसे बचें तो, दो गज़ काला अल्पका।

फौरेस्टर लोग अगली सुबह रास्ते में यहाँ रुके। जोडी उनसे मिलने के लिए भागा आया। माता और पिता भी उसके पीछे आए। बक आदि तीनों सटकर गाड़ी की सीट पर बैठे थे। उनके पीछे का वैगन पूरा भरा हुआ था और उसमें लड़ते, मचलते और गुर्राते हुए काले बालों वाले भालू अपने चमकते हुए दाँतों, पंजों और काली आँखों को छड़ों में से बाहर निकाल रहे थे। उनकी अलग-अलग रस्सियाँ और जंज़ीरें एक-दूसरे में उलझ गई थीं। उनके बीचोंबीच चाँदनी-सी चमकती शराब का मर्तबान खड़ा था। इस पर एक लम्बी जंज़ीर वाला भालू का बच्चा चढ़ गया और वह फिर से नीचे उतर आया। गाड़ी एक नुमाइश के समान थी।

पैनी बोला, "अचरज मत करना, यदि जैक्सनविले के सब लोग तुम्हारे पीछे चलना शुरू कर दें।"

मिलव्हील बोला, "हो सकता है कि इससे इनकी कीमत बढ़ जाय।"

बक ने जोडी से कहा, "मैं नहीं सोच पाता कि फौडरविंग इसे कितना अधिक देखना पसन्द करता।"

जोडी ने सोचा कि अगर फौडरविंग जीवित होता तो शायद उन दोनों को ही जैक्सनविले साथ ही साथ ले जाया जाता। उसने बड़ी चाह से भरकर पायदान की जगह पर देखा। वहाँ पर वे दोनों आराम से बैठ सकते थे और इस प्रकार दुनिया को देख सकते थे।

बक ने सामान की सूची ली और बोला, "इस पर चीज़ें तो बहुत अधिक लिखी दीखती हैं। अगर हमें अच्छी कीमत न मिली और रुपया अधिक न हुआ तो मैं क्या चीज़ छोड़ दूँ?"

माँ बोल पड़ी, "गिंगाम और घरबुना कपड़ा।"

पैनी बोला, "नहीं, बक, तुम गिंगाम ज़रूर लाना, चाहे कुछ भी हो। गिंगाम, कुल्हाड़ी, कारतूस, सीसा और हिकरी कपड़ा—ये ज़रूर लाना।"

जोडी बोला, "काला और नीला हिकरी कपड़ा! दोनों रंग मिले-जुले हों।"

बक चिल्लाया, "अच्छा अगर रुपया अधिक न हुआ तो हम रुककर कुछ और भालू पकड़ लेंगे।"

उसने लगामें घोड़ों की पीठ पर थपथपाईं।

माँ उनके पीछे से चिल्लाई, "गर्म कपड़ा बहुत ज़रूरी है।"

लेम बोला, "रोको यह गाड़ी! जो कुछ मैंने देखा, तुमने भी देखा?"

उसने अपने अँगूठे का इशारा हिरण की फैली हुई खाल पर, धुआँघर की दीवारकी ओर किया। वह नीचे कूद पड़ा और दरवाज़ा खोलकर लम्बे कदमों से धुआँघर तक बढ़ आया। इधर-उधर घूमकर उसने एक खूंटी पर सूखते सींग भी खोज निकाले। वह जान-बूझकर पैनी की ओर आया और उसने उसे दीवार की ओर धक्का दिया। पैनी डर से सफेद पड़ गया। बक और मिलव्हील भी जल्दी से आ गए। माँ अन्दर दौड़ी हुई गई, ताकि बन्दूक उठा लाए।

लेम बोला, "तुम्हें मुझसे झूठ बोलकर इस तरह बच निकलना अभी

आ जाएगा। बताओ, तुम उस समय इसी बारहसिंगे के पीछे नहीं निकले थे ?"

पैनी बोला, "मैं तुम्हें इसी बात पर मार डालता, पर तुम्हें मारकर भी क्या करूँ ? इसे पा लेना तो अचानक ही सम्भव हो गया।"

"तुम झूठ बोल रहे हो !"

लेम की ओर बिना देखे पैनी बक की ओर मुड़ा और बोला, "बक, मुझे कभी किसी ने झूठ बोलते नहीं सुना। अगर तुम्हें याद हो तो तुम्हें उस कुत्ते के सौदे में भी घाटा नहीं रहा।"

बक बोला, "ठीक है, पैनी ! इसकी बातों पर ध्यान मत दो।"

लेम मुड़ा और गाड़ी की तरफ आकर फिर से चढ़ गया।

बक ने धीमी आवाज़ में कहा, "पैनी, मुझे बहुत दुख है। लेम बहुत ही नीच है। ओलिवर ने जब से इसकी प्रेमिका को छीन लिया, तब से यह ऐसा ही बन गया है। यह उतना ही भद्दा हो गया है जैसे हिरणी को न पाकर बारहसिंगा।"

पैनी बोला, "मैं तो तुम्हें भी लौटने पर इसका एक चौथाई हिस्सा देने की सोच रहा था। परन्तु, बक, अब इसे भुलाना सरल नहीं।"

"इसमें तुम्हारा दोष नहीं। तुम हमारे सौदे में अपने हिस्से के लिए निश्चिन्त रहो। मैं और मिलव्हील अगर ज़रूरत पड़ी, तो लेम को बाँध देंगे।"

वे गाड़ी तक लौट आए। बक ने लगामें उठाईं और घोड़ों को मोड़ दिया। अब यहाँ से वे सोते से होती हुई उत्तर की ओर की सड़क पकड़ेंगे। यह उन्हें हौपकिन्स मैदान में से नमक के सोतों के पास से होती हुई पलाटका तक उत्तर में ले जाएगी। वहाँ नदी पार करके शायद वे रात गुज़ारेंगे। जोडी और पैनी गाड़ी को देखते रहे। माँ ने दरवाज़े के पीछे से झाँकते हुए बन्दूक को नीचे रख दिया। पैनी घर में गया और चुपचाप बैठ गया।

जोडी की माँ बोली, "तुमने उसकी बातें क्यों सह लीं ?"

"जब एक आदमी बुराई पर उतर आए, तो दूसरे को अपना दिमाग़ ठण्डा रखना चाहिए। मैं उससे लड़ने लायक बड़ा तो हूँ नहीं। मैं तो इतना ही कर सकता था कि बन्दूक लेकर उसे मार डालता। पर, आदमी को

मारना उसकी अनजानी नीचता के बदला चुकाने से कुछ अधिक बुरा होगा।"

वह बहुत खुश था। बोला, "अब मैं शान्ति से रहना चाहूँगा।"

जोडी की माँ बोली, "मेरे खयाल में तुमने बहुत ठीक किया, पर अब इस बात पर अधिक ध्यान मत देना।"

जोडी को अचरज हुआ। वह दोनों को ही न समझ सका। उसे लेम पर गुस्सा भी था और अपने पिता द्वारा उसे बिना कुछ कहे जाने देने पर निराशा भी। वह अपने ही भावों में उलझ गया। पहले भी उसने ओलिवर से फौरेस्टरों के लिए अपने भाव बदले थे। आज लेम ने उसके पिता से धोखा किया था। अन्त में उसने मन में तय किया कि लेम घृणा के लायक है, पर बक से और दूसरे भाइयों से उसे प्यार बनाए रखना है। घृणा और मित्रता, दोनों में ही उसे बराबर सन्तोष था।

करने के लिए कुछ खास काम था नहीं। सुबह का समय उसने माँ को रसोई के काम में सहायता देने में बिताया। माँ ने अनारों से जो चीज़ तैयार की, उसने बताया कि यह अतिसार या जुलाबों के लिए बहुत अच्छी है। जोडी को भी यह बहुत पसन्द थी। माँ को डर था कि वह इसके तैयार होने से पहले ही इसे अधिक न खा ले। उसे बीजों के चारों ओर के छिलके बहुत पसन्द आए।

25

मगहर बीता और पौष का महीना आ गया। पर अब भी उड़ती हुई जंगली बत्तखों की चिल्लाहट के अलावा और कोई चिह्न साफ़ न हुआ था। उन्होंने भी घास के मैदानों के अपने घोंसले छोड़े और झील और जोहड़ों के बीच उड़ना शुरू कर दिया। जोडी को आश्चर्य था कि उड़ते हुए कुछ पक्षी क्यों चिल्लाते हैं और कुछ चुप क्यों रहते हैं ? उसे पता था कि कुछ सारस उड़ते समय एक बहुत तेज़ आवाज़ करते हैं। बाज़ भी हवा में ही चिल्लाते हैं, पर बैठकर वे चुप और जड़ हो जाते हैं। पेड़ों का रस चूसने वाले पक्षी भी उड़ते हुए बहुत शोर करते हैं, पर पेड़ों की डाल पर बैठकर वे बिलकुल चुप हो जाते हैं। उनकी केवल कुरेदने की आवाज़ ही आती है। बटेर ज़मीन पर से ही चिल्लाती है और सिपाही काली चिड़ियाएँ भागती-दौड़ती हुई चिल्लाती हैं। हँसने वाले पक्षी दिन और रात गाते और चिल्लाते रहते हैं, चाहे वे डैनों के बल उड़ रहे हों या वे झाड़ियों और बाड़ पर बैठे हों।

कर्ल्यू पक्षी भी जार्जिया से दक्षिण की तरफ आ रहे थे। इनमें से बूढ़े पक्षी सफ़ेद थे और उनकी चोंचें मुड़ी हुई थीं। वसन्त में पैदा हुए छोटे पक्षी सलेटी रंग के थे। ये बहुत अच्छी तरह खाते थे। ताज़ा माँस कम होने पर अथवा गिलहरी आदि से उकता जाने पर पैनी और जोडी घोड़े पर चढ़कर समुद्री मछलियों वाले मैदान की ओर निकल जाते और इनमें से पाँच-छः को मार लाते। माँ इन्हें भी तीतरों के समान बनाती। पैनी इन्हें और भी स्वादु समझता।

बक ने जैक्सनविले में उन भालू के बच्चों की अच्छी कीमत उठाई थी। बैक्स्टर परिवार की सभी चीज़ें तो वह ले ही आया था, साथ ही चाँदी और ताँबे के कुछ सिक्के भी थैले में भरकर ले आया था। लेम ने जब से पैनी पर हमला किया, तब से दोनों परिवारों के सम्बन्ध कुछ बिगड़ गए थे। समझौता होने के बाद भी वे विना रुके ही निकल जाते थे।

पैनी ने कहा, "लगता है, लेम ने औरों को भी मना लिया है कि मैं उन्हें हिरण के मामले में ठगना ही चाहता था। आख़िर एक दिन यह बात साफ़ करनी ही होगी।"

जोडी की माँ बोली, "मुझे ऐसे भी ठीक लगता है यदि हम उनसे न बोलें।"

"परन्तु तुम यह मत भूलो कि जब मुझे साँप ने काटा था, तब बक कैसे आया था?"

"मैं नहीं भूल सकती। किन्तु लेम खुद एक साँप है। वह किसी भी समय तुम पर मुड़कर हमला कर सकता है।"

बक एक दिन रुका, केवल यह बताने के लिए कि उसके विश्वास के अनुसार उन्होंने सब भेड़िये मार डाले हैं। एक को उन्होंने घुड़साल के पास मारा और तीन को जाल में फँसाया और तब से किसी का भी नहीं पता चला। भालू उन्हें तकलीफ़ दे रहे थे। वह पाँवकटा बूढ़ा खुर्राट भालू सबसे अधिक खतरनाक था, क्योंकि वह पश्चिम की जूनिपर झील से पूरब में जूनिपर नदी तक बराबर धावे बोलता रहता था। उसे रुकने के लिए सबसे अच्छी जगह फौरेस्टरों की पशुशाला लगी। वह हवा का रुख देखता और कुत्तों और जाल दोनों को बचा जाता। पशुओं के बीच आकर कभी बछड़े

या किसी और चीज़ को चुपचाप ही ले जाता। जिन रातों में फौरेस्टर लोग बैठकर उसकी प्रतीक्षा करते, उनमें वह प्रकट ही न होता।

बक बोला, "तुम्हें उसकी खोजबीन करने से बहुत लाभ न होगा, पर फिर भी मैंने यह बात तुम तक पहुँचा देनी उचित समझी।"

पैनी बोला, "मेरे जानवर घर के इतना नज़दीक हैं! हो सकता है कि मैं उसे उसकी चालाकियों से ही फँसा लूं। तुम्हारा धन्यवाद! बक, बहुत दिन से मैं कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे आशा है कि तुमने उन सब बातों को, जो लेम ने बारहसिंगे के विषय में कही थीं, अपने दिमाग़ में नहीं लिया है।"

बक ने बचने के लिए कहा, "ठीक है। एक हिरण का क्या? अच्छा, विदा!"

पैनी ने अपना सिर हिलाया और अपने काम पर चला गया। उसे बुरा लगा कि उसने एकमात्र बड़े सिंगों से वह मित्र बनकर नहीं रह सका। आख़िर जंगल का संसार है ही कितना?

काम थोड़ा था और जोडी का अधिक समय फ्लैग के साथ बीतता था। फ्लैग बहुत जल्दी बड़ा हो रहा था। उसके पाँव बड़े लम्बे हो गए थे। जोडी ने एक दिन पहचाना कि उसके बचपन के छोटे-छोटे निशान मिट गए हैं। उसने उसके मुलायम सिर को सींगों के निशान के लिए टटोला। पैनी ने उसे ऐसा करते देखा और लाचारी में उस पर हँस पड़ा। बोला, "जोडी तुम तो हमेशा ही आश्चर्यों की उम्मीद रखते हो। गर्मियों से पहले उसके सींग नहीं निकलेंगे। पूरा साल होने से पहले ऐसा नहीं हो सकता। तब कहीं पतले-पतले-से नुकीले सींग आएँगे।"

जोडी को अपने अन्दर एक सन्तोष-सा अनुभव हुआ और साथ ही एक अद्भुत आश्चर्य भी। ओलिवर और फौरेस्टरों का अलग हो जाना भी उसे तंग न कर सका था। प्रायः हर दिन वह बन्दूक लेता और गोलियों का थैला भरकर फ्लैग को साथ लेकर जंगल में निकल जाता। अब पिछले सनावर लाल न होकर भूरे-से हो गए थे। हर सुबह पाला पड़ा होता था। इससे चारों ओर के क्रिसमस पेड़ खूब चमकते नज़र आते थे। उसने देखा, क्रिसमस पास ही था।

पैनी ने कहा, "हम क्रिसमस तक आराम करेंगे और उसके आसपास वौलूसिया में खरीद-फरोख़्त करने जाएँगे और उसके बाद हम फिर काम में जुट जाएँगे।"

जोडी को सोते से परे चीड़ों के जंगल में चेरोकी की फलियों का एक खेत मिल गया। उसने खूब लाल बीजों से जेबें भर लीं। वे काफी मज़बूत और पत्थर जैसे थे। उसने एक लम्बी सूई और मज़बूत धागा माँ की सिलाई की टोकरी में से निकाल लिया। उसे लेकर वह घूमने निकला। सूर्य की गर्मी में एक जगह बैठकर उसने पेड़ की ढासना लगाई और बहुत मेहनत से हर रोज़ कुछ दाने पिरोने लगा, ताकि माँ के लिए हार बना सके। वे दाने ऊबड़-खाबड़ ढंग से पिरोये गए थे, पर तो भी उसे पसन्द आए। पूरा हार वह अपनी जेब में लिए घूमता रहा ताकि वह इसे बार-बार देख सके। धीरे-धीरे जेब में पड़े बिस्कुटों और गिलहरी की पूँछों आदि से मिलकर यह चिपचिपा-सा हो गया। तब उसने सोते पर ले जाकर इसे धोया और अपने सोने के कमरे में आलमारी के ऊपर छिपा दिया।

पहले साल की क्रिसमस पर एक जंगली तीतर के अतिरिक्त कुछ और खास चीज़ न बनी थी, क्योंकि पैसा पास न था। पर इस साल भालुओं के बच्चों को बेचने से बचा हुआ कुछ पैसा भी था। पैनी ने उसमें से कुछ रूई के बीज खरीदने के लिए बचा लिया और बाकी क्रिसमस पर खर्च करने के लिए रख लिया।

माँ बोली, "अगर हमें कुछ खरीदने जाना ही है तो मैं भी वौलूसिया जाना चाहूँगी। मुझे अपने लिए चार गज अल्पका चाहिए, ताकि मैं एक अच्छी पोशाक क्रिसमस के लिए बना सकूँ और अच्छी तरह क्रिसमस मना सकूँ।"

पैनी बोला, "ओरी! तुम्हारा अनुमान ठीक ही है, मुझे इससे कुछ विरोध नहीं। क्योंकि जो कुछ मेरे पास है, उस पर तुम्हारा पूरा अधिकार है, पर मुझे लगता है कि चार गज़ से तो तुम्हारे दो कच्छे भी न बन सकेंगे।"

"अगर तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो, मैं उसे अपनी शादी की पोशाक पर जमाऊँगी। यह काफी लम्बी है। मैं लम्बाई के रुख नहीं बढ़ी

हूँ, मोटी ज़रूर हो गई हूँ। मैं उसका एक टुकड़ा सामने जोड़ना चाहती हूँ, ताकि यह मेरे चारों ओर ठीक से आ सके।"

पैनी ने उसकी चौड़ी पीठ थपथपाई और बोला, "बहुत मत सोचो, तुम्हारे जैसी अच्छी पत्नी को शादी की पोशाक पर सामने लगाने के लिए भी बहुत-सी अच्छी चीज़ें चाहिएँ।"

वह प्रसन्न होकर बोली, "तुम तो मुझे चढ़ा रहे हो। मैंने कभी भी कोई भी चीज़ नहीं माँगी, और क्योंकि तुम्हें मिल जाती है, इसलिए मुझसे भी पूछने की आशा नहीं रखते।"

"मैं जानता हूँ और तुम्हें इतना थोड़े में गुज़र करते देखकर मुझे डर लगता है। मुझे अच्छा लगता कि अगर भगवान् शक्ति दे तो मैं तुम्हें रेशम का एक पूरा थान ही ला दूँ। परमात्मा ने चाहा तो तुम्हें एक दिन कुआँ भी घर के दरवाज़े पर खुदा मिलेगा और कपड़े धोने के लिए इतनी दूर सोते पर न जाना पड़ेगा।"

वह बोली, "मैं भी वौलूसिया जाना चाहती हूँ।"

वह बोला, "अच्छा, मुझे और जोडी को एक-दो दिन शिकार खेलने का मौक़ा दो। हो सकता है कि कुछ माँस और खाल हम दुकान पर बेचने ले जा सकें और तुम मनचाहा सौदा खरीद सको।"

पहले दिन का शिकार नाकाम रहा, कुछ हाथ नहीं लगा।

पैनी बोला, "जब हिरणों पर ध्यान न दो, तब वे यहाँ भरे मिलगे और जब उन्हें खोजने निकलो, तो वे कहीं मिलेंगे ही नहीं।"

इसी बीच एक अजीब घटना हुई। ज़मीन के दक्षिण की तरफ पैनी ने कुत्तों को एक बरसभर के बारहसिंगे का पीछा करने के लिए छोड़ा, पर वे टस से मस न हुए। पैनी ने सालों से जो न किया था, वह भी कर दिया। एक शाख तोड़कर जूलिया को उसकी ज़िद के लिए पीटा। वह भौंकी और गुर्रायी, पर उठी नहीं। शाम को रहस्य खुल गया। फ्लैग अपनी आदत के मुताबिक आ गया। पनी खुशी से उछल पड़ा और तब ज़मीन पर झुककर उसने उन निशानों को मिलाया, जिन पर कुत्तों ने बढ़ने से मना कर दिया था। वे वही थे। उसने अनुभव किया कि नए बैक्स्टर को पकड़ने से मना करने में जूलिया ने अपनी बुद्धिमत्ता का ही परिचय दिया था।

वह बोला, "मुझे यह बात बहुत लज्जित कर रही है कि कुत्ता भी अपने सम्बन्धियों को पहचान लेता है।"

जूलिया खुश हुई। पैनी ने भी उसके लिए बहुत अच्छा भाव रखा। उसे बुरा लगता यदि उनके पीछा करने से फ्लैग परेशान होता।

अगले दिन का शिकार काफी अच्छा रहा। उन्होंने दलदल में हिरणों को खाते हुए पा लिया। पैनी ने एक बड़ा भारी बारहसिंगा मारा। उसने एक और छोटे बारहसिंगे का पीछा किया और इसे कोने में फँसा लिया। उसने जोडी को निशाना मारने को कहा और उसके चूकने पर स्वयं मार डाला। वे पैदल ही आए थे, क्योंकि धीमी चाल से खोजने पर ही इन दिनों शिकार का मौक़ा अचानक मिल सकता था। जोडी ने छोटे हिरण को उठाने की कोशिश की, परन्तु उसके भार से वह दब-सा गया। जब तक पैनी घर जाकर घोड़ागाड़ी न ले आया, तब तक वह शिकार के पास खड़ा रहा। जब वे लौटे तो फ्लैग भी उनके साथ था।

पैनी ने कहा, "तुम्हारा यह प्यारा छौना भी कुत्तों जैसे ही शिकार पसन्द करता है।"

घर लौटते हुए पैनी ने इशारा किया। भालू चर रहे थे। वे तेज़ धार वाले पत्तों वाले छोटे ताड़ों के फल खा रहे थे।

पैनी बोला, "इसके खाने से उनका पेट साफ हो जाता है और ताकत मिलती है। इसके बाद चर्बी से खूब फूलकर वे सर्दियों के लिए छिप जाते हैं। ये भालू हमारे नए साल के लिए अच्छी खुराक बनाएँगे।"

"बेरियों को और क्या-क्या चीज़ खाती हैं, पिताजी ?"

"हिरण को यह पसन्द है। और, यह बता दूँ कि अगर इन्हें किसी ढोल में भरकर इस पर थोड़ी-सी शराब डाल दो और पाँच महीने तक यों ही पड़ा रहने दो, तो इनकी शराब का जो नशा होगा उसे पीकर तुम्हारी माँ भी नाच उठेगी। पर, काश ! तुम ऐसा कर सको !"

जहाँ ये छोटे ताड़ के पेड़ ऊँची ज़मीन पर उठते हुए उनकी ज़मीन के पीछे के जंगल तक पहुँच गए थे, पैनी ने इशारे से एक ओर पतली पगडण्डी की ओर इशारा किया जो बामी के छेदों तक ले जाती थी। यहाँ फनियर साँप सर्दियों में रहते थे, पर गर्म और उजले दिनों में वे कुछ घंटों के लिए

बाहर आकर बामी के पास धूप सेंकते थे। जोडी को लगा कि जैसे जंगल के सभी न दीखने वाले जानवर भी पैनी की आँखों के सामने घूम रहे हों।

घर पर जोडी ने हिरणों की खाल उतारने और उनके पिछले हिस्सों को काटने में सहायता की, क्योंकि यही चीज़ें बेची जा सकती थीं। अगले चौथाई हिस्से का माँस माँ ने तल लिया, ताकि उसे उसी की चर्बी में चबाया जा सके। हड्डियाँ और बाकी बचा माँस कुत्तों के लिए उबाल लिया गया। परिवार ने उस रात उनके दिल और जिगर खाए। इस परिवार में कुछ भी बेकार न छोड़ा जाता था।

सवेरे पैनी बोला, "अब हमें यह तय करना होगा कि हमें दादी के यहाँ रुकना है या वापस आना है? अगर हमें वहाँ रात बितानी है तो जोडी को दूध दुहने और कुत्तों और चूज़ों को दाना-पानी देने के लिए रुकना होगा।"

जोडी बोला, "ट्रिक्सी तो करीब-करीब सूख ही गई है। हम उनके लिए अभी से चारा डाल सकते हैं। मुझे भी साथ चलने दीजिए और कृपा करके दादी के यहाँ रुकने का मौक़ा दीजिए।"

पैनी ने पत्नी से पूछा, "क्या तुम भी रात को वहाँ रुकना चाहोगी?"

"नहीं। मैं और वह कभी भी मीठे बनकर नहीं रह सकते।"

"तब हम वहाँ नहीं रुकेंगे। जोडी, तुम चल सकते हो, पर वहाँ जाकर रुकने के लिए मचलने मत लगना।"

"पर मैं फ्लैग के लिए क्या करूँ? क्या वह हमारे साथ दादी के यहाँ तक नहीं जा सकता, ताकि वह भी इसे देख ले?"

माँ फूट पड़ी, "वह दुष्ट छौना! हमारे घर पहले कभी ऐसी शरारत की बात नहीं हुई। तुम भी इतने शरारती नहीं थे।"

जोडी को बुरा लगा। बोला, "मुझे लगता है, यहीं रुकना पड़ेगा।"

पैनी बोला, "बेटे, उसे बाँध डालो और भूल जाओ। वह कुत्ता नहीं है और वह छोटा भी नहीं है, हालाँकि तुमने उसे छोटा ही बना लिया है। तुम उसे किसी लड़की की गुड़िया के समान इधर-से-उधर ले जा नहीं सकते। फिर क्या लाभ?"

उसने अनमने होकर फ्लैग को पिछली कोठरी में बाँध दिया और साफ

कपड़े बदलकर वौलूसिया जाने को तैयार हो गया। पैनी अपनी उसी शादी वाली पोशाक में ही था, जिसकी आस्तीनें कुछ सिकुड़ गई थीं। सिर पर काला टोप भी उसने ले लिया। इसके किनारों पर टिड्डियों ने छेद कर दिए थे, पर फिर भी यह टोप ही था। इसे छोड़कर पैनी के पास शिकार के समय की एक ऊनी टोपी भी थी और खेतों में काम आने वाला ताड़ के पत्तों से बना एक टोप। जोडी नए जूते, घर-बुने कपड़े के पाजामे, नुकीली घास के बने टोप और नई काली अलपका का लाल फीते वाला कोट पहनकर खूब सजा हुआ था। माँ ने साफ़ और किनारीदार नई पोशाक पहनी हुई थी, जो उसने गिंगाम से बनाई थी। उसकी पसन्द से यह कपड़ा अधिक गहरा नीला था, परन्तु इसके चौकोने बहुत सुन्दर थे। उसने नीला धूप का टोप सिर पर पहना था, पर साथ ही किनारीदार काला टोप भी रख लिया। उसे गाँव के पास पहुँचते हुए वह पहन लेगी।

गाड़ी में रेतीली सड़क पर झटके खाते हुए जाना बहुत सुहावना था। जोडी गाड़ी के फर्श पर बैठा था। उसकी पीठ सीट पर लग रही थी। वहाँ से पीछे छूटते हुए जंगल को वह आनन्द से देख रहा था। आगे देखने की बजाय उसे बढ़ते जाने के भाव अधिक अच्छे लगे। गाड़ी के झटकते ही उसकी ठोढ़ी खुरच जाती। अब वे नदी पर पहुँच चुके थे। उसके पास सोचने को बहुत कुछ न था। इसलिए वह दादी के बारे में सोचने लगा। वह यह जानकर अचरज में डूब जाएगी कि वह ओलिवर से नाराज़ है। उसने बड़े सन्तोष के साथ दादी का चित्र खींचा। तब उसे बेचैनी होने लगी। उसे फिर से उसके लिए वही प्यार जग गया जो पिछली गर्मियों को छोड़कर हमेशा ही उसके लिए रहा था। शायद वह उसे नहीं बता सकेगा कि वह ओलिवर के विषय में क्या सोचता है? उसने अनुभव किया कि वह चुप रहकर उसके प्रति अधिक दयालु बनने का यत्न करेगा। उसकी कल्पना का यह चित्र उसे बहुत अच्छा लगा। उसने निश्चय किया कि वह ओलिवर की सेहत के विषय में निश्चित रूप से पूछेगा।

पैनी ने सूअर का माँस दो बोरों में भरा हुआ था। उनकी खालें भी एक बोरी में डाली हुई थीं। माँ ने भी एक टोकरी अण्डों की भरी हुई थी और एक छोटा बर्तन मक्खन से भरा हुआ था। यह सब दूकान पर बेचने

के लिए था। इसके अलावा एक डलिया दादी के लिए भेंटों से भरी हुई थी। उसमें नई राब, आलू, सूअर का माँस आदि रखे हुए थे। वह दुश्मन के घर भी खाली हाथ जाना नहीं चाहती थी।

पैनी ने नदी के दूसरे पार किश्ती लाने के लिए ज़ोर से आवाज़ दी। आवाज़ नदी के नीचे तक गूँज गई। दूसरी ओर एक लड़का सामने आया। वह बड़े धीमे-धीमे नाव खेकर लाया। कुछ देर के लिए जोडी को लगा कि बच्चे का जीवन ईर्ष्या के लायक है। वह नाव को नदी के आर-पार लाता-ले जाता रहता है। परन्तु, तभी उसे लगा कि ऐसा जीवन स्वतन्त्रता से बिलकुल रहित था। ऐसा बच्चा न शिकार पर जा सकता है, न जंगल में घूमने, न किसी फ्लैग को ही पाल सकता है। उसे प्रसन्नता हुई कि वह स्वयं किश्ती वाले का बेटा न था। उसने उसे बड़े खिंचे दिल से पुकारा। बच्चा कुछ भद्दा और शर्मीला था। उसने किश्ती पर घोड़े को सिर झुका-कर चढ़ाने में सहायता दी। जोडी उसके जीवन के बारे में उत्सुकता से भर उठा।

उसने पूछा, "तुम्हारे पास बन्दूक है ?"

लड़के ने अपना सिर इन्कार में हिला दिया और अपनी आँखें दूसरे किनारे पर गाड़ दीं। जोडी को फौडरविंग की याद ताज़ा हो आई। नज़र में आते ही फौडरविंग जैसे उससे बातें करने लगता था। उसने नए लड़के से अपना ध्यान हटा लिया। माँ अपनी ख़रीद-फरोख़्त के लिए उत्सुक थी। उन्होंने दूकान से थोड़ी दूर ले जाकर गाड़ी खड़ी कर दी और अपनी सब चीज़ें मेज़ पर जाकर रख दीं। दूकानदार बोयल्स व्यापार की जल्दी में न था। वह जंगल की कुछ खबरें सुनना चाहता था। फौरेस्टर लोगों ने उसे बहुत-सी अविश्वसनीय बातें, बाढ़ के बाद की, बताई थीं। कुछ और शिकारी भी वौलूसिया से जंगल में गए थे और उन्होंने भी लगभग वही बातें बताई थीं। शिकार मिलना असम्भव था। भालू नदी के किनारे-किनारे जानवरों को मार रहे थे, जैसा उन्होंने बरसों से नहीं किया था। उसने पैनी से ये सब बातें पूछनी चाहीं। पैनी ने बताया कि वे सब बातें सच थीं। फिर वह मेज़ पर झुक गया और बातों में लग गया।

जोडी की माँ बोली, "तुम जानते हो कि मैं बहुत देर खड़ी नहीं रह

सकती। अगर तुम लोग सौदे को तय कर लो, तो मैं कुछ ख़रीद-फरोख़्त करके दादी हुट्टो के यहाँ चली जाऊँ। फिर तुम सारे दिन बातें करते रहना!"

बोयल्स ने तुरन्त ही माँस को तोला। हिरण का माँस कम मिलने के कारण वह इसे तुरन्त ही अच्छी कीमत पर बेच सकता था। नदी का स्टीमर इसको अपने अंग्रेज़ और अमरीकी यात्रियों के लिए ले लेगा। उसने खालों को बड़े ध्यान से देखा और उनकी हालत के लिए अपना सन्तोष प्रकट किया। उसके पास ऐसी खालों के लिए पाँच डालर के हिसाब से माँग भी आई हुई थी। पैनी ने कभी इतने दाम की कल्पना भी नहीं की थी। माँ सूखी चीज़ों की मेज़ की ओर बढ़ी। वह प्रसन्न थी। वह चाहती थी कि केवल सबसे अच्छी चीज़ ही खरीदे। दूकानदार के पास भूरे रंग की अल्पका नहीं थी। वह अगली किश्ती से मँगा सकता था। माँ ने मना कर दिया। टापू से फिर मँगाना बहुत कठिन था।

वह बोला, "तुम इस काली अल्पका में से पूरी पोशाक का कपड़ा क्यों नहीं ले लेतीं?"

उसने अंगुली से इशारा करते हुए कहा, "है तो यह अच्छी, पर तुमने कितनी क़ीमत बताई?"

वह घूम गई और उसे फिर अभिमान हो आया। बोली, "मैंने जब भूरे रंग की बात कही है तो मुझे भूरा ही चाहिए।"

उसने कुछ मसाले, गोंदें आदि क्रिसमस के केक के लिए खरीदीं। वह बोली, "जोडी, ज़रा जाकर घोड़े को देखो। वह शायद खुल गया है।"

उसने कुछ ऐसे भद्दे ढंग से कहा कि जोडी उसकी ओर ताकता रह गया। पैनी ने उसे आँख मारकर समझाया और वह जल्दी ही बाहर चला गया, ताकि माँ उसे हँसता हुआ न देख ले। वह चाहती थी कि उसके लिए क्रिसमस की कोई विचित्र भेंट खरीद ले। पैनी उसे बाहर भेजने का शायद और कोई अच्छा बहाना खोज लेता। बाहर जाकर वह उसी बालक की ओर देखने लगा, जो उन्हें किश्ती पर लाया था। वह लड़का वहीं बैठकर अपने घुटनों को देख रहा था। जोडी ने पत्थर का एक टुकड़ा उठाया और सड़क के किनारे के सनावर पर उसे मारा। उस लड़के ने देखा और फिर,

उसके पीछे आकर बिना बोले, उसने भी पत्थर उठाया और उसी तरह पेड़ पर फेंका। बिना बोले यह मुक़ाबला चलता रहा। काफ़ी देर बाद जोडी ने सोचा कि माँ अपना काम कर चुकी होगी। और, वह फिर स्टोर में आ गया।

उसकी माँ ने कहा, "तुम मेरे साथ चल रहे हो या पिता के पास रुकोगे ?"

वह कुछ क्षण हिचकिचाया। दादी उसे देखते ही कुछ केक और पकी हुई चीज़ें निकाल लाएगी। परन्तु दूसरी ओर यहाँ रहने पर उसे पिता को औरों से बात करते हुए सुनकर बहुत कुछ नई बातें सुनने को मिलेंगी। उसके लिए बात उसी क्षण तय हो गई, ज्यों ही दूकानदार ने उसे चूसने की एक गोली दे दी। अब जोडी शरीर और आत्मा से यहीं रह सकेगा।

उसने प्रसन्नता से कहा, "माँ, मैं और पिताजी साथ-साथ आएँगे।"

वह चली गई। पैनी उसे देखता रहा और उसने भौंहें सिकोड़ीं। बोयल्स हिरणों की खालों के बालों को खुशी से थपथपा रहा था।

पैनी बोला, "मैंने सोचा था कि इन खालों के लिए मैं नकद पैसे लूँगा। परन्तु अगर तुम बहुत जल्दी काली अल्पका में से एक पूरी पोशाक के लायक टुकड़ा दे दो, तो मैं नकद की चिन्ता न करूँगा।"

बोयल्स ने अनमना-सा बनकर कहा, "कोई और होता तो मैं 'ना' कर देता। पर, तुम्हें मेरे पास आते बहुत दिन हो गए। मुझे मंजूर है।"

कैंची चलने लगी और टुकड़ा कट गया।

पैनी बोला, "अब मुझे इससे मिलता-जुलता रेशमी धागा और बटन दे दो।"

"पर यह सौदे में शामिल नहीं है।"

"मेरे पास इतने पैसे हैं। अब इस कपड़े को डिब्बे में डाल दो। कहीं रात को बारिश न हो जाय।"

बोयल्स ने खुशी से कहा, "अच्छा, अब तुमने मुझे ठग लिया। सच बताओ कि क्रिसमस के भोजन के लिए जंगली तीतर का शिकार करने किसी को कहाँ जाना चाहिए ?"

"मैं तुम्हें क्या बताऊँ ? मैं खुद ही ऐसा शिकार करना चाहता हूँ। ये बहुत ही कम रह गए हैं। इन्हें प्लेग ने बहुत बुरी तरह खतम कर दिया है।

पर, तुम अगर नदी के साथ-साथ ऊपर तक चले जाओ, जहाँ इसमें सात मील वाली दूसरी धारा मिलती है, तो वहाँ पर सरू के पेड़ों वाली दलदल है। वहीं पर दक्षिण-पश्चिम में दो-तीन बड़े सुगन्धित वृक्ष भी हैं। वहाँ तुम्हें कोई न कोई शिकार मिल जाएगा।"

अब उनकी बातचीत अच्छे ढंग पर शुरू हुई। बिस्कुटों के एक सन्दूक पर जोडी भी सुनने के लिए बैठ गया। कोई और ग्राहक था नहीं, इसलिए बोयल्स पीछे से सामने आ गया और आरामकुर्सी सामने रखकर बात करने लगा। उन्होंने अपने पाइप निकाले और पैनी ने अपने तमाखू में से बोयल्स के पाइप को भर दिया।

बोयल्स बोला, "अपने उगाये तमाखू जैसा सन्तोष कहाँ ? तुम एक क्यारी इस बार मेरे लिए भी बीज देना। मैं तुम्हें अधिक से अधिक कीमत दूँगा। हाँ, अब अपनी बात शुरू करो। तो, तुमने नदी के दक्षिण-पश्चिम में कहा न ?"

जोडी अपनी उस चूसने वाली चीज़ को चूसता रहा। उसका काला रस उसके मुँह में भरा हुआ था। पर, यह बात उसकी एक दूसरी ही भूख मिटा रही थी, जो उसके तालु से भी परे की थी, और जो कभी-कभी ही तृप्त हो पाती थी। पैनी ने जंगल में बाढ़ की बात बताई कि किस तरह नदी के किनारे इसने नुक़सान किया। यह बात बोयल्स ने भी बताई। पर नदी सारे पानी को बहा गई थी। किनारों पर भी काफी बाढ़ आई थी। ईज़ी ओज़ेल की कुटिया भी हवा में लड़खड़ाकर गिर गई थी।

बोयल्स बोला, "अब वह दादी की कोठरी में ही रह रहा है। वह उतना ही खुश है जैसे चीड़ में छेद करने वाला पक्षी एक ताज़ी लकड़ी पाकर खुश होता है।"

पैनी ने उसे भेड़ियों और भालू के शिकार की बात बताई। साँप का काटना भी उसने बताया, जिसे बताना फौरेस्टर भूल गए थे। पैनी के बताने का ढंग ऐसा था कि जोडी को गर्मियों का सारा जीवन फिर से याद हो आया। बोयल्स भी खूब डूब गया और झुककर बैठा रहा। वह पाइप पीना भी भूल गया। तभी कोई ग्राहक आया और तब वह बड़ी निराशा से उठा।

पैनी बोला, "बेटा, तुम्हारी माँ एक-दो घंटे से गई हुई है। जाओ,

दादी को बताओ कि मैं भी आ ही रहा हूँ।"

"क्या हम दादी के यहाँ दोपहर का खाना खाएँगे ?"

"हाँ, अगर हमें निमन्त्रण न होता, तो तुम्हारी माँ अब तक लौट चुकी होती। अब जल्दी जाओ और उसके लिए हिरण का अगला चौथाई हिस्सा लेते जाओ।"

पैनी की कहानियों में खोया हुआ वह चला गया।

दादी का सुथरा आँगन बाढ़ के असर से फिर सुधरने लगा था। नदी अपने किनारों को लाँघकर यहाँ तक बढ़ आई थी और सर्दियों का इसका सारा बगीचा उजड़ गया था। वहाँ कभी न देखा गया कूड़ा इधर-उधर जमा हो गया था। नई पौध खिलने लगी थी। पर, अभी उस पर फूल न आए थे। केवल घर के आस-पास की झाड़ियों में कुछ फूल थे। नील के फूल काले-काले फलों के रूप में बदल चुके थे। दादी अन्दर उसकी माँ के साथ बैठी थी। उसने उनकी आवाज़ सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सुनी और खिड़की में से झाँककर देखा कि भट्टी में लपटें उठ रही हैं। दादी ने भी उसे देखा और दरवाज़े तक आ गई। उसका आलिंगन बहुत ही स्नेहपूर्ण था, परन्तु इसमें पुराना उत्साह न था। माँ के बिना वे दोनों पुरुष वहाँ सदा ही सत्कार-योग्य समझे जाते थे। उसे पके हुए माल की कोई भी तश्तरी दिखाई न पड़ी। हाँ, पकते हुए सामान की सुगन्ध रसोई से अवश्य आ रही थी। नहीं तो वह अपनी निराशा न सम्भाल पाता। दादी फिर से उसकी माँ से बातें करने बैठ गई, पर वह बहुत चुप थी। उसकी माँ भी ऐसा ही बरताव कर रही थी। उसने बड़ी तीखी निगाह से दादी के किनारीदार अँगरखे की ओर देखा।

वह बोली, "मैं कहीं भी होऊँ, मुझे सादी पोशाक अच्छी लगती है।"

दादी ने व्यंग्य से कहा, "मैं मरते हुए भी ऐसे ही कपड़े पहनना पसन्द करूँगी। आदमी सदा ही औरत को अच्छी पोशाक में देखना चाहते हैं।"

"पर मैं तो बचपन से ही इसे बुरा समझती हूँ कि मनुष्यों को रिझाने के लिए अच्छे कपड़े पहने जायँ। फिर कुछ हम जैसे गरीब आदमी भी होते हैं, उन्हें स्वर्ग में ही इस तरह के किनारीदार कपड़े मिल पाते हैं।"

दादी आरामकुर्सी में तेज़ी से झूलने लगी। वह बोली, "मैं तो स्वर्ग में जाना ही नहीं चाहती।"

जोडी की माँ बोली, "मेरी नज़र में तो वहाँ कोई ख़तरा नहीं।"

दादी की काली आँखें चमक उठीं।

जोडी ने पूछा, "दादी, तुम वहाँ क्यों नहीं जाना चाहतीं ?"

"एक बात यह कि वहाँ का साथ मुझे न रुचेगा।"

जोडी की माँ ने इसे अनसुना कर दिया।

दादी बोली, "और दूसरी बात संगीत की है। वहाँ केवल सींग का ही बाजा बजता है। पर मुझे वीणा, वॉयलिन और आठ कोनों वाले सींग का बाजा अधिक पसन्द है। जब तक कोई प्रचारक मुझे इनका भरोसा न दिला दे, मैं वहाँ जाने का निमन्त्रण धन्यवाद-सहित मना कर दूँगी।"

.जोडी की माँ का चेहरा गुस्से से भर आया।

दादी ने अपनी बात जारी रखी, "और फिर खाने की बात है! भगवान् भी अपने सामने भुने हुए माँस की खुशबू चाहता है परन्तु यह प्रचारक बताते हैं कि स्वर्ग में लोगों को दूध और शहद पर रहना पड़ता है। मुझे दूध अच्छा नहीं लगता और शहद मेरे पेट के लिए ठीक नहीं। मुझे लगता है कि लोग जो कुछ धरती पर नहीं पा पाते, उसे ही स्वर्ग में मान बैठते हैं। पर मैंने तो, एक औरत जो कुछ चाह सकती है, वह सब कुछ ही पा लिया है। शायद इसीलिए मेरे लिए स्वर्ग में कोई मज़ा नहीं बचा।" कहकर उसने अपना अँगरखा ठीक किया।

जोडी की माँ बोली, "मेरा अनुमान है कि ओलिवर का उस पीले बालों वाली चुड़ैल के साथ भाग जाना भी इसमें शामिल है।"

दादी की कुर्सी हिली और फर्श पर एक लय-सी छिड़ गई।

वह बोली, "ओलिवर बढ़ रहा है और खूबसूरत है। औरतें हमेशा ही उसके पीछे लगी रही हैं और लगती रहेंगी। इस ट्विंक को ही लो। गलती उसकी भी नहीं। उसे अपने जीवन में कभी कोई अच्छी चीज़ न टकरी। उसी समय ओलिवर ने उसकी ओर ध्यान किया। वह उसके पीछे क्यों न चल पड़ती ? वह गरीब बच्ची अनाथ है और ईसाइयों की दया पर छोड़ी हुई है," कहकर उसने अपने कपड़े फिर सीधे किए।

जोडी अपनी कुर्सी में बेचैन होने लगा। दादी के घर की गर्मी जैसे ठण्ड में बदल गई, मानो दरवाज़े खुल गए हों। उसने सोचा कि यह केवल औरतों का ही मामला है। औरतें खाना पकाते समय तो बहुत अच्छी होती हैं, परन्तु बाकी समय वे कुछ न कुछ दिक्कत ही खड़ी कर देती हैं। इसी समय पैनी के क़दमों की आवाज़ ड्योढ़ी में सुनाई दी। जोडी को चैन मिली। शायद उसका पिता उन दोनों को ठीक कर सके। वह कमरे में आ गया और उसने अपने हाथ रगड़कर आग पर फैला दिए।

बोला, "क्या यह अच्छा नहीं कि वे दोनों औरतें सामने बैठी हैं, जिन्हें मैं सबसे अधिक प्यार करता हूँ, और वे भट्टी के पास बैठकर मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

दादी बोली, "एज़रा! अगर दा औरतें भी इसी तरह आपस में प्यार करने लगें तो सब कुछ ही ठीक हो जाय।"

वह बोला, "मुझे पता है कि तुम दोनों की नहीं निभती। तुम कारण जानना चाहती हो? दादी! तुम्हें यह ईर्ष्या है कि मैं ओरी के साथ रह रहा हूँ। और ओरी! तुम्हें यह ईर्ष्या है कि तुम दादी जितनी सुन्दर नहीं हो। पर सुन्दरता उम्र के साथ आती है। समय आने पर तुम भी शायद कुछ सुन्दर बन जाओगी।"

उसकी अच्छी आदत के सामने झगड़ा असम्भव था। वे दोनों हँसने लगीं।

पैनी बोला, "मैं केवल यह पूछना चाहता हूँ कि क्या हमें इस घर की चर्बी खाने के लिए निमन्त्रित किया गया है या फ़िर हमें घर लौटकर बासी मक्की का हलवा खाना होगा?"

"तुम जानते ही हो कि यहाँ तुम्हारा रात और दिन स्वागत है। तुम्हारे भेजे हिरण के माँस के लिए भी मैं धन्यवाद देती हूँ। मेरी इच्छा थी, काश! ओलिवर भी हमारे साथ खाने पर हमारे यहाँ होता।"

"उसकी क्या खबर है? समुद्र पर जाने से पहले वह हमारी तरफ नहीं आया, इसका हमें दुःख है।"

"उसे पहले तो ठीक होने में ही काफी देर लगी। और, तब उसे सन्देश मिला कि बोस्टन में उसका जहाज तैयार खड़ा है और उसका साथी

प्रतीक्षा कर रहा है।"

"मेरा अनुमान है कि कोई लड़की भी फ्लोरिडा में उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।"

वे साथ-साथ हँसने लगे और जोडी भी उनके साथ चैन की हँसी हँसने लगा। दादी का घर फिर से उत्साह से भर गया।

वह बोली, "खाना तैयार है और अगर तुम जंगल के रहने वाले अच्छी तरह न खा पाए तो मेरे दिल को बहुत चोट पहुँचेगी।"

भोजन पहले जैसा तो नहीं था, पर तो भी बहुत-सी चीज़ें ऐसी थीं, जिनसे जोडी की माँ अत्यन्त प्रसन्न हुई। वातावरण मित्रतापूर्ण रहा।

जोडी की माँ बोली, "हमने क्रिसमस के लिए आने की सोची थी। पिछले साल हम नहीं आ सके थे, क्योंकि हमारा हाथ तंग था। तुम्हारा क्या अनुमान है कि क्या फलों से बनी केक और एक बोतल मीठी कैण्डी मेरी ओर से स्वीकार की जाएगी?"

"इससे बढ़कर अच्छा और क्या होगा? क्या ही अच्छा हो, अगर तुम सब वह रात यहीं बिताओ और क्रिसमस मेरे साथ ही मनाओ?"

पैनी बोला, "यह बहुत ठीक होगा और माँस के लिए तुम मुझ पर भरोसा रखना। अगर मैं पकड़ सका तो तीतर ज़रूर लाऊँगा।"

उसकी पत्नी बोली, "गाय, कुत्तों और चूज़ों का क्या करोगे? हम सब उन्हें छोड़कर नहीं आ सकते, चाहे क्रिसमस हो या न हो।"

"हम कुत्तों या चूज़ों के लिए काफी खाना छोड़ आएँगे। वे एक दिन में भूखे नहीं मर जाएँगे। और, मेरा अन्दाज़ है कि गाय तब ताज़ी सूई हुई होगी और हम बछड़े को उसे चूँघने के लिए छुट्टी दे देंगे।"

"और बड़े बछड़े को भालू या चीते के लिए खुला छोड़ देंगे?"

"मैं अनाज-भण्डार के अन्दर ही पशुओं का एक घेरा बना दूँगा, जहाँ उन्हें किसी प्रकार कष्ट नहीं होगा। हाँ, फिर भी अगर तुम घर रहना चाहो और इन जंगली जानवरों को अलग रखना चाहो तो ठहर जाना। पर मैं तो अच्छी तरह क्रिसमस मनाना चाहता हूँ।"

जोडी ने कहा, "मैं भी यही चाहता हूँ।"

उसकी माँ ने दादी से कहा, "इन दोनों के सामने मेरी दशा वैसी ही

है, जैसी दो बनबिलावों के सामने खरगोश की।"

पैनी बोला, "मैं तो यही सोचता था कि हम दोनों खरगोशों का पाला एक बनबिलाव से पड़ा है।"

"तुम इस सब में से भी कुछ न कुछ नई बात बना लेते हो," वह बोली, पर साथ ही हँस पड़ी।

यह निश्चय हुआ कि वे उस समय मेले पर पहले दादी के यहाँ आएँगे और फिर उसी के घर लौटकर रात और अगला दिन बिताएँगे। जोडी खुश हुआ, परन्तु तभी उस पर फ्लैग की याद ताज़ा हो आई, जैसे बादल घिर आए हों।

वह बोला, "मैं नहीं आ सकता। मुझे घर रुकना पड़ेगा।"

पैनी ने पूछा, "क्यों बेटा! तुम्हें क्या तकलीफ है?"

उसकी माँ दादी की तरफ मुड़कर बोली, "यह उसका बिगड़ा बेटा फ्लैग है। वह उसे अपनी आँखों से ओझल नहीं कर सकता। मैंने किसी बच्चे को किसी ज़िन्दा चीज़ से इतना अधिक उलझते और उसके पीछे बावला होते नहीं देखा। यह उसे खिलाने के लिए भूखा रहता है, उसके साथ सोता है, उसके साथ आदमियों जैसी बात करता है। मैंने स्वयं इसे बात करते सुना है। इसे उस छौने के अलावा दुनिया में और किसी का ध्यान ही नहीं।"

पैनी ने धीरे से कहा, "बच्चे को बहुत अधिक दुख अनुभव मत कराओ।"

दादी बोली, "क्यों, वह उसे साथ ले आए!"

जोडी ने अपनी बाँहें उसकी कमर के चारों ओर डाल दीं।

"दादी, तुम सचमुच उसे प्यार करोगी। वह बहुत चुस्त है। तुम उसे कुत्तों जैसे सिखा सकती हो।"

"निश्चय ही मैं उसे प्यार करूँगी। वह फ्लफ़ के साथ रह लेगा?"

"वह कुत्तों को पसन्द करता है। हमारे कुत्तों से वह खेलता है। उनके साथ शिकार पर जाते हुए बीच में से बिछुड़कर, वह फिर मिल जाता है। भालू का शिकार उसे भी कुत्तों जैसे ही बहुत पसन्द है।"

छौने की प्रशंसा उसके मुख से होने लगी।

पहनने के लायक वे न थीं। इतनी अच्छी पोशाक को उन्होंने पहना तो नहीं पर चीड़ के जंगल में गुज़रते हुए जब उन्हें ठण्ड लगी तब वे पछताए भी अवश्य। कुत्ते अब भी ऊँघ रहे थे और चुपचाप पीछे-पीछे बढ़ रहे थे। पैनी ने अपनी अँगुली मुँह में दी और उसे यह देखने के लिए बाहर निकाला कि शायद बहुत हल्की-हल्की हवा चल रही हो। परन्तु हवा बिलकुल नहीं चल रही थी। वहाँ से वह सीधा जाल की ओर बढ़ा। यह अपेक्षाकृत खुली जगह पर था। वह इससे सौ गज दूर ही रुक गया। पूरब की ओर पौ फटने लगी थी। उसने कुत्तों को हौले से थपथपाया और वे ज़मीन पर झुक गए। जोडी ठण्ड के मारे सुन्न पड़ गया था। पैनी भी अपने पतले कपड़ों और फटी हुई बण्डी में काँप रहा था। जोडी को हर ठूँठ पर और हर पेड़ के पीछे वही बूढ़ा रीछ दीख रहा था। बहुत धीमे-धीमे सूर्य ऊपर उठा। पैनी ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, "अगर वह फँसा होगा तो अब तक मर चुका होगा, क्योंकि मुझे कोई भी आवाज़ नहीं सुनाई दे रही।"

अपनी बन्दूकें उठाये हुए वे आगे सरकने लगे। जाल पहली शाम जैसा ही फैला हुआ था। अभी प्रकाश इतना नहीं था कि निशान फिर से देखे जा सकें, ताकि जान सकें कि कहीं वह भालू यहाँ आया भी है या नहीं? उन्होंने अपनी बन्दूकें एक पेड़ के सहारे टिकाईं और अपनी बाँहों और टाँगों को हिला-डुलाकर गर्म होना चाहा।

पैनी बोला, "अगर वह आया होगा तो बहुत दूर न होगा। जूलिया उछलकर उसे एकदम पकड़ लेगी।"

सुबह का प्रकाश गर्म न था, पर फैलने अवश्य लगा था। पैनी आगे गया और ज़मीन पर झुका। जूलिया ने भी चुपचाप सूँघा।

पैनी बोला, "बुरा हो मेरा, सचमुच बहुत बुरा हो!"

जोडी ने भी देखा कि निशान एक दिन पुराने ही थे।

पैनी बोला, "वह यहाँ कहीं भी नहीं आया। अपने बचाने के लिए वह कभी किसी नियम का पालन नहीं करेगा।"

सीधे होकर उसने कुत्तों को बुलाया और फिर से घर आ गया। वह बोला, "कुछ भी हो, अब हमें यह तो पता है कि कल हमने उसे कहाँ छोड़ा था?"

घर पहुँचने तक वह फिर न बोला। वहाँ अपने कमरे में गया और अपने शिकार के नये कपड़े पुराने कपड़ों के ऊपर ही पहन लिए। रसोई को देखकर वह बोला, "ज़रा मेरे लिए आटा, सूअर का माँस, नमक, कॉफ़ी और पकी हुई चीज़ें एक थैले में रख दो। कुछ चीथड़े भी आग जलाने के लिए रख देना।"

जोडी ने भी उसके साथ-ही-साथ अपनी तैयारी जारी रखी।

उसने पूछा, "मुझे भी क्या अपने नये कपड़े पहन लेने चाहिएँ?"

माँ दरवाज़े तक आई और थैला भर लाई।

पेनी एक क्षण को रुका और बोला, "बच्चे, तुम्हारा स्वागत है। पर यह बात समझ लो कि यह शिकार आनन्ददायक नहीं होगा। ठण्ड का मौसम है। रास्ता बहुत सख्त है और ठण्ड में ही कहीं रुकना पड़ेगा। अब मैं भालू को बिना पकड़े घर नहीं लौटूँगा। अब भी अगर तुम चलना चाहो तो अवश्य चलो। चलोगे?"

"हाँ, ज़रूर।"

"तो फिर तैयार हो जाओ।"

पत्नी ने अपनी नई पोशाक की ओर देखा और पति से बोली, "तो क्या आज की रात तुम बाहर रहोगे?"

"बहुत अधिक यही सम्भावना है। वह मुझसे एक रात आगे है। हो सकता है, कल रात को हम उसे पकड़ लें या एक सप्ताह भी लग सकता है।"

उसने जैसे-तैसे सहा और धीमे से बोली, "कल क्रिसमस से पहली शाम है!"

"मैं क्या करूँ? मेरे सामने बिलकुल ताज़ा निशान हैं और मुझे पीछा करना है। लाचार हूँ।"

वह उठ खड़ा हुआ और उसने फीते आदि कसे। उसकी आँखें पत्नी के उदास चेहरे की ओर दौड़ गईं।

वह बोला, "क्यों, कल क्रिसमस की शाम है न? तुम घोड़ागाड़ी को नदी तक दिन ही दिन में ले जाने में डरोगी तो नहीं?"

"नहीं, दिन में तो नहीं।"

"तो फिर अगर हम ठीक समय तक न पहुँचे, तो गाड़ी जोतकर तुम चली जाना। अगर किसी भी प्रकार मौक़ा मिला तो हम वहाँ ज़रूर पहुँचेंगे। तुम जाने से पहले दूध दुह लेना। अगर हम वहाँ न पहुँचे तो तुम अगली सवेरे आना और फिर दुह लेना। यही एक अच्छा रास्ता है।"

उसकी आँखों में अब भी आँसू थे, पर वह बिना कुछ कहे चली गई और थैला भर दिया। जोडी अपना मौक़ा ढूँढता रहा, जब उसकी माँ पिता के लिए माँस लेने धुआँघर तक गई। उसने काफी सारा आटा निकाला और अपने थैले में फ्लैग के लिए छिपा लिया। यह थैला चीते की खाल का बना हुआ था। वह इसे पहली बार ले जाने लगा था। उसने इसे छूकर देखा कि यह रैकून की खाल के बने पहले थैले जैसा मुलायम न था, पर तो भी इसके सफेद और नीले धब्बे बहुत ही अच्छे लग रहे थे। माँ माँस लेकर लौटी और उसने थैला पूरा भर दिया। जोडी हिचकिचाता खड़ा रहा। वह क्रिसमस के लिए बहुत प्रतीक्षा करता रहा था। अब वहाँ न जा सकेगा। अगर वह साथ जाता तो उसकी माँ बहुत खुश होती और ऐसा करने के लिए उसे निस्वार्थ भी समझा जाता। पैनी ने थैला अपने कन्धे पर लटकाया और अपनी बन्दूक भी कन्धे पर उठा ली। तभी जोडी भी तयार हो गया। उसे दुनिया का कोई भी मेला रोक नहीं सकता था। वे दोनों ही उस बूढ़े रीछ को मारने के लिए निकल पड़े। उसने वह थैला अपने कन्धे पर लटकाया और अपनी वन्दूक लेकर अपने पिता के पीछे-पाछे खुशी-खुशी बढ़ चला। वे उत्तर की ओर सीधे उस राह पर गए, जहाँ पहली शाम को पहुँच चुके थे। फ्लैग झाड़ियों में घुस गया। जोडी ने सीटी बजाई।

जोडी ने पूछा, "पिता जी, चाहे क्रिसमस हो, तब भी शिकार आदमी के लिए पहली चीज़ होती है! क्यों, है न यही बात ?"

"यह आदमी का ही काम है।" पैनी ने कहा।

निशान अब भी ताज़े थे और जूलिया बिना कठिनाई के उनका पीछा करने लगी। जहाँ कल उन्होंने छोड़ा था वहाँ से कुछ आगे जाकर ही वे रुक गए थे और तब एकदम ही उत्तर की ओर मुड़ पड़े थे।

पैनी ने कहा, "अच्छा ही हुआ कि हमने कल उसका पीछा नहीं किया। वह दूसरे गाँवों की ओर निकल गया है।"

वहाँ से फिर पश्चिम की ओर वे मुड़े और फिर हौपकिन्स मैदान की ओर और तब गीली दलदल में ! अब पीछा करना कठिन था । जूलिया पानी में ही कूद पड़ी । उसने बार-बार इसको चखा और सूँघा, और तब उसने फिर एक ओर अपनी नाक उठा ली । वह प्रयत्न करने लगी कि उसके जाने की दिशा को उसके बालों की रगड़ की गन्ध से जान सके । अब वह फिर चलने लगी । कभी-कभी गन्ध बिल्कुल समाप्त हो जाती थी । तब पैनी सख्त जमीन पर आकर दलदल के निशानों की दिशा में ही बढ़ता हुआ वहाँ तक आ जाता था, जहाँ से फिर वे निशान आगे चल रहे हों । अगर वह जूलिया से पहले वहाँ पहुँच जाता तो वह उसे बुलाकर बढ़ने के लिए कहता ।

एक जगह उसने यह निशान पाए और बोला, "हाँ, बेटी ! यहाँ देखो। वह जा ही रहा है ! वह जा रहा है ! पकड़ो उसे !"

रिप अपने छोटे-छोटे कदमों से पैनी के पीछे चलता रहा । फ्लैग सभी जगह पहुँच रहा था ।

जोडी ने पिता से पूछा, "पिताजी, फ्लैग के कारण कोई बाधा तो नहीं ? मुझे तो ऐसा नहीं दीखता ।"

"नहीं, बिलकुल नहीं । अगर इसे भालू भी सूँघ ले, तो वह इसका ध्यान नहीं करेगा और शायद लौटकर इस पर टूटेगा भी नहीं ।"

पैनी की उदासी के बाद भी इस शिकार में वही पुराना मज़ा आने लगा । दिल प्रसन्न और उजला था ।

पैनी ने जोडी की पीठ थपथपाई और बोला, "यह शिकार क्रिसमस की गुड़ियों के खेल से अच्छा ही है । क्यों ?"

"हाँ, मुझे भी ऐसा ही दीखता है ।"

दोपहर को ठण्डा खाना रोज़ के गर्म खाने से भी अधिक अच्छा लगा । कड़ी धूप में ही बैठकर उन्होंने खाना खाया और आराम किया। अपनी बण्डियाँ उन्होंने खोल दीं । जब वे फिर चलने के लिए उठे तो उन्हें पहले अपने थैले कुछ भारी लगे, पर बाद में वे फिर ठीक लगने लगे । पहले लगा कि वह रीछ फौरेस्टर अथवा उनकी अपनी ज़मीन का एक लम्बा चक्कर काटेगा या फिर जंगल के पार ओक्लावाहा नदी के नए मैदानों की

ओर चरने निकल जाएगा।

पैनी बोला, "अगर फौरेस्टरों के सूअरों ने उसे चोट पहुँचाई ही है, तो वह इतना लम्बा रास्ता नहीं काटेगा।"

दोपहर बाद वे निशान बड़े बेतुके ढंग से फिर पूरब की ओर दलदल में मुड़ पड़े। अब राह कठिन थी। पैनी बोला, "यह बात मुझे पिछली वसन्त की याद दिला देती है, जब तुमने और मैंने उसका पीछा जूनिपर दलदल में से होते हुए किया था।"

दोपहर के काफी देर बाद उसने बताया कि वे नमक के सोते वाली धारा के निचली ओर नज़दीक ही थे। यहाँ एकदम ही जूलिया ने जीभ उठाई।

पैनी बोला, "वह ऐसी ही जगह आराम कर रहा होगा।"

जूलिया एकदम भाग पड़ी और पैनी भी उसके पीछे भागने लगा। वह बोला, "वह उस पर उछल पड़ी है।"

जोडी के सामने पीछा कुछ ऐसे हुआ जैसे घने जंगल में कोई तूफ़ान आ गया हो। पैनी चिल्ला रहा था, "बेटी, पकड़ो! कूदो उस पर! शाबाश!"

रीछ बेतहाशा भाग रहा था। वह घने जंगल में होकर पेड़ों को तोड़ता आगे बढ़ा। कुत्तों के लिए यह कठिन था। वह जैसे भाप से चलने वाली किश्ती हो और झाड़ियाँ और कँटीली बेलें उसके लिए पानी की लहर से अधिक रुकावट न हों। पैनी और जोडी पसीने से तर हो रहे थे। जूलिया ने फिर एक बार जीभ दिखाई। वह निराश थी। दलदल इतनी गीली थी कि वे सब अपने जूतों तक उसमें डूब गए और बहुत धीमे-धीमे आगे बढ़े, पर सहारे के लिए कोई भी चीज़ उनके पास न थी। सरू यहाँ उगे हुए थे। उनके घुटने बार-बार फिसल पड़ते थे। जोडी अपनी कमर के बल गिर गया। पैनी ने झुककर उसे सहारा दिया। फ्लैग बायीं ओर से होते हुए ऊँची ज़मीन खोजने के लिए चक्कर काटने के लिए चला गया। पैनी साँस लेने के लिए रुका। उसका साँस बहुत भारी चल रहा था। वह बोला, "लगता है, वह हमें धोखा दे जाएगा।"

जब उसका साँस ठीक चलने लगा, तब वह फिर आगे बढ़ा। जोडी

अब पीछे पड़ गया था। परन्तु हरे मैदान के परे उसे फिर से रास्ता ठीक लगा और वह साथ मिल गया। झाड़ियाँ तेजपात, नींबू और खजूर आदि की थीं। हरे मैदान सीढ़ियों की तरह थे। उनके बीच-बीच में साफ, किन्तु भूरे रंग का, पानी बह रहा था। सामने ही जूलिया तेज़ी से भौंकी।

पैनी बोला, "पकड़ लो उसे ! शाबाश ! पकड़ लो।"

अब आगे का जंगल घास में पलट गया। यहाँ से बूढ़ा रीछ आँखों के सामने ही लपकता हुआ दीख रहा था। ऐसे लगता था, जैसे एक काला बवण्डर सामने जा रहा हो। जूलिया तेज़ी से उसके पीछे उछली। सामने ही नमकीन सोते की धारा का तेज़ पानी दिखाई दे रहा था। भालू धारा में कूद पड़ा और दूसरे किनारे की ओर बढ़ा। पैनी ने बन्दूक उठाई और दो गोलियाँ दाग़ दीं। जूलिया एक ओर को खिसक गई। वह कमर के बल बैठ गई और उसने अपनी नाक ऊँची उठाई। वह बड़े शोक में रो रही थी, निराश और दुखी। दूसरे किनारे रीछ हौले-हौले चढ़ रहा था। पैनी और जोडी उस गीले किनारे पर होकर बढ़े। उन्हें केवल एक काली गोल-सी शक्ल ही दिखाई दी। पैनी ने जोडी की बन्दूक ली और उसके पीछे फिर दाग़ दी। भालू तेज़ी से उछला।

पैनी चिल्लाया, "मैंने उसे घायल कर दिया !"

भालू अपनी राह पर बढ़ता रहा। ज्योंही वह घनी झाड़ियों में से होकर निकला, शाखों के टूटने की आवाज़ आई। पर उसके बाद आवाज़ शान्त हो गई। पैनी ने बहुत उतावला होकर कुत्तों से पीछा करने को कहा, परन्तु चौड़ी धारा को पार करने से उन्होंने इन्कार कर दिया। निराशा में उसने अपने हाथ पटके और अपनी कमर के बल उस गीली ज़मीन पर ही बैठकर सिर हिलाने लगा। जूलिया उठी और पैर के निशानों को किनारे पर उसने सूँघा और फिर आकर वह अपनी ही जगह बैठ गई। जोडी की नस-नस में सनसनी दौड़ गई। उसे लगा कि शिकार समाप्त हो गया है। रीछ इस बार फिर धोखा दे गया है।

पर, उसे तब अचरज हुआ जब पैनी ने उठकर अपना पसीना पोंछा और दोनों बन्दूकें फिर से भरीं और तब वहाँ से उत्तर-पश्चिम की ओर धारा के ऊपरी किनारे की ओर बढ़ने लगा। उसने सोचा कि उसका पिता

घर लौटने का कोई कम उलझन-भरा रास्ता खोज रहा है। अपने बायीं ओर चीड़ के खुले जंगल दीखने पर भी पैनी बढ़ता ही रहा और वह मुड़ा नहीं। जोडी कोई प्रश्न न कर सका। फ्लैग का दीखना बन्द हो गया था और वह उसके लिए भी चिन्तित था। यह पहले ही तय हो चुका था कि वह कोई भी शिकायत न करेगा। पैनी की पतली पीठ चिन्ता और उत्साह की कमी के कारण झुक-सी गई थी। जोडी अपने भारी पाँवों और दर्द करती टाँगों के साथ पिता के पीछे चलता रहा।

पैनी जैसे अपने से ही बात करता हुआ बोला, "मुझे याद पड़ता है कि उसका घर यहीं था।"

धारा का किनारा धीरे-धीरे ऊँचाई पर उठने लगा। सनावर और चीड़ सूर्य को ढँकने लगे। वे धारा के बहुत ऊपर पहुँच गए थे। यहाँ चोटी पर एक छोटा घर बना हुआ था और इसके चारों ओर साफ किया हुआ एक खेत था। पैनी रास्ता ढूँढता हुआ उधर बढ़ा और घर तक आ गया। दरवाज़ा बन्द था। चिमनी में से धुआँ नहीं आ रहा था। कोई खिड़की भी नहीं थी। खिड़की की जगह कहीं-कहीं लकड़ी के छोटे-छोटे दरवाज़े-से थे। ये भी सब बन्द थे। पैनी कमरे के पीछे गया। यहाँ एक छोटा दरवाज़ा खुला था। उसने अन्दर झाँका।

वह बोला, "वह यहाँ नहीं है, पर फिर भी हमें अन्दर चलना ही है।"

जोडी ने आशा से पूछा, "क्या यहाँ से आज ही रात घर लौटेंगे?"

पैनी ने मुड़कर उसकी ओर देखा और बोला, "हैं, आज की रात घर लौटेंगे? मैंने तुम्हें बता दिया था कि मैंने रीछ को मारना ही है। तुम चाहो तो घर लौट सकते हो।"

उसने अपने पिता को कभी इतना कठोर होते न देखा था। वह उसके पीछे चुपचाप चलने लगा। कुत्ते घर के पास मिट्टी में लेट गए थे। पैनी लकड़ियों के ढेर पर गया और लकड़ियाँ छील लाया। उसने बाँह भर एक गट्ठर खिड़की की राह अन्दर डाल दिया। अब वह स्वयं भी इसमें से अन्दर कूद गया और उसने रसोई का दरवाज़ा अन्दर से खोल दिया। जोडी लकड़ियों के ढेर तक गया और वहाँ से तेल वाली लकड़ियों के कुछ टुकड़े काट लाया और उन्हें उसने फर्श पर रख दिया। एक चूल्हा और लोहे की

पतीली वहीं अँगीठी पर पड़ी थी।

पैनी ने आग जलाई और एक छोटा पतीला उस पर रख दिया। उसने अपना थैला खोला और उसमें से सूअर के माँस को निकालकर छोटे-छोटे टुकड़े काट उसने पतीले में डाल दिए। वे धीरे-धीरे पकने लगे। वह बाहर और खुले कुएँ में से पानी की एक बाल्टी भर लाया। एक आलमारी में से उसने कॉफ़ी का एक डिब्बा उठाया और उसमें कॉफी डाल करके उसने चूल्हे के पास ही रख दिया। वहीं से एक बर्तन लेकर उसने मक्की का हलवा बनाया और दो भुने हुए ठण्डे आलू उसने आग के पास गर्म होने के लिए रख दिए। ज्योंही माँस पकने लगा, उसने मक्की का आटा चर्बी में मथ कर एक सख्त रोटी के रूप में बना लिया और तब उसे एक तरफ पूरा सिकने के लिए रख दिया। कॉफी उबलने लगी थी। उसने इसे भी एक किनारे रख दिया। आलमारी में से प्याले और तश्तरियाँ निकालकर उसने मेज़ पर फैला दिए।

तब उसने जोडी को कहा, "आओ बेटे, सब तैयार है।"

उसने भूख के कारण बहुत जल्दी-जल्दी खाया और जो कुछ भी बचता दीखा, उसे कुत्तों के लिए बाहर ले गया और साथ ही हरेक के लिए दो-दो टुकड़े मगरमच्छ के माँस के भी ले गया। जोडी शाम की ठण्ड से भी अधिक ठण्डा-सा हो गया था। उसे पिता का चुप रहना अच्छा नहीं लग रहा था। ऐसा लगा जैसे वह किसी पराए आदमी के साथ खा रहा हो। पैनी ने पानी गर्म किया और प्याले और तश्तरियाँ धोकर फिर से अपनी जगह रख दीं। कॉफी कुछ बच गई थी। उसने उसे फिर से भट्टी के पास ही रख दिया था और फर्श साफ कर दिया। वह बाहर गया और कुछ काई सनावर के एक पेड़ से इकट्ठी कर लाया। बाहर छत के नीचे कुत्तों के लिए उसने बिस्तर तैयार कर दिया। चुप और ठण्डी रात आती जा रही थी। वह बाहर से दो लट्ठे ले आया और उन्हें उसने आग में डाल दिया, ताकि पीछे से उन्हें धक्का देकर जलते रहने दिया जाय। उसने अपना पाइप भरा और जलाया और तब आग के पास ही फर्श पर लेट गया। अपने थैले को उसने तकिए के रूप में रख लिया।

बहुत उदारता के साथ वह बोला, "बेटे, तुम भी ऐसे ही करो, तभी

ठीक है। हमें सवेरे बहुत जल्दी निकल चलना है।"

वह बहुत खोया-सा हुआ था। इसलिए जोडी की हिम्मत अब कुछ पूछने को पड़ी। उसने पूछा, "आपका खयाल है कि वह फिर यहीं लौटकर आएगा?"

"नहीं, वह नहीं आएगा। हम उतनी प्रतीक्षा नहीं कर सकते। मेरा पूरा विश्वास है कि वह घायल हो चुका है। मैं इस नदी के ऊपरी सोते तक जाकर इसे पार कर लूंगा और वहाँ से उस जगह तक आऊँगा जहाँ कल वह घनी झाड़ियों में घुसा था।

"वह तो काफी लम्बा रास्ता है।"

"हाँ, है तो बहुत।"

"पिता जी!"

"हाँ, कहो!"

"आपका क्या अनुमान है, क्या फ्लैग को कोई नुकसान तो नहीं पहुँचा?"

"तुम चलने से पहले मेरी कही गई बात भूले तो न होगे?"

"नहीं, मैं भूला तो नहीं हूँ।"

पैनी ने कहा, "वह गुम नहीं हुआ। जंगल में कभी कोई हिरण गुम नहीं होता। अगर वह जंगली न बन गया हो, तो वह अवश्य लौटेगा।"

"पिताजी, वह कभी भी जंगली नहीं बनेगा। कभी नहीं!"

"इतना छोटा तो कभी नहीं! इस समय वह तुम्हारी माँ को तंग कर रहा होगा। अच्छा, अब सो जाओ!"

"पिताजी, यह घर किसका है?"

"कभी यह एक विधवा स्त्री का होता था, मैं बहुत दिन से यहाँ नहीं आया।"

"हमारे घुस आने का वह बुरा तो नहीं मानेगी?"

"अगर पहले वाली ही औरत अब भी रहती है, तो वह बुरा नहीं मानेगी। मैं शादी से पहले उससे मित्रता के लिए यहाँ आता था। अच्छा, अब सो जाओ।"

"पिताजी!"

"अच्छा, अभी तुम्हारा एक और सवाल बाकी है ? पर अब इसके बाद मत पूछना। और अगर यह भी मूर्खतापूर्ण हुआ तो मैं बहुत बुरा रहूँगा।"

वह कुछ झिझका। प्रश्न क्रिसमस के उत्सव के लिए अगली रात वौलूसिया जाने का था। उसे लगा कि यह प्रश्न अच्छा नहीं। उस भालू के पीछे चलते रहना शायद इस जीवन में समाप्त न होगा। उसने अपने विचार फिर फ्लैग की ओर मोड़ दिए। उसने उसे भूखा, खोया हुआ और चीते से पीछा किया जाता हुआ देखा। उसके बिना उसे अकेलापन लगने लगा। उसे सन्देह हुआ कि कभी माँ ने भी उसकी इतनी ही चिन्ता की है ? हालांकि वह इकलौता है। और तब इसी शोक में वह गहरी नींद सो गया।

सुबह जब उसने आँगन में किसी गाड़ी के पहियों की आवाज़ सुनी, तो उठ बैठा। उसने कुत्तों को भौंकते और किसी एक अजनबी कुत्ते को उत्तर देते सुना। वह बैठ गया। पैनी अपने सिर को हिलाता हुआ पहले ही खड़ा हो चुका था। वे काफी अधिक देर तक सोते रहे थे। कमरे के आस-पास गुलाबी धूप पड़ रही थी। आग जलकर अंगारे रह गई थी। लट्ठों के जले हुए किनारे अब भी भट्टी पर वैसे ही लटके हुए थे। हवा बर्फ़ जैसी ठण्डी थी। उनकी साँसें बाहर निकलकर बादलों जैसी जम रही थीं। ठण्ड उनकी हड्डियों तक मार कर गई थी। पैनी रसोई के दरवाज़े तक गया और उसने उसे खोला। सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़ आई और एक अधेड़ उम्र की औरत कमरे में आई। उसके पीछे एक जवान लड़का चल रहा था।

वह अचरज में डूबकर बोली, "हे भगवान ! यह क्या ?"

पैनी बोला, "नेली ! लगता है, तुम मुझसे पीछा नहीं छुड़ा सकतीं।"

"एज़रा बैक्स्टर ! अब तुम्हें निमन्त्रण की प्रतीक्षा करनी उचित थी।"

वह उस पर हँस पड़ा और बोला, "मेरे बेटे जोडी से मिलो।"

उसने एक दृष्टि जोडी पर डाली। वह स्वयं छोटी, भारी और गुलाबी रंग की सुन्दर स्त्री थी।

वह बोली, "यह तुमसे एकदम मिलता-जुलता है। यह मेरा भतीजा

आसा रैवल्स है।"

"क्यों बेटा ! 'मैट रैवल्स' नहीं ? मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मैं तुम्हें तब से जानता हूँ जब तुम बहुत छोटे थे।"

उन्होंने हाथ मिलाए। आने वाला बच्चा भेड़ जैसा भोंदू लगा।

स्त्री बोली, "बैक्स्टर, तुम इतने सभ्य हो, फिर भी क्या मुझे बताओगे कि तुम आकर मेरे घर का इस तरह लाभ कैसे उठा रहे हो ?"

उसकी आवाज़ में मज़ाक था। जोडी को वह बहुत अच्छी लगी। उसे लगा कि कुत्तों की तरह औरतों की भी नस्लें होती हैं। इस स्त्री की नस्ल दादी हुट्टो वाली ही थी। इससे आदमियों को प्रसन्नता होती है। कोई दो औरतें एक ही जैसे शब्द बोलकर भी अलग-अलग अर्थ प्रकट करती हैं, वैसे ही जैसे दो कुत्ते एक जैसा भौंककर भी प्यार और भय को पैदा करते हैं।

पैनी बोला, "अच्छा, अब फिर आग जला दो। मेरा तो साँस ही जमा जा रहा है, बात करना तो दूर रहा।"

वह घुटने टेककर भट्टी के पास बैठ गया और आसा बाहर लकड़ियाँ लेने चला गया। जोडी भी उसकी सहायता करने गया। जूलिया और रिप नए कुत्ते के चारों ओर अपनी पूँछें उठाए घूम रहे थे।

आसा बोला, "तुम्हारे कुत्तों ने तो मुझे और चाची को डरा ही दिया था।"

जोडी इसका कोई उचित उत्तर न ढूंढ सका और जल्दी ही लकड़ियाँ लेकर घर में लौट आया।

पैनी कह रहा था, "पिछली रात सचमुच ही तुम मेरे लिए स्वर्ग की अप्सरा बन गईं। हम सब एक बहुत बड़े भालू का पीछा करते-करते दो दिन से चले आ रहे हैं। उसने एक साथ ही मेरे बहुत से पशुओं को मार डाला है।"

वह बोली, "वही भालू, जिसके सामने के पंजे का एक अँगूठा गायब है ? उसने पिछले साल मेरे सारे सूअर ही समाप्त कर दिए थे।"

"खैर, हमने उसका पीछा किया और उसे नदी के दक्षिण में एक दल-दल में कुदा दिया। अगर मैं दस गज़ भी आगे होता तो वह समाप्त हो

गया होता। मैंने उस पर तीन गोलियाँ चलाईं, पर वह बहुत दूर था। अन्तिम निशाना उस पर लग गया है। वह धारा को तैर गया था, इसीलिए कुत्ते उसके पीछे न बढ़े। नेली, सच यह है कि मैं तो तब से इधर आया ही नहीं, जब तुमने मुझे यह बताया था कि फ्रेंड तुम्हारे और मेरे साथ को नहीं चाहता।"

वह हँस पड़ी, "अरे, रहने दो, तुम मुझे कभी चाहते ही नहीं थे।"

"अब तो वायदा करने का समय नहीं रहा, पर मुझे यह निश्चय अवश्य था कि अगर तुमने दुबारा शादी नहीं की होगी और यहाँ से कहीं चली गई होगी, तब तुम्हारा घर यहीं कहीं होगा और जब मैं रात को सोया तो मैंने भगवान् से तुम्हें आशीर्वाद देने की प्रार्थना की।"

वह तेज़ी से खिलखिलाकर हँस पड़ी।

बोली, "तुमसे अधिक मैं और किसका स्वागत करूँगी ? पर आगे से अगर मुझे पहले ही सूचना न मिली, तो मैं ऐसा स्वागत करना नहीं चाहूँगी। एक विधवा स्त्री अपने आँगन में अजनबी कुत्तों और घर में एक अजनबी मनुष्य को नहीं सह सकती। अच्छा, अब तुम्हारा क्या निश्चय है ?"

"नाश्ता खाते ही मैं इस धारा को सोते के पास से पार करके फिर से दूसरी ओर जाकर रीछ को खोजना चाहता हूँ।"

उसके माथे पर कुछ बल पड़ गए। वह बोली, "एज़रा, अब तुम्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं। मेरे पास एक छोटी-सी लकड़ी की नाव यहीं नदी पर बँधी हुई है। यह बहुत पुरानी हो चुकी है, पर यह तुम्हें धारा के पार तक अवश्य पहुँचा देगी। जाओ, इसे ले जाओ और अपना मीलों का रास्ता बचा लो।"

"क्या खूब ! जोडी, सुना तुमने ! अब मुझे फिर कहना होगा कि भगवान् तुम्हारा भला करे।"

"जब हमारा परिचय था तब तुम इतने छोटे नहीं दीखते थे।"

"नहीं, पर तुम तो अब पहले से भी अच्छी दीखने लगी हो। तुम सदा ही सुन्दर थीं, पर पतली ज़रूर थीं। तुम्हारे पाँव तो एक पतली शाखा के समान लगते थे।"

वे काफी देर हँसते रहे। उसने अपना टोप उतारा और रसोई में जुट गई। अब पैनी को कोई जल्दी न थी। उसकी छोटी-सी नाव के बरतने से जो समय बच गया था, उसने उन्हें आराम से नाश्ता करने का समय दे दिया। उसने अपना बचा हुआ सूअर का माँस वहीं दे दिया। उसने भी बदले में दाने पकाए, ताज़ी कॉफी बनाई और बिस्कुट खाने को दिए। बिस्कुटों के लिए राब तो थी, पर मक्खन या दूध नहीं था।

वह बोली, "मैं यहाँ पशु तो रख नहीं सकती। भालू और चीतों से ही खैर नहीं। बचे-खुचे को मगरमच्छ खा जाते हैं। और, विधवा औरत को कभी यह सब बहुत मुसीबत लगने लगती है।"

"क्या आसा तुम्हारे साथ नहीं रहता?"

"नहीं, वह तो अभी मेरे साथ फोर्टगेट्स से ही आया है और मेरे साथ ही आज रात को क्रिसमस के उत्सव के लिए चला जाएगा।"

"हम भी वहाँ जाना चाहते थे, पर अब तो जैसे हम भूल ही चुके थे। मेरी स्त्री वहीं होगी। तुम उसे बता देना कि तुमने हमें देखा था ताकि वह घबराए नहीं।" पैनी ने जोडी की माँ का खयाल करके साथ ही कह दिया।

"एज़रा, तुम सचमुच बड़े दयालु हो कि औरत के डरने का इतना खयाल रखते हो। तुमने कभी मुझे पूछा तो नहीं, पर तो भी मैं सदा ही इस बात पर अफसोस करती रही हूँ कि मैंने तुम्हें बढ़ावा नहीं दिया।"

"मेरा अनुमान है कि मेरी पत्नी भी ऐसे समय यही अफसोस करती।"

"प्रायः हम में से अधिक लोग अपनी इच्छा कभी नहीं जान पाते, जब तक मौका ही चूक न जाय।"

पैनी कुछ सोचता हुआ चुप रहा।

नाश्ता एक पूरी दावत थी। नेली ने कुत्तों को भी उदारता से खिलाया और उन सबके लिए दोपहर का खाना भी देने का आग्रह किया। उन्होंने न चाहते हुए भी वह जगह छोड़ी। अब वे शरीर और मन दोनों दृष्टि से हौंसले में थे।

वह पीछे से बोली, "वह नाव यहाँ से दो फर्लांग ऊपर की ओर है।"

रास्ते में सभी जगह बर्फ़ जमी हुई थी। घास पर भी बर्फ़ थी। पुरानी किश्ती भी इससे भरी हुई थी। उन्होंने उसे खोला और तैरा दिया। पानी से बहुत दिनों तक निकली रहने के कारण यह इतनी तेज़ी से चू रही थी कि इसे खाली करने के सब प्रयत्न उन्हें व्यर्थ लगे और इसमें बैठकर उन्होंने जल्दी ही पार पहुँचने का निश्चय किया। पैनी कुत्तों को उठाकर अन्दर रखता और सन्देह में पड़े हुए वे फिर कूदकर बाहर आ जाते। इस तरह कुछ समय नष्ट हुआ और नाव में कुछ ऊँचाई तक ठण्डा पानी भर आया। उन्होंने उसे फिर खाली करने का यत्न किया। जोडी बीचोंबीच चढ़कर इसे खाली करने लगा। पैनी ने उसे दो कुत्ते पकड़ाए। उसने पीठ के बाल पकड़कर उन्हें बलपूर्वक जकड़े रखा। किनारे से जोडी ने एक सनावर की डाल लेकर किश्ती को धक्का दिया। बर्फ़ के बीच में से निकलकर यह तेज़ धार में पड़ गई। अब यह नीचे की ओर बह चली। पानी बहता हुआ जोडी के गिट्टों तक छू रहा था। पैनी तेज़ी से धक्का देता रहा। एक कोने से कुछ लकड़ी टूटी और पानी तेज़ी से अन्दर आने लगा। अब कुत्ते चुप खड़े हो गए थे। वे विचित्रता देखकर भय से काँप रहे थे। जोडी ने झुककर अपने हाथ से चप्पू चलाना शुरू किया।

धाराएँ गर्मी में सदा ही मित्रतापूर्ण लगती हैं। जब वह पतली कमीज़ और पतला पाज़ामा पहने होता तब उसे एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाना बहुत सुहावना लगता। परन्तु, अब जमे हुए जैसे पानी में ये भारी गर्म कपड़े उसके लिए एक और मुसीबत बन गए थे। पानी के बोझ के कारण नाव धीमी हो गई और उसे सँभालना कठिन हो गया। यह डूबने ही वाली थी कि उसी समय पैनी दूसरी ओर पहुँच पाया। पानी उसके जूतों से ऊपर तक उछल रहा था और उसके पाँव सुन्न हो चुके थे। परन्तु अब वे भालू की ओर की ज़मीन पर उतर चुके थे और उनके घंटों का समय बच गया था। ठण्ड से कुत्ते काँप रहे थे और पैनी की ओर आज्ञा के लिए देख रहे थे। उसने कुछ नहीं कहा और दक्षिण-पश्चिम की ओर नदी की धार के किनारे-किनारे चलने लगा। कुछ जगहों पर यह इतनी नीची और दलदली हो जाती थी कि या तो वे ऊपर चढ़कर चलने लगते या फिर दलदल में से होकर। यह जगह जार्ज झील के एक किनारे और

सैंण्ट जॉन नदी के उत्तरी भाग के बीच में थी। रास्ता अच्छा न था।

पैनी याद करने के लिए कुछ रुका। पार करते हुए उसे विश्वास था कि जूलिया निशान खोज लेगी। परन्तु अब वह उसे एकदम ही पैड़ पर डालना नहीं चाहता था। उसे दूरी का पूरा-पूरा भी पता नहीं था। उसने परले पार एक मुरझाये हुए सरू को पहचान लिया, जो उन्हें भालू के खोने से कुछ ही देर बाद मिला था। यहाँ उसने अपनी चाल धीमी कर दी और बड़े सावधान होकर देखते हुए बढ़ने लगा। उसने पैड़ खोजने का बहाना किया। जूलिया से उसने कहा, "यह जा रहा है। पकड़ो इसे! यह जा रहा है!"

वह सुस्ती छोड़कर जाग पड़ी और अपनी लम्बी पूँछ हिलाकर तेज़ी से सूँघने लगी। कुछ ही दूर जाकर उसने एक हलकी-सी चीख़ निकाली। पैनी बोला, "यह है वह! इसने उसे पा लिया!"

कीचड़ पर बड़े-बड़े निशान साफ छपे हुए थे। देखते हुए उनका अनुकरण किया जा सकता था। घने जंगल में उस रीछ के गुज़रने की जगह से कुछ शाखें टूटी हुई थीं। पैनी कुत्तों के पीछे-पीछे चल रहा था। रीछ अपना पीछा किए जाने से निश्चिन्त होकर यहीं लेट गया था। धारा से कुल चार सौ गज दूरी पर जूलिया उस पर कूद पड़ी। झाड़ियों में वह दिखाई नहीं दे रहा था, परन्तु उसकी भयंकर उछाल की आवाज़ आई। बिना निश्चय किए पैनी गोली दाग़ना नहीं चाहता था, क्योंकि कुत्ते भी वहीं पर थे। जोडी को उम्मीद थी कि उसका पिता जितना भी तेज़ सम्भव होगा, इस दलदल में भी भाग पड़ेगा।

पैनी बोला, "हम उसे स्वयं नहीं पकड़ सकते। उसे कुत्तों पर ही छोड़ दो। मेरा अनुमान है कि धीमे काम करने से ही वह जल्दी पकड़ में आएगा।"

वे धीरे-धीरे मज़बूती से आगे बढ़ने लगे।

पैनी बोला, "हमें यह सन्तोष है कि वह भी थका हुआ है।"

परन्तु उसका अनुमान ग़लत निकला। पीछा जारी रहा। पैनी बोला, "लगता है कि उसे जैक्सनविले तक ही ऐसा घना रास्ता मिला है।"

भालू और कुत्ते आँखों से परे जा चुके थे। पैनी की आँखें अब भी पैड़ को साफ़-साफ़ देख रही थीं। एक टूटी शाखा और झुकी हुई घासों ने उसके सामने जैसे एक नक्शा ही खोल दिया। जहाँ निशान नहीं भी थे, वहाँ भी

अब उसे दिशा मालूम पड़ गई। दोपहर से काफी पहले ही रीछ को उनकी गन्ध मिल गई थी, इसलिए रुकना पड़ा। पैनी ने कान लगाकर हवा में से कुछ सुना।

वह बोला, "मुझे लगता है कि खाड़ी के पास मैंने जूलिया की आवाज़ सुनी है।"

इससे उन्हें फिर से आगे बढ़ने का उत्साह मिला। चढ़ी दोपहरी में उन्हें अपना शिकार मिल गया। उसने अन्त में जैसे निश्चय कर लिया था कि रुककर वह लड़ाई से निबट ले। कुत्तों ने उसे कोने में फँसा लिया था। वह अपने छोटे कदमों पर बग़लों में झुक रहा था और अपने दाँत दिखाता हुआ इन पर गुर्रा रहा था। गुस्से में उसके कान सीधे खड़े हो गए थे। ज्योंही वह पीछे हटने के लिए मुड़ा, जूलिया और रिप उसकी बग़लों और पीछे से उसे घेरने बढ़े। रिप उसके गले पर टूटा। उसने अपने पंजों से इन पर हमला किया और पीछे हट गया। रिप भी उसके पीछे कूदा और उसने अपने दाँत उसके पाँव में गढ़ा दिए। रीछ बड़े दर्द के साथ चीख़ा। वह बाज़ की-सी तेज़ी के साथ घूमा और कुत्ते पर टूटा। उसने अपने अगले पंजों में उसे उठा लिया। दर्द के मारे रिप चिल्लाने लगा और तब उसके पंजों को अपने अधिक से अधिक ऊपर रखने के लिए यत्न करने लगा। दोनों के सिर आपस में आगे-पीछे टकराने लगे। वे गुर्राते और चोट करते थे। दोनों ही अपने को बचाकर एक-दूसरे के गले को पकड़ना चाहते थे। पैनी ने बन्दूक उठाई। निशाना साधकर उसने गोली दाग़ दी। रिप को अपनी छाती पर चिपकाकर रीछ गिर पड़ा। उसके शिकार के दिन समाप्त हो चुके थे।

अब उसके मिट जाने के बाद यह सब बहुत आसान लगा। उन्होंने उसका पीछा किया और पैनी ने उसे मार डाला। और, अब वह सामने पड़ा है।

वे एक-दूसरे को अचरजभरी निगाह से देखने लगे। वे उस मुँह छिपाये हुए शव की ओर बढ़े। जोडी के घुटने थके हुए थे। पैनी भी लड़-खड़ाता हुआ चल रहा था। जोडी को लगा जैसे एकाएक वह हलका हो गया, मानो वह कोई गुब्बारा हो।

पैनी बोला, "मैं सच कहता हूँ, मुझे स्वयं बड़ा आश्चर्य है।"

उसने जोडी की पीठ पर थपथपी दी और चिल्ला पड़ा, "शाबाश!"

यह आवाज़ सारे जंगल में गूँज गई। जैसे पक्षी भी उनके पीछे चीखे और उड़ने लगे। जोडी भी उत्साह में भरकर 'हुर्रा' चिल्ला उठा। जूलिया भी झुककर उनके साथ भौंकने लगी। रिप अपने जख्मों को चूसता हुआ भी अपनी पूँछ हिलाने लगा। पैनी इस भाव का एक बेसुरा गीत अलापने लगा—

'मेरा नाम सौम है, मैं किसी को कुछ नहीं देता।

"मैं काला होना पसन्द करूँगा, बजाय एक गरीब गोरा बनने के।'

उसने जोडी को फिर थपथपाया और पूछा, "बताओ, गोरा कौन है?"

जोडी चिल्लाया, "हम गरीब नहीं हैं। हमने यह रीछ पा लिया है।"

वे साथ-साथ उछलने, चिल्लाने और शोर करने लगे, जब तक उनके गले ही जवाब न दे गए। गिलहरियाँ मानो उन्हीं की नकल कर रही थीं। तब वे शान्त हुए।

पैनी बेतहाशा हँसा और बोला, "मैं इतना अधिक कभी नहीं हँसा और चिल्लाया। मुझे इस हँसने और चिल्लाने से बहुत ही लाभ हुआ है।"

जोडी अब भी उत्साह में था और वह फिर चिल्लाने लगा। पैनी ने शान्त हो झुककर भालू को देखा। वह कम-से-कम साढ़े पाँच मन के आस-पास का होगा। उसकी खाल बहुत ही बढ़िया थी। पैनी ने उसके सामने के पंजे को उठाया, जिसका एक अँगूठा गायब था।

वह बोला, "अच्छा, हमारे बूढ़े दोस्त! आखिर तो तुम हमारे बहुत नीच दुश्मन थे, पर फिर भी मैं तुम्हारा आदर करता हूँ।"

वह जीत की खुशी में उसकी पसलियों पर बैठ गया। जोडी ने उसके भारी बालों को छुआ।

पैनी बोला, "अब हमें ज़रा कुछ सोचना होगा। हम यहाँ बिलकुल बीचोंबीच में फँस गए हैं। यह भालू इतना बड़ा है कि अगर मैं, तुम, तुम्हारी माँ और गाय इकट्ठे तोले जायँ तब भी इतने भारी न होंगे।"

उसने अपना पाइप निकाला और तमाखू भरकर आराम से सुलगाया।

वह बोला, "इस पर आराम से विचार करना अच्छा है।"

वह इतना खुश और उत्साही था कि जो बात जोडी को असम्भव दीखती थी, उसने उसे भी स्वीकार कर लिया। वह मन-ही-मन सोचने लगा।

फिर बोला, "हम शायद भालुओं वाले स्रोत और नदी के बीचोंबीच हैं। पश्चिम की ओर फोर्टगेट्स की सड़क और पूरब की ओर नदी है। अब देखना यह है कि वे काले फौरेस्टर कहीं किश्ती आने-जाने के स्थान—हौर्स लैण्डिग—पर न आये हुए हों। अच्छा, हम इसे वहाँ तक ले चलते हैं और फिर सोचेंगे।"

परन्तु उसको हिलाने का अर्थ था, एक पूरी गाड़ीभर आटे की बोरियों को एकसाथ ही हिलाना। उसकी खाल के नीचे की चर्बी ने उसे गोलमटोल और लुचलुचा बना दिया था। पकड़ने पर वह जमकर टिक नहीं सकता था।

पैनी बोला, "यह उसी तरह मरा, जैसे जीवित था।"

उसने शव में से आँतें अलग कर दीं। यह रीछ इतना साफ़ और दोष-रहित माँस वाला था, मानो कसाई की दूकान में लटकती हुई पूरी भेड़ का साफ़ माँस हो। जोडी ने उसके पाँव पकड़कर पैनी को अपना काम करने में सहायता दी। उसने सोचा कि शायद कब उसे इन छोटे-छोटे हाथों में इतने भारी पंजे पकड़ने का दिन देखना मिलना था? इस शिकार में पिता के पीछे चलते जाने के सिवाय उसका और कोई भाग न था, परन्तु अब वह अपने को मज़बूत और शक्तिशाली अनुभव कर रहा था।

पैनी बोला, "अब हम देखते हैं कि इसे हम मिला भी सकते हैं कि नहीं?" दोनों ने उसके अगले पंजे पकड़े और आगे खींचने लगे। इसे खींचना बहुत ही कठिन सिद्ध हुआ। झटके देकर आगे बढ़ाने से भी एक बार में एक फुट से अधिक नहीं बढ़ा सके।

पैनी बोला, "इस तरह तो हम नदी तक अगली वसन्त में भी न पहुँच पाएँगे और रास्ते में ही भूखों मर जाएँगे।"

अगले पंजों को आसानी से पकड़ना कठिन था। बाल बहुत कोमल थे

और इस कारण वे बढ़ न सकते थे। पैनी एड़ियों के बल बैठकर सोचने लगा।

अन्त में वह बोला, "हम फोर्टगेट्स तक जाकर कोई मदद ला सकते हैं। उससे हमें माँस का कुछ हिस्सा देना तो पड़ेगा, पर इससे हमारी अपनी आँतें ज़रूर बच जाएँगी। या फिर रस्सियाँ बनाकर हम इसे नदी तक खींच ले जायँ, परन्तु इसमें हमारे दिल तक चिर जाएँगे। या फिर हम घर जायँ और गाड़ी ले आयँ।"

"पर पिताजी, गाड़ी तो घर होगी नहीं। माँ तो कभी की चली गई होगी!"

"लो, यह तो मैं भूल ही गया था कि आज क्रिसमस की शाम है।"

पैनी ने अपनी टोपी उतारकर गर्दन तानी और बोला, "अच्छा बेटे, चलो!"

"कहाँ चलना होगा?"

"फोर्टगेट्स की ओर।"

उधर जाने वाली सड़क कुल दो मील तक पश्चिम में गई थी। पैनी को यह बात पता थी। रेतीली पगडंडी पर पहुँचने के लिए अच्छा था कि दलदल और जंगल में से रास्ता काटा जाय। एक ठण्डी हवा इस राह पर बह रही थी, परन्तु सूर्य भी अभी गर्म था। पैनी को सड़क के किनारे ही एक जगह एक खास बूटी दिखाई दी, जिसे तोड़कर उसने रिप के ज़ख्मों पर उसका रस निचोड़ दिया। वह अब खूब बातें कर रहा था और ज्यों-ज्यों वे बढ़ते जाते, उसे पुरानी भूली दूसरे शिकारों की कहानियाँ याद आती जातीं।

पैनी बोला, "जब मैं अभी तुम्हारे जितना ही था कि मेरे चाचा माइल्स जो [illegible] हमें देखने आए। ऐसे ही एक ठण्डे दिन वह मुझे इसी रास्ते वाली दलदल में से लेकर आए। हम यहीं घूम रहे थे। हमारा कोई खास उद्देश्य न था। हमें अपने से कुछ दूर ऐसा लगा जैसे कोई गिद्ध किसी ठूँठ पर बैठा ठोंगे मार रहा हो। हम देखने पहुँचे कि बात क्या है। तुम क्या सोचते हो?"

"क्या वह गिद्ध नहीं था?"

"हाँ, वह एक भालू का बच्चा था, जो अपने जुड़वाँ भाई को नीचे गिरा

कर हँसते-हँसते उसे अपने दोनों हाथों से मार रहा था। मेरे चाचा माइल्स ने कहा, 'हम इनमें एक बच्चे को पकड़ेंगे।' वे दोनों बहुत सभ्य थे और उन्होंने पास जाकर एक को पकड़ लिया। वह उसे पकड़ तो लाए, पर कोई चीज़ उठाने के लिए थी नहीं। अगर बोरी पास न हो तो वे पंजा भी मार सकते हैं। उत्तर के लोग कच्छा भी पहनते हैं। चाचा ने पाजामा उतारकर अपना कच्छा उतारा और उसमें गाँठें बाँधकर एक थैला-सा बना लिया। उसने भालू के बच्चे को उसमें रखा। अभी वह पाजामा पहनने ही लगे थे कि बहुत दूर से तोड़ती-फोड़ती और कुचलती हुई उन बच्चों की माँ आई और उन तक पहुँच गई। ख़ैर, वह जैसे-तैसे बच्चे को वहीं छोड़कर दलदल में से दौड़े। माँ ने अपने बच्चे को उठाया और उनके कच्छे को भी वह ले गई। परन्तु वह इतनी समीप थी और उसने उनके पीछे की बेल पर इस तरह पाँव रख दिए थे कि चाचा एकदम गिर पड़े और काँटों में उलझ गए। चाची मौल बहुत ही साधारण दिमाग़ की स्त्री थी। वह यह सोच ही नहीं सकी कि बिना कच्छे के एक ठण्ड के दिन वह कैसे लौटे? और उनकी कमर पर खरोंच के निशान कैसे पड़े? किन्तु चाचा माइल्स हमेशा यही कहते थे कि यह बात बहुत सोचने की न थी कि माँ ने उस कच्छे का अपने बच्चे के साथ क्या किया होगा? हो सकता है, पहना दिया हो।"

जोडी हँस पड़ा और लोट-पोट हो गया।

उसने शिकायत-सी की, "पिता जी, इतनी कहानियाँ याद होने पर भी आप मुझे कभी कुछ नहीं सुनाते।"

"देखो, कोई बात किसी मौक़े पर ही याद आती है। इस दलदल में मुझे वह बात याद आ गई। इसी दलदल में एक बार बहुत ही ठण्डे चैत के महीने में मुझे दो और भालू के बच्चों से पाला पड़ा। ठण्ड के मारे वे चिल्ला रहे थे। वे दोनों अभी ताज़ा ही पैदा हुए थे और चूहों से कुछ ही बड़े रहे होंगे और एकदम नंगे थे। उन पर बाल तक नहीं उगे थे। उन्हें एक लाल फूलों वाली तेजबल की झाड़ी में लिटाया गया था और वे मनुष्य के बच्चों जैसे ही रो रहे थे। सुनो!"

खुरों की टाप उन्हें अपनी पीठ पीछे सुनाई देने लगी।

"अब कितना अच्छा होगा कि हमें सहायता के लिए फोर्टगेट्स नहीं

जाना पड़ेगा।"

टाप और नज़दीक आई। वे सड़क के एक तरफ हट गए। ये फौरेस्टर थे।

पैनी ने कहा, "लगता है मैंने अपना ही बुरा चाहा।"

उन सबके आगे बक था। वे सड़क पर इकट्ठे चले आ रहे थे। उन्होंने शराब पी हुई थी। वे पास आ गए।

"देखो इन्हें, पैनी और यह उसका बच्चा! ओ पैनी! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

पैनी बोला, "हम शिकार पर थे और इस बार जान-बूझकर निकले थे। हम दोनों उसी बूढ़े रीछ के पीछे घर से निकले थे।"

"अरे, पैदल ही? सुनो भाई, इससे अच्छा तो दो चूज़ों को बाज़ पर हमला करने के लिए छोड़ देना चाहिए।"

"और हमने उसे पा लिया।" पैनी ने धीरे से कहा।

बक हिला। सभी शान्त-से पड़ गए।

"मुझे कोई कहानी मत सुनाना! वह इस समय कहाँ है?"

"यहाँ से पूरब की ओर कोई दो मील दूर भालू वाले स्रोत और नदी के बीच में।"

"शायद ठीक है, वह वहीं पर बहुतों को बेवकूफ़ बनाता है।"

"वह मर चुका है। मैंने उसे स्वयं मारा है। हम दोनों फोर्टगेट्स की ओर उसे दलदल में से बाहर लाकर ढोने में सहायता लेने के लिए जा रहे थे।"

शराबी की-सी शान में बक तन गया और बोला, "अरे, हमारे यहाँ होने पर तुम्हें फोर्टगेट्स जाने की ज़रूरत अनुभव हुई?"

लेम बोला, "अगर हम उसे ले चलें तो तुम क्या दोगे?"

"उसका आधा माँस! यह तो मैंने बिना इसके भी सोचा था, क्योंकि उसने तुम्हें भी बहुत सताया और बक ने मुझे आकर चेतावनी दी।"

बक बोला, "हम दोनों मित्र हैं, पैनी! हम एक-दूसरे को चेतावनी देते रहते हैं। मेरे पीछे बैठ जाओ और हमें रास्ता बताओ।"

मिलव्हील बोला, "मैंने तो आज न दलदल में जाने की सोची थी और

न ही बैक्स्टर परिवार की ओर ! मेरा मन तो मौज़ पर जमा था।"

बक बोला, "पैनी, तुमने कोई इरादा तो नहीं बना रखा ?"

"तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"क्या तुम अब भी वौलूसिया की ओर जाना चाहते हो ?"

"हाँ, यदि हम घर ले जाकर इस भालू को ठीक-ठीक साफ़ कर लें, तब जा सकते हैं। पर हमें बहुत देर हो गई है।"

"आओ, मेरे पीछे बैठ जाओ और रास्ता बताओ। लड़को, हम भालू को ले चलेंगे और वौलूसिया में मेले पर भी जाएँगे। अगर वे हमें नहीं पसन्द करेंगे, तो वे फेंक सकें तो चाहे हमें बाहर फेंक दें।"

पैनी हिचकिचाया। आज के दिन फोर्टगेट्स से कोई भी सहायता मिलनी कठिन होती, परन्तु फौरेस्टरों का ऐसे पवित्र उत्सव में जाना भी शायद ही उचित होता। उसने भाग्य पर सब छोड़कर उनकी सहायता स्वीकार कर ली। वह बक के पीछे बैठ गया। मिलव्हील ने जोडी को अपने पीछे बैठा लिया।

पैनी बोला, "मेरे कुत्ते को कौन बिठा सकता है ? उसे अधिक चोट तो नहीं, परन्तु उसे लड़ना और दौड़ना बहुत पड़ा है।"

गैबी ने रिप को उठाया और अपनी काठी पर सामने ही बिठा लिया।

पैनी बोला, "जहाँ से हम आ रहे हैं, वह रास्ता साफ़ है। तुम देख ही सकते हो कि हम कहाँ से आ रहे हैं।"

जो रास्ता उन्हें पहले बहुत लम्बा लगा था, अब वह उन्हें इन घोड़ों पर बहुत छोटा लगा। उन्हें याद आया कि उन्होंने नाश्ते के समय से कुछ भी नहीं खाया। जोडी और पैनी ने अपने थैले टटोले और नेली गिनराइट के दिये हुए रोटी और माँस को खाने लगे। प्रसन्नचित्त होने के कारण आनन्द में डूबकर पैनी भी फौरेस्टरों के-से नशे में आ गया।

वह चिल्लाता हुआ बोला, "सारी रात मैंने अपनी पुरानी प्रेमिका के साथ बिताई।"

वे सब उसकी प्रशंसा में खूब हँसे। वह बोला, "पर वह वहाँ नहीं थी।"

वे फिर से हँस पड़े। जोडी इस बीच नेली गिनराइट की प्रसन्न तबीयत

का ध्यान करता रहा।

उसने मिलव्हील से पूछा, "मिलव्हील, अगर मेरी माँ कोई और होती तो मैं ऐसा ही होता या कुछ और ?"

मिलव्हील आगे की ओर देखकर चिल्लाया, "अरे ! जोडी तो नई माँ चाहता है।"

उसने मिलव्हील की पीठ पर मुक्का मारा, "मैं नहीं चाहता। मैं तो कुछ और ही पूछना चाहता था।"

प्रश्न मिलव्हील की समझ से बाहर था, इसीलिए शराबी की-सी टिप्पणी उसने कर दी।

पैनी बोला, "बस, अब इस निचले घास के मैदान को पार करते ही वहाँ भालू पड़ा है।"

वे उतर पड़े। लेम ने चिढ़कर थूका और बोला, "अरे, प्रचारक के भाग्यशाली बेटे !"

पैनी बोला, "कोई भी आदमी जो उसके साथ लड़ना चाहता, लड़ सकता था, या फिर पीछा करते-करते मेरे जैसा पागल हो जाता।"

माँस काटने के ढंग पर सबका मत एक न था। बक की इच्छा थी कि सारा माँस इकट्ठा रहे। पैनी ने उसे समझाया कि ऐसा असम्भव था। अन्त में उन्होंने उसे मनाया कि इसके चार हिस्से कर लिए जायँ, जैसा कि इतने बड़े भालू के साथ किया जाता है। साफ़ करने पर हर हिस्सा सवा मन के लगभग होगा। उन्होंने खाल उतारकर उसके चार हिस्से किए। खाल पूरी रखी गई और उसी में बड़ा सिर और पंजों वाले पाँव लटकते रहे।

बक बोला, "मुझे ऐसे ही चाहिए था। मैंने कुछ सोच रखा है।"

अपनी बोतलों से निकालकर उन्होंने शराब का दौर चलाया और तब हर घोड़े पर माँस रख दिया। पाँचवें घोड़े पर खाल रख दी। इतने बड़े रीछ और दोनों बैक्स्टरों को उठाने के लिए फौरेस्टरों जैसा पूरा परिवार ही काम आ सकता था। वे एक-दूसरे की ओर चिल्लाते हुए और हँसी-खुशी से फूलते हुए बढ़ते जा रहे थे।

अंधेरा होने के बाद ही वे बैक्स्टरों की जमीन के पास पहुँचे। घर बन्द था। न कोई रोशनी और न धुआँ वहाँ दिखाई देता था। माँ नदी की ओर

घोड़ागाड़ी लेकर जा चुकी थी। फ्लैग भी पास में ही था। फौरेस्टर लोग उतरे। उन्होंने फिर शराब पी और पानी माँगा। पैनी ने शाम का भोजन बनाने का सुझाव दिया, परन्तु वे सब वौलूसिया जाने को उतावले थे। सबने भालू का माँस धुआँघर में लटका दिया। बक ने ज़िद करके खाल ले ली।

जोडी को अपने ही बन्द घर के चारों ओर जाते अजीब-सा लगा, जैसे वहाँ कोई और रहता हो। घर के पीछे की ओर जाकर उसने पुकारा, "फ्लैग, इधर आओ!" परन्तु किन्हीं छोटे खुरों की आवाज़ न सुनाई दी। उसने फिर से डरते हुए पुकारा। वह सड़क की ओर घूमा। फ्लैग जंगल की ओर से छलाँगें भरता आ रहा था। जोडी ने इतने ज़ोर से उसे पकड़ा कि वह अधीर होकर छूट गया। फौरेस्टर उसे जल्दी करने को कह रहे थे। वह चाहता था कि फ्लैग को भी साथ ले सके, पर वह यह भी नहीं सह सकता था कि यह फिर भाग जाय। वह उसे कोठरी में ले गया और अच्छी तरह बाँध आया। उसने बाहर का दरवाज़ा चिटखनी से बन्द कर दिया। उसने लौटकर फिर इसे खोला और उसके हिस्से का आटा, अपने थैले में से उलट लिया। फौरेस्टर उस पर नाराज़ हो रहे थे। उसने फिर दरवाज़ा बन्द किया और दौड़कर मिलव्हील के पीछे खुशी-खुशी चढ़ बैठा। अब उसे फ्लैग पर लौटने का भरोसा था।

जब फौरेस्टर पूरा गला फाड़कर गाने लगे तो वह भी उनके साथ गाने लगा। बक ने इस भाव का गीत गाया—

'मैं अपनी प्रेमिका को देखने गया, वह मुझे दरवाज़े पर मिली। उसने कहा कि अब मुझसे मिलने मत आना।'

मिलव्हील ने चिल्लाकर पूछा, "लेम, क्या यह बात ठीक है?"

बक गाता रहा।

"उसका रूफस से प्यार हो गया था। वह एण्ड्रयू जैक्सन जैसा प्रसिद्ध था। मैंने प्रेमिका की ओर देखा और कहा, 'अच्छा, कुमारी सूसान जेन, विदा!' "

गैबी ने एक बड़ा दुखभरा प्रेम का गीत गाया, जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ इस भाव की थीं, 'मैंने दूसरी से शादी कर ली, वह शैतान की दादी निकली, मैं चाहता हूँ कि मैं फिर से अकेला हो जाऊँ।' '

उनके चिल्लाने और गाने के साथ सारा जंगल गूँज उठा।

रात नौ बजे तक वे नदी के किनारे पहुँच गए। वहाँ से उन्होंने नाव के लिए पुकार मचाई। नदी के पार आकर वे गिरजाघर तक गए। यह प्रकाश से युक्त था। घोड़े, गाड़ियाँ, बैल और छकड़े—सब इधर-उधर बँधे पड़े थे।

पैनी बोला, "हम सब लोग अच्छे नहीं दिखाई दे रहे। यहाँ जाना ठीक नहीं लगता। जोडी अगर हमारा भोजन ले आए तो कैसा हो?"

परन्तु फौरेस्टर अब सुनने को तैयार न थे। वे रोक-टोक न चाहते थे।

बक बोला, "अब तुम लोग मुझे सहायता दो। मेरी इच्छा इस गिरजे के बीच से शैतान को डराकर निकाल देने की है।"

लेम और मिलव्हील ने उसके ऊपर भालू की खाल ठीक से जमा दी। वह चारों पंजों के बल झुक गया। इससे अधिक उस पर कोई और चीज़ सजती भी नहीं। उसके पेट के नीचे खाल चिरी हुई थी और इस प्रकार भालू का सिर ऊपर और उसका सिर नीचे रखना सम्भव हो गया। पैनी की इच्छा थी कि अन्दर जाकर पत्नी को अपने पहुँचने का विश्वास दिलाए। परन्तु फौरेस्टर किसी जल्दी में न थे। उन्होंने दो-तीन जूतों के फीते निकालकर खाल को बक की छाती के चारों ओर बाँध दिया। यही बात बक चाहता था। उसके भारी कन्धों और पीठ ने खाल को लगभग भालू जितना ही पूरा-पूरा भर दिया। अब उसने एक तेज़ गुर्राहट छोड़ी। वे गिरजे की सीढ़ियों पर चढ़ गए। लेम ने दरवाज़ा खोल दिया ताकि बक अन्दर जा सके। बाद में फिर बन्द कर दिया। अब वे बाहर से ही तमाशा देखने लगे। एक या दो मिनट बाद लोगों का ध्यान उधर गया। बक भालू की नकल करता हुआ मस्तानी चाल से आगे बढ़ा। जोडी को लगा कि जैसे डर के मारे उसकी गर्दन के बाल खड़े हो गए हों। बक फिर गुर्राया। सब लोग भागने लगे। बक रुका। एक क्षण के लिए सभी सुन्न रह गए परन्तु तभी चर्च खाली हो गया। सब लोग खिड़कियों की राह निकल गए।

फौरेस्टर लोग दरवाज़ा खोलकर अन्दर आ गए। वे हँसी से फूटे पड़

रहे थे। पैनी और जोडी उनके पीछे आए। एकदम ही पैनी ने उछलकर भालू का सिर खींचकर परे कर दिया, ताकि मनुष्य का चेहरा सामने आ जाय।

वह बोला, "बक, अब इसमें से निकल आओ। क्या तुम मरना चाहते हो ?"

उसने एक-दो खिड़कियों में से झाँकती हुई बन्दूकों को देख लिया था। बक खड़ा हो गया और खाल नीचे सरक आई। तमाशाई फिर से इकट्ठे हो गए। बाहर एक चीखती हुई औरत चुप न हो सकी। डर के मारे दो-तीन बच्चे रोते रहे। पहले-पहल भीड़ गुस्से से भर गई।

एक बोला, "यह अच्छा तरीका है क्रिसमस की शाम मनाने का ! आए और अपनी चालाकियों से बच्चों को डराने लगे !"

परन्तु छुट्टी की भावना प्रबल थी और फौरेस्टरों का शराब से उत्पन्न मज़ाकिया ढँग सबको पसन्द आया। सबका ध्यान उस बड़ी खाल की ओर खिंच गया। इधर-उधर कोई एक-दो आदमी परेशान भले ही हों, पर अन्त में सभी हंसने लगे और सब इस बात पर सहमत थे कि बक असल भालू से भी ज़्यादा अच्छा लग रहा था। उस भालू ने कई वर्ष तक बहुतों को नुकसान पहुँचाया था। सब उसे अच्छी तरह पहचानते थे।

अब बहुत-से पुरुषों और बच्चों ने पैनी को घेर लिया। उसकी स्त्री ने भी उसका स्वागत किया और उसके लिए खाना लेने चली गई। वह गिरजे की बेंचों में से एक पर बैठ गया। एक दीवार के साथ उसने पीठ टिका ली और खाने लगा। अभी उसने कुछ ही कौर खाए थे कि लोगों के उत्सुक प्रश्नों का उत्तर देने को उसे मज़बूर होना पड़ा। प्रश्न एक धारा के रूप में थे। लोग उससे शिकार की बात पूरी-पूरी जानना चाहते थे। खाना बिना खाए वह वैसे ही पड़ा रहा।

जोडी शर्म के साथ उस सब चमक-दमक को देखता रहा। उस छोटे-से गिरजे में सदा हरी रहने वाली बेलों और अनेक अच्छे-अच्छे फूलों से सजावट की गई थी। चारों ओर मिट्टी के तेल के लैम्प दीवारों से लटके हुए जल रहे थे। हरे, लाल और पीले रंगीन कागजों से सजी हुई छत आधी से अधिक ढँकी हुई थी। सामने की वेदी पर क्रिसमस का एक पेड़

लटका हुआ था। उसके साथ कागज़ से बनी कुछ शक्लें खड़ी की गई थीं और साथ ही कुछ गेंदें भी लटका दी गई थीं, जो 'मेरी ड्रेपर' जहाज़ के कप्तान ने भेंट के रूप में दी थीं। सबने एक-दूसरे को भेंटें दीं और पेड़ के नीचे सबने ही अपनी भेंटों के फीते खोले। छोटी-छोटी बच्चियाँ अपनी नई गुड़ियाओं को लेकर ध्यान में डूबी हुई-सी उधर बढ़ीं। उन्होंने उन गुड़ियाओं को अपनी छाती से चिपटा लिया। जो बच्चे पैनी से न खिंच सके, वे फर्श पर ही खेलते रहे।

भोजन क्रिसमस के पेड़ के पास ही एक लम्बी मेज़ पर सजा हुआ था। दादी और माँ ने जोडी को उधर चलने पर मजबूर किया। उसने देखा, जैसे उसके चारों ओर यश छा रहा हो और उसकी भीनी गन्ध आ रही हो। औरतें उसके चारों ओर घिर आईं और उसे भोजन देने लगीं। उन सबने-भी शिकार के सम्बन्ध में प्रश्न पूछने शुरू किये। पहले तो वह गूँगा-सा बन गया और उत्तर न दे सका, पर बाद में उसे जोश आ गया और उसके हाथ में पकड़ी सलाद की तश्तरी हिल गई। दूसरे हाथ में तीन प्रकार के केक थे।

दादी ने कहा, "अब इसे अकेला छोड़ दो।"

उसे लगा, जैसे उसे बाद में इन प्रश्नों का उत्तर देने का मौक़ा न मिलेगा और वह इस शानदार मौक़े से चूक जाएगा।

उसने एकदम कहा, "हम उसके पीछे तीन दिन तक चलते ही रहे। हमने दो बार उसे पा भी लिया परन्तु हम दलदल वाले कीचड़ में धँस गए। बड़ी मुश्किल से हम उसमें से निकले। पिताजी ने बताया कि यह बहुत बुरी दलदल थी।"

वे सब बहुत ध्यान से सुनती रहीं। वह उत्साह से भरा हुआ था। उसने शुरू से कहानी पकड़ी और पैनी के समान ही सुनाने का प्रयत्न किया। अभी वह आधे तक ही पहुँचा था कि उसे केक दिखाई दे गए। उसका ध्यान हट गया।

वह बोल पड़ा, "और तब पिताजी ने उसे गोली मार दी।"

उसने एकदम ही एक केक मुँह में डाल ली। इकट्ठी हुई औरतें उसके लिए और मिठाइयाँ लेने चली गईं। उसकी माँ बोली, "अब तुम केक ही

खाते रहो। फिर कुछ और नहीं खा सकोगे!"

"मुझे कुछ और चाहिए भी नहीं।"

दादी बोली, "ओरी, उसे खाने दो। रोटी तो वह बाद में भी खा सकता है। उसके लिए बरस-भर पड़ा है।"

उसने वायदा किया, "मैं उसे कल खाऊँगा। मुझे पता है कि शरीर की बढ़ती के लिए वही ठीक है।"

अब वह एक से दूसरे किस्म की केक का मज़ा लेने लगा।

उसने पूछा, "माँ, क्या फ्लैग तुम्हारे चलने से पहले पहुँच गया था?"

"हाँ, वह अँधेरे के समय आया। तुम्हारे बिना उसके आने से मुझे चिन्ता हुई। तब नेली गिनराइट यहाँ मिली और उसने तुम्हारी ख़बर दी।"

उसने माँ की ओर प्रशंसा से देखा। उसकी दृष्टि में काली अलपका में वह बहुत सुन्दर लग रही थी। सन्तोष और अभिमान के कारण उसके चेहरे पर भी रौनक़ आ गई थी। दूसरी औरतें आदर से उसे बुला रही थीं। उसने सोचा, पैनी का सम्बन्धी होना सचमुच गौरव की बात है।

वह बोला, "माँ, घर पर तुम्हारे लिए मैंने एक अच्छी चीज़ रखी थी।"

"हैं! सचमुच! वह लाल और चमकदार तो नहीं थी?"

"तुमने इसे पा लिया?"

"हाँ, घर साफ़ करते हुए मुझे मिली।"

"तुम्हें यह पसन्द आई?"

"बहुत अधिक। मैं इसे पहन लेती, पर मेरा अनुमान था कि तुम इसे अपने हाथ से देना चाहोगे तुम जानना चाहते हो कि मैंने तुमसे क्या छिपाया?"

"हाँ, बताओ, तुमने मेरे लिए क्या छिपाया था?"

"मेरे पास पौदीने के सत की गोलियों की एक थैली है। तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए हिरण की टाँग से उस चाकू का एक खोल बनाया था, जो तुम्हें ओलिवर ने दिया था। उसमें बारहसिंगे की खाल से छौने के लिए एक पट्टा भी बनाया।"

"उन्होंने यह सब बिना बताए कैसे किया ?"

"जब तुम सो जाते हो, तब वह भले ही तुम्हारे कमरे की छत भी पलट डालें तो तुम्हें पता नहीं चल सकता।"

उसका तन और मन शान्ति से भर उठा। हाथ में पड़ी मिठाइयों की ओर उसका ध्यान गया। उसने अपनी माता की ओर उन्हें बढ़ाते हुए कहा, "मुझे ये पसन्द नहीं।"

"हाँ, ऐसा ही उचित है।"

उसने चारों ओर देखा और फिर शर्म से गड़ गया। सामने ही एक कोने में यूलाली बोयल्स किश्ती वाले बच्चे के साथ उछलने-कूदने का खेल कर रही थी। जोडी उसे दूर से ही देखता रहा। वह उसे शायद न ही जान पाता। उसने नीली धारियों वाली एक सफेद पोशाक पहनी हुई थी और उसके बालों से भी नीले फीते लटक रहे थे। उसे उसकी बजाय किश्ती वाले बच्चे से नफ़रत हो आई। जोडी को लगा जैसे यूलाली पर उसका कोई दूर का अधिकार हो और वह जैसा बर्ताव चाहे उससे करे; चाहे वह आलू ही फेंके।

फौरेस्टरों ने अपना अलग ही एक झुण्ड बना लिया था। वे गिरजे के बाहरी दरवाज़े के पास बैठे थे। कुछ साहसी औरतें उनके पास खाना ले गईं। अगर कोई औरत उनमें से किसी की ओर दो बार भी देख लेती, तो उसका अर्थ आफ़त बुलाना होता। सबसे अधिक शोर करनेवाले मनुष्य उन्हीं के पास बैठे थे। बोतलों का दौर चल रहा था। इन सब खुशियों के बीच फौरेस्टरों की आवाज़ सबसे अधिक ऊँची थी। वीणा वाले जाकर अपनी-अपनी वीणा ले आए और उनके साथ ही सुर में सुर मिलाकर बजाने लगे। एक चौकोना नाच शुरू हुआ। बक, मिलव्हील और गैबी, कुछ हँसोड़ लड़कियों को भी साथी बनाकर ले आए। लेम बाहर से ही भौंहें सिकोड़ता रहा। उनका नाच अच्छा-खासा शोर पैदा करने लगा। दादी बहुत दूर एक बेंच पर झुक गई। उसकी काली आँखें चमक पड़ीं।

वह जोडी की माँ से बोली, "अगर मुझे पता होता कि ये काले शैतान यहाँ आ रहे हैं तो मैं यहाँ कभी न आती।"

वह बोली, "मैं भी कभी न आती।"

वे दोनों चुपचाप पत्थर-सी बनकर साथ-साथ बैठी रहीं। आज वे एक-

दूसरे से सहमत थीं। इस शोर और संगीत से जोडी भी मस्त हो उठा। मिठाइयों ने भी उसे उत्तेजित किया। बाहर का संसार शान्त पड़ा था, परन्तु गिरजे के अन्दर सभी कुछ उत्साहजनक था। एक ओर लकड़ियों की आग जल रही थी और दूसरी ओर पसीने से तर लोग वहाँ भरे हुए थे।

एक नया आदमी आया। उसके साथ ही ठण्डी हवा का एक झोंका भी आया। सबने ही देखना चाहा कि वह क्या लाया है? कुछ ने देखा कि उसने लेम से कुछ बात की और आदमी ने कुछ उत्तर दिया। तब लेम ने अपने भाइयों को बुलाकर कुछ कहा। थोड़ी ही देर में सब भाई एक साथ ही गायब हो गए। पैनी के चारों ओर का जमघट उसकी कहानी से सन्तुष्ट होकर अपनी-अपनी कहानियाँ सुनाने में मस्त था। चौकोना नाच नाचने वाले लोग कुछ घट गए, पर नाच चलता रहा। कुछ औरतें शिकार सुनने वाले लोगों के पास गईं और उनकी मस्ती की शिकायत करने लगीं। नये आने वाले आदमी को मेज़ पर बिठाया गया। खाना अभी भी बहुत बचा था। वह अभी एक जहाज़ से उतरा था और कुछ लकड़ी लेने के लिए नदी के घाट पर रुका था।

वह बोला, "पुरुषो और महिलाओ! मैं बता रहा था कि मेरे साथ और भी बहुत से यात्री यहाँ उतरे हैं। मेरे खयाल में तुम उन्हें जानते हो। एक ओलिवर और उनके साथ एक जवान श्रीमती हैं।"

दादी खड़ी हो गई और बोली, "तुम्हें इन नामों का विश्वास है?"

"हाँ, क्यों नहीं? श्रीमती जी! उसने अपना घर यहीं बताया है।"

पैनी उठकर दादी की तरफ आया।

उसे एक ओर ले जाकर बोला, "मेरा अनुमान है कि तुम्हें खबर मिल गई है। मुझे डर है कि फौरेस्टर तुम्हारे घर की ओर गए हैं। मैं उधर जाकर उन्हें शान्त करने का यत्न करूँगा। तुम भी चलना चाहती हो? हो सकता है कि तुम्हारे वहाँ होने से वे लोग कुछ अच्छा व्यवहार करने पर मजबूर हों।"

वह अपना शाल और टोप पकड़े हुए बेचैन-सी दीखने लगी।

जोडी की माँ बोली, "मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी। उन जानवरों को मैं भी कुछ सुनाना चाहूँगी।"

जोडी भी उनके पीछे-पीछे चला। वे पैनी की गाड़ी में बैठे और नदी की ओर बढ़ पड़े। आकाश बहुत उजला था। पैनी बोला, "लगता है, जंगल में कहीं आग लग गई है। हे भगवान् !"

आग की जगह, कोई और नहीं, दादी का घर ही था। सड़क के मोड़ पर कनेरों की कतार के पास से ही लपटें उठ रही थीं। दादी का घर जल रहा था। वे आँगन में घुसे। घर की होली जल रही थी। लपटों में घर के कमरे साफ़-साफ़ दीख रहे थे। फ्लफ़ उनकी ओर दौड़ा। उसकी पूँछ पिछली टाँगों के बीच दबी हुई थी। वे सब नीचे उतर आए।

दादी चिल्लाई, "ओलिवर ! ओलिवर !"

आग के कुछ दूर तक पहुँचना असम्भव था। दादी लपटों की ओर दौड़ी। पैनी ने उसे पीछे खींच लिया।

वह वहीं से चिल्लाया, "क्या तुम मरना चाहती हो ?"

"वहाँ ओलिवर है। ओलिवर ! ओलिवर !"

"वह यहाँ नहीं है। वह हो नहीं सकता ! वह निकल गया होगा !"

"उन्होंने उसे मार डाला ! वह अन्दर ही है ! ओलिवर !"

पैनी उससे उलझा रहा। इस तेज़ रोशनी में धरती साफ चमक रही थी। इस पर खुरों के निशान बिलकुल साफ़ थे, परन्तु फौरेस्टर और घोड़े जा चुके थे।

जोडी की माँ बोली, "उन काले गिद्धों का यहाँ निशान भी तो नहीं दिखाई देता।"

दादी स्वतन्त्र होने के लिए छटपटाई।

पैनी बोला, "जोडी, भगवान् के नाम पर बोयल्स की दूकान की ओर जाओ और देखो कि अगर कोई ऐसा आदमी मिले, जिसने ओलिवर को नाव से उतरकर कहीं जाते हुए देखा हो ? और, अगर कोई न मिले तो गिरजे में जाकर उस अजनबी से पूछना।"

जोडी फिर से गाड़ी पर बैठ गया और उसने सीज़र को सड़क पर भाड़ दिया। उसके हाथ जैसे जड़ हो गए और वह लगाम बड़ी मुश्किल से थाम सका। वह डरा हुआ था। उसे याद न रहा कि पिता ने पहले दूकान पर जाने को कहा है या मेले में ? अगर ओलिवर जीवित है तो वह उसका बुरा

कभी दिल से भी न सोचेगा। वह सड़क पर मुड़ पड़ा। सर्दी की यह रात तारों के कारण चमक रही थी। घोड़े ने ज़ोर से छींका। एक पुरुष और स्त्री नदी की ओर सड़क पर बढ़ रहे थे। उसने आदमी को हँसते हुए सुना और वह चिल्ला पड़ा, "ओलिवर!" और वह चलती गाड़ी से ही कूद पड़ा।

ओलिवर बोला, "ज़रा देखें, यह कौन गाड़ी हाँक रहा है? अरे, जोडी!"

यह स्त्री ट्विक वैदरबी थी।

जोडी बोला, "ओलिवर, जल्दी करो, गाड़ी में बैठो।"

"जल्दी क्या है? तुम्हें सभ्यता नहीं आती? इनसे मिलो।"

"ओलिवर, दादी का घर जल रहा है। फौरेस्टरों ने यह सब किया है!"

ओलिवर ने अपना सामान गाड़ी में पटका। उसने ट्विक को उठाकर सीट पर बिठाया और तब पहिए के सहारे से चढ़कर लगाम थाम ली। जोडी भी उसकी बग़ल में ही बैठ गया। ओलिवर ने अपना एक हाथ कमीज़ के अन्दर डाला और अपनी पिस्तौल बाहर निकालकर पास ही रख ली।

जोडी बोला, "फोरेस्टर तो जा चुके हैं।"

ओलिवर ने घोड़े को तेज़ दौड़ने के लिए चाबुक मारी और राह में मुड़ पड़ा। चारों ओर लपटों में घर का ढाँचा साफ़ दिख रहा था, जैसे उनमें लकड़ी का एक सन्दूक घिरा हो। ओलिवर का साँस रुक गया।

उसने पूछा, "माँ अन्दर नहीं थी?"

"वह सामने ही खड़ी है।"

ओलिवर ने गाड़ी रोकी और वे नीचे उतर आए। उसने माँ को पुकारा। दादी ने अपनी बाँहें हवा में फैला दीं और उसकी ओर दोड़ी।

वह बोली, "माँ, वहीं रहो। काँपो मत। ठीक रहो।"

पैनी उनसे आ मिला और बोला, "इससे अधिक किसी और का स्वागत कैसे होगा? तुम बहुत ठीक मौक़े पर आए।"

ओलिवर ने दादी को एक ओर हटाया और घर की ओर देखा। एक तेज़ लपट लपकी और छत टूटकर नीचे आ गिरी। आग पास के

सनावरों पर लगी काई पर जा लगी।

वह बोला, "फौरेस्टर लोग किधर गए हैं ?"

जोडी ने देखा, दादी घबरा गई थी। उसने अपनी बाहें भींच लीं और वह चिल्लाई, "अब तुम व्यर्थ में ही फौरेस्टरों से क्या चाहते हो ?"

ओलिवर बोला, "जोडी ने बताया है कि उन्होंने ही यह किया है !"

"ओ ! मूर्ख जोडी ! ये तो बच्चे के खयाल हैं। मैंने ही एक जलता हुआ दीया खिड़की में रख दिया था। खिड़की खुली थी। पर्दे उससे छूकर जल पड़े। यह मुझे मेले में भी खलता रहा। जोडी, तुम अभी कुछ और बुरा चाहते हो ?"

जोडी उसकी ओर देखता रह गया। उसकी माँ का भी मुँह खुला रह गया। वह बोली, "क्यों ? तुम जानते हो···"

जोडी ने देखा कि उसके पिता ने माँ की बाँह दबा दी और वह बोला, "हाँ बेटे, तुम्हारा क्या मतलब मीलों दूर बैठे भोले-भाले लोगों के बारे में ऐसी बात सोचने का ?"

ओलिवर ने अपनी साँस धीरे-धीरे छोड़ी और बोला, "मुझे खुशी है कि यह काम उन्होंने नहीं किया। मैं उनमें से आज एक को भी नहीं छोड़ता।" और तब सबकी ओर मुड़कर उसने कहा, "आप मेरी इस पत्नी से मिलिए !"

दादी काँपने लगी और फिर बढ़कर उसने लड़की के गाल चूम लिए।

वह बोली, "मुझे प्रसन्नता है कि तुमने मामला तय कर लिया। मुझे आशा है कि अब ओलिवर मुझसे कभी-कभी मिलने आया करेगा।"

ओलिवर ने ट्विक का हाथ अपने हाथ में लेकर जलते घर की परिक्रमा की। तभी दादी बैक्स्टरों की ओर मुड़ी और बोली, "अगर तुम में से किसी ने भी यह बात मुँह से निकाली। तुम सोचते हो कि मैं एक जले हुए घर के लिए दो परिवारों का खून बहा दूँगी और अपने लड़के को मर जाने दूँगी ?"

पैनी ने अपने हाथ उसके कन्धे पर रख दिए और बोला, "काश ! मुझमें भी तुम्हारे जैसी बुद्धि होती···"

वह काँप रही थी। पैनी के पकड़ने से वह शान्त हुई। ओलिवर और ट्विक लौट आए थे।

ओलिवर बोला, "माँ, बुरा मत मानो। मैं तुम्हें नदी पर ही दूसरा घर बना दूँगा।"

उसने अपनी ताक़त बटोरी और कहा, "मुझे नहीं चाहिए। मैं बहुत बूढ़ी हूँ और अब मैं बोस्टन में रहना चाहती हूँ।"

जोडी ने पिता की ओर देखा। उसका चेहरा खिंच आया था।

दादी बोली, "मैं सवेरे ही जाना चाहती हूँ।"

ओलिवर ने कहा, "क्यों माँ, क्या यहाँ से छोड़ दोगी ?"

उसका चेहरा चमक उठा, और तब उसने धीरे से कहा, "मैं बोस्टन से ही सदा जहाज़ पकड़ता हूँ। मुझे यह पसन्द भी है, परन्तु मैं तुम्हें उन यांकियों के बीच छोड़ना नहीं चाहता। कहीं तुम अमरीका में दूसरा गृह-युद्ध न शुरू करवा दो ?"

27

अगले दिन पौ फटते समय चुभने वाली ठण्ड में बैक्स्टर लोग नदी के घाट पर खड़े हुए दादी, ओलिवर, ट्विक और फ्लफ़ को विदा दे रहे थे। दक्षिण की ओर के मोड़ पर उत्तर की ओर जाने वाले जहाज़ ने सीटी दी। दादी ने जोडी की माँ का आलिंगन किया। दादी ने जोडी को कसकर पकड़ा और कहा, "अब तुम लिखना सीख लो ताकि तुम मुझे बोस्टन में पत्र लिख सको।"

ओलिवर ने पैनी से हाथ मिलाया।

पैनी बोला, "जोडी और मैं तुम्हारा दूर जाना बुरी तरह अनुभव करेंगे।"

ओलिवर ने जोडी की ओर हाथ बढ़ाया और बोला, "अपना साथ देने के लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। मैं तुम्हें भूल नहीं सकूँगा, चीनी समुद्र में भी नहीं!"

दादी की ठोड़ी नुकीली और उसका मुख कसा हुआ था।

पैनी बोला, "अगर कभी तुम्हारा मन पलटे और तुम वापस आना चाहो, तो हमारी ज़मीन पर हर समय तुम्हारा स्वागत है।"

मोड़ से घूमकर वह नाव उनके घाट तक आ गई। इसमें रोशनी जल रही थी, क्योंकि नदी पर अब भी अँधेरा था।

ट्विंक बाली, "हम तो भूल ही गए थे कि जोडी के लिए हम क्या लाए हैं ?"

वह पहले दिन की घटनाओं से सुन्न-सा था। उसने भेंट हाथ में ली और जड़-सा बनकर उसे देखता रहा। वह सामने झुकी और उसने उसे माथे पर चूम लिया। उसका स्पर्श जोडी को पसन्द आया। उसके होंठ कोमल थे और उसके पीले बाल सुगन्धित ! नाव का ऊपर का फट्टा खोल दिया गया। कुछ गाँठें पहले उस पर पहुँचा दी गईं। दादी ने रुककर फ्लफ़ को बाहों में ले लिया। पैनी ने उसके झुर्रीदार कोमल चेहरे को दोनों हाथों में पकड़ा और अपने गाल उन पर रख दिए।

वह बोला, "मुझे तुमसे सच्चा प्यार है।" और उसकी आवाज़ फूट पड़ी।

तीनों जने उस फट्टे से पार हो गए। जहाज के पहिए चलने लगे और नाव धार के बीच में बढ़ पड़ी। दादी और ओलिवर किनारे खड़े होकर, उधर हाथ हिलाने लगे। जहाज़ ने सीटी दी और आगे बढ़ पड़ा। जोडी उसी दशा में तेज़ी से हाथ हिलाने लगा और तीनों का नाम लेकर विदाई देने लगा। उन तीनों ने भी वहीं से जोडी को विदा कही। उनकी आवाज़ें धीरे-धीरे दूर होती गईं। जोडी को लगा जैसे वे एक दूसरी दुनिया में जा रहे हों, मानो उसने उन्हें मरते हुए देखा हो। हालाँकि पूरब में गुलाबी किरणें फूट पड़ी थीं, लेकिन दिन की रोशनी पहली रात से भी अधिक ठण्डी लगने लगी। दादी के घर की राख अब भी धुँधली-धुँधली चमक रही थी।

बैक्स्टर लोग जंगल से होकर घर की ओर चले। पैनी अपने मित्रों के दुख से टूट चुका था। उसका चेहरा तना हुआ था। जोडी भी बहुत-से विरोधी विचारों के बीच फँसकर उन्हें सुलझाना चाह रहा था। वह अपनी माँ और पिता के बीच में बैठकर गर्मी अनुभव कर रहा था। ट्विंक के उस उपहार को उसने खोला। यह मिली-जुली धातु से बना बारूद का एक डिब्बा था। उसने उसे चूम लिया। उसे पता था कि ईज़ी ओज़ेल भी पूर्वी किनारे

पर था और, उसे सन्देह था कि दादी को गया हुआ पाकर वह भी बोस्टन ही चला जाएगा। उनकी गाड़ी खेत तक पहुँच गई थी। दिन ठण्डा होकर भी अच्छा था।

माँ बोली, "अगर मेरे साथ ऐसी बीतती तो मैं क़ानून का बदला चुका कर रहती।"

पैनी बोला, "कोई भी तो सिद्ध नहीं कर सकता! खुरों के निशानों के विषय में फौरेस्टर कह देते कि उन्होंने आग जलती देखी और वे देखने खड़े हो गए। वे यह भी कह सकते थे कि सभी जगह घोड़े हैं, और यह कि उनमें से कोई वहाँ गया ही नहीं था।"

"तब मैं ओलिवर को सारी सचाई बता देती।"

"ठीक! पर परिणाम क्या होता? वह आता और इनमें से दो-तीन को मार देता। उसका दिमाग़ गर्म है। क्यों न हो? कोई भी आदमी किसी भी ऐसे अपराधी पर गुस्सा करेगा ही। ठीक है, वह कुछ को मार देता और स्वयं भी फाँसी पर लटक जाता। या फिर, इनमें से ही बहुत से उसे, दादी को और उसकी प्यारी पत्नी को मार डालते।"

वह घृणा से बोली, "हुँ, प्यारी पत्नी! चुड़ैल न हो!"

जोडी के हृदय में एक नया प्रेम-भाव जगा। वह बोला, "वह बहुत अच्छी है, माँ।"

वह परिणाम पर पहुँचती हुई बोली, "सभी आदमी एक-से होते हैं।"

ज़मीन सामने थी, जोडी सुरक्षित अनुभव करने लगा। औरों पर मुसीबत आती थी, पर यहाँ कोई डर नहीं था। घर उसकी इन्तज़ार में था। धुआँघर माँस से भरा हुआ था, खासकर बूढ़े रीछ के बाद से। और, फिर फ्लैग था। उसे पिछली कोठरी में पहुँचकर ही चैन आई। उसके पास उसे सुनाने के लिए मसाला भी था।

28
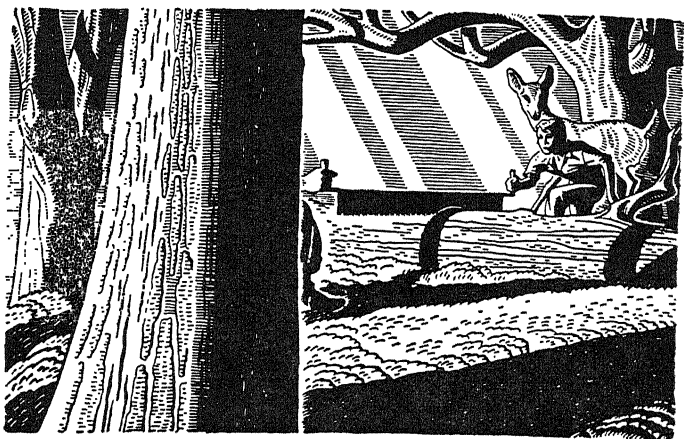
पौष के अन्तिम दिनों ठण्ड कुछ कम हो गई। जब-तब सूर्य के दर्शन हो जाते थे। सर्दी अभी भी कम न हुई थी। रात को रजाइयाँ कम पड़ जाती थीं। सुबह बाल्टियों का पानी भी ऊपर से जम जाता था। पर कभी एक-दो दिन के लिए इतनी गर्मी भी हो जाती थी कि दोपहर बाद की धूप के लिए जोडी की माँ ड्योढ़ी में बैठकर अपना सीने-पिरोने का काम करती और जोडी अपनी गर्म बण्डी बिना पहने जंगलों में दौड़ता रहता।

मौसम के साथ-साथ परिवार का जीवन भी शान्त हो गया। नदी के पास रहने वाले लोग अवश्य डर रहे थे, क्योंकि दादी के मकान के जलने और तेज़ जबान माँ के चले जाने एवं उसके नाविक बेटे के विदेशी के समान व्यवहार और अपनी ही पीले बालों वाली ट्विंक के चले जाने के रहस्य को वे न जान सके थे। सबका यही विश्वास था कि फौरेस्टरों ने ही नशे में ओलिवर के लौटने की बात सुनकर इस मकान को जला डाला। परन्तु नदी दूर थी और यह बात इस परिवार तक बहुत धीमे-धीमे पहुँची। तीनों

ही हर शाम को भट्ठी की आग के पास बैठकर उस रात की याद कर लेते जब वे दादी के घर को राख में बदलता देख रहे थे और उनके साथ ही आग के पास बैठकर उनकी किश्ती के लिए सवेरे की प्रतीक्षा करते रहे थे। दादी को उनकी कोई युक्ति जाने से न रोक सकी थी।

पैनी बोला, "मेरे ख़याल में यदि वह अजनबी यह जानता होता कि वह ओलिवर की पत्नी है, और उसने यह न कहा होता कि कोई लड़की उसके साथ है, तो शायद लेम भी उनकी परवाह न करता। वे समझ जाते कि उनकी शादी हो जाने के बाद अब मामला रफ़ा-दफा हो गया है।"

"पत्नी हो या न हो, यह उन नीचों ने जानबूझकर ही किया। और, यह सोचकर कि मकान में कोई है, उन्होंने मकान को जला डाला।"

पैनी ने आह भरी। उसे यह बात स्वीकार करनी पड़ी। फौरेस्टर अपना व्यापार फोर्टगेट्स ही करते रहे होंगे, क्योंकि वे इधर से कभी नहीं गुज़रे। भालू का माँस भी लेने वे नहीं आए। पैनी से उनका यह कतराना उनके दोष का प्रमाण था। इससे वह दुखी हुआ। उसने जो शान्ति बहुत देर में कमाई थी, वह उसके सामने ही बिखर पड़ी। जैसे कुछ दूर पर एक पत्थर किसी और पर फेंका गया हो और चोट उसे लग गई हो। वह दुखी और घायल था।

जोडी भी दुखी था, पर उसका यह दुख किसी कहानी के पात्रों से होने वाली सहानुभूति के समान ही था। दादी आदि तीनों इस तरह चले गए जैसे उसने कहानियों में सुन रखा था। ओलिवर उन कहानियों में पहले ही समा चुका था, जो उसने दूर-दूर के देशों की उसे सुनाई थीं। और, अब दादी, ट्विंक और फ्लफ़ भी उन्हीं कहानियों के पात्र बनकर रह गए। ओलिवर ने कहा था कि 'वह उसे चीनी समुद्र जैसी दूर जगहों पर भी नहीं भूल पाएगा।' और वह भी अधिकांशतः उसे चीनी समुद्र में ही अनुभव करता—अपने से बहुत दूर, और कल्पना ही कल्पना में लोगों से अपमानित!

फाल्गुन आते-आते गर्मी बढ़ने लगी। पाला और बर्फ़ भी कभी-कभी पड़ जाते थे। पर यह सब वसन्त के आगमन से पहले हा पहले तक रहा। इस समय सुगन्धित वृक्ष वसन्त के आने की सूचना के रूप में खिल चुके थे। पैनी जल्दी फसल देने वाले खेतों में हल चलाने लगा। बक द्वारा तैयार किये गए नए

खेत में भी उसने हल चलाया, जो उसने पैनी के साँप के काटे जाने की दशा में इनके यहाँ ठहरकर तैयार किया था। उसने रुपया कमाने के उद्देश्य से यहाँ थोड़ी रूई बोने का निश्चय किया। उत्तरी हरियाली की ओर की नीची ज़मीन में उसने तम्बाकू उत्पन्न करने की सोची। उसने अपने घर और अंगूरों के बगीचे के बीच में बीज बोने के लिए ज़मीन चुनी। पशुओं में से घोड़ा और गाय ही उसके पास बच गए थे। उसने मटर कम और मक्की अधिक बोने का निश्चय किया। यों तो कमी हमेशा ही बनी रहती थी। न चूज़ों को पूरा खाने को मिलता था, न सूअर ही ठीक तरह मोटे हो पाते थे। गर्मियों के अन्त में परिवार के पास भी आटा पूरा नहीं बचता था। यह सब मक्की की कमी के कारण ही होता था। खेती की दृष्टि से परिवार को इसी की सबसे अधिक ज़रूरत थी। जोडी ने सर्दियों की खाद खेतों तक पहुँचाने में पिता की सहायता की और उन्हें खेत पर फैला भी दिया। पैनी ने ज़मीन को अच्छी तरह तैयार करने और ढँकने का निश्चय किया, ताकि महीने-भर बाद कोयल की पहली पुकार पर वह इन्हें बो सके।

माँ ने शिकायत की कि वह हमेशा ही अदरकों की एक क्यारी चाहती रही है। हरेक घर में एक न एक ऐसी क्यारी होती है। वौलूसिया के दूकान-दार की पत्नी ने उसे खेत तैयार होने पर किसी भी समय कुछ जड़ें देने का वायदा किया था। पैनी और जोडी ने एक छोटा-सा खेत इसके लिए भी तैयार कर दिया। उन्होंने घर के पास ही डेढ़ गज गहरी ज़मीन खोदी और सरु की खाद नीचे बिछा दी। तब दक्षिण-पश्चिम की ओर से वे मिट्टी लाए और इसे उन्होंने तैयार किया। पैनी ने विश्वास दिलाया कि वह व्यापार के लिए अगली बार जाते हुए कुछ जड़ें लेता आएगा ताकि यहाँ उन्हें उगा सके।

शिकार बहुत कम पड़ गया था। भालू बहुत दूर-दूर चरने लगे थे, क्योंकि अगले ही महीने उन्होंने छिप जाना था। उनकी माँदें तूफ़ान द्वारा उखाड़ी गई जड़ों के पास ही बनी हुई थीं। या फिर जहाँ भी दो लट्ठे एक-दूसरे पर छत बनाने की हालत में पड़े होते थे, वहीं उन्होंने माँद बना ली थी। कभी-कभी सनावर या ताड़ की शाखों को खींचकर वे एक खोखले पेड़ पर रख लेते, ताकि एक घोंसला-सा बन सके। उनकी माँद के

अन्दर खाई-सी खुदी होती थी। उसमें से अपने शरीर का अगला भाग रीछ बाहर निकाले रहता था। जोडी को अचरज हुआ कि रीछ ऐसी जगहों में मगहर में न जाकर इस समय क्यों जाते हैं ? क्योंकि सर्दी तो उस समय अधिक होती है ।

पैनी ने बताया, "मेरे खयाल में अपना उद्देश्य वे ही अच्छी तरह जानते हैं।"

हिरण बहुत ही कम थे। एक ओर प्लेग ने उन्हें कम कर दिया था और दूसरी ओर हिंसक पशु अधिक खूँखार हो उठे थे। बारहसिंगों की हालत बहुत अच्छी न थी। उनका माँस कमज़ोर और उनकी खालें धुँधले काले-से रंग की और झुर्रीदार हो गई थीं। वे अक्सर अकेले ही घूमते। हिरणियाँ भी या तो अकेले ही या दो-दो होकर घूमतीं। बूढ़ी हिरणी किसी कुमारी हिरणी के साथ या अपने सालभर के बच्चे के साथ घूमा करती थी। हिरणियाँ सूने ही वाली थीं।

खेतों का काम खतम होते ही भट्ठियों के लिए अधिक-से-अधिक लकड़ी काटना और इकट्ठा करना ज़रूरी हो गया। अब पहले की अपेक्षा लकड़ी अधिक जल्दी मिल जाती थी, क्योंकि तूफ़ान ने बहुत अधिक पेड़ों को नीचे गिरा दिया था और उनकी जड़ें लम्बी वर्षा और तेज़ हवा के कारण पहले ही हिल चुकी थीं। इस कारण पेड़ बहुत बड़ी संख्या में गिरे पड़े थे। नीचे की ओर भी लकड़ी काफी गिरी पड़ी थी, पर वह सड़ गई थी। लगता था जैसे, बाढ़ नहीं, आग ने ऐसी जगह तबाही मचाई हो, क्योंकि ऐसे पेड़ों का रंग काला हो चुका था।

पैनी बोला, "मुझे अपने ऊँची जगह पर रहने का अभिमान है। जब मैं चारों ओर की नीची ज़मीन पर हुई बरबादी को देखता हूँ, तब मुझे डर लगता है।"

जोडी सुबह जंगल में घूमने को और कुछ छोटे-मोटे शिकार को अच्छा समझता था। उसे उनमें आनन्द मिलता था। पैनी किसी भी ठण्डे दिन नाश्ते के बाद बाद गाड़ी में घोड़े को बाँध लेता और वे किसी भी ओर सड़क पर निकल पड़ते। कुत्ते भी गाड़ी के साथ-साथ चलते और फ्लैग भी इधर-उधर उछलता-मचलता चलता रहता। पैनी द्वारा बनाये गए पटे में

वह बहुत ही अच्छा लगता। वे जंगल में पैदल उतर पड़ते और किसी गिरे हुए सनावर या चीड़ के पेड़ को ढूंढने लगते। इन दिनों मोटे चीड़ काफी मात्रा में गिरे पड़े थे। इनसे भट्ठी में तेज और गर्म आग खूब अच्छी तरह जलती थी। परन्तु इससे धुआँ भी काफी उठता था, जिससे बर्तन आदि काले पड़ जाते थे। वे इन्हें या तो कुल्हाड़ी से काटने लगते या आरी से इन्हें चीर लेते। उन्हें आरी की एक लय में बँधकर चलने वाली आवाज़ पसन्द आती, जो लकड़ी के चीरने के साथ-साथ उठती। साथ ही उन्हें लकड़ी के बुरादे में से उठने वाली गन्ध भी अच्छी लगती।

कुत्ते पास की झाड़ियों में सूँघते फिरते या खरगोशों को इधर-उधर भगाते रहते। फ्लैग भी नए पत्तों या नई उगती घास को खाता रहता। पैनी अपनी बन्दूक हमेशा पास रखता। कभी-कभी जूलिया किसी पास के ही खरगाश पर टूट पड़ती या उसे कोई बड़ी गिलहरी पास के ही किसी चीड़ पर दिखाई दे जाती। और इस तरह परिवार के शाम के भोजन के लिए पुलाव बनाने का प्रबन्ध हो जाता। एक दिन एक सफेद बड़ी गिलहरी इसी तरह पेड़ पर से इनकी ओर साहस से झाँक रही थी, परन्तु पैनी ने गोली न चलाई। उसने बताया कि यह सफेद रैकून जैसी ही दीखती थी। बूढ़े भालू का माँस कुछ खुरदरा और दुर्गन्धित-सा था और उसे पकाने और ठीक करने में काफी देर लग जाती थी। जब वह बिलकुल समाप्त हो गया, तब सारे परिवार को प्रसन्नता हुई। इसका अधिक भाग कुत्तों के लिए पका दिया गया था। और जब ज़रूरत पड़ने पर इसे खाना ही पड़ा, तब भी कोई इसके लिए उतावला नहीं बना। हाँ, उसकी चर्बी से एक बड़ी बाल्टी अवश्य भर गई थी, जिससे काफी सहायता रही। चर्बी ताज़ा शहद की तरह बहुत ही साफ और सुनहली थी और हर प्रकार के पकाने के लिए बहुत अच्छी थी। उसके तले हुए माँस के टुकड़े भी अच्छे सुगन्धित थे, मानो किसी मोटे सूअर के हों। उन्हें चबाते हुए परिवार के किसी भी व्यक्ति को सन्तोष अनुभव होता।

माँ का बहुत-सा समय रज़ाइयाँ, गद्दे आदि सीने में बीत जाता। पैनी जोडी को पाठ पढ़ाता रहता। भट्ठी के पास बैठकर शाम गुज़ारी जाती, जिससे प्रकाश और गर्मी दोनों का ही काम चल जाता। घर के चारों ओर

हवा हौले-हौले गर्मी देती हुई चलती रहती। चाँदनी की शान्त रातों में लोमड़ियों की आवाज़ हरियाली में सुनाई दे जाती थी। तभी पाठ रुक जाता और पिता और पुत्र दोनों मिलकर वह आवाज़ सुनने लगते। लोमड़ियाँ उनकी मुर्गियों पर कभी-कभी ही हमला करने आतीं। पैनी ने बताया कि वे जूलिया के सिर के बालों तक को खूब पहचानते हैं। उसके रहते वे परमात्मा पर भरोसा करके जाना नहीं चाहते।

इन्हीं दिनों एक चाँदनी रात में, जब माता-पिता सो चुके थे और जोडी अभी फ्लैग से खेल ही रहा था, उसे आँगन में एक आवाज़ सुनाई दी, मानो कुत्ते घूम रहे हों। परन्तु यह गड़बड़ उन दोनों कुत्तों की प्रतिदिन की आदत से ज़्यादा अच्छी थी। वह सामने की खिड़की की ओर गया और खिड़की के शीशे पर मुँह लगाकर देखने लगा। एक अजीब-सा कुत्ता रिप के साथ उछलता-कूदता खेल रहा था। जूलिया उसे सहती हुई देख रही थी। जोडी साँस रोककर देखने लगा। यह कुत्ता नहीं था। यह तो बहुत ही कमज़ोर और लंगड़ा भूरे रंग का भेड़िया था। उसकी इच्छा हुई कि वह लौटकर अपने पिता को बुला ले। पर तभी न जाने क्यों वह फिर लौट आया और देखने लगा। कुत्ता और भेड़िया शायद पहले भी कई दिन इसी तरह खेलते रहे थे। वे एक-दूसरे के लिए अजनबी नहीं रह गए थे। वे चुपचाप खेलते रहे, मानो कुत्तों ने यह बात अब तक छिपा रखी हो। जोडी सोने वाले कमरे के दरवाज़े तक गया और उसने बहुत धीमे से पैनी को बुलाया।

उसने आकर पूछा, "बेटे, क्या बात है?"

जोडी इशारा करते हुए चुपचाप खिड़की की तरफ बढ़ा। उसकी बताई जगह की ओर पैनी भी नंगे पाँव बढ़ आया। वह हौले-हौले सीटी बजाने लगा। उसने अपनी बन्दूक उठाने के लिए कोई चाह न दिखाई। वे चुपचाप देखते रहे। चाँदनी में उन दोनों पशुओं की हरकतें साफ दिखाई दे रही थीं। भेड़िये की कमर में एक ओर कुछ खराबी थी, इसीलिए वह लंगड़ाकर चल रहा था।

पैनी ने बहुत धीरे से कहा, "देखो कितना दर्दनाक है? नहीं है क्या?"

"लगता है, यह जोहड़ के किनारे घेरे हुओं में से एक है।"

पैनी ने सिर हिलाया और बोला, "हाँ, निश्चय से यह आखिरी भेड़िया

बच गया है। बेचारा घायल और अकेला है। यह अपने सबसे नज़दीकी सम्बन्धी के पास खेलने के लिए आ जाता है।"

शायद इनकी फुसफुसाहट उन तक पहुँच गई या इनकी गन्ध बन्द खिड़की में से भी उन तक पहुँच गई। चुपचाप ही वह भेड़िया लौटा और कुत्तों को छोड़कर बड़ी कठिनता से बाड़ पार करता हुआ दूर निकल गया।

जोडी ने पूछा, "क्या यह यहाँ कोई नुकसान कर सकता है?"

पैनी ने अपने पाँव भट्ठी की ओर अँगारों पर फैलाए और बोला, "मुझे सन्देह है कि यह अपने-आप एक समय का भोजन भी जुटाने लायक नहीं है। मैं इसे स्वप्न में भी तंग न करूँगा। कोई भालू या चीता ही इसे खतम कर देगा। जब तक इसका जीवन बचा है, इसे यों ही ज़िन्दा रहने दो।"

वे उस अजीब और दुखपूर्ण दशा में भट्ठी के पास ही कुछ देर बैठे रहे। भेड़िये के लिए भी अकेलापन बहुत कठिन बात थी, क्योंकि इसे इसी कारण अपने दुश्मन के आँगन में मित्रता खोजने आना पड़ता था। जोडी ने अपनी बाँह फ्लैग के ऊपर रख दी। उसने सोचा, काश! फ्लैग यह समझ सके कि उसे जंगल में कितना एकान्त भोगना पड़ता, जिससे अब वह बच गया है। स्वयं उसके लिए भी फ्लैग ने एकान्त दूर कर दिया है, जो परिवार के बीच भी उसे अनुभव होता था।

चाँद घटने के दिनों में उसने एक बार फिर उसी तरह भेड़िये को देखा, पर उसके बाद वह कभी न आया। जान-बूझकर उसकी बात माँ तक न पहुँचने दी गई, क्योंकि वह उसे मारने की माँग कर बैठती। पैनी का विश्वास था कि कुत्तों ने किसी शिकार के समय या लकड़ियाँ काटने के समय उससे पहचान बनाई थी, जब कि वे जंगल में अपनी मटरगश्तियाँ करने इधर-उधर निकल गए होंगे, क्योंकि उस समय पैनी और जोडी काम में लगे होते थे।

29

फाल्गुन के अन्त तक पैनी जोड़ों के दर्द के कारण असमर्थ हो गया। सर्दियों और बरसात के दिनों में उसे बरसों से यह बीमारी तंग करती आई थी। ठण्ड लगने या अपने मनचाहे काम करने से वह कभी न रुका। उसने जिस काम को ज़रूरी समझा, मौसम की परवाह किए बिना, वह उसमें जुट पड़ा। पत्नी ने बार-बार कहा कि यह समय उसके बिस्तर पर आराम करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त था, पर पैनी वसन्त की पौध लगाने के लिए बेचैन था।

पत्नी ने अधीर होकर कहा, "जोडी को यह सब कर लेने दो।"

"उसने मेरे पीछे चलने के सिवाय कभी कुछ नहीं किया। ऐसे काम में वह बहुत-सी गलतियाँ कर सकता है।"

"ठीक है, पर उसके न जानने में दोष किसका है? तुमने उसे इतने दिन काम से खाली रखा। तुम स्वयं तो तेरह बरस की आयु में ही पूरे काम करने लगे थे।"

"यही कारण है जिससे मैं नहीं चाहता कि वह बड़ा हो जाने से पहले ऐसे किसी काम को सम्भाले।"

वह बोली, "अरे दयालु! हल चलाना कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता।"

उसने आक की जड़ उबाली और उसके लिए पुल्टिस तैयार की और नारंगी, पोटाश आदि मिलाकर उसके लिए एक ताक़त की दवा तैयार की। वह उसकी दवाइयाँ बड़ी कृपा मानता हुआ पी लेता था, पर उसे कोई लाभ न हुआ। अन्त में उसे अपने चीते का तेल ही प्रयोग करना पड़ा और घुटनों पर घंटा-भर वह मालिश करता रहा। उसने बताया कि यह सबसे अधिक आरामदेह दवा है।

जबतक उसका पिता सुस्त रहा, जोडी घर के सभी काम और लकड़ी आदि काटने का काम भी करता रहा। उसे एक लोभ भी था जिससे कि वह काम जल्दी निबटा लेता, क्योंकि ऐसा करते ही उसे फ्लैग के साथ घूमने-फिरने की छुट्टी मिल जाती थी। पैनी उसे अपनी बन्दूक भी साथ ले जाने देता। उसे पिता का साथ तो न मिलता, पर अकेले में शिकार करना भी अच्छा लगता। वह और फ्लैग आज़ाद होकर साथ-साथ रहते। वे दोनों ही सोते के पास निकल जाते। वहाँ पर एक दिन वे एक खेल में उलझ गए। वह वहाँ पानी लेने गया था। यह खेल सोते के एक ओर ऊपर-नीचे चढ़ने का था। जोडी और फ्लैग उस सोते से नीचे तक और नीचे से फिर ऊपर तक एक-दूसरे का पीछा करते रहे। फ्लैग हार नहीं रहा था, क्योंकि जब तक जोडी एक ओर आधा भी न चढ़ पाता, तब तक वह पाँच-छः बार ऊपर-नीचे हो आता। जब वह देखता कि वह पकड़ा न जा सकेगा, और जोडी थककर चूर हो जाएगा, तो वह उसके पास तक आ जाता और दिखाता कि जैसे वह उसकी पकड़ में आ जाएगा, पर तभी वह फिर उसे खिझाने के लिए भाग जाता।

इसी महीने एक गर्म दिन जोडी ने नीचे से सोते के ऊपर की तरफ देखा, फ्लैग ऊपर तना खड़ा था। एक क्षण के लिए उसे यह लगा कि जैसे यह कोई और ही हिरण था। फ्लैग बहुत बड़ा हो चुका था। वह नहीं देख पाया था कि वह कितना बढ़ रहा था? कई छोटे हिरण, जो शिकार में

मारे गए थे, इससे भी छोटे थे। वह बहुत उत्तेजित होकर पैनी के पास घर में आया। पैनी रसोई में भट्ठी के पास ही रजाई में लिपटा बैठा था ; हालाँकि दिन कुछ गर्म था।

जोडी फूट पड़ा, "पिताजी, आपने देखा कि फ्लैग भी बरस-भर का हो चला।"

पैनी उसकी ओर खोया-सा देखने लगा। बोला, "मैं स्वयं भी बहुत दिन से यही सोच रहा हूँ। एक महीना और होते ही वह पूरे बरस का हो जाएगा।"

"वह कितना भिन्न हो जाएगा तब ?"

"हाँ, तब वह जंगल में अधिक देर रहने लगेगा। वह काफी बड़ा हो जाएगा। कभी-कभी ही यहाँ आया करेगा। वह उस प्रकार के आदमी जैसा हो जाएगा जो एक ऐसी जगह खड़ा हो जहाँ से कभी इधर और कभी उधर मुड़ा जा सकता है। उसके एक ओर उसका बचपन और दूसरी ओर उसका जवानी होगी।"

जोडी शून्य में ताकने लगा। उसने पूछा, "उसके सींग भी आ जाएँगे?"

"उसके सींग शायद आषाढ़ से पहले न निकलेंगे। बारहसिंगों के सींग उसी समय निकलते हैं। वसन्त-भर निकलने वाले सींगों के कारण उनका सिर कठोर रहता है। गर्मियाँ आते ही कुछ शाखें-सी फूटने लगती हैं और पूरी गर्मियों तक उनके सींग निकल आते हैं।"

जोडी ने फ्लैग के सिर को अच्छी तरह देखा। उसे माथे पर कोने कुछ कठोर दिखाई दिए। माँ एक बर्तन हाथ में लिये उसके पास से गुज़री।

"ओ, माँ ! फ्लैग जल्दी ही बरस-भर का हो जाएगा। वह बहुत ही अच्छा दीखेगा। उसके छोटे-छोटे सींग होंगे। क्या उसके सींग और वह प्यारे न लगेंगे ?"

"अगर उसके ताज और देवदूत के डैने भी लगा दो तब भी मुझे यह अच्छा न लगेगा।"

वह उसे तंग करने के लिए उसके पीछे-पीछे चल दिया। माँ सूखी मटरों को देखने के लिए झुकी। जोडी ने उसके गालों पर अपनी नाक ऊपर-नीचे रगड़नी शुरू कर दी। वह चाहता था कि कोमलता का आनन्द ले।

"माँ, तुम्हारे शरीर में से भुनते हुए सिट्टों की-सी गन्ध आती है, मानो सिट्टे धूप में सिक रहे हों।"

"ओह! जाओ, अपना काम करो। मैं अभी मक्की का आटा भून रही थी।"

"नहीं, यह वह नहीं है। अच्छा माँ, सुनो, क्या तुम सचमुच परवाह नहीं करतीं कि फ्लैग के सींग निकलें, चाहे न निकलें ?'

"हाँ, उससे उसे टक्कर मारने और तंग करने में और भी आनन्द आएगा।"

जोडी ने बात आगे न बढ़ाई। फ्लैग सबका प्यार खोता जा रहा था। वह चुपचाप अपनी जंज़ीर से निकल जाता और कसने पर वह भी बछड़े जैसे ही इस रोक के विरुद्ध हरकतें करने लगता। वह इसे तब तक कसता जाता जब तक उसकी आँखें फूल जातीं और उसकी साँस घुटने लगती, ताकि उसे बचाने के लिए उसे खोलना आवश्यक हो जाता। और तब वह छूटते ही ऊधम मचाने लगता। उसे कोठरी में बाँधा नहीं जा सकता था, क्योंकि वहाँ के खूंटे को उसने गिरा दिया था। अब वह अधिक जंगली और असभ्य होता जा रहा था। घर में अब उसे जोडी के सामने ही आना मिलता, क्योंकि वह उसे सम्भाल सकता था। परन्तु दरवाज़ा बन्द देखकर वह जबर्दस्ती घुसने का यत्न करता। अगर चिटखनी न लगी होती तो वह टक्कर से ही इसे खोल लेता। जब भी वह माँ की पीठ देखता, या कोई और मौका पाता, अन्दर किसी न किसी प्रकार का नुकसान कर जाता।

माँ सूखे मटरों का बर्तन मेज़ पर रखकर भट्ठी तक गई। जोडी एक ताज़ी खाल का टुकड़ा देखने के लिए अपने कमरे में गया। तभी रसोई में एकदम ही आवाज़ और कुछ गड़बड़ सुनाई दी और तभी माँ की बौखलाहट और गुस्सा भी सुनाई दिया। फ्लैग ने मेज़ पर उछलकर कुछ मटर मुँह में भरे और सारे बर्तन को नीचे गिरा दिया। मटर सारी रसोई में इधर-उधर बिखर गए। जोडी दौड़ता हुआ आया। उसकी माँ ने दरवाज़ा खोला और झाड़ू मारकर फ्लैग को बाहर निकाला। फ्लैग को इस बात में भी आनन्द आया। वह उछलता-कूदता और अपनी पूँछ और सिर को उछालता हुआ दौड़ने लगा, जैसे कल्पना के सींगों से ही वह किसी पर

हमला कर रहा हो। वहाँ से वह बाड़ कूद गया और जंगल में निकल गया।

जोडी बोला, "माँ, यह मेरा अपराध है। मुझे उसे नहीं छोड़ना चाहिए था। वह भूखा था। उसे नाश्ते में आज कुछ खास नहीं मिला। माँ, तुम मुझे पीटो, उसे नहीं।"

"मैं तुम दोनों को ही चीर डालूँगी। एक-एक मटर चुनो और धो डालो।"

यह सब करने में जोडी को आनन्द आया। मेज़ के नीचे, पीछे, आलमारी के नीचे, पानी की जगह और इधर-उधर सब कोनों से उसने मटर बटोर लिए। उसने उन्हें धोया और उसके लिए अलग पानी लाने के लिए सोते तक गया, ताकि नुक़सान पूरा हो सके। उसे सचमुच पूरा पश्चात्ताप था।

वह बोला, "माँ, अब यह कोई खास नुक़सान नहीं हुआ। अगर कभी कोई नुक़सान फ्लैग करे भी तो आप मेरे पर भरोसा कर सकती हो कि मैं उसे पूरा करने का ध्यान रखूँगा।"

फ्लैग साँझ तक न आया। जोडी ने उसे बाहर ही खाना खिलाया और माता और पिता के सोने की प्रतीक्षा करने लगा, ताकि वह उसे बाद में कमरे में ला सके। फ्लैग की छुटपन की लम्बे समय तक सोने की आदत छूट गई थी और अब वह रात में ही अधिक बेचैन हो उठता था। माँ ने शिकायत की कि उसने रात को जोडी के और सामने के कमरे में कई बार उसे घूमते और पैर पटकते पाया है। जोडी ने छत पर पाए जाने वाले चूहों का एक बहाना बना दिया, पर उसकी माँ को सन्देह बना रहा। लगता है, उस दिन दोपहर बाद फ्लैग जंगल में सोया होगा, क्योंकि रात में उसने अपनी जगह को छोड़कर जोडी के कमरे का दरवाजा खोला और घर में इधर-उधर घूमने लगा। अपनी माँ की एक तेज़ चीख़ सुनकर जोडी उठ बैठा। फ्लैग ने उसे सोते से जा उठाया था, क्योंकि वह अपनी नाक माँ के चेहरे पर रगड़ने लगा था। जोडी ने उसे पकड़ा और सामने के दरवाज़े से बाहर ले गया ताकि माँ अधिक शोर न कर सके।

वह गुस्से में बोली, "अब यह यहीं समाप्त हो जाना चाहिए। यह जानवर मुझे रात में भी सोने नहीं देता। अब यह किसी समय भी घर में बिलकुल नहीं आ पाएगा।"

पैनी अब तक इस बहस से दूर ही रहा था।

वह अपने बिस्तरे से ही बोला, "बेटा, तुम्हारी माँ ठीक कहती है। अब वह घर में आने के लिए बड़ा बेचैन हो गया है। उसे अन्दर नहीं आने दिया जा सकता।"

जोडी फिर सोने गया, पर जागता ही रहा। उसे आश्चर्य था कि फ्लैग में जैसे प्यार न रहा हो। उसे लगा कि उसकी माँ ने अपने चेहरे पर उसकी साफ़ नाक रगड़ने पर एतराज़ करके अच्छा नहीं किया। उसे स्वयं इस प्रकार का आनन्द अब तक काफ़ी अधिक नहीं मिला था। उसने माँ को नीच और कठोर समझा, जो उसके अकेलेपन का ध्यान नहीं रखती। इस असन्तोष ने उसे सुला दिया और वह तकिये को पकड़कर फ्लैग समझता हुआ सो गया। सारी रात फ्लैग घर के चारों ओर उछलता-कूदता और साँसें छोड़ता रहा।

सवेरा होने पर पैनी को कपड़े पहनकर खेतों में जाने और छड़ी के बल चलने लायक अपनी दशा दिखाई दी। वह खेतों में चक्कर काट आया और घर के पीछे आ गया। उसका चेहरा उदास था। उसने जोडी को बुलाया और बताया कि फ्लैग ने तम्बाकू के बीजों वाला खेत पूरी तरह उजाड़ दिया है। नई पौध निकलने ही वाली थी कि उसने उसे कुचल डाला। लगभग आधा खेत बिलकुल उजड़ गया है। अब बाकी बचा हुआ पैनी के अपने प्रयोग के लायक ही रह जाएगा, बेचने के लिए नहीं, जैसा कि उसने बोयल्स से वायदा किया था।

वह बोला, "मुझे पता है कि उसने जान-बूझकर यह नहीं किया। वह तो अपनी ओर से आगे-पीछे दौड़ता और छलाँगें भर रहा था। अब यही उचित है कि तुम छड़ियाँ लेकर जाओ और सब पौधों को ठीक से खड़ा करो। चारों ओर भी छड़ियाँ गाड़ देना ताकि बाकी बचे पौधों को उससे बचाया जा सके। मैं पहले ही ऐसा कर चुका होता, यदि मुझे इसका रत्ती-भर भी ध्यान होता कि यह ऐसी जगह भी कुछ न कुछ शरारत मचा आएगा।"

पैनी की दयालुता और उचित बर्ताव ने जोडी का दिल गिरा दिया। माँ का गुस्सा भी ऐसा न कर सका था। वह बहुत निराशा से अपना काम करने बढ़ गया।

पैनी बोला, "यह मैं एक अचानक घटने वाली दुर्घटना के रूप में ले रहा हूँ। हम माँ को नहीं बताएँगे, नहीं तो वह बहुत बुरा मानेगी।"

जोडी काम करते हुए फ्लैग को इन गलतियों से बचाने की बात सोचता रहा। उसने बहुत-सी तरकीबें सोचीं। परन्तु बीजों वाले इस खेत का नुक़सान उसे बहुत बुरा लगा। उसे पूरा विश्वास था कि आगे से ऐसा कभी न होगा।

30

फाल्गुन के अन्तिम दिन ठण्डे परन्तु धूप-से उजले थे। पीला जयन्तिया चारों ओर खिला हुआ और चारों ओर की बाड़ों पर छाया हुआ था, जिससे सभी तरफ एक मधुरता-सी फैल गई थी। नाशपाती और जंगली अलूचों के पेड़ भी चारों ओर खिले हुए थे। लाल चिड़ियाँ सारे दिन गाती रहतीं और शाम को जब उनका गाना समाप्त होता, तब हँसोड़ पक्षी अपना गाना शुरू कर देते।

ज़मीन के कबूतर घोंसला बनाकर एक-दूसरे को आवाज़ें देते और मिट्टी पर इधर-उधर घूमते, मानो कोई छायाएँ घूम रही हों।

पैनी बोला, "अगर मैंने मरना ही हो तो मैं चाहूँगा कि किसी ऐसे ही दिन मरूँ।"

रात में कुछ हलकी-सी वर्षा पड़ी और सुबह की पहली किरणें जिस तरह धुँधलके में से निकलकर आईं, उससे लगा कि रात से पहले एक बार फिर बूँदें आएँगी, पर सुबह साफ़ और उजली थी।

पैनी बोला, "मक्का, कपास ग्रौर तम्बाकू के लिए यह बहुत ही ग्रच्छा समय है।"

पत्नी बोली, "मुझे लगता है कि ग्राज तुम खुश हो।"

उसने हँसते हुए ग्रपना नाश्ता समाप्त किया। पत्नी ने फिर टोका, "ग्रब क्योंकि तुम ग्रच्छा ग्रनुभव कर रहे हो, कहीं खेत में ग्रपने को मारने के लिए फिर न चले जाना।"

वह बोला, "मैं तो इतना ठीक हूँ कि जो भी मुझे पौध लगाने से रोकेगा, मैं उसी को मार डालूँगा। ग्राज सारा दिन मैं पौध लगाने की सोच रहा हूँ। कल ग्रौर परसों भी यही काम होगा। कपास, तम्बाकू ग्रौर मक्का लगानी है।"

वह बोली, "हाँ, मैंने सुन लिया है।"

वह खड़ा हुग्रा ग्रौर उसने पत्नी की पीठ कचोटते हुए कहा, "मटर, ग्रालू ग्रौर सब्जियाँ भी!"

वह ग्रौर जोडी उसे देखकर हँस पड़े।

पत्नी बोली, "मुझे तो लगता है कि जैसे तुम यह कह रहे हो कि सारी दुनिया ही बीज डालोगे।"

पैनी ने ग्रपनी बाँहें फैलाते हुए कहा, "मैं तुम्हें सचमुच प्यार करता हूँ। ग्राज जैसे दिन मैं यहाँ से बोस्टन तक ग्रौर वहाँ से टैक्सास तक ग्रौर फिर वहाँ से भी बोस्टन तक घूमता हुग्रा क्यारियोंपर क्यारियाँ बोना चाहूँगा। ग्रौर देखना चाहूँगा कि बीज फूटने शुरू हुए या नहीं?"

वह बोली, "ग्रब पता चला कि जोडी हवाई कहानियाँ कैसे सीखता है?"

पैनी ने जोडी की पीठ थपथपाई ग्रौर बोला, "तुम्हारे लिए ग्राज तक बहुत हलका काम है। तुम तम्बाकू के पौधे निकाल लो ग्रौर मेरे पीछे-पीछे चलो। ग्रगर मेरी कमर न थक गई या दर्द न करने लगी तो मैं तुमसे लेकर यह पौधे लगाने लगूँगा। यह छोटी हरी पौध है। इसे भी बढ़ने का मौक़ा मिलना चाहिए।"

सीटी बजाता हुग्रा वह काम पर निकल पड़ा। जोडी ने ग्रपना नाश्ता निगला ग्रौर उसके पीछे चल पड़ा। पैनी तम्बाकू के पौध वाले खेत तक

पहुँच गया था और कोमल पौध को निकाल रहा था।

वह बोला, "तुम्हें इन्हें इतना सम्भालकर लगाना है, जैसे ये नए उत्पन्न बच्चे हों।"

उसने सिखाने के लिए दस-बारह पौधे लगाए। तब आगे चलते-चलते वह जोडी को लगाते देखने लगा और उसे ठीक करता चलने लगा। तब वह घोड़े और हल को ले आया। उसने नए खेत में क्यारियाँ बना दीं और मुंडेरें बनाकर मक्का के लिए जगह तैयार कर दी। जोडी उसके पीछे-पीछे चलता रहा और टाँगें थकने पर घुटनों के बल चलने लगा। वह धीमे-धीमे काम कर रहा था, क्योंकि पैनी ने बताया था कि जल्दी नहीं है और यह भी कि काम बहुत ठीक तरह से होना चाहिए। दोपहर तक सूर्य ऊँचा चढ़ आया और ठण्डी हवा बहने लगी। उसके पीछे के तम्बाकू के पौधे मुरझाने लगे, परन्तु रात की ठण्डक उन्हें फिर से ठीक खड़ा कर देगी। वह आगे चलता हुआ और सोते पर आते-जाते उन्हें देखने लगा। नाश्ते के बाद से ही फ्लैग ग़ायब हो गया था और निगाह में नहीं आ रहा था। जोडी को उसका न होना खला, पर उसे यह भी अच्छा लगा कि उसने दूर रहने का बहुत अच्छा मौक़ा चुना। अगर वह उसके साथ होता और रोज़ जैसे ही खेल रहा होता, तो जोडी के लगाने से पहले ही वह इन पौधों को उजाड़ देता। दोपहर के खाने तक उसने काम खतम कर लिया। तम्बाकू की पौध तैयार की गई ज़मीन के थोड़े से हिस्से में ही समाप्त हो गई। पैनी ने पहले काफी अधिक बोने की तैयारी की थी। दोपहर के खाने के बाद जब पैनी उसके साथ लौटा तो उसका दुख प्रकट हुआ।

वह बोला, "बेटे, तुमने क्यारी में एक भी पौधा पीछे नहीं छोड़ा और सभी बो दिए न ?"

"हाँ, एक-एक ! मैंने तो छोटे-छोटे सूई जैसे पौधे भी बो दिए हैं।"

"अच्छा ! तो हम यहाँ जगह भरने के लिए कुछ और लगा देंगे !"

जोडी ने उत्सुकता से कहा, "अब मैं आपको और पौध लगाने में और पानी लाने में सहायता दे सकता हूँ।"

"नहीं, पानी की कोई ज़रूरत नहीं। एक ही बारिश इसे बहुत बढ़ा देगी। हाँ, पौध तुम अवश्य लगा सकते हो।"

पैनी ने मक्की के लिए मुंडेरें बना ही ली थीं। वह आगे-आगे बढ़कर अपनी छड़ी से क्यारियों में निशान बनाता गया। जोडी उसके पीछे-पीछे हर छेद में दो बीज डालता गया। वह चाहता था कि उसका पिता तम्बाकू के छोटे से खेत के दुख को भुलाकर किसी तरह खुश हो सके।

उसने पुकारा, "दो के काम करने से जल्दी हो जाता है न, पिताजी ?"

पैनी ने उत्तर नहीं दिया। ज्योंही बादल घिरे और हलकी-सी हवा दक्षिण-पूर्व में चलने लगी, यह स्पष्ट हो गया कि हलकी बौछार इन पौधों पर आएगी और मक्की भी जल्दी ही उग पड़ेगी। पैनी का दिल खुशी से भर उठा। शाम होने से पहले ही वर्षा ने उन्हें आ घेरा। पर वे अपना काम करते रहे और खेत पूरा बो दिया। खेत बहुत ही अच्छी तरह सँवारा गया था और इसकी कोमल धरती वर्षा के लिए पूरी उतावली थी। काम को छोड़कर पैनी ने बाड़ का सहारा लिया और खेत की ओर मुड़कर सन्तोष के साथ देखने लगा। उसकी आँखों में एक और भी चमक थी। वह अब अपना छोटा-मोटा काम अपनी नई पीढ़ी पर छोड़ने के लिए तैयार था और यह नई पीढ़ी उसे धोखा देने वाली नहीं थी।

इसी समय फ्लैग दक्षिण से वर्षा में भीगता, उछलता-कूदता आया और जोडी के पीछे आ खड़ा हुआ। जोडी ने उसके कान खींचे। वह बाड़ के इधर-उधर खूब तेजी से उछलने लगा। तब एक शहतूत के पेड़ के नीचे जाकर रुक गया। वहाँ से एक शाख का किनारा उसने खड़े होकर पकड़ा। जोडी अपने पिता के साथ ही बाड़ पर बैठ गया। उसने पिता का ध्यान फ्लैग की पतली गर्दन पर खींचना चाहा, जो शहतूत के पेड़ पर हरे पत्तों को खाने के लिए खिचकर पहुँची हुई थी। उसका पिता भी उधर ही ध्यान दे रहा था, पर उसके भाव कुछ अजीब-से थे। उसकी आँखें सिकुड़ी हुई और कुछ सोचती-सी लगीं। वह वैसा ही लग रहा था जैसा अजनबी बूढ़े रीछ के पीछे जाते समय लगा था। जोडी के शरीर में ठण्ड की एक लहर-सी दौड़ गई। यह वर्षा की नहीं थी। उसने पिता को पुकारा। पैनी अपने विचारों से चौंककर उसकी ओर मुड़ा। उसने उसकी आँखों में छिपे भाव को पढ़ लिया और बेफ़िक्री से बोला, "तुम्हारा यह छौना बहुत जल्दी बढ़ गया है। जैसा तुम उसे उस अँधेरी रात में उठाकर लाये थे, अब वह उतना छोटा

नहीं रहा। अब वह बरस भर का पूरा हिरण बन गया है।"

इन शब्दों ने जोडी को आनन्द नहीं दिया । उसे लगा कि शब्द उसके पिता की असल भावना को नहीं छूते। पैनी ने उसके घुटनों पर एक क्षण के लिए हाथ रखा और बोला, "तुम दोनों ही किशोर हो गए हो। मुझे इससे दुख होता है।"

वे बाड़ से नीचे उतर आए और काम निबटाने के लिए पशुओं की ओर निकल गए। फिर वहाँ से आग के पास अपने को सुखाने के लिए घर में आ गए। वर्षा अब भी छत पर हलका-हलका शोर कर रही थी। फ्लैग अन्दर आने के लिए बाहर खड़ा मिमिया रहा था। जोडी अपनी माँ की ओर प्रार्थनाभरी दृष्टि से देख रहा था, पर वह जैसे बहरी और अंधी बनी बैठी थी। पैनी भी आग की ओर अपनी पीठ किए और घुटनों को रगड़ते हुए कुछ कठोर बनकर बैठा हुआ था। जोडी ने कुछ पुरानी रोटी माँगी और बाहर गया। उसने कोठरी में फिर से एक नया बिस्तर बनाया और फ्लैग को रोटी के बहाने अन्दर ले गया । वह बैठ गया और हिरण भी उसके पास अपनी टाँग दुहरी करके बैठ गया, और बाद में लेट भी गया। जोडी ने उसके दोनों नुकीले कान पकड़े और उसकी गीली नाक अपनी नाक के साथ मसली।

वह बोला, "अब तुम बरस-भर के किशोर हो गए हो। मेरी सुनो! तुम बड़े हो गए हो। तुम्हें मेरी बात सुननी होगी। अब तुम्हें बड़ा होने के कारण अच्छा बनना पड़ेगा! अब तम्बाकू के खेत मत उजाड़ना। पिता जी को अपने पर गुस्सा मत दिलाना! तुमने कुछ सुना?"

फ्लैग जैसे ध्यान में डूबा-सा कुछ चबाता रहा।

जोडी फिर बोला, "अच्छा, अब ज्योंही पौध लगाने का काम खतम होगा मैं तुम्हारे साथ फिर चलूंगा। तुम मेरा इन्तज़ार करना। तुम आज बहुत देर के लिए चले गए थे। देखो, जंगली मत बन जाना, क्योंकि मैंने तुम्हें बता दिया है कि तुम किशोर हो गए हो!"

उसने उसे वहीं छोड़ा और सन्तोष अनुभव किया कि वह सन्तुष्ट होकर वहीं पड़ा रहा। उसके रसोई में पहुँचने से पहले ही माता-पिता खाना खाने लगे थे। उन्होंने उसके देर करने पर कोई टिप्पणी न की। वे चुपचाप ही

खाते रहे। पैनी तुरन्त सोने चला गया। जोडी भी एकदम थका-सा अनुभव करने लगा और अपने धूल-भरे पाँवों को बिना धोये ही बिस्तरे में जा सोया। जब उसकी माँ दरवाज़े पर उसे याद दिलाने आई, तब तक वह अपनी एक बाँह तकिये पर रखे बहुत गहरी नींद में सो चुका था। उसने उसकी ओर देखा और बिना कुछ कहे या जगाये वह लौट गई।

सुबह पैनी फिर प्रसन्न था। वह बोला, "आज रूई की बारी है।"

हलकी-सी वर्षा रात में ही समाप्त हो चुकी थी। सुबह अभी कुहरा छाया हुआ था। खेत चारों ओर की लाली से भरे हुए थे। हँसोड़ पक्षी चारों ओर की झाड़ियों में संगीत की धुन छेड़े हुए थे।

पैनी बोला, "ये शहतूतों के लिए जल्दी मचा रहे हैं।"

पहले रूई के बीज गड्ढे में डाल दिये गए। बाद में उन्हें रेतीली जगह पर एक-दूसरे से काफी दूर अलग-अलग गाड़ा जाएगा। जोडी अपने पिता के पीछे पहले दिन जैसे उन चमकीले बीजों को लेकर बढ़ता रहा। वह नई फसल के लिए उतावला था और अनगिनत प्रश्न पूछता जा रहा था। नाश्ते के कुछ देर बाद से ही फ्लैग ग़ायब हो गया था, परन्तु दोपहर से काफी पहले ही वह फिर इन दोनों के पास उछलता हुआ आ पहुँचा। पैनी से उसे फिर देखा। मुलायम ज़मीन में उसके खुर काफी गहरा निशान छोड़ रहे थे। परन्तु बीज काफी गहरे बोये गए थे इसलिए नुकसान का ख़तरा न था।

पैनी बोला, "तुम्हें न पाकर वह बाहर निकल जाता है।"

"अब तो वह कुत्तों-जैसा हो गया है न, पिताजी? वह भी मेरे साथ वैसे ही बँधा रहना चाहता है जैसे जूलिया आपके साथ!"

"बेटे, तुम उसके बारे में बहुत सोचने लगे हो।"

"निश्चय ही।"

जोडी पिता की ओर आश्चर्य से ताकने लगा।

पैनी बोला, "अच्छा, प्रतीक्षा करो और देखो, क्या होता है?"

जोडी को इस टिप्पणी में कोई विशेषता न लगी और उसने कोई परवाह न की। पौध बोने का काम हफ्ता-भर चलता रहा। मक्की और रूई के बाद मटरों की बारी आई और उनके बाद आलुओं की। घर के पीछे वाला सब्ज़ियों का बगीचा प्याज, सलगम आदि से भर दिया गया। अँधेरे

के दिनों में जड़ों वाली सब्ज़ियाँ ही अधिक बोई जाती थीं। पहली फाल्गुन का दिन पैनी के गठिया के दर्द के कारण चूक गया था और पैनी चाहने पर भी कौलर्ड न बो सका। उसकी इच्छा हुई कि वह उन्हें अब बो डाले। पर क्योंकि पत्तों वाली सब्जियाँ बढ़ते चाँद के दिनों में बोई जाती हैं, इस-लिए उसने हफ्ता-भर प्रतीक्षा करनी उचित समझी। वह हर रोज़ जल्दी ही उठ जाता और देर तक काम करता रहता। वह स्वयं जी तोड़कर काम करता। पौध बोने का काम समाप्त हो गया था, पर तो भी वह सन्तुष्ट न था। वसन्त के काम का जोश उस पर चढ़ा हुआ था। मौसम अनुकूल था और साल भर की कमाई इसी समय के नतीजों पर आश्रित थी। वह सोते से दोनों बड़ी-बड़ी बाल्टियाँ भरकर अनेक बार लाता और तम्बाकू और सब्ज़ियों के बगीचे में उन्हें उँड़ेलता।

बक से एक ठूँठ उखाड़ने से बच गया था। यह रूई वाली ज़मीन में था। पैनी ने उसे खोदा और चारों ओर से छीला। तब उसने इसे जंज़ीरों से जकड़ दिया और बूढ़े घोड़े को जोतकर इसे खींचने लगा। घोड़ा थक गया और उस पर ज़ोर पड़ा। उसकी साँस तेज़ी से चलने लगी। पैनी ने एक रस्सी ठूँठ पर पटकी और घोड़े को जल्दी करने के लिए कहा। वह खुद भी उसके साथ खींचने लगा। जोडी ने देखा कि उसके पिता का चेहरा सफेद पड़ गया। पैनी ने अपनी जाँघें थाम लीं और घुटनों के बल बैठ गया। जोडी उसकी ओर दौड़ा।

पैनी बोला, "सब ठीक है। अभी कुछ देर में ठीक हो जाएगा। मेरा अनुमान है कि कुछ खिचाव पड़ गया है।"

दर्द से बेचैन होकर वह ज़मीन पर पड़ गया और बोला, "मैं ठीक हो जाऊँगा। सीज़र को खड़ा कर दो...रुको...मेरे हाथ को सहारा दो...मैं उस पर चढ़ूँगा।"

दर्द के कारण वह दुहरा हो गया था और सीधा नहीं हो सकता था। जोडी ने सहारा देकर उसे ठूँठ पर चढ़ाया और वहाँ से वह घोड़े की पीठ पर चढ़ आया। वह सामने को झुका और अपना सिर घोड़े की गर्दन पर रखकर, उसकी सटाओं को पकड़कर, बैठ गया। जोडी ने घोड़े की जंज़ीरें खोल दीं और उसे घर की ओर जाने के लिए खेतों से बाहर लाकर आँगन

में छोड़ दिया। पैनी न उतरा। यहाँ भी जोडी ने एक कुर्सी निकाली ताकि वह खड़ा हो सके और आसानी से उतर सके। पैनी फिसलकर कुर्सी पर आया और वहाँ से ज़मीन पर उतरा। वह धीरे-धीरे घर में घुसा। रसोई की मेज़ से उसकी पत्नी अपना काम छोड़कर आई। उसके हाथ में पकड़ा हुआ बर्तन नीचे गिर पड़ा।

वह बोली, "मुझे पता था। तुमने खुद को चोट पहुँचाई। तुम काम छोड़ना नहीं जानते!"

वह अपने बिस्तरे पर पहुँचा और मुँह नीचे करके पड़ गया। वह पीछे-पीछे आई और उसका मुँह ऊपर करके उसके नीचे उसने एक तकिया लगा दिया। उसके जूते खोलकर एक रजाई उस पर ओढ़ा दी। पैनी ने अपनी टाँगें आराम के साथ सीधी कीं और आँखें बन्द कर लीं।

वह बोला, "बहुत अच्छा है, ओरी! बिलकुल ठीक है। मैं कुछ देर में ठीक हो जाऊँगा। शायद कोई खिंचाव आ गया है।"

31

पैनी ठीक न हुआ। वह उसी तरह बिना शिकायत के कष्ट में पड़ा रहा। माँ ने चाहा कि जोडी डाक्टर को जाकर बुला लाए, पर पैनी ने न जाने दिया।

वह बोला, "मैंने पहले ही उसका देना है। मैं यों ही ठीक हो जाऊँगा।"

"शायद अन्दर कुछ फट गया है?"

"तब भी, ठीक हो जाएगा!"

पत्नी ने शिकायत की, "काश! तुम्हें थोड़ा भी ख़याल होता! पर तुम तो हमेशा अपनी ज़िद पर अड़ जाते हो, जैसे तुम भी फौरेस्टरों जैसे बड़े हो!"

"ओरी, मेरे चाचा माइल्स बहुत बड़े शरीर के थे और उन्हें भी फटाव आ गया था। वह ऐसे ही ठीक हो गए थे। अब तुम चुप रहो, ओरी!"

"मैं चुप नहीं रहूँगी। मैं चाहती हूँ कि तुम खूब अच्छी तरह पाठ सीखो।"

"मैंने सीख लिया। अब तो चुप रहो!"

जोडी कुछ अशान्त हुआ। पैनी अब भी छोटे मोटे काम करता था। वह जीवन-भर अकेला ही दस आदमियों का काम निबटाने का यत्न करता रहा था और कई बार उसे चोटें सहनी पड़ी थीं। जोडी को याद था कि एक बार एक गिरते पेड़ को पैनी ने किस तरह रोका था और उससे उसके एक कन्धे पर बुरी तरह चोट आई थी। महीनों तक उसने वह बाँह लटकाए रखी, पर वह फिर से पहले जैसा ही ठीक हो गया। पैनी को कोई भी चोट बहुत देर तक नुकसान नहीं पहुँचा सकती थी। साँप भी उसे न मार सका। जोडी को लगा कि धरती की भाँति ही उसका पिता भी मिटने वाला नहीं है, पर उसकी माँ हमेशा डरती रहती थी। वह तो छोटी अँगुली पर चोट आ जाने पर भी इतना ही तूफ़ान मचाती।

पैनी के बिस्तर पर पड़ने के कुछ बाद ही जोडी ने ख़बर दी कि अनाज उग आया है और पौधे बिलकुल ठीक उठ आए हैं।

उसने पूछा, "क्या यह बहुत अच्छा नहीं हुआ?"

पिता का पीला चेहरा तकिये पर से ही चमक पड़ा।

वह बोला, "ऐसे समय मैं अभी बिस्तर में ही पड़ा हूँ। अब तुम्हें ही इसमें हल चलाना होगा।" फिर भौंहें सिकोड़कर वह बोला, "बेटे, तुम्हें अच्छी तरह पता है कि इस समय फ्लैग को खेतों से बहुत बाहर रखना चाहिए।"

"मैं उसे बाहर ही रखूंगा। उसका ध्यान शायद इस ओर है भी नहीं।"

"ठीक है! बहुत अच्छा है! पर उसे धर्म समझकर बाहर ही रखना।"

जोडी का अगला दिन फ्लैग के साथ शिकार पर बीता। वे जूनिपर स्रोत की ओर निकल गए और चार गिलहरियाँ मारकर लाए।

पैनी बोला, "यह हुआ मेरे बेटे का काम! अपने बूढ़े बाप के लिए वह भोजन भी लाने लगा है।"

माँ ने गिलहरियों का पुलाव शाम के खाने के लिए बनाया और बोली, "खाने में ये बहुत अच्छी लगती हैं।"

पैनी बोला, "क्यों नहीं ? इनका माँस बहुत ही मुलायम है। तुम इसे चूम भी सकते हो।"

जोडी और पलैग के लिए सबका प्यार जग पड़ा।

रात में फिर हलकी वर्षा हुई और पैनी के कहने पर वह सुबह खेतों में यह देखने गया कि धान कितना निकला है और कहीं किन्हीं कीड़ों का निशान तो सामने नहीं आया ? वह बाड़ को कूद गया और खेत के दूसरी ओर निकल गया। अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि उसे सूझा कि पहले मक्की के पौधे देखले। पर वे वहाँ बचे ही न थे। वह चक्कर में पड़ गया। आगे गया, वहाँ भी कोई पौध न दिखाई दी। कोने तक उसे कुछ भी न दिखाई दिया। तब खेत के परले किनारे उसने देखा कि ये सब वहाँ बिखरे पड़े थे।

वह लौटा और उसने क्यारियों में देखा। फ्लैग के खुरों के तेज़ निशान सब जगह फैले हुए थे। उसने सुबह ही सारी पौध ऐसे धीमे-धीमे उखाड़ी थी, जैसे किसी ने हाथ से उखाड़ी हो। जोडी डर गया। वह खेत में फिर घूमने लगा। शायद कहीं कोई जादू हो जाए और मक्का उसके पीठ पीछे शायद फिर उग पड़े।

उसने सोचा, 'शायद यह एक स्वप्न ही था कि फ्लैग ने सारी खेती खा ली थी। जब वह जगेगा तो वह इसे बढ़ी हुई, हरी और मुलायम पाएगा। उसने अपनी बाँह में एक छड़ी चुभोई, ताकि वह अनुभव कर सके कि वह जाग रहा है। अपने भारी कदमों के साथ वह धीमे-धीमे घर लौटा। रसोई में ही चुपचाप बैठ गया और पिता के पास भी न गया। पैनी ने उसे बुलाया तब वह उसके कमरे में पहुँचा।

पैनी बोला, "हाँ बेटे, फसल कैसी हुई ?"

"रूई निकल आई है और वह ठीक है। मटर भी निकल रहे हैं।"

परन्तु उसका उत्साह झूठा था। उसने अपने नंगे पंजे फैलाए और उन्हें हिलाने लगा। वह उन्हीं में खो गया, जैसे उनका काम देखने में उसे आनन्द आ रहा हो।

पैनी ने पूछा, "जोडी, मक्की का क्या हुआ ?"

उसके दिल की धड़कन किसी भिनभिनाने वाले पक्षी से भी तेज़ हो गई। उसने जैसे थूक निगला और हिम्मत करके वह बोला, "कोई इसे खा गया है।"

पैनी चुप होकर खड़ा रहा। उसकी चुप्पी भी एक स्वप्न-सी थी। अन्त में वह बोला, "क्या तुम नहीं बता सकते कि किसने किया है ?"

उसने पिता का ओर देखा। उसकी आँखें निराश और क्षमा माँगती-सी थीं।

पैनी बोला, "कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी माँ से देखने के लिए कहे देता हूँ, वह बता देगी।"

"माँ को मत भेजिए!"

"पर उसे जानना ही होगा।"

"उसे मत भेजिए!"

"तो यह फ्लैग ने किया है न ?"

जोडी के होंठ काँपे और वह बोला, "हाँ, मेरा यही अनुमान है।"

पैनी ने उसकी ओर बड़ी करुणा से भरकर देखा।

वह बोला, "बेटे, मुझे बहुत दुख है। मैंने पहले ही लगभग यह अनुमान कर लिया था। जाओ, थोड़ी देर खेलो और अपनी माँ को इधर भेज दो।"

"पिताजी, उन्हें मत बताइए! कृपा करके उन्हें मत बताइए!"

"उन्हें तो बताना ही होगा। अब तुम जाओ! जो भी तुम्हारे लिए मैं भली से भली बात सोच सकता हूँ, करूँगा।"

वह रसोई की ओर लड़खड़ाता-सा गया और माँ को उसने कहा, "पिता जी आपको बुलाते हैं।"

तब वह फ्लैग को बुलाकर घर से बाहर निकल गया। वह काँप रहा था। फ्लैग पीछे के जंगल से निकलकर सामने आ गया। जोडी उसकी पीठ पर अपनी बाँह रखे सड़क पर निकल आया। उसके अपराधों के समय वह उस पर हर रोज़ से भी अधिक प्यार करने लगता था। फ्लैग ने कुलाँचें भरीं और उसे भी उछलने के लिए निमन्त्रण दिया, पर उसका दिल खेलने में न था। वह सोते तक बहुत धीमे-धीमे बढ़ता गया। इसका पानी और

चारों ओर की जगह इतनी प्यारी थी जैसे वसन्त के फूलों का कोई बगीचा हो। डौगवुड अभी भी खिल रहा था। उसके अन्तिम फूल सफेद पड़ गए थे। दूसरी ओर नए पीले और हरे फूल अखरोट आदि पेड़ों पर निकल आए थे। यहाँ भी उसकी घूमने की इच्छा न हुई। वह फिर घर की ओर मुड़ आया और अन्दर गया। उसकी माँ अब भी पिता से बात कर रही थी। पैनी ने उसे अपने पास बुलाया। उसकी माँ का चेहरा गुस्से में भरा हुआ था। अपनी हार पर वह गुस्सा थी। उसका मुँह बन्द था।

पैनी शान्ति से बोला, "जोडी, हम एक सुलह पर पहुँचे हैं। जो कुछ भी हुआ, बहुत बुरा हुआ, पर हम एक इलाज करने का यत्न कर सकते हैं। मैं यह मान लेता हूँ कि तुम खेत को ठीक करने के लिए अधिक मेहनत करने को तैयार हो।"

"पिताजी, मैं काई भी काम करने को तैयार हूँ और फसल निकलने तक फ्लैग को बन्द रखूँगा।"

"खैर, हमारे पास ऐसे जंगली जीव को बन्द करने के लिए इस धरती पर तो कोई जगह है नहीं। तुम सुन लो! जाओ, मक्का के दाने अनाज भण्डार से ले लो। सबसे अच्छे भुट्टे चुनना। तुम्हारी माँ दाने निकालने में सहायता करेगी। तब जाकर ठीक पहले की ही जगहों पर बोते जाना। जैसे मैंने छेद किए थे, वैसे ही छेद करके उनमें बीज भरते जाना।"

"मैं जानता हूँ, कैसे करना है।"

"जब तुम इसे कर चुको तो कल सवेरे ही सीज़र को गाड़ी में जोतकर पुराने उजाड़ खेत के पास चले जाना। वह फौरेस्टरों की ओर जाने वाले रास्ते पर है, जहाँ से सड़क मुड़ती है। तुम वहाँ से पुरानी बाड़ उखाड़ लेना और वह जंगला गाड़ी पर लाद लाना। बोझ अधिक न हो, क्योंकि उस चढ़ाई पर सीज़र अधिक बोझ न खींच सकेगा। जितने भी जंगले आवश्यक हों, तुम ले आना। यहाँ बाड़ के पास उन जंगलों का ढेर लगा दो। पहला ढेर मक्की के खेत के दक्षिण की ओर लगाना। और, फिर इस घर के आँगन की सीमा पर पूरब की ओर! तब इस बाड़ को खड़ा कर देना। पहले इन दोनों जगहों पर तुम काफी ऊँची बाड़ खड़ी कर लेना। मैं देख रहा हूँ, तम्हारा यह छौना इन्हीं किनारों से बाड़ लाँघता है। तब तुम उसे यहाँ

छोड़कर बाकी बाड़ को बना लेना।"

जोडी को लगा जैसे उसे एक छोटे काले सन्दूक में पहले बन्द किया गया हो और फिर उसका ढँकना उठा दिया गया हो। उसे फिर से सूर्य, प्रकाश और हवा बहती हुई लगने लगी। अब वह स्वतन्त्र था।

पैनी बोला, "जब तुम अपने से भी ऊँची बाड़ बना लो और तब तक अगर मैं खड़ा होने लायक न हो जाऊँ, तो तुम अपनी माँ को बुला लेना। वह सीढ़ियों पर चढ़कर तुम्हारी सहायता कर सकेगी।"

जोडी खुशी में माँ से प्यार करने मुड़ा। वह दुख में अपना एक पाँव धरती पर पटक रही थी। वह उसकी ओर ताकने लगी, पर बोली नहीं। जोडी ने सोचा कि इस समय उसे न छूना ही अधिक अच्छा है। पर उसके चैन को कोई भी बात कम न कर सकी। वह बाहर भागा। फ्लैग बाहर की सड़क के आस-पास चर रहा था।

जोडी ने अपनी बाँह उसके चारों ओर डाल दी और बोला, "माँ अब भी गुस्से में है, पर पिताजी ने तय कर दिया है।"

फ्लैग का मन घास के उन कोमल अंकुरों में लगा हुआ था और वह हाथ से छूटकर फिर आज़ाद हो गया। जोडी सीटी बजाता हुआ अनाज भण्डार तक गया और उसने मक्की में से चुन-चुनकर भुट्टे निकाले, जिनके सबसे बड़े दाने थे। बाकी बचे अनाज में से बहुत सारे भुट्टे इस दुबारा बोने में खप गए। एक बोरी में उन्हें भरकर वह पिछले दरवाज़े में ले आया और बैठकर दाने निकालने लगा। उसकी माँ आई और उसके पास बैठ गई। उसका चेहरा उदास था। उसने भुट्टा उठाया और काम में जुट गई। उसके चेहरे पर घृणा और क्रोध था।

पैनी ने उसे जोडी को झिड़कने से मना किया था, परन्तु अपने मन से बात करने से उसे नहीं रोका था। वह मन-ही-मन बोली, 'इसी के मन को दुखने से बचाते रहो! हुँ! पर सर्दियों के लिए हमारे इन पेटों की रक्षा कौन करेगा?'

जोडी कुछ इस प्रकार से घूमा कि उसकी पीठ माँ की ओर मुड़ गई। वह उसकी उपेक्षा करके अपने साँस को दबाकर गुनगुनाया, "क्या अजब बात है!"

उसने यह गुनगुनाना बन्द कर दिया। यह समय अधीर होने और दलीलें देने का नहीं था। उसकी अंगुलियाँ काम करने लगीं और भुट्टों से दाने गिरने लगे। वह माँ से दूर दाने बोने के लिए जल्दी से जल्दी चले जाना चाहता था। उसने दानों का थैला पीठ पर लटकाया और खेतों की ओर चल पड़ा। दोपहर के भोजन का समय हो चुका था, पर अभी घंटे भर का ही काम निबटा पाया था। खुले खेत में वह गाने और सीटियाँ बजाने में स्वतन्त्र था। एक पक्षी सामने की हरियाली में गा उठा, पता नहीं उससे सुर मिलाने को या उसके मुक़ाबले के लिए। दिन एकदम नीला और सुनहरा था। उसकी अँगुलियों में पकड़े दाने, उसके सामने उन दानों को अपने अन्दर लेने वाली फैली धरती आदि उसे सभी कुछ अच्छा लग रहा था। फ्लैग ने उसे ढूँढ लिया और उसके साथ आ मिला।

जोडी बोला, "तुम अभी अपना उछलना-कूदना पूरा कर लो। अब तुम्हें बन्द कर दूँगा।"

उसने जैसे-तैसे दोपहर का खाना निगला और फिर बीज बोने के काम पर लौट आया। उसने इतनी तेज़ी से काम किया कि अगले दिन सुबह दो घंटे के काम से ही यह सब निबट सकता था। शाम के खाने के बाद वह पैनी के पास बैठा और गिलहरी की तरह लगातार बातें करता रहा। पैनी सदा की भांति गम्भीर बनकर सुनता रहा, परन्तु कभी-कभी उसका उत्तर खाली सा लगता था और उसके विचार कहीं और उलझे हुए-से। माँ भी चुप रही। दोनों समय का भोजन हलका ही रहा। यह मन लगाकर भी नहीं पकाया गया था, मानो माँ ने किले के पीछे से अपना बदला ले लिया हो। रसोई ही उसका किला था। जोडी सांस लेने के लिए रुका। दूर हरियाली में से एक कोयल की आवाज़ सुनाई दी। पैनी का चेहरा खिल उठा।

"जब इसकी पहली आवाज़ सुनाई दे तो मक्की ज़मीन में पड़ जानी चाहिए। हमें अब भी देर नहीं हुई।"

"कल सुबह तक हरेक दाना बो दिया जाएगा।"

"बहुत अच्छा होगा।"

उसने अपनी आँखें बन्द कीं। बहुत तेज़ दर्द भी हो उसके लेटे रहने से

शान्त हो जाता था परन्तु हिलते ही वह दर्द तेज़ हो जाता। गठिया के कारण वह कमज़ोर होता जा रहा था।

वह बोला, "अब जाकर तुम भी सो जाओ और आराम करो।"

जोडी ने वहाँ से उठकर हाथ-पाँव धोए और बिस्तर पर जाकर शान्त मन और थके शरीर से लेट गया। उसे तत्काल ही नींद ने आ घेरा।

सुबह पौ फटने से पहले ही अपनी जिम्मेदारी को अनुभव करके वह उठ पड़ा। बिस्तरे से निकलते ही उसने पोशाक बदल ली।

माँ बोली, "बहुत दुख है कि ऐसी बातों के कारण तुम्हें जल्दी उठना पड़ा।"

उसने सीख लिया था कि किस प्रकार पिछले महीनों में माँ और फ्लैग के बीच में उसका पिता बिना बहस के चुपचाप बात बना लेता था। उसकी माँ को यह बात अधिक खलती, पर थोड़ी ही देर में वह गुस्सा छोड़ देती। उसने जल्दी-जल्दी जी भरकर खाना खाया। उसने कुछ बिस्कुट फ्लैग के लिए अपनी कमीज के अन्दर डाल लिए और अपने काम पर एकदम ही निकल पड़ा। पहले-पहल उसे बीज बोते समय कुछ दिखाई ही न पड़ा, तब उसे पूर्व में अंगूरों के बगीचे के पीछे से सूर्य चढ़ता हुआ दिखाई दिया। उसकी पतली सुनहरी रोशनी में बेल के पत्ते और अंगूर ऐसे लग रहे थे जैसे ट्विंक वैदरबी के बाल हों। उसने अनुभव किया कि चढ़ता और अस्त होता सूर्य उसे आनन्द और दुख की मिली-जुली भावना देता है। चढ़ता सूर्य उसमें एक असभ्य, किन्तु स्वतन्त्र, दुख-सा ला देता है, जबकि अस्त होता सूर्य उसमें अकेलेपन का, किन्तु शान्तिदायक, दुख-सा भर देता है। वह अपनी मस्ती में तब तक सोचता रहा, जब तक उसके नीचे की ज़मीन केसरिया रंग में रंग न गई, और तब पीली न पड़ने लगी। तब उसने अपना काम बहुत उत्साह के साथ आरम्भ कर दिया। फ्लैग भी जंगल से निकलकर उस तक आ गया। शायद उसने रात जंगल में ही बिताई थी। जोडी ने उसे बिस्कुट खिलाए और उसकी नाक को अपने कुरते के अन्दर बिस्कुटों तक ले गया। उसे अपनी नंगी खाल पर उसका गीला और मुलायम स्पर्श बहुत अच्छा लगा।

दाने बोने का काम जल्दी ही समाप्त हो गया। तब वह पशुओं की ओर लौटा। बूढ़ा घोड़ा दक्षिण की ओर चर रहा था। उसने अचरज के साथ

अपना सिर घास से उठाया। जोड़ी ने उसे जोतने के लिए बहुत कम बाँधा था। वह बहुत नम्रता से गाड़ी में बँधने के लिए पीछे खिसक गया। जोडी को अपने अधिकार की बात पसन्द आई। उसने अपनी आवाज़ को ज़बरदस्ती गहरा किया और कुछ अनावश्यक आज्ञाएँ देने लगा। सीज़र नम्रता से हर बात मानने लगा। जोडी ने अपनी जगह पकड़ी और लगामों को सम्भालकर गाड़ी उजाड़ खेत की ओर पश्चिम में चला दी। फ्लैग को इसमें आनन्द आया और आगे-आगे चलने लगा। कभी-कभी वह सड़क के बीचोंबीच शरारत के लिए लेट जाता और तब जोडी को उतरकर उसे चलने के लिए विवश करना पड़ता।

वह बोला, "तुम बहुत शरारती हो। अब तुम किशोर हो गए हो।"

उसने लगाम फटकारी और सीज़र को तेज़ चाल से चलने पर मज़बूर किया। तभी उसे याद आया कि उसे अभी कई चक्कर लगाने होंगे, और तब उसने उस बूढ़े पशु को मामूली चाल पर धीमे-धीमे चलने दिया। खेत पर पहुँचकर उसे लगा कि जंगले को खींचना बहुत आसान काम था। उसको सहारा देने वाले डण्डे आसानी से खींच लिए जाते थे। उसे पहले तो इन्हें गाड़ी पर रखना आसान लगा, पर बाद में उसकी बाहें और पीठ दुखने लगी। उसे आराम के लिए रुकना पड़ा। अधिक बोझे का कोई डर था ही नहीं, क्योंकि जंगले को एक ऊँचाई से अधिक रखा भी नहीं जा सकता था। उसने यत्न किया कि फ्लैग उसके पास ही बैठ जाय, परन्तु तंग जगह देखकर वह नीचे कूद पड़ा और ऊपर न बिठाया जा सका। जोडी ने उसे उठाने का यत्न किया, परन्तु अब वह काफी भारी हो चुका था। वह उसकी अगली टाँगों को ही बड़ी मुश्किल से गाड़ी तक टिका सका। अन्त में यह सब यत्न छोड़कर उसने घर की ओर गाड़ी मोड़ दी। फ्लैग फिर से उछलकर उससे आगे पहुँच गया और उसके पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगा। जोडी ने निश्चय किया कि पहले घर के पास इन सब जंगलों को रख देगा और तब दोनों ओर धीमे-धीमे बारी-बारी से काम करता रहेगा। इस तरह जंगला खतम होने तक वह काफी ऊँची बाड़ बना लेगा। फ्लैग को दोनों जगह से कूदना मुश्किल हो जाएगा।

ढोने और उतारने में उसे आशा से अधिक समय लग गया। बीच में

तो उसे यह निराशाजनक रूप में अन्तहीन काम दीखने लगा था। उसे लगा कि मक्की उसके बाड़ पूरा करने से पहले ही उग आएगी। पर मौसम खुश्क था और मक्की को फूटने में देर लगी। वह हर सुबह बड़ी आशा और डर से पीले अंकुरों को देखता। परन्तु प्रतिदिन उसे चैन मिलती, क्योंकि अभी कुछ भी फूटने नहीं लगा था। वह हर रोज़ ही मुँह-अँधेरे उठ पड़ता और माँ को बिना तंग किए ठण्डा ही नाश्ता खा लेता या नाश्ता खाने से पहले वह एक चक्कर लगा चुकता। रात को भी सूर्य छिपने के काफी देर बाद तक वह काम करता रहता। सूर्य का गुलाबी-पीला-सा प्रकाश मिट जाता और अँधेरा उन जंगलों को भी अपने में समा लेता। अधिक काम करने के कारण उसकी आँखों के नीचे काले गढ़े पड़ गए। वह पूरी नींद भी न ले पाता था। न उसे बाल काटने का समय मिलता। वे उसकी आँखों तक लटकते रहते। शाम के भोजन के बाद आँखों में नींद भरी होने पर भी माँ द्वारा लकड़ी लाने के लिए कहे जाने पर उसने कभी शिकायत नहीं की। हालाँकि उसकी माँ दिन में यह काम आसानी से कर सकती थी।

"मुझे प्रसन्नता है, बेटा, कि तुम इतनी मेहनत कर रहे हो, पर जिसके लिए तुम इतना सोचते हो वह किशोर छौना इस तरह अपने को मारने लायक नहीं।"

जोडी ने विरोध में कहा, "नहीं, मैं अपने को मार नहीं रहा। मुझे तो अपनी शक्ति पता चल रही है। मैं ताकतवर होता जा रहा हूँ।"

पैनी ने उसकी पतली, परन्तु सख्त भुजाओं को देखा। बात सच थी। इस लगातार बोझ उठाने ने उसकी बाँहों, पीठ और कन्धों को मज़बूत कर दिया था।

पैनी बोला, "अगर तुम्हें इससे कुछ सहायता मिले तो मैं अपने जीवन का एक वर्ष तुम्हें देने को तैयार हूँ।"

"मैं इस बाड़ को पूरा कर दूँगा।"

चौथी सुबह उसने फ्लैग वाली दिशा से बाड़ बनाने का निश्चय किया। पर यदि तब तक अंकुर फूट पड़े तो फ्लैग उसे बेखबर न पाएगा। वह उसके पाँव एक पेड़ के साथ बाँध देगा और उसी तरह दिन-रात रोता-पीटता छोड़ देगा। बाड़ पूरी करनी आवश्यक थी। उसने देखा कि काम तेज़ी से

होने लगा। दो ही दिन में उसने दोनों ओर की बाड़ें पाँच फुट तक ऊँची कर दी थीं। माँ ने जब देखा कि उसके अकेले के वश का काम नहीं, तो छठे दिन वह भी पहुँच गई।

वह बोली, "आज मुझे कुछ काम नहीं है। मैं तुम्हें इसे कुछ और ऊँचा करने में सहायता दूँगी।"

जोडी खुशी से फूट पड़ा, "ओह, प्यारी माँ! मेरी प्यारी माँ!"

"अब मुझे कुचल और मार मत डालो! मैंने कभी न सोचा था कि तुम में इतना काम करने की शक्ति है।"

उसने आसानी से यह सब कह दिया। पर, वास्तव में काम कठोर होकर भी इतना भारी नहीं था। दोनों हाथों से हलके जंगले को आसानी से उठाया जा सकता था। इसका उठाना भी आरी चलाने जैसा ही मस्ती-भरा था। उस बेचारी का चेहरा लाल हो गया। उसकी साँस भारी चलने लगी और पसीना आने लगा। परन्तु वह सारे दिन और अगले दिन भी कुछ देर तक हँसती हुई उसके साथ काम पर लगी रही। कोने में काफी जंगले पड़े थे और यह बाड़ काफी ऊँची जा सकती थी। उन्होंने इसे पैनी के कहने के अनुसार दो गज से भी ऊँचा बना दिया ताकि हिरण बाहर रह सके।

पैनी बोला, "अगर यह पूरा बारहसिंगा बन जाय, तो आठ फुट तक भी आसानी से कूद जाएगा।"

उस रात जोडी ने देखा कि अनाज फूटना शुरू हो चुका था। अगली सुबह उसने फ्लैग पर एक रस्सी बाँधनी चाही। उसने एक पाँव से दूसरे पाँव तक रस्सी बाँध दी और बीच में कुछ ढीली जगह खेलने के लिए छोड़ दी। गुस्से में उसने अपनी टाँगें चलाईं और अपने को धरती पर पटक दिया। वह अपने घुटनों पर खड़ा हुआ और इतने ज़ोर से रस्सी तुड़ाने का यत्न करने लगा कि मानो वह अगर खोला न गया तो अपनी टाँगें ही तोड़ लेगा। जोडी ने उसकी रस्सी काटी और उसे जाने दिया। उसी क्षण वह जंगल की ओर भाग गया और सारे दिन न लौटा। जोडी भी बहुत तेज़ी से पश्चिम की बाड़ की ओर लगा रहा। अब उस छौने के लिए वही एक अच्छी जगह कूदने की रह गई थी। दोपहर बाद माँ ने भी उसे दो-तीन घण्टे तक सहायता

दी। उसने सारे जंगले बरत लिए।

दो बार की हलकी-हलकी बारिश ने अंकुरों को बड़ा कर दिया। अब ये एक इंच से भी ऊँचे हो गए थे। एक दिन सुबह जोडी पुराने उजाड़ खेत की ओर अधिक पटरियाँ लेने के लिए जाने ही लगा था कि वह ऊँची नई बाड़ पर चढ़कर खेत के पार तक देखने लगा। उसकी निगाह फ्लैग पर जा पहुँची। वह उत्तर की हरियाली की ओर चर रहा था। वह एकदम कूदा और माँ को बुला लाया।

"माँ, क्या आप जंगले लाने में मेरी सहायता करेंगी? मुझे बहुत जल्दी है। फ्लैग ने उत्तर की ओर फिर गड़बड़ कर दी है।"

वह उसके साथ जल्दी-जल्दी आई और कुछ ऊपर चढ़कर झाँकने लगी।

वह बोली, "उत्तर नहीं, वह ठीक यहीं से···सबसे ऊँचे कोने से कूदा है।"

उसने माँ के इशारे की ओर देखा। बहुत गहरे निशान बाड़ की ओर बढ़े हुए थे और फिर खेत में भी गड़े हुए थे।

माँ बोली, "और उसने यह फसल भी नष्ट कर दी।"

जोडी हैरान रह गया। इस बार अंकुर फिर जड़ से उखाड़े गए थे। क्यारियाँ उजाड़ पड़ी थीं। हर कतार के बीच में छौने के पाँव के चिह्न थे।

वह बोला, "माँ, वह बहुत दूर नहीं गया। देखो माँ! अंकुर अब तक हैं, वह परे! उसने बहुत थोड़ी दूर तक ही खाया है।"

"हाँ, और इसे भी उससे बचा लेने का क्या उपाय है?"

वह ज़मीन पर कूद पड़ी और दुखी होकर घर की ओर बढ़ी।

बोली, "बस, अब सब खतम हुआ। पहले झुककर मैंने ग़लती की।"

जोडी बाड़ पर चिपटा रहा। वह सुन्न था। न वह सोच सकता था और न कुछ अनुभव कर सकता था। फ्लैग ने उसे सूँघा, अपना सिर उठाया और उसकी ओर उछलता हुआ आ गया। जोडी आँगन की ओर उतर पड़ा। वह उसे देखना भी नहीं चाहता था। उसके खड़े ही खड़े फ्लैग ने इतनी आसानी से वह बाड़ कूदकर पार की, जैसे कोई पक्षी उड़ रहा हो।

जोडी ने अपनी पीठ उसकी ओर कर ली और घर में चला गया। वह अपने कमरे में गया और बिस्तर पर अपना मुँह तकिए में छिपाकर पड़ रहा। वह पिता की आवाज़ सुनने को तैयार था। माता और पिता के बीच बात बहुत देर न चली। मुसीबत का सामना करने को वह तैयार था। वह तो उससे भी बड़ी किसी मुसीबत के लिए तैयार था। परन्तु वह किसी अनहोनी बात को नहीं सह सकता था। वह अपने पिता के मुख से ऐसा सुनने की आशा न करता था।

पैनी ने कहा, "जोडी, सब सम्भव बात कर ली गई है। मुझे दुख है। मैं तुम्हें नहीं समझा सकता कि मैं कितना दुखी हूँ। परन्तु हम अपनी साल-भर की फ़सलें बरबाद भी नहीं कर सकते। हम सब भूखे नहीं रह सकते। जाओ, इसे जंगल में अपने साथ ले जाओ और पेड़ से बाँधकर गोली मार दो।"

32

जोडी फ्लैग के साथ पश्चिम की ओर निकल गया। उसके पास पैनी की बन्दूक थी। कन्धे पर बन्दूक रखे वह बढ़ रहा था। उसका दिल धड़कता, रुकता और फिर धड़कने लगता। उसकी साँस रुकने-सी लगी।

वह अपने से ही बोल पड़ा, 'यह मैं नहीं कर सकूँगा, क़तई नहीं।'

फ्लैग ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से उसकी ओर देखा और तब सड़क के किनारे की घास की ओर अपना सिर झुका लिया। जोडी धीरे-धीरे चलने लगा। वह मन-ही-मन बुदबुदाया, 'नहीं, बिलकुल नहीं, मैं नहीं! वे मुझे मार डालें, लेकिन मैं इसे नहीं मारूँगा! नहीं मारूँगा!'

वह माता और पिता से ख़यालों ही ख़यालों में बातें करने लगा। उसने उन दोनों को बताया कि वह उनसे घृणा करता था। उसकी माँ बौखलाई, पर पिता चुप रहा। उसकी माँ ने उसे अखरोट की छड़ी से पीटना शुरू किया। जब तक उसके पाँव से खून न बहने लगा, वह पीटती रही। उसने उसका हाथ काट लिया और उसने फिर उस पर छड़ी बरसाई। उसने

उसके गिट्टों पर चोट मारी और उसने उसे पीटते हुए कोने में धकेल दिया। उसने अपना सिर फर्श से भी उठाया और कहा, 'तुम मुझे विवश नहीं कर सकते, मैं इसे नहीं मारूँगा।'

वह मन-ही-मन उनसे लड़ता रहा, जब तक उसका मन थक न गया। वह उजाड़ खेत के पास रुक गया। वहाँ जंगले का थोड़ा-सा हिस्सा पड़ा हुआ था, जिसे वह अब तक नहीं ले जा सका था। वहीं वह एक चीनीबेरी के पेड़ के नीचे घास पर लेट गया और तब तक रोता रहा जब तक उसके आँसू सूख न गए। फ्लैग उसे अपनी नाक छुआता और छेड़ता रहा। वह उसी तरह साँसें लेता पड़ा रहा।

वह बोला, "नहीं, मैं नहीं मार सकता।"

वह खड़ा हुआ, पर उसका सिर चकरा रहा था। वह वृक्ष का तना पकड़कर झुका। चीनीबेरी का यह पेड़ पूरा खिला हुआ था। मक्खियाँ इस पर भिनभिना रही थीं और इसकी सुगन्ध चारों ओर की वसन्ती हवा में मिलकर फैल रही थी। उसे इतनी देर न रो सकने के लिए अपने पर शर्म आई पर, अब रोने-चिल्लाने का समय कहाँ था? उसे सोचना होगा और अपना रास्ता निकालना होगा, वैसे ही जैसे पैनी मुसीबत आने पर रास्ता खोज निकालता था। पहले-पहल उसके विचार उलझ गए। उसने सोचा कि वह एक घेरा बनाएगा। यह घेरा दस फुट ऊँचा होगा। वहाँ वह अखरोट आदि फल, घास और गिलास आदि दूसरे फलों को उसके खाने के लिए अन्दर डाल देगा। परन्तु घेरे में बन्द पशु के लिए उसे सारे समय जंगल में घूमना होगा। उसका पिता बिस्तर पर बीमार पड़ा है। खेतों का भी ध्यान उसे ही रखना होगा। उसके अतिरिक्त और कौन था!

उसे ओलिवर का ध्यान आया, शायद वह आकर उसकी सहायता, पैनी के अच्छा होने तक, करता; परन्तु वह तो अब बोस्टन और वहाँ से भी चीनी समुद्र तक चला गया है। वह जोडी पर आ पड़ने वाले दुर्भाग्य से दूर जा चुका है। उसे फौरेस्टरों का ध्यान आया। परन्तु उसे दुख हुआ कि वे अब उसके परिवार के शत्रु थे। बक उसकी सहायता करता, परन्तु अब वह भी क्या कर सकता था? उसके दिमाग़ में अचानक ही एक बात आई। उसे लगा कि अगर उसे यह विश्वास रहे कि यह फ्लैग जीवित है तो

वह इसकी दूरी को भी सह लेगा। वह सोचेगा कि वह जीवित और शरारती है। अब भी अपनी पूँछ उठाकर इधर-उधर दौड़ता फिरता होगा। उसने सोचा कि बक के पास जाकर उसकी सहायता की भीख माँगेगा। उसे फौडरविंग की याद तब तक दिलाएगा जब तक उसका गला ही न भर आए। तब वह फ्लैग को गाड़ी में, भालू के बच्चों की ही तरह, जैक्सनविले ले जाने की बात कहेगा। वहाँ फ्लैग को वे लोग खरीदकर एक खुले पार्क में रख देंगे, ताकि लोग उसे देख सकें। वह वहाँ खूब घूमेगा और उसे खूब खुराक मिलेगी। उसे वहाँ हिरणी भी मिलेगी और हर कोई उसकी प्रशंसा करेगा। तब जोडी भी अपनी ही रुपया कमाने वाली फसलें उगाकर पैसा इकट्ठा करेगा और साल में एक बार फ्लैग को देखने जाया करेगा। वह अपना रुपया बचाकर एक अपनी ही जगह खरीदेगा और फ्लैग को फिर वापस खरीदकर साथ रहने लगेगा।

उसमें उत्साह दौड़ गया। खेत से वह फौरेस्टरों की सड़क की ओर तेज़ी से मुड़ा। उसका गला सूख चुका था। उसकी आँखें सूजी हुई थीं और आँसू बह रहे थे। उसकी आशा ने उसे ताज़गी दी और वह थोड़ी देर में ही फौरे-स्टरों की सनावरों के नीचे की पगडण्डी पर पहुँचते ही स्वस्थ हो उठा। वह घर तक जाकर सीढ़ियों पर चढ़ गया और खुले दरवाज़े को थपथपाकर अन्दर बढ़ आया। कमरे में केवल माता-पिता ही बैठे थे। वे अपनी कुर्सियों पर वैसे ही बैठे रहे।

उसने हाँफते हुए कहा, "कहिए, क्या हाल है? बक कहाँ है?"

पिता ने अपना चेहरा धीरे से घुमाया और कहा, "तुम्हें तो यहाँ आए बहुत देर हो चुकी है?"

"कृपया बताइए कि बक कहाँ है?"

"बक? वे सारे ही यहाँ से घोड़ों का व्यापार करने कैन्टुकी चले गए हैं।"

"इस खेती के समय में?"

"अगर खेती का समय ही व्यापार के लिए अच्छा हो, तो वे हल चलाने की बजाय व्यापार करना अधिक पसन्द करेंगे। उन्होंने सोचा कि वे व्यापार के द्वारा अनाज खरीदने लायक काफ़ी रुपया कमा ही लेंगे। यह बात ठीक

भी है।" पिता ने यह कहकर एक ओर थूक दिया।

"क्या वे सभी जा चुके हैं?"

"हाँ, सभी। पैक और गैबी बैसाख में वापस आएँगे।"

माँ बोली, "यह भी औरत का सौभाग्य ही है कि इतने सारे बच्चों को जन्म दे, उन्हें पाले और तब वे सभी एक साथ निकल भागें। मैं तो कहूँगी कि उन्होंने सब प्रकार का भोजन और लकड़ी यहाँ जमा कर दी है। हमें बैसाख में उनमें से किसी के लौटने से पहले किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं है।"

बैसाख का नाम सुनते ही वह दरवाज़े की ओर निराशा से बढ़ा।

माँ ने पीछे से कहा, "बेटा, आओ, हमारे साथ बैठो। मुझे तुम्हारे लिए खाना पकाकर खुशी होगी। तुम्हारे लिए गोंद वाला हलुवा बनाऊँगी। तुम और फौडरविंग सदा ही मेरे बनाये हुए ऐसे हलुवे को पसन्द करते थे।"

वह बोला, "धन्यवाद! मुझे जाना ही है।"

वह लौट पड़ा, पर निराशा में बोल भी पड़ा, "आप तब क्या करते, यदि आपके पास साल-भर का कोई पशु होता, वह आपकी फ़सल को खा जाता, आप उसे किसी भी प्रकार से दूर न रख सकते और आपके पिता उसे गोली मार देने को कहते?"

उन्होंने उसे देखा। माँ कुछ हिली।

पिता बोले, "मैं उसे गोली मार देता।"

उसे लगा कि उसने शायद बात साफ़ नहीं की।

वह फिर बोला, "अगर यह आप ही का प्यारा पशु होता, जैसे आप फौडरविंग को प्यार करते थे।"

पिता बोले, "अनाज से प्यार का क्या सम्बन्ध? ऐसी कोई चीज़ नहीं बर्दाश्त की जा सकती जो फसलों को खा डाले? खासकर जब तक तुम्हारे पास ऐसे बच्चे ही न हों, जो मेरे बेटों की तरह किसी और तरीके से रुपया पैदा कर सकते हों!"

माँ ने पूछा, "क्या यह बात उसी छौने के बारे में है, जो तुम फौडरविंग के पास पिछली गर्मियों में नाम रखाने के लिए लाए थे?"

"हाँ, यह वही है। क्या आप इसे नहीं ले सकते ? फौडरविंग उसे ले लेता।"

"हमारे पास तुमसे ज़्यादा अच्छा उपाय उसे रखने का नहीं है। वह यहाँ नहीं रुकेगा। साल-भर के हिरण के लिए चार मील का रास्ता होता ही क्या है ?"

वे भी उसके लिए पत्थर की दीवार सिद्ध हुए। उसने उनसे विदा ली और चल पड़ा।

उन बड़े डीलडौल वाले भाइयों और उनके घोड़ों के बिना फौरेस्टरों का यह खेत उजाड़-सा दीख रहा था। प्रायः सभी कुत्तों को वे अपने साथ ले गए थे। केवल एक जोड़ा ही पीछे रह गया था, जिसे घर के एक ओर बाँध दिया गया था। वहाँ वे अपने खुजली वाले शरीर को ही खरोंच रहे थे। अब वह बाहर आने के लिए फिर से खुश था।

वह जैक्सनविले तक फ्लैग को लेकर खुद जाएगा। उसने देखा कि कहीं कुछ उसके गले पर बाँधने को मिल जाय, ताकि वह छूटकर घर की ओर न भाग निकले। बड़ी कठिनाई से उसने अंगूर की एक बेल अपने चाकू से काटी। उसने काफी सारे घेरे उसकी गर्दन पर दिए और उत्तर-पूर्व की ओर निकल पड़ा। वह हौपकिन्स मैदान के आस-पास पहुँचा। यहाँ से सड़क फोर्टगेट्स की ओर निकल गई थी। इसी पर कभी वह और पैनी फौरेस्टरों से मिले थे। पहले तो इस बन्धन में फ्लैग बढ़ता रहा, परन्तु तब वह अधीर होकर इससे छूटने लगा।

जोडी बोला, "तुम बड़े होकर इतने उद्दण्ड क्यों बनते जा रहे हो ?"

वह तंग आ गया और फ्लैग को चलने के लिए न मना सका। अन्त में उसने वह बेल खोल दी और उसे छोड़ दिया। अब फ्लैग उसकी आँखों की पहुँच में रहकर भी खुश था। दोपहर बाद जोडी को थकान और भूख अनुभव हुई। बिना नाश्ता किए ही वह घर से निकल पड़ा था। उसने केवल निकल जाना ही चाहा था। उसने सड़क के किनारे के झाड़ी के फलों को खाना चाहा, पर अभी कोई फल तैयार न थे। शहतूत अभी फूले भी न थे। फ्लैग की तरह ही उसने भी कुछ पत्ते चबाने चाहे। परन्तु उसे इससे भूख और

भी बढ़ती नज़र आई। उसके पाँव जवाब दे गए और वह धूप में ही सुस्ताने के लिए लेट गया। उसने फ्लैग को भी अपने पास लिटाना चाहा। भूख, थकान और तेज़ धूप के कारण वह बहुत गहरी नींद सो गया। जब वह जागा तो फ्लैग वहाँ नहीं था। उसने निशानों का पीछा किया। वे जंगल में से होकर घर की ओर सड़क पर बढ़ते गए।

उसका पीछा करने के अलावा चारा ही क्या था ? अधिक सोचने की उसमें हिम्मत न थी। अँधेरा होने के बाद वह अपनी ज़मीन पर पहुँचा। रसोई में एक बत्ती जल रही थी। कुत्ते उस तक आए। उसने उन्हें प्यार करके चुप कराया। वह चुपचाप ही खिसककर पास तक आया और अन्दर झाँका। शाम का खाना समाप्त हो चुका था। मोमबत्ती की रोशनी में बैठी उसकी माँ कुछ टुकड़ों को सी रही थी। वह अभी अन्दर जाने या न जाने के विषय में सोच ही रहा था कि फ्लैग आँगन में उछलता-कूदता घुस आया। उसने अपनी माँ को सिर उठाकर सुनते हुए देखा।

वह जल्दी ही धुआँघर के पीछे खिसक गया और उसने बहुत धीमी आवाज़ में फ्लैग को वहाँ बुला लिया। वह वहाँ पहुँच गया। एक कोने में वह बैठ गया। उसकी माँ रसोई के दरवाज़े पर आई और उसे खोल गई। हलकी-सी एक रोशनी मिट्टी के पार तक चली गई। दरवाज़ा फिर बन्द हो गया। वह रसोई में रोशनी के बहुत देर बाद तक प्रतीक्षा करता रहा और उसने माँ के सो जाने की प्रतीक्षा की। वह धीरे-धीरे धुआँघर में घुसा और उसने कुछ बचा-खुचा धुआँ लगा भालू का माँस पा लिया। उसने इसमें से कुछ हिस्सा काटा। यह सख्त और सूखा हुआ था। परन्तु वह इसे भी चबा गया। उसने सोचा कि फ्लैग ने जंगल में कुछ कलियाँ और अंकुर आदि खा लिए होंगे। वह उसे भूखा नहीं देख सकता था। वह अनाज-भण्डार तक गया और दो भुट्टे निकालकर उनके दाने उसे देने लगा। उसने स्वयं भी कुछ दाने खाए। फिर उसे रसोई में पड़े ठण्डे और बासी खाने की याद आई, पर वहाँ जाने का उसका साहस न हुआ। अब वह अपने घर में ही अपने को चोर और अजनबी अनुभव करने लगा था। उसने सोचा कि शायद इसी तरह चीते, बनबिलाव और दूसरे सभी जानवर दूसरों के खेतों की ओर खाली पेट और बड़ी-बड़ी आँखों से देखते हैं। उसने पशुशाला में

कुछ दलदल की सूखी घास लेकर एक बिस्तरा-सा बनाया और फ्लैग के साथ वहीं लेट गया। यह गर्म न था। रात का जाड़ा काफी तेज़ था।

सूरज निकलने के बाद जब वह जागा तो उसकी दशा बहुत अच्छी न थी। फ्लैग उसके पास न था। वह लाचार होकर अनमना-सा घर की ओर गया। दरवाज़े पर ही उसे उसकी माँ की गुस्से से भरी हुई आवाज़ सुनाई दी। उसने धुआँघर की दीवार के साथ टिकाई हुई बन्दूक को खोज लिया था। उसने फ्लैग को भी देख लिया था और उसने यह भी देख लिया था कि बढ़ते हुए छौने ने मुँह-अँधेरे ही काफी समय तक केवल मक्का ही नहीं, बल्कि मटरों के भी बड़े भारी खेत को साफ कर दिया था। वह बहुत निराश होकर उसके गुस्से का सामना करने के लिए बढ़ा। वह अपना सिर नीचे किए खड़ा रहा। उसकी माँ ने उसे बहुत सख्ती से डाँटा-फटकारा।

अन्त में वह बोली, "जाओ, अपने पिताजी के पास जाओ। वह मुझसे पहली बार सहमत हुए हैं।"

वह सोने के कमरे में गया। उसके पिता का चेहरा उतरा हुआ था।

पैनी ने बहुत सभ्यता से कहा, "मैंने जो कुछ कहा, तुमने क्यों नहीं किया?"

"पिताजी, मैं नहीं कर सका। मैं कर नहीं सकता!"

पैनी अपने तकिए पर फिर से गिर पड़ा।

वह बोला, "बेटे, मेरे और पास आ जाओ। तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे छोटे हिरण को बचाने के लिए सब कुछ करके हार गया हूँ। मैं उसे तुम्हारे लिए बचाना चाहता था।"

"हाँ, जी!"

"तुम जानते हो, हमारा जीवन इस फसल पर ही निर्भर है।"

"हाँ, जी!"

"तुम यह भी जानते हो कि ऐसे जंगली किशोर को दूर रखने और फसलें बचाने का कोई भी तरीका संसार में नहीं है।"

"हाँ, जी!"

"तब तुमने उचित कार्य क्यों न किया?"

"मैं कर नहीं सकता!"

पैनी चुप होकर पड़ गया। फिर बोला, "ज़रा अपनी माँ को इधर आने को कह दो और अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बन्द कर लो।"

"अच्छा जी !"

इन आज्ञाओं को मानने में भी एक सुख था।

"पिताजी कहते हैं कि आप उनके पास चली जायँ।"

वह अपने कमरे में गया और दरवाज़ा बन्द कर लिया। बिस्तरे के एक ओर बैठकर वह अपने हाथ मसलने लगा। उसे धीमी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। फिर उसे किसी के क़दम चलते सुनाई दिए और तब गोली की एक आवाज़ आई। वह कमरे से रसोई के खुले दरवाज़े की ओर भागा। उसकी माँ छज्जे पर खड़ी थी। उसके हाथ में बन्दूक थी और उसमें से धुआँ निकल रहा था। सामने बाड़ के पास तड़पता हुआ फ्लैग पड़ा था।

वह बोली, "मैं किसी प्राणी को मारना नहीं चाहती। मैं सीधा मार भी नहीं सकती। यह बात तुम भी अच्छी तरह जानते हो।"

जोडी फ्लैग तक दौड़कर पहुँचा। वह अपने तीनों अच्छे पैरों पर उठा और लड़खड़ाता-सा भागने लगा, जैसे जोडी स्वयं उसका दुश्मन हो। उसके शरीर का अगला हिस्सा फट गया था और वहाँ से खून बह रहा था। पैनी बिस्तर से निकलकर घिसटता हुआ आया। वह दरवाज़े पर एक घुटने के बल बैठ गया और सहायता के लिए उसने दरवाज़ा पकड़ लिया।

वह बोला, "अगर मैं कर सकता तो यह काम मैं स्वयं करता। मैं खड़ा भी नहीं हो सकता। जोडी, जाओ ! और उसे मार डालो। तुम्हें उसे इस दुख से छुटकारा दिलाना होगा।"

जोडी पीछे की ओर लौटा और उसने माँ से बन्दूक छीन ली। वह चिल्लाया, "तुमने यह जान-बूझकर किया है। तुम उससे सदा नफ़रत करती थीं।"

वह अपने पिता की ओर मुड़ा, "तुमने मेरे से दग़ा की। तुमने ही उसे मारने को कहा।"

अब वह फ्लैग के पीछे दौड़ा और दौड़ते-दौड़ते बड़बड़ाता गया।

पैनी बोला, "ओरी, मुझे सहायता दो। मैं उठ नहीं सकता···"

फ्लैग दर्द और डर के कारण तीन पैरों पर दौड़ता रहा। वह दो

बार गिरा और जोडी ने उसे उठाकर खड़ा किया।

वह बोला, "यह मैं हूँ, फ्लैग, यह मैं हूँ।"

फ्लैग अपने पैरों पर खड़ा हुआ और फिर दौड़ पड़ा। खून एक धार के रूप में बह रहा था। हिरण सोते के किनारे तक पहुँच गया। एक क्षण के लिए वह काँपा और गिर पड़ा। फिर एक तरफ़ लुढ़क गया। जोडी उसके पीछे भागा। अब फ्लैग जोहड़ के किनारे पड़ा था। उसकी बड़ी-बड़ी चमकीली आँखें खुली हुई थीं। अचरज में डूबकर वे जोडी की ओर देख रही थीं। जोडी ने उस बन्दूक की दुनाली को उसकी गर्दन के पीछे रखा और घोड़ा दबा दिया। फ्लैग एक क्षण के लिए काँपा और तब ठण्डा हो गया।

जोडी ने बन्दूक एक ओर पटक दी और पेट के बल लेट गया। वह काँपने लगा और उसने उलटी की। अपने नाखूनों के बल पर वह ज़मीन से चिपटने लगा। कभी अपनी मुट्ठियाँ ज़मीन पर पटकने लगता। उसके चारों ओर का सोता हिल उठा। बहुत दूर से आने वाला शोर उस तक एक गुनगुनाहट के रूप में पहुँच रहा था। वह धीरे-धीरे एक ऐसे काले अँधेरे में डूब गया, जैसे कोई काला जोहड़ हो।

33

वहाँ से जोडी उत्तर की ओर फोर्टगेट्स सड़क पर चला गया। उसकी चाल जकड़ाहट से भर गई थी, मानो उसके पैरों के अलावा और कोई अंग जीवित ही न हो। उसने मरे हुए छौने को बिना देखे वैसे ही छोड़ दिया। उसके लिए केवल भाग जाना ही महत्त्व रखता था। जाने के लिए कोई जगह निश्चित न थी। पर उस बात का भी कोई महत्त्व न था। फोर्टगेट्स के बाद वह किश्ती से नदी पार करेगा। अब उसका इरादा साफ़ होने लगा। वह जैक्सनविले की ओर जाएगा। वहाँ से बोस्टन की ओर जाएगा। वहाँ ओलिवर को ढूँढकर उसके साथ समुद्र पर निकल जाएगा। इस सब धोखेधड़ी को वह ओलिवर की भाँति पीछे छोड़ जाएगा।

जैक्सनविले और बोस्टन जाने का सीधा तरीका स्टीमर से था। इसके लिए उसे सबसे पहले नदी पर पहुँचना ज़रूरी था। उसके लिए एक नाव चाहिए थी। उसे नेली गिनराइट की वह छोटी लकड़ी की नाव याद आई, जिसमें पिता-पुत्र ने नमकीन सोते वाली धारा को बूढ़े रीछ के शिकार

के समय पार किया था। पिता की याद आते ही उसके सुन्न शरीर पर तेज़ चाकू चल गया। उसके बाद वह फिर एक बार सुस्त हो गया। उसने सोचा, वह अपनी कमीज़ फाड़कर उस नाव के छेदों को बन्द कर देगा और बाँस के सहारे खेता हुआ उस नाव को जार्ज झील तक ले जाएगा। वहाँ से उत्तर की ओर बड़ी नदी तक ले जाएगा। इसी राह में कहीं वह गुज़रते हुए स्टीमर को रोकेगा और उस पर बोस्टन तक पहुँच जाएगा। ओलिवर उसका किराया दे देगा, और वह वहाँ उतर जाएगा। अगर वह ओलिवर को ढूँढ न सका तो वे लोग उसे जेल में बन्द कर देंगे। पर अब उसे इस बात की भी परवाह न थी।

वह नमकीन सोते की ओर मुड़ा। वह प्यासा था और उसने नीचे उतरकर फूटते हुए सोते में से पानी पिया। एक समुद्री मछली पास ही उछली और नीले केकड़े इधर-उधर मचल पड़े। झरने से कुछ नीचे एक मछियारा बैठा हुआ था। जोडी ने किनारे-किनारे जाकर उसे पुकारा।

वह बोला, "क्या मैं तुम्हारे साथ अपनी नाव तक पहुँच सकता हूँ?"

"हाँ, निश्चय ही।"

मछियारा अपनी नाव को किनारे ले आया। वह उसमें बैठ गया।

उसने पूछा, "तुम यहीं कहीं रहते हो?"

जोडी ने सिर हिला दिया।

मछियारे ने फिर पूछा, "तुम्हारी नाव कहाँ है?"

"नेली गिनराइट की ज़मीन के पास।"

"तुम उसके सम्बन्धी हो?"

उसने सिर हिला दिया। एक अजनबी से आने वाले प्रश्न उसके ज़ख्मों पर नमक छिड़कते से लगे। अजनबी उसकी ओर उत्सुकता से देखता रहा और तब खेने में जुट पड़ा। उसकी छोटी-सी नाव तेज़ धारा में आसानी से बहने लगी।

ऊपर की ओर धारा काफी चौड़ी थी। पानी भी नीला था, वैसे ही जैसे ऊपर का नीला आकाश। हवा के एक हल्के-से झोंके ने सफेद बादलों को हिला दिया। जोडी को ऐसा दिन सदा ही पसन्द था। किनारों पर गुलाबी रंग फैला हुआ था, क्योंकि दलदली फूल और लाल कलियाँ चारों ओर वसन्त

के रंग में पूरी तरह खिली हुई थीं और उनकी मधुरता सारी धारा को भर रही थी। उसके गले में एक दर्द-सा उठा और उसने अपना हाथ गले पर रखा, जैसे उसे चीर देगा। चैत की यह सुन्दरता उसे और भी दुख पहुँचाने लगी। नए खिलते हुए सरुओं की ओर भी वह देखना न चाहता था। वह तो पानी, मछली और कछुए आदि को देख रहा था। उसने आँखें न उठाईं।

मछियारा बोला, "यह नेली का स्थान है। तुम यहाँ उतरना चाहते हो?"

उसने अपना सिर हिलाकर कहा, "नहीं, मेरी नाव कुछ आगे है।"

ज्यों ही वे वहाँ से गुज़रे, उसने नेली को अपने घर के आगे खड़े हुए पाया। मछियारे ने अपना हाथ उसकी ओर हिलाया और नेली ने भी वैसे ही उत्तर दिया। पर जोडी न हिला। उसे वह रात याद हो आई जब वह उसके घर में टिका था। और वह सवेरा भी, जब उसने उनके लिए नाश्ता पकाया था, पैनी से हँसी-मज़ाक की थी और तब उन्हें मित्रता के उत्साह और प्रसन्नता से विदा किया था। उसने अपनी उस याद को एक किनारे किया। अब धारा सँकरी हो गई थी। किनारे सट आए थे और दोनों ओर दलदल बढ़ आई थी।

वह बोला, "बस, आगे ही मेरी नाव है।"

"यह तो आधी डूबी हुई है।"

"हाँ, मैं इसे ठीक कर लूँगा।"

"तुम्हें किसी की सहायता की ज़रूरत है? तुम्हारे पास चप्पू हैं?"

उसने सिर हिलाकर मना किया।

मछुआ बोला, "यह एक चप्पू है। मुझे तो यह नाव जैसी नहीं लगती। अच्छा, फिर मिलने तक विदा!"

उसने अपनी नाव फिर से धारा में धकेल दी और जोडी की ओर हाथ हिलाए। अपनी बैठने की जगह के नीचे से उसने एक डिब्बे में से कुछ बिस्कुट और माँस निकाला और मुँह में लेकर उन्हें चबाने लगा। खाने की खुशबू जोडी तक पहुँची। उसे याद आया कि उसने इन दो दिनों में भालू के धुएँ वाले माँस को छोड़कर या मक्की के कुछ सूखे दानों के अतिरिक्त कुछ और नहीं खाया। पर उसके लिए इस बात का महत्त्व नहीं था, जैसे

वह भूखा ही नहीं था।

उसने छोटी-सी नाव को ज़मीन पर खींचा और उसमें चीथड़े भर दिए। बहुत देर डूबे रहने से वह फूल गई थी और इसका तला कस गया था। कोनों की ओर इसमें कुछ कटाव थे और वहाँ से पानी अन्दर रिस रहा था। उसने अपनी आस्तीनें फाड़ीं और उनके टुकड़े इन छेदों में भर दिए। तब एक चीड़ से वह कुछ राल उखाड़ लाया और उसे बाहर से चिपका दिया। तब उसने नाव को धारा में धक्का दिया और टूटा हुआ चप्पू उठाकर नीचे की ओर नाव चलाने लगा। उससे यह सँभल न पाई और एक किनारे से दूसरे किनारे तक तेज़ धार में वह बहने लगा। एक जगह वह तेज़ धार वाली घास में फँस गया और उसमें से निकलने की कोशिश करते हुए उसके हाथ चिर गए। यह नाव अगल-बगल हिलने लगी। कभी दक्षिण की ओर कोमल कीचड़ में फँस जाती। वह फिर धक्का देकर उसे छुड़ा लेता। उसे अब इसका तरीका समझ में आ गया। परन्तु अब वह कमज़ोर और मूर्छित-सा होता जा रहा था। उसकी इच्छा हुई, काश! वह मछुए को रोक लेता और प्रतीक्षा करने को कहता। परन्तु उसकी निगाह में नीले आकाश में चक्कर काटते गिद्ध को छोड़कर और कोई भी चीज़ नहीं थी। उसे ध्यान आया कि शायद गिद्धों ने सोते के पास के जोहड़ के किनारे फ्लैग को पा लिया होगा। इस बात ने उसे फिर से खिन्न कर दिया और उसने अपनी नाव इधर-उधर भटकने दी। उसने अपना सिर घुटनों पर रख लिया। बहुत देर तक उसकी बेचैनी दूर न हुई।

अब उसने फिर सख्त होकर चप्पू चलाने शुरू किए। वह बोस्टन की ओर जा रहा था। उसका मुख तना हुआ था। उसकी आँखें सिकुड़ी हुई थीं। सूर्य आसमान में काफी नीचे उतर आया था। अब वह धारा की समाप्ति के पास ही था। यहाँ से यह धारा जार्ज झील में मिल गई थी। यहाँ से दक्षिण की ओर एक सूखा किनारा फैला हुआ था। दूसरी ओर केवल दलदल ही दलदल थी। उसने अपनी किश्ती को घुमाया और ज़मीन पर उतर आया। यहाँ उसने किश्ती को भी ऊपर खींच लिया। वह एक सनावर के नीचे बैठा और अपनी कमर उसने तने पर टिका दी। यहाँ से खुले पानी पर उसने निगाह डाली। उसका अनुमान था कि यहाँ कोई

किश्ती नदी के अन्तिम किनारे तक दिखाई दे जाएगी। उसे दक्षिण की ओर जाती एक किश्ती दिखाई दी परन्तु यह झील में बहुत दूर पर थी। उसे लगा कि धारा का अन्त जैसे किसी एक छोटी-सी खाड़ी में ही हो जाता होगा।

सूर्य डूबने में एक या दो घंटे ही रहे होंगे। उसे लगा कि अगर वह बढ़ा तो घने अँधेरे में वह इस झील पर ही भटक जाएगा। उसने इसी ज़मीन पर बैठकर किसी गुज़रती हुई किश्ती की प्रतीक्षा करना अधिक अच्छा समझा। यदि कोई नाव न आई तो वह इसी पेड़ के नीचे रात को सो रहेगा और सुबह फिर से नाव खेने लगेगा। सारे दिन वह सुन्न-सा रहा था और कुछ सोच न सका था। अब विचार उसके मन में उमड़ने लगे, वैसे ही जैसे बछड़े के घेरे में भेड़िये आ टूटे थे। उन्होंने भी उसे चीर डाला। उसे लगा कि जैसे उसमें से भी न दिखाई देने वाला ख़ून बह रहा हो, जैसे फ्लैग का बहा था। फ्लैग मर चुका था। वह अब फिर कभी उस तक न आ सकेगा। कुछ तीखे शब्द कहकर उसने स्वयं को दुख दिया।

वह बोला, "फ्लैग मर चुका है।"

वे शब्द उसे तीखी चाय जैसे तीखे लगे। उसे अब तक भी सबसे गहरे दर्द का ध्यान न था।

वह ज़ोर से बोला, "पिताजी ने मुझसे धोखा किया।"

यह बात उसे पिता को साँप काटने से भी अधिक बुरी लगी। उसने अपने घुटने अपने माथे से रगड़े। पिता की मौत सही जा सकती थी। फौडरविंग मर गया, उसने उसे भी सहा। परन्तु यह धोखा सहना उसके लिए असम्भव था। अगर फ्लैग भालू, भेड़िये, चीते या किसी और कारण से मर जाता तो वह एक बहुत गहरे दुख के साथ दुखी होता, परन्तु वह इसे सह लेता। वह अपने पिता की ओर देखता और वह उसे अवश्य सांत्वना देते। पैनी के बिना उसे कहीं भी चैन नहीं मिल सकती थी। उसे लगा कि उसके नीचे की कठिन धरती जैसे घुल गई हो। उसकी कड़वाहट ने उसके दुख को छिपा लिया। जैसे कड़वाहट और दुख मिलकर एक हो गए।

अब सूर्य पेड़ों के शिखरों से भी नीचे उतर आया था। उसने रात से पहले किसी भी नाव के स्वागत की आशा छोड़ दी। उसने कुछ घास-फूस

इकट्ठा किया और अपने लिए उसी सनावर के पेड़ के नीचे एक बिस्तर-सा बना लिया। उस धारा के दूसरी ओर, दलदल के पार, कोई एक तीखी चीख़ उसे सुनाई दी। सूर्य डूबते तक मेढक टर्राने और गाने लगे। उसे उनकी संगीतभरी आवाज़ सोते से घर तक सुनाई देती हुई सदा अच्छी लगी थी। परन्तु, इस समय की आवाज़ में उसे शोक मिला हुआ दिखाई दिया। उसे यह आवाज़ बुरी लगी, जैसे वे भी अफसोस मना रहे हों। जैसे हज़ारों ही मेढक एक अन्तहीन और कम न किए जा सकने वाले दुख में रो रहे हों। एक जंगली बत्तख चिल्लाई, जैसे यह भी दुख में रो उठी हो।

झील पर गुलाबी रंग छा रहा था। परन्तु ज़मीन छाया के अँधेरे से ढँक चुकी थी। यह समय घर पर शाम के भोजन का होता। अपनी कमज़ोरी के होते भी उसे भोजन की याद हो आई। उसका पेट दर्द करने लगा, जैसे खाली होने के बजाय वह बहुत अधिक भरा हुआ हो। उसे मछुए के माँस और बिस्कुटों की गन्ध याद हो आई। उसके मुँह में पानी भर आया। उसने घास के छोटे-मोटे तिनके खाए। उनके जोड़ों को वह दाँतों से चबाने लगा, जैसे पशु मछली चबाते हैं। उसने उसी समय जैसे देखा कि फ्लैग के शव पर कई जन्तु सरक आए हैं। उसने उलटी कर दी।

अँधेरे ने ज़मीन और पानी सबको घेर लिया। एक उल्लू उसके पास के घने जंगल में चिल्लाया। वह काँप उठा। रात की ठण्डी हवा काँप रही थी। ठण्ड कुछ बढ़ गई थी। उसे हवा से आगे-आगे एक सनसनाहट सुनाई दी। शायद पत्ते खड़क रहे थे या कोई जानवर उधर से गुज़र रहा था। पर उसे डर न लगा। उसे लगा कि अगर भालू या चीता उधर आ निकला और उसने उसे छुआ तो उसे सूँघते ही वह उसके दुख को पहचान लेगा। पर तब भी उसके चारों ओर की आवाज़ों ने उसे अन्दर तक डरा दिया। अच्छा होगा कि वह आग जला ले। पैनी कहीं भी, बिना किसी चीज़ के भी आग जला सकता था जैसे आदिवासी करते थे। पर जोडी ऐसा कभी भी नहीं कर पाया था। अगर यहाँ पैनी होता तो यहाँ पर भी धधकती हुई आग, गर्मी, खाना और आराम—सभी कुछ होता। उसे डर नहीं था। हाँ, निराशा अवश्य थी। उसने काई को अपने ऊपर भी सरका लिया और स्वयं को सोने के लिए कहा।

सुबह की धूप ने उसे जगा दिया। चारों ओर सरकण्डों पर लाल पंखों वाले पक्षी चिल्ला रहे थे। वह खड़ा हुआ और उसने अपने बालों और कपड़ों पर से काई के लम्बे-लम्बे तार निकाले। वह बहुत कमज़ोर था। उसे चक्कर आ रहे थे। आराम के बाद उसे भूख भी लगने लगी थी। भोजन की याद भी दुख देने वाली थी। उसे पेट के चारों ओर दर्द और ऐंठन अनुभव हुई, जैसे किसी ने गरम चाकू चुभो दिए हों। उसने सोचा कि नेली गिनराइट के घर तक दुबारा नाव ले चले और उससे खाना माँगे, परन्तु वह उससे सवाल पूछेगी और अकेला होने के कारण पूछेगी। पर उसके पास पिता का धोखा बताने के अलावा और कोई उत्तर न था। इसी धोखे में फ्लैग मर चुका था। इसलिए अच्छा था कि वह उधर न जाकर अपने आगे के रास्ते पर बढ़े।

उस पर अकेलेपन की एक नई लहर दौड़ गई। उसने फ्लैग को तो खोया ही, पर पिता को भी खो दिया। उसने जब उस ठिगने और गठीले छोटे-से अपने पिता को अन्तिम समय देखा था, तो वह रसोई के दरवाज़े पर दर्द के मारे गिर पड़ा था और खड़ा होने के लिए सहायता के लिए चिल्ला रहा था। उसे पिता की यह शक्ल अजनबी-सी लगी। उसने अपनी नाव को फिर धकेला और चप्पू लेकर खुले पानी की ओर बढ़ निकला। खुले संसार में आकर उसे लगा कि वह यहाँ परदेसी-सा अकेला था और यह कि जैसे वह एक शून्य की ओर ले जाया जा रहा था। उसने उस तरफ बढ़ना शुरू किया, जहाँ उसने स्टीमर को जाते हुए देखा था। उसके लिए जीवन का अर्थ पिछले शोक पर ध्यान देना नहीं था, बल्कि भविष्य की चिन्ता का ध्यान करना था। धारा के मुँह को अपने पीछे छोड़ता हुआ वह आगे बढ़ा। हवा ताज़ी थी। ज़मीन से उठती हुई एक तेज़ ठण्डी हवा बह निकली। उसने अपने पेट की दर्द भुला दी और तेज़ी से चप्पू चलाने लगा। हवा ने उसकी नाव को बीच में ही पकड़ लिया और उसे चारों ओर घुमाने लगी। अब वह उसे सँभाल न सका। लहरें बढ़ती आ रही थीं। पहले हौले-हौले और बाद में कुछ तेज़ होने लगीं। अब उन्होंने नाव के कोने को तोड़ने की कोशिश की। जब यह अगल-बगल झुकने लगती तो पानी अन्दर आ जाता और लहरें इस पर छा जातीं। तले पर एक इंच से

अधिक पानी भर आया। पर कोई भी नाव कहीं भी न दीख रही थी।

उसने पीछे की ओर देखा। किनारा बहुत दूर छूट गया था। उसके सामने भी पानी का अन्त न दिखाई देता था। वह घबराहट में मुड़ा और किनारे की ओर चप्पू चलाने लगा। उसे लगा, अच्छा यही होगा कि वह धारा की ओर ऊपर मुड़ चले और नेली के यहाँ से सहायता माँगे। इससे भी अच्छा यह होगा कि वह फोर्टगेट्स तक पैदल जाय और वहाँ से अपना रास्ता चुन ले। हवा ने उसका साथ दिया और उसे लगा कि वह बड़ी नदी में उत्तर की ओर बहने वाली धारा में जा सकता है। वह एक ऐसे मुंह की ओर बढ़ा, जो नमकीन सोते वाली धारा का अन्त-सा दिखाई देता था। जब वह वहाँ तक पहुँचा तो उसे मालूम पड़ा कि यहाँ से आगे निरी दलदल ही दलदल थी। धारा का मुँह आस-पास कहीं भी नहीं था। वह डर और थकान के मारे काँप रहा था। उसने स्वयं को आश्वासन दिया कि वह भटका नहीं था, क्योंकि नदी जार्ज झील से उत्तर की ओर बहती थी और जैक्सनविले तक चली गई थी। उसे केवल उसमें बढ़ना था। परन्तु यह इतना चौड़ा स्थान था और किनारे की झलक इतनी भ्रमपूर्ण थी कि वह सोच न सका। उसने काफी देर आराम किया और तब धीरे-धीरे उत्तर की ओर चप्पू चलाने शुरू किए। यहाँ वह घने सरुओं की ज़मीन तक बहुत से मोड़ों, खाड़ियों और बढ़ी हुई ज़मीनों को पार करके पहुँचा। उसके पेट की दर्द बहुत तेज़ हो गई थी। उसे अपने परिवार की भोजन की मेज़ का बार-बार ध्यान आने लगा। उसने उबलते हुए सूअर की बगलों के माँस को देखा। भूरे रंग के वे टुकड़े अपने ही रस में डूबे हुए थे। उसे मधुर गन्ध आने लगी। उसे रंगीन बिस्कुट, मक्की की रोटी और मटरों के भरे हुए बर्तन तैरते दिखाई दिए। उनके आस-पास ही चारों ओर सूअर की पीठ का सफेद माँस तैर रहा था। उसे तली हुई गिलहरियों के माँस की ऐसी गन्ध आई कि उसके मुँह से लार टपकने लगी। ट्रिक्सी के दूध की गर्म धार का भी उसे स्वाद आया। उसे लगा कि वह कुत्तों से लड़कर भी बासी दानों और खीर को पा लेगा।

यह थी उसकी भूख! उसकी माँ ने जब सबके भूखे रहने की बात कही थी तब उसका मतलब इसी से था। तब वह यह समझकर कि वह भूख को

पहचानता है, हँस पड़ा था और उसे आनन्द आया था। उसे अब पता चला कि सच्ची भूख क्या होती है? यह कुछ और ही चीज़ है। यह बहुत भयंकर है, जैसे इसका बड़ा भारी जबाड़ा उसे निगल जाएगा और इसके पंजे उसके सभी अंगों को चीर डालेंगे। अब उसे एक नए भय से लड़ना पड़ा। वह अब जल्दी ही किसी घर या मछियारे के डेरे तक पहुँचकर अपना जीवन बचा-एगा। शर्म छोड़कर, आगे बढ़ने से पहले, भीख माँगकर भी वह भोजन पाएगा। कोई भी आदमी किसी दूसरे को भोजन के लिए मना नहीं कर सकता।

उत्तर की ओर अपने रास्ते पर दिन-भर वह परिश्रम करता रहा। दोपहर बाद सूरज की तेज़ धूप से उसे पेट में दर्द अनुभव हुई। परन्तु वह उलटी क्या करता? क्योंकि उसने केवल नदी का ही पानी पिया था। पेड़ों के बीच में कुछ दूरी पर एक घर दिखाई दिया। वह उधर आशा से बढ़ने लगा। यह घर उजाड़ था। वह उसके अन्दर घुसा, जैसे वह एक भूखा रैकून या कंगारू हो! वहाँ एक मिट्टी से भरे फट्टे पर कुछ पीपे रखे हुए थे। एक मर्तबान में उसे मिट्टी मिला कुछ आटा पड़ा हुआ मिला। उसने पानी में मिलाकर इसे खा लिया। इसमें कोई गन्ध न थी। इस भूख में भी उसे यह बेस्वाद लगा। परन्तु इससे उसके पेट की दर्द कुछ कम हो गई। वहाँ पेड़ों पर कुछ पक्षी और गिलहरियाँ थीं। उसने उन्हें पत्थर से मारना चाहा, परन्तु वे सब उससे दूर चले गए। वह बुखार में फँसा हुआ था और थक चुका था। उसके पेट में पहुँचे आटे ने उसे सुला दिया। उसने कुछ चीथड़े इकट्ठे कर खाली कमरे में ही शरण ली। चीथड़ों में से टिड्डियाँ निकलीं। वह सपनों से भरी नींद सो गया।

सुबह होते ही उसे फिर तेज़ भूख लगी और उसकी आँतों में दर्द और ऐंठन होने लगी। उसे वहाँ एक साल पहले के गिलहरियों के खाये कुछ अखरोट आदि दबे पड़े मिले। उसने उन्हें इस जल्दी में खाया कि उनके बिना चवाये सख्त टुकड़े उसके सिकुड़े हुए पेट में तेज चाकुओं की तरह चुभने लगे। एक सुस्ती-सी उस पर छा गई और वह बहुत मुश्किल से चप्पू पकड़ने में समर्थ हो सका। अगर तेज़ धार उसका साथ न देती, उसे लगा कि तब वह आगे न जा सकता था। वह सारी सुबह खेता रहा पर बहुत

थोड़ा ही बढ़ पाया। दोपहर बाद तीन नावें उधर से गुज़रीं। खड़े होकर उसने बाँहें हिलाकर इशारा किया और चिल्लाया। उनमें से एक ने भी उसकी आवाज़ न सुनी। वे आँख से ओझल हो गईं। अब वह न चाहकर भी रो पड़ा। उसने निश्चय किया कि वह किनारे से हटकर अगली नाव को बीच में ही रोक लेगा। हवा रुक चुकी थी। पानी शान्त था। इस पर लौटने वाली चमक उसके मुख, गर्दन और नंगी बाँहों को जला रही थी। धूप झुलसाने वाली थी। उसका सिर धड़कने लगा। उसकी आँखों के आगे काले और सुनहरे धब्बे आने लगे। उसके कान हलके-हलके भिनभिनाने लगे। तभी जैसे यह भिनभिनाहट रुक गई।

वह जब जागा तो उसे इतना ही पता चला कि चारों ओर अँधेरा था और वह धीरे-धीरे उठाया जा रहा था।

एक आदमी कह रहा था, "इसने शराब नहीं पी। यह बच्चा है।"

दूसरे ने कहा, "इसे यहीं पर रख दो। यह बीमार है। इसकी किश्ती को पीछे बाँध दो।"

जोडी ने ऊपर देखा। वह किसी डाक के जहाज़ के कमरे में लेटा हुआ था। दीवार पर एक बत्ती टिमटिमा रही थी। कोई उस पर झुका हुआ था।

"बच्चे, क्या बात है? हम तो अँधेरे में तुम्हें कुचल ही डालते!"

उसने उत्तर देना चाहा, पर उसके होंठ सूजे हुए थे।

ऊपर से एक आवाज़ आई, "उसे कुछ खाने को देकर देखो।"

"बच्चे, तुम्हें भूख लगी है?"

उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। नाव चलने लगी थी। कमरे वाला मनुष्य चूल्हे पर कुछ गर्म करने लगा। जोडी ने देखा कि एक बड़ा प्याला उसके सामने लाया गया। उसने सिर उठाया और इसे पकड़ लिया। प्याले में ठण्डा शोरबा पड़ा था। यह गाढ़ा और चर्बी मिला था। पहले एक-दो कौर में इसका स्वाद न आया। परन्तु धीरे-धीरे उसके पेट में अन्दर का रस काम करने लगा और वह पूरे मन से इसे पीने लगा। उसने इसे इस तेज़ी से निगल लिया, जैसे वह माँस और आलू के टुकड़ों पर टूट रहा हो।

उसी मनुष्य ने उत्सुकता से पूछा, "तुमने कब से नहीं खाया?"

"मुझे नहीं पता।"

"कप्तान साहब! इसे नहीं पता कि इसने कब से नहीं खाया?"

"इसे धीरे-धीरे करके काफी खाने को दो, पर इतना मत देना कि यहीं उलटी करने लगे।"

प्याला भरकर फिर उसके पास आया। अब की बार इसके साथ बिस्कुट भी थे। उसने अपने पर काबू रखना चाहा। परन्तु वह काँप गया, जब उस मनुष्य को उसने अगली खुराक तक बहुत देर प्रतीक्षा करते पाया। तीसरा प्याला उसे पहले दोनों से भी अधिक अच्छा लगा। पर, अब उसे और अधिक न दिया गया।

आदमी ने पूछा, "तुम कहाँ से आ रहे हो?"

उस पर जैसे मूर्छा-सी आ गई। उसका साँस भारी चलने लगा। टिम-टिमाती बत्ती की ओर उसकी आँखें घूमने लगीं। उसने उन्हें बन्द कर लिया। वह नदी के समान ही एक गहरी नींद में सो गया।

जब स्टीमर रुका तो वह जाग पड़ा। उसे एक क्षण को लगा कि जैसे वह अपनी ही किश्ती में बहता आया हो। वह अपने पाँव पर खड़ा हो गया और आँखें मसलने लगा। साथ के चूल्हे पर उसका ध्यान गया और उसे पहले दिन के शोरबे और बिस्कुटों का ध्यान हो आया। उसके पेट की दर्द जाती रही थी। वह कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गया। दिन निकलना शुरू हो चुका था। डाक का थैला नीचे घाट पर झुकाया जा रहा था। उसने पहचाना, यह वौलूसिया है। कप्तान उसकी ओर आया।

"बच्चे, तुम मरने ही वाले थे। अब बताओ, तुम्हारा नाम क्या है और तुम किधर जा रहे थे?"

"मैं बोस्टन की ओर जा रहा था।" जोडी ने उत्तर दिया।

"तुम्हें पता है, बोस्टन कहाँ है? जिस तरह तुम जा रहे थे, इस तरह उत्तर की ओर जाते हुए तुम्हारा सारा जीवन बीत जाता।"

जोडी आश्चर्य में ताकता रहा।

"अच्छा, अब जल्दी करो। यह सरकारी नाव है। मैं तुम्हें सारा दिन नहीं रख सकता। तुम कहाँ रहते हो?"

"बैक्स्टर टापू पर।"

"इस नदी पर इस नाम का कोई टापू कभी नहीं सुना।"

खलासियों का अगुआ बोल उठा, "यह असली टापू नहीं है, कप्तान साहब! यह जंगल में एक स्थान है। यहाँ से सड़क से पन्द्रह मील के लगभग होगा।"

"तब तुम यहाँ उतरना चाहोगे? बोस्टन? रहने भी दो! तुम्हारे वहाँ सम्बन्धी हैं?"

जोडी ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"उन्हें पता है कि तुम कहाँ जा रहे हो?"

उसने सिर हिलाकर मना किया।

"तो क्या भाग रहे हो? क्यों, है न? अच्छा, अगर मैं तुम्हारे जैसा छोटा होता तो मैं तो घर पर ही रहता। तुम्हारे जैसे छोटे बच्चे के लिए केवल घर के सम्बन्धी ही परेशान होंगे। जो! इसे किनारे पर नीचे उतार दो।"

दो बड़ी भुजाओं ने उसे उठाकर नीचे उतार दिया।

"इसकी छोटी नाव भी खुली छोड़ दो। बच्चे, इसे ले लो और हमें जाने दो!"

सीटी बजी और पहिए चलने लगे। डाक वाली नाव धारा के ऊपर की ओर चल निकली। उसके पीछे-पीछे धुआँ निकल रहा था। एक अजनबी पुरुष ने डाक का थैला उठाया और अपने कन्धे पर रख लिया। जोडी अपनी एड़ियों के बल बैठ गया। उसने अपनी नाव का किनारा अपने हाथ में पकड़े रखा। वह अजनबी उसकी ओर झाँककर वौलूसिया की ओर डाक लेकर चल पड़ा। अब सूर्य की पहली किरणें नदी पर पड़ रही थीं। दूसरी ओर के नरगिसों ने उन्हें प्यालों की भाँति उठकर अपने अन्दर ले लिया। तेज़ धारा उसकी छोटी-सी नाव से टकरा रही थी। उसकी बाँहें उसे पकड़े-पकड़े थक गई थीं। अजनबी के क़दमों की आवाज़ सड़क पर खो गई थी।

जोडी के लिए अपनी ज़मीन पर लौटने के अलावा और कोई राह नहीं रह गई थी। वह फिर नाव में बैठा और उसने चप्पू सँभाला। वह पार करके पश्चिमी किनारे पर आ गया और वहाँ एक खूँटे के साथ उसने

नाव को बाँध दिया। उसने नदी को एक बार फिर देखा। चढ़ते हुए सूर्य की किरणें जले हुए हुट्टो परिवार के घर की राख पर पड़ रही थीं। उसका गला भर आया। सारे संसार ने ही उसे जैसे छोड़ दिया हो! वह मुड़ा और सड़क से ऊपर की ओर धीमे-धीमे चलने लगा। वह कमज़ोर था और उसे भूख फिर से चेत आई थी। परन्तु रात के भोजन ने उसे ताज़ा कर दिया था। उसकी मूर्छा और दर्द कम हो गई थी।

वह बिना सोचे ही बढ़ने लगा। पर उसके लिए और कोई दिशा नहीं रह गई थी। अपनी ज़मीन उसे एक चुम्बक की भाँति खींचती जा रही थी। अपने खेतों के अलावा और कोई सच्चाई उसके सामने न थी। वह बढ़ता रहा। उसको सन्देह था कि वह घर में जाने का साहस भी कर सकेगा या नहीं? सम्भवतः वे उसे न चाहते होंगे। उसने उन्हें बहुत तकलीफ़ दी। शायद अगर वह रसोई में घुसा तो उसकी माँ फ्लैग के समान ही उसे भी धक्के देकर निकाल देगी। वह किसी के लिए भी तो लाभ का नहीं था। वह खेलता और खाता हुआ व्यर्थ ही मटरगश्तियाँ करता रहा था। वे लोग ही उसकी भूख और बुराइयों को सहते रहे। फ्लैग ने साल-भर की कमाई के अच्छे हिस्से को नष्ट कर दिया था। निश्चय ही वे सोचते होंगे कि जोडी के बिना ही वे ठीक हैं। उसका घर में बिलकुल स्वागत न होगा।

वह सड़क पर धीमे-धीमे घिसटता हुआ बढ़ता रहा। धूप तेज़ हो गई थी। सर्दी समाप्त हो चुकी थी। उसे लगा कि सम्भवतः चैत काफी ढल चुका है। वसन्त सारे जंगल पर छा चुकी थी और पक्षी झाड़ियों में गाते हुए जोड़े बाँध रहे थे। वही अकेला सारे संसार में घर-बार से रहित था। वह संसार में बाहर निकला हुआ था। संसार उसके लिए एक दुखभरे सपने की भाँति निराशा-भरा और अस्थिर-सा बन गया था, जैसे वह दल-दलों आदि से भरा हुआ हो। दोपहरसे पहले वह बड़ी सड़क और उत्तर की ओर फटने वाली सड़क के जोड़ पर आराम के लिए रुका। यहाँ वनस्पतियाँ नीची थीं और धूप सीधी पड़ रही थी। उसका सिर दर्द करने लगा। वह फिर उठ खड़ा हुआ और सिल्वर घाटी की ओर उत्तर में चल पड़ा। उसने अपने मन में कहा कि वह घर जाना नहीं चाहता। वह केवल सोते पर जाएगा और उसके काले और ठण्डे किनारों के बीच में कुछ देर बहते

पानी के बीच लेटेगा। उत्तर की सड़क कभी नीचे और कभी ऊपर होती हुई बढ़ रही थी। धूल उसके नंगे पाँवों के नीचे तप रही थी। उसके चेहरे पर पसीना बह रहा था और एक ऊँचाई पर चढ़कर वह अपने से बहुत नीचे पूरब की ओर जार्ज झील को देख सका। यह एकदम नीली थी। इसमें दिखाई देने वाली पीली-पीली धारियाँ ऊँची उठती लहरें थीं, जिन्होंने उसे ढकेलकर फिर किनारे पर पटक दिया था। वह आगे बढ़ने लगा।

पूरब में वनस्पतियाँ फिर बढ़ने लगीं। पानी पास ही था। वह नीचे की ओर सिल्वर घाटी की पगडण्डी पर मुड़ गया। एकदम ढलान वाला यह किनारा धारा के उस हिस्से पर उतरा, जो मुख्य धारा में दक्षिण की ओर मिलता था। इसका स्रोत बहुत छोटा था। उसकी सभी हड्डियाँ दर्द करने लगीं। वह इतना प्यासा था, जैसे उसकी जीभ तालु से चिपक गई हो। वह किनारे के साथ-साथ लड़खड़ाता हुआ उतरा और ठण्डे उथले पानी के किनारे लम्बा लेटकर उसे पीने लगा। पानी उसके होंठ और नाक पर बुलबुलों के रूप में उठा। वह इसे तब तक पीता रहा जब तक उसका पेट फूल न गया। तब उसे कुछ मचलाहट अनुभव हुई और वह अपनी पीठ के सहारे आँख बन्द करके लेट गया। उसकी यह मचलाहट नींद के रूप में उस पर छा गई। थका हुआ वह एक मूर्छा में लेटा रहा। उसे लगा जैसे वह समयहीन आकाश में लटका हुआ हो। न वह आगे जा सकता था और न पीछे लौट सकता था। जैसे कुछ समाप्त तो हो गया था, पर अभी नया कुछ शुरू नहीं हुआ था।

दोपहर बाद वह उठा और बैठ गया। उसके ऊपर ही मैग्नोलिया पेड़ पर कुछ आरम्भिक सफेद गुच्छे खिल चुके थे। उसने सोचा कि चैत समाप्त होने ही वाला है।

एक याद ने उसे लुभा लिया। वह लगभग एक साल पहले ऐसे ही कोमल और सुहावने दिन यहाँ आया था। उसने इसी प्रकार धारा के किनारे लेटकर और यहीं पर घूमकर आनन्द मनाया था। उस समय कोई बात थी कि जिससे सब कुछ सुन्दर और प्यारा लगता था। उसने एक पन-चक्की भी बनाई थी। वह उठा और धड़कते दिल से उसी पुरानी जगह पर

गया। उसे लगा कि अगर उसने पनचक्की को अब भी पा लिया, तो वह जैसे और सभी खोई हुई चीज़ों को भी फिर से पा लेगा। परन्तु पनचक्की नष्ट हो चुकी थी। बाढ़ ने इसे बहा दिया था और इसका वह आनन्द-दायक चक्कर समाप्त हो चुका था।

उसने ज़िद के साथ सोचा, 'मैं एक दूसरी चक्की बनाऊँगा।'

उसने फिर से सहारा देने वाली शाखों और बीच में घूमने वाली शाख को पास के चेरी के पेड़ से काटकर बनाया। उसने उन्हें जल्दी-जल्दी छीला। फिर उसने ताड़ के छोड़े पेड़ से पत्तियाँ काटीं और उनके पंखे बनाए। तब उसने उन्हें धारा के तले पर गाड़ दिया और पंखों को घुमा दिया। ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर करते हुए चक्की चलने लगी। पानी की चमकीली बूँदें इस पर से गिरने लगीं। पर अब उसके लिए ये पत्ते केवल ताड़ के पत्ते रह गए थे, जो पानी को धक्का दे रहे थे। गति का वह पुराना जादू इनमें न था। पन-चक्की का पहला आनन्द इनमें से समाप्त हो चुका था।

वह हँस पड़ा, "गुड़िया···"

उसने अपना पाँव मारकर इसे गिरा दिया। टूटे हुए टुकड़े धारा में बहने लगे। वह ज़मीन पर गिर पड़ा और तेज़ी से सुबकने लगा। उसे कहीं भी आराम नहीं मिल रहा था।

पैनी ज़रूर था! उसकी याद आते ही घर की याद आने लगी। पैनी को न देख पाना उसे एकदम ही असह्य हो उठा। उसके पिता की आवाज़ उसके लिए एक खास ज़रूरत बन चुकी थी। वह उसके झुके हुए कन्धों को देखना चाहता था। ऐसी चाह उसमें आज तक कभी भी न जगी थी, अधिक भूख होने पर भोजन के लिए भी नहीं। वह अपने पाँवों पर खड़ा हुआ और फिर से किनारे पर चढ़ आया। अब वह घर की ओर की सड़क पर चिल्लाता हुआ दौड़ने लगा। हो सकता है उसका पिता वहाँ न रहा हो। हो सकता है वह मर गया हो। हो सकता है फसलें नष्ट होने और बेटे के चले जाने पर निराश होकर उसने भी अपना सामान समेट लिया हो और कहीं और चला गया हो। अब जैसे वह उसे कभी नहीं मिल पाएगा।

वह वहीं से रोकर चिल्लाया, 'पिताजी, कुछ देर मेरा इन्तज़ार कीजिए।"

सूरज छिप रहा था। उसे डर था कि वह अँधेरा होने से पहले खेतों पर न पहुँच सकेगा। वह थक चुका था इसलिए उसे चाल धीमी करनी पड़ी। उसका शरीर काँप रहा था और उसका दिल धड़क रहा था। उसे अब आराम करने के लिए पूरी तरह रुकना पड़ा। अभी घर से वह आधा मील दूर ही था कि अँधेरा छा गया। रास्ते के निशान परिचित थे। खेतों पर के ऊँचे चीड़ पहचाने जा सकते थे। ये अँधियारी रात से भी अधिक काले थे। वह बाड़ पर पहुँच गया और अपना रास्ता उसने खोज निकाला। उसने दरवाज़ा खोला और आँगन में घुस आया। वह घर के एक ओर होता हुआ रसोई तक गया और सीढ़ियाँ चढ़ गया। वह खिड़की तक आया। उसके पाँव नंगे और शान्त थे। उसने अन्दर झाँका। अँगीठी में एक धीमी आग जल रही थी। पैनी कमर को सीधी करके बैठा हुआ था। उसने कम्बल ओढ़े हुए थे। उसका एक हाथ अपनी आँखों पर रखा हुआ था। जोडी दरवाज़े तक गया। उसने इसे खोला और अन्दर घुस आया। पैनी ने अपना सिर उठाया और पुकारा, "ओरी !"

"नहीं, यह मैं हूँ !"

उसने सोचा कि उसके पिता ने उसे सुना नहीं है। अब उसने अपना नाम लेकर आने की सूचना दी। पैनी ने अपना सिर घुमाया और आश्चर्य में उसकी ओर देखने लगा, मानो पसीने से तरबतर, उलझे बाल और गहरी आँखों वाला वह ठिगना और चिथड़े पहने लड़का कोई अजनबी हो और जिससे वह आशा रखता हो कि वह अपने आने का प्रयोजन बताए।

उसने पुकारा, "जोडी !"

जोडी की आँखें शर्म से नीचे झुक गईं।

पिता ने पास बुलाया। वह उसके पास जाकर बगल में खड़ा हो गया। पैनी ने उसका हाथ पकड़ा और अपने दोनों हाथों के बीच लेकर उसे धीमे-धीमे मसलने लगा। जोडी के हाथ पर कुछ गर्म बूँदें गिरीं, जैसे गर्म वर्षा हुई हो !

"बेटे, मैं तो तुम्हारी उम्मीद ही छोड़ चुका था।"

पैनी ने उसकी बाँह छुई और उसे देखने लगा।

"तुम ठीक तो हो ?"

जोडी ने सिर हिला दिया।

"तुम बिलकुल ठीक हो ? न तुम मरे ? और न गए ? तुम बिलकुल ठीक हो न ?" एक प्रकाश पिता के चेहरे पर दौड़ गया और वह बोल पड़ा, "बधाई हो।"

जोडी को इस पर विश्वास न हुआ। उसे लगा कि अब भी उसकी चाह बाकी थी।

वह बोला, "मुझे घर आना ही पड़ा।"

"हाँ, अवश्य आना चाहिए था।"

"जो कुछ मैंने आपसे घृणा के विषय में कहा वैसा मैं नहीं चाहता था।" पैनी के चेहरे पर आया वह प्रकाश मुस्कान में बदल गया।

"सचमुच तुम नहीं चाहते थे। जब मैं बच्चा था, मैं भी बच्चों जैसे बोलता था।"

पैनी अपनी कुर्सी में ही हिला और बोला, "तुम्हारा भोजन आलमारी में पड़ा है। वहाँ पतीली में ही कुछ रखा है। तुम्हें भूख लगी होगी ?"

"मैंने सिर्फ कल एक बार रात को ही खाया था।"

"सिर्फ़ एक बार ? तो अब तुम जान गए होगे 'भूख' का क्या अर्थ होता है ? भूख की शक्ल बूढ़े रीछ से भी अधिक नीच होती है। क्या ठीक नहीं ?" कहते हुए उसकी आँखें आग के प्रकाश में वैसे ही चमकीं जैसे जोडी ने कल्पना की थी।

वह बोला, "यह बहुत ही डरावनी थी।"

"वहाँ बिस्कुट पड़े हैं। शहद भी ले लेना। और, बाल्टी में कुछ दूध भी बचा होगा।"

जोडी खाने में लग गया। उसने खड़े-खड़े ही जल्दी-जल्दी निगलते हुए भोजन किया। उसने मटरों की तश्तरी में हाथ से ही खाना शुरू किया। पैनी उसकी ओर ताकता रहा।

वह बोला, "मुझे दुख है कि तुम्हें इस रूप में सीखना पड़ा।"

"माँ कहाँ हैं ?"

"वह फौरेस्टरों के घर तक गाड़ी में गई है, ताकि मक्की के कुछ बीज खरीदकर ला सके। उसका अनुमान था कि वह कुछ फ़सल फिर से बोकर

देखेगी। वह चूज़े बेचने के लिए ले गई है। इससे उसके अभिमान पर चोट तो पड़ी, परन्तु वह जाने के लिए लाचार थी।"

जोडी ने आलमारी का दरवाज़ा बन्द कर दिया। वह बोला, "मुझे शरीर धो-पोंछ लेना चाहिए, क्योंकि मैं बहुत मैला हूँ।"

"उधर भट्टी पर गर्म पानी होने रखा है।"

जोडी ने पानी बाल्टी में पलटा और अपना मुँह धोया। उसने हाथ भी धोए। पानी उसके पाँव के लिए बहुत मैला हो चुका था। उसने उसे खिंडा दिया और कुछ और पानी डाल लिया। तब फर्श पर बैठकर पाँव धोने लगा।

पैनी बोला, "मैं प्रसन्न होऊँगा यदि जान सकूँ कि तुम कहाँ रहे?"

"मैं नदी पर ही रहा। मेरी इच्छा थी कि बोस्टन चला जाऊँ।"

"मैं समझा।"

कम्बलों में लिपटा वह अधिक छोटा और सिकुड़ा-सा दिखाई दिया।

जोडी बोला, "पिताजी, आपका क्या हाल है? कुछ अच्छे हैं?"

पैनी बहुत देर तक भट्टी में पड़े अंगारों को देखता रहा और तब बोला, "तुम सचाई जान लो तो अच्छा है। मेरी दशा मर जाने लायक है।"

जोडी बोला, "जब म काम समाप्त कर लूँगा, तब मुझे डाक्टर को लाने की आज्ञा आपको देनी पड़ेगी।"

पैनी ने उसे अच्छी तरह देखा और बोला, "अब तुम बिलकुल बदलकर लौटे हो। तुमने स्वयं को कड़ा दण्ड दिया है। अब तुम किशोर नहीं रहे, जोडी...!"

"हाँ, जी!"

"मैं अब तुमसे आदमी के नाते बात करूँगा। तुमने सोचा था कि मैंने तुमसे वायदा तोड़ा है। पर एक बात हर आदमी को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। शायद तुम इसे पहले ही जानते हो। यह केवल मेरा सवाल नहीं है। यह केवल तुम्हारे उस प्यारे पशु को मारने का भी सवाल नहीं था। बच्चे, यह जीवन तुम पर भी इसी तरह बीतेगा।"

जोडी ने पिता की ओर देखा और सिर हिलाया।

पैनी बोला, "तुमने देख लिया है कि संसार में किस तरह की बातें होती हैं। तुमने आदमियों को बहुत नीचे गिरता हुआ भी देख लिया। तुमने मौत को अपनी चालाकियाँ खेलते देख लिया। तुमने भूख के साथ भी उलझकर देख लिया। हर आदमी चाहता है कि उसका जीवन अधिक सुन्दर, सरल और प्यारा बने। जीवन सुन्दर है, बल्कि बहुत सुन्दर है। पर यह उतना सरल नहीं है। जीवन आदमी को गिरा देता है। वह उठता है और यह उसे फिर गिरा देता है। मैं स्वयं अपने जीवन-भर इसी तरह गिरता-उठता चलता आया हूँ।"

उसके हाथ कम्बल की तहों को पकड़ रहे थे।

"मैंने चाहा था कि तुम्हारे लिए जीवन सरल बन सके। कम-से-कम मेरे जीवन की अपेक्षा वह अधिक सरल हो। किसी भी आदमी का दिल अपने बच्चों को दुनिया का सामना करते देखकर दर्द से भर उठता है। वह जानता है कि जिस तरह उस पर मुसीबतें टूटीं और दिल फटा, उसी तरह बच्चों का भी हौंसला टूट जाएगा। मैं चाहता था कि जब तक हो सके, तुम्हें मुसीबत से बचाऊँ। मैं यह भी चाहता था कि तुम अपने प्यारे पशु के साथ खूब हँसो, खेलो। मैं जानता था कि वह तुम्हारे अकेलेपन को किस सीमा तक दूर करता था? परन्तु, दुनिया में हर आदमी अपने को अकेला अनुभव करता है। तब वह क्या करे? और जब उस पर मुसीबत पड़ती है तब वह क्या करे? अच्छा है, इसे अपनी क़िस्मत का भाग मानकर बढ़ता चले।"

जोडी बोला, "मुझे अपने भाग जाने पर लज्जा है।"

पैनी तनकर बैठ गया और बोला, "तुम अब अपना रास्ता चुनने लायक हो गए हो। हो सकता है कि ओलिवर की भाँति तुम भी समुद्र पर जाना चाहो। कुछ मनुष्य बनते ही धरती के लिए हैं और कुछ समुद्र के लिए। पर मुझे प्रसन्नता होती यदि तुम यहाँ रहकर खेती करना पसन्द करते। मुझे वह दिन देखकर अभिमान होता जब तुम कुआँ खुदवा लेते, ताकि कभी कोई औरत अपने कपड़े धोने के लिए उस पानी के सोते तक जाने से बच जाय। क्या तुम यह चाहोगे?"

"मैं यही चाहता हूँ।"

"तो फिर हाथ मिलाओ!"

उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। भट्टी की आग जलकर अंगारे बन चुकी थी। जोडी ने उन्हें राख से ढँक दिया, ताकि सुबह जलते हुए कोयले मिल सकें।

पैनी बोला, "अब मुझे बिस्तर पर जाने के लिए तुम्हारी सहायता चाहिए। लगता है, तुम्हारी माँ रात वहीं बिताएगी।"

जोडी ने अपना कन्धा पिता की बगल में लगाया। पैनी उस पर बोझ के साथ झुका। वह उसे उसके बिस्तरे तक ले गया। जोडी ने उस पर रजाई डाल दी।

"बच्चे, भोजन और पानी ही तुम्हें घर में लाया है। जाओ, अब बिस्तर तक जाकर सो जाओ और आराम करो। नमस्ते!"

ये शब्द जोडी में फिर से एक उत्साह भर गए। उसने भी पिता को नमस्कार किया। वह अपने कमरे में गया और उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। उसने अपने फटे हुए कपड़े उतारे और गर्म रजाई में घुस गया। उसका बिस्तर कोमल और गदेला था। वह बहुत आराम से अपनी टाँगें फैलाकर पड़ गया। उसे सुबह जल्दी उठना होगा, ताकि गाय दुहकर और लकड़ी लाकर वह फसलों के काम पर जा सके। उसके काम करते हुए फ्लैग उससे खेलने को न होगा। उसका पिता भी अब अधिक हाथ न बँटा सकेगा। पर अब इन बातों का अधिक महत्त्व नहीं था। वह अकेला ही सब काम करने के लिए तैयार था।

उसे लगा, जैसे वह कुछ सुन रहा है। यह उसके छौने की ही आवाज़ थी, जैसे वह घर के चारों ओर घूम रहा हो। या फिर उसके ही कमरे के कोने में पड़े काई के बिस्तर पर पड़ा हिल रहा हो। अब वह उसकी आवाज़ फिर कभी न सुन सकेगा। उसे सन्देह था कि माँ ने छौने के शव पर मिट्टी भी डाली या नहीं? या फिर कहीं गिद्ध ही उसे साफ न कर गए हों? उसे विश्वास न हुआ कि वह फिर कभी किसी जन्तु को फ्लैग के समान प्यार कर सकेगा? या किसी आदमी, स्त्री या अपने बच्चे को ही वैसा प्यार दे सकेगा? अब वह जीवन-भर अकेला ही रहेगा। परन्तु हर आदमी को इसे भी अपना भाग समझकर बढ़ना होता है।

अपनी नींद के शुरू में ही वह चिल्ला पड़ा, "फ्लैग!"

लगा जैसे यह उसकी आवाज़ नहीं थी। यह किसी एक बच्चे की आवाज़ थी। सोते के पार बहुत दूर, मैग्नोलिया वृक्ष से भी परे, सनावरों के नीचे, एक बच्चा और एक किशोर हिरण साथ-साथ भाग रहे थे। धीरे-धीरे वे सदा के लिए आँखों से ओझल हो गए।

●